दीघा निकया

संपादन करने के लिए लॉग इन करें

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> **दीघ निकाय**
दीघा **निकाय ("लंबे प्रवचनों का संग्रह")** सुत्त पिटक के पाँच निकायों (संग्रहों) में से पहला है । दीघा निकाय के कुछ सबसे अधिक संदर्भित सूत्रों में महा-परिनिर्वाण सूत्र (DN 16) शामिल है, जिसमें बुद्ध के अंतिम दिनों और मृत्यु का वर्णन है; सिगालोवादा सूत्र (DN 31), जिसमें बुद्ध ने गृहस्थ अनुयायियों के लिए नैतिकता और प्रथाओं पर चर्चा की है; समञ्ञफल (DN 2) और ब्रह्मजल सूत्र (DN 1), जो ब्रह्मांड और समय (भूतकाल, वर्तमान और भविष्य) के बारे में भारत में बुद्ध और अन्य तपस्वियों के दृष्टिकोण का वर्णन और तुलना करते हैं; और पोत्थपाद सूत्र (DN 9), जो समाथा ध्यान (शांत ध्यान) के लाभों और अभ्यास का वर्णन करता है।

दीघा निकाय में 34 प्रवचन हैं, जिन्हें तीन समूहों में विभाजित किया गया है:

सिलक्खंध-वग्ग
नैतिकता संबंधी विभाजन (13 सूत्र)

1. ब्रह्मजाल सूत्र (1) "महान जाल" या सार्वभौमिक जाल (विश्व का), जिसमें सभी प्राणी मछली की तरह फंसे हुए हैं और उस समय के अन्य शिक्षकों द्वारा सिखाए गए विश्व और स्वयं के बारे में अटकलों के 62 विधर्मी रूप।
2. समन्नाफल सूत्र (2) "सन्यासी जीवन के फल"। बुद्ध राजा अजातसत्तु को बौद्ध संघ में शामिल होने और सांसारिक जीवन का त्याग करने के लाभों के बारे में बताते हैं।
3. अंबत्था सूत्र (3) जन्म का अभिमान और उसका पतन। जाति पर अंबत्था के साथ संवाद। इसमें शाक्य वंश के पारंपरिक संस्थापक राजा ओक्काका की कथा का संदर्भ है।
4. सोनादंडा सूत्र (4) सच्चे ब्राह्मण के लक्षणों पर ब्राह्मण सोनादंडा के साथ संवाद।56
5. कुटदंत सुत्त (5) पशु बलि की निंदा करते हुए ब्राह्मण कुटदंत के साथ संवाद। 66
6. महाली सूत्र (6) देव जैसी दृष्टि और श्रवण तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति पर महाली के साथ संवाद। 74
7. जलिया सूत्र (7) शरीर की तुलना में जीवन सिद्धांत की प्रकृति पर। 78
8. कस्सपसिहनदा सुत्त (8) आत्म-यातना के विरुद्ध नग्न तपस्वी कस्सप के साथ संवाद। 80
9. पोत्थपाद सूत्र (9) आत्मा की प्रकृति पर पोत्थपाद के साथ एक चर्चा, जिसमें बुद्ध कहते हैं कि प्रश्न अप्रासंगिक है और ज्ञानोदय के लिए अनुकूल नहीं है। 90
10. सुभा सुत्त (दिग्ना निकया) (10) आनंद को समर्पित आचरण, एकाग्रता और ज्ञान पर एक प्रवचन। 99
11. केवद्ध सूत्र (11) बुद्ध ने एक भिक्षु को चमत्कार करने की अनुमति नहीं दी। उस भिक्षु की कहानी जिसने देवताओं से प्रश्न पूछने के लिए उनके दर्शन किए। निर्वाण/मोक्ष की अवस्था का वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है। 101
12. लोहिच्चा सूत्र (12) शिक्षण की नैतिकता पर ब्राह्मण लोहिच्चा के साथ संवाद। 118
13. तेविज्जा सूत्र (13) ब्रह्मा के साथ सहवास प्राप्त करने के साधन के रूप में वेदों के ज्ञान की निरर्थकता पर। 131

महा-वग्ग
बड़ा प्रभाग (10 सुत्त)

1. महा-पदना सूत्र (14) बुद्ध गौतम और उनके छह पूर्ववर्तियों की उदात्त कथा; बुद्ध विपस्सी पर प्रवचन भी; तुषिता स्वर्ग से उनके अवतरण से उनके मिशन की शुरुआत तक। 145
2. महा-निदान सूत्र (15) कारण-कार्य श्रृंखला और आत्मा के सिद्धांतों पर।163
3. महा-परिनिर्वाण सूत्र (16) तथागत के परिनिर्वाण में प्रवेश के वृत्तांत का महान प्रवचन। 174

पटिका-वग्गा

पतिका प्रभाग (11 सुत्त)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.1: ब्रह्मजला सुत्त (डीएन 1)

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान बुद्ध राजगृह और नालंदा के बीच मुख्य मार्ग पर लगभग पाँच सौ भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ यात्रा कर रहे थे। उसी मार्ग पर सुप्पिया नामक एक साधु भी अपने शिष्य ब्रह्मदत्त के साथ यात्रा कर रहा था। सुप्पिया बुद्ध, धम्म और संघ में अनेक प्रकार की कमियाँ निकाल रहा था, जबकि उसका शिष्य ब्रह्मदत्त उनकी प्रशंसा में विभिन्न प्रकार से बोल रहा था। इस प्रकार ये दोनों, गुरु और शिष्य, एक-दूसरे के तर्कों का सीधा विरोध करते हुए, भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुओं के समूह के ठीक पीछे चल रहे थे।

फिर भगवान बुद्ध अपने भिक्षुओं के साथ अंबलत्थिका के राजमहल में एक रात्रि के लिए ठहरे। सुप्पिया भी अपने शिष्य ब्रह्मदत्त के साथ वहीं रात्रि के लिए रुके। सुप्पिया बुद्ध, धम्म और संघ की निंदा करते रहे, जबकि उनके शिष्य ब्रह्मदत्त ने उनका बचाव किया। इस प्रकार वाद-विवाद करते हुए वे बुद्ध और उनके भिक्षुओं के पीछे-पीछे चलने लगे।

अब सुबह तड़के कई भिक्षु उठकर गोल मंडप में एकत्रित हुए और उनकी बातचीत का विषय कुछ इस प्रकार था: "हे मित्रों, यह कितना अद्भुत है, कितना आश्चर्यजनक है कि परम पूज्य भगवान, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध प्राणियों की विभिन्न प्रवृत्तियों को जानते, देखते और स्पष्ट रूप से पहचानते हैं! क्योंकि यहाँ पर भिक्षु सुप्पिया बुद्ध, धम्म और संघ में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ निकाल रहे हैं, जबकि

उनके शिष्य ब्रह्मदत्त अनेक प्रकार से उनका बचाव कर रहे हैं। और, वाद-विवाद करते हुए, वे भगवान और उनके भिक्षुओं के संघ के पीछे-पीछे चल रहे हैं।"

तब भगवान ने भिक्षुओं की बातें सुनकर गोल मंडप में जाकर वहाँ बनी हुई आसन पर बैठ गए। फिर उन्होंने कहा, "भिक्षुओं, अभी आपकी बातचीत का विषय क्या था? मैंने किस बात में बाधा डाली?" और उन्होंने उन्हें बताया।

"भिक्षुओं, यदि कोई मेरी, धम्म की या संघ की निंदा करे, तो उस पर क्रोधित, नाराज़ या परेशान न हों। यदि आप ऐसी निंदा पर क्रोधित या नाराज़ होंगे, तो यह केवल आपके लिए बाधा उत्पन्न करेगा। क्योंकि यदि दूसरे मेरी, धम्म की या संघ की निंदा करें और आप क्रोधित या नाराज़ हों, तो क्या आप यह पहचान सकते हैं कि वे जो कह रहे हैं वह सही है या गलत?" 'नहीं, भगवान।' "यदि दूसरे मेरी, धम्म की या संघ की निंदा करें, तो आपको यह समझाना होगा कि क्या गलत है, यह कहते हुए: 'यह गलत है, यह झूठ है, यह हमारा मार्ग नहीं है, यह हमारे बीच नहीं पाया जाता है।'"

लेकिन, भिक्षुओं, यदि दूसरे मेरी, धम्म की या संघ की प्रशंसा करें, तो इस कारण प्रसन्न, प्रसन्न या उत्साहित न हों। यदि आप ऐसी प्रशंसा से प्रसन्न, प्रसन्न या उत्साहित होंगे, तो यह आपके लिए केवल बाधा ही होगी। यदि दूसरे मेरी, धम्म की या संघ की प्रशंसा करें, तो आपको सत्य की सच्चाई को स्वीकार करते हुए कहना चाहिए: 'यह सही है, यह उचित है, यह हमारा मार्ग है, यह हमारे बीच पाया जाता है।'

"भिक्षुओं, सांसारिक मनुष्य तथागत (बुद्ध) की प्रशंसा नैतिक आचरण के बुनियादी, निम्नतर मामलों के लिए करते हैं। और वे बुनियादी, निम्नतर मामले क्या हैं जिनके लिए सांसारिक मनुष्य उनकी प्रशंसा करते हैं?"

नैतिकता पर संक्षिप्त खंड

"जीवन लेने का त्याग करके, तपस्वी गौतम बिना लाठी-तलवार के, जीवन लेने से परहेज करते हुए, संशयपूर्ण, करुणामय और समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए भयभीत होकर निवास करते हैं।" इस प्रकार सांसारिक व्यक्ति तथागत की प्रशंसा करता है। "अनावश्यक वस्तुओं को लेने का त्याग करके, तपस्वी गौतम शुद्ध जीवन व्यतीत करते हैं, जो कुछ प्राप्त होता है उसे स्वीकार करते हैं, जो कुछ प्राप्त होता है उसकी प्रतीक्षा करते हैं, और चोरी नहीं करते। अपवित्रता का त्याग करके, तपस्वी गौतम उससे दूर, ग्राम-कालीन यौन क्रियाओं से विरक्त होकर निवास करते हैं।"

"झूठे शब्दों का त्याग करके, तपस्वी गौतम सत्य का वाचाल, विश्वसनीय, भरोसेमंद और संसार को धोखा न देने वाला होता है। द्वेषपूर्ण शब्दों का त्याग करके, वह यहाँ सुनी हुई बातों को दूसरों के लिए हानिकारक बनाकर न तो दोहराता है और न ही वहाँ सुनी हुई बातों को दूसरों के लिए हानिकारक बनाकर। इस प्रकार वह मतभेदियों के बीच सुलह कराने वाला और एकता में रहने वालों को प्रोत्साहित करने वाला होता है, शांति में आनंदित, उससे प्रेम करने वाला और शांति का समर्थक होता है। कठोर शब्दों का त्याग करके, वह उनसे दूर रहता है। वह निर्दोष, कानों को भाने वाले, हृदय को छूने वाले, शिष्ट और जनमानस को भाने वाले वचन बोलता है। व्यर्थ की बातों का त्याग करके, वह उचित समय पर, सही और सटीक, धर्म और अनुशासन की बातें बोलता है। वह ऐसा वक्ता है जिसके शब्द अनमोल, सामयिक, तर्कसंगत, सुस्पष्ट और लक्ष्य से जुड़े होते हैं।" इस प्रकार सांसारिक व्यक्ति तथागत की स्तुति करेगा।

"तपस्वी गौतम बीज और फसलों को नुकसान पहुंचाने से परहेज करते हैं। वे दिन में एक बार भोजन करते हैं और रात में नहीं खाते, अनुचित समय पर भोजन करने से बचते हैं। वे नाच-गाना, संगीत और तमाशे देखने से परहेज करते हैं। वे माला, इत्र, सौंदर्य प्रसाधन, आभूषण और सजावट का उपयोग नहीं करते। वे ऊंचे या चौड़े पलंगों का उपयोग नहीं करते। वे सोना और चांदी स्वीकार नहीं करते। वे कच्चा अनाज या कच्चा मांस स्वीकार नहीं करते, वे स्त्रियों और युवतियों, पुरुष या स्त्री दासों, भेड़-बकरियों, मुर्गों और सूअरों, हाथियों, मवेशियों, घोड़ों और घोड़ियों, खेतों और भूखंडों को स्वीकार नहीं करते। वे छोटे-मोटे काम करने, खरीद-फरोख्त करने, गलत वजन और माप से धोखाधड़ी करने, रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार, छल और बेईमानी से दूर रहते हैं, वे किसी को चोट पहुंचाने, हत्या करने, कैद करने, लूटपाट करने और जबरदस्ती भोजन छीनने से परहेज करते हैं।" इस प्रकार सांसारिक व्यक्ति तथागत की प्रशंसा करेगा।

मध्य भाग: नैतिकता

"जबकि, हे सज्जनों, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण, भक्तों का भोजन ग्रहण करते हुए, जड़ों, तनों, जोड़ों, कलमों और बीजों से उत्पन्न होने वाले बीजों को नष्ट करने के आदी हैं, वहीं तपस्वी गौतम ऐसा विनाश नहीं करते।" इस प्रकार सांसारिक व्यक्ति तथागत (बुद्ध) की प्रशंसा करेगा।

"जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण भक्तों के भोजन पर निर्भर रहकर भोजन, पेय पदार्थ, वस्त्र, रथ, बिस्तर, इत्र, मांस जैसी संचित वस्तुओं के भोग में लिप्त रहते हैं, वहीं तपस्वी गौतम ऐसे भोग से परहेज करते हैं।"

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण ... नृत्य, गायन, संगीत, प्रदर्शन, पाठ, हस्तसंगीत, झांझ और ढोल, परी-शो, [16] कलाबाजी और जादूगरी के करतब, हाथियों, भैंसों, बैलों, बकरियों, मेढ़ों, मुर्गों और बटेरों की लड़ाई, लाठियों से लड़ाई, मुक्केबाजी, कुश्ती, नकली लड़ाई, परेड, युद्धाभ्यास और सैन्य समीक्षा जैसे प्रदर्शनों में भाग लेने के आदी रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसे प्रदर्शनों में भाग लेने से परहेज करते हैं।

"जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आठ या दस पंक्तियों वाले शतरंज, हवा में शतरंज, हॉपस्कॉच, स्पिलिकिन्स, पासा खेलना, डंडे मारना, हस्तचित्र बनाना, गेंद के खेल, खिलौने वाली पाइपों से फूंक मारना, खिलौने वाले हल से खेलना, कलाबाजी करना, खिलौने वाली पवनचक्कियों से खेलना, नाप-तोल, रथ और धनुष से खेलना, अक्षरों का अनुमान लगाना, विचारों का अनुमान लगाना, विकृतियों की नकल करना जैसे खेलों और व्यर्थ के कामों में लगे रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसे व्यर्थ के कामों से दूर रहते हैं।"

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण ऊँचे और चौड़े पलंगों और लंबी कुर्सियों, जानवरों की आकृतियों से सजे सोफे, ऊनी या बहुरंगी चादरों, दोनों तरफ या एक तरफ बालों वाली चादरों, रत्नों से सजी या बिना रत्नों वाली रेशमी चादरों, हाथी, घोड़े या रथ की चटाईयों, हिरण की खाल से बने उत्तम चादरों, शामियाने वाले सोफे या दोनों सिरों पर लाल तकियों वाले सोफे के आदी रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसे ऊँचे और चौड़े पलंगों से परहेज करते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण शरीर पर इत्र मलने, मालिश करने, सुगंधित जल से स्नान करने, शैम्पू करने, दर्पण का उपयोग करने, मलहम, माला, सुगंध, सौंदर्य प्रसाधन, कंगन, सिर के पट्टे, सुंदर छड़ें, बोतलें, तलवारें, धूप से बचने के चश्मे, सजे हुए सैंडल, पगड़ी, रत्न, याक की पूंछ के पंखे, लंबे झालरदार सफेद वस्त्र जैसे आत्म-सजावट और अलंकरण के रूपों के आदी रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसे आत्म-सजावट से परहेज करते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण राजाओं, लूटपाट करने वाले मंत्रियों, सेनाओं, खतरों, युद्धों, भोजन, पेय, वस्त्र, बिस्तर, मालाओं, इत्रों, रिश्तेदारों, रथों, गांवों, कस्बों और शहरों, देशों, महिलाओं, वीरों, गली-गली की गपशप, दिवंगत आत्माओं की चर्चा, निरर्थक बातचीत, भूमि और समुद्र के बारे में अटकलें, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के बारे में चर्चा जैसी निरर्थक बातों में लिप्त रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसी बातों से दूर रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण वाद-विवाद में लिप्त रहते हैं, जैसे कि:

'तुम इस सिद्धांत और अनुशासन को नहीं समझते - मैं समझता हूँ!' 'तुम इस सिद्धांत और अनुशासन को कैसे समझ सकते हो?' 'तुम्हारा तरीका पूरी तरह गलत है - मेरा सही है!' 'मैं सुसंगत हूँ - तुम नहीं!' 'तुमने वह बात सबसे आखिर में कही जो तुम्हें सबसे पहले कहनी चाहिए थी, और तुमने वह बात सबसे पहले कही जो तुम्हें सबसे आखिर में कहनी चाहिए थी!' 'जिस बात को सोचने में तुमने इतना समय लगाया, वह गलत साबित हो गई!' 'तुम्हारा तर्क धराशायी हो गया है, तुम हार गए!' 'जाओ, अपने सिद्धांत को बचाओ - अगर हो सके तो इससे बाहर निकलो!'

तपस्वी गौतम इस प्रकार के वाद-विवाद से दूर रहते हैं।

"जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण राजाओं, मंत्रियों, कुलीनों, ब्राह्मणों, गृहस्थों और युवकों के लिए संदेशवाहक और इधर-उधर जाने जैसे कामों में लगे रहते हैं, जो कहते हैं: 'यहाँ जाओ - वहाँ जाओ! इसे वहाँ ले जाओ, उसे वहाँ से लाओ!' वहीं तपस्वी गौतम ऐसे कामों से दूर रहते हैं।"

"जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण छल, चापलूसी, इशारेबाजी, अपमान करने और निरंतर लाभ की लालसा में लिप्त रहते हैं, तपस्वी गौतम ऐसे छल से दूर रहते हैं।" इस प्रकार सांसारिक व्यक्ति तथागत की प्रशंसा करेगा।

नैतिकता पर विस्तृत खंड

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण भक्तों के भोजन पर निर्भर रहकर हस्तरेखा शास्त्र, संकेतों, शकुनों, स्वप्नों, शरीर के चिह्नों, चूहे कुतरने, अग्नि आहुति, भूसी, चावल के पाउडर, चावल के दाने, घी या तेल से आहुति, मुख से या रक्त से आहुति, उंगलियों के निशान पढ़ना, घर और बगीचे का ज्ञान, मंत्रों में निपुणता, भूत-प्रेत का ज्ञान, मिट्टी के घर का ज्ञान, नागों का ज्ञान, विषों का ज्ञान, चूहों का ज्ञान, पक्षियों का ज्ञान, कौवों का ज्ञान, किसी व्यक्ति की आयु का पूर्वानुमान लगाना, बाणों से बचाव के मंत्र, पशुओं की आवाजों का ज्ञान

जैसी नीच कलाओं और आजीविका के ऐसे गलत साधनों से अपना जीवन यापन करते हैं, तपस्वी गौतम ऐसी नीच कलाओं और आजीविका के गलत साधनों से विरक्त रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण रत्नों, लाठियों, वस्त्रों, तलवारों, भालों, बाणों, हथियारों, स्त्रियों, पुरुषों, लड़कों, लड़कियों, पुरुष और महिला दासों, हाथियों, घोड़ों, भैंसों, बैलों, गायों, बकरियों, भेड़ों, मुर्गों, बटेरों, इगुआना, बांस के चूहों, कछुओं, हिरणों के चिह्नों का मूल्यांकन करने जैसी नीच कलाओं से जीविका कमाते हैं, तपस्वी गौतम ऐसी नीच कलाओं से दूर रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण 'प्रमुख आगे बढ़ेंगे - प्रमुख वापस लौटेंगे', 'हमारे प्रमुख आगे बढ़ेंगे और दूसरे प्रमुख पीछे हटेंगे', 'हमारे प्रमुख जीतेंगे और दूसरे प्रमुख हारेंगे', 'दूसरे प्रमुख जीतेंगे और हमारे हारेंगे', 'इस प्रकार एक पक्ष की जीत होगी और दूसरे की हार होगी' जैसी नीच कलाओं से अपनी जीविका कमाते हैं, तपस्वी गौतम ऐसी नीच कलाओं से दूर रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, नक्षत्र ग्रहण की भविष्यवाणी करके जीविका कमाते हैं; यह भविष्यवाणी करते हैं कि सूर्य और चंद्रमा अपने सही मार्ग पर चलेंगे - लेकिन भटक जाएंगे; यह भविष्यवाणी करते हैं कि नक्षत्र पर उल्कापिंडों की वर्षा होगी, आकाश में आग भड़केगी, भूकंप आएगा, गरज होगी; चंद्रमा, सूर्य और तारों का उदय, अस्त, अंधकारमय होना, प्रकाशमान होना आदि की भविष्यवाणी करते हैं; और 'इन घटनाओं का यही परिणाम होगा', वहीं तपस्वी गौतम ऐसी नीच कलाओं और जीविका के गलत साधनों से दूर रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण अच्छी या बुरी बारिश, अच्छी या बुरी फसल, सुरक्षा, खतरा, बीमारी, स्वास्थ्य जैसी नीच कलाओं से अपना जीवन यापन करते हैं; या लेखांकन, गणना, काव्य रचना, दर्शनशास्त्र जैसी कलाओं से जीविका कमाते हैं, तपस्वी गौतम ऐसी नीच कलाओं और जीविका के गलत साधनों से दूर रहते हैं।

जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण विवाह, सगाई और तलाक की व्यवस्था करने, बचत और खर्च का समय निर्धारित करने, सौभाग्य या दुर्भाग्य लाने, गर्भपात कराने, जीभ बांधने, जबड़े को बांधने, हाथों को झटकने, बहरापन पैदा करने, दर्पण, स्त्री-माध्यम या देव से उत्तर प्राप्त करने, सूर्य या ब्रह्मा की पूजा करने, अग्नि-प्रवेश करने, भाग्य की देवी का आह्वान करने जैसे नीच कामों से जीविका कमाते हैं, वहीं तपस्वी गौतम ऐसे नीच कामों और जीविका के गलत साधनों से दूर रहते हैं।

"जबकि कुछ तपस्वी और ब्राह्मण, भक्तों के भोजन पर निर्भर रहकर, ऐसे नीच कामों और आजीविका के ऐसे गलत साधनों से अपना जीवन यापन करते हैं जैसे कि देवताओं को प्रसन्न करना और उनके प्रति प्रतिज्ञाओं का प्रायश्चित करना, मिट्टी के घर बनाना, पौरुष या नपुंसकता पैदा करना, भवन निर्माण स्थलों को तैयार करना और पवित्र करना, अनुष्ठानिक स्नान कराना, यज्ञ करना, उल्टी कराने वाली दवाएँ, दस्त कराने वाली दवाएँ, कफ निस्सारक और कफनाशक दवाएँ देना, कान, आँख, नाक की दवा, मलहम और प्रतिमलहम देना, आँखों की सर्जरी, सर्जरी, बाल चिकित्सा, पिछले उपचारों के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए मलहम का उपयोग करना, तपस्वी गौतम ऐसे नीच कामों और आजीविका के गलत साधनों से दूर रहते हैं।" [31] हे भिक्षुओं, सांसारिक लोग तथागत (बुद्ध) की प्रशंसा नैतिक आचरण के ऐसे प्राथमिक, निम्नतर मामलों के लिए ही करते हैं।

"हे भिक्षुओं, कुछ अन्य विषय भी हैं, जो गहन, दृष्टि से कठिन, बोध से कठिन, शांतिपूर्ण, उत्कृष्ट, मात्र चिंतन से परे, सूक्ष्म और ज्ञानियों द्वारा अनुभव किए जाने योग्य हैं, जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही कहेंगे। और ये विषय क्या हैं?"

बासठ प्रकार के गलत विचार

"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण ऐसे हैं जो अतीत के बारे में अटकलें लगाते हैं, अतीत के बारे में उनके निश्चित विचार होते हैं, और वे अतीत के बारे में अठारह अलग-अलग तरीकों से विभिन्न काल्पनिक सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं। वे ऐसा किस आधार पर करते हैं?"

"कुछ तपस्वी और ब्राह्मण ऐसे हैं जो शाश्वतवादी हैं, जो चार तरीकों से आत्मा और संसार की शाश्वतता का बखान करते हैं। किस आधार पर?"

गलत धारणा संख्या 1 : "हे भिक्षुओं, यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने परिश्रम, लगन, परिश्रम, गंभीरता और उचित ध्यान के माध्यम से मानसिक एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि वह अपने पिछले जन्मों को याद करता है - एक जन्म, दो जन्म, तीन, चार, पाँच, दस जन्म, सौ, हज़ार, एक लाख जन्म, कई सौ, कई हज़ार, कई लाख जन्म। 'वहाँ मेरा नाम फलां था, मेरा गोत्र फलां था, मेरी जाति फलां थी, मेरा भोजन फलां था, मैंने फलां सुख और दुख के अनुभवों का सामना किया, मैं इतने समय तक जीवित रहा। वहाँ से मृत्यु के बाद,

मैं वहाँ उत्पन्न हुआ। वहाँ मेरा नाम फलां था... और वहाँ से मृत्यु के बाद, मैं यहाँ उत्पन्न हुआ।' इस प्रकार वे अपने अनेक पूर्व जन्मों, उनकी परिस्थितियों और विवरणों को याद करते हैं। और वे कहते हैं: 'आत्मा और संसार शाश्वत हैं, पर्वत शिखर के समान निर्जीव, खंभे के समान दृढ़ता से स्थापित। ये प्राणी चक्कर लगाते हैं, घूमते हैं, मरते हैं और पुनर्जन्म लेते हैं, परन्तु आत्मा शाश्वत बनी रहती है। ऐसा क्यों? मैंने परिश्रम और लगन से ऐसी मानसिक एकाग्रता प्राप्त की है कि मुझे अपने अनेक पूर्व जन्म याद आ गए हैं। इसी प्रकार मैं जानता हूँ कि आत्मा और संसार शाश्वत हैं...' यही वह पहला तरीका है जिससे कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की शाश्वतता का बखान करते हैं।

गलत धारणा संख्या 2 : "और दूसरा तरीका क्या है? हे भिक्षुओं, यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने परिश्रम और लगन से ऐसी मानसिक एकाग्रता प्राप्त कर ली है कि वह संकुचन और विस्तार की एक अवधि, दो अवधियाँ, तीन, चार, पाँच, दस अवधियों को याद कर लेता है... 'यहाँ मेरा नाम फलां-फलां था...' यही दूसरा तरीका है जिससे कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की शाश्वतता का बखान करते हैं।"

तीसरा गलत दृष्टिकोण : "तीसरा तरीका क्या है? हे भिक्षुओं, यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने परिश्रम से ऐसी मानसिक एकाग्रता प्राप्त कर ली है कि वह संकुचन और विस्तार के दस, बीस, तीस, चालीस काल को याद करता है। 'वहाँ मेरा नाम फलां-फलां था...' यही वह तीसरा तरीका है जिससे कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की शाश्वतता का बखान करते हैं।"

गलत दृष्टिकोण संख्या 4 : "और चौथा तरीका क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण तर्कशास्त्री है। अपने विचार के आधार पर तर्क देते हुए वह कहता है: 'आत्मा और संसार शाश्वत हैं, पर्वत शिखर की तरह निर्जीव, खंभे की तरह दृढ़ता से स्थापित। ये प्राणी चक्कर लगाते हैं, घूमते हैं, नष्ट होते हैं और पुनर्जन्म लेते हैं, लेकिन यह हमेशा के लिए बना रहता है।' यही चौथा तरीका है जिससे कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की शाश्वतता का बखान करते हैं।"

"ये चार तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण शाश्वतवादी हैं और चार आधारों पर आत्मा और संसार की शाश्वतता का प्रचार करते हैं। और जो भी तपस्वी या ब्राह्मण शाश्वतवादी हैं और आत्मा और संसार की शाश्वतता का प्रचार करते हैं, वे इन्हीं चार आधारों में से किसी एक पर ऐसा करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध) यह समझते हैं: इन विचारों को ग्रहण करने और इनका पालन करने से परलोक में अमुक-अमुक गंतव्य प्राप्त होंगे। तथागत यह जानते हैं, और इससे भी अधिक, परन्तु वे इस ज्ञान से आसक्त हैं। और इस प्रकार अनासक्त होकर उन्होंने स्वयं पूर्ण शांति का अनुभव किया है, और भावों के उत्पन्न होने और नष्ट होने, उनके आकर्षण, खतरे और उनसे मुक्ति को सही मायने में समझकर तथागत पूर्णतः मुक्त हो गए हैं।"

"हे भिक्षुओं, कुछ अन्य विषय भी हैं, जो गहन, दृष्टि से कठिन, बोध से कठिन, शांतिपूर्ण, उत्कृष्ट, मात्र चिंतन से परे, सूक्ष्म और ज्ञानियों द्वारा अनुभव किए जाने योग्य हैं, जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही कहेंगे। और ये विषय क्या हैं?"

प्रथम पाठ-खंड का अंत

"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो आंशिक रूप से शाश्वतवादी और आंशिक रूप से गैर-शाश्वतवादी हैं, जो आत्मा और संसार की आंशिक शाश्वतता और आंशिक गैर-शाश्वतता की घोषणा चार तरीकों से करते हैं। किस आधार पर?"

"भिक्षुओं, एक समय ऐसा आता है, चाहे देर से ही सही, लंबे समय के बाद, जब यह संसार संकुचित होता है। संकुचन के समय, अधिकांश प्राणी आभासर ब्रह्म लोक में पुनर्जन्म लेते हैं। और वहाँ वे मन से निर्मित, आनंद में लिप्त, स्वयंप्रकाशित, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी रूप में निवास करते हैं - और वे बहुत लंबे समय तक इसी अवस्था में रहते हैं।"

गलत मत संख्या 5 : "परन्तु एक समय आता है, चाहे देर से ही सही, जब यह संसार फैलने लगता है। इस फैलते हुए संसार में ब्रह्मा का एक खाली महल प्रकट होता है। तब एक प्राणी, अपने जीवनकाल या अपने पुण्यों के समाप्त होने के कारण, आभासर लोक से गिरकर उस खाली ब्रह्मा-महल में आ जाता है। और वहाँ वह मन से विवश होकर, आनंद में लिप्त होकर, स्वयंप्रकाशित होकर, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी रूप में निवास करता है - और वह बहुत लंबे समय तक उसी अवस्था में रहता है।"

"तब इतने लंबे समय तक अकेले रहने वाले इस प्राणी में बेचैनी, असंतोष और चिंता उत्पन्न होती है, और वह सोचता है: 'काश, कुछ अन्य प्राणी यहाँ आ जाएँ!' और अन्य प्राणी, अपने जीवनकाल या अपने पुण्य कर्मों के समाप्त होने के कारण, आभासर लोक से गिरकर ब्रह्मलोक में इस प्राणी के साथी के रूप में आ जाते हैं। और वे वहाँ मनमग्न होकर निवास करते हैं... और वे बहुत लंबे समय तक उसी अवस्था में रहते हैं।"

और फिर, हे भिक्षुओं, जो प्राणी सबसे पहले वहाँ उत्पन्न हुआ, वह सोचता है: "मैं ब्रह्मा हूँ, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, भगवान, सृष्टिकर्ता, शासक, नियुक्तकर्ता और व्यवस्थापक, समस्त अस्तित्व का पिता। इन प्राणियों की रचना मैंने की है। ऐसा कैसे? क्योंकि सबसे पहले मेरे मन में यह विचार आया: 'काश, कुछ अन्य प्राणी यहाँ आ जाएँ!' यही मेरी इच्छा थी, और फिर ये प्राणी अस्तित्व में आए!" परन्तु जो प्राणी बाद में उत्पन्न हुए, वे सोचते हैं: "हे मित्रों, यह ब्रह्मा हैं, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, भगवान, सृष्टिकर्ता, शासक, नियुक्तकर्ता और व्यवस्थापक, समस्त अस्तित्व का पिता। ऐसा कैसे? हमने देखा है कि वे पहले यहाँ थे, और हम उनके बाद उत्पन्न हुए।"

और जो प्राणी सबसे पहले उत्पन्न हुआ, वह उनसे अधिक दीर्घायु, अधिक सुंदर और अधिक शक्तिशाली है। और ऐसा हो सकता है कि कोई प्राणी उस लोक से गिरकर इस संसार में आ जाए। इस संसार में आकर वह गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश कर जाता है। संन्यास लेने के बाद वह परिश्रम, लगन, परिश्रम और उचित ध्यान से ऐसी मानसिक एकाग्रता प्राप्त कर लेता है कि उसे अपना पिछला जन्म तो याद आ जाता है, पर उससे पहले का कोई जन्म याद नहीं आता। और वह सोचता है: 'वह ब्रह्मा, ... उसने हमें बनाया है, और वह स्थिर, अटल, शाश्वत, परिवर्तन से परे, सदा-सदा एक समान है। परन्तु हम, जिन्हें उस ब्रह्मा ने सृजित किया है, हम क्षणभंगुर, अस्थिर, अल्पायु, नाशवान हैं, और इस संसार में आए हैं।' यह पहला उदाहरण है जिससे कुछ तपस्वी और ब्राह्मण आंशिक रूप से शाश्वतवादी और आंशिक रूप से अनित्यवादी होते हैं।

गलत मत संख्या 6 : "और दूसरा तरीका क्या है? हे भिक्षुओं, कुछ ऐसे देव हैं जो भोग-विलास से भ्रष्ट कहलाते हैं। वे आनंद, खेल-कूद और मौज-मस्ती में अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं, जिससे उनकी चेतना भंग हो जाती है, और चेतना भंग होने के कारण वे उस अवस्था से गिर जाते हैं।"

और ऐसा हो सकता है कि कोई प्राणी उस अवस्था से गिरकर इस संसार में जन्म ले। इस संसार में जन्म लेकर वह गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है। संन्यास लेने के बाद वह प्रयास और परिश्रम से अपने पिछले जन्म को याद करता है, लेकिन उससे पहले के किसी जन्म को नहीं।

वह सोचता है: 'वे पूजनीय देव जो सुख-भोग से दूषित नहीं होते, वे आनंद, खेल-कूद और मौज-मस्ती में अत्यधिक समय व्यतीत नहीं करते। इसलिए उनकी चेतना भंग नहीं होती और वे उस अवस्था से नहीं गिरते। वे स्थायी, स्थिर, शाश्वत, अपरिवर्तनीय और सदा-सदा एक समान होते हैं। परन्तु हम, जो आनंद से दूषित हैं, आनंद, खेल-कूद और मौज-मस्ती में अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं। अतः चेतना भंग होने के कारण हम उस अवस्था से गिर गए हैं, हम क्षणभंगुर, अस्थिर, अल्पजीवनीय हैं और इस संसार में आ गए हैं।' यह दूसरा मामला है।

गलत मत संख्या 7 : "तीसरा तरीका क्या है? हे भिक्षुओं, कुछ ऐसे देव हैं जिन्हें भ्रष्ट मन वाला कहा जाता है। वे एक-दूसरे को ईर्ष्या से देखते हुए अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं। इस कारण उनका मन भ्रष्ट हो जाता है। उनके भ्रष्ट मन के कारण वे शरीर और मन से थक जाते हैं और उस स्थान से गिर जाते हैं।"

और ऐसा हो सकता है कि कोई प्राणी उस अवस्था से गिरकर इस संसार में जन्म ले। उसे अपना पिछला जन्म तो याद रहता है, लेकिन उससे पहले का कोई जन्म याद नहीं रहता।

वह सोचता है: 'वे पूजनीय देव जिनका मन भ्रष्ट नहीं है, एक-दूसरे को ईर्ष्या से देखने में अधिक समय व्यतीत नहीं करते... उनका मन भ्रष्ट नहीं होता, न ही वे तन-मन से क्षीण होते हैं, और इसलिए वे उस अवस्था से नहीं गिरते। वे स्थायी, स्थिर, शाश्वत हैं... परन्तु हम, जिनका मन भ्रष्ट है, ... क्षणभंगुर, अस्थिर, अल्पजीवनित हैं, और हम इस संसार में आए हैं।' यह तीसरा मामला है।

गलत दृष्टिकोण संख्या 8 : "और चौथा तरीका क्या है? यहाँ, एक तपस्वी या ब्राह्मण एक तर्कशास्त्री, एक तर्कशास्त्री है। अपने स्वयं के विचार का अनुसरण करते हुए, वह तर्क के आधार पर कहता है: 'जो कुछ भी आँख, कान, नाक, जीभ या शरीर कहलाता है, वह क्षणभंगुर, अस्थिर, शाश्वत नहीं, परिवर्तनशील है। परन्तु जो कुछ भी विचार, मन या चेतना कहलाता है, वह एक ऐसा आत्म है जो स्थायी, स्थिर, शाश्वत है, परिवर्तन के अधीन नहीं है, सदा-सदा एक समान है!' यही चौथा मामला है।"

"ये चार तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण आंशिक रूप से शाश्वतवादी और आंशिक रूप से गैर-शाश्वतवादी हैं... तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की आंशिक शाश्वतता और आंशिक गैर-शाश्वतता की जो भी घोषणा करते हैं, वे इन्हीं चार आधारों में से किसी एक पर करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध) यह समझते हैं: इन दृष्टिकोणों को ग्रहण करने और इनका पालन करने से परलोक में अमुक-अमुक गंतव्य प्राप्त होंगे। तथागत यह जानते हैं, और इससे भी अधिक, परन्तु वे इस ज्ञान से आसक्त हैं। और इस प्रकार अनासक्त होकर उन्होंने स्वयं

पूर्ण शांति का अनुभव किया है, और भावों के उत्पन्न होने और नष्ट होने, उनके आकर्षण, खतरे और उनसे मुक्ति को सही मायने में समझकर तथागत पूर्णतः मुक्त हो गए हैं।"

हे भिक्षुओं, ये वे अन्य विषय हैं, जो गहन, दृष्टि से कठिन, समझ से कठिन, शांतिपूर्ण, उत्कृष्ट, मात्र विचार से परे, सूक्ष्म, ज्ञानियों द्वारा अनुभव किए जाने योग्य हैं, जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।

"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो परिमिततावादी और अनंततावादी हैं, और जो चार आधारों पर दुनिया की परिमितता और अनंतता की घोषणा करते हैं। वे क्या हैं?"

गलत दृष्टिकोण संख्या 9 : "यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने परिश्रम से ऐसी एकाग्रता की अवस्था प्राप्त कर ली है कि वह संसार को सीमित मानते हुए निवास करता है। वह सोचता है: 'यह संसार सीमित है और एक वृत्त से घिरा है। ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने ऐसी एकाग्रता की अवस्था प्राप्त कर ली है कि मैं संसार को सीमित मानते हुए निवास करता हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि यह संसार सीमित है और एक वृत्त से घिरा है।' यह पहला मामला है।"

गलत मत क्रमांक 10 : "दूसरा तरीका क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि वह संसार को अनंत रूप में देखता है। वह सोचता है: 'यह संसार अनंत और असीमित है। वे तपस्वी और ब्राह्मण जो इसे सीमित और परिमित कहते हैं, वे गलत हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि मैं संसार को अनंत रूप में देखता हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि यह संसार अनंत और असीमित है।' यह दूसरा मामला है।"

गलत दृष्टिकोण क्रमांक 11 : "तीसरा तरीका क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण ने चेतना की ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि वह संसार को ऊपर-नीचे परिमित और आर-पार अनंत के रूप में देखता है। वह सोचता है: 'संसार परिमित और अनंत है। जो तपस्वी और ब्राह्मण इसे परिमित कहते हैं वे गलत हैं, और जो इसे अनंत कहते हैं वे भी गलत हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त कर ली है कि मैं संसार को ऊपर-नीचे परिमित और आर-पार अनंत के रूप में देखता हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि संसार परिमित और अनंत दोनों है।' यह तीसरा मामला है।"

गलत मत क्रमांक 12 : "और चौथा मामला क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण एक तर्कशास्त्री, एक तर्कशास्त्री है। तर्क के बल पर वह कहता है: 'यह संसार न तो परिमित है और न ही अनंत। जो इसे परिमित कहते हैं वे गलत हैं, और जो इसे अनंत कहते हैं वे भी गलत हैं, और जो इसे परिमित और अनंत दोनों कहते हैं वे भी गलत हैं। यह संसार न तो परिमित है और न ही अनंत।' यही चौथा मामला है।"

"ये वे चार तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण परिमिततावादी और अनंततावादी हैं, और चार आधारों पर संसार की परिमितता और अनंतता की घोषणा करते हैं। इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं: इस प्रकार से ग्रहण किए गए और पालन किए गए ये दृष्टिकोण दूसरे लोक में अमुक-अमुक गंतव्यों की ओर ले जाएंगे..."

हे भिक्षुओं, ये वे अन्य विषय हैं, जो गहन, दृष्टि से कठिन, समझ से कठिन, शांतिपूर्ण, उत्कृष्ट, मात्र विचार से परे, सूक्ष्म, ज्ञानियों द्वारा अनुभव किए जाने योग्य हैं, जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।

"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण ऐसे होते हैं जो मक्खी की तरह छटपटाते हैं। जब उनसे किसी विषय पर पूछा जाता है, तो वे टालमटोल भरे बयान देते हैं और चार आधारों पर मक्खी की तरह छटपटाते हैं। वे कौन से आधार हैं?"

गलत दृष्टिकोण क्रमांक 13 : "इस मामले में एक तपस्वी या ब्राह्मण है जिसे वास्तव में यह नहीं पता कि कोई चीज अच्छी है या बुरी। वह सोचता है: 'मुझे वास्तव में नहीं पता कि यह अच्छा है या बुरा। सही का ज्ञान न होने के कारण, मैं कह सकता हूँ: 'वह अच्छा है' या 'वह बुरा है", और यह झूठ हो सकता है, और इससे मुझे कष्ट होगा। और यदि मुझे कष्ट हुआ, तो यह मेरे लिए बाधा होगी।' इस प्रकार झूठ बोलने से डरते हुए, झूठ से घृणा करते हुए, वह किसी चीज को अच्छा या बुरा घोषित नहीं करता, लेकिन जब उससे इस या उस मामले के बारे में पूछा जाता है, तो वह टालमटोल वाले बयान देता है और मछली की तरह छटपटाता है: 'मैं यह नहीं कहता, मैं वह नहीं कहता। मैं यह नहीं कहता कि यह कुछ और है। मैं यह नहीं कहता कि यह नहीं है। मैं यह नहीं कहता कि यह नहीं है।' यह पहला मामला है।"

गलत दृष्टिकोण क्रमांक 14 : "दूसरा तरीका क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण वास्तव में यह नहीं जानता कि कोई चीज अच्छी है या बुरी। वह सोचता है: 'मैं कह सकता हूँ: 'यह अच्छा है' या 'यह बुरा है', और मुझे इच्छा, वासना, घृणा या अरुचि महसूस हो सकती है। यदि मुझे इच्छा, वासना, घृणा या अरुचि महसूस होती है, तो यह मेरी ओर से आसक्ति होगी। यदि मुझे आसक्ति महसूस होती है, तो यह

मुझे दुखी करेगी, और यदि मैं दुखी हूँ, तो यह मेरे लिए बाधा होगी।" इस प्रकार, आसक्ति से डरते हुए, आसक्ति से घृणा करते हुए, वह टालमटोल वाले कथनों का सहारा लेता है... यह दूसरा मामला है।"

गलत दृष्टिकोण क्रमांक 15 : "तीसरा तरीका क्या है? यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण वास्तव में यह नहीं जानता कि कोई चीज अच्छी है या बुरी। वह सोचता है: 'मैं कह सकता हूँ: 'यह अच्छा है' या 'यह बुरा है', लेकिन ऐसे तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो बुद्धिमान, कुशल, अनुभवी वाद-विवादकर्ता हैं, जैसे धनुर्धर बाल की भेद कर सकते हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता से दूसरों के विचारों को ध्वस्त करते फिरते हैं, और वे मुझसे तर्क-वितर्क कर सकते हैं। और मैं शायद उत्तर न दे पाऊँ। उत्तर न दे पाना मुझे व्यथित करेगा, और यदि मैं व्यथित हुआ, तो यह मेरे लिए एक बाधा होगी।' इस प्रकार, वाद-विवाद से भयभीत होकर, वाद-विवाद से घृणा करते हुए, वह टालमटोल वाले कथनों का सहारा लेता है। यही तीसरा मामला है।"

गलत दृष्टिकोण क्रमांक 16 : "चौथा मार्ग क्या है? यहाँ, एक तपस्वी या ब्राह्मण मंदबुद्धि और मूर्ख है। अपनी मंदबुद्धि और मूर्खता के कारण, जब उससे प्रश्न किया जाता है तो वह टालमटोल भरे कथन करता है और मछली की तरह छटपटाता है: "यदि आप मुझसे पूछें कि क्या कोई दूसरा लोक है - यदि मैं ऐसा मानता, तो मैं कहता कि दूसरा लोक है। लेकिन मैं ऐसा नहीं कहता। और मैं इसके विपरीत भी नहीं कहता। और मैं यह भी नहीं कहता कि यह नहीं है, और मैं यह भी नहीं कहता कि यह नहीं है।" 'क्या कोई दूसरा लोक नहीं है? ...' "क्या दूसरा लोक है और दूसरा लोक नहीं भी है? ..." 'क्या कोई दूसरा लोक नहीं है और दूसरा लोक नहीं भी है? ...' "क्या स्वतः उत्पन्न होने वाले प्राणी हैं? ..." "क्या नहीं हैं...?" "दोनों ...?" "न तो ...?" "क्या तथागत (बुद्ध) मृत्यु के बाद विद्यमान हैं? क्या वे मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं हैं? क्या वे मृत्यु के बाद विद्यमान भी हैं और विद्यमान भी नहीं हैं? क्या वे मृत्यु के बाद न तो विद्यमान हैं और न ही विद्यमान हैं?" ..."अगर मुझे ऐसा लगता, तो मैं ऐसा कहता... मैं यह नहीं कहता कि ऐसा नहीं है।' यह चौथा मामला है।"

"ये वे चार तरीके हैं जिनसे वे तपस्वी और ब्राह्मण जो चालाक होते हैं, टालमटोल भरे बयान देते हैं... इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं: इस प्रकार ग्रहण किए गए और पालन किए गए ये दृष्टिकोण दूसरे लोक में अमुक-अमुक गंतव्यों की ओर ले जाएंगे..."

हे भिक्षुओं, ये वे अन्य गहन, समझने में कठिन विषय हैं... जिन्हें तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव कर घोषित किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।

"कुछ भिक्षु, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण ऐसे हैं जो संयोग-उत्पत्ति में विश्वास रखते हैं, और जो दो आधारों पर आत्मा और संसार की संयोग उत्पत्ति की घोषणा करते हैं। वे क्या हैं?"

गलत मत क्रमांक 17 : "हे भिक्षुओं, कुछ ऐसे देव हैं जिन्हें अचेतन कहा जाता है। [49] जैसे ही उनमें कोई बोध उत्पन्न होता है, वे देव उस लोक से गिर जाते हैं। और ऐसा भी हो सकता है कि कोई प्राणी उस लोक से गिरकर इस संसार में आ जाए। वह... अपने पिछले जन्म को याद करता है, लेकिन उससे पहले के जन्म को नहीं। वह सोचता है: 'आत्मा और संसार संयोग से उत्पन्न हुए हैं। ऐसा कैसे? इससे पहले मेरा कोई अस्तित्व नहीं था। अब मैं अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में आया हूँ।' यह पहला मामला है।"

गलत मत क्रमांक 18 : "दूसरा मामला क्या है? यहाँ, एक तपस्वी या ब्राह्मण एक तर्कशास्त्री, एक विचारक है। वह अपनी राय स्पष्ट करता है और घोषणा करता है: 'आत्मा और संसार संयोग से उत्पन्न हुए हैं।' यह दूसरा मामला है।"

"ये वे दो तरीके हैं जिनसे संयोग-उत्पत्ति में विश्वास रखने वाले तपस्वी और ब्राह्मण आत्मा और संसार की संयोग उत्पत्ति की घोषणा करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं...ये वे अन्य विषय हैं, गहन, जिन्हें समझना कठिन है...जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अहसास किया है और जिनका प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

"और ये, भिक्षुओं, वे अठारह तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण अतीत के बारे में चिंतन करते हैं... इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं..."

कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण भविष्य के बारे में अटकलें लगाते हैं, भविष्य के बारे में उनके निश्चित विचार होते हैं, और वे भविष्य के बारे में चौवालीस अलग-अलग तरीकों से कई तरह के काल्पनिक सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं। वे ऐसा किस आधार पर करते हैं?

"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो मृत्यु के बाद चेतना के अस्तित्व का सिद्धांत प्रचारित करते हैं, और वे ऐसा सोलह अलग-अलग तरीकों से करते हैं। किस आधार पर?"

गलत दृष्टिकोण संख्या 19 - 34 : "वे घोषणा करते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा स्वस्थ और सचेत है और (1) भौतिक, (2) अभौतिक, (3) भौतिक और अभौतिक दोनों, (4) न तो भौतिक और न ही अभौतिक, (5) परिमित, (6) अनंत, (7) दोनों, (8) न ही, (9) एकसमान बोध वाली, (10) विविध बोध वाली, (11) सीमित बोध वाली, (12) असीमित बोध वाली, (13) पूर्णतः सुखी, (14) पूर्णतः दुखी, (15) दोनों, (16) न ही।"

"ये सोलह तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण सचेत मृत्योत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं...ये वे अन्य विषय हैं, गहन, जिन्हें समझना कठिन है...जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अहसास किया है और जिनका प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

दूसरे पाठ-खंड का अंत
"कुछ भिक्षु, तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो अचेतन मृत्यु के बाद जीवित रहने के सिद्धांत का प्रचार करते हैं, और वे ऐसा आठ तरीकों से करते हैं। किस आधार पर?"

गलत दृष्टिकोण 35 - 42 : "वे घोषणा करते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा स्वस्थ और अचेतन है और (1) भौतिक, (2) अभौतिक, (3) दोनों, (4) न तो, (5) परिमित, (6) अनंत, (7) दोनों, (8) न तो।"

"ये वे आठ तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण अचेतन मृत्योत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध) इसे समझते हैं... हे भिक्षुओं, ये वे अन्य गहन और समझने में कठिन विषय हैं जिन्हें तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके घोषित किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

"कुछ तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो मृत्यु के बाद न तो चेतन और न ही अचेतन अस्तित्व के सिद्धांत की घोषणा करते हैं, और वे इसे आठ तरीकों से करते हैं। किस आधार पर?"

गलत दृष्टिकोण 43 - 50 : "वे घोषणा करते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा स्वस्थ है और न तो चेतन है और न ही अचेतन है और (1) भौतिक, (2) अभौतिक, (3) दोनों, (4) न तो, (5) परिमित, (6) अनंत, (7) दोनों, (8) न तो।"

"ये वे आठ तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण मृत्यु के बाद न तो चेतन और न ही अचेतन अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं... हे भिक्षुओं, ये वे अन्य विषय हैं, जो गहन हैं, जिन्हें समझना कठिन है... जिन्हें तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव कर घोषित किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

"कुछ भिक्षु, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो विनाशवादी हैं, जो प्राणियों के विनाश, संहार और अस्तित्वहीनता की घोषणा करते हैं, और वे ऐसा सात तरीकों से करते हैं। किस आधार पर?"

गलत मत 51 : "यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण यह मत व्यक्त करता है: 'चूँकि यह आत्मा भौतिक है, चार महा तत्वों से बनी है, माता-पिता की उपज है, शरीर के टूटने पर नष्ट हो जाती है और मृत्यु के बाद अस्तित्वहीन हो जाती है। इस प्रकार यह आत्मा नष्ट हो जाती है।' कुछ लोग इसी प्रकार प्राणियों के विनाश, संहार और अस्तित्वहीनता की घोषणा करते हैं।"
गलत मत 52 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: 'महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा एक आत्म है। मैं इसका खंडन नहीं करता। लेकिन वह आत्म पूरी तरह से नष्ट नहीं होता। क्योंकि एक और आत्म है, दिव्य, भौतिक, इंद्रिय-क्षेत्र से संबंधित, वास्तविक भोजन से पोषित। आप इसे नहीं जानते या देखते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ। शरीर के टूटने पर यही आत्म नष्ट होता है...'
गलत मत 53 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा एक आत्मा है। मैं इससे इनकार नहीं करता। लेकिन वह आत्मा पूरी तरह से नष्ट नहीं होती। क्योंकि एक और आत्मा है, दिव्य, भौतिक, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों से परिपूर्ण, किसी भी इंद्रिय अंग में दोषरहित... शरीर के टूटने पर यही आत्मा नष्ट होती है..."

गलत मत 54 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: "महोदय, जैसा आप कहते हैं, वैसा ही एक आत्म है... एक और आत्म है जो शारीरिक संवेदनाओं से पूरी तरह परे जाकर, सभी प्रतिरोध की भावना के लुप्त होने और विविधता की धारणा के प्रति अनासक्ति से, यह देखते हुए कि अंतरिक्ष अनंत है, अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को जान लेता है। यही वह आत्म है जो शरीर के विखंडन के समय नष्ट हो जाता है..."
गलत मत 55 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: "एक अन्य आत्मा है जो अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र से पूर्णतः परे जाकर, यह देखकर कि चेतना अनंत है, अनंत चेतना के क्षेत्र को प्राप्त कर लेती है। शरीर के विखंडन के समय यही आत्मा नष्ट हो जाती है..."
गलत मत 56 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: "एक और आत्मा है जो अनंत चेतना के क्षेत्र से पूर्णतः परे जाकर, यह देखकर कि कुछ भी नहीं है, निराकारता के क्षेत्र को जान लेती है। शरीर के विखंडन के समय यही आत्मा नष्ट हो जाती है..."
गलत मत 57 : एक अन्य व्यक्ति उससे कहता है: "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा एक आत्मा है। मैं इसका खंडन नहीं करता। परन्तु वह आत्मा पूर्णतः नष्ट नहीं होती। क्योंकि एक अन्य आत्मा है जो निरर्थकता के क्षेत्र से पूर्णतः परे जाकर और यह देखकर कि 'यह शांत है, यह उदात्त है', न बोध-न अबोध के क्षेत्र को प्राप्त कर लेती है। आप इसे नहीं जानते या देखते, परन्तु मैं जानता हूँ। शरीर के विखंडन के समय यही आत्मा नष्ट हो जाती है और मृत्यु के बाद अस्तित्वहीन हो जाती है। इस प्रकार आत्मा पूर्णतः नष्ट हो जाती है।" कुछ लोग इसी प्रकार प्राणियों के विनाश, संहार और अस्तित्वहीनता का प्रचार करते हैं।

"ये वे सात तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण प्राणियों के विनाश, संहार और अस्तित्वहीनता के सिद्धांत का प्रचार करते हैं... इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं... हे भिक्षुओं, ये वे अन्य गहन, समझने में कठिन विषय हैं, जिन्हें तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके घोषित किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

"कुछ भिक्षु, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो वर्तमान समय में निर्वाण के उद्घोषक हैं, और जो पांच तरीकों से किसी भी विद्यमान प्राणी के लिए वर्तमान समय में निर्वाण की घोषणा करते हैं। किस आधार पर?"

गलत मत 58 : "यहाँ एक तपस्वी या ब्राह्मण यह मत व्यक्त करता है: जब यह आत्मा, पंच प्रकार के इंद्रिय सुखों से परिपूर्ण होकर, उनमें लिप्त होती है, तभी आत्मा को यहीं और अभी सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है। कुछ लोग ऐसा कहते हैं।"
गलत मत 59 : एक अन्य व्यक्ति उनसे कहता है, "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा आत्म है। मैं इससे इनकार नहीं करता। लेकिन वह स्थान नहीं है जहाँ आत्म को यहीं और अभी सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है। ऐसा क्यों? क्योंकि, महाराज, इंद्रिय-इच्छाएँ क्षणभंगुर, पीड़ादायक और परिवर्तनशील होती हैं, और उनके परिवर्तन और रूपांतरण से दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और कष्ट उत्पन्न होते हैं। लेकिन जब यह आत्म, इंद्रिय-इच्छाओं से विरक्त होकर, अस्वास्थ्यकर अवस्थाओं से विरक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो चिंतन और मनन तथा वैराग्य से उत्पन्न आनंद और प्रसन्नता से युक्त होता है, तभी आत्मा को यहीं और अभी सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है।"
गलत मत 60 : एक अन्य व्यक्ति उनसे कहता है, "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा ही एक आत्म होता है। लेकिन वह वह अवस्था नहीं है जब आत्म निर्वाण प्राप्त करता है। ऐसा क्यों? क्योंकि चिंतन और मनन के कारण वह अवस्था स्थूल मानी जाती है। परन्तु जब आत्म चिंतन और मनन के शांत होने से दूसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर हो जाता है, आंतरिक शांति और मन की एकता से युक्त, जो चिंतन और मनन से मुक्त होती है और एकाग्रता से उत्पन्न होती है, और आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण होती है, तभी आत्म सर्वोच्च निर्वाण को यहीं और अभी प्राप्त करता है।"
गलत मत 61 : एक अन्य व्यक्ति उनसे कहता है: "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा ही एक आत्म है। लेकिन वह आत्म निर्वाण की प्राप्ति का समय नहीं है। ऐसा क्यों? क्योंकि आनंद की उपस्थिति के कारण मानसिक उल्लास होता है, और वह अवस्था स्थूल मानी जाती है। परन्तु जब आत्म, आनंद के कम होने के साथ, समभाव में, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक होकर, अपने शरीर में उस आनंद का अनुभव करता है जिसके विषय में ऋषियों ने कहा है: "सुखद है वह जो समभाव और सचेतनता रखता है, और इस प्रकार तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, तब आत्म सर्वोच्च निर्वाण को यहीं और अभी प्राप्त करता है।"
गलत मत क्रमांक 62 : एक अन्य व्यक्ति उनसे कहता है, "महोदय, जैसा आप कहते हैं वैसा आत्म है। मैं इससे इनकार नहीं करता। लेकिन वह स्थान नहीं है जहाँ आत्म को वर्तमान क्षण में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है। ऐसा क्यों? क्योंकि मन में आनंद का विचार होता है, और वह अवस्था स्थूल मानी जाती है। परन्तु जब सुख-दुख का त्याग करके, पूर्व के सुख-दुख के लुप्त होने पर, व्यक्ति चौथे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो समभाव और जागरूकता से शुद्ध होता है, वहीं पर आत्मा को वर्तमान क्षण में सर्वोच्च निर्वाण प्राप्त होता है।" कुछ लोग इसी प्रकार किसी सजीव प्राणी के लिए वर्तमान क्षण में सर्वोच्च निर्वाण की घोषणा करते हैं।

"ये वे पाँच तरीके हैं जिनसे ये तपस्वी और ब्राह्मण यहीं और अभी निर्वाण के सिद्धांत का प्रचार करते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध) इसे समझते हैं..."

"भविष्य के बारे में निश्चित धारणा रखने वाले वे तपस्वी और ब्राह्मण, जो भविष्य के बारे में चिंतनशील हैं, इन चौवालीस तरीकों से भविष्य के बारे में विभिन्न काल्पनिक विचार प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत इसे समझते हैं..."

"ये वे बासठ तरीके हैं जिनसे अतीत, भविष्य या दोनों के बारे में चिंतन करने वाले तपस्वी और ब्राह्मण इन विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा कोई और तरीका नहीं है।"

"हे भिक्षुओं, तथागत यह समझते हैं: इन दृष्टिकोणों को ग्रहण करके और इनका पालन करके परलोक में अमुक गंतव्य प्राप्त किया जा सकता है। तथागत यह जानते हैं, और इससे भी अधिक, परन्तु वे इस ज्ञान से आसक्त हैं। इस प्रकार अनासक्त होकर उन्होंने स्वयं पूर्ण शांति का अनुभव किया है, और भावों के उत्पन्न होने और नष्ट होने, उनके आकर्षण, खतरे और उनसे मुक्ति को सत्यतः समझकर तथागत पूर्णतः मुक्त हो गए हैं।"

"ये, भिक्षुओं, वे अन्य विषय हैं, जो गहन, देखने में कठिन, समझने में कठिन, शांतिपूर्ण, उत्कृष्ट, मात्र विचार से परे, सूक्ष्म, ज्ञानियों द्वारा अनुभव किए जाने योग्य हैं, जिनका तथागत ने अपने अलौकिक ज्ञान से अनुभव करके प्रचार किया है, और जिनके बारे में तथागत की सच्ची प्रशंसा करने वाले उचित ही बोलेंगे।"

निष्कर्ष

गलत दृष्टिकोण 1-4 : "इस प्रकार, भिक्षुओं, जब वे तपस्वी और ब्राह्मण जो शाश्वतवादी हैं, आत्मा और संसार की शाश्वतता को चार तरीकों से घोषित करते हैं, तो यह केवल उन लोगों की भावना है जो नहीं जानते और देखते हैं, लालसा में डूबे लोगों की चिंता और दुविधा है।"

गलत दृष्टिकोण 5 - 8 : "जब आंशिक रूप से शाश्वतवादी और आंशिक रूप से गैर-शाश्वतवादी लोग स्वयं और दुनिया की आंशिक शाश्वतता और आंशिक गैर-शाश्वतता की चार तरीकों से घोषणा करते हैं, तो यह केवल उन लोगों की भावना है जो जानते और देखते नहीं हैं..."

गलत दृष्टिकोण 9-12 : "जब परिमिततावादी और अनंततावादी चार आधारों पर दुनिया की परिमितता और अनंतता की घोषणा करते हैं, तो यह केवल उन लोगों की भावना है जो जानते और देखते नहीं हैं..."

गलत दृष्टिकोण 13 - 16 : "जब जो लोग ईल की तरह छटपटाते हैं वे चार आधारों पर टालमटोल भरे बयान देते हैं और ईल की तरह छटपटाते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 17 - 18 : "जब संयोग उत्पत्तिवादी दो आधारों पर स्वयं और दुनिया की संयोग उत्पत्ति की घोषणा करते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 1 - 18 : "जब अतीत के बारे में अटकलबाज़, अतीत के बारे में निश्चित विचार रखते हुए, अतीत के बारे में अठारह अलग-अलग तरीकों से विभिन्न काल्पनिक सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं, तो यह केवल उन लोगों की भावना है जो नहीं जानते और देखते हैं, लालसा में डूबे लोगों की चिंता और दुविधा है।"

गलत दृष्टिकोण 19 - 34 : "जब चेतनापूर्ण मृत्युोत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करने वाले लोग सोलह अलग-अलग तरीकों से ऐसा करते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 35 - 42 : "जब अचेतन मृत्युोत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करने वाले लोग इसे आठ अलग-अलग तरीकों से करते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 43 - 50 : "जब वे लोग जो न तो सचेत और न ही अचेत मृत्युोत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करते हैं, ऐसा आठ तरीकों से करते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 51 - 57 : "जब विनाशवादी सात तरीकों से प्राणियों के विनाश, संहार और अस्तित्वहीनता की घोषणा करते हैं, तो यह केवल एक भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 58 - 62 : "जब निर्वाण के उद्‌घोषक यहाँ और अभी एक विद्यमान प्राणी के लिए पाँच आधारों पर निर्वाण की घोषणा करते हैं, तो वह केवल भावना है..."

गलत दृष्टिकोण 19 - 62 : "जब वे लोग जो भविष्य के बारे में चौवालीस अलग-अलग तरीकों से अटकलें लगाते हैं..."

गलत दृष्टिकोण 1 - 62 : "जब वे तपस्वी और ब्राह्मण जो अतीत, भविष्य या दोनों के बारे में अटकलें लगाते हैं, निश्चित दृष्टिकोण रखते हुए, बासठ अलग-अलग तरीकों से विचार प्रस्तुत करते हैं, तो यह केवल उन लोगों की भावना है जो नहीं जानते और नहीं देखते, लालसा में डूबे लोगों की चिंता और दुविधा है।"

"जब वे तपस्वी और ब्राह्मण जो शाश्वतवादी हैं, चार तरीकों से आत्मा और संसार की शाश्वतता की घोषणा करते हैं, तो वह संपर्क द्वारा निर्धारित होता है।"

"जब वे लोग जो आंशिक रूप से शाश्वतवादी और आंशिक रूप से गैर-शाश्वतवादी हैं... "जब वे लोग जो परिमितवादी और अनंतवादी हैं... "जब वे लोग जो ईल-रेगलर्स हैं... "जब वे लोग जो संयोग-उत्पत्तिवादी हैं... "जब वे लोग जो अठारह तरीकों से अतीत के बारे में अटकलें लगाते हैं... "जब वे लोग जो सचेत मृत्योत्तर अस्तित्व के सिद्धांत की घोषणा करते हैं... "जब वे लोग जो अचेतन मृत्योत्तर अस्तित्व के सिद्धांत की घोषणा करते हैं..."

"जब वे लोग जो न तो सचेत और न ही अचेत मृत्योत्तर अस्तित्व के सिद्धांत का प्रचार करते हैं..."

"जब वे लोग जो विनाशवादी हैं..." "जब वे लोग जो वर्तमान में और यहीं निर्वाण की घोषणा करते हैं..." "जब वे लोग जो भविष्य के बारे में अटकलें लगाते हैं..."

"जब वे तपस्वी और ब्राह्मण जो अतीत, भविष्य या दोनों के बारे में चिंतनशील होते हैं और जिनके निश्चित विचार होते हैं, बासठ अलग-अलग तरीकों से विचार प्रस्तुत करते हैं, तो यह संपर्क से प्रभावित होता है।"

"यह असंभव है कि ये सभी (शाश्वतवादी और बाकी सभी) बिना संपर्क के उस भावना का अनुभव करें।"

इन सभी के संबंध में..., वे छह इंद्रिय-आधारों के माध्यम से बार-बार संपर्क द्वारा इन भावनाओं का अनुभव करते हैं; भावनाएँ लालसा को जन्म देती हैं; लालसा आसक्ति को जन्म देती है; आसक्ति जन्म को जन्म देती है; जन्म वृद्धावस्था और मृत्यु, दुःख, विलाप, उदासी और पीड़ा को जन्म देता है। हे भिक्षुओं, जब कोई भिक्षु संपर्क के छह आधारों के उदय और अस्त होने, उनके आकर्षण और खतरे, और उनसे मुक्ति को उनके वास्तविक स्वरूप में समझ लेता है, तब वह उस ज्ञान को प्राप्त करता है जो इन सभी दृष्टियों से परे है।

"भूतकाल या भविष्य या दोनों के बारे में अटकलबाज़ी करने वाले जो भी तपस्वी और ब्राह्मण इस विषय पर अपने निश्चित मत रखते हैं और अटकलबाज़ी वाले विचार प्रस्तुत करते हैं, वे सभी बासठ भागों वाले जाल में फँसे हुए हैं, और जहाँ कहीं भी वे बाहर निकलने की कोशिश करते हैं, वे इस जाल में फँस जाते हैं और फंसे रहते हैं। जैसे एक कुशल मछुआरा या उसका शागिर्द पानी के एक छोटे से हिस्से को बारीक जाली वाले जाल से ढकते हुए सोचता है: 'इस पानी में चाहे जितने भी बड़े जीव हों, वे सभी जाल में फँस गए हैं, फँस गए हैं और फंसे हुए हैं', ठीक वैसे ही इन सभी के साथ है: वे इस जाल में फँस गए हैं और फंसे हुए हैं।"

भिक्षुओं, तथागत (बुद्ध) का शरीर उस बंधन के टूटने के साथ खड़ा है जो उन्हें अस्तित्व से बांधता था। जब तक शरीर विद्यमान रहेगा, देव और मनुष्य उन्हें दर्शन देंगे। परन्तु शरीर के विखंडन और जीवनकाल की समाप्ति पर, देव और मनुष्य उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएंगे। भिक्षुओं, जैसे आमों के गुच्छे की डंडी कट जाने पर सारे आम उसके साथ गिर जाते हैं, ठीक वैसे ही तथागत का अस्तित्व से बंधन टूट गया है। जब तक शरीर विद्यमान रहेगा, देव और मनुष्य उन्हें दर्शन देंगे। परन्तु शरीर के विखंडन और जीवनकाल की समाप्ति पर, देव और मनुष्य उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएंगे।

ये शब्द सुनकर पूज्य आनंद ने भगवान से कहा, "हे भगवान, यह अद्भुत है, यह आश्चर्यजनक है। धम्म की इस व्याख्या का नाम क्या है?"

"आनंद, तुम्हें धम्म की यह व्याख्या लाभ के जाल, धम्म के जाल, सर्वोच्च जाल, विचारों के जाल, या युद्ध में अतुलनीय विजय के रूप में याद हो सकती है।"

इस प्रकार भगवान ने कहा, और भिक्षु उनके वचनों से प्रसन्न और आनंदित हुए। और जब यह व्याख्या सुनाई जा रही थी, तब दस हजार की विश्व-व्यवस्था कांप उठी।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.2: समन्नाफला सुत्त (डीएन 2)

तर्वस्तु

मैंने सुना है कि एक बार भगवान बुद्ध राजगृह में जीवक कुमारभच्च के आम के बाग में, 1250 भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ ठहरे हुए थे। उस समय—वर्षा ऋतु के चौथे माह की पूर्णिमा की रात—मगध के राजा अजातसत्तु, जो रानी विदेह के पुत्र थे, अपने महल की छत पर अपने मंत्रियों से घिरे बैठे थे। तभी उन्हें प्रेरणा मिली और उन्होंने कहा, "यह चांदनी रात कितनी अद्भुत है! कितनी सुंदर... कितनी प्यारी... कितनी प्रेरणादायक... कितनी शुभ है यह चांदनी रात! आज रात हमें किस पुरोहित या ध्यानमग्न व्यक्ति के पास जाना चाहिए जो हमारे मन को ज्ञान और शांति प्रदान कर सके?"

यह सुनकर मंत्रियों में से एक ने राजा से कहा, “महाराज, पुराण कस्सपा हैं, जो एक समुदाय के नेता, एक समूह के अगुवा, एक समूह के गुरु, सम्मानित और प्रसिद्ध, जनमानस द्वारा पवित्र माने जाने वाले व्यक्ति हैं। वे वृद्ध हैं, देहांत में जा चुके हैं, जीवन के अंतिम पड़ाव पर हैं। महाराज, आपको उनसे मिलना चाहिए। शायद, यदि आप उनसे मिलें, तो वे आपको ज्ञान प्रदान करें और आपके मन को शांति दें।”
यह सुनकर राजा चुप रहे।
तब एक अन्य मंत्री ने राजा से कहा, “महाराज, मक्खली गोसाला हैं... महाराज, अजित केसकंबलिन हैं... महाराज, पकुधा कच्चायना हैं... महाराज, संजय बेलत्थपुत्त हैं... महाराज, निगंथ नटपुत्त हैं, जो एक समुदाय के नेता, एक समूह के प्रमुख, एक समूह के शिक्षक, सम्मानित और प्रसिद्ध, जनमानस द्वारा पवित्र माने जाते हैं। वे वृद्ध हैं, देहांत में हैं, जीवन के अंतिम पड़ाव पर हैं। महाराज, आपको उनसे मिलना चाहिए। शायद, यदि आप उनसे मिलें, तो वे आपको ज्ञान प्रदान करें और आपके मन को शांति दें।”
यह सुनकर राजा चुप रहे।
इस पूरे समय जीवक कुमारभच्च राजा से कुछ दूरी पर चुपचाप बैठे रहे। तब राजा ने उनसे कहा, "मित्र जीवक, तुम चुप क्यों बैठे हो?"
महाराज, मेरे आम के बाग में एक विशाल भिक्षु समुदाय (कुल 1250 भिक्षु) के साथ, योग्य और पूर्णतः आत्मज्ञानी भगवान विराजमान हैं। इस भगवान के विषय में यह प्रशंसनीय ख्याति फैली हुई है: 'निःसंदेह, भगवान योग्य और पूर्णतः आत्मज्ञानी हैं, स्पष्ट ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण हैं, सुगठित हैं, ब्रह्मांड के ज्ञाता हैं, सरल लोगों के अद्वितीय प्रशिक्षक हैं, मनुष्य और दिव्य प्राणियों के गुरु हैं, जागृत और धन्य हैं।' महाराज, आपको उनसे मिलना चाहिए। शायद, यदि आप उनसे मिलें, तो वे आपको ज्ञान प्रदान करें और आपके मन को शांति दें।
"तो फिर, मेरे मित्र जीवक, सवारी के लिए हाथी तैयार करवा लो।"
"जैसा आप कहें, महाराज" कहकर उत्तर देने के बाद, पाँच सौ मादा हाथियों के साथ-साथ राजा के निजी हाथी को भी तैयार करवाकर, जीवक ने राजा से कहा: "महाराज, आपके सवारी के हाथी तैयार हैं। अब आप जो चाहें करें।"
फिर राजा ने अपनी पाँच सौ स्त्रियों को पाँच सौ हाथियों पर सवार कराया—प्रत्येक पर एक—और अपने निजी हाथी पर सवार होकर, राजसी ठाठ-बाठ के साथ राजधानी से मशालें लिए सेवकों के साथ जीवक कोमरभच्च के आम के बाग की ओर प्रस्थान किया। परन्तु जब राजा आम के बाग से कुछ ही दूर था, तो वह भय और व्याकुल हो उठा, उसके रोंगटे खड़े हो गए। भयभीत, व्याकुल, रोंगटे खड़े हुए उसने जीवक कोमरभच्च से कहा, “मित्र जीवक, तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो? तुम मुझे विश्वासघात तो नहीं कर रहे हो? तुम मुझे मेरे शत्रुओं के हवाले तो नहीं कर रहे हो? इतने बड़े भिक्षु समुदाय—कुल 1250—में छींकने की कोई आवाज नहीं, खाँसने की कोई आवाज नहीं, कोई आवाज नहीं कैसे हो सकती?”
"हे महाराज, भयभीत न हों। भयभीत न हों। मैं आपको धोखा नहीं दे रहा हूँ, न ही आपके साथ विश्वासघात कर रहा हूँ, और न ही आपको आपके शत्रुओं के हवाले कर रहा हूँ। आगे बढ़ें, महाराज, आगे बढ़ें! मंडप में जलते हुए दीपक हैं।"
फिर राजा अपने हाथी पर सवार होकर, जहाँ तक ज़मीन अनुमति देती थी, वहाँ तक गए, फिर घोड़े से उतरे और पैदल चलकर मंडप के द्वार तक पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जीवक से पूछा, "हे मित्र जीवक, भगवान कहाँ हैं?"
"वह भगवान बुद्ध हैं, महान राजा, जो मध्य स्तंभ के सहारे पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे हैं और भिक्षुओं के समुदाय से घिरे हुए हैं।"
तब राजा भगवान बुद्ध के पास पहुँचे और वहाँ पहुँचकर एक तरफ खड़े हो गए। वहाँ खड़े होकर, पूर्ण मौन में बैठे भिक्षुओं के समुदाय को देखकर, जो किसी झील की तरह शांत थे, उन्हें प्रेरणा मिली और उन्होंने कहा: "हे मेरे पुत्र, राजकुमार उदयिभद्दा, को भी वही शांति प्राप्त हो जो इस भिक्षुओं के समुदाय को प्राप्त है!"
[भगवान बुद्ध ने कहा:] "हे महान राजा, क्या आप अपनी भावनाओं के साथ आए हैं?"
हे भगवान, मेरे पुत्र, राजकुमार उदयिभद्दा, मुझे अत्यंत प्रिय हैं। ईश्वर करे कि उन्हें भी वही शांति प्राप्त हो जो इस भिक्षु समुदाय को वर्तमान में प्राप्त है!
फिर, भगवान बुद्ध को प्रणाम करके और हृदय पर हाथ जोड़कर भिक्षुओं के समुदाय को प्रणाम करते हुए, वे एक तरफ बैठ गए। वहाँ बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "मैं भगवान बुद्ध से एक विषय के बारे में पूछना चाहता हूँ, यदि वे मुझे अपना प्रश्न समझाने का अवसर दें।"
"हे महाराज, जो चाहें मांगिए।"

राजा का प्रश्न

हे भगवान, यहाँ कई सामान्य शिल्पकार हैं: हाथी प्रशिक्षक, घोड़े प्रशिक्षक, रथ चालक, धनुर्धर, ध्वजवाहक, शिविर सेनापति, आपूर्ति दल के अधिकारी, उच्च राजसी अधिकारी, कमांडो, सैन्य वीर, कवचधारी योद्धा, चमड़े के वस्त्रधारी योद्धा, घरेलू दास, हलवाई, नाई, स्नानागार, रसोइया, माला बनाने वाले, धोबी, बुनकर, टोकरी बनाने वाले, कुम्हार, गणनाकार, लेखाकार और इसी प्रकार के अन्य शिल्पकार। वे अपने शिल्पों के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो इस समय और यहीं दिखाई देते हैं। वे स्वयं को, अपने माता-पिता, पत्नियों और बच्चों को, अपने मित्रों और सहकर्मियों को सुख और आनंद प्रदान करते हैं। वे पुरोहितों और ध्यानियों को उत्कृष्ट

भेंट अर्पित करते हैं, जो स्वर्ग की ओर ले जाती है, सुख प्रदान करती है और स्वर्गीय पुनर्जन्म के लिए सहायक होती है। हे भगवान, क्या इस समय और यहीं दिखाई देने वाले ध्यानमय जीवन के ऐसे ही किसी फल को दर्शाना संभव है?
"हे महाराज, क्या आपको याद है कि आपने कभी अन्य पुजारियों और ध्यानियों से यह प्रश्न पूछा था?"
"हा करता हु।"
"अगर इससे आपको कोई परेशानी नहीं है, तो उन्होंने क्या जवाब दिया?"
"नहीं, मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है कि भगवान बुद्ध—या भगवान बुद्ध के समान कोई—कहीं भी बैठे हों।"
"तो फिर बोलिए, महान राजा।"

नॉन एक्शन

"हे भगवान, एक बार मैं पुराण कस्सपा के पास गया और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय कस्सपा, ये साधारण शिल्पकार हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो इस समय और यहीं दिखाई देता है... क्या संभव है, आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही फल को बता सकते हैं, जो इस समय और यहीं दिखाई देता है?'"

जब यह कहा गया, तो पुराण कस्सपा ने मुझसे कहा, 'हे महाराज, स्वयं कार्य करने या दूसरों से कार्य करवाने में, अंग-भंग करने या दूसरों से अंग-भंग करवाने में, यातना देने या दूसरों से यातना दिलवाने में, दुःख पहुँचाने या दूसरों से दुःख दिलवाने में, पीड़ा पहुँचाने या दूसरों से पीड़ा दिलवाने में, डराने या दूसरों से डराने-धमकाने में, जान लेने में, बिना माँगे वस्तु लेने में, घरों में सेंध लगाने में, धन लूटने में, चोरी करने में, राजमार्गों पर घात लगाने में, व्यभिचार करने में, झूठ बोलने में—कोई बुराई नहीं होती। यदि कोई तेज धार वाले चक्र से इस पृथ्वी पर सभी जीवों को मांस के एक ढेर में बदल दे, तो भी उस कारण से कोई बुराई नहीं होगी, कोई बुराई नहीं आएगी। यहाँ तक कि यदि कोई गंगा के दाहिने किनारे पर चलते हुए हत्या करे और दूसरों से हत्या करवाए, अंग-भंग करे और दूसरों से अंग-भंग करवाए, यातना दे और दूसरों से यातना दिलवाए—तो भी उस कारण से कोई बुराई नहीं होगी, कोई बुराई नहीं आएगी। यहाँ तक कि यदि कोई बाएं किनारे पर चलते हुए भी—तो भी कोई बुराई नहीं होगी। गंगा के दान में, दान देना और दूसरों से दान लेना, बलिदान करना और दूसरों से बलिदान करवाना, इससे कोई पुण्य नहीं होगा, न ही पुण्य प्राप्त होगा। उदारता, आत्मसंयम, संयम और सत्यवादी वाणी से भी कोई पुण्य नहीं होता, न ही पुण्य प्राप्त होता है।

इस प्रकार, जब पुराण कस्सपा से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने निष्क्रियता से उत्तर दिया। जैसे कोई व्यक्ति आम के बारे में पूछे जाने पर ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर आम का उत्तर दे: ठीक उसी प्रकार, जब पुराण कस्सपा से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने निष्क्रियता से उत्तर दिया। मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले एक पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति की निंदा करने के बारे में कैसे सोच सकता है?' फिर भी, न तो मुझे पुराण कस्सपा के शब्दों से प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। न प्रसन्नता हुई और न ही विरोध, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।

भ्रमण के माध्यम से शुद्धि

एक बार मैं मखली गोसाला के पास पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय गोसाला, ये साधारण कारीगर हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है... क्या आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही फल को बता सकते हैं, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हो?'

जब यह कहा गया, तो मखली गोसला ने मुझसे कहा, 'हे महाराज, प्राणियों के अपवित्र होने का कोई कारण नहीं है, कोई आवश्यक शर्त नहीं है। प्राणी बिना किसी कारण, बिना किसी आवश्यक शर्त के अपवित्र होते हैं। प्राणियों के शुद्ध होने का कोई कारण नहीं है, कोई आवश्यक शर्त नहीं है। प्राणी बिना किसी कारण, बिना किसी आवश्यक शर्त के शुद्ध होते हैं। कुछ भी स्वयं के कारण नहीं है, कुछ भी अन्य के कारण नहीं है, कुछ भी मनुष्य के कारण नहीं है। न कोई शक्ति है, न कोई प्रयास है, न कोई मानवीय ऊर्जा है, न कोई मानवीय परिश्रम है। सभी जीवित प्राणी, सभी जीव, सभी आत्माएं शक्तिहीन, बलहीन, प्रयासहीन हैं। भाग्य, संयोग और प्रकृति के परिवर्तन के अधीन, वे जन्म के छह महान वर्गों में सुख और दुख के प्रति संवेदनशील हैं।'

उत्पत्ति के 1,406,600 प्रमुख तरीके हैं। कर्म के 500 प्रकार हैं, पाँच प्रकार और तीन प्रकार; पूर्ण कर्म और अर्ध कर्म। 62 मार्ग, 62 उप-युग, जन्म के छह प्रमुख वर्ग, मनुष्य के आठ वर्ग, आजीविका के 4,900 तरीके, 4,900 प्रकार के घुमक्कड़, 4,900 नाग-निवास, 2,000 शक्तियाँ, 3,000 नरक, 36 मृदा लोक, बोधगम्य प्राणियों के सात क्षेत्र, अबोधगम्य प्राणियों के सात क्षेत्र, सात प्रकार के जोड़दार पौधे, सात प्रकार के देव, सात प्रकार के मनुष्य, सात प्रकार के राक्षस, सात महान झीलें, सात प्रमुख गांठें, सात छोटी गांठें, 700 प्रमुख चट्टानें,

700 छोटी चट्टानें, 700 प्रमुख स्वप्न, 700 छोटे स्वप्न, 84,000 महान युग हैं। इन सब से होकर गुजरते हुए, बुद्धिमान और मूर्ख दोनों ही समान रूप से पीड़ा का अंत करेंगे।

यद्यपि कोई यह सोच सकता है, "इस नैतिकता, इस अभ्यास, इस तपस्या या इस पवित्र जीवन के
से मैं अपरिपक्व कर्मों को परिपक्व करूँगा और परिपक्व कर्मों को स्पर्श करते ही नष्ट कर दूँगा"—यह असंभव है। सुख और दुख मापे हुए हैं, जीवन का प्रवाह अपनी सीमाओं में स्थिर है। न तो यह घटता है, न बढ़ता है, न ही इसकी गति बढ़ती है, न ही घटती है। जैसे धागे का गोला फेंकने पर खुलते ही समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार, जन्म-मृत्यु के चक्र में भटकते हुए, बुद्धिमान और मूर्ख दोनों ही दुखों का अंत कर देते हैं।

इस प्रकार, जब मखली गोसाला से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने भ्रमण के माध्यम से शुद्धि का उत्तर दिया। ठीक वैसे ही जैसे किसी व्यक्ति से आम के बारे में पूछे जाने पर वह ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर वह आम का उत्तर दे। उसी प्रकार, जब मखली गोसाला से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने भ्रमण के माध्यम से शुद्धि का उत्तर दिया। मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले एक पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति की निंदा करने के बारे में कैसे सोच सकता है?' फिर भी, न तो मुझे मखली गोसाला के शब्दों से प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। न प्रसन्नता हुई और न ही विरोध, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।

विनाश

एक बार मैं अजित केसकंबलिन के पास गया और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय अजित, ये साधारण शिल्पकार हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है... क्या आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही फल को बता सकते हैं, जो वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हो?'

जब यह कहा गया, तो अजित केसकंबलिन ने मुझसे कहा, 'हे महाराज, न कुछ दिया जाता है, न कुछ अर्पित किया जाता है, न कुछ बलिदान किया जाता है। अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल या परिणाम नहीं होता। न यह लोक है, न परलोक, न माता है, न पिता, न स्वतः पुनर्जन्म लेने वाले प्राणी; न कोई पुरोहित या ध्यानमग्न व्यक्ति जो उचित मार्ग अपनाकर और उचित अभ्यास करके इस लोक और परलोक का प्रत्यक्ष ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। मनुष्य चार प्राथमिक तत्वों का मिश्रण है। मृत्यु के समय, शरीर में स्थित पृथ्वी (शरीर के भीतर) पृथ्वी-पदार्थ में विलीन हो जाती है। अग्नि (शरीर के भीतर) अग्नि-पदार्थ में विलीन हो जाती है। द्रव (शरीर के भीतर) द्रव-पदार्थ में विलीन हो जाता है। वायु (शरीर के भीतर) वायु-पदार्थ में विलीन हो जाती है। इंद्रियां अंतरिक्ष में बिखर जाती हैं। चार पुरुष, जिनमें से पांचवां शववाहक होता है, शव को ले जाते हैं। शव की स्तुति केवल श्मशान भूमि तक ही सुनाई देती है। अस्थियां कबूतर के रंग की हो जाती हैं। चढ़ावे राख में विलीन हो जाते हैं।' उदारता का उपदेश मूर्ख देते हैं। मृत्यु के बाद अस्तित्व की बात करने वालों के शब्द झूठे और खोखले हैं। शरीर के नष्ट होने के साथ ही बुद्धिमान और मूर्ख, दोनों ही नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु के बाद उनका कोई अस्तित्व नहीं रहता।

"इस प्रकार, जब अजित केसकंबलिन से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने निःसंयम का उत्तर दिया। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति आम के बारे में पूछे जाने पर ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर आम का उत्तर दे। उसी प्रकार, जब अजित केसकंबलिन से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने निःसंयम का उत्तर दिया। मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले एक पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति की निंदा करने के बारे में कैसे सोच सकता है?' फिर भी, न तो मुझे अजित केसकंबलिन के शब्दों से प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। न प्रसन्नता हुई और न ही विरोध, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।"

असंबंध

एक बार मैं पकुधा कच्चायना के पास पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय कच्चायना, ये साधारण शिल्पकार हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो इस पल में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है... क्या आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही किसी फल को बता सकते हैं, जो इस पल में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हो?'

जब यह कहा गया, तो पकुधा कच्चयन ने मुझसे कहा, 'हे महाराज, ये सात पदार्थ हैं - अजन्मे, अविभाज्य, बिना सृष्टिकर्ता के, निर्जीव, पर्वत शिखर के समान स्थिर, स्तंभ के समान दृढ़ - जो न तो बदलते हैं, न एक दूसरे में हस्तक्षेप करते हैं, और न ही एक दूसरे को सुख, दुख या दोनों का कारण बन सकते हैं। वे कौन से सात पदार्थ हैं? पृथ्वी पदार्थ, द्रव पदार्थ, अग्नि पदार्थ, वायु पदार्थ, सुख, दुख, और आत्मा सातवां पदार्थ है। ये सात पदार्थ हैं - अजन्मे, अविभाज्य, अविभाज्य, बिना सृष्टिकर्ता के, निर्जीव, पर्वत शिखर के समान स्थिर,

स्तंभ के समान दृढ़ - जो न तो बदलते हैं, न एक दूसरे में हस्तक्षेप करते हैं, और न ही एक दूसरे को सुख, दुख या दोनों का कारण बन सकते हैं।'

"और उनमें न तो कोई हत्यारा है और न ही हत्या करवाने वाला, न कोई सुनने वाला है और न ही सुनने का कारण बनने वाला, न कोई जानने वाला है और न ही जानने का कारण बनने वाला। जब कोई किसी दूसरे व्यक्ति का सिर काटता है, तो उसमें किसी की जान लेने का कार्य नहीं होता। तलवार केवल सात पदार्थों के बीच से होकर गुजरती है।"

इस प्रकार, जब पाकुधा कच्चायना से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने अनासक्ति का भाव व्यक्त किया। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति आम के बारे में पूछे जाने पर ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर आम का उत्तर दे। उसी प्रकार, जब पाकुधा कच्चायना से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने अनासक्ति का भाव व्यक्त किया। मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले किसी पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति की निंदा कैसे कर सकता है?' फिर भी, न तो मुझे पाकुधा कच्चायना के शब्दों से प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। न प्रसन्नता हुई और न ही विरोध, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।

चौगुना संयम

एक बार मैं निगंथा नटपुत्त के पास पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय अग्गिवेसना, ये साधारण शिल्पकार हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है... क्या आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही किसी फल को बता सकते हैं, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हो?'

जब यह कहा गया, तो निगंथ नटपुत्त ने मुझसे कहा, 'हे महाराज, एक ऐसी स्थिति है जिसमें निगंथ—जो गाँठ रहित है—चार प्रकार के संयम से बंधा होता है। और निगंथ को चार प्रकार के संयम से कैसे बांधा जाता है? एक ऐसी स्थिति है जिसमें निगंथ सभी जल से अवरुद्ध होता है, सभी जल से जुड़ा होता है, सभी जल से शुद्ध होता है, सभी जल से परिपूर्ण होता है। इस प्रकार निगंथ को चार प्रकार के संयम से बांधा जाता है। जब निगंथ—जो गाँठ रहित है—इस प्रकार के चार प्रकार के संयम से बंधा होता है, तो उसे गाँठ रहित (निगंथ), नट (नटपुत्त) का पुत्र, अपने आप को पूर्ण, अपने आप को नियंत्रित और अपने आप को स्थापित करने वाला कहा जाता है।'

इस प्रकार, जब निगंथ नटपुत्त से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने चार प्रकार के संयम से उत्तर दिया। जैसे कोई व्यक्ति आम के बारे में पूछे जाने पर ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर आम का उत्तर दे: उसी प्रकार, जब निगंथ नटपुत्त से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो यहाँ और अभी दिखाई देता है, तो उन्होंने चार प्रकार के संयम से उत्तर दिया। मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले एक पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति की निंदा करने के बारे में कैसे सोच सकता है?' फिर भी, न तो मुझे निगंथ नटपुत्त के शब्दों से प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। न प्रसन्नता हुई और न ही विरोध, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।

बचाव

एक बार मैं संजय बेलात्थपुत्त के पास पहुँचा और वहाँ पहुँचकर उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया। सौहार्दपूर्ण अभिवादन और शिष्टाचार के आदान-प्रदान के बाद मैं एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे मैंने उनसे पूछा: 'आदरणीय संजय, ये साधारण शिल्पकार हैं... वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो इस पल में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है... क्या आदरणीय महोदय, आप चिंतनशील जीवन के ऐसे ही फल को इंगित कर सकते हैं, जो इस पल में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता हो?'

जब यह कहा गया, तो संजय बेलत्थपुत्त ने मुझसे कहा, 'यदि आप मुझसे पूछें कि क्या मृत्यु के बाद कोई दूसरा लोक है, यदि मैं मानता कि कोई दूसरा लोक है, तो क्या मैं आपको यह बताता? मुझे नहीं लगता। मैं उस तरह से नहीं सोचता। मैं इसके विपरीत नहीं सोचता। मैं नहीं सोचता। मैं नहीं सोचता कि कोई दूसरा लोक नहीं है। यदि आप मुझसे पूछें कि क्या कोई दूसरा लोक नहीं है... है भी और नहीं भी... न है भी और नहीं भी... क्या ऐसे प्राणी हैं जो जन्म-मृत्यु के बीच आते-जाते हैं... यदि नहीं हैं... है भी और नहीं भी... न हैं भी और नहीं भी... क्या तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान हैं... नहीं हैं भी... दोनों... न तो विद्यमान हैं और न ही मृत्यु के बाद विद्यमान हैं, क्या मैं आपको यह बताता? मुझे नहीं लगता। मैं उस तरह से नहीं सोचता। मैं इसके विपरीत नहीं सोचता। मैं नहीं सोचता कि कोई दूसरा लोक नहीं है। मैं नहीं सोचता कि कोई दूसरा लोक नहीं है।'

"इस प्रकार, जब संजय बेलात्थपुत्त से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, तो उन्होंने टालमटोल भरा उत्तर दिया। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति आम के बारे में पूछे जाने पर ब्रेडफ्रूट का उत्तर दे; या ब्रेडफ्रूट के बारे में पूछे जाने पर आम का उत्तर दे: ठीक उसी प्रकार, जब संजय बेलात्थपुत्त से ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछा गया, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, तो उन्होंने टालमटोल भरा उत्तर दिया। मेरे मन में यह विचार आया: 'इन पुरोहितों और ध्यानियों में यह

सबसे मूर्ख और भ्रमित है। ध्यानमग्न जीवन के फल के बारे में पूछे जाने पर, जो वर्तमान में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, वह टालमटोल कैसे कर सकता है?' फिर भी मेरे मन में यह विचार आया: 'मुझ जैसा कोई व्यक्ति अपने क्षेत्र में रहने वाले किसी पुरोहित या ध्यानी की निंदा करने के बारे में कैसे सोच सकता है?'" फिर भी, संजय बेलत्थपुत्त के शब्दों से न तो मुझे प्रसन्नता हुई और न ही मैंने उनका विरोध किया। प्रसन्नता और विरोध दोनों ही नहीं, मैं असंतुष्ट था। असंतुष्टि व्यक्त किए बिना, उनकी शिक्षा को स्वीकार किए बिना, उसे अपनाए बिना, मैं अपनी सीट से उठा और चला गया।

चिंतनशील जीवन का पहला प्रत्यक्ष फल

हे भगवान, मैं भगवान से यह भी पूछता हूँ: यहाँ कुछ सामान्य शिल्पकार हैं: हाथी प्रशिक्षक, घोड़े प्रशिक्षक, रथ चालक, धनुर्धर, ध्वजवाहक, शिविर प्रमुख, आपूर्ति दल के अधिकारी, उच्च राजसी अधिकारी, कमांडो, सैन्य वीर, कवचधारी योद्धा, चमड़े के वस्त्रधारी योद्धा, घरेलू दास, हलवाई, नाई, स्नानागार, रसोइया, माला बनाने वाले, धोबी, बुनकर, टोकरी बनाने वाले, कुम्हार, गणनाकार, लेखाकार, और इसी प्रकार के अन्य शिल्पकार। वे अपने शिल्प के फल से अपना जीवन यापन करते हैं, जो इस समय और यहीं दिखाई देता है। वे स्वयं को, अपने माता-पिता, पत्नियों और बच्चों को, अपने मित्रों और सहकर्मियों को सुख और आनंद प्रदान करते हैं। वे पुरोहितों और ध्यानियों को उत्कृष्ट भेंट अर्पित करते हैं, जो स्वर्ग की ओर ले जाती है, जिससे सुख प्राप्त होता है और जो स्वर्गीय पुनर्जन्म के लिए सहायक होता है। हे भगवान, क्या इस समय और यहीं दिखाई देने वाले ध्यानमय जीवन के ऐसे ही किसी फल को इंगित करना संभव है?

"जी हाँ, महाराज। लेकिन पहले, इस संबंध में, मैं आपसे एक प्रतिप्रश्न पूछूँगा। आप जैसे चाहें उत्तर दें। मान लीजिए कि आपका एक सेवक है: आपका दास, आपका कर्मचारी, जो सुबह आपसे पहले उठता है, शाम को आपके बाद ही सोता है, आपके हर आदेश का पालन करता है, हमेशा आपको प्रसन्न करने का प्रयास करता है, आपसे विनम्रता से बात करता है, और हमेशा आपके चेहरे के भावों पर नजर रखता है। उसके मन में यह विचार आएगा: 'क्या यह अद्भुत नहीं है? क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? - पुण्य कर्मों का परिणाम, उनका अंजाम।' क्योंकि यह राजा अजातसत्तु एक मनुष्य है, और मैं भी एक मनुष्य हूँ, फिर भी राजा अजातसत्तु पाँचों इंद्रियों से परिपूर्ण होकर आनंद लेता है - मानो किसी देवता की तरह - जबकि मैं उसका दास, उसका कर्मचारी हूँ... हमेशा उसके चेहरे के भावों पर नजर रखता हूँ। मुझे भी पुण्य कर्म करने चाहिए। क्या होगा यदि मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लूँ, गेरुए वस्त्र पहन लूँ, और बाहर निकल जाऊँ? गृहस्थ जीवन को संन्यासी जीवन में बदलना?

कुछ समय बाद वह अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश कर जाता है। इस प्रकार संन्यास लेने के बाद वह शरीर, वाणी और मन से संयमित रहता है, साधारण भोजन और आश्रय से संतुष्ट रहता है और एकांत में आनंदित होता है। मान लीजिए कि आपका कोई सेवक आपको सूचित करे: 'महाराज, आपको यह जानना चाहिए कि आपका वह सेवक—आपका दास, आपका कर्मचारी... जो सदा आपके चेहरे के भावों की प्रतीक्षा करता था... गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश कर गया है... साधारण भोजन और आश्रय से संतुष्ट रहता है और एकांत में आनंदित होता है।' क्या आप यह जानकर कहेंगे, 'उस सेवक को मेरे पास वापस लाओ। उसे फिर से मेरा दास, मेरा कर्मचारी बनाओ... जो सदा मेरे चेहरे के भावों की प्रतीक्षा करता रहे!'

"बिल्कुल नहीं, भगवान। बल्कि, मुझे ही उनके सामने नतमस्तक होना चाहिए, उनके आदर में उठ खड़ा होना चाहिए, उन्हें अपने आसन पर आमंत्रित करना चाहिए, उन्हें वस्त्र, भिक्षा, आवास और बीमारों के लिए औषधियों का उपहार स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करना चाहिए। और मैं ही उन्हें धार्मिक सुरक्षा, बचाव और संरक्षण प्रदान करूँगा।"

"तो हे महाराज, आपका क्या विचार है? ऐसी स्थिति में, क्या चिंतनशील जीवन का कोई प्रत्यक्ष फल होता है, या नहीं?"

"जी हां, भगवान। ऐसी स्थिति में, चिंतनशील जीवन का एक प्रत्यक्ष फल अवश्य ही दिखाई देता है।"

"हे महाराज, यह चिंतनशील जीवन का पहला फल है, जो वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, और मैं इसे आपको दिखा रहा हूँ।"

चिंतनशील जीवन का दूसरा प्रत्यक्ष फल

लेकिन क्या हे भगवान, चिंतनशील जीवन का एक और फल बताना संभव है, जो वर्तमान क्षण में ही दृश्यमान है?

"जी हाँ, महाराज। लेकिन पहले, इस संबंध में, मैं आपसे एक प्रतिप्रश्न पूछूँगा। आप जैसे चाहें उत्तर दें। मान लीजिए कि आपका कोई व्यक्ति है: एक किसान, एक गृहस्थ, राजकोष में करदाता। उसके मन में यह विचार आएगा: 'क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? क्या यह विस्मयकारी नहीं है? - पुण्य कर्मों का परिणाम, उनका अंजाम! क्योंकि यह राजा अजातसत्तु एक मनुष्य है, और मैं भी एक मनुष्य हूँ, फिर भी राजा अजातसत्तु पाँचों इंद्रियों से परिपूर्ण होकर आनंदित होते हैं - मानो किसी देवता की तरह - जबकि मैं एक किसान, एक गृहस्थ, राजकोष में करदाता हूँ। मुझे भी पुण्य कर्म करने चाहिए। क्या होगा यदि मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लूँ, गेरुए वस्त्र धारण कर लूँ और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाऊँ?'"

कुछ समय बाद वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे छोटी हो या बड़ी, त्याग देता है; अपने रिश्तेदारों के समूह, चाहे छोटे हों या बड़े, को छोड़ देता है; अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है। इस प्रकार संन्यास लेने के बाद वह शरीर, वाणी और मन से संयमित जीवन जीता है, साधारण भोजन और आश्रय से संतुष्ट रहता है और एकांत में आनंदित होता है। मान लीजिए कि आपका कोई व्यक्ति आपको सूचित करे: 'महाराज, आपको यह जानना चाहिए कि आपका वह व्यक्ति - किसान, गृहस्थ, राजकोष में करदाता... गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला गया है... साधारण भोजन और आश्रय से संतुष्ट है और एकांत में आनंदित है।' क्या आप यह जानकर कहेंगे, 'उस व्यक्ति को मेरे पास वापस लाओ। उसे फिर से किसान, गृहस्थ, राजकोष में करदाता बना दो!'

"बिल्कुल नहीं, भगवान। बल्कि, मुझे ही उनके सामने नतमस्तक होना चाहिए, उनके आदर में उठ खड़ा होना चाहिए, उन्हें अपने आसन पर आमंत्रित करना चाहिए, उन्हें वस्त्र, भिक्षा, आवास और बीमारों के लिए औषधियों का उपहार स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करना चाहिए। और मैं ही उन्हें धार्मिक सुरक्षा, बचाव और संरक्षण प्रदान करूँगा।"

"तो हे महाराज, आपका क्या विचार है? ऐसी स्थिति में, क्या चिंतनशील जीवन का कोई प्रत्यक्ष फल होता है, या नहीं?"

"जी हां, भगवान। ऐसी स्थिति में, चिंतनशील जीवन का एक प्रत्यक्ष फल अवश्य ही दिखाई देता है।"

"हे महाराज, यह चिंतनशील जीवन का दूसरा फल है, जो वर्तमान क्षण में प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है, और मैं इसे ही आपको दिखा रहा हूँ।"

चिंतनशील जीवन के उच्चतर फल

लेकिन क्या हे भगवान, चिंतनशील जीवन का एक और फल बताना संभव है, जो वर्तमान क्षण में ही दृश्यमान है?

"जी हां, महाराज। सुनिए और ध्यान से सुनिए। मैं बोलूंगा।"

"हे महाराज, ऐसा मामला है जिसमें एक तथागत संसार में प्रकट होते हैं, जो योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत हैं। वे धर्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय है। वे पवित्र जीवन की घोषणा करते हैं, जो अपने विशिष्ट पहलुओं और सार में पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है।"

"गृहस्थ या गृहस्थ का पुत्र धम्म सुनकर तथागत में दृढ़ विश्वास प्राप्त करता है और चिंतन करता है: 'गृहस्थ जीवन बंधनकारी और धूल भरा मार्ग है। गृहस्थ जीवन खुले आकाश के समान है। घर में रहकर पूर्णतः परिपूर्ण, पूर्णतः शुद्ध, पॉलिश किए हुए शंख के समान पवित्र जीवन का अभ्यास करना आसान नहीं है। यदि मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, गेरुए वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाऊं तो क्या होगा?'"

"इसलिए कुछ समय बाद वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे छोटी हो या बड़ी, त्याग देता है; अपने रिश्तेदारों के समूह, चाहे छोटा हो या बड़ा, को छोड़ देता है; अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है।"

"जब वह इस प्रकार प्रस्थान कर लेता है, तो वह मठवासी नियमों से बंधे हुए जीवन व्यतीत करता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। अपने सद्गुणों में परिपूर्ण, वह अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करता है, सचेत और सतर्क रहता है, और संतुष्ट रहता है।"

सद्गुण पर संक्षिप्त खंड

और एक भिक्षु किस प्रकार सद्गुणों में परिपूर्ण होता है? वह जीवन लेने का त्याग करके, जीवन लेने से परहेज करता है। वह अपने दंड को त्यागकर, अपने चाकू को त्यागकर, सभी जीवित प्राणियों के कल्याण के प्रति सचेत, दयालु और करुणामय होकर निवास करता है। यही उसके सद्गुण का अंश है।

"जो कुछ दिया नहीं गया है, उसे लेने का त्याग करके, वह उसे लेने से परहेज करता है। वह केवल वही लेता है जो दिया गया है, केवल वही स्वीकार करता है जो दिया गया है, वह छिपकर नहीं, बल्कि शुद्ध आत्मा के माध्यम से जीता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।"

"अविवाह का त्याग करके, वह एकांतप्रिय, ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करता है, और गांववासियों के रीति-रिवाज के अनुसार यौन क्रिया से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।"

वह झूठी बातों का त्याग करके उनसे दूर रहता है। वह सत्य बोलता है, सत्य पर अडिग रहता है, दृढ़ और विश्वसनीय है, संसार को धोखा नहीं देता। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

विभाजनकारी भाषणों का त्याग करके वह उनसे दूर रहता है। जो कुछ उसने यहाँ सुना है, वह वहाँ नहीं बताता ताकि वहाँ के लोगों को यहाँ के लोगों से अलग न कर दे। जो कुछ उसने वहाँ सुना है, वह यहाँ नहीं बताता ताकि वहाँ के लोगों को वहाँ के लोगों से अलग न कर दे। इस प्रकार, जो लोग अलग हो गए हैं, उनके बीच सामंजस्य स्थापित करता है और जो एकजुट हैं, उन्हें और मजबूत करता है। वह सद्भाव से प्रेम करता है, सद्भाव में आनंदित होता है, सद्भाव का अनुभव करता है और सद्भाव उत्पन्न करने वाली बातें बोलता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

वह अपशब्दों का त्याग करके उनसे दूर रहता है। वह ऐसे शब्द बोलता है जो कानों को मधुर लगते हैं, स्नेहपूर्ण होते हैं, हृदय को छूते हैं, विनम्र होते हैं, आकर्षक होते हैं और सभी को प्रसन्न करते हैं। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
वह व्यर्थ की बातों का त्याग करके, व्यर्थ की बातों से दूर रहता है। वह समय पर बोलता है, तथ्यात्मक बातें बोलता है, जो लक्ष्य, धम्म और विनय के अनुरूप होती हैं। वह अनमोल, सामयिक, तर्कसंगत, सीमित और लक्ष्य से जुड़ी बातें बोलता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
वह बीज और वनस्पतियों को नुकसान पहुंचाने से परहेज करता है।
वह दिन में केवल एक बार ही भोजन करता है, शाम के भोजन से परहेज करता है और दिन के गलत समय पर भोजन करने से भी परहेज करता है।
वह नृत्य, गायन, वाद्य संगीत और शो देखने से परहेज करता है।
वह माला पहनने और सुगंध एवं सौंदर्य प्रसाधनों से खुद को सजाने से परहेज करता है।
वह ऊंचे और आलीशान पलंगों और कुर्सियों से परहेज करता है।
वह सोना और पैसा लेने से परहेज करता है।
वह बिना पका अनाज... कच्चा मांस... स्त्रियों और लड़कियों... पुरुष और महिला दासों... बकरियों और भेड़ों... मुर्गियों और सूअरों... हाथियों, मवेशियों, घोड़ों और घोड़ियों... खेतों और संपत्ति को स्वीकार करने से परहेज करता है।
वह संदेशों के आदान-प्रदान से... खरीद-फरोख्त से... झूठे तराजू, झूठी धातुओं और झूठे मापों से... रिश्वतखोरी, छल और धोखाधड़ी से परहेज करता है।
वह अंग-भंग करने, फांसी देने, कैद करने, खुलेआम लूटपाट करने, डकैती करने और हिंसा करने से परहेज करता है।
"यह भी उनके सद्गुण का एक हिस्सा है।"

सद्गुण पर मध्यवर्ती खंड

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, जड़ों, तनों, जोड़ों, कलियों और बीजों से उत्पन्न होने वाले इन जैसे हानिकारक बीजों और पौधों को नष्ट करने के आदी होते हैं, वह इन जैसे बीजों और पौधों को नष्ट करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, संचित वस्तुओं जैसे कि संचित भोजन, संचित पेय पदार्थ, संचित वस्त्र, संचित वाहन, संचित बिस्तर, संचित सुगंध और संचित मांस के उपभोग के आदी होते हैं, वह इन संचित वस्तुओं के उपभोग से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, नृत्य, गायन, वाद्य संगीत, नाटक, लोकगीत पाठ, ताली बजाना, झांझ और ढोल, मैजिक लैंटर्न के दृश्य, कलाबाजी और जादूगरी के करतब, हाथियों की लड़ाई, घोड़ों की लड़ाई, भैंसों की लड़ाई, बैलों की लड़ाई, बकरियों की लड़ाई, भेड़ों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई, बटेरों की लड़ाई; लाठियों से लड़ाई, मुक्केबाजी, कुश्ती, युद्ध-खेल, हाजिरी, युद्ध-प्रदर्शन और रेजिमेंटल परेड जैसे कार्यक्रमों को देखने के आदी होते हैं, वहीं वह इन कार्यक्रमों को देखने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, ऐसे व्यर्थ और आलस्यपूर्ण खेलों में लिप्त रहते हैं जैसे कि आठ पंक्तियों वाला शतरंज, दस पंक्तियों वाला शतरंज, हवा में शतरंज, हॉपस्कॉच, स्पिलिकिन्स, पासा, छड़ी के खेल, हस्तचित्र, गेंद के खेल, खिलौने की पाइपों से फूंक मारना, खिलौने के हल से खेलना, कलाबाजियां करना, खिलौने की पवनचक्कियों से खेलना, खिलौने के नाप, खिलौने के रथ, खिलौने के धनुष, हवा में खींचे गए अक्षरों का अनुमान लगाना, विचारों का अनुमान लगाना, विकृतियों की नकल करना - वह इन व्यर्थ और आलस्यपूर्ण खेलों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, इन प्रकार के उच्च और विलासितापूर्ण साज-सामान के आदी होते हैं—बड़े आकार के सोफे, नक्काशीदार जानवरों से सजे सोफे, लंबे बालों वाले कंबल, बहुरंगी पैचवर्क कंबल, सफेद ऊनी कंबल, फूलों या जानवरों की आकृतियों से कढ़ी हुई ऊनी कंबल, गद्देदार रजाई, झालरदार कंबल, रत्नों से कढ़ी हुई रेशमी कंबल; बड़े ऊनी कालीन; हाथी, घोड़े और रथ के गलीचे, हिरण की खाल के गलीचे, बारहसिंगा की खाल के गलीचे; शामियाना वाले सोफे, सिर और पैरों के लिए लाल तकियों वाले सोफे—वह इन प्रकार के उच्च और विलासितापूर्ण साज-सामान का उपयोग करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, सुगंध, सौंदर्य प्रसाधन और ऐसे अन्य सौंदर्य प्रसाधनों के आदी होते हैं जैसे शरीर पर पाउडर मलना, तेल से मालिश करना, सुगंधित जल से स्नान करना, अंगों को मलना, दर्पणों का उपयोग करना, मलहम, मालाएँ, सुगंध, क्रीम, चेहरे का पाउडर, कस्तूरी, कंगन, सिर के पट्टे, सजी हुई छड़ें, अलंकृत पानी की बोतलें, तलवारें, सुंदर धूप के चश्मे, सजी हुई चप्पलें, पगड़ी, रत्न, याक की पूंछ से बने झाड़ू, लंबी झालर वाले सफेद वस्त्र - वह इन सभी सुगंधों, सौंदर्य प्रसाधनों और सौंदर्य प्रसाधनों के उपयोग से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, राजाओं, लुटेरों, राज्य मंत्रियों; सेनाओं, चेतावनियों और युद्धों; भोजन और पेय; वस्त्र, फर्नीचर, मालाएँ और सुगंध; रिश्तेदारों; वाहनों; गाँवों, कस्बों, शहरों, ग्रामीण इलाकों; महिलाओं और नायकों; गली और कुएँ की गपशप; मृतकों की कहानियाँ; विविधता की कहानियाँ [अतीत और भविष्य की दार्शनिक चर्चाएँ], संसार और समुद्र की रचना, और वस्तुओं के अस्तित्व या न होने की चर्चाओं जैसे तुच्छ विषयों पर चर्चा करने के आदी होते हैं, वह इन तुच्छ विषयों पर चर्चा करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, इस प्रकार की बहसों में लिप्त रहते हैं — 'क्या आप इस सिद्धांत और अनुशासन को समझते हैं? मैं ही वह हूँ जो इस सिद्धांत और अनुशासन को समझता हूँ। आप इस सिद्धांत और अनुशासन को कैसे समझ सकते हैं? आप गलत तरीके से अभ्यास कर रहे हैं। मैं सही तरीके से अभ्यास कर रहा हूँ। मैं सुसंगत हूँ। आप नहीं। जो बात पहले कही जानी चाहिए थी, वह आपने अंत में कही। जो बात अंत में कही जानी चाहिए थी, वह आपने पहले कही। जिस बात पर आपने इतना समय विचार करने में लगाया, उसका खंडन हो गया है। आपका सिद्धांत ध्वस्त हो गया है। आप पराजित हो गए हैं। जाइए और अपने सिद्धांत को बचाने का प्रयास कीजिए; यदि संभव हो तो स्वयं को इस स्थिति से बाहर निकालिए!' — वह इस प्रकार की बहसों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन पर जीवन यापन करते हुए, राजाओं, राज्य मंत्रियों, कुलीन योद्धाओं, पुजारियों, गृहस्थों या युवकों जैसे लोगों के लिए संदेश पहुंचाने और काम करने के आदी होते हैं, जो कहते हैं, 'यहाँ जाओ, वहाँ जाओ, इसे वहाँ ले जाओ, उसे यहाँ से लाओ' - वह ऐसे लोगों के लिए संदेश पहुंचाने और काम करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के बदले दिए गए भोजन पर जीवन यापन करते हुए, षड्यंत्र रचते हैं, बहलाते हैं, इशारे करते हैं, नीचा दिखाते हैं और लाभ के बदले लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, वह इस प्रकार के षड्यंत्र और बहलाने-फुसलाने के अनुचित तरीकों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक हिस्सा है।

सद्‌गुण पर महान खंड
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, निम्न स्तर की कलाओं जैसे कि: अंगों पर निशान पढ़ना [जैसे, हस्तरेखा विज्ञान]; शकुन और संकेतों को पढ़ना; खगोलीय घटनाओं की व्याख्या करना [टूटते तारे, धूमकेतु]; सपनों की व्याख्या करना; शरीर पर निशान पढ़ना [जैसे, मस्तिष्क विज्ञान]; चूहों द्वारा कुतरे गए कपड़ों पर निशान पढ़ना; अग्नि आहुति देना, करछुल से आहुति देना, भूसी, चावल का पाउडर, चावल के दाने, घी और तेल की आहुति देना; मुख से आहुति देना; रक्त-बलि देना; उंगलियों के निशान के आधार पर भविष्यवाणी करना; भूगर्भ विद्या; कब्रिस्तान में राक्षसों को दफनाना; आत्माओं पर जादू करना; घर की सुरक्षा के मंत्र पढ़ना; सांपों को वश में करना, विष विद्या, बिच्छू विद्या, चूहे विद्या, पक्षी विद्या, कौवे विद्या; दर्शन के आधार पर भविष्यवाणियां करना; सुरक्षात्मक ताबीज देना; पक्षियों और जानवरों की आवाजों की व्याख्या करना— वह गलत आजीविका से, इस प्रकार की नीच कलाओं से दूर रहता है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, गलत आजीविका से अपना गुजारा करते हैं, जैसे कि: शुभ और अशुभ रत्नों, वस्त्रों, लाठियों, तलवारों, भालों, तीरों, धनुषों और अन्य हथियारों का निर्धारण करना; स्त्रियों, लड़कों, लड़कियों, पुरुष दासों, महिला दासों; हाथियों, घोड़ों, भैंसों, बैलों, गायों, बकरियों, भेड़ों, मुर्गियों, बटेरों, छिपकलियों, लंबे कान वाले कृन्तकों, कछुओं और अन्य जानवरों की पूजा करना — वह गलत आजीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, गलत आजीविका से, जैसे कि भविष्यवाणियाँ करने जैसी नीच कलाओं से अपना भरण-पोषण करते हैं: शासक आगे बढ़ेंगे; शासक आगे बढ़ेंगे और लौटेंगे; हमारे शासक आक्रमण करेंगे और उनके शासक पीछे हटेंगे; उनके शासक आक्रमण करेंगे और हमारे शासक पीछे हटेंगे; हमारे शासकों की विजय होगी और उनके शासकों की पराजय होगी; उनके शासकों की विजय होगी और हमारे शासकों की पराजय होगी; इस प्रकार विजय होगी, इस प्रकार पराजय होगी — वह गलत आजीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, गलत आजीविका से, जैसे कि भविष्यवाणियाँ करके अपना भरण-पोषण करते हैं: चंद्र ग्रहण होगा; सूर्य ग्रहण होगा; नक्षत्रों का आवरण होगा; सूर्य और चंद्रमा अपने सामान्य पथ पर चलेंगे; सूर्य और चंद्रमा भटक जाएँगे; नक्षत्र अपने सामान्य पथ पर चलेंगे; नक्षत्र भटक जाएँगे; उल्का वर्षा होगी; आकाश में अंधेरा छा जाएगा; भूकंप आएगा; साफ आकाश से गरज आएगी; सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय, अस्त, अंधकार और प्रकाश होगा; चंद्र ग्रहण का यही परिणाम होगा... सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय, अस्त, अंधकार और प्रकाश होगा — वह गलत आजीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, भविष्यवाणियाँ करने जैसी नीच कलाओं से अपना भरण-पोषण करते हैं: प्रचुर वर्षा होगी; सूखा पड़ेगा; समृद्धि होगी; अकाल पड़ेगा; आराम और सुरक्षा होगी;

खतरा होगा; बीमारी होगी; बीमारी से मुक्ति होगी; या वे गिनती, लेखा-जोखा, गणना, कविता रचना, या सुखवादी कलाओं और सिद्धांतों को सिखाकर अपना जीवन यापन करते हैं - वह इन नीच कलाओं से, इन गलत आजीविका से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, विवाह, सगाई, तलाक के लिए शुभ तिथियों की गणना करने; ऋण वसूलने या निवेश और ऋण देने; आकर्षक या अनाकर्षक होने; गर्भपात या गर्भस्राव से पीड़ित महिलाओं का इलाज करने; किसी पुरुष की जीभ बांधने, उसके जबड़े को लकवाग्रस्त करने, उसके हाथों पर नियंत्रण खोने या बहरापन लाने के लिए मंत्रों का जाप करने; दर्पण, किसी युवती या किसी तांत्रिक से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने; सूर्य की पूजा करने, ब्रह्मा की पूजा करने, मुख से ज्वाला निकालने, भाग्य की देवी का आह्वान करने जैसे निम्न स्तर के कार्यों से अपना जीवन यापन करते हैं, वह व्यक्ति ऐसे निम्न स्तर के कार्यों से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, निम्न स्तर के कार्यों से अपना भरण-पोषण करते हैं, जैसे: देवताओं को वरदान के बदले उपहार देने का वादा करना; ऐसे वादे पूरे करना; प्रेत विद्या; घर की सुरक्षा के मंत्र सिखाना; पौरुष और नपुंसकता उत्पन्न करना; निर्माण स्थलों का अभिषेक करना; औपचारिक मुख-स्नान और स्नान कराना; यज्ञ अग्नि अर्पित करना; उल्टी कराने वाली दवाएँ, दस्त की दवाएँ, ऊपर से दस्त की दवाएँ, नीचे से दस्त की दवाएँ, सिर की दस्त की दवाएँ देना; कान में तेल, आँखों में बूँदें, नाक से उपचार, मलहम और मलहम लगाना; आँखों की सर्जरी (या: दांत निकालने की सर्जरी), सामान्य सर्जरी, बाल चिकित्सा; जड़ी-बूटियों से बनी औषधियाँ देना — वह इन निम्न स्तर के कार्यों से, इन गलत आजीविका से दूर रहता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक भाग है।

"इस प्रकार सद्‌गुणों में परिपूर्ण भिक्षु को अपने सद्‌गुणों के कारण संयम से कोई खतरा नहीं दिखता। जिस प्रकार अपने शत्रुओं को परास्त करने वाला महापुरुष योद्धा अपने शत्रुओं से कोई खतरा नहीं देखता, उसी प्रकार सद्‌गुणों में परिपूर्ण भिक्षु को अपने सद्‌गुणों के कारण संयम से कोई खतरा नहीं दिखता। सद्‌गुणों के इस श्रेष्ठ समूह से युक्त होकर वह निर्दोष होने के सुख के प्रति आंतरिक रूप से संवेदनशील होता है। इसी प्रकार एक भिक्षु सद्‌गुणों में परिपूर्ण होता है।"

इंद्रिय संयम

और एक भिक्षु अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा कैसे करता है? किसी आकृति को आँख से देखते समय, वह किसी भी विषय या विवरण पर ध्यान नहीं देता, जिससे—यदि वह आँख की शक्ति पर बिना संयम के ध्यान केंद्रित करे—तो लोभ या दुःख जैसे बुरे, अकुशल गुण उस पर हावी हो सकते हैं। किसी ध्वनि को कान से सुनते समय... किसी गंध को नाक से सूंघते समय... किसी स्वाद को जीभ से चखते समय... किसी स्पर्श संवेदना को शरीर से महसूस करते समय... किसी विचार को बुद्धि से समझते समय, वह किसी भी विषय या विवरण पर ध्यान नहीं देता, जिससे—यदि वह बुद्धि की शक्ति पर बिना संयम के ध्यान केंद्रित करे—तो लोभ या दुःख जैसे बुरे, अकुशल गुण उस पर हावी हो सकते हैं। इंद्रियों पर इस श्रेष्ठ संयम से संपन्न होकर, वह आंतरिक रूप से निष्कलंक होने के सुख के प्रति संवेदनशील होता है। इस प्रकार एक भिक्षु अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करता है।

जागरूकता और सतर्कता

और एक भिक्षु में सजगता और सतर्कता कैसे होती है? आगे बढ़ते और लौटते समय, वह सतर्कता से कार्य करता है। आगे देखते और पीछे हटते समय... अपने अंगों को मोड़ते और फैलाते समय... अपने बाहरी वस्त्र, ऊपरी वस्त्र और कुंड को ले जाते समय... खाते, पीते, चबाते और स्वाद लेते समय... पेशाब और शौच करते समय... चलते, खड़े होते, बैठते, सोते, जागते, बोलते और चुप रहते समय, वह सतर्कता से कार्य करता है। इस प्रकार एक भिक्षु में सजगता और सतर्कता होती है।

संतोष

और एक भिक्षु कैसे संतुष्ट रहता है? जैसे एक पक्षी जहाँ कहीं भी जाता है, अपने पंखों को ही अपना एकमात्र बोझ मानकर उड़ता है; वैसे ही वह अपने शरीर के लिए वस्त्रों के एक जोड़े और भूख मिटाने के लिए भिक्षा भोजन से संतुष्ट रहता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, केवल अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को ही साथ ले जाता है। यही एक भिक्षु का संतोष है।

बाधाओं को त्यागना

"सद्‌गुणों के इस श्रेष्ठ समूह, इंद्रियों पर इस श्रेष्ठ संयम, इस श्रेष्ठ जागरूकता और सजगता तथा इस श्रेष्ठ संतोष से परिपूर्ण होकर, वह एकांत स्थान की तलाश करता है: जंगल, वृक्ष की छाया, पर्वत, घाटी, पहाड़ी गुफा, श्मशान भूमि, वन उपवन, खुला आकाश, भूसे का ढेर। भोजन के बाद, भिक्षा मांगने से लौटकर, वह बैठ जाता है, पैर मोड़कर बैठता है, शरीर को सीधा रखता है और जागरूकता को अपने ध्यान में लगाता है।"

संसार के प्रति लोभ का त्याग करके, वह लोभ रहित जागरूकता के साथ निवास करता है। वह अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है। द्वेष और क्रोध का त्याग करके, वह द्वेष रहित जागरूकता के साथ, सभी जीवों के कल्याण के प्रति सहानुभूति रखते हुए निवास करता

है। वह अपने मन को द्वेष और क्रोध से शुद्ध करता है। आलस्य और सुस्ती का त्याग करके, वह आलस्य और सुस्ती रहित जागरूकता के साथ, सचेत, सतर्क और प्रकाश के प्रति जागरूक रहते हैं। वह अपने मन को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है। बेचैनी और चिंता का त्याग करके, वह अविचलित रहते हैं, उनका मन आंतरिक रूप से शांत होता है। वह अपने मन को बेचैनी और चिंता से शुद्ध करते हैं। अनिश्चितता का त्याग करके, वह अनिश्चितता को पार कर चुके होते हैं, कुशल मानसिक गुणों के संबंध में उन्हें कोई उलझन नहीं होती। वह अपने मन को अनिश्चितता से शुद्ध करते हैं।

मान लीजिए कि एक व्यक्ति ऋण लेकर उसे अपने व्यवसाय में निवेश करता है। उसका व्यवसाय सफल होता है। वह अपने पुराने ऋण चुका देता है और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ऋण लेने से पहले मैंने उसे अपने व्यवसाय में निवेश किया था। अब मेरा व्यवसाय सफल हो गया है। मैंने अपने पुराने ऋण चुका दिए हैं और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच गया है।' इससे उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।

"मान लीजिए कि एक व्यक्ति बीमार पड़ जाता है - उसे बहुत दर्द होता है और वह गंभीर रूप से अस्वस्थ है। उसे भोजन करने में आनंद नहीं आता और उसके शरीर में कोई शक्ति नहीं है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस बीमारी से ठीक हो जाता है। अब वह भोजन का आनंद लेता है और उसके शरीर में शक्ति आ जाती है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं बीमार था... अब मैं उस बीमारी से ठीक हो गया हूँ। मैं भोजन का आनंद लेता हूँ और मेरे शरीर में शक्ति है।' इसी कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।"

अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति जेल में बंद है। समय बीतने के साथ, अंततः वह उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं जेल में बंद था। अब मैं उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो गया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।

अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति गुलाम है, दूसरों के अधीन है, स्वयं के अधीन नहीं, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में असमर्थ है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस गुलामी से मुक्त हो जाता है, स्वयं के अधीन हो जाता है, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हो जाता है, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं गुलाम था... अब मैं उस गुलामी से मुक्त हो गया हूँ, स्वयं के अधीन हूँ, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हूँ, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।

अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा था। अब मैं उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।

"इसी प्रकार, जब भिक्षु अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग नहीं करता, तो वह उन्हें ऋण, रोग, कारावास, दासता, वीरान देश का मार्ग समझता है। परन्तु जब वह अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग कर लेता है, तो वह उन्हें ऋणमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य, कारावास से मुक्ति, स्वतंत्रता, सुरक्षा का स्थान समझता है। अपने भीतर इनका त्याग देखकर वह प्रसन्न होता है। प्रसन्न होकर वह समाधि में लीन हो जाता है। समाधि में उसका शरीर शांत हो जाता है। शरीर शांत होने पर वह सुख के प्रति संवेदनशील हो जाता है। सुख का अनुभव करने पर उसका मन एकाग्र हो जाता है।"

(चार ध्यान)

"इंद्रिय सुख से पूर्णतः विमुख होकर, अकुशल मानसिक गुणों से विमुख होकर, वह प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद, जो निर्देशित चिंतन और विश्लेषण से परिपूर्ण होता है। वह इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। जैसे कोई कुशल स्नान विशेषज्ञ या उसका प्रशिक्षु पीतल के पात्र में स्नान पाउडर डालकर उसे गूंथता है और बार-बार पानी छिड़कता है, ताकि उसका पाउडर का गोला - संतृप्त, नमी से भरा, भीतर और बाहर से भीगा हुआ - फिर भी टपके नहीं; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। उसके संपूर्ण शरीर का कोई भी भाग एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अछूता नहीं रहता।"

"यह चिंतनशील जीवन का फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और अधिक उदात्त है।"

इसके अतिरिक्त, निर्देशित विचारों और मूल्यांकनों को शांत करते हुए, वह द्वितीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन से मुक्त चेतना का एकीकरण - आंतरिक आश्वासन। वह अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। जैसे किसी झील में भीतर से ही जल निकलता रहता है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण से कोई प्रवाह नहीं होता, और आकाश से बार-बार भरपूर वर्षा होती रहती है, जिससे झील के भीतर से निकलने वाला ठंडा जल झील में समा जाता है, उसे ठंडे जल से भर देता है, झील का कोई भी भाग ठंडे जल से अछूता नहीं रहता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। उसके संपूर्ण शरीर का कोई भी भाग शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अछूता नहीं रहता।

"यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पिछले फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

और इसके अलावा, जब परमानंद शांत हो जाता है, तो वह समभाव में रहता है, सचेत और जागरूक रहता है, और शरीर से सुख का अनुभव करता है। वह तीसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें बना रहता है, जिसके बारे में ऋषियों ने कहा है, 'समभाव और सचेत रहकर, वह सुखमय अवस्था में रहता है।' वह इस शरीर को परमानंद रहित आनंद से भर देता है। जैसे कमल के तालाब में, कुछ कमल, जो पानी में पैदा होते हैं और बढ़ते हैं, पानी में डूबे रहते हैं और पानी से बाहर नहीं निकलते, जिससे वे अपनी जड़ों से लेकर शीर्ष तक ठंडे पानी से भरे रहते हैं, और उन कमलों का कोई भी भाग ठंडे पानी से अछूता नहीं रहता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को परमानंद रहित आनंद से भर देता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी भाग परमानंद रहित आनंद से अछूता नहीं रहता।
"यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पिछले फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"
और इसके अलावा, सुख और तनाव के त्याग के साथ—जैसे पहले उल्लास और दुःख के लुप्त होने के साथ—वह चौथे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: समभाव और जागरूकता की शुद्धता, न सुख न तनाव। वह शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। जैसे कोई व्यक्ति सिर से पैर तक सफेद कपड़े से ढका बैठा हो ताकि उसके शरीर का कोई भी हिस्सा उससे अछूता न रहे; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी हिस्सा शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अछूता नहीं रहता।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

अंतर्दृष्टि ज्ञान

"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर आकार से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहाँ बंधी हुई है।' मान लीजिए कि शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है—आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण, और उसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा हो—और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसे अपने हाथ में लेकर इस प्रकार विचार करे: 'यह शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है, आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण। और इसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा है।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु उसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर आकार से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहीं बंधी हुई है।'
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

मन द्वारा निर्मित शरीर

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने मन को एक मन-निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक अन्य शरीर की रचना करता है, जो आकार से युक्त, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति म्यान से सरकंडा निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह म्यान है, यह सरकंडा है। म्यान एक चीज है, सरकंडा दूसरी, लेकिन सरकंडा म्यान से निकल गया है।' या जैसे कोई व्यक्ति म्यान से तलवार निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह तलवार है, यह म्यान है। तलवार एक चीज है, म्यान दूसरी, लेकिन तलवार म्यान से निकल गई है।' या यूं कहें कि कोई व्यक्ति सांप को उसके केंचुली से बाहर निकाल रहा हो। उसके मन में यह विचार आएगा: 'यह सांप है, यह उसकी केंचुली है। सांप एक चीज है, केंचुली दूसरी, लेकिन सांप को केंचुली से बाहर निकाल लिया गया है।' ठीक इसी प्रकार, जब भिक्षु का मन एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, लचीला, स्थिर और अविचलित हो जाता है, तो वह उसे मन से निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक और शरीर की रचना करता है, जो आकार से युक्त, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

अलौकिक शक्तियाँ

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह अनेक अलौकिक शक्तियों का प्रयोग करता है। एक होकर वह अनेक हो जाता है; अनेक होकर वह एक हो जाता है। वह प्रकट होता है। वह लुप्त हो जाता है। वह दीवारों, प्राचीरों और पहाड़ों के आर-पार ऐसे चला जाता

है मानो अंतरिक्ष में। वह पृथ्वी में ऐसे गोता लगाता है मानो वह जल हो। वह जल पर बिना डूबे ऐसे चलता है मानो वह सूखी भूमि हो। पालथी मारकर वह पंखों वाले पक्षी की तरह हवा में उड़ता है। अपने हाथ से वह सूर्य और चंद्रमा को भी स्पर्श करता है, जो इतने शक्तिशाली और बलवान हैं। वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालता है। जैसे एक कुशल कुम्हार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार मिट्टी से अपनी पसंद का कोई भी बर्तन बना सकता है, या जैसे एक कुशल हाथीदांत तराशने वाला या उसका सहायक अपनी पसंद की मिट्टी से किसी भी प्रकार का बर्तन बना सकता है। वह अच्छी तरह से तैयार हाथीदांत से अपनी पसंद का कोई भी हाथीदांत का काम बना सकता है, या जैसे एक कुशल सुनार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार सोने से अपनी पसंद की कोई भी सोने की वस्तु बना सकता है; उसी प्रकार - अपने इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से - भिक्षु इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है... वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक भी प्रभाव डालता है।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

क्लेयर ऑडियंस
"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह - शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे - दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट हों या दूर। ठीक वैसे ही जैसे यदि कोई व्यक्ति राजमार्ग पर यात्रा कर रहा हो और उसे ढोल, छोटे ढोल, शंख, झांझ और टॉम की आवाज़ें सुनाई दें, तो वह जान जाएगा, 'यह ढोल की आवाज़ है, यह छोटे ढोल की आवाज़ है, यह शंख की आवाज़ है, यह झांझ की आवाज़ है और यह टॉम की आवाज़ है।'" इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु उसे दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह—शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे दिव्य श्रवण शक्ति के माध्यम से—दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट की हों या दूर की।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

जानो, मन में क्या चल रहा है
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित होता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनूनी मन को जुनूनी मन के रूप में और जुनून रहित मन को जुनून रहित मन के रूप में पहचानता है। वह घृणा से ग्रसित मन को घृणा से ग्रसित मन के रूप में और घृणा रहित मन को घृणा रहित मन के रूप में पहचानता है। वह भ्रम से ग्रसित मन को भ्रम से ग्रसित मन के रूप में और भ्रम रहित मन को भ्रम रहित मन के रूप में पहचानता है। वह सीमित मन को सीमित मन के रूप में और बिखरे हुए मन को बिखरे हुए मन के रूप में पहचानता है। वह विस्तारित मन को विस्तारित मन के रूप में और अविस्तारित मन को अविस्तारित मन के रूप में पहचानता है। वह उत्कृष्ट मन (जो उच्चतम स्तर पर नहीं है) को उत्कृष्ट मन के रूप में और अविस्तारित मन को अविस्तारित मन के रूप में पहचानता है। अद्वितीय मन को अद्वितीय मन के रूप में पहचानता है। वह एकाग्र मन को एकाग्र मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। वह मुक्त मन को मुक्त मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। जैसे कोई युवती या पुरुष, जो आभूषणों का शौकीन हो, किसी चमकदार दर्पण या स्वच्छ जल से भरे कटोरे में अपने चेहरे का प्रतिबिंब देखकर यह जान ले कि वह 'दोषपूर्ण' है या 'दोषरहित' है। उसी प्रकार, अपने इस एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से, भिक्षु इसे अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनून से भरे मन को जुनून से भरे मन के रूप में और बिना जुनून वाले मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है... मुक्त मन को मुक्त मन के रूप में और असंलग्न मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है। अप्रकाशित मन, अप्रकाशित मन के रूप में।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

बीते जन्मों की यादें
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने पिछले जन्मों (यानी पूर्व जन्मों) के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को याद करता है, अर्थात् एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार, पाँच, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, सौ, एक हजार, एक लाख, ब्रह्मांडीय संकुचन के अनेक युग, ब्रह्मांडीय विस्तार के अनेक युग, ब्रह्मांडीय संकुचन और विस्तार के अनेक युग। वह स्मरण करता है, 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा

भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ।' उस अवस्था से विदा होकर मैं वहाँ पुनः उत्पन्न हुआ। वहाँ भी मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ। जीवन। उस अवस्था से गुजरकर, मैं यहाँ पुनः उत्पन्न हुआ।' इस प्रकार वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को उनके स्वरूप और विवरणों के साथ याद करता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने गाँव से दूसरे गाँव जाए, फिर उस गाँव से किसी और गाँव जाए, और फिर उस गाँव से वापस अपने गाँव आ जाए। उसके मन में यह विचार आएगा, 'मैं अपने गाँव से उस गाँव गया। वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं उस गाँव गया, और वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं वापस घर आ गया।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने पिछले जन्मों के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को उनके स्वरूपों और विवरणों सहित याद करता है।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

प्राणियों का देहांत और पुन: प्रकट होना

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर उन्मुख होता है। वह दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है, प्राणियों को मृत्यु और पुनर्जन्म लेते हुए देखता है और उनके कर्मों के अनुसार उनके निम्न और उच्चतर, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है: 'ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के बुरे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म किए - मृत्यु के बाद शरीर के टूटने से अभाव के लोक, बुरे गंतव्य, निचले लोकों, नरक में पुनर्जन्म लेते हैं। परन्तु ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के अच्छे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म करने वाले — शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, अच्छे स्थानों, स्वर्गलोक में पुनः प्रकट होते हैं। इस प्रकार — दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है — वह प्राणियों को मरते और पुनः प्रकट होते देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके हीन और श्रेष्ठ, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है। जैसे कि किसी शहर के केंद्रीय चौक में एक ऊँची इमारत हो, और उस पर खड़ा एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति लोगों को घर में प्रवेश करते, घर से बाहर निकलते, सड़क पर चलते और केंद्रीय चौक में बैठते हुए देखे। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ये लोग घर में प्रवेश कर रहे हैं, घर से बाहर निकल रहे हैं, सड़क पर चल रहे हैं और केंद्रीय चौक में बैठ रहे हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह—शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ दिव्य दृष्टि से—प्राणित और पुनर्जन्मित प्राणियों को देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके निम्न और उच्चतर, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है।
"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का ही फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पहले के फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है।"

मानसिक उथल-पुथल का अंत

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ पाता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्‌गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्‌गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-वासना, कर्म-वासना और अज्ञान-वासना से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही उसे यह ज्ञान प्राप्त होता है, 'मुक्त हो गया।' वह समझ पाता है कि 'जन्म समाप्त हो गया, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया, कार्य पूरा हो गया। इस संसार में अब कुछ भी शेष नहीं है।' जैसे मान लीजिए कि किसी पहाड़ी घाटी में पानी का एक तालाब हो—साफ़, निर्मल और बेदाग—जहाँ किनारे पर खड़ा एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति सीपियाँ, कंकड़ और पत्थर देख सके, और साथ ही मछलियों के झुंड तैरते और आराम करते हुए देख सके, और उसके मन में यह विचार आए, 'यह तालाब साफ़, निर्मल और निर्मल है। यहाँ ये सीपियाँ, कंकड़ और पत्थर हैं, और साथ ही मछलियों के ये झुंड तैरते और आराम करते हुए हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ लेता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्‌गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्‌गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-संबंधों की हलचलों, कर्म-संबंधों की हलचलों और अज्ञान-संबंधों की हलचलों से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही, 'मुक्त' का ज्ञान प्राप्त होता है। वह यह समझ जाता है कि 'जन्म समाप्त हो गया है, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया है, कार्य पूरा हो गया है। इस संसार में अब और कुछ नहीं बचा है।'

"हे महाराज, यह भी चिंतनशील जीवन का फल है, जो यहीं और अभी दिखाई देता है, और पिछले फलों से कहीं अधिक उत्कृष्ट और उदात्त है। और चिंतनशील जीवन का इससे भी उच्चतर और उदात्त कोई अन्य प्रत्यक्ष फल नहीं है।"
यह सुनकर राजा अजातसत्तु ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, आप महान हैं! महान! जिस प्रकार कोई उलटी हुई वस्तु को सीधा कर दे, छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, भटके हुए को राह दिखा दे, या अंधकार में दीपक जलाकर आँखों वाले को आकृतियाँ दिखा दे, उसी प्रकार भगवान बुद्ध ने अनेक तर्कों के द्वारा धम्म को स्पष्ट किया है। मैं भगवान बुद्ध की शरण में, धम्म की शरण में और भिक्षुओं के समुदाय में आता हूँ। भगवान बुद्ध मुझे आज से जीवन भर के लिए अपने गृहस्थ अनुयायी के रूप में याद रखें।"
हे भगवान, मुझसे एक पाप हो गया है, क्योंकि मैं इतना मूर्ख, इतना नासमझ और इतना अकुशल था कि मैंने अपने पिता—एक धर्मी पुरुष, एक धर्मी राजा—को सत्ता के लालच में मार डाला। ईश्वर मेरी इस पाप स्वीकारोक्ति को स्वीकार करें, ताकि मैं भविष्य में संयम बरत सकूँ।
"जी हाँ, महाराज, आपने एक अपराध किया है, क्योंकि आप इतने मूर्ख, इतने नासमझ और इतने अकुशल थे कि आपने अपने पिता—एक धर्मात्मा, एक धर्मात्मा राजा—को राजसत्ता के लिए मार डाला। लेकिन क्योंकि आप अपने अपराध को समझते हैं और धर्म के अनुसार प्रायश्चित करते हैं, इसलिए हम आपका पश्चाताप स्वीकार करते हैं। क्योंकि जब कोई व्यक्ति अपने अपराध को पहचानकर धर्म के अनुसार प्रायश्चित करता है और भविष्य में संयम बरतता है, तो यह धर्म और अनुशासन में वृद्धि का कारण बनता है।"
यह सुनकर राजा अजातसत्तु ने भगवान बुद्ध से कहा, "अच्छा, भगवान, अब मैं विदा लेता हूँ। मेरे बहुत से कर्तव्य हैं, बहुत सी जिम्मेदारियाँ हैं।"
"तो फिर, हे महान राजा, वही करो जो तुम्हें लगता है कि अब करने का समय आ गया है।"
अतः राजा अजातसत्तु भगवान बुद्ध के वचनों से प्रसन्न होकर अपने आसन से उठे, उन्हें प्रणाम किया और उनकी परिक्रमा करने के बाद चले गए। राजा अजातसत्तु के जाने के कुछ ही समय बाद भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "हे भिक्षुओं, राजा घायल हैं। राजा अक्षम हैं। यदि उन्होंने अपने पिता – उस धर्मात्मा, उस धर्मात्मा राजा – की हत्या न की होती, तो निष्कलंक, निष्कलंक धम्म दृष्टि उन्हें इसी आसन पर बैठे हुए दिखाई देती।"
भगवान बुद्ध ने यही कहा था। भिक्षुओं को भगवान बुद्ध के वचन सुनकर प्रसन्नता हुई।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.3: अंबत्था सुत्त (डीएन 3)

सेटिंग
I. 1. मैंने ऐसा सुना है। भगवान बुद्ध एक बार लगभग पाँच सौ भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ कोसल देश की यात्रा पर निकले और कोसल में इक्खानंकला नामक एक ब्राह्मण गाँव में पहुँचे; और वहाँ वे इक्खानंकला वन में ठहरे।

उस समय ब्राह्मण पोक्खरसादी उक्कत्था में निवास कर रहे थे, जो जीवन से भरपूर स्थान था, जहाँ बहुत सारे घास के मैदान, जंगल और अनाज थे, और यह एक शाही क्षेत्र था, जिसे कोसल के राजा पसेनदी (या प्रसेनजित) ने उन्हें शाही उपहार के रूप में दिया था, और उस पर उन्हें राजा के समान अधिकार प्राप्त थे।

2. अब ब्राह्मण पोक्खरसादी ने यह समाचार सुना: 'लोग कहते हैं कि शाक्य वंश के समना गौतम, जिन्होंने शाक्य परिवार छोड़कर धार्मिक जीवन अपनाया था, अपने संघ के कई भिक्षुओं के साथ इखानांकला पहुंचे हैं और वहां इखानांकला वन में ठहरे हुए हैं। उस पूज्य गौतम के बारे में यह उच्च प्रतिष्ठा दूर-दूर तक फैली हुई है:--वह भगवान अरहत हैं, पूर्णतः जागृत हैं, ज्ञान और सत्त्व से परिपूर्ण हैं, सुखी हैं, संसार के ज्ञान से परिपूर्ण हैं, मनुष्यों के लिए अद्वितीय मार्गदर्शक हैं, देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक हैं, एक धन्य व्यक्ति हैं, एक बुद्ध हैं।' वह स्वयं ही इस ब्रह्मांड को भलीभांति जानता और देखता है, मानो देवताओं, ब्रह्माओं और मारों के स्वर्गलोक तथा इसलोक में संन्यासियों और ब्राह्मणों, राजकुमारों और प्रजाजनों का सर्वथा अवलोकन कर रहा हो। इस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद वह अपना ज्ञान दूसरों को भी प्रकट करता है। वह अपने उद्गम, अपने विकास और अपने समापन में सुंदर सत्य का आध्यात्मिक और शाब्दिक दोनों रूपों में प्रचार करता है; वह उच्चतर जीवन को उसकी संपूर्णता और उसकी पवित्रता में प्रकट करता है।

'और इस प्रकार अरहतों के दर्शन करना अच्छा है।'

3. उस समय एक युवा ब्राह्मण, अंबत्थ, पोक्खरसादी ब्राह्मण का शिष्य था। वह पवित्र मंत्रों का जाप करने वाला (या जप करने वाला) था, उसे रहस्यवादी श्लोक कंठस्थ थे, उसने तीनों वेदों में महारत हासिल कर ली थी, जिनमें सूचकांक, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान, व्याख्या (चौथा) और कथाएँ (पाँचवाँ) शामिल थीं। मुहावरों और व्याकरण में पारंगत, लोकायत के कुतर्क में पारंगत, और एक महान व्यक्ति के

शरीर पर चिन्हों के सिद्धांत में पारंगत, वह अपने गुरु द्वारा प्रतिपादित त्रिविध वैदिक ज्ञान प्रणाली में इतना प्राधिकारी था कि वह उनके बारे में कह सकता था: 'जो मैं जानता हूँ वह आप जानते हैं, और जो आप जानते हैं वह मैं जानता हूँ।'

4. और पोक्करासादी ने अंबत्था को यह खबर सुनाई और कहा: 'अब आओ, प्रिय अंबत्था, समना गौतम के पास जाओ और पता करो कि उनके बारे में दूर-दूर तक जो ख्याति फैली हुई है, वह तथ्यों के अनुरूप है या नहीं, समना गौतम वास्तव में वैसे ही हैं जैसा लोग कहते हैं या नहीं।'

5. 'लेकिन महोदय, मुझे कैसे पता चलेगा कि यह सच है या नहीं?'

अंबत्था, हमारे रहस्यवादी श्लोकों में एक महान पुरुष के बत्तीस शारीरिक लक्षणों का वर्णन किया गया है—ये लक्षण यदि किसी व्यक्ति में हों, तो वह दो में से एक ही होगा, और कोई दूसरा नहीं। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो वह संसार का स्वामी, धर्मात्मा राजा, चारों महामहासागरों के तट तक शासन करने वाला, विजेता, अपनी प्रजा का रक्षक और सात राजसी रत्नों का स्वामी होगा। उसके पास ये सात रत्न होंगे—चक्र, हाथी, अश्व, रत्न, स्त्री, कोषाध्यक्ष और सातवाँ रत्न सलाहकार। उसके एक हजार से अधिक पुत्र होंगे, जो वीर और बलवान होंगे, शत्रु की सेनाओं को पराजित करेंगे। वह समुद्र से समुद्र तक फैली पृथ्वी पर पूर्ण भगवानत्व के साथ निवास करेगा, और बिना लाठी या तलवार के धर्मपूर्वक शासन करेगा। परन्तु यदि वह गृहस्थ जीवन त्यागकर निर्वासित हो जाए, तो वह बुद्ध बन जाएगा जो संसार के नेत्रों से पर्दा हटा देगा। अब मैं, अंबत्था, रहस्यवादी श्लोकों का दाता हूँ; तुमने इन्हें मुझसे प्राप्त किया है।'

6. 'बहुत अच्छा, महाराज,' अंबत्था ने उत्तर दिया; और अपने आसन से उठकर पोक्खरसादी को प्रणाम करते हुए, घोड़ियों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार होकर युवा ब्राह्मणों के दल के साथ इक्खानंकला वन की ओर चल पड़े। जब वे रथ पर सवार होकर उस दूरी तक पहुँच गए जहाँ तक वाहनों के लिए मार्ग संभव था, तो वे नीचे उतर गए और पैदल ही वन में आगे बढ़ गए।

7. उस समय कुछ भाई खुले में इधर-उधर टहल रहे थे। अंबत्था उनके पास गया और बोला, 'आदरणीय गौतम गौतम इस समय कहाँ ठहरे हुए हैं? हम उनसे मिलने यहाँ आए हैं।'

8. तब भाइयों ने सोचा, ‘यह युवा ब्राह्मण अंबत्था प्रतिष्ठित परिवार से है और प्रतिष्ठित ब्राह्मण पोक्खरसादी का शिष्य है। भगवान बुद्ध को ऐसे व्यक्ति से बातचीत करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।’ और उन्होंने अंबत्था से कहा, ‘अंबत्था, वह उनका निवास स्थान है, जहाँ दरवाजा बंद है। तुम चुपचाप ऊपर जाओ और धीरे से बरामदे में प्रवेश करो, खांसो और चौखट पर दस्तक दो। भगवान बुद्ध तुम्हारे लिए दरवाजा खोल देंगे।’

9. तब अंबत्था ने ऐसा ही किया। भगवान बुद्ध ने द्वार खोला और अंबत्था अंदर आ गए। अन्य युवा ब्राह्मण भी अंदर गए; उन्होंने भगवान बुद्ध से शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन और प्रशंसा की और अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। लेकिन अंबत्था इधर-उधर घूमते हुए, कभी बेचैन होकर तो कभी खड़े होकर, वहाँ बैठे भगवान बुद्ध से कुछ न कुछ शिष्टाचारपूर्ण बातें कहते रहे।

10. और भगवान बुद्ध ने उससे कहा: 'हे अंबत्था, क्या यही वह तरीका है कि तुम वृद्ध गुरुओं और अपने गुरुओं के उन गुरुओं से, जो काफी उम्रदराज हो चुके हैं, इस तरह बातचीत करो, जैसे तुम अभी कर रहे हो, चलते-फिरते या खड़े रहते हुए, जबकि मैं इस प्रकार बैठा हूँ?'

11. 'बिल्कुल नहीं, गौतम। ब्राह्मण से चलते-चलते बात करना तभी उचित है जब ब्राह्मण स्वयं चल रहा हो, और खड़े ब्राह्मण से खड़े होकर, बैठे ब्राह्मण से बैठे ब्राह्मण से, या लेटे ब्राह्मण से। लेकिन मुंडे हुए बालों वाले, पाखंडी साधुओं, नीच काले लोगों, हमारे रिश्तेदारों की एड़ियों की मैल से भी मैं वैसे ही बात करूँगा जैसे अभी तुमसे कर रहा हूँ!'

लेकिन अंबत्था, तुम यहाँ कुछ तो चाह रहे होगे। बल्कि उस उद्देश्य पर ध्यान दो जिसके लिए तुम यहाँ आए थे। यह नौजवान ब्राह्मण अंबत्था बदतमीज़ है, हालाँकि वह अपनी संस्कृति पर गर्व करता है; ऐसा अभद्र व्यवहार प्रशिक्षण की कमी के अलावा और क्या हो सकता है?

12. तब अंबत्थ को भगवान बुद्ध द्वारा अभद्र कहे जाने पर क्रोध और नाराजगी हुई; और यह सोचकर कि भगवान बुद्ध उससे नाराज हैं, उसने उनका उपहास करते हुए कहा, “हे गौतम, ये शाक्य वंश के लोग बड़े ही कठोर और अभद्र हैं; ये शाक्य वंश के लोग बड़े ही

चिड़चिड़े और हिंसक हैं। ये तो केवल तुच्छ लोग हैं, न तो ब्राह्मणों का आदर करते हैं, न उन्हें महत्व देते हैं, न उनका सम्मान करते हैं, न उन्हें दान देते हैं, न उनका आदर करते हैं। हे गौतम, यह न तो उचित है, न ही शालीन है!"

इस प्रकार युवा ब्राह्मण अंबत्था ने पहली बार शाक्यों पर नीच होने का आरोप लगाया।

13. 'लेकिन फिर, अंबत्था, शाक्यों ने किस बात में तुम्हें ठेस पहुंचाई है?'

'एक बार, गौतम, मुझे पोक्खरसादी के किसी काम से कपिलवस्तु जाना पड़ा और मैं शाक्यों सभा भवन में गया। उस समय कई शाक्यों, बूढ़े और जवान, भवन में भव्य आसनों पर बैठे थे, आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे और एक-दूसरे को उंगलियों से इशारा कर रहे थे; और सच कहूँ तो, मुझे लगता है, मैं ही उनके मजाक का निशाना बना था; और उनमें से किसी ने भी मुझे बैठने के लिए जगह नहीं दी। गौतम, यह न तो उचित है और न ही शालीन है कि शाक्यों, जो कि केवल साधारण लोग हैं, ब्राह्मणों का आदर न करें, उन्हें महत्व न दें, उनका सम्मान न करें, उन्हें दान न दें और उनका आदर न करें।'

इस प्रकार युवा ब्राह्मण अंबत्था ने दूसरी बार शाक्यों पर नीच होने का आरोप लगाया।

14. 'अंबत्था, भले ही वह एक छोटी मुर्गी हो, बटेर अपने घोंसले में जो चाहे कह सकती है। और शाक्य वहां कपिलवस्तु में अपने घर में हैं। इतनी तुच्छ बात पर नाराज़ होना आपके लिए उचित नहीं है।'

15. 'गौतम, ये चार श्रेणियाँ हैं—कुलीन, ब्राह्मण, व्यापारी और श्रमिक। और इन चारों में से तीन—कुलीन, व्यापारी और श्रमिक—वास्तव में ब्राह्मणों के सेवक मात्र हैं। अतः, गौतम, यह न तो उचित है और न ही सलीब है कि शाक्य, जो कि मात्र सेवक हैं, ब्राह्मणों का आदर करें, उन्हें महत्व दें, उनका सम्मान करें, उन्हें दान दें और उनका आदर करें।'

इस प्रकार युवा ब्राह्मण अंबत्था ने तीसरी बार शाक्यों पर नीच होने का आरोप लगाया।

16. तब भगवान बुद्ध ने ऐसा सोचा, 'यह अंबत्थ अपने दास वंश के आरोप से शाक्यों को नीचा दिखाने पर तुला हुआ है। यदि मैं उससे उसके वंश के बारे में पूछ लूँ तो क्या होगा?' और उन्होंने उससे कहा:

'तो फिर, अंबत्था, तुम किस परिवार से संबंध रखती हो?'

मैं एक कन्हैयन हूँ।

'हाँ, लेकिन यदि कोई आपके प्राचीन नाम और वंश, अंबत्था, का पिता और माता दोनों ओर से पता लगाए, तो यह प्रतीत होता है कि शाक्यों कभी आपके स्वामी थे, और आप उनकी किसी दासी की संतान हैं। लेकिन शाक्यों अपना वंश राजा ओक्काका से जोड़ते हैं।'

बहुत समय पहले, राजा ओक्काका, अंबत्था ने अपनी प्रिय रानी के पुत्र के पक्ष में उत्तराधिकार मोड़ने की इच्छा से अपने बड़े बच्चों - ओक्कामुख, करांडा, हत्थिनिका और सिनीपुरा - को देश से निर्वासित कर दिया। इस प्रकार निर्वासित होकर वे हिमालय की ढलानों पर, एक झील के किनारे बस गए जहाँ एक विशाल बलूत का वृक्ष उगता था। और अपने वंश की शुद्धता को ठेस पहुँचने के भय से उन्होंने अपनी बहनों से विवाह कर लिया।

'तब राजा ओक्काका (इक्ष्वाकु) ने अपने दरबार के मंत्रियों से पूछा: "महोदय, बच्चे अब कहाँ हैं?"'

'हे महाराज, हिमालय की ढलानों पर, एक झील के किनारे, एक स्थान है जहाँ एक विशाल बलूत (सको) वृक्ष उगता है। वे वहीं निवास करते हैं। और अपने वंश की शुद्धता को ठेस न पहुँचे इसलिए उन्होंने अपनी ही (सकाही) बहनों से विवाह किया है।'

तब राजा ओक्काका प्रशंसा से भर उठे: "ये नौजवान तो बलूत के हृदय (सक्या) के हैं! वे सचमुच अपनी रक्षा (परमसाक्या) बखूबी कर रहे हैं!"

"इसीलिए, अंबत्था, इन्हें शाक्य कहा जाता है। अब ओक्काका की एक दासी थी जिसका नाम दिसा था। उसने एक काले बच्चे को जन्म दिया। जन्म लेते ही उस नन्हे काले बच्चे ने कहा, "माँ, मुझे धो दो। मुझे नहला दो। माँ, मुझे इस गंदगी से मुक्त कर दो। तब मैं तुम्हारे काम आऊँगा।"

'अब, अंबत्था, जैसे आज लोग शैतानों को "शैतान" कहते हैं, वैसे ही तब भी लोग शैतानों को "काले प्राणी" (कन्हे) कहते थे। और वे कहते थे: "यह प्राणी जन्म लेते ही बोलने लगा। 'यह एक काला प्राणी (कन्हा) है जो पैदा हुआ है, एक शैतान पैदा हुआ है!' और यही अंबत्था, कन्हैयान वंश की उत्पत्ति है। वह कन्हैयान वंश के पूर्वज थे। और इस प्रकार, अंबत्था, यदि कोई आपके प्राचीन नाम और वंश का पता लगाए, पिता और माता दोनों की ओर से, तो यह पता चलता है कि शाक्य कभी आपके स्वामी थे, और आप उनकी दासियों में से एक की संतान हैं।'

17. जब उन्होंने ऐसा कहा, तो युवा ब्राह्मणों ने भगवान बुद्ध से कहा, “आदरणीय गौतम अंबत्था को दासी की संतान होने के इस अपमान से अधिक कठोर रूप से अपमानित न करें। हे गौतम, वह उच्च कुल का है और अच्छे परिवार से है; वह पवित्र भजनों का ज्ञाता है, कुशल पाठकर्ता है, विद्वान है। और वह इन मामलों में आदरणीय गौतम को उत्तर देने में सक्षम है।”

18. तब भगवान बुद्ध ने उनसे कहा: 'बिल्कुल सही। यदि आप अन्यथा सोचते, तो हमारी चर्चा को आगे बढ़ाना आपका काम होता। लेकिन जैसा कि आप सोचते हैं, अंबत्था को स्वयं बोलने दीजिए।'

19. 'हम ऐसा ही सोचते हैं; और हम चुप रहेंगे। अंबत्था इन मामलों में पूज्य गौतम को उत्तर देने में सक्षम हैं।'

20. तब भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण अंबत्थ से कहा: 'हे अंबत्थ, यह एक और प्रश्न उठता है, जो बहुत ही तर्कसंगत है और जिसका उत्तर तुम्हें अनिच्छा से ही सही, देना चाहिए। यदि तुम स्पष्ट उत्तर नहीं दोगे, या किसी अन्य मुद्दे पर चले जाओगे, या चुप रहोगे, या चले जाओगे, तो तुम्हारा सिर वहीं टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। तुमने क्या सुना है, जब वृद्ध और अनुभवी ब्राह्मण, तुम्हारे या उनके गुरु, आपस में चर्चा कर रहे थे कि कन्हैयान वंश की उत्पत्ति कहाँ से हुई और वे किस पूर्वज से जुड़े हैं?'

और जब उन्होंने ऐसा कहा तो अंबत्थ चुप रहे। तब भगवान ने उनसे वही प्रश्न दोबारा पूछा। फिर भी अंबत्थ चुप रहे। तब भगवान ने उनसे कहा: 'अंबत्थ, अब उत्तर देना बेहतर होगा। यह चुप रहने का समय नहीं है। क्योंकि अंबत्थ, जो कोई भी तथागत (सत्य को प्राप्त करने वाले) द्वारा पूछे गए उचित प्रश्न का उत्तर तीसरी बार पूछे जाने पर भी नहीं देता, उसका सिर मौके पर ही टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।'

21. उस समय वज्र धारण करने वाला प्राणी आकाश में अंबत्थ के ऊपर लोहे के एक विशालकाय पिंड के साथ खड़ा था, जो अग्निमय, तेजस्वी और दीप्तिमान था। उसका इरादा था कि यदि अंबत्थ उत्तर न दे तो वह उसका सिर वहीं टुकड़े-टुकड़े कर दे। भगवान बुद्ध ने वज्र धारण करने वाले प्राणी को देखा, और ब्राह्मण अंबत्थ ने भी। अंबत्थ को जब इसका ज्ञान हुआ, तो वह भयभीत, चौंक और व्याकुल होकर भगवान बुद्ध से सुरक्षा, संरक्षण और सहायता की प्रार्थना करते हुए उनके पास श्रद्धापूर्वक बैठ गया और बोला, 'भगवान बुद्ध ने क्या कहा? एक बार फिर कहिए!'

'अंबत्था, तुम्हारा क्या विचार है? तुमने क्या सुना है, जब वृद्ध और अनुभवी ब्राह्मण, तुम्हारे या उनके गुरु, आपस में चर्चा कर रहे थे कि कन्हैयान वंश की उत्पत्ति कहाँ से हुई और वे किस पूर्वज से जुड़े हैं?'

'जी गौतम, मैंने भी यही सुना है, जैसा कि पूज्य गौतम ने कहा है। यही कन्हायन वंश की उत्पत्ति है, और यही वह पूर्वज हैं जिनसे वे अपना वंश जोड़ते हैं।'

22. जब उसने ऐसा कहा तो युवा ब्राह्मण शोर-शराबा और उपद्रव मचाने लगे; और कहने लगे, 'वे कहते हैं कि ब्राह्मण अंबत्थ नीच कुल का है; उसका परिवार प्रतिष्ठित नहीं है; वह दासी का वंशज है; और शाक्य उसके स्वामी थे। हमने यह नहीं सोचा था कि समना गौतम, जिनके वचन स्वयं धर्म हैं, भरोसेमंद नहीं होंगे!'

23. और भगवान बुद्ध ने सोचा, 'ये ब्राह्मण अंबत्था को दासी की संतान कहकर उसकी निंदा करने में हद पार कर रहे हैं। मुझे उसे उनके अपमान से मुक्त करना चाहिए।' और उन्होंने उनसे कहा, 'अंबत्था ब्राह्मण की उसके वंश के आधार पर निंदा करने में अधिक कठोर मत बनो।' वह कान्हा एक महान ऋषि बन गया। वह दक्कन (दक्षिण भारत) गया, वहाँ उसने रहस्यवादी श्लोक सीखे, और राजा ओक्काका (इक्ष्वाकु) के पास लौटकर उसने उसकी पुत्री मद्दरूपी से विवाह की माँग की। राजा ने उत्तर में कहा, "यह कौन है जो मेरी दासी का पुत्र

होते हुए भी मेरी पुत्री से विवाह की माँग कर रहा है?" और क्रोधित होकर उसने अपने धनुष पर बाण चढ़ाया। परन्तु न तो वह बाण चला सका और न ही उसे वापस कमान से उतार सका।

तब मंत्री और दरबारी संत कान्हा के पास गए और बोले: "महाराज को सुरक्षित जाने दीजिए; राजा को सुरक्षित जाने दीजिए।"

"राजा को कोई हानि नहीं होगी। लेकिन यदि वह तीर नीचे की ओर चलाएगा, तो उसके राज्य की सीमा तक धरती सूख जाएगी।"

"महामहिम, राजा और देश दोनों सुरक्षित रहें।"

"राजा को कोई हानि नहीं होगी, न ही उसकी भूमि को। लेकिन यदि वह तीर ऊपर की ओर चलाएगा, तो देवता उसके राज्य के विस्तार क्षेत्र में सात वर्षों तक वर्षा नहीं करेंगे।"

"हे महाराज, राजा और देश दोनों की सुरक्षित यात्रा हो; और ईश्वर वर्षा करे।"

"राजा को कोई हानि नहीं होगी, न ही धरती को, और देवता वर्षा करेंगे। लेकिन यदि राजा अपने सबसे बड़े पुत्र पर तीर चलाए, तो राजकुमार को कोई हानि नहीं होगी, उसके एक बाल को भी स्पर्श नहीं होगा।"

तब, हे ब्राह्मणों, मंत्रियों ने यह बात ओक्काका को बताई और कहा, "राजा अपने बड़े पुत्र पर निशाना साधें। उन्हें न तो कोई हानि होगी और न ही कोई भय।" राजा ने वैसा ही किया, और कोई हानि नहीं हुई। परन्तु राजा, इस सीख से भयभीत होकर, अपनी पुत्री मद्दा-रूपी को उस व्यक्ति से विदा कर दिया। हे ब्राह्मणों, अंबत्था की दासी पूर्वज के मामले में उनकी निंदा करने में अति कठोर मत बनो। वह कान्हा एक महान ऋषि थे।

24. तब भगवान बुद्ध ने अंबत्थ से कहा, 'अंबत्थ, तुम क्या सोचते हो? मान लो कि एक क्षत्रिय युवक का किसी ब्राह्मण कन्या से संबंध हो और उनके संभोग से एक पुत्र का जन्म हो। तो क्या क्षत्रिय युवक के माध्यम से ब्राह्मण कन्या को प्राप्त हुआ वह पुत्र ब्राह्मणों से आदर के प्रतीक के रूप में आसन और जल ग्रहण करेगा?'

'हां, वो करेगा, गौतम।'

लेकिन क्या ब्राह्मण उसे मृतकों को अर्पित भोज, या दूध में उबले भोजन (2) या देवताओं को अर्पित प्रसाद, या उपहार के रूप में भेजे गए भोजन में भाग लेने की अनुमति देंगे?

'हां, वे ऐसा करेंगे, गौतम।'

लेकिन क्या ब्राह्मण उसे अपने श्लोक सिखाएंगे या नहीं?

'वे ऐसा करेंगे, गौतम।'

'लेकिन क्या वह उनकी महिलाओं से अलग-थलग रहेगा या नहीं?'

'उसे रोका नहीं जा सकता था।'

लेकिन क्या क्षत्रिय उन्हें क्षत्रिय दीक्षा समारोह में भाग लेने की अनुमति देंगे?

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

'क्यों नहीं वो?'

'क्योंकि वह मां की तरफ से शुद्ध वंश का नहीं है।'

25. 'तो फिर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? मान लो कि एक ब्राह्मण युवक का एक क्षत्रिय कन्या से संबंध हो और उनके संभोग से एक पुत्र का जन्म हो। तो क्या ब्राह्मण युवक के माध्यम से क्षत्रिय कन्या को प्राप्त हुआ पुत्र ब्राह्मणों से आदर के प्रतीक के रूप में आसन और जल ग्रहण करेगा?'

'हां, वो करेगा, गौतम।'

लेकिन क्या ब्राह्मण उसे मृतकों को अर्पित भोज, या दूध में उबले भोजन, या देवताओं को अर्पित प्रसाद, या उपहार के रूप में भेजे गए भोजन में भाग लेने की अनुमति देंगे?

'हां, वे ऐसा करेंगे, गौतम।'

लेकिन क्या ब्राह्मण उसे अपने श्लोक सिखाएंगे या नहीं?

'वे ऐसा करेंगे, गौतम।'

'लेकिन क्या वह उनकी महिलाओं से अलग-थलग रहेगा या नहीं?'

'वो ऐसा नहीं करेगा, गौतम।'

लेकिन क्या क्षत्रिय उन्हें क्षत्रिय दीक्षा समारोह में भाग लेने की अनुमति देंगे?

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

'क्यों नहीं वो?'

'क्योंकि वह पिता की तरफ से शुद्ध वंश का नहीं है।'

26. 'तो, अंबत्था, चाहे स्त्री की तुलना स्त्री से की जाए या पुरुष की तुलना पुरुष से, क्षत्रिय श्रेष्ठ हैं और ब्राह्मण हीन हैं।

'और तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? मान लो कि ब्राह्मण किसी अपराध के कारण किसी ब्राह्मण को उसके बाल मुंडवाकर और उसके सिर पर राख डालकर देश से निकाल दें, उसे अपने देश या कस्बे से निर्वासित कर दें। क्या उसे ब्राह्मणों के बीच बैठने या पानी पीने को मिलेगा?'

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

'या क्या ब्राह्मण उसे मृतकों को अर्पित भोजन, या दूध में उबला भोजन, या देवताओं को अर्पित भोजन, या उपहार के रूप में भेजा गया भोजन ग्रहण करने की अनुमति देंगे?'

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

'या फिर ब्राह्मण उसे अपने श्लोक सिखाएंगे या नहीं?'

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

'और क्या उसे उनकी महिलाओं से अलग कर दिया जाएगा या नहीं?'

'उसे अलग-थलग कर दिया जाएगा।'

27. 'पर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? यदि क्षत्रियों ने भी उसी प्रकार किसी क्षत्रिय को बहिष्कृत कर दिया होता और उसे देश या नगर से निर्वासित कर दिया होता, तो क्या ब्राह्मणों के बीच उसे जल और आसन दिया जाता?'

'हां, वो करेगा, गौतम।'

और क्या उसे मृतकों को अर्पित भोजन, या दूध में उबला भोजन, या देवताओं को अर्पित भोजन, या उपहार के रूप में भेजा गया भोजन ग्रहण करने की अनुमति दी जाएगी?

'वो करेगा, गौतम।'

'और क्या ब्राह्मण उसे अपने श्लोक सिखाएंगे?'

'क्या वे ऐसा करेंगे, गौतम?'

'और क्या उसे उनकी महिलाओं से अलग कर दिया जाएगा या नहीं?'

'वो ऐसा नहीं करेगा, गौतम।'

लेकिन, अंबत्था, ऐसा करने पर क्षत्रिय घोर अपमानित हो जाता, उसका सिर मुंडा हुआ होता, राख से ढककर उसकी हत्या कर दी जाती, और उसे देश-नगर से निकाल दिया जाता। अतः, भले ही क्षत्रिय घोर अपमानित हो जाए, फिर भी यह सत्य है कि क्षत्रिय श्रेष्ठ हैं और ब्राह्मण हीन हैं।

28. इसके अलावा, ब्रह्मा देवताओं में से एक, सनमकुमार (सनत्कुमार) ने इस श्लोक का उच्चारण किया था:

"वंश में विश्वास रखने वालों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है। परन्तु जो ज्ञान और धर्म में परिपूर्ण है, वही देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है।"

"हे अंबत्थ, इस श्लोक का ब्रह्मा सनमकुमार ने सुंदर ढंग से गायन किया है, यह सुंदर कथन है, अर्थपूर्ण कथन है। मैं भी इसे स्वीकार करता हूँ; हे अंबत्थ, मैं भी यही कहता हूँ।"

"वंश में विश्वास रखने वालों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है। परन्तु जो ज्ञान और धर्म में परिपूर्ण है, वही देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है।"

यहां पाठ के लिए प्रथम भाग समाप्त होता है।
II. 1. 'पर हे गौतम, उस श्लोक में वर्णित धर्म और ज्ञान क्या है?'

'अंबत्था, ज्ञान और धर्म की सर्वोच्च पूर्णता में, न तो जन्म का प्रश्न है, न वंश का, और न ही उस अहंकार का जो कहता है: "तुम मेरे समान योग्य हो" या "तुम मेरे समान योग्य नहीं हो"। विवाह या विवाह कराने की बात होने पर ही ऐसी बातों का उल्लेख होता है। क्योंकि अंबत्था, जो कोई भी जन्म या वंश की धारणाओं, या सामाजिक स्थिति के अहंकार, या विवाह के बंधन में बंधा है, वह सर्वोत्तम ज्ञान और धर्म से बहुत दूर है। केवल इन सभी बंधनों से मुक्त होकर ही व्यक्ति स्वयं ज्ञान और आचरण की उस सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त कर सकता है।'

2. 'पर हे गौतम, वह आचरण क्या है और वह ज्ञान क्या है?'

'ऐसे व्यक्ति, अंबत्था, को ज्ञान में परिपूर्ण, आचरण में परिपूर्ण, ज्ञान और आचरण दोनों में परिपूर्ण कहा जाता है। और ज्ञान और आचरण में इससे उच्चतर और मधुर कोई अन्य परिपूर्णता नहीं है।'

3. 'अब, अंबत्था, ज्ञान और अच्छाई की इस सर्वोच्च पूर्णता में [चार रिसाव हैं। और वे चार क्या हैं?'

"हे अंबत्था, यदि कोई संन्यासी या ब्राह्मण, ज्ञान और आचरण में इस सर्वोच्च पूर्णता को पूर्णतः प्राप्त किए बिना, अपने कंधे पर बोझ (आग जलाने की लकड़ियाँ, पानी का घड़ा, सुइयाँ और भिक्षु के अन्य सामान) लेकर जंगल की गहराई में उतर जाए और स्वयं से प्रतिज्ञा करे: "मैं अब से केवल गिरे हुए फलों पर ही जीवित रहूँगा"—तो निःसंदेह, वह केवल उसी का सेवक बनने योग्य सिद्ध होता है जिसने ज्ञान और धर्म को प्राप्त कर लिया है।"

और फिर, अंबत्था, यदि कोई संन्यासी या ब्राह्मण, ज्ञान और आचरण में इस सर्वोच्च पूर्णता को पूर्णतः प्राप्त किए बिना, और केवल स्वयं गिरे फलों पर जीवन यापन करने की अवस्था को प्राप्त किए बिना, कुदाल और टोकरी लेकर जंगल की गहराई में उतर जाए और स्वयं से यह प्रतिज्ञा करे: "मैं अब से केवल कंद, जड़ और फलों पर ही जीवन यापन करूंगा"—तो निःसंदेह, वह केवल उसी का सेवक बनने योग्य सिद्ध होता है जिसने ज्ञान और धर्म को प्राप्त कर लिया है।

और फिर, अंबत्था, यदि कोई संन्यासी या ब्राह्मण, ज्ञान और आचरण में इस सर्वोच्च पूर्णता को पूर्णतः प्राप्त किए बिना, और केवल स्वयं गिरे हुए फलों पर जीवन यापन किए बिना, और केवल कंदों, जड़ों और फलों पर जीवन यापन किए बिना, किसी गाँव या कस्बे की सीमा के पास एक अग्नि-मंदिर का निर्माण करे और वहाँ अग्नि-देव की सेवा करते हुए निवास करे—तो निश्चय ही, वह केवल उसी का सेवक बनने योग्य सिद्ध होता है जिसने ज्ञान और धर्म को प्राप्त कर लिया हो।

और फिर, अंबत्था, यदि कोई संन्यासी या ब्राह्मण, ज्ञान और आचरण में इस सर्वोच्च पूर्णता को पूर्णतः प्राप्त किए बिना, केवल अपने ही गिरे फलों पर जीवन यापन किए बिना, केवल कंदों, जड़ों और फलों पर जीवन यापन किए बिना, और अग्निदेव की सेवा किए बिना, चार मुख्य सड़कों के संगम पर चार द्वारों वाला भिक्षागृह बनवाए और वहाँ निवास करे, और मन ही मन कहे: "जो कोई भी, चाहे संन्यासी हो या ब्राह्मण, इन चारों दिशाओं में से किसी भी दिशा से यहाँ से गुजरेगा, मैं अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुसार उसका सत्कार करूँगा"—तो निश्चय ही वह केवल उसी का सेवक बनने योग्य सिद्ध होता है जिसने ज्ञान और धर्म को प्राप्त कर लिया हो।

'ये चार रिसाव हैं, अंबत्था, जो धार्मिकता और आचरण में सर्वोच्च पूर्णता की ओर ले जाते हैं।'

4. 'अब तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? क्या तुम, एक ही शिक्षक के अधीन शिष्यों के एक समूह में से एक होने के नाते, ज्ञान और आचरण की इस सर्वोच्च पूर्णता में शिक्षित हुए हो?'

'ऐसा नहीं है, गौतम। मैंने कितना कम सीखा है! यह ज्ञान और आचरण की पूर्णता कितनी सर्वोच्च है! इसमें प्रशिक्षित होना तो मेरे बस की बात ही नहीं है।'

'तो फिर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? यद्यपि तुमने ज्ञान और अच्छाई की इस सर्वोच्च पूर्णता को पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया है, क्या तुम्हें इस बात का प्रशिक्षण दिया गया है कि तुम अपने कंधों पर बोझ उठाकर जंगल की गहराई में उतर जाओ, मानो कोई स्वयं गिरे हुए फलों पर ही जीवन यापन करने का व्रत निभाना चाहता हो?'

'वो भी नहीं, गौतम।'

'तो फिर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? यद्यपि तुमने ज्ञान और अच्छाई की इस सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त नहीं किया है, न ही तुम स्वयं गिरे फलों पर जीवन यापन करने में सक्षम हुए हो, क्या तुम्हें कुदाल और टोकरी लेकर जंगल की गहराई में उतरने का प्रशिक्षण दिया गया है, मानो तुम केवल कंद, जड़ और फलों पर जीवन यापन करने का व्रत निभाना चाहते हो?'

'वो भी नहीं, गौतम।'

'तो फिर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? यद्यपि तुमने ज्ञान और अच्छाई की इस सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त नहीं किया है, और स्वयं गिरे हुए फलों पर जीवन यापन करना नहीं सीखा है, और कंदों, जड़ों और फलों पर जीवन यापन करना नहीं सीखा है, तो क्या तुम्हें किसी गाँव या कस्बे की सीमा पर अपने लिए अग्नि-मंदिर बनाने और वहाँ अग्नि-देवता की सेवा करने वाले के रूप में निवास करने की शिक्षा दी गई है?'

'वो भी नहीं, गौतम।'

'तो फिर तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? यद्यपि तुमने ज्ञान और अच्छाई की इस सर्वोच्च पूर्णता को प्राप्त नहीं किया है, और स्वयं गिरे हुए फलों पर जीवन यापन करना नहीं सीखा है, और कंदों, जड़ों और फलों पर जीवन यापन करना नहीं सीखा है, और अग्निदेव की सेवा करना नहीं सीखा है, क्या तुम्हें यह सिखाया गया है कि तुम चार मुख्य सड़कों के चौराहे पर चार दरवाजों वाला भिक्षागृह बनाओ, और वहाँ ऐसे निवास करो जैसे तुम उस व्रत का पालन करना चाहते हो कि जो भी उस रास्ते से, किसी भी दिशा से आए, अपनी क्षमता और सामर्थ्य के अनुसार उसका सत्कार करो?'

'वो भी नहीं, गौतम।'

5. 'तो फिर, अंबत्थ, शिष्य होने के नाते, तुम उचित प्रशिक्षण से वंचित रह गए हो, न केवल सर्वोच्च ज्ञान और आचरण में, बल्कि उन चार दोषों में से किसी एक में भी, जिनके कारण पूर्ण प्राप्ति बाधित होती है। और तुम्हारे गुरु, ब्राह्मण पोक्खरसादी ने भी तुमसे यह कहा है: "ये कौन से गंजे, पाखंडी साधु, नीच काले लोग, हमारे रिश्तेदारों के पैरों की गंदगी हैं, जो तीन प्रकार के वैदिक ज्ञान में पारंगत ब्राह्मणों से बात करने का दावा करते हैं!" - स्वयं उन्होंने इन छोटे कर्तव्यों में से एक का भी पालन नहीं किया है (जो मनुष्यों को उच्च कर्तव्यों की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित करते हैं)। देखो, अंबत्थ, तुम्हारे गुरु, ब्राह्मण पोक्खरसादी ने तुम्हारे साथ कितना गहरा अन्याय किया है।'

6. "ब्रह्मन पोक्खरसादी, अंबत्थ, कोसल के राजा पसेनदी से अनुदान प्राप्त कर रहे हैं। परन्तु राजा उन्हें अपने समक्ष आने की अनुमति नहीं देते। जब वे उनसे परामर्श करते हैं, तो वे उनसे केवल पर्दे के पीछे से ही बात करते हैं। हे अंबत्थ, यह कैसे हो सकता है कि जिस राजा से वे यह शुद्ध और वैध भरण-पोषण प्राप्त करते हैं, कोसल के राजा पसेनदी, वे ही उन्हें अपने समक्ष आने की अनुमति नहीं देते? देखो, अंबत्थ, तुम्हारे गुरु, ब्राह्मण पोक्खरसादी ने इस मामले में तुम्हारे साथ कितना गहरा अन्याय किया है।"

7. 'अब अंबत्था, तुम क्या सोचते हो? मान लो कि कोई राजा अपने हाथी की गर्दन पर बैठा हो, या अपने घोड़े की पीठ पर, या अपने रथ के पायदान पर खड़ा हो, और अपने सरदारों या राजकुमारों के साथ राज्य के किसी निर्णय पर चर्चा कर रहा हो। और मान लो कि जैसे ही वह उस स्थान से उठकर एक तरफ कदम रखे, कोई कारीगर (शूद्र) या कारीगर का दास आकर वहाँ खड़ा हो जाए और इस विषय पर चर्चा करते हुए कहे: "राजा पसेनादि ने ऐसा कहा।" यद्यपि वह राजा की तरह बोले या राजा की तरह चर्चा करे, तो क्या वह राजा कहलाएगा या उसका कोई अधिकारी?'

'बिल्कुल नहीं, गौतम।'

8. 'परन्तु हे अंबत्था, वे प्राचीन ब्राह्मण कवि (ऋषि), जिन्होंने श्लोकों की रचना की, जिनके प्राचीन शब्द स्वरूपों का आज ब्राह्मण पुनरावलोकन करते हैं, उनका उच्चारण करते हैं या उन्हें रचित करते हैं—अर्थात अठक, वामक, वामदेव, वेस्सामित्त, यमतग्गी, अंगिरस, भारद्वग, वासेत्थ, कस्सप और भगु{1}—यद्यपि तुम कह सको: "मैं एक शिष्य होने के नाते उनके श्लोकों को कंठस्थ जानता हूँ," तो भी इस कारण ऋषि होना या ऋषि की अवस्था प्राप्त करना—ऐसी स्थिति का कोई अस्तित्व नहीं है!'

9. 'अब तुम क्या सोचते हो, अंबत्था? तुमने क्या सुना है जब ब्राह्मण, वृद्ध और अनुभवी, तुम्हारे गुरु या उनके गुरु आपस में बातें कर रहे थे—क्या वे प्राचीन ऋषि, जिनके श्लोक तुम बार-बार गाते और दोहराते हो, तुम्हारी और तुम्हारे गुरु की तरह सजे-धजे, सुगंधित, बाल-दाढ़ी संवारे, मालाओं और रत्नों से सजे, सफेद वस्त्र पहने, पाँचों इंद्रिय सुखों का पूर्ण आनंद लेते हुए घूमते थे?'

'वो नहीं, गौतम।'

या फिर क्या वे अपने भोजन के रूप में सर्वोत्तम किस्म के उबले हुए चावल खाते थे, जिनमें से सभी काले धब्बे निकालकर अलग कर दिए जाते थे, और जिन्हें तरह-तरह की चटनी और करी के साथ मिलाकर खाया जाता था, जैसा कि आप और आपके शिक्षक भी अब करते हैं?

'वो नहीं, गौतम।'

'या फिर उनकी सेवा उन महिलाओं द्वारा की जाती थी जिनके कमर के चारों ओर झालर और लबादे होते थे, जैसा कि आप और आपके शिक्षक भी अब करते हैं?'

या फिर वे भी, जैसा कि आप और आपके शिक्षक अब करते हैं, गुंथी हुई अयाल और पूंछ वाली घोड़ियों द्वारा खींचे जाने वाले रथों को चलाते हुए, लंबी छड़ियों और अंकुशों का उपयोग करते हुए घूमते थे?

'वो नहीं, गौतम।'

या फिर क्या उन्होंने अपने चारों ओर खाई खोदकर और फाटकों के सामने लोहे की छड़ें लगाकर, लंबी तलवारों से लैस सैनिकों द्वारा किलेबंद शहरों में अपनी सुरक्षा की थी, जैसा कि आप और आपके शिक्षक भी अब करते हैं?

'वो नहीं, गौतम।'

10. 'तो फिर, अंबत्था, न तो तुम ऋषि हो, न ही अपने गुरु, और न ही तुम उन परिस्थितियों में रहते हो जिनमें ऋषि रहते थे। परन्तु अंबत्था, मेरे बारे में तुम्हारे मन में जो भी संदेह या उलझन हो, मुझसे पूछो। मैं उसे स्पष्ट कर दूंगा।'

11. फिर भगवान बुद्ध अपने कक्ष से बाहर निकले और इधर-उधर टहलने लगे। अंबत्थ ने भी ऐसा ही किया। जब वह भगवान बुद्ध के पीछे-पीछे टहल रहा था, तो उसने एक महान पुरुष के बत्तीस लक्षणों का अवलोकन किया कि क्या वे भगवान बुद्ध के शरीर पर प्रकट होते हैं या नहीं। उसने उनमें से दो को छोड़कर बाकी सभी को देखा। उन दो लक्षणों—छिपे हुए जननांग और जीभ की लंबाई—के संबंध में वह संशय और असमंजस में था, संतुष्ट नहीं था, निश्चित नहीं था।

12. और भगवान बुद्ध को पता था कि वह कितना असमंजस में है। उन्होंने अपनी अद्भुत वरदान से ऐसी व्यवस्था की कि ब्राह्मण अंबत्था ने देखा कि भगवान बुद्ध का वह भाग जो वस्त्रों से ढका होना चाहिए था, आवरण में लिपटा हुआ था। और भगवान बुद्ध ने अपनी जीभ को इस प्रकार मोड़ा कि उन्होंने अपने दोनों कानों को छुआ और सहलाया, अपने दोनों नथुनों को छुआ और सहलाया, और अपने माथे के पूरे घेरे को अपनी जीभ से ढक लिया।

और युवा ब्राह्मण अंबत्था ने सोचा, 'समना गौतम में एक महान व्यक्ति के बत्तीस लक्षण हैं, वे सभी लक्षण हैं, न कि केवल कुछ।' और उसने भगवान बुद्ध से कहा, 'हे गौतम, अब हम चलना चाहते हैं। हम व्यस्त हैं और हमें बहुत काम करना है।'

'अंबत्था, जो तुम्हें उचित लगे वही करो।'

और अंबत्था घोड़ियों द्वारा खींचे जाने वाले अपने रथ पर सवार होकर वहां से चला गया।

13. उस समय ब्राह्मण पोक्खरसादी ब्राह्मणों के एक बड़े दल के साथ उक्कत्था से निकले थे और अपने आरामगाह में अंबत्थ की प्रतीक्षा कर रहे थे। अंबत्थ भी वहाँ पहुँचे। जब वे अपने रथ में उस मार्ग तक आ गए जहाँ तक रथों का आना संभव था, तो वे रथ से उतर गए और पैदल चलकर पोक्खरसादी के पास आए, उन्हें प्रणाम किया और आदरपूर्वक एक तरफ बैठ गए। जब वे बैठ गए, तो पोक्खरसादी ने उनसे कहा:

14. 'अच्छा, अंबत्था! क्या तुमने भगवान बुद्ध को देखा?'

'जी हां, सर, हमने उसे देखा था।'

'अच्छा! क्या पूज्य गौतम वाकई वैसे ही हैं जैसा उनके बारे में मैंने आपको बताया है; या अन्यथा। क्या वे वाकई वैसे ही हैं, या नहीं?'

'वह बिल्कुल वैसा ही है, महोदय, जैसा कि उसकी प्रतिष्ठा से प्रमाणित होता है, अन्यथा नहीं। वह ऐसा ही है, भिन्न नहीं। और वह एक महान व्यक्ति के बत्तीस लक्षणों से संपन्न है, उन सभी से, न कि केवल कुछ से।'

'और क्या तुमने समना गौतम से कोई बात की, अंबत्था?'

'जी हां, सर, मैंने किया था।'

'और बातचीत कैसी रही?'

तब अंबत्था ने ब्राह्मण पोक्खरासादी को भगवान बुद्ध से हुई सारी बातचीत बताई।

15. जब उसने ऐसा कहा, तो पोक्खरसादी ने उससे कहा, 'अरे! हे ज्ञानी! अरे! हे मूर्ख! अरे! हे हमारे तीन वैदिक ज्ञान के ज्ञाता! कहते हैं कि जो व्यक्ति इस प्रकार अपना काम करता है, उसे मृत्यु के बाद शरीर के नष्ट होने पर किसी भयानक दु:ख और पीड़ा में पुनर्जन्म लेना पड़ता है। तुम्हारे इन उद्दंड शब्दों का क्या अर्थ है, यदि वे पूज्य गौतम द्वारा प्रकट किए गए रहस्यों की ओर इशारा नहीं करते? हे ज्ञानी! हे मूर्ख! हे वैदिक ज्ञान के ज्ञाता!' क्रोधित और असंतुष्ट होकर उसने पैर से प्रहार किया और अंबत्था को लुढ़का दिया। और वह उसी क्षण भगवान बुद्ध से मिलने जाना चाहता था।

16. परन्तु वहाँ के ब्राह्मणों ने पोक्खरसादी से इस प्रकार कहा: 'हे महोदय, आज समना गौतम से मिलने जाना बहुत देर हो चुकी है। आदरणीय पोक्खरसादी कल ऐसा कर सकते हैं।'

इसलिए पोक्खरसादी ने अपने घर पर मीठे व्यंजन, कठोर और नरम दोनों प्रकार के, तैयार करवाए और मशालों की रोशनी में रथों पर लादकर उक्कत्था ले गए। फिर वे स्वयं अपने रथ में सवार होकर इखनांकला वन की ओर गए, जहाँ तक वाहनों के लिए मार्ग संभव था, और फिर पैदल चलकर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ भगवान बुद्ध विराजमान थे। और जब उन्होंने भगवान बुद्ध से शिष्टाचार और विनम्रता के अभिवादन और शुभकामनाएँ दीं, तो वे एक तरफ बैठ गए और भगवान बुद्ध से कहा:

17. 'क्या हमारा शिष्य गौतम, युवा ब्राह्मण अंबत्था, यहाँ आया था?'

'हां, ब्राह्मण, उसके पास है।'

'और क्या तुमने, गौतम, उससे कोई बात की?'

'हां, ब्राह्मण, मेरे पास था:

और आपने उससे किस विषय पर बात की?

18. तब भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण पोक्खरसादी को सारी बातें बताईं। और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो पोक्खरसादी ने भगवान बुद्ध से कहा:

'गौतम, वह युवा ब्राह्मण अंबत्था नासमझ और मूर्ख है। गौतम, उसे क्षमा कर दीजिए।'

'हे ब्राह्मण, उस युवा ब्राह्मण अंबत्थ को पूर्णतः प्रसन्न रहने दो।'

19. ब्राह्मण पोक्खरसादी ने भगवान बुद्ध के शरीर पर एक महान प्राणी के बत्तीस लक्षणों का अवलोकन किया। उन्होंने दो को छोड़कर बाकी सभी को स्पष्ट रूप से देखा। उनमें से दो - आवरण में छिपा जननांग और विस्तृत जीभ - के बारे में वे अभी भी संशय में थे और निर्णय नहीं ले पा रहे थे। लेकिन भगवान बुद्ध ने पोक्खरसादी को वे लक्षण दिखाए, जैसे उन्होंने अंबत्था को दिखाए थे। पोक्खरसादी ने यह अनुभव किया कि भगवान बुद्ध एक महान प्राणी के बत्तीस लक्षणों से परिपूर्ण थे, न कि केवल कुछ से। उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, 'आदरणीय गौतम मुझे कल उनके साथ भोजन करने की कृपा करें, और संघ के सदस्यों को भी उनके साथ भोजन करने की कृपा करें।' भगवान बुद्ध ने मौन रहकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

20. तब ब्राह्मण पोक्खरसादी ने देखा कि भगवान बुद्ध ने भोजन ग्रहण कर लिया है, तो उन्होंने अगले दिन उन्हें समय की सूचना दी: 'हे गौतम, भोजन तैयार है।' भगवान बुद्ध, जो सुबह जल्दी तैयार हो गए थे, उन्होंने अपना वस्त्र धारण किया और अपना कुंड लेकर भाइयों के साथ पोक्खरसादी के घर गए और उनके लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। ब्राह्मण पोक्खरसादी ने अपने हाथों से भगवान बुद्ध को मीठे और नरम दोनों प्रकार के भोजन से तब तक तृप्त किया जब तक कि उन्होंने और भोजन करने से मना नहीं किया, और संघ के युवा ब्राह्मणों ने भी ऐसा ही किया। जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और कुंड और अपने हाथ धो लिए, तो पोक्खरसादी ने एक नीचा आसन ग्रहण किया और उनके बगल में बैठ गए।

21. तब भगवान बुद्ध ने उन्हें इस प्रकार बैठे हुए विधिवत प्रवचन दिए; अर्थात् उन्होंने उन्हें उदारता, सही आचरण, स्वर्ग, कामवासनाओं के खतरे, व्यर्थता और अशुद्धता तथा त्याग के लाभों के विषय में बताया। और जब भगवान बुद्ध ने देखा कि ब्राह्मण पोक्खरसादी तैयार, कोमल, निष्पक्ष, उन्नत और विश्वासी हृदय वाले हो गए हैं, तब उन्होंने उस सिद्धांत का प्रचार किया जो केवल बुद्धों ने ही प्राप्त किया है; अर्थात् दुःख, उसके उद्भव, उसके निवारण और मार्ग का सिद्धांत। और जिस प्रकार एक साफ कपड़ा, जिससे सारे दाग धुल गए हों, आसानी से रंग सोख लेता है, ठीक उसी प्रकार ब्राह्मण पोक्खरसादी ने वहाँ बैठे-बैठे ही सत्य के प्रति शुद्ध और निर्मल दृष्टि प्राप्त कर ली, और उन्होंने जाना: 'जिस किसी चीज का आरंभ होता है, उसमें विनाश की आवश्यकता भी अंतर्निहित होती है।'

22. तब ब्राह्मण पोक्खरसादी, जिन्होंने सत्य को देखा था, उस पर महारत हासिल की थी, उसे समझा था, उसमें गहराई तक उतर गए थे, जो संदेह से परे होकर उलझन को दूर कर पूर्ण विश्वास प्राप्त कर चुके थे, जो गुरु की शिक्षाओं के ज्ञान के लिए किसी अन्य व्यक्ति पर निर्भर नहीं थे, उन्होंने भगवान बुद्ध को संबोधित करते हुए कहा:

हे गौतम, आपके मुख के शब्द अत्यंत उत्कृष्ट हैं! जैसे कोई व्यक्ति गिरी हुई वस्तु को उठाता है, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट करता है, या भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग दिखाता है, या अंधकार में प्रकाश डालता है ताकि देखने वाले बाहरी रूप देख सकें, ठीक उसी प्रकार, हे भगवान, पूज्य गौतम ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से मुझे सत्य का ज्ञान कराया है। हे गौतम, मैं अपने पुत्रों, पत्नी, लोगों और साथियों के साथ पूज्य गौतम को अपना मार्गदर्शक, सत्य का मार्ग और संघ का मार्ग मानता हूँ। पूज्य गौतम मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें, उस व्यक्ति के रूप में जिसने आज से जीवन भर उन्हें अपना मार्गदर्शक माना है। और जिस प्रकार पूज्य गौतम उक्कत्था में अपने शिष्यों के परिवारों से मिलने जाते हैं, उसी प्रकार वे मेरे परिवार से भी मिलने आएं। वहाँ जो भी ब्राह्मण या उनकी पत्नियाँ हों, जो पूज्य गौतम को आदरपूर्वक प्रणाम करें, उनके समक्ष खड़े हों, उन्हें आसन या जल अर्पित करें, या उनमें प्रसन्नता ग्रहण करें, वह उनके लिए दीर्घकालिक कल्याण और आनंद का कारण बनेगा।

'हे ब्राह्मण, आपकी बात ठीक है।'

 1.4: सोनदंड सुत्त (डीएन 4)

1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार जब भगवान बुद्ध अपने लगभग पाँच सौ भाइयों के साथ ऐगा देश की यात्रा पर निकले, तो वे कैम्पा पहुँचे। और वहाँ कैम्पा में उन्होंने गग्गारा झील के किनारे डेरा डाला।

उस समय ब्राह्मण सूनादाओ चंपा में निवास कर रहा था, जो जीवन से भरपूर स्थान था, जहाँ बहुत सारे घास के मैदान, जंगल, पानी और अनाज थे, और यह एक शाही जागीर थी जो उसे मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार द्वारा एक शाही जागीर के रूप में प्रदान की गई थी, जिस पर उसका अधिकार राजा के समान था।

2. अब चंपा के ब्राह्मणों और गृहस्थों ने यह समाचार सुना: "वे कहते हैं कि शाक्य कुल के समा ॅआ गौतम, जिन्होंने शाक्य परिवार छोड़कर धार्मिक जीवन अपनाया था, अब अपने कई भाइयों के साथ चंपा पहुँच गए हैं और गग्गरा झील के किनारे ठहरे हुए हैं। उस पूज्य गौतम के विषय में यह उच्च प्रतिष्ठा दूर-दूर तक फैली हुई है कि वे अरहत हैं, पूर्णतः ज्ञानी हैं, ज्ञान और सद्गुणों से परिपूर्ण हैं, सुखी हैं, संसार के ज्ञान से परिपूर्ण हैं, मनुष्यों के लिए अद्वितीय मार्गदर्शक हैं, देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक हैं, एक धन्य व्यक्ति हैं, एक बुद्ध हैं।" वह स्वयं ही इस ब्रह्मांड को भलीभांति जानता और देखता है, मानो देवताओं, ब्रह्माओं और मारों के स्वर्गलोक तथा पाताल लोक, जिसमें संन्यासी और ब्राह्मण, राजकुमार और प्रजा शामिल हैं। इस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद वह अपना ज्ञान दूसरों को भी प्रकट करता है। वह अपने उद्गम, अपने विकास और अपने समापन में सुंदर सत्य का आध्यात्मिक और शाब्दिक दोनों रूपों में प्रचार करता है; वह उच्चतर जीवन को उसकी संपूर्णता और उसकी पवित्रता में प्रकट करता है।

और इस प्रकार अरहतों के दर्शन करना अच्छा है।

और चंपा के ब्राह्मण और गृहस्थ प्रत्येक जिले से समूहों और टोलियों में चंपा छोड़कर गग्गरा झील की ओर जाने लगे, ताकि उनकी गिनती की जा सके।

3. उस समय ब्राह्मण सूनादाओ अपने घर की ऊपरी छत पर दोपहर की नींद के लिए चले गए थे, और लोगों को इस प्रकार जाते हुए देखकर उन्होंने अपने द्वारपाल से कहा: 'चंपा के लोग इस प्रकार गग्गरा झील की ओर क्यों जा रहे हैं?'

तब द्वारपाल ने उसे यह समाचार सुनाया। और उसने कहा: "हे अच्छे द्वारपाल, चंपा के ब्राह्मणों और गृहस्थों के पास जाओ और उनसे कहो: 'ब्राह्मण चाहते हैं कि वे प्रतीक्षा करें। वे स्वयं समागोता के दर्शन करने आएंगे।'"

'बहुत अच्छा, महोदय,' द्वारपाल ने कहा और उसने वैसा ही किया।

4. उस समय विभिन्न राज्यों से लगभग पाँच सौ ब्राह्मण किसी न किसी काम से चंपा में ठहरे हुए थे। जब उन्होंने सुना कि सूनादाओ, सामॅगौतम से मिलने की योजना बना रहे हैं, तो वे सूनादाओ के पास गए और उनसे पूछा कि क्या यह सच है।

'यही मेरा इरादा है, महोदय। मैं समाओ गौतम से मिलने का प्रस्ताव करता हूँ।'

'आदरणीय सून्धाओं को ऐसा नहीं करना चाहिए। उनके लिए ऐसा करना उचित नहीं है। यदि आदरणीय सून्धाओं स्वयं उनसे मिलने जाते, तो आदरणीय सून्धाओं की प्रतिष्ठा घट जाती और समाॅगोतम की प्रतिष्ठा बढ़ जाती। यही मुख्य कारण है कि आप, महोदय, उनसे न मिलें, बल्कि वे आपसे मिलें।'

5. और उन्होंने सूआदा ब्राह्मण के समक्ष इसी प्रकार अन्य विचार भी रखे, अर्थात्:

कि वह दोनों तरफ से अच्छे कुल में जन्मा था, माता और पिता दोनों की ओर से सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश का था, उस पर जन्म के संबंध में कोई कलंक या निंदा नहीं थी।

वह समृद्ध, संपन्न और धनी था।

वह पवित्र शब्दों का बार-बार जाप करने वाला, रहस्यमय श्लोकों को कंठस्थ जानने वाला, तीनों वेदों में पारंगत, उनके सूचकांकों, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान और व्याख्या (चौथे के रूप में) तथा कथाओं (पांचवें के रूप में) में पारंगत, शब्दों और व्याकरण में विद्वान, लोकायत (प्रकृति-ज्ञान) में पारंगत और एक महान व्यक्ति के शरीर पर मौजूद संकेतों के सिद्धांत में पारंगत था।

वह सुंदर, देखने में मनमोहक, विश्वास जगाने वाला, रंगत से परिपूर्ण, गोरा, आकर्षक व्यक्तित्व वाला और राजसी व्यक्तित्व वाला था।

वह गुणी था, उसके गुण बढ़ते गए, और वह ऐसे गुणों से संपन्न था जो बहुत अधिक विकसित हो गए थे।

उनकी आवाज सुरीली थी और बोलने का तरीका भी मनमोहक था, और वे शिष्टतापूर्ण भाषा में बात करने में निपुण थे, उनकी बोली स्पष्ट थी, कर्कश नहीं, और विषय को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए उपयुक्त थी।

वह अनेकों के गुरु थे, जिन्होंने तीन सौ ब्राह्मणों को रहस्यमय श्लोकों का पाठ करना सिखाया, और विभिन्न दिशाओं और विभिन्न क्षेत्रों से अनेक युवा ब्राह्मण, जो उन श्लोकों के लिए तरस रहे थे, उनके पास उन्हें कंठस्थ करने के लिए आए।

वह वृद्ध, उम्रदराज और काफी उम्रदराज थे, लंबी आयु वाले और जीवन से भरपूर व्यक्ति थे।

कि मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार द्वारा उन्हें सम्मानित, महत्ववान, योग्य, पूजनीय और आदरपूर्ण माना जाता था।

उस झूठ को ब्राह्मण पोक्खरसादी द्वारा सम्मानित, महत्वपूर्ण, योग्य, पूजनीय और आदरपूर्ण माना गया।

वह चंपा में निवास करता था, जो जीवन से भरपूर स्थान था, जिसमें बहुत सारे घास के मैदान, जंगल और अनाज थे, और यह एक शाही जागीर थी जो उसे मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार द्वारा एक शाही उपहार के रूप में प्रदान की गई थी, और उस पर उसका अधिकार ऐसा था मानो वह स्वयं राजा हो।

इन सभी कारणों से यह उचित नहीं था कि ब्राह्मण सूआदाओ, समोआ गौतम का आह्वान करें, बल्कि यह उचित था कि समोआ गौतम उनका आह्वान करें।

6. जब उन्होंने ऐसा कहा, तो सोआदाओआ ने उनसे कहा:

तो महोदय, सुनिए और समझिए कि यह क्यों उचित है कि मैं पूज्य गौतम से प्रार्थना करूं, न कि वे मुझसे प्रार्थना करें।

'सचमुच, महोदय, आदरणीय गौतम दोनों तरफ से उच्च कुल के हैं, माता और पिता दोनों की ओर से सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश के हैं, उन पर कोई कलंक नहीं है और जन्म के संबंध में कोई निंदा नहीं है।'

"सचमुच, महोदय, समाओ गौतम ने अपने रिश्तेदारों के महान कुल को त्यागकर (धार्मिक जीवन में) प्रस्थान किया है।"

"सचमुच, महोदय, समाओआ गौतम ने बहुत सारा धन और सोना, जमीन में दबे और जमीन के ऊपर मौजूद खजाना त्याग कर (धार्मिक जीवन में) प्रस्थान किया है।"

"सचमुच, महोदय, समाओआ गौतम, जब वे अभी युवा ही थे, उनके सिर पर एक भी सफेद बाल नहीं था, अपनी युवावस्था की सुंदरता में, गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में चले गए थे।"

"सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम, यद्यपि उनके माता-पिता अनिच्छुक थे और रोते हुए उनके गाल आंसुओं से भीग गए थे, फिर भी उन्होंने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा ली, पीले वस्त्र धारण किए और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में चले गए।"

सचमुच, महोदय, समाओआ गौतम सुंदर हैं, देखने में मनभावन हैं, विश्वास जगाने वाले हैं, रंगत में बेहद खूबसूरत हैं, गोरे रंग के हैं, आकर्षक व्यक्तित्व वाले हैं और राजसी ढंग से देखे जा सकते हैं।

'सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम अरहतों के गुणों से परिपूर्ण, अच्छे और गुणी, अच्छाई और सद्‌गुण से संपन्न हैं।'

सचमुच, महोदय, समाओ गौतम की आवाज सुरीली है और उनका उच्चारण मधुर है; वे शिष्टतापूर्ण भाषा में निपुण हैं, उनकी आवाज स्पष्ट है, कर्कश नहीं है, और विषय को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए उपयुक्त है।

सचमुच, महोदय, समाओआ गौतम अनेक गुरुओं के गुरु हैं।

सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम में कामवासना का कोई वासना नहीं रह गया है, और उन्होंने मन की सभी चंचलता को त्याग दिया है।

सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम कर्म और कर्म में विश्वास करते हैं, [15] वे ब्राह्मण जाति को (अपने उपदेशों में) धर्म को सबसे आगे रखते हैं।

"सचमुच, महोदय, समाओ गौतम क्षत्रिय वंशों में प्राचीन और प्रतिष्ठित परिवार से थे।"

महोदय, यह सच है कि समाओआ गौतम एक समृद्ध, संपन्न और धनी परिवार से आए थे।

सचमुच, महोदय, लोग दूर-दूर के देशों से पूरे देश भर से समाओआ गौतम से प्रश्न पूछने आते हैं।

सचमुच, महोदय, असंख्य दिव्य प्राणी समाॅगोतम पर अपना विश्वास रखते हैं।

सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम के बारे में इतनी उच्च प्रतिष्ठा फैली हुई है कि उन्हें अरहत, उच्च कोटि का, पूर्णतः जागृत, ज्ञान और धर्म से परिपूर्ण, सुखी, संसार के ज्ञान से परिपूर्ण, एक धन्य पुरुष, एक बुद्ध कहा जाता है।

सचमुच, महोदय, समाॅआ गौतम में एक महान प्राणी के सभी बत्तीस शारीरिक लक्षण मौजूद हैं।

सचमुच, महोदय, समाओआ गौतम सभी मनुष्यों का स्वागत करते हैं, सौहार्दपूर्ण हैं, मेल-मिलाप करने वाले हैं, अभिमानी नहीं हैं, सभी के लिए सुलभ हैं, और बातचीत में संकोच नहीं करते हैं।

सचमुच, महोदय, समा ॅआ गौतम को उनके अनुयायियों के चारों वर्गों (संघ के भाई-बहन, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं) द्वारा सम्मानित, महत्ववान, आदरणीय और पूजनीय माना जाता है।

सचमुच, महोदय, अनेक देवता और मनुष्य समाओआ गौतम में विश्वास करते हैं।

'सचमुच, महोदय, जिस भी गाँव या कस्बे में समाओआ गौतम निवास करते हैं, वहाँ के गैर-मानव, मनुष्यों को कोई हानि नहीं पहुँचाते।'

महोदय, यह सर्वविदित है कि समा ॅत गौतम किसी संप्रदाय, किसी विद्यालय या विद्यालय के प्रमुख के रूप में, सभी संप्रदायों के संस्थापकों में सर्वमान्य रूप से श्रेष्ठ हैं। जबकि कुछ समा ॅत और ब्राह्मणों ने अनेक प्रकार की तुच्छ बातों से ख्याति अर्जित की है, समा ॅत गौतम ऐसे नहीं हैं। उनकी ख्याति उनके आचरण और धार्मिकता की पूर्णता से प्राप्त होती है।

सचमुच, महाराज, मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार ने अपने बच्चों और पत्नियों, अपनी प्रजा और अपने दरबारियों के साथ समा ॅआ गौतम पर भरोसा रखा है।

"सचमुच, महोदय, कोसला के राजा पसेनादि ने अपने बच्चों और पत्नियों, अपनी प्रजा और अपने दरबारियों के साथ समाओआ गौतम पर भरोसा रखा है।"

"सचमुच, महोदय, ब्राह्मण पोक्खरसादी ने अपने बच्चों और पत्नियों, अपने लोगों और अपने करीबी लोगों के साथ समा ॅआ गौतम पर भरोसा रखा है।"

"सचमुच, महोदय, समा ॅआ गौतम को मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार, कोसल के राजा पसेनदी और ब्राह्मण पोक्खरासादी द्वारा समान रूप से सम्मानित, महत्ववान, आदरणीय और पूजनीय माना जाता है।"

महोदय, यह सच है कि समा ॅआ गौतम अब कैम्पा पहुँच चुके हैं और गग्गरा झील के किनारे ठहरे हुए हैं। परन्तु हमारे गाँव की सीमा में आने वाले सभी समा ॅआ और ब्राह्मण हमारे अतिथि हैं। और अतिथि होने के नाते हमें उनका आदर और सम्मान करना चाहिए, उनकी पूजा-अर्चना करनी चाहिए। और चूंकि वे अब आए हैं, इसलिए उनके साथ अतिथि जैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, यह उचित नहीं है कि समा ॅ गौतम हमें पुकारें, बल्कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें पुकारें। और समा ॅ गौतम के गुणों का ज्ञान मुझे अभी तक ही है, लेकिन ये सभी गुण नहीं हैं, क्योंकि उनके गुण अतुलनीय हैं।

7. जब उन्होंने ऐसा कहा, तो उन ब्राह्मणों ने उनसे कहा: ‘आदरणीय सून्धाळा ने समाळा गौतम की इतनी स्तुति की है कि यदि वे यहाँ से सौ मील दूर भी निवास करें, तो भी किसी विश्वासी व्यक्ति के लिए वहाँ जाकर उनके दर्शन करना पर्याप्त होगा, चाहे उसे यात्रा के लिए भोजन सामग्री का थैला ही क्यों न उठाना पड़े। तो आइए हम सब मिलकर समाळा गौतम के दर्शन करने चलें!’

इसलिए सोआदाओआ ब्राह्मण ब्राह्मणों के एक बड़े समूह के साथ गग्गरा झील की ओर रवाना हुए।

8. अब जंगल से गुजरते समय सोआदाओआ के मन में निम्नलिखित दुविधा उत्पन्न हुई: 'यदि मैं समाओआ गौतम से कोई प्रश्न पूछूँ, और वह कहे: 'प्रश्न इस प्रकार नहीं पूछा जाना चाहिए, प्रश्न को इस प्रकार से तैयार किया जाना चाहिए; "तब वे लोग मेरे बारे में अनादरपूर्वक कह सकते हैं: 'यह सूदआ ब्राह्मण मूर्ख और अकुशल है। यह तो सही प्रश्न भी नहीं पूछ सकता।' यदि वे ऐसा करते हैं, तो मेरी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी; और मेरी प्रतिष्ठा के साथ-साथ मेरी आय भी कम हो जाएगी, क्योंकि जो कुछ हमें प्राप्त है, वह हमारी प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। लेकिन यदि समाआ गौतम मुझसे कोई प्रश्न पूछें, तो मैं समस्या की व्याख्या से उनकी स्वीकृति प्राप्त नहीं कर पाऊंगा। और यदि वे मुझसे कहें: 'प्रश्न का उत्तर इस प्रकार नहीं दिया जाना चाहिए; समस्या की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए;' तब वे लोग मेरे बारे में अनादरपूर्वक कह सकते हैं: 'यह सूदआ ब्राह्मण मूर्ख और अकुशल है। यह तो समस्या की व्याख्या से समाआ गौतम को भी संतुष्ट नहीं कर सकता।' लेकिन यदि वे ऐसा करते हैं, तो मेरी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी; और मेरी प्रतिष्ठा के साथ-

साथ मेरी आमदनी भी कम होती जाएगी, क्योंकि जो कुछ हमें प्राप्त होता है, वह हमारी प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। लेकिन दूसरी ओर, यदि इतनी दूर आने के बाद मैं समा◌ॅत गौतम को दर्शन दिए बिना वापस लौट जाऊं, तो शायद मंडली मेरे बारे में अपमानजनक बातें कहे, जैसे: "यह सूदआद ब्राह्मण मूर्ख और अनुभवहीन है, और अभिमान से भरा होने के बावजूद इतना भयभीत है कि समा◌ॅत गौतम को दर्शन देने का साहस नहीं करता। इतनी दूर आने के बाद वह कैसे वापस लौट सकता है?" लेकिन यदि वे ऐसा करते हैं, तो मेरी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी; और मेरी प्रतिष्ठा के साथ-साथ मेरी आमदनी भी कम होती जाएगी। क्योंकि जो कुछ हमें प्राप्त होता है, वह हमारी प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है।

9. सो सोआदा ब्राह्मण भगवान बुद्ध के पास गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने भगवान बुद्ध को अभिवादन और शिष्टाचार का पाठ किया और एक तरफ बैठ गए। चंपा के ब्राह्मणों और गृहस्थों में से कुछ ने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने अभिवादन और शिष्टाचार का पाठ किया और फिर एक तरफ बैठ गए; कुछ ने अपना नाम और परिवार का नाम पुकारा और फिर एक तरफ बैठ गए; और कुछ चुपचाप एक तरफ बैठ गए।

10. अब जब सो◌ॅदा◌ॅव वहाँ बैठे थे, तो वे अभी भी दुविधा में थे, पहले की तरह ही सोच रहे थे; और उन्होंने मन ही मन कहा: 'काश! समा◌ॅगौतम मुझसे मेरे ही विषय, वैदिक विद्या के तीन रूपों पर कोई प्रश्न पूछ लें। तब तो मैं प्रश्न का उत्तर देकर उनकी स्वीकृति प्राप्त कर सकूँगा!'

11. अब भगवान बुद्ध ने अपने मन में सूरदॅ ...

12. तब सूआदा ने सोचा: 'मेरी यही कामना थी, यही इच्छा थी, यही मेरा सपना था और यही मेरी आशा थी कि समौआ गौतम मुझसे मेरे ही विषय, वैदिक विद्या के तीन रूपों पर कोई प्रश्न पूछें—और अब वे ऐसा कर रहे हैं। काश! मैं अपने व्याख्यान से उनके हृदय को तृप्त कर सकूँ!'

13. शरीर को सीधा करके और सभा की ओर देखते हुए उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे गौतम, ब्राह्मण उसे ब्राह्मण कहते हैं जो बिना झूठ बोले सही-सही कह सके कि "मैं ब्राह्मण हूँ", और जिसमें पाँच गुण हों। वे पाँच गुण क्या हैं? हे भगवान, सर्वप्रथम, ब्राह्मण माता और पिता दोनों की ओर से उत्तम कुल का होता है, सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश का होता है, और जन्म के संबंध में उस पर कोई कलंक या निंदा नहीं होती।"

तब वह (पवित्र शब्दों का) दोहराने वाला, रहस्यवादी श्लोकों को कंठस्थ जानने वाला, तीनों वेदों में पारंगत, सूचकांकों, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान और व्याख्या (चौथे के रूप में) तथा कथाओं (पांचवें के रूप में) में पारंगत, मुहावरों और व्याकरण में पारंगत, लोकायत के कुतर्क में निपुण और शरीर पर संकेतों के सिद्धांत में पारंगत महान व्यक्ति होता है।

फिर वह सुंदर है, देखने में मनभावन है, विश्वास जगाने वाला है, रंगत में बेहद खूबसूरत है, गोरा रंग है, आकर्षक व्यक्तित्व है, और देखने में राजसी है।

तब वह गुणी होता है, गुणों में वृद्धि करता है, और महान गुणों से संपन्न होता है।

'तब वह विद्वान और बुद्धिमान है, जो चम्मच आगे बढ़ाने वालों में पहला या शायद दूसरा है।'

14. परन्तु हे ब्रह्म, क्या इन पाँचों में से एक को छोड़ देना और उस व्यक्ति को ब्रह्म घोषित करना संभव है जिसके पास अन्य चार हैं, यानी वह व्यक्ति जो सत्यनिष्ठा से और असत्य में पड़े बिना ब्रह्म होने का दावा कर सकता है?

जी गौतम, ऐसा हो सकता है। हम रंग को छोड़ सकते हैं। रंग से क्या फर्क पड़ता है? अगर उसके पास बाकी चार गुण हों—शुभ जन्म, तकनीकी प्रशिक्षण, सद्गुण और ज्ञान, जैसा कि अभी बताया गया है—तो ब्राह्मण उसे ब्राह्मण ही मानेंगे; और वह बिना किसी झूठ के खतरे के, सही मायने में ब्राह्मण होने का दावा कर सकता है।

15. 'लेकिन हे ब्रह्म, इन चार चीजों में से क्या किसी एक को छोड़ना संभव है, और उस व्यक्ति को ब्रह्म घोषित करना संभव है जिसके पास अन्य तीन चीजें हों, जो सही मायने में और बिना झूठ बोले ब्रह्म होने का दावा कर सकता है?'

जी गौतम, ऐसा किया जा सकता है। हम श्लोकों को छोड़ सकते हैं। वैसे भी श्लोकों का क्या महत्व है? यदि उसके पास अन्य तीन गुण हों—शुभ जन्म, सद्‌गुण और ज्ञान—तो ब्राह्मण उसे ब्राह्मण ही कहेंगे; और वह बिना किसी असत्य के खतरे के, सही मायने में ब्राह्मण होने का दावा कर सकता है।

16. परन्तु हे ब्रह्म, क्या इन तीन चीजों में से एक को छोड़ देना और उस व्यक्ति को ब्रह्म घोषित करना संभव है जिसके पास अन्य दो चीजें हों, यानी वह व्यक्ति जो सत्यनिष्ठा से और असत्य में पड़े बिना ब्रह्म होने का दावा कर सके?

'जी, गौतम, ऐसा किया जा सकता है। हम जन्म को छोड़ सकते हैं। जन्म का क्या महत्व है? यदि उसमें अन्य दो गुण - सद्‌गुण और ज्ञान - हों, तो ब्राह्मण उसे ब्राह्मण ही कहेंगे; और वह बिना किसी झूठ के खतरे के, सही मायने में ब्राह्मण होने का दावा कर सकता है।'

17. और जब उसने ऐसा कहा तो अन्य ब्राह्मणों ने सूआदा से कहा:

'ऐसे मत कहिए आदरणीय सूआदा, ऐसा मत कहिए! वह न केवल हमारे रंग को, बल्कि हमारी कविताओं और हमारे जन्म को भी तुच्छ समझते हैं। निश्चय ही आदरणीय सूआदा, समाॅ गौतम के मत का अनुसरण कर रहे हैं।'

18. तब भगवान बुद्ध ने उन ब्राह्मणों से कहा: “हे ब्राह्मणों, यदि तुम यह समझते हो कि सूदड़ अनपढ़ है, अनुचित ढंग से बोलता है, मूर्ख है, और इस विषय में मेरे साथ बहस करने में असमर्थ है, तो वह चुप रहे और मुझसे चर्चा करो। परन्तु यदि तुम उसे विद्वान, वाणी में निपुण, बुद्धिमान और बहस करने में सक्षम समझते हो, तो तुम चुप रहो और उसे मेरे साथ चर्चा करने दो।”

19. और जब उसने ऐसा कहा, तो सूआदा ब्राह्मण ने उन ब्राह्मणों से कहा:

आदरणीय लोगों को ऐसा न कहने दें। ऐसा न कहें, महोदय। मैं न तो हमारे रंग, न हमारी कविता, न ही हमारी जन्म-प्रतिभा को कमतर आंकता हूँ।

20. उस समय अंगका नामक एक युवक ब्राह्मण, जो ब्राह्मण सून्धादा का बहनोई पुत्र था, उस सभा में बैठा था। सून्धादा ने उन ब्राह्मणों से कहा, 'क्या आदरणीय लोगों ने हमारे भतीजे अंगका को देखा है?'

जी हाँ, हम उसे देख रहे हैं।

"अच्छा! हे महोदय, अंगका सुंदर, देखने में मनमोहक, विश्वास जगाने वाला, रंगत से परिपूर्ण, गोरा, उपस्थिति में आकर्षक और राजसी है... इस सभा में रंगत में उसके समान कोई नहीं है, सिवाय सामॅगौतम के।"

और हे महोदय, अंगका पवित्र शब्दों का दोहराने वाला, रहस्यमय श्लोकों का कंठस्थ ज्ञाता, तीनों वेदों का ज्ञाता, सूचकांकों, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान और व्याख्या (चौथे के रूप में) तथा कथाओं (पांचवें के रूप में) का ज्ञाता, मुहावरों और व्याकरण का पारंगत, लोकायत (प्रकृति-ज्ञान) का ज्ञाता और शरीर पर चिन्हों के सिद्धांत का ज्ञाता है। वह एक महान पुरुष है। मैंने स्वयं उसे श्लोक सिखाए हैं।

और हे महोदय, अंगका दोनों ओर से, माता और पिता दोनों की ओर से, उत्तम कुल का है; सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश का है; उस पर कोई कलंक नहीं है, और जन्म के संबंध में कोई कलंक नहीं है। मैं स्वयं उसके पूर्वजों को जानता हूँ, माता और पिता दोनों की ओर से।

यदि अंगका, महोदय, जीवित प्राणियों की हत्या करे, बिना माँगे वस्तुएँ ले, व्यभिचारी का मार्ग अपनाए, झूठ बोले और मादक पेय पिए, तो महोदय, उसका रंग उसके किस काम आएगा? श्लोकों का क्या? उसके जन्म का क्या?

'महोदय, जिस हद तक एक ब्राह्मण गुणी होता है, गुणों में वृद्धि करता है, गुणों से परिपूर्ण होता है; जिस हद तक वह विद्वान और बुद्धिमान होता है, जो करछुल चलाने वालों में पहला या शायद दूसरा होता है, उसी हद तक ब्राह्मण उसे ब्राह्मण घोषित करते हैं, क्योंकि वह इन दो गुणों से संपन्न होता है, और वह व्यक्ति जो बिना झूठ बोले सही मायने में कह सकता है कि "मैं एक ब्राह्मण हूँ" ।'

21. परन्तु हे ब्रह्म, क्या इन दो बातों में से एक को छोड़ देना और दूसरी बात रखने वाले को ब्रह्म घोषित करना संभव है, क्या वही व्यक्ति ब्रह्म होने का सही और असत्य में पड़े बिना दावा कर सकता है?

हे गौतम, ऐसा नहीं! क्योंकि हे गौतम, बुद्धि सत्यनिष्ठा से शुद्ध होती है, और सत्यनिष्ठा बुद्धि से शुद्ध होती है। जहाँ सत्यनिष्ठा होती है, वहाँ बुद्धि होती है, और जहाँ बुद्धि होती है, वहाँ सत्यनिष्ठा होती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति को बुद्धि मिलती है, बुद्धिवान व्यक्ति को सत्यनिष्ठा मिलती है, और बुद्धि और अच्छाई को संसार में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। हे गौतम, जैसे कोई हाथ से हाथ या पैर से पैर धोता है, ठीक उसी प्रकार, हे गौतम, बुद्धि सत्यनिष्ठा से शुद्ध होती है, और सत्यनिष्ठा बुद्धि से शुद्ध होती है। जहाँ सत्यनिष्ठा होती है, वहाँ बुद्धि होती है, और जहाँ बुद्धि होती है, वहाँ सत्यनिष्ठा होती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति को बुद्धि मिलती है, बुद्धिवान व्यक्ति को सत्यनिष्ठा मिलती है, और बुद्धि और अच्छाई को संसार में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

22. 'यह बिलकुल सही है, हे ब्राह्मण। और मैं भी यही कहता हूँ। परन्तु फिर वह सत्य क्या है और वह ज्ञान क्या है?'

हे गौतम जी, हमें इस विषय में केवल सामान्य कथन ही ज्ञात है। आदरणीय गौतम जी, कृपया इस वाक्यांश का अर्थ स्पष्ट करें।

'तो फिर, हे ब्राह्मण, ध्यान से सुनो और गंभीरता से सुनो, मैं बोलूंगा।'

23. 'बहुत अच्छा, महाराज,' सोआदाओआ ने भगवान की बात से सहमति जताते हुए कहा। और भगवान ने कहा:

हे ब्रह्म, यही वह धार्मिकता (सला) है।

'हे ब्रह्म, यही वह ज्ञान है।'

24. जब उसने ऐसा कहा, तो ब्राह्मण सूआदा ने भगवान से कहा:

हे गौतम, आपके मुख के शब्द अत्यंत उत्कृष्ट हैं! जैसे कोई व्यक्ति गिरी हुई वस्तु को उठाता है, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट करता है, या भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग दिखाता है, या अंधकार में प्रकाश डालता है ताकि देखने वाले बाहरी रूप देख सकें... ठीक उसी प्रकार, पूज्य गौतम ने अनेक रूपों में मुझे सत्य का ज्ञान कराया है। मैं भी पूज्य गौतम को अपना मार्गदर्शक, सत्य का मार्ग और संघ का मार्ग मानता हूँ। पूज्य गौतम मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें, उस व्यक्ति के रूप में जिसने आज से जीवन भर उन्हें अपना मार्गदर्शक माना है। पूज्य गौतम मुझे कल का भोजन अपने साथ और संघ के सदस्यों के साथ करने की कृपा प्रदान करें।

तब भगवान बुद्ध ने मौन रहकर अपनी सहमति व्यक्त की। यह देखकर सोआदाओआ अपने आसन से उठे और भगवान बुद्ध के सामने प्रणाम किया, और दाहिना हाथ उनकी ओर करके उनके चारों ओर परिक्रमा करते हुए वहाँ से चले गए। भोर होते ही उन्होंने अपने घर में कठोर और नरम दोनों प्रकार के मीठे व्यंजन तैयार किए और भगवान बुद्ध को समय की सूचना दी: 'हे गौतम, समय हो गया है और भोजन तैयार है।'

25. तब भगवान बुद्ध, जिन्होंने सुबह जल्दी वस्त्र धारण कर लिए थे, अपना वस्त्र पहनकर, अपना कुंड लेकर भाइयों के साथ सून्धा के घर गए और उनके लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। ब्राह्मण सून्धा ने अपने हाथों से भगवान बुद्ध और भाइयों को इतना भोजन कराया, जिसमें कठोर और नरम दोनों प्रकार के व्यंजन थे, कि उन्होंने और खाने से मना कर दिया। जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और कुंड और अपने हाथ धो लिए, तो सून्धा ने एक नीचा आसन लेकर उनके पास बैठ गए और कहा:

26. हे गौतम, यदि मैं सभा में प्रवेश करने के बाद अपने आसन से उठकर पूज्य गौतम के समक्ष प्रणाम करूँ, तो सभा मुझ पर दोष लगाएगी। जिस पर सभा दोष लगाएगी, उसकी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी; और जो अपनी प्रतिष्ठा खो देगा, उसकी आमदनी कम हो जाएगी। क्योंकि जो सुख हमें प्राप्त है, वह हमारी प्रतिष्ठा पर निर्भर करता है। इसलिए, यदि मैं सभा में बैठा हुआ अपने हाथ जोड़कर प्रणाम करूँ, तो पूज्य गौतम इसे मेरे आसन से उठने के रूप में स्वीकार करें। और यदि मैं सभा में बैठा हुआ अपनी पगड़ी उतार दूँ, तो पूज्य गौतम इसे मेरे सिर झुकाकर प्रणाम करने के रूप में स्वीकार करें। इसी प्रकार, यदि मैं अपने रथ में बैठा हुआ, रथ से उतरकर पूज्य गौतम को प्रणाम करूँ, तो आसपास के लोग मुझ पर दोष लगाएंगे। यदि मैं अपने रथ पर सवार होकर अंकुश को झुकाऊँ, तो पूज्य गौतम उसे ऐसे स्वीकार करें जैसे मैं नीचे उतर आया हूँ। और यदि मैं अपने रथ पर सवार होकर हाथ हिलाऊँ, तो पूज्य गौतम उसे ऐसे स्वीकार करें जैसे मैंने प्रणाम किया हो!

27. तब भगवान ने धार्मिक प्रवचन द्वारा ब्राह्मण सूदआदा को उपदेश दिया, उसे प्रेरित किया, उसे उत्साहित किया और उसे प्रसन्न किया, और फिर अपने स्थान से उठकर वहाँ से चले गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.5: कुटदंत सुत्त (डीएन 5)
मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान बुद्ध अपने लगभग पाँच सौ भाइयों के साथ मगध की यात्रा पर निकले और खानुमता नामक एक ब्राह्मण गाँव में पहुँचे। खानुमता में उन्होंने अंबलत्थिका आश्रम में विश्राम किया।

उस समय ब्राह्मण कूटदंत कनुमता में निवास कर रहे थे, जो जीवन से भरपूर स्थान था, जहाँ बहुत सारे घास के मैदान, जंगल, जल और अनाज थे, और यह एक शाही क्षेत्र था जो मगध के राजा सेनिया बिम्बिसार द्वारा उन्हें शाही उपहार के रूप में दिया गया था, और उस पर उनका ऐसा अधिकार था मानो वे स्वयं राजा हों।

उसी समय ब्राह्मण कूटदंत की ओर से एक भव्य यज्ञ की तैयारी की जा रही थी। इस यज्ञ के लिए सौ बैल, सौ सांड, सौ बछिया, सौ बकरियां और सौ मेढ़े लाए गए थे।

खानुमता के ब्राह्मणों और गृहस्थों ने समना गौतम के आगमन की खबर सुनी। और वे समूहों में खानुमता छोड़कर अंबलत्थिका के रमणीय स्थल की ओर चल पड़े।

और ठीक उसी समय ब्राह्मण कूटदंत अपने घर की ऊपरी छत पर दोपहर की नींद लेने के लिए चले गए थे; और लोगों को इस तरह आते-जाते देखकर उन्होंने अपने द्वारपाल से कारण पूछा। और द्वारपाल ने उन्हें कारण बताया।

तब कूटदंत ने सोचा: 'मैंने सुना है कि समना गौतम यज्ञ के सफल संचालन की विधि, उसकी तीन विधियाँ और सोलह सहायक यंत्रों के बारे में जानते हैं। मुझे इन सब बातों का ज्ञान नहीं है, फिर भी मैं यज्ञ करना चाहता हूँ। मेरे लिए समना गौतम के पास जाकर उनसे इस बारे में पूछना अच्छा रहेगा।'

इसलिए उन्होंने अपने द्वारपाल को खानुमता के ब्राह्मणों और गृहस्थों के पास भेजा, ताकि वे उनसे तब तक प्रतीक्षा करने का अनुरोध करें जब तक कि वह उनके साथ भगवान से मिलने न चले जाएं।

उस समय खानुमता में कई ब्राह्मण महान यज्ञ में भाग लेने के लिए ठहरे हुए थे। जब उन्हें यह बात पता चली, तो वे कूटदंत के पास गए और उन्हीं कारणों से, जो ब्राह्मणों ने सोनदंद के समक्ष रखे थे, उन्हें यज्ञ में न जाने के लिए राजी किया। लेकिन कूटदंत ने उन्हें उसी तरह उत्तर दिया जैसे सोनदंद ने उन ब्राह्मणों को दिया था। तब वे संतुष्ट हुए और उनके साथ भगवान बुद्ध से मिलने चले गए।

और जब वह वहाँ बैठा, तो ब्राह्मण कूटदंत ने भगवान को वह सब बताया जो उसने सुना था, और उनसे तीन प्रकार के यज्ञों और सोलह प्रकार की सहायक सामग्रियों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न यज्ञ करने के बारे में बताने का अनुरोध किया।

'तो फिर, हे ब्राह्मण, ध्यान से सुनो, मैं बोलूंगा।'

'बहुत अच्छा, महाराज,' कूटदंत ने उत्तर दिया; और भगवान ने आगे कहा:--

हे ब्राह्मण, बहुत समय पहले महा विजिता नाम का एक शक्तिशाली राजा था, जो अपार धनवान और संपत्ति का मालिक था; उसके पास सोने-चाँदी, भोग-विलास की सामग्री, माल और अनाज का भंडार था; उसके खजाने और भंडार भरे हुए थे। एक बार जब महा विजिता राजा एकांत में ध्यान कर रहा था, तो उसे यह सोचकर चिंता हुई: "मेरे पास वे सभी सुख-सुविधाएँ प्रचुर मात्रा में हैं जिनका एक मनुष्य आनंद ले सकता है। पृथ्वी का सारा विशाल भाग मेरे अधिकार में है। यदि मैं कोई महान यज्ञ करूँ, तो यह अच्छा होगा, जिससे मुझे अनेक दिनों तक सुख-शांति प्राप्त हो सके।"

और उसने अपने पुरोहित ब्राह्मण को बुलवाया; और उसे अपने सारे विचार बताते हुए कहा: "हे ब्राह्मण, मैं एक महान यज्ञ करना चाहता हूँ - आदरणीय गुरु मुझे निर्देश दें कि कैसे - मेरे कल्याण और कई दिनों तक मेरे सुख के लिए।"

तब ब्राह्मण, जो राजा का पुरोहित था, ने राजा से कहा: "महाराज, आपका देश संकटग्रस्त है। बाहर डाकू घूम रहे हैं जो गांवों और कस्बों को लूट रहे हैं और सड़कों को असुरक्षित बना रहे हैं। यदि राजा इस स्थिति में कोई नया कर लगाते हैं, तो वे निश्चित रूप से अन्याय करेंगे। लेकिन शायद वे सोचें: 'मैं इन बदमाशों के खेल को जल्द ही पदच्युति, देश निकाला, जुर्माना, बंधुआ मजदूरी और मृत्युदंड देकर समाप्त कर दूंगा!'" लेकिन उनकी इस मनमानी को पूरी तरह से रोकना संभव नहीं है। बचे हुए लोग बिना सज़ा पाए राज्य को परेशान करते रहेंगे। अब इस अव्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त करने का एक तरीका है। राजा के राज्य में जो भी लोग पशुपालन और खेती-बाड़ी में लगे हों, उन्हें महाराजा भोजन और अनाज दें। राजा के राज्य में जो भी लोग व्यापार में लगे हों, उन्हें महाराजा पूंजी दें। राजा के राज्य में जो भी लोग सरकारी सेवा में लगे हों, उन्हें महाराजा वेतन और भोजन दें। तब वे लोग, अपने-अपने काम में लगे रहकर, राज्य को परेशान करना बंद कर देंगे; राजा का राजस्व बढ़ जाएगा; देश शांत और अमन से रहेगा; और लोग एक-दूसरे से प्रसन्न और खुश होकर, अपने बच्चों को गोद में लेकर नाचते हुए, खुले दिल से रहेंगे।

तब, हे ब्राह्मण, विशाल राज्य के राजा ने अपने पुरोहित की बात मान ली और वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। और वे लोग, अपने-अपने काम में लगकर, राज्य को और परेशान नहीं करने लगे। और राजा का राजस्व बढ़ गया। और देश शांत और अमन से भर गया। और प्रजा, एक-दूसरे से प्रसन्न और खुश होकर, अपने बच्चों को गोद में लेकर नाचते हुए, खुले दिल से रहने लगी।

तो राजा वाइड-रियल्म ने अपने पादरी को बुलवाया और कहा: "अव्यवस्था समाप्त हो गई है। देश में शांति है। मैं वह महान बलिदान अर्पित करना चाहता हूँ - हे पूज्य गुरु, मुझे निर्देश दें कि कैसे - मेरे कल्याण और सुख के लिए, अनेक दिनों तक।"

तब महाराज अपने राज्य में जितने भी क्षत्रिय हों, जो उनके सामंत हों (देश में या शहरों में), या उनके मंत्री एवं अधिकारी हों (देश में या शहरों में), या प्रतिष्ठित ब्राह्मण हों (देश में या शहरों में), या धनी गृहस्थ हों, उन सभी को निमंत्रण भेजें और कहें: "मैं एक महान यज्ञ करने का इरादा रखता/रखती हूँ। आदरणीय देवगण मुझे इस यज्ञ की स्वीकृति दें, जिससे मुझे अनेक दिनों तक कल्याण और सुख प्राप्त होगा।"

तब, हे ब्राह्मण, राज्य के राजा ने अपने पुरोहित की बात मान ली और वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। और उन सभी ने—क्षत्रिय, मंत्री, ब्राह्मण और गृहस्थों ने—एक समान उत्तर दिया: “महाराज, यज्ञ संपन्न हो। हे राजा, समय उपयुक्त है!”

इस प्रकार, आपसी सहमति से सहयोगी बने ये चारों लोग उस बलिदान को संपन्न करने का साधन बन गए।

'विशाल राज्य के राजा को निम्नलिखित आठ प्रकार से वरदान प्राप्त थे:-

'वह माता और पिता दोनों की ओर से उच्च कुल का था, सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश का था, और जन्म के संबंध में उस पर कोई कलंक या निंदा नहीं की गई थी।'

'वह सुंदर, मनमोहक रूप वाला, भरोसेमंद, बेहद खूबसूरत रंगत वाला, गोरा, आकर्षक व्यक्तित्व वाला और देखने में राजसी था।'

वह शक्तिशाली था, अपार धनवान, विशाल संपत्ति वाला, चांदी और सोने के भंडारों से युक्त, सुख-सुविधाओं के साधनों से युक्त, माल और अनाज से भरपूर, उसके खजाने और भंडार भरे हुए थे।

'वह शक्तिशाली था, एक सेना का नेतृत्व कर रहा था, वफादार और अनुशासित था, चार डिवीजनों (हाथियों, घुड़सवारों, रथों और धनुर्धारियों) में बंटा हुआ था, और मुझे लगता है कि वह अपनी महिमा से ही अपने शत्रुओं को जला रहा था।'

'वह एक विश्वासी, उदार, नेक दाता, हमेशा अपने घर के खुले रहने वाला, एक ऐसा स्रोत था जहाँ से समन और ब्राह्मण, गरीब और राहगीर, भिखारी और याचिकाकर्ता सभी को लाभ मिलता था, और वह अच्छे कर्म करने वाला था।'

उन्हें हर प्रकार का ज्ञान था।

वह कही गई बात का अर्थ जानता था और समझा सकता था: "इस कथन का ऐसा अर्थ है, और उस कथन का ऐसा अर्थ है" -

'वह बुद्धिमान, कुशल और समझदार थे, और वर्तमान, अतीत या भविष्य की बातों पर विचार करने में सक्षम थे।'

और उनके ये आठ उपहार भी उस बलिदान को संपन्न करने के साधन बन गए।

ब्राह्मण, जो उनके पुरोहित थे, निम्नलिखित चार प्रकार से प्रतिभाशाली थे:

'वह माता और पिता दोनों की ओर से उच्च कुल का था, सात पीढ़ियों तक शुद्ध वंश का था, उस पर कोई कलंक नहीं था और जन्म के संबंध में कोई कलंक नहीं था।'

वह एक ऐसे विद्यार्थी थे जिन्होंने परीक्षा में बार-बार भाग लिया था, जिन्हें रहस्यवादी श्लोक कंठस्थ थे, वे तीनों वेदों के ज्ञाता थे, जिनमें सूचकांक, अनुष्ठान, ध्वनिविज्ञान और व्याख्या (चौथे के रूप में) तथा कथाएँ (पाँचवें के रूप में) शामिल थीं, मुहावरों और व्याकरण के ज्ञाता थे, लोकायत (प्रकृति-ज्ञान) और एक महान व्यक्ति के शरीर पर स्थित तीस चिह्नों के ज्ञाता थे।

'वह गुणी था, सद्गुणों में स्थापित था, और महान सद्गुणों से संपन्न था।'

'वह बुद्धिमान, कुशल और समझदार था; चम्मच चलाने वालों में सबसे आगे, या अधिक से अधिक दूसरे स्थान पर था।'

इस प्रकार, उनके ये चारों उपहार भी उस बलिदान को संपन्न करने के साधन बन गए।

और हे ब्राह्मण, यज्ञ प्रारंभ होने से पहले पुरोहित ने राजा विशाल राज्य को तीन गुणों की व्याख्या की:

यदि महाराजा, महान यज्ञ प्रारंभ करने से पहले, ऐसा कोई खेद महसूस करें कि: "अफ़सोस, मेरी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा इसमें खर्च हो जाएगा," तो वे ऐसा खेद न रखें। यदि महाराजा, महान यज्ञ करते समय, ऐसा कोई खेद महसूस करें कि: "अफ़सोस, मेरी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा इसमें खर्च हो जाएगा," तो वे ऐसा खेद न रखें। यदि महाराजा, महान यज्ञ संपन्न होने के बाद, ऐसा कोई खेद महसूस करें कि: "अफ़सोस, मेरी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा इसमें खर्च हो गया है," तो वे ऐसा खेद न रखें।

'हे ब्राह्मण, यज्ञ प्रारंभ होने से पहले पुरोहित ने राजा विशाल राज्य को इस प्रकार तीन गुणों की व्याख्या की।'

हे ब्राह्मण, यज्ञ प्रारंभ होने से पहले पुरोहित ने, उसमें भाग लेने वालों के मन में दस प्रकार से उत्पन्न होने वाले किसी भी पश्चाताप को रोकने के लिए कहा: "हे महाराज, आपके यज्ञ में ऐसे मनुष्य आएंगे जो जीवित प्राणियों का नाश करते हैं और जो ऐसा नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो बिना दिए वस्तुएँ लेते हैं और जो ऐसा नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो वासनाओं के कारण बुरे कर्म करते हैं और जो ऐसा नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो झूठ बोलते हैं और जो झूठ नहीं बोलते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो निंदा करते हैं और जो निंदा नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो अभद्र भाषा बोलते हैं और जो अभद्र भाषा नहीं बोलते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो व्यर्थ की बातें करते हैं और जो ऐसा नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो लोभ करते हैं और जो लोभ नहीं करते; ऐसे मनुष्य आएंगे जो द्वेष रखते हैं और जो द्वेष नहीं रखते; ऐसे मनुष्य आएंगे जिनके विचार गलत हैं और जिनके विचार सही हैं। इनमें से जो बुरे कर्म करते हैं, उन्हें उनके बुरे कर्मों के साथ अकेला छोड़ दें। जो अच्छे कर्म करते हैं, उनके लिए हे महाराज, आप अनुष्ठान करें, और उनके लिए राजा व्यवस्था करें।" उन्हें संतुष्ट करो, उनमें तुम्हारे हृदय को शांति मिलेगी।

और हे ब्राह्मण, पुरोहित ने राजा के यज्ञ करते समय, सोलह प्रकार से उनके हृदय को उपदेश दिया, प्रेरित किया और प्रसन्न किया: "यदि कोई राजा के यज्ञ करते समय यह कहे कि 'महाराज अपने चारों वर्गों की प्रजा को आमंत्रित किए बिना, स्वयं आठ वरदान धारण किए बिना, और चार वरदान धारण करने वाले ब्राह्मण की सहायता के बिना यज्ञ कर रहे हैं;' तो वे सत्य के अनुसार नहीं बोल रहे होंगे। क्योंकि चारों वर्गों की सहमति प्राप्त हो चुकी है, राजा के पास आठ वरदान हैं और उनके ब्राह्मण के पास चार वरदान हैं। इन सोलह शर्तों में से प्रत्येक के संबंध में राजा निश्चिंत हो सकते हैं कि वे पूर्ण हो गई हैं। वे यज्ञ कर सकते हैं, प्रसन्न हो सकते हैं और उनका हृदय शांत हो सकता है।"

हे ब्राह्मण, उस यज्ञ में न तो बैल मारे गए, न बकरियाँ, न मुर्गे, न मोटे सूअर, और न ही किसी भी प्रकार के जीवित प्राणी को मारा गया। खंभों के लिए न तो पेड़ काटे गए, न ही यज्ञ स्थल के चारों ओर बिखेरने के लिए घास काटी गई। और वहाँ कार्यरत लाठी-डंडे, दूत और कामगार न तो दंड से प्रेरित थे, न ही भयभीत थे, और न ही वे आँसू बहाते हुए अपना काम कर रहे थे। जिसने सहायता करना चाहा, उसने काम किया; जिसने सहायता न करना चाहा, उसने काम नहीं किया। प्रत्येक ने जो करना चाहा, उसने किया; जो नहीं करना चाहा, वह अधूरा रह गया। वह यज्ञ केवल घी, तेल, मक्खन, दूध, शहद और चीनी से ही संपन्न हुआ।

और फिर, हे ब्राह्मण, क्षत्रिय सामंत, मंत्री और अधिकारी, प्रतिष्ठित ब्राह्मण और धनी गृहस्थ, चाहे वे देश के हों या नगर के, बहुत सारा धन लेकर विशाल राज्य के राजा के पास गए और बोले: "हे महाराज, यह प्रचुर धन हम राजा के उपयोग के लिए लाए हैं। महाराज इसे हमारे हाथों से स्वीकार करें!"

"मेरे मित्रों, मैंने न्यायसंगत करों से प्राप्त पर्याप्त धन संचित कर लिया है। आप अपना धन अपने पास रखें और अपने साथ और अधिक ले जाएं!"

जब राजा ने उन्हें इस प्रकार मना कर दिया, तो वे एक तरफ चले गए और आपस में इस प्रकार विचार करने लगे: "अब हमारे लिए यह धन अपने-अपने घर ले जाना उचित नहीं होगा। राजा एक महान बलिदान दे रहे हैं। हमें भी एक बलिदान देना चाहिए!"

अत: क्षत्रियों ने राजा के यज्ञकुंड के पूर्व में निरंतर दान-पुण्य की व्यवस्था की, अधिकारियों ने उसके दक्षिण में, ब्राह्मणों ने उसके पश्चिम में और गृहस्थों ने उसके उत्तर में। और दान की गई वस्तुएँ और उनके दान का तरीका, सर्वथा राजा विश्वराज के महान यज्ञ के समान था।

हे ब्राह्मण, इस प्रकार चार प्रकार की सहभागिता हुई, और विशाल राज्य के राजा को आठ व्यक्तिगत वरदान प्राप्त हुए, और उनके सहायक ब्राह्मण को चार वरदान प्राप्त हुए। तथा उस यज्ञ को संपन्न करने के तीन तरीके थे। हे ब्राह्मण, यही यज्ञ को उसके तीन प्रकार के अनुष्ठान और सोलह प्रकार की सामग्री के साथ संपन्न करना कहलाता है!

और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो उन ब्राह्मणों ने शोर मचाते हुए कहा, 'यह यज्ञ कितना गौरवशाली है, इसकी सिद्धि कितनी पवित्र है!' परन्तु, ब्राह्मण कूटदंत वहाँ मौन बैठे रहे।

तब उन ब्राह्मणों ने कूटदंत से कहा: 'आप समना गौतम के अच्छे शब्दों को सही क्यों नहीं मानते?'

मैं इस बात से सहमत हूँ: क्योंकि जो समना गौतम के कहे को उत्तम नहीं मानता, उसका सिर दो टुकड़ों में बँट जाएगा। परन्तु मैं यह विचार कर रहा था कि समना गौतम यह नहीं कहते: "मैंने ऐसा सुना है," न ही "ऐसा होना उचित है," बल्कि केवल "तब ऐसा था," या "तब ऐसा ही था।" इसलिए मैंने सोचा: "निश्चित रूप से समना गौतम उस समय सर्वराज्य के राजा रहे होंगे, या वे ब्राह्मण रहे होंगे जिन्होंने उस यज्ञ में उनकी ओर से अनुष्ठान किया था। क्या पूज्य गौतम यह स्वीकार करते हैं कि जो व्यक्ति ऐसा यज्ञ करता है, या करवाता है, वह मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर स्वर्ग में किसी सुखमय अवस्था में पुनर्जन्म लेता है?"

'जी हां, हे ब्राह्मण, मैं यह स्वीकार करता हूं। और उस समय मैं वही ब्राह्मण था जिसने पुरोहित के रूप में वह यज्ञ संपन्न कराया था।'

'हे गौतम, क्या इस यज्ञ से कम कठिन, कम कष्टदायी, अधिक फलदायी और अधिक लाभ देने वाला कोई और यज्ञ है?'

'जी हां, हे ब्राह्मण, है।'

'और हे गौतम, वह क्या हो सकता है?'

'परिवार में निरंतर चली आ रही वे भेंटें जो विशेष रूप से गुणी संन्यासियों को दी जाती हैं।'

लेकिन हे गौतम, इसका कारण क्या है, और वह क्या वजह है कि सदाचारी संन्यासियों को ही निरंतर दान देना और उसे परिवार में ही जारी रखना, उस दूसरे यज्ञ की तुलना में कम कठिन और कष्टदायी, अधिक फलदायी और अधिक लाभदायी है, जिसमें तीन विधियाँ और सोलह प्रकार के सहायक यंत्र शामिल हैं?

'हे ब्राह्मण, दूसरे प्रकार के यज्ञ में न तो अरहत जाते हैं, न ही वे जो अरहत मार्ग पर चल पड़े हैं। और क्यों नहीं? क्योंकि उसमें लाठियों से पिटाई और गला पकड़ना होता है [42]। परन्तु वे पहले प्रकार के यज्ञ में जाते हैं, जहाँ ऐसी बातें नहीं होतीं। और इसीलिए ऐसे चिरस्थायी यज्ञ दूसरे प्रकार के यज्ञ से श्रेष्ठ हैं।'

24. 'हे गौतम, क्या इन दोनों यज्ञों से कम कठिन, कम कष्टदायी, अधिक फलदायी और अधिक लाभप्रद कोई अन्य यज्ञ है?'

'जी हां, हे ब्राह्मण, है।'

'और हे गौतम, वह क्या हो सकता है? 'संघ की ओर से चारों दिशाओं में एक निवास स्थान (विहार) का निर्माण।'

'हे गौतम, क्या इन तीनों यज्ञों से कम कठिन, कम कष्टदायी, अधिक फलदायी और अधिक लाभप्रद कोई अन्य यज्ञ है?'

'जी हां, हे ब्राह्मण, है।'

'और हे गौतम, वह क्या हो सकता है?'

जो व्यक्ति विश्वासपूर्ण हृदय से बुद्ध को अपना मार्गदर्शक मानता है, सत्य को अपनाता है और संघ का अनुसरण करता है, वह खुले दान से, निरंतर भिक्षा से और निवास स्थान दान करने से भी श्रेष्ठ बलिदान है।

'हे गौतम, क्या इन चारों यज्ञों से कम कठिन, कम कष्टदायक, अधिक फलदायी और अधिक लाभप्रद कोई अन्य यज्ञ है?'

जब कोई विश्वासशील हृदय वाला व्यक्ति जीवन को नष्ट करने से परहेज़, बिना माँगे ली गई चीज़ों को न लेने से परहेज़, बुराई से परहेज़, वासनाओं के प्रति सजग आचरण, झूठे शब्दों से परहेज़, मादक, मदहोश कर देने वाले पेय पदार्थों से परहेज़ (जो लापरवाही की जड़ हैं) का पालन करता है, तो यह खुले दान से, निरंतर भिक्षा से, आवास के दान से, और मार्गदर्शन स्वीकार करने से श्रेष्ठ बलिदान है।

'हे गौतम, क्या इन पाँचों यज्ञों से कम कठिन, कम कष्टदायी, अधिक फलदायी और अधिक लाभप्रद कोई अन्य यज्ञ है?'

'जी हां, हे ब्राह्मण, है।'

'और हे गौतम, वह क्या हो सकता है?'

'हे ब्राह्मण, यह यज्ञ पिछले यज्ञों की तुलना में कम कठिन और कम कष्टदायी है, तथा अधिक फलदायी और अधिक लाभप्रद है।'

** संन्यासी के जीवन के फल (डीएन2 देखें), प्रस्थान, सहजता से संतुष्ट और सदाचारी जीवन जीना, समाधि, रहस्यमय शक्तियां, अंतर्दृष्टि ज्ञान और अरहंतत्व प्राप्त करना - इन विषयों पर कई अनुच्छेद यहां अनुपलब्ध हैं, जिनके बिना अगला अनुच्छेद अर्थहीन है। (भिक्खु पेसला द्वारा संपादित)

'हे ब्राह्मण, मनुष्य द्वारा मनाया जाने वाला इससे श्रेष्ठ और मधुर कोई यज्ञ नहीं है।'

और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो ब्राह्मण कूटदंत ने भगवान से कहा।

हे गौतम, आपके मुख के वचन अत्यंत उत्कृष्ट हैं! जैसे कोई व्यक्ति गिरी हुई वस्तु को उठा दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग दिखा दे, या अंधकार में प्रकाश कर दे ताकि देखने वाले बाहरी रूप देख सकें, ठीक उसी प्रकार पूज्य गौतम ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से मुझे सत्य का ज्ञान कराया है। मैं भी पूज्य गौतम को अपना मार्गदर्शक मानकर उनके धर्म और पंथ का पालन करता/करती हूँ। पूज्य गौतम मुझे अपना शिष्य स्वीकार करें, उस व्यक्ति के रूप में जिसने आज से जीवन भर उन्हें अपना मार्गदर्शक माना है। और हे गौतम, मैं स्वयं सात सौ बैल, सात सौ सांड, सात सौ बछिया, सात सौ बकरियों और सात सौ मेढ़ों को मुक्त कराऊँगा। मैं उन्हें जीवनदान देता/देती हूँ। उन्हें हरी घास खाने और ताजा पानी पीने दो, और उनके चारों ओर ठंडी हवाएं चलती रहें।'

तब भगवान बुद्ध ने कुटदंत ब्राह्मण को विधिपूर्वक प्रवचन दिए; अर्थात् उन्होंने उनसे उदारता, सही आचरण, स्वर्ग, कामवासनाओं के खतरे, व्यर्थता और अपशकुन तथा त्याग के लाभों के विषय में बात की। जब भगवान बुद्ध को यह ज्ञात हुआ कि कुटदंत ब्राह्मण तैयार, कोमल, निष्पक्ष, उन्नत और विश्वासी हो गए हैं, तब उन्होंने उस सिद्धांत का प्रचार किया जिसे केवल बुद्धों ने ही जीता है; अर्थात् दुःख, उसके उद्भव, उसके निवारण और मार्ग का सिद्धांत। और जैसे एक साफ कपड़ा, जिसके सारे दाग धुल गए हों, आसानी से रंग सोख लेता है, ठीक वैसे ही कुटदंत ब्राह्मण ने वहाँ बैठे-बैठे ही सत्य के लिए शुद्ध और निर्मल दृष्टि प्राप्त कर ली और वे जान गए: 'जिस किसी का भी आरंभ होता है, उसमें उसका अंत भी अंतर्निहित होता है।'

और फिर ब्राह्मण कूटदंत, जिन्होंने सत्य को देखा था, उस पर महारत हासिल की थी, उसे समझा था, उसमें गहराई तक उतर गए थे, जो संदेह से परे हो गए थे, उलझन को दूर कर पूर्ण विश्वास प्राप्त कर चुके थे, जो गुरु की शिक्षाओं के ज्ञान के लिए किसी और पर निर्भर नहीं थे, उन्होंने भगवान बुद्ध को संबोधित करते हुए कहा:

हे पूज्य गौतम, मुझे यह कृपा प्रदान करें कि मैं कल उनके साथ भोजन कर सकूँ और संघ के अन्य सदस्यों को भी उनके साथ भोजन करा सकूँ।

भगवान बुद्ध ने मौन रहकर अपनी सहमति व्यक्त की। तब ब्राह्मण कूटदंत ने देखा कि भगवान बुद्ध ने स्वीकार कर लिया है, तो वे अपने आसन से उठे और उनके सामने अपना दाहिना हाथ रखते हुए वहाँ से चले गए। भोर होते ही उन्होंने अपने यज्ञ के लिए तैयार किए गए कुंड में कठोर और नरम दोनों प्रकार के मीठे भोजन तैयार करवाए और भगवान बुद्ध को समय की सूचना दी: 'हे गौतम, समय हो गया है; भोजन तैयार है।' भगवान बुद्ध, जो सुबह जल्दी ही वस्त्र धारण कर चुके थे, अपना वस्त्र पहनकर और अपना कुंड लेकर भाइयों के साथ कूटदंत के यज्ञ कुंड में गए और वहाँ अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। ब्राह्मण कूटदंत ने अपने हाथों से भाइयों को, जिनके मुखिया बुद्ध थे, तब तक मीठे और नरम दोनों प्रकार के भोजन से तृप्त किया जब तक कि उन्होंने और भोजन लेने से इनकार नहीं किया। जब भगवान बुद्ध ने भोजन समाप्त कर लिया और कटोरा एवं हाथ धो लिए, तब कुटदंत ब्राह्मण उनके पास बैठ गए। जब वे इस प्रकार बैठे, तब भगवान बुद्ध ने कुटदंत ब्राह्मण को धार्मिक प्रवचन देकर उपदेश दिया, उन्हें प्रेरित किया और प्रसन्न किया; फिर वे अपने आसन से उठकर वहाँ से चले गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.6: महली सुत्त (डीएन 6)

मैंने ऐसा सुना है। भगवान बुद्ध एक बार वैशाला में विशाल वन में स्थित गुंबददार हॉल में ठहरे हुए थे। उस समय कोसला और मगध से विभिन्न अत्यावश्यक कार्यों के लिए भेजे गए कई ब्राह्मण वैशाला में ठहरे हुए थे।

और उन्होंने यह समाचार सुना: "कहा जाता है कि शाक्य वंश के समना गौतम, जिन्होंने शाक्य परिवार छोड़कर धार्मिक जीवन अपनाया, अब वेशाला में विशाल वन में स्थित गैबल हॉल में ठहरे हुए हैं। उस पूज्य गौतम के विषय में यह उच्च प्रतिष्ठा दूर-दूर तक फैली हुई है: "वह भगवान अरहत हैं, पूर्णतः जागृत हैं, ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण हैं, सुखी हैं, समस्त लोकों के ज्ञाता हैं, नश्वर मनुष्यों के लिए अद्वितीय मार्गदर्शक हैं, देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक हैं, एक भगवान हैं, एक बुद्ध हैं। वे स्वयं ही इस ब्रह्मांड को भली-भांति जानते और देखते हैं, मानो आमने-सामने—जिसमें देवताओं, ब्रह्माओं और मारों का स्वर्गलोक और संन्यासियों और ब्राह्मणों, राजकुमारों और प्रजाओं सहित पाताल लोक शामिल है—और इसे जानकर वे अपना ज्ञान दूसरों को प्रकट करते हैं। सत्य, अपने उद्‌गम में सुंदर, अपने विकास में सुंदर, अपने विकास में सुंदर है।" वह इसकी पूर्णता की घोषणा करता है, आत्मा और अक्षर दोनों में, वह उच्च जीवन को उसकी संपूर्णता और पवित्रता में प्रकट करता है। और ऐसे अरहतों के दर्शन करना अच्छा है।

2. अतः कोसल और मगध के वे ब्राह्मण विशाल वन और गुंबददार हॉल में गए। उस समय पूज्य नागिता भगवान बुद्ध के निजी सेवक के रूप में सेवा कर रहे थे। वे उनके पास गए और बोले, "हे नागिता, पूज्य गौतम बुद्ध कहाँ ठहरे हुए हैं? हम उनसे मिलना चाहते हैं।"

"महोदय, भगवान बुद्ध से प्रार्थना करने का यह उचित समय नहीं है। वे एकांतवास में चले गए हैं।"

फिर वे चारों ओर बैठ गए और कहने लगे, "हम पूज्य गौतम के दर्शन किए बिना नहीं जाएंगे।"

3. और लिच्छवी हरे-होंठ भी अपने कुल के अनुयायियों के साथ महान वन और गैबल हॉल में आए; और पूज्य नागिता के पास जाकर उन्होंने उन्हें प्रणाम किया, और आदरपूर्वक अलग खड़े होकर उनसे कहा, "हे पूज्य नागिता, भगवान अर्हत, बुद्ध, इस समय कहाँ निवास कर रहे हैं? हम उनके दर्शन करना चाहते हैं।" और ऐसा ही उत्तर पाकर वे भी अलग बैठ गए और बोले, "मैं तब तक नहीं जाऊँगा जब तक मैं परम पूज्य अर्हत, बुद्ध के दर्शन न कर लूँ।"

4. परन्तु साहा नामक एक नवोदित भिक्षु आदरणीय नागिता के पास आया और उन्हें प्रणाम करते हुए, आदरपूर्वक एक तरफ खड़े होकर उनसे बोला, "हे कस्सप, कोसला और मगध से ब्राह्मणों के ये अनेक दूत भगवान बुद्ध के दर्शन करने आए हैं; और लिच्छवी हरेलिप भी

अपने कुल के अनुयायियों के साथ यही करने आया है। हे कस्सप, यही सर्वोत्तम होगा कि इन सभी को भगवान बुद्ध के दर्शन करने का अवसर मिले।"

"अच्छा, तो फिर साहा। तुम स्वयं भगवान को बता दो।"

“बहुत अच्छा, महाराज,” नवोदित सहा ने आदरणीय नागिता की बात मानते हुए कहा। फिर वह भगवान बुद्ध के पास गए और उन्हें प्रणाम किया, और आदरपूर्वक अलग खड़े होकर उनसे वही बातें कहीं जो उन्होंने नागिता से कही थीं।

"बहुत खूब, साहा। घर के सामने छाया में मेरे लिए एक चटाई बिछा दो।"

5. और सहा ने ऐसा ही किया। और भगवान बुद्ध घर से बाहर आए और बैठ गए। कोसल और मगध के ब्राह्मणों ने उनसे शिष्टाचार और विनम्रता का अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए। हरे-होंठ वाले लिच्छवी बुद्ध ने भी अपने कुल के अनुयायियों के साथ भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। और जब वे इस प्रकार बैठ गए तो उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा:

"कुछ दिन पहले, महोदय, लिच्छवियों में से सुनक्खत्ता मेरे पास आया और बोला: 'हे महाली, मुझे भगवान बुद्ध की शरण में आए हुए केवल तीन वर्ष ही हुए हैं, और मैं दिव्य रूप देख सकता हूँ, जो देखने में मनभावन हैं, सभी इच्छाओं को तृप्त करने के योग्य हैं, हृदय में लालसा जगाते हैं। लेकिन मैं वैसी दिव्य ध्वनियाँ नहीं सुन सकता।' महोदय, क्या ऐसी कोई दिव्य ध्वनियाँ हैं जिन्हें वह नहीं सुन सका, या उनका कोई अस्तित्व ही नहीं है?"

"वे दिव्य ध्वनियाँ वास्तविक हैं, सुखद हैं, इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए उपयुक्त हैं, हृदय में ऐसी लालसा जगाती हैं जिसे वह सुन नहीं सकता था। वे व्यर्थ की वस्तुएँ नहीं हैं।"

6. "लेकिन फिर वह निकटवर्ती और अंतिम कारण क्या है, जिसकी वजह से वह उन्हें सुन नहीं सका, जबकि वे वास्तविक थे और निरर्थक वस्तुएँ नहीं थीं?"

7. मान लीजिए कि एक संन्यासी, महाली, ने किसी एक दिशा में (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर, नीचे या आर-पार) दिव्य रूपों को देखने के उद्देश्य से एकाग्र एकाग्रता का अभ्यास किया है, न कि दिव्य ध्वनियों को सुनने के उद्देश्य से। तो, चूंकि उन्होंने केवल एक ही उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एकाग्र एकाग्रता का अभ्यास किया है, इसलिए वे केवल दृश्य देखते हैं, ध्वनियाँ नहीं सुनते। और क्यों नहीं? क्योंकि उनकी समाधि (आत्म-एकाग्रता) का स्वरूप ही ऐसा है।

8, 9. "और इसी प्रकार, महाली, यदि वह किसी एक दिशा में दिव्य ध्वनियों को सुनने के उद्देश्य से एकाग्र एकाग्रता का अभ्यास करे, तो वह ध्वनियों को तो सुनेगा, पर दृश्यों को नहीं देख पाएगा।"

10, II. "लेकिन मान लीजिए, महाली, कि उसने किसी एक दिशा में दिव्य दृश्यों और दिव्य ध्वनियों को देखने और सुनने के दोहरे उद्देश्य से आत्म-एकाग्रता का अभ्यास किया है। तो, चूंकि उसने दोहरे उद्देश्य से आत्म-एकाग्रता का अभ्यास किया है, इसलिए वह दृश्यों को देखता भी है और ध्वनियों को सुनता भी है। और ऐसा क्यों? क्योंकि उसकी आत्म-एकाग्रता का स्वरूप ही ऐसा है।"

12. "तो, महोदय, क्या ऐसे आत्म-एकाग्रता के अभ्यास को प्राप्त करने के लिए ही बंधुओं ने भगवान बुद्ध के मार्गदर्शन में धार्मिक जीवन व्यतीत किया है?"

"नहीं, महाली। इससे कहीं अधिक श्रेष्ठ और मधुर चीजें हैं जिनके लिए वे ऐसा करते हैं।"

13. "और हे भगवान, वे अन्य बातें क्या हैं?" "प्रथम, महाली, तीनों बंधनों (स्वयं का भ्रम, संशय और अच्छे कर्मों और अनुष्ठानों की प्रभावशीलता पर विश्वास) के पूर्ण नाश से एक भाई परिवर्तित पुरुष बन जाता है, जो किसी भी दुःखपूर्ण अवस्था में पुनर्जन्म नहीं ले सकता और उसे अंतर्दृष्टि (उच्चतम अवस्थाओं की) प्राप्त होने का आश्वासन मिलता है। महाली, यही वह उच्चतर और मधुर अवस्था है जिसके लिए भाई मेरे अधीन धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं।"

"और फिर आगे, महाली, जो तीनों बंधनों का पूर्णतः नाश करके और कामवासना, द्वेष और सुस्ती को न्यूनतम स्तर तक कम करके एक बार पुनरावर्ती बन जाता है, वह जो इस संसार में अपने पहले पुनरागमन पर दुःख का अंत करेगा। महाली, यह उससे भी उच्च और मधुर अवस्था है, जिसके लिए मेरे अधीन भाई धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं।"

और फिर, महाली, जो इस संसार से मनुष्यों को बांधने वाले पांचों बंधनों के पूर्ण नाश से परम स्वर्ग का उत्तराधिकारी बन जाता है, वहीं पर विलीन होकर फिर कभी वापस नहीं आता। महाली, यह उससे भी कहीं अधिक उच्च और मधुर अवस्था है, जिसके लिए मेरे अनुयायी धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं।

"और फिर, महाली, जब कोई भाई घातक बाढ़ों (या मादक वासनाओं, व्यभिचारों, भ्रमों और अज्ञानों) के नाश द्वारा स्वयं ही उस मन की मुक्ति, उस हृदय की मुक्ति, जो अरहतत्व है, को जान और अनुभव कर लेता है और इस दृश्य संसार में निरंतर विद्यमान रहता है, तो महाली, वह एक और भी उच्च और मधुर अवस्था है, जिसके लिए भाई मेरे अधीन धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं।"

"हे महाली, ये वे अवस्थाएँ हैं जो (स्वर्गीय दर्शन और स्वर्गीय ध्वनियाँ सुनने से भी अधिक) श्रेष्ठ और मधुर हैं, जिनके लिए मेरे अनुयायी धार्मिक जीवन व्यतीत करते हैं।"

14. "लेकिन क्या महोदय, इन शर्तों को साकार करने का कोई मार्ग या कोई विधि है?"

"हां, महाली, है।"

"और महोदय, वह मार्ग क्या हो सकता है, वह विधि क्या हो सकती है?"

"निःसंदेह, यह आर्य अष्टांगिक मार्ग है, अर्थात्: सही विचार, सही आकांक्षाएँ, सही वाणी, सही कर्म, आजीविका का सही साधन, सही प्रयास, सही जागरूकता और आत्म-एकाग्रता में सही परमानंद। हे महाली, यही मार्ग है और यही इन अवस्थाओं की प्राप्ति की विधि है।"

15. "एक दिन, महाली, मैं कोसंबा में, घोषिता ऋतु में ठहरी हुई थी। वहाँ दो संन्यासी, माओइसा (घूमने-फिरने वाला भिक्षु) और जालिया (दारुपट्टिका (लकड़ी के कटोरे वाले व्यक्ति) के शिष्य), मेरे पास आए और मुझसे शिष्टाचार और विनम्रता के अभिवादन और प्रशंसा का आदान-प्रदान किया और आदरपूर्वक अलग खड़े हो गए। और इस प्रकार खड़े होकर उन्होंने मुझसे कहा:

"हे पूज्य गौतम, फिर आत्मा और शरीर एक ही चीज कैसे हैं? या आत्मा एक चीज है और शरीर दूसरी?"

"तो महोदय, कृपया ध्यान से सुनें, फिर मैं बोलूंगा।"

"बहुत अच्छा, महोदय," उन दोनों भिक्षुओं ने सहमति जताते हुए कहा, और मैंने इस प्रकार कहा:

16. "तब कामवासनाओं से विरक्त होकर, बुरी अवस्थाओं से दूर होकर, वह प्रथम समाधि में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है— एक आनंद और सहजता की अवस्था, जो वैराग्य, तर्क और अन्वेषण से उत्पन्न होती है। अब, महोदय, जब एक भिक्षु इस प्रकार जानता और देखता है, तो क्या यह उसे इस विषय पर विचार करने के लिए तैयार करता है: "क्या आत्मा और शरीर एक ही वस्तु हैं, या आत्मा एक वस्तु है और शरीर दूसरी?"

"जी हां, ऐसा ही होगा, महोदय। लेकिन महोदय, मैं यह जानता हूं और यह देखता हूं। फिर भी मैं न तो यह कहता हूं और न ही वह।"

[17, 18. [इसके बाद उन भिक्षुओं के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ समाधि तथा अंतर्दृष्टि से उत्पन्न ज्ञान प्राप्त कर लिया है]

19. "इस प्रकार शांत हृदय से वह अपने मन को घातक बाढ़ों के विनाश के ज्ञान की ओर लगाता है। वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह पीड़ा है।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह पीड़ा का मूल है।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह पीड़ा का निवारण है।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह पीड़ा के निवारण का मार्ग है।' वह जानता है कि वे वास्तव में क्या हैं: 'ये घातक बाढ़ें हैं।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह घातक बाढ़ों का मूल है।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह

घातक बाढ़ों का निवारण है।' वह जानता है कि यह वास्तव में क्या है: 'यह घातक बाढ़ों के निवारण का मार्ग है।' इस प्रकार जानने और देखने से उसका हृदय कामवासनाओं के घातक कलंक से मुक्त हो जाता है, जन्म-जन्म के घातक दोष से मुक्त होकर, वह अज्ञान के घातक दोष से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार मुक्त हुए व्यक्ति में अपनी मुक्ति का ज्ञान उत्पन्न होता है, और वह जानता है: "पुनर्जन्म का नाश हो गया है। उच्चतर जीवन पूर्ण हो गया है। जो करना था वह पूरा हो गया है। इस वर्तमान जीवन के बाद कोई परलोक नहीं होगा!"

"जब कोई भिक्षु, महोदय, इस प्रकार जानता और मानता है, तो क्या वह इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हो जाता है: 'क्या आत्मा शरीर के समान है, या आत्मा एक चीज है और शरीर दूसरी?'"

"नहीं, महोदय, ऐसा नहीं होगा।"

"और मैं, महोदय, ऐसा जानता हूँ और ऐसा देखता हूँ। फिर भी मैं न तो यह कहता हूँ और न ही वह।"
भगवान बुद्ध ने ऐसा कहा; और लिच्छवी (हरे होंठ वाले) ने प्रसन्न होकर भगवान बुद्ध के वचन की महिमा की।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.7: जलिया सुत्त (डीएन 7)
मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान कोसंबी में, घोसीता उद्यान में ठहरे हुए थे। तभी दो यात्री, मंदीसा और जलिया, जो लकड़ी के कटोरे वाले तपस्वी के शिष्य थे, उनके पास आए, उनसे अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए...

"एक बार, महाली, मैं कोसंबी में, घोसिता उद्यान में ठहरा हुआ था। दो यात्री, मंदीसा और जलिया, जो लकड़ी के कटोरे वाले तपस्वी के शिष्य थे, मेरे पास आए, मुझसे शिष्टाचार का आदान-प्रदान किया और एक तरफ बैठ गए। फिर उन्होंने कहा: "हे मित्र गौतम, क्या आत्मा और शरीर एक ही हैं, या आत्मा एक है और शरीर दूसरी?" "अच्छा, मित्रों, आप सुनिए, ध्यान से सुनिए, मैं समझाता हूँ।" "जी मित्र," उन्होंने कहा, और मैं आगे बोला:

"मित्रों, संसार में तथागत का जन्म होता है, एक अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, जो ज्ञान और आचरण से परिपूर्ण, कल्याणकारी, संसार के ज्ञाता, मनुष्यों को वश में करने वाले अतुलनीय प्रशिक्षक, देवताओं और मनुष्यों के गुरु, प्रबुद्ध और धन्य हैं। उन्होंने अपने अलौकिक ज्ञान से इस संसार को जान लिया है और वे इस संसार को इसके देवों, मारों और ब्रह्माओं, राजकुमारों और प्रजा सहित घोषित करते हैं। वे धम्म का उपदेश देते हैं, जो आरंभ में सुंदर, मध्य में सुंदर और अंत में सुंदर है, भाव और अक्षर दोनों में सुंदर है, और पूर्णतः सिद्ध और पवित्र जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।"

"एक शिष्य आगे बढ़ता है और नैतिकता का अभ्यास करता है।" अपनी नैतिकता के कारण, उसे कहीं कोई खतरा नहीं दिखता। वह स्वयं में आर्य नैतिकता का पालन करने से प्राप्त होने वाले निष्कलंक आनंद का अनुभव करता है। इस प्रकार, वह नैतिकता में परिपूर्ण हो जाता है... मानो वह ऋण, रोग, बंधन, दासता, रेगिस्तान के खतरों से मुक्त हो गया हो... इस प्रकार इंद्रिय-इच्छाओं से विरक्त होकर, अस्वास्थ्यकर अवस्थाओं से विरक्त होकर, वह प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है... और इस प्रकार अपने शरीर को इस वैराग्य से भर देता है, कि उसके पूरे शरीर का कोई भी भाग इस वैराग्य से उत्पन्न आनंद और प्रसन्नता से अछूता नहीं रहता। अब जो इस प्रकार जानता और देखता है, उसके बारे में क्या यह कहना उचित है: "आत्मा शरीर के समान है," या "आत्मा शरीर से भिन्न है?" "नहीं, मित्र।" "परन्तु मैं इस प्रकार जानता और देखता हूँ, और मैं यह नहीं कहता कि आत्मा शरीर के समान है, या उससे भिन्न है।"

"और यही बात दूसरे...तीसरे...चौथे ध्यान पर भी लागू होती है।" "मन ज्ञान और दृष्टि की ओर झुकता और प्रवृत्त होता है। अब, जो इस प्रकार जानता और देखता है, उसके बारे में क्या यह कहना उचित है: "आत्मा शरीर के समान है," या "आत्मा शरीर से भिन्न है?" "नहीं, मित्र।"

वह जानता है: "यहाँ इससे आगे कुछ नहीं है।" अब जो इस प्रकार जानता और देखता है, उसके बारे में क्या यह कहना उचित है: "आत्मा शरीर के समान है," या "आत्मा शरीर से भिन्न है?" "नहीं, मित्र।" "परन्तु मैं इस प्रकार जानता और देखता हूँ, और मैं यह नहीं कहता कि आत्मा शरीर के समान है या उससे भिन्न है।"

इस प्रकार भगवान ने कहा, और वे दोनों यात्री उनके शब्दों से प्रसन्न हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.8: महासिहानाद सुत्त (डीएन 8)

1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान उरुञ्ञायं में, कंणकत्थले हिरण-वन में निवास कर रहे थे। तब कस्सपा नामक एक नग्न तपस्वी, भगवान के पास आया और उनसे शिष्टाचार और विनम्रता के अभिवादन और प्रशंसा का आदान-प्रदान किया और आदरपूर्वक एक तरफ खड़ा हो गया। और इस प्रकार खड़े होकर उसने भगवान से कहा:

2. हे गौतम, मैंने सुना है कि समना गौतम सभी तपस्याओं की निंदा करते हैं; वे सचमुच हर तपस्वी, हर कठोर जीवन जीने वाले व्यक्ति की निंदा और दोषारोपण करते हैं। हे गौतम, जिन्होंने यह कहा, क्या वे गौतम के शब्दों को दोहरा रहे थे, या उनका झूठा प्रचार कर रहे थे? क्या वे उनके धर्म (उनकी प्रणाली) से निकली किसी बात को उनके एक छोटे से सिद्धांत के रूप में बता रहे हैं? क्या उनके इस मत में, जिसे उनकी प्रणाली से जुड़ा हुआ या उससे निकला हुआ बताया गया है, कोई ऐसी बात नहीं है जिस पर आपत्ति की जा सके? क्योंकि हम पूज्य गौतम पर कोई झूठा आरोप नहीं लगाना चाहते।

3. नहीं, कस्सपा। ऐसा कहने वाले लोग मेरे शब्दों का अनुसरण नहीं कर रहे थे। इसके विपरीत, वे मेरे बारे में झूठी रिपोर्ट कर रहे थे, और तथ्यों से भिन्न बातें कह रहे थे।

हे कस्सपा, मैं अपनी उज्ज्वल और शुद्ध दृष्टि से, मनुष्यों की दृष्टि से परे जाकर, इस बात से अवगत रहता हूँ कि कैसे कुछ तपस्वी, कठिन जीवन व्यतीत करते हुए, शरीर के नष्ट होने पर मृत्यु के बाद किसी दुखी, पतित, विवश अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं; जबकि अन्य, ठीक उसी प्रकार जीवन व्यतीत करते हुए, किसी सुखी अवस्था में या स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लेते हैं। हे कस्सपा, मैं, जो इस प्रकार मनुष्यों की वास्तविक अवस्थाओं से अवगत हूँ कि वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जाएँगे जब वे एक रूप से विलीन होकर दूसरे रूप में धारण करेंगे, तो मैं कैसे समस्त तपस्या की निंदा कर सकता हूँ? या फिर हर तपस्वी, हर उस व्यक्ति की खुलेआम निंदा करना और उसमें दोष निकालना जो कठिन जीवन जीता है?

4. हे कस्सप, कुछ ऐसे संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो चतुर, सूक्ष्म, वाद-विवाद में निपुण और सूक्ष्म तर्क करने में माहिर हैं, और ऐसा प्रतीत होता है मानो वे अपने विरोधियों की अटकलों को अपनी बुद्धि से चकनाचूर कर देते हैं। और जहाँ तक उनका और मेरा संबंध है, कुछ बातों पर सहमति है और कुछ पर असहमति। जिन बातों को वे स्वीकार करते हैं, हम भी उन्हें स्वीकार करते हैं। जिन बातों को वे अस्वीकार करते हैं, हम भी उन्हें अस्वीकार करते हैं। जिन बातों को वे अस्वीकार करते हैं, हम भी उन्हें स्वीकार करते हैं। और जिन बातों को हम स्वीकार करते हैं, वे भी उन्हें स्वीकार करते हैं। और जिन बातों को हम अस्वीकार करते हैं, वे भी उन्हें अस्वीकार करते हैं। और जिन बातों को हम स्वीकार करते हैं, वे भी उन्हें अस्वीकार करते हैं।

5. और मैं उनके पास गया और कहा: "हे मेरे मित्रों, जिन बातों पर हम सहमत नहीं हैं, उन्हें छोड़ दें। जिन बातों पर हम सहमत हैं, उन पर बुद्धिमान लोग प्रश्न करें, उनके कारण पूछें, अपने गुरु से, अपने साथी शिष्यों से, उन पर चर्चा करें और कहें: 'हे सज्जनों, हृदय की वे अवस्थाएँ जो आप में बुरी हैं या बुरी मानी जाती हैं, जो आप में निंदनीय मानी जाती हैं या ऐसी मानी जाती हैं, जो अरहतत्व प्राप्ति के लिए अपर्याप्त हैं या ऐसी मानी जाती हैं, जो भ्रष्ट हैं या ऐसी मानी जाती हैं... उन्हें अपने से पूर्णतः त्यागने वाला कौन है, समा गौतम या अन्य पूजनीय, विद्यालयों के शिक्षक?"

6. हे कस्सपा, तब यह संभव है कि ज्ञानी लोग आपस में प्रश्न पूछते हुए, कारण पूछते हुए, विषय पर चर्चा करते हुए कहें: "समा◌ॅ गौतम ने उन शर्तों को पूर्णतः त्याग दिया है; जबकि अन्य प्रतिष्ठित शिक्षक, यानी अन्य धर्मगुरुओं ने ऐसा केवल आंशिक रूप से किया है।" इस प्रकार, हे कस्सपा, ज्ञानी लोग आपस में प्रश्न पूछते हुए, कारण पूछते हुए, विषय पर चर्चा करते हुए, अधिकतर हमारी प्रशंसा करेंगे।

7. हे कस्सपा, फिर से, बुद्धिमान लोग आपस में प्रश्न पूछें, कारण पूछें, अपने गुरु से, अपने साथी शिष्यों से इस विषय पर चर्चा करें और कहें: "हे महोदय, हृदय की वे अवस्थाएँ जो आप में अच्छी मानी जाती हैं, जो निष्कलंक मानी जाती हैं, जो किसी व्यक्ति को अरहतत्व की ओर ले जाने के लिए पर्याप्त हैं, जो आप में पवित्र मानी जाती हैं—वह कौन है जिसने उन्हें पूर्णतः ग्रहण किया है, समा◌ॅ गौतम या अन्य पूजनीय गुरु, विद्यालयों के शिक्षक?"

8. हे कस्सपा, तब यह संभव है कि ज्ञानी लोग आपस में प्रश्न पूछते हुए, कारण पूछते हुए, विषय पर चर्चा करते हुए कहें: "समा◌ॅ गौतम ने इन शर्तों को पूर्णतः ग्रहण कर लिया है, जबकि अन्य प्रतिष्ठित शिक्षक, यानी अन्य धर्मगुरुओं ने ऐसा आंशिक रूप से ही किया है।" इस प्रकार, हे कस्सपा, ज्ञानी लोग आपस में प्रश्न पूछते हुए, कारण पूछते हुए, विषय पर चर्चा करते हुए, अधिकतर हमारी प्रशंसा करेंगे।

9-12. `[और इसके अलावा, हे कस्सपा, अधिकांश बुद्धिमान लोग यह स्वीकार करेंगे कि मेरे शिष्यों का समूह अन्य शिक्षकों के शिष्यों, यानी आदरणीय शिष्यों की तुलना में, सामान्यतः अच्छे माने जाने वाले कार्यों के प्रति अधिक आसक्त था और सामान्यतः बुरे माने जाने वाले कार्यों से अधिक पूर्णतः विरक्त था।]

13. हे कस्सपा, अब एक मार्ग है, एक विधि है जिसका अनुसरण करने से मनुष्य स्वयं ही यह देख और जान लेगा कि: "समा॰गौतम वह है जो उचित समय पर बोलता है, जो सत्य है, जो लाभप्रद है, जो नियम (धम्म) है, जो आत्म-संयम का नियम (विनय) है।"

और हे कस्सपा, वह कौन सा मार्ग है, वह कौन सी विधि है, जिसका अनुसरण करने से मनुष्य स्वयं ही उसे जान और देख लेगा? निश्चय ही वह आर्य अष्टांगिक मार्ग है, अर्थात्: सही विचार, सही आकांक्षाएँ, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही परमानंद।

"हे कस्सपा, यही वह मार्ग है, यही वह विधि है, जिसका अनुसरण करने से मनुष्य स्वयं ही जान और देख लेगा कि: 'समा॰ गौतम वह है जो उचित समय पर बोलता है, जो सत्य है, जो लाभप्रद है, जो मानक है, जो आत्मसंयम का नियम है।'"

14. और जब उसने ऐसा कहा, तो नग्न तपस्वी कस्सपा ने परमेश्वर से कहा:

और इसी प्रकार, गौतम, कुछ समाओं और ब्राह्मणों के मत के अनुसार, निम्नलिखित तपस्वी प्रथाओं को भी समाधि और ब्रह्मधित्व के रूप में माना जाता है।

वह नग्न अवस्था में जाता है:

उसकी आदतें ढीली हैं (वह शारीरिक क्रियाएं और भोजन खड़े होकर करता है, न कि झुककर या बैठकर, जैसा कि सभ्य लोग करते हैं): वह अपने हाथों को चाटकर साफ करता है (खाने के बाद, दूसरों की तरह धोने के बजाय)।

(भिक्षा मांगने के दौरान, यदि उनसे विनम्रतापूर्वक पास आने या थोड़ी देर प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया जाता है ताकि उनके कटोरे में भोजन डाला जा सके), तो वे दृढ़ता से आगे बढ़ जाते हैं (कहीं वे दूसरे व्यक्ति की बात मानने के अपराध में न फंस जाएं)।

वह भिक्षा मांगने के अपने दैनिक भ्रमण पर निकलने से पहले उसके लिए लाया गया भोजन स्वीकार करने से इनकार कर देता है।

वह (खास तौर पर उसके लिए तैयार किया गया खाना) लेने से इनकार कर देता है।

वह किसी भी निमंत्रण को स्वीकार करने से इनकार कर देता है (चाहे वह अपने दौरों के दौरान किसी विशेष घर में जाने का हो, किसी विशेष गली से गुजरने का हो या किसी विशेष स्थान पर जाने का हो)।

वह (जिस बर्तन में खाना पकाया जाता है) उसके मुँह से (सीधे लिया गया भोजन) स्वीकार नहीं करेगा; ऐसा न हो कि उसके कारण चम्मच से उन बर्तनों पर खरोंच या निशान पड़ जाएँ।

वह दहलीज के भीतर रखा भोजन स्वीकार नहीं करेगा (ऐसा न हो कि वह भोजन विशेष रूप से उसके लिए ही रखा गया हो):

वह लकड़ियों के बीच रखा हुआ भोजन स्वीकार नहीं करेगा (कहीं ऐसा न हो कि वह भोजन विशेष रूप से उसके लिए ही रखा गया हो):

वह मूसल के बीच रखा हुआ भोजन स्वीकार नहीं करेगा (ऐसा न हो कि वह विशेष रूप से उसके लिए ही रखा गया हो)।

जब दो व्यक्ति एक साथ भोजन कर रहे हों, तो वह (उनके भोजन में से लिया गया भोजन, यदि केवल एक व्यक्ति द्वारा उसे दिया जाए) स्वीकार नहीं करेगा।

वह गर्भवती महिला से भोजन स्वीकार नहीं करेगा (कहीं बच्चा भूखा न रह जाए)।

वह दूध पिलाने वाली स्त्री से भोजन ग्रहण नहीं करेगा (कहीं ऐसा न हो कि दूध कम हो जाए): वह किसी पुरुष के साथ संभोग कर रही स्त्री से भोजन ग्रहण नहीं करेगा (कहीं ऐसा न हो कि उनका संभोग बाधित हो जाए)।

वह (सूखे के समय विश्वासियों द्वारा) एकत्रित भोजन स्वीकार नहीं करेगा।

वह उस स्थान पर भोजन स्वीकार नहीं करेगा जहां कोई कुत्ता खड़ा हो (कहीं ऐसा न हो कि कुत्ता अपना भोजन खो दे)।

वह ऐसी जगह भोजन ग्रहण नहीं करेगा जहाँ मक्खियाँ भिनभिना रही हों (कहीं मक्खियों को कष्ट न हो)।

वह न तो मछली, न मांस, न शराब, न मादक पदार्थ और न ही दलिया स्वीकार करेगा।

वह एक "एक घर में भीख मांगते ही वापस लौट जाता है", एक "एक निवाला भरकर खाने वाला" व्यक्ति है।

या फिर वह एक "दो घरों वाला" है, एक "दो मुँह भर खाने वाला आदमी" है।

या फिर वह एक 'सात घरों वाला' है, एक 'सात मुँह भर खाने वाला आदमी'।

वह केवल एक, या केवल दो, या इसी तरह सात भिक्षाओं से अपना गुजारा चलाता है।

वह दिन में केवल एक बार, या हर दो दिन में एक बार, या इसी तरह हर सात दिन में एक बार भोजन करता है। इस प्रकार वह नियमित अंतराल पर, नियमानुसार भोजन करने की आदत में लीन रहता है, जो लगभग आधे महीने तक भी जारी रह सकता है।

और इसी प्रकार, हे गौतम, कुछ समाओं और ब्राह्मणों के मत के अनुसार, निम्नलिखित तपस्वी प्रथाओं को भी समाधि और ब्रह्मधित्व के रूप में माना जाता है:

वह जड़ी-बूटियों, जंगली चावल, निवारा के बीजों, चमड़े के छिलकों, हाना नामक जलीय पौधे, चावल के दानों के छिलके के नीचे चिपके हुए बारीक पाउडर, चावल उबालने के बाद बचे हुए झाग, तिलहन के आटे, घास, गोबर, जंगल के फलों और जड़ों, और अपने आप गिरे हुए फलों को खाता है।

और इसी प्रकार, हे गौतम, कुछ समाओं और ब्राह्मणों के मत के अनुसार, निम्नलिखित तपस्वी प्रथाओं को भी समाधि और ब्रह्मधित्व के रूप में माना जाता है:

वह मोटे भांग के कपड़े पहनता है:

वह बुने हुए भांग और अन्य सामग्रियों से बने मोटे कपड़े पहनता है:

वह लाशों से उतारे गए और फेंके गए कपड़े पहनता है।

वह कूड़े के ढेर से उठाए गए चिथड़ों से बने कपड़े पहनता है:

वह तिराटका वृक्ष की छाल से बने वस्त्र पहनता है:

वह काले हिरण की प्राकृतिक खाल पहने हुए है:

वह काले हिरण की खाल की पट्टियों के जाल से बनी पोशाक पहनता है:

उन्होंने कुसा घास के रेशों से बनी पोशाक पहनी हुई है:

वह छाल का वस्त्र पहनता है:

वह लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों (शिंगल) को जोड़कर बनाया गया वस्त्र पहनता है।

वह वस्त्र के रूप में मानव बालों का कंबल ओढ़ता है।

वह घोड़ों की पूंछों से बनी चादर को वस्त्र के रूप में पहनता है।

वह उल्लू के पंखों से बनी चादर को वस्त्र के रूप में धारण करता है।

वह बाल और दाढ़ी नोचने का आदी है।

वह बैठने की जगह का उपयोग करने से इनकार करते हुए, "खड़े रहने वाले व्यक्ति" हैं।

वह एक "एड़ियों पर झुककर बैठने वाला" व्यक्ति है, जिसे एड़ियों पर झुककर बैठने के दौरान खुद को थकाने की आदत है।

वह कांटों की सेज पर सोने वाला व्यक्ति है, जो सोने के लिए इस्तेमाल होने वाली त्वचा के नीचे लोहे के कांटे या प्राकृतिक कांटे रखता है।

वह तख्तों से बने बिस्तर का इस्तेमाल करता है:

वह नंगी जमीन पर सोता है:

वह हमेशा एक ही करवट सोता है:

वह एक "धूल और मिट्टी से सना हुआ व्यक्ति" है (अपने शरीर पर तेल मलकर वह धूल के बादलों के बीच खड़ा हो जाता है और धूल को अपने शरीर पर चिपकने देता है)।

वह खुले आसमान के नीचे रहता और सोता है:

उसे जो भी आसन दिया जाए, वह उसे स्वीकार कर ले (इस बात से नाराज हुए बिना कि वह आसन पर्याप्त गरिमापूर्ण नहीं है):

वह एक 'गंदगी खाने वाला' है, जो चार प्रकार की गंदगी (गाय का गोबर, गाय का मूत्र, राख और मिट्टी) खाने का आदी है।

वह एक 'नशेड़ी' है, जिसे ठंडे पानी को कभी न पीने की आदत है (कहीं ऐसा न हो कि उसमें मौजूद आत्माओं को नुकसान पहुंचे)।

वह एक "शाम-तीसरे व्यक्ति" है, जो दिन में तीन बार पानी में उतरकर अपने पापों को धोने का आदी है।

15. हे कस्सपा, यदि कोई व्यक्ति नग्न रहे, व्यभिचारी हो, अपनी जीभ से हाथ चाटकर साफ करे, और वे सभी चीजें करे जिनका आपने विस्तार से वर्णन किया है, यहाँ तक कि नियमानुसार नियमित अंतराल पर, यहाँ तक कि आधे महीने तक भी, भोजन ग्रहण करने का आदी हो—यदि वह यह सब करे, और आचरण, हृदय और बुद्धि में आनंदमय प्राप्ति की अवस्था का अभ्यास न करे, उसे प्राप्त न हो, तो वह समाधि से दूर है, ब्रह्मत्व से दूर है। लेकिन हे कस्सपा, जिस समय से भिक्षु प्रेम का ऐसा हृदय विकसित कर लेता है जो क्रोध और द्वेष से रहित हो—जिस समय से घातक व्यसनों (शरीर की वासना, परलोक की वासना और भ्रम एवं अज्ञान के दोषों) के नाश द्वारा वह हृदय की उस मुक्ति और मन की उस मुक्ति में निवास करता है जो उन व्यसनों से मुक्त है, और जिसे वह इस दृश्य संसार में रहते हुए ही जान लेता है—उस समय से, हे कस्सपा, भिक्षु को समाह कहा जाता है, उसे ब्रह्मा कहा जाता है!

हे कस्सप, यदि कोई व्यक्ति जड़ी-बूटियों, जंगली चावल, निवारा के बीजों, या उन अन्य चीजों का सेवन करता है जिनका आपने विस्तार से वर्णन किया है, यहाँ तक कि उन फलों का भी जो स्वतः गिर गए हैं, और उसने आचरण, हृदय और बुद्धि में आनंदमय प्राप्ति की

अवस्था का अभ्यास नहीं किया है, तो वह समाधि से दूर है, ब्रह्मत्व से दूर है। परन्तु हे कस्सप, जब कोई भिक्षु प्रेममय हृदय का विकास करता है जो क्रोध और द्वेष से रहित है—जब घातक व्यसनों (शरीर की वासना, परलोक की वासना और भ्रम एवं अज्ञान के दोष) के नाश द्वारा वह हृदय की उस मुक्ति, मन की उस मुक्ति में निवास करता है जो उन व्यसनों से मुक्त है, और वह, जबकि अभी भी... इस दृश्य संसार में, यह अहसास और ज्ञान प्राप्त हुआ है... हे कस्सपा, उसी समय से भिक्षु को समाह कहा जाता है... ब्रह्म कहा जाता है!

और हे कस्सपा, यदि कोई व्यक्ति खुरदरे धूसर वस्त्र पहनता है, या आपके द्वारा विस्तार से बताई गई उन सभी या किसी भी अन्य प्रथाओं का पालन नहीं करता है, जिनमें दिन में तीन बार जल स्नान करना भी शामिल है, और आचरण, हृदय और बुद्धि में आनंदमय प्राप्ति की अवस्था का अभ्यास नहीं करता है, तो वह समाधित्व से दूर है, ब्रह्मत्व से दूर है। लेकिन हे कस्सपा, जिस समय से भिक्षु प्रेम का ऐसा हृदय विकसित कर लेता है जो क्रोध और द्वेष से रहित हो—जिस समय से घातक व्यसनों (शरीर की वासना, परलोक की लालसा और भ्रम एवं अज्ञान के दोषों) के नाश द्वारा वह हृदय की उस मुक्ति और मन की उस मुक्ति में निवास करता है जो इन व्यसनों से मुक्त हो, और जिसे वह इस दृश्य संसार में रहते हुए ही जान लेता है—उस समय से, हे कस्सपा, भिक्षु को समाह कहा जाता है, उसे ब्रह्मा कहा जाता है!

16. और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो नग्न तपस्वी कस्सपा ने भगवान बुद्ध से कहा, 'तो फिर, गौतम, समाधि प्राप्त करना कितना कठिन होगा, ब्रह्मधित्व प्राप्त करना कितना कठिन होगा!'

'हे कस्सपा, संसार में यह आम कहावत है कि सामंत और ब्रह्मा का जीवन कठिन होता है। परन्तु यदि उस जीवन की कठिनाई, अत्यंत कठिनाई, केवल इस तपस्या पर, आपके द्वारा वर्णित किसी भी या सभी अभ्यासों के पालन पर निर्भर होती, तो यह कहना उचित नहीं होता कि सामंत या ब्रह्मा का जीवन कठिन है। एक गृहस्थ, या गृहस्थ का पुत्र, या यहाँ तक कि जल-कलश ढोने वाली दासी भी, यह कह सकती थी: 'अब मैं नंगा हो जाऊँ, मैं नीच आदतों को अपना लूँ,' इत्यादि, और इसी प्रकार आपकी उन तीनों सूचियों के सभी बिंदुओं का पालन कर सकती थी। परन्तु हे कस्सपा, इन सब बातों से, सभी प्रकार की तपस्याओं से परे, जीवन कठिन है, अत्यंत कठिन है; इसलिए यह कहना उचित है: "समाजत्व प्राप्त करना कितना कठिन होगा, ब्रह्मत्व प्राप्त करना कितना कठिन होगा! क्योंकि हे कस्सपा, जिस समय से भिक्षु प्रेममय हृदय विकसित कर लेता है, जो क्रोध और द्वेष से रहित होता है—जिस समय से घातक व्यसनों (शरीर की वासना, परलोक की लालसा और भ्रम एवं अज्ञान के दोषों) के नाश द्वारा वह हृदय की उस मुक्ति और मन की उस मुक्ति में निवास करता है, जो उन व्यसनों से मुक्त होती है, और जिसे वह इस दृश्य संसार में रहते हुए ही जान लेता है—हे कस्सपा, उसी समय से भिक्षु को समाज और ब्रह्म कहा जाता है!"

17. और जब उन्होंने ऐसा कहा, तो नग्न तपस्वी कस्सपा ने भगवान बुद्ध से कहा, 'हे गौतम, यह जानना कठिन है कि कोई व्यक्ति समाधि पुरुष है या ब्रह्मा!'

'हे कस्सपा, संसार में यह आम कहावत है कि समा्य को पहचानना कठिन है, ब्राह्मण को पहचानना कठिन है। परन्तु यदि समा्य होना, यदि ब्राह्मण होना, केवल इस तपस्या पर, आपके द्वारा वर्णित किसी भी या सभी प्रथाओं के पालन पर निर्भर करता, तो यह कहना उचित नहीं होता कि समा्य को पहचानना कठिन है, ब्राह्मण को पहचानना कठिन है। एक गृहस्थ, या गृहस्थ का पुत्र, या जल कलश ढोने वाली दासी तक, कोई भी यह जान सकता था: 'यह व्यक्ति नंगा रहता है, या इसकी आदतें सुधरती नहीं हैं, या यह अपनी उंगलियों को जीभ से चाटता है,' इत्यादि, आपकी उन तीनों सूचियों में उल्लिखित सभी बिंदुओं के आधार पर। लेकिन हे कस्सपा, इन सब बातों से अलग, सभी प्रकार की तपस्याओं से अलग, एक समा्क को पहचानना कठिन है, एक ब्रह्मा्क को पहचानना कठिन है, इसलिए यह कहना उचित है: "यह जानना कठिन है कि कोई व्यक्ति समा्क है या ब्रह्मा्क!" क्योंकि हे कस्सपा, जिस समय से एक भिक्षु प्रेम का हृदय विकसित कर लेता है जो क्रोध और द्वेष से रहित होता है—जिस समय से घातक व्यसनों (शरीर की वासना, परलोक की लालसा और भ्रम और अज्ञान के दोषों) के नाश द्वारा, वह हृदय की उस मुक्ति में, मन की उस मुक्ति में निवास करता है जो उन व्यसनों से मुक्त है, और जिसे वह इस दृश्य संसार में रहते हुए ही जान लेता है—उस समय से, हे कस्सपा, भिक्षु को समा्क कहा जाता है। ब्रह्मा!

18. जब उन्होंने ऐसा कहा, तब नग्न तपस्वी कश्यप कश्यप ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे गौतम, आचरण, हृदय और मन में वह आनंदमय प्राप्ति क्या है?"

21. "हे कस्सपा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण आचरण पर बल देते हैं। वे विभिन्न प्रकार से नैतिकता की प्रशंसा करते हैं। परन्तु वास्तव में श्रेष्ठ, सर्वोच्च आचरण के विषय में, मुझे अपने समतुल्य, और श्रेष्ठ तो दूर की बात है, कोई ज्ञात नहीं। और इस मार्ग में, अर्थात् सर्वोच्च आचरण में, मैं ही सबसे आगे बढ़ा हूँ।"

"हे कस्सपा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो आत्म-यातना और दूसरों की सावधानीपूर्वक देखभाल पर ज़ोर देते हैं। वे आत्म-यातना और कठोर सावधानी की प्रशंसा में कई तरह से बोलते हैं। लेकिन जहाँ तक वास्तव में श्रेष्ठ, सर्वोच्च स्तर की आत्म-यातना और दूसरों के प्रति सावधानीपूर्वक सम्मान की बात है, तो मुझे अपने बराबर तो कोई और नहीं दिखता, श्रेष्ठ तो दूर की बात है। और इस मामले में मैं ही सबसे आगे बढ़ा हूँ; यानी दूसरों के प्रति सर्वोच्च स्तर की सावधानीपूर्वक सम्मान में।"

'हे कस्सपा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण बुद्धि पर बल देते हैं। वे विभिन्न तरीकों से बुद्धि की प्रशंसा करते हैं। परन्तु वास्तव में श्रेष्ठ, सर्वोच्च बुद्धि की बात करें तो, मुझे अपने समतुल्य, और श्रेष्ठ तो दूर की बात है, कोई और ज्ञात नहीं। और मैं ही उस मार्ग की सर्वोच्च बुद्धि तक पहुँचा हूँ।'

'हे कस्सपा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो मोक्ष पर जोर देते हैं। वे विभिन्न तरीकों से मोक्ष की प्रशंसा करते हैं। लेकिन वास्तव में सर्वोच्च, उच्चतम मोक्ष के मामले में, मुझे अपने समान, और न ही अपने से श्रेष्ठ, कोई और ज्ञात नहीं है। और मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने इस मार्ग में सबसे अधिक प्रगति की है; अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया है।'

22. "हे कस्सपा, यह संभव है कि विपरीत संप्रदायों के संन्यासी कहें: 'समा◌ॅ गौतम सिंह की गर्जना करते हैं; परन्तु वे एकांत में गर्जना करते हैं, न कि जहाँ मनुष्य एकत्रित होते हैं।' तब उन्हें उत्तर दिया जाना चाहिए: 'ऐसा मत कहो। समा◌ॅ गौतम सिंह की गर्जना करते हैं, और वह भी उन सभाओं में जहाँ मनुष्य एकत्रित होते हैं।'"

और यह भी संभव है, कस्सपा, कि विपरीत विचारधाराओं के संन्यासी इस प्रकार क्रमानुसार निम्नलिखित आपत्तियाँ उठाएँ।

लेकिन वह पूरे आत्मविश्वास के साथ दहाड़ नहीं मारता:

लेकिन लोगों ने उससे कोई सवाल नहीं पूछा:

लेकिन पूछे जाने पर भी वह जवाब नहीं दे पाता: लेकिन जवाब देने पर भी वह समस्या के स्पष्टीकरण से संतोषजनक उत्तर नहीं देता।

लेकिन लोग उसकी राय को सुनने लायक नहीं समझते।

लेकिन जब लोग उसकी बात सुनते भी हैं, तो उन्हें उससे कोई दृढ़ विश्वास नहीं होता।

लेकिन जब लोग आश्वस्त हो जाते हैं, तब भी वे अपने विश्वास का कोई बाहरी संकेत नहीं देते हैं।

लेकिन जब वे इस तरह के बाहरी संकेत देते हैं, तब भी वे सत्य तक नहीं पहुँचते:

लेकिन सत्य तक पहुँचने पर भी वे उसका पालन नहीं कर पाते: "तो ऐसे प्रत्येक मामले में, हे कस्सपा, उन्हें पहले की तरह ही उत्तर देना चाहिए, जब तक कि उत्तर यह न आ जाए: ऐसा मत कहो। क्योंकि समा◌ॅगौतम सिंह की गर्जना करते हैं, और वह भी ऐसी सभाओं में जहाँ लोग एकत्रित होते हैं, और अपने दावे की सत्यता पर पूर्ण विश्वास रखते हुए, और लोग उनसे इस विषय पर प्रश्न पूछते हैं, और प्रश्न पूछे जाने पर वे प्रश्न का उत्तर देते हैं, और उनके स्पष्टीकरण से उनके हृदय में संतोष उत्पन्न होता है, और वे उनके वचन को सुनना उचित समझते हैं, और उसे सुनकर उन्हें दृढ़ विश्वास प्राप्त होता है, और दृढ़ विश्वास होने पर वे इसके बाहरी संकेत देते हैं, और वे सत्य तक पहुँच जाते हैं, और उसे समझकर वे सत्य का पालन करने में भी सक्षम हो जाते हैं!"

23. एक बार मैं, कस्सपा, राजगृह में, गिद्ध शिखर नामक पहाड़ी पर ठहरा हुआ था। वहाँ तुम्हारे ही समान जीवन शैली का पालन करने वाले निग्रोध नामक एक व्यक्ति ने मुझसे कठोर संयमपूर्ण जीवन के उच्च रूपों के बारे में एक प्रश्न पूछा। जब मुझसे यह प्रश्न पूछा गया, तो मैंने उसे समझाया। और जब मैंने उसके प्रश्न का उत्तर दे दिया, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ, मानो उसे बहुत आनंद आया हो।

हे भगवान, परम पूज्य के उपदेश सुनकर कौन प्रसन्न नहीं होगा? मैं भी, जिसने परम पूज्य के उपदेश सुने हैं, परम पूज्य के समान प्रसन्न हूँ। हे भगवान, आपके मुख के वचन अत्यंत उत्कृष्ट हैं, मानो कोई गिरी हुई वस्तु को उठा दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए को सही मार्ग दिखा दे, या अंधकार में दीपक जला दे ताकि आँखों वाले बाहरी रूप देख सकें... हे भगवान, इसी प्रकार परम पूज्य ने

अनेक दृष्टांतों के द्वारा सत्य को मेरे दर्शन कराया है। और मैं भी परम पूज्य, उनके उपदेश और उनके संघ को अपना मार्गदर्शक मानता हूँ। हे भगवान, मैं परम पूज्य के अधीन संसार का त्याग करना चाहता हूँ; मैं उनके संघ में प्रवेश पाना चाहता हूँ।

24. 'हे कस्सपा, जो कोई भी पहले किसी अन्य संप्रदाय का सदस्य रहा हो और संसार का त्याग करके इस सिद्धांत और अनुशासन में दीक्षा लेना चाहता हो, वह चार महीने की परिवीक्षा अवधि में रहता है। और चार महीने की समाप्ति पर, उच्च आध्यात्मिक भिक्षु उसे दीक्षा देते हैं और संघ में शामिल करके उसे भिक्षु की अवस्था तक पहुंचाते हैं। परन्तु ऐसे मामलों में भी मैं व्यक्तियों के बीच अंतर को स्वीकार करता हूँ।'

हे भगवान, चूंकि चार महीने की परिवीक्षा अवधि नियमित प्रथा है, इसलिए मैं भी उतने ही समय तक परिवीक्षा में रहूंगा। फिर, हे उच्च कोटि के भाइयों, मुझे दीक्षा दें और मुझे भिक्षु की अवस्था में पदोन्नत करें।

इस प्रकार नग्न तपस्वी कस्सपा ने दीक्षा ग्रहण की और परम पूज्य के अधीन संघ में शामिल हो गए। दीक्षा ग्रहण के तुरंत बाद से पूज्य कस्सपा एकांत और एकांत में रहे, गंभीर, उत्साही और आत्म-नियंत्रित। शीघ्र ही उन्होंने उस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जिसके लिए कुलवासी गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में प्रवेश करते हैं: जी हाँ, उन्होंने स्वयं ही, इस दृश्य संसार में रहते हुए, उस सर्वोच्च लक्ष्य का ज्ञान प्राप्त किया, उसे निरंतर अनुभव किया और उसका प्रत्यक्ष दर्शन किया। उन्हें यह विश्वास हो गया कि उनका पुनर्जन्म समाप्त हो गया है, कि उच्चतर जीवन पूर्ण हो गया है, कि जो कुछ करना था वह पूरा हो चुका है, और इस जीवन के बाद कोई परलोक नहीं है!

और इस प्रकार पूज्य कस्सपा भी अरहतों में से एक बन गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.9: पोत्थपाद सुत्त (डीएन 9)

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में ठहरे हुए थे। उस समय पोत्थपाद नाम का एक यात्री, रानी मल्लिका के एक कक्ष वाले उद्यान में, तिन्दुका वृक्ष के पास स्थित विमर्श-कक्ष में, लगभग तीन सौ यात्रियों की एक बड़ी भीड़ के साथ उपस्थित था।

तब भगवान भोर में उठकर अपना वस्त्र और भिक्षापात्र लेकर सावत्थी के पास भिक्षा मांगने गए। परन्तु उनके मन में विचार आया, "सावत्थी के पास भिक्षा मांगने जाना अभी शीघ्र है। क्यों न मैं वाद-विवाद कक्ष में जाकर उस घुमक्कड़ पोत्थापदा से मिलूं?" और उन्होंने ऐसा ही किया।

वहाँ पोत्थापदा अपने घुमंतू साथियों के समूह के साथ बैठा था, सभी चिल्ला रहे थे और बहुत शोर मचा रहे थे, राजाओं, लुटेरों, मंत्रियों, सेनाओं, खतरों, युद्धों, भोजन, पेय, वस्त्र, बिस्तर, मालाओं, इत्रों, रिश्तेदारों, रथों, गांवों, कस्बों और शहरों, देशों, महिलाओं, नायकों, गली-गली और कुएँ की गपशप, मृतकों की बातें, बेतरतीब बातचीत, भूमि और समुद्र के बारे में अटकलें, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की बातें जैसी कई प्रकार की निरर्थक बातचीत में लिप्त थे।

लेकिन पोत्थपाद ने दूर से भगवान को आते देखा, इसलिए उसने अपने अनुयायियों को शांत रहने का आदेश देते हुए कहा: "शांत रहो, सज्जनों, शोर मत करो! वह तपस्वी गौतम आ रहे हैं, और उन्हें शांति पसंद है और वे शांति की प्रशंसा करते हैं। यदि वे देखेंगे कि यह समूह शांत है, तो वे शायद हमसे मिलने आना चाहेंगे।" यह सुनकर सभी साधक चुप हो गए।

तब भगवान पोत्थपदा के पास आए, जिसने कहा: "आह्वद भगवान, आपका स्वागत है! अंततः आह्वद भगवान यहाँ आने के लिए इतनी दूर चले आए हैं। कृपया बैठिए, भगवान, आपके लिए आसन तैयार है।"

भगवान तैयार आसन पर बैठ गए, और पोत्थपाद ने एक छोटी चौकी ली और एक तरफ बैठ गया। भगवान ने कहा, "पोत्थपाद, तुम सब क्या बातें कर रहे थे? मैंने किस बातचीत में बाधा डाली है?"

पोत्थपाद ने उत्तर दिया: "हे भगवान, अभी जो बातचीत हुई उसे भूल जाइए, भगवान को बाद में उसके बारे में सुनने में कोई कठिनाई नहीं होगी। हे भगवान, पिछले कुछ दिनों से विभिन्न संप्रदायों के तपस्वियों और ब्राह्मणों के बीच विमर्श-महल में बैठकर चेतना के उच्चतर निर्गमन और यह कैसे होता है, इस विषय पर चर्चा हो रही है। कुछ ने कहा: "मनुष्य की अनुभूतियाँ बिना किसी कारण या शर्त के उत्पन्न होती हैं और समाप्त हो जाती हैं। जब वे उत्पन्न होती हैं, तब मनुष्य सचेत होता है, जब वे समाप्त हो जाती हैं, तब मनुष्य अचेत हो जाता

है।" उन्होंने इसे इस प्रकार समझाया। लेकिन किसी अन्य ने कहा: "नहीं, ऐसा नहीं है। अनुभूतियाँ मनुष्य का आत्म हैं, जो आती-जाती रहती हैं। जब वे आती हैं, तब मनुष्य सचेत होता है, जब वे चली जाती हैं, तब मनुष्य अचेत हो जाता है।" एक अन्य ने कहा: "ऐसा नहीं है। महान शक्ति और महान प्रभाव वाले तपस्वी और ब्राह्मण हैं। वे मनुष्य में चेतना को उतारते हैं और फिर उसे वापस ले लेते हैं। जब वे उसे उतारते हैं, तब मनुष्य सचेत होता है, जब वे उसे वापस ले लेते हैं, तब वह अचेत हो जाता है।" और एक अन्य ने कहा: "नहीं, ऐसा नहीं है।" महान शक्तियों और व्यापक प्रभाव वाले देवता हैं। वे मनुष्य में चेतना का संचार करते हैं और उसे वापस ले लेते हैं। जब वे चेतना का संचार करते हैं, तो मनुष्य सचेत होता है, और जब वे उसे वापस ले लेते हैं, तो वह अचेत हो जाता है। इसी संदर्भ में मुझे भगवान का ख्याल आया: "अहा, हे भगवान, जो हर किसी की मदद करते हैं, वे इन मामलों में अत्यंत कुशल हैं! भगवान चेतना के उच्चतर अंत को भलीभांति समझते हैं।" तो हे भगवान, चेतना का यह उच्चतर अंत क्या है?

"इस मामले में, पोत्थपाद, वे तपस्वी और ब्राह्मण जो कहते हैं कि किसी की धारणाएँ बिना किसी कारण या परिस्थिति के उत्पन्न और समाप्त होती हैं, पूरी तरह गलत हैं। ऐसा क्यों? किसी की धारणाएँ किसी कारण और परिस्थिति के कारण उत्पन्न और समाप्त होती हैं। कुछ धारणाएँ साधना से उत्पन्न होती हैं, और कुछ साधना से समाप्त हो जाती हैं।" "यह साधना क्या है?" भगवान ने कहा: "पोत्थपाद, इस संसार में तथागत, एक अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, बुद्धि और आचरण से परिपूर्ण, कल्याणकारी, संसार के ज्ञाता, मनुष्यों को वश में करने वाले अतुलनीय प्रशिक्षक, देवताओं और मनुष्यों के गुरु, प्रबुद्ध और धन्य, प्रकट होते हैं। वे अपने अलौकिक ज्ञान से इस संसार का प्रचार करते हैं, जिसमें देव, मार और ब्रह्मा, राजकुमार और प्रजा सभी शामिल हैं। वे उस धम्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में, मध्य में और अंत में, भाव और अक्षर दोनों में सुंदर है, और पूर्णतः सिद्ध और पवित्र जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। शिष्य आगे बढ़कर नैतिकता का अभ्यास करता है। उसके लिए यही नैतिकता है।"

और फिर, पोट्ठापदा, वह भिक्षु जो नैतिकता में परिपूर्ण है, उसे किसी भी तरफ से कोई खतरा नहीं दिखता... इस तरह वह नैतिकता में परिपूर्ण हो जाता है।

वह इंद्रियों आदि के द्वारों की रक्षा करता है। प्रथम ध्यान अवस्था में पहुँचकर वह उसी में स्थिर रहता है। और पहले से मौजूद कामवासना की सभी भावनाएँ लुप्त हो जाती हैं। उस समय वैराग्य से उत्पन्न आनंद और सुख की एक सच्ची, परन्तु सूक्ष्म अनुभूति होती है, और वह इस आनंद और सुख के प्रति सजग हो जाता है। इस प्रकार कुछ अनुभूतियाँ साधना से उत्पन्न होती हैं, और कुछ साधना से लुप्त हो जाती हैं। और यही वह साधना है," भगवान ने कहा।

"फिर, जब कोई भिक्षु चिंतन और मनन के शांत होने से आंतरिक शांति और मन की एकता प्राप्त कर लेता है, तो वह दूसरे ध्यान में पहुँच जाता है और उसमें स्थिर रहता है, जो चिंतन और मनन से मुक्त, एकाग्रता से उत्पन्न, आनंद और सुख से परिपूर्ण होता है। उसकी पूर्व की सच्ची, लेकिन सूक्ष्म, अनासक्ति से उत्पन्न आनंद और सुख की अनुभूति लुप्त हो जाती है। उस समय एकाग्रता से उत्पन्न आनंद और सुख की सच्ची, लेकिन सूक्ष्म अनुभूति उत्पन्न होती है, और वह इस आनंद और सुख के प्रति सचेत हो जाता है। इस प्रकार कुछ अनुभूतियाँ साधना से उत्पन्न होती हैं, और कुछ साधना से ही लुप्त हो जाती हैं।"

फिर, आनंद के लुप्त हो जाने के बाद, वह समभाव, सजगता और स्पष्ट जागरूकता में लीन हो जाता है, और अपने शरीर में उस सुखद अनुभूति का अनुभव करता है जिसके बारे में ऋषियों ने कहा है: "समभाव और सजगता में रहने वाला मनुष्य सुखी होता है," और वह तीसरे ध्यान में पहुँचकर स्थिर हो जाता है। एकाग्रता से उत्पन्न उसका पूर्व का सच्चा, परन्तु सूक्ष्म आनंद और प्रसन्नता का भाव लुप्त हो जाता है, और उस समय समभाव और प्रसन्नता का सच्चा, परन्तु सूक्ष्म भाव उत्पन्न होता है, और वह इस सच्चे, परन्तु सूक्ष्म समभाव और प्रसन्नता के प्रति सचेत हो जाता है। इस प्रकार कुछ बोध साधना से उत्पन्न होते हैं, और कुछ साधना से लुप्त हो जाते हैं।

फिर, सुख और दुख के त्याग से, और पूर्व के सुख और दुःख के लुप्त होने से, वह चौथे ध्यान की अवस्था में पहुँचता है और उसमें स्थिर रहता है, जो सुख और दुःख से परे, समभाव और जागरूकता से शुद्ध अवस्था है। उसका पूर्व का सच्चा लेकिन सूक्ष्म समभाव और सुख का बोध लुप्त हो जाता है, और सुख और दुःख दोनों की सच्ची लेकिन सूक्ष्म अनुभूति उत्पन्न होती है, और वह इस सच्ची लेकिन सूक्ष्म अनुभूति के प्रति सचेत हो जाता है। इस प्रकार, कुछ अनुभूतियाँ अभ्यास से उत्पन्न होती हैं, और कुछ अभ्यास से ही लुप्त हो जाती हैं।

फिर, शारीरिक संवेदनाओं से पूरी तरह परे जाकर, प्रतिरोध की भावना के लुप्त होने और विविधता की अनुभूति के प्रति अनासक्ति से, यह देखकर कि अंतरिक्ष अनंत है, वह अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है। इस प्रकार कुछ अनुभूतियाँ अभ्यास से उत्पन्न होती हैं और कुछ अभ्यास से ही लुप्त हो जाती हैं।

फिर, अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र से पूरी तरह परे जाकर, यह देखकर कि चेतना अनंत है, वह अनंत चेतना के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है। इस प्रकार, कुछ बोध प्रशिक्षण से उत्पन्न होते हैं और कुछ प्रशिक्षण से ही समाप्त हो जाते हैं।

फिर, अनंत चेतना के क्षेत्र से पूर्णतः परे जाकर, यह देखकर कि कुछ भी नहीं है, वह निरर्थकता के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है, और वह निरर्थकता के क्षेत्र की इस सच्ची परन्तु सूक्ष्म अनुभूति के प्रति सचेत हो जाता है। इस प्रकार, कुछ अनुभूतियाँ अभ्यास से उत्पन्न होती हैं, और कुछ अभ्यास से ही लुप्त हो जाती हैं। और यही वह अभ्यास है," भगवान ने कहा।

पोत्थपाद, जिस क्षण किसी भिक्षु को यह नियंत्रित बोध प्राप्त हो जाता है, वह एक-एक चरण पार करते हुए बोध की चरम सीमा तक पहुँच जाता है। जब वह बोध की चरम सीमा पर पहुँच जाता है, तो उसे यह विचार आता है: "मानसिक गतिविधि मेरे लिए हानिकारक है, मानसिक गतिविधि का अभाव बेहतर है। यदि मैं सोचूँ और कल्पना करूँ, तो ये बोध (जो मैंने प्राप्त किए हैं) समाप्त हो जाएँगे और मुझमें स्थूल बोध उत्पन्न हो जाएँगे। मान लीजिए कि मैं न सोचूँ और न कल्पना करूँ?" अतः वह न तो सोचता है और न ही कल्पना करता है। और तब, उसमें केवल यही बोध उत्पन्न होते हैं, अन्य स्थूल बोध उत्पन्न नहीं होते। वह बोध की समाप्ति प्राप्त कर लेता है। और पोत्थपाद, यही वह तरीका है जिससे क्रमिक चरणों के माध्यम से बोध की समाप्ति प्राप्त होती है।

"पोत्थपाद, आपका क्या विचार है? क्या आपने इसके बारे में पहले कभी सुना है?" "नहीं, भगवान। जैसा कि मैं समझता हूँ, भगवान ने कहा है: पोत्थपाद, जिस क्षण एक भिक्षु को यह नियंत्रित बोध प्राप्त हो जाता है, वह एक-एक चरण से आगे बढ़ता जाता है जब तक कि वह बोध की सीमा तक नहीं पहुँच जाता... उसे निश्चिंतता प्राप्त हो जाती है... और यही वह तरीका है जिससे क्रमिक चरणों के माध्यम से बोध की निश्चिंतता प्राप्त होती है।" "बिल्कुल सही, पोत्थपाद।"

"हे भगवान, क्या आप यह सिखाते हैं कि अनुभूति का शिखर केवल एक है, या अनेक हैं?" "मैं इसे एक और अनेक दोनों के रूप में सिखाता हूँ।" "हे भगवान, यह एक कैसे है और अनेक कैसे है?" "जैसे-जैसे व्यक्ति प्रत्येक अनुभूति की समाप्ति की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे मैं उस अनुभूति के शिखर के बारे में सिखाता हूँ: इस प्रकार मैं अनुभूति के एक शिखर के बारे में भी सिखाता हूँ और अनेक शिखरों के बारे में भी।"

हे भगवान, क्या ज्ञान से पहले बोध उत्पन्न होता है, या बोध से पहले ज्ञान उत्पन्न होता है, या दोनों एक साथ उत्पन्न होते हैं? "हे पोत्थपाद, पहले बोध उत्पन्न होता है, फिर ज्ञान, और बोध के उत्पन्न होने से ही ज्ञान उत्पन्न होता है। और तब यह ज्ञात होता है: "इस प्रकार ज्ञान उत्पन्न होता है।" इस प्रकार आप देख सकते हैं कि कैसे पहले बोध उत्पन्न होता है, फिर ज्ञान, और बोध के उत्पन्न होने से ही ज्ञान उत्पन्न होता है।

"हे भगवान, क्या बोध ही व्यक्ति का आत्मा है, या बोध एक है और आत्मा दूसरी?" "अच्छा, पोत्थपाद, क्या तुम आत्मा की कल्पना करते हो?" "हे भगवान, मैं एक स्थूल, भौतिक आत्मा की कल्पना करता हूँ, जो चार तत्वों से बनी है और ठोस भोजन पर निर्भर है।" "परन्तु, पोत्थपाद, ऐसी स्थूल आत्मा के साथ बोध एक होगा और आत्मा दूसरी। तुम इसे इस प्रकार समझ सकते हो। ऐसी स्थूल आत्मा होने पर, व्यक्ति में कुछ बोध उत्पन्न होंगे और कुछ क्षीण हो जाएँगे। इस प्रकार तुम देख सकते हो कि बोध एक है और आत्मा दूसरी।"

"हे भगवान, मैं एक ऐसे मन-निर्मित स्व की कल्पना करता हूँ जो अपने सभी अंगों से परिपूर्ण है, और किसी भी इंद्रिय अंग में कोई दोष नहीं है।" "परन्तु ऐसे मन-निर्मित स्व में, बोध एक चीज होगी और स्व दूसरी..."

"हे भगवान, मैं एक निराकार आत्मा की कल्पना करता हूँ, जो बोध से बनी है।" "परन्तु ऐसी निराकार आत्मा में बोध एक चीज होगी और आत्मा दूसरी..."

"पर भगवान, क्या मेरे लिए यह जानना संभव है कि बोध ही व्यक्ति का आत्म है, या बोध एक चीज है और आत्म दूसरी?" "पोत्थपाद, अलग-अलग विचारों, अलग-अलग आस्थाओं, अलग-अलग प्रभावों, अलग-अलग उद्देश्यों और अलग-अलग शिक्षा वाले व्यक्ति के लिए यह जानना कठिन है कि ये दो अलग-अलग चीजें हैं या नहीं।"

"हे भगवान, यदि मेरे जैसे व्यक्ति के लिए स्वयं और धारणाओं का यह प्रश्न कठिन है, तो मुझे बताइए: क्या संसार शाश्वत है? क्या केवल यही सत्य है और विपरीत सत्य असत्य है?" "पोत्थपाद, मैंने यह नहीं कहा है कि संसार शाश्वत है और विपरीत मत असत्य है।" "हे भगवान, क्या संसार शाश्वत नहीं है?" "मैंने यह नहीं कहा है कि संसार शाश्वत नहीं है..." "हे भगवान, क्या संसार अनंत है... अनंत नहीं है..." "मैंने यह नहीं कहा है कि संसार अनंत नहीं है और विपरीत मत असत्य है।"

"हे भगवान, क्या आत्मा और शरीर एक ही हैं? क्या आत्मा एक है और शरीर दूसरी?" "मैंने यह नहीं कहा है कि आत्मा एक है और शरीर दूसरी।"

"हे भगवान, क्या तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान रहते हैं? क्या केवल यही सत्य है और बाकी सब असत्य?" "मैंने यह नहीं कहा है कि तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान रहते हैं।" "हे भगवान, क्या तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहते... क्या वे विद्यमान भी हैं और नहीं भी... या न तो विद्यमान हैं और न ही अस्य?" "मैंने यह नहीं कहा है कि तथागत मृत्यु के बाद न तो विद्यमान हैं और न ही अस्य, और बाकी सब असत्य है।"

"पर, भगवान, भगवान ने इन बातों का उल्लेख क्यों नहीं किया?" "पोत्थपाद, यह उद्देश्य के अनुकूल नहीं है, धम्म के अनुकूल नहीं है, पवित्र जीवन की राह पर चलने का मार्ग नहीं है; यह वैराग्य, वैराग्य, शांति, उच्च ज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर नहीं ले जाता। इसीलिए मैंने इसका उल्लेख नहीं किया है।"

"पर, भगवान, भगवान ने क्या कहा है?" "पोत्थपाद, मैंने कहा है: "यह दुख है, यह दुख का कारण है, यह दुख का निवारण है, और यह दुख निवारण का मार्ग है।"

"पर, भगवान, भगवान ने ऐसा क्यों कहा?" "क्योंकि, पोत्थपाद, यह उद्देश्य के लिए सहायक है, धम्म के लिए सहायक है, पवित्र जीवन की राह दिखाता है; यह वैराग्य, वैराग्य, शांति, उच्च ज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर ले जाता है। इसीलिए मैंने ऐसा कहा है।"

"हे भगवान, ऐसा ही है, हे शुभचिंतक। अब भगवान के लिए अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने का समय आ गया है।" तब भगवान अपने आसन से उठे और चले गए।

भगवान के जाते ही, सभी भटकने वालों ने चारों ओर से पोत्थपाद का उपहास, उपहास और ताना मारना शुरू कर दिया और कहने लगे, "संन्यासी गौतम जो कुछ भी कहते हैं, पोत्थपाद उससे सहमत हो जाता है: 'हे भगवान, ऐसा ही है, हे शुभयात्री!' तपस्वी गौतम के पूरे प्रवचन का एक शब्द भी हमें समझ नहीं आया: 'क्या संसार शाश्वत है या नहीं? क्या यह सीमित है या अनंत? क्या आत्मा शरीर के समान है या भिन्न? क्या तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान हैं या नहीं, या दोनों, या दोनों में से कोई नहीं?'"

पोत्थपाद ने उत्तर दिया: "मुझे न तो यह समझ आता है कि संसार शाश्वत है या नहीं... न ही तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान होते हैं या नहीं, या दोनों, या दोनों में से कोई भी नहीं। परन्तु तपस्वी गौतम साधना का एक सच्चा और वास्तविक मार्ग सिखाते हैं जो धम्म के अनुरूप और धम्म पर आधारित है। और मुझ जैसे व्यक्ति को तपस्वी गौतम द्वारा इतनी अच्छी तरह से सिखाई गई ऐसी सच्ची और वास्तविक साधना का समर्थन क्यों नहीं करना चाहिए?"

दो-तीन दिन बाद, हाथी प्रशिक्षक का पुत्र चित्त, पोत्थपाद के साथ भगवान के दर्शन करने गया। चित्त ने भगवान के सामने प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गया। पोत्थपाद ने भी भगवान से अभिवादन किया, एक तरफ बैठ गया और उन्हें सारी घटना बताई।

"पोत्थपाद, वे सभी यात्री अंधे और दृष्टिहीन हैं, उनमें से केवल आप ही दृष्टिहीन हैं। पोत्थपाद, मैंने कुछ बातें निश्चित बताई हैं और कुछ अनिश्चित। मैंने किन बातों को अनिश्चित बताया है?" "संसार शाश्वत है" मैंने अनिश्चित बताया है... "तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान रहते हैं..." क्यों? क्योंकि वे निर्वाण के अनुकूल नहीं हैं। इसीलिए मैंने उन्हें अनिश्चित बताया है।

लेकिन मैंने किन बातों को निश्चित बताया है? यह दुख है, यह दुख का कारण है, यह दुख का निवारण है, यह दुख निवारण का मार्ग है। क्यों? क्योंकि ये उद्देश्य के लिए सहायक हैं, धम्म के लिए सहायक हैं, पवित्र जीवन की राह दिखाते हैं; ये वैराग्य, वैराग्य, शांति, उच्च ज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर ले जाते हैं। इसीलिए मैंने इन्हें निश्चित घोषित किया है।

"पोत्थपाद, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण यह घोषणा और विश्वास करते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा पूर्णतः सुखी और रोगमुक्त हो जाती है। मैंने उनसे संपर्क किया और पूछा कि क्या वास्तव में उनका यही कथन और विश्वास है, तो उन्होंने उत्तर दिया: "हाँ।" तब मैंने कहा: "मित्रों, क्या आप संसार में रहते हुए इसे पूर्णतः सुखी स्थान के रूप में जानते और देखते हैं?" तो उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं।" मैंने कहा: "क्या आपने कभी एक भी रात या दिन, या आधी रात या दिन, पूर्णतः सुखी अनुभव किया है?" तो उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं।" मैंने कहा: "क्या आप कोई ऐसा मार्ग या अभ्यास जानते हैं जिससे पूर्णतः सुखी संसार प्राप्त किया जा सके?" तो उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं।" मैंने

कहा: "क्या आपने उन देवताओं की वाणी सुनी है जो पूर्णतः सुखी संसार में पुनर्जन्म लेकर आए हैं, और कह रहे हैं: 'पूर्णतः सुखी संसार की प्राप्ति उचित और सही ढंग से हुई है, और हम, सज्जनों, ऐसे लोक में पुनर्जन्म लेकर आए हैं?' तो उन्होंने उत्तर दिया: "नहीं।" पोत्थपाद, आपका क्या विचार है?" ऐसी स्थिति में, क्या उन तपस्वियों और ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण नहीं हो जातीं?

"यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति कहे: 'मैं देश की सबसे सुंदर लड़की को खोजकर उससे प्रेम करूंगा।' लोग उससे पूछें: 'अच्छा, इस देश की सबसे सुंदर लड़की के बारे में, क्या आप जानते हैं कि वह क्षत्रिय, ब्राह्मण, व्यापारी या कारीगर वर्ग से है?' और वह कहेगा: 'नहीं।' फिर लोग पूछें: 'अच्छा, क्या आप उसका नाम, उसका गोत्र, उसकी लंबाई, कद या मध्यम कद, सांवला रंग, गोरा रंग या पीलापन, या वह किस गांव, कस्बे या शहर से आती है, जानते हैं?' और वह कहेगा: 'नहीं।' और लोग पूछें: 'तो फिर, आप जिसे खोज रहे हैं और जिसकी इच्छा रखते हैं, उसे जानते या देखते नहीं हैं?' और वह कहेगा: 'नहीं।' क्या उस व्यक्ति की बात मूर्खतापूर्ण नहीं लगती?' 'बिल्कुल, भगवान।'"

और यही बात उन तपस्वियों और ब्राह्मणों पर भी लागू होती है जो यह घोषणा और विश्वास करते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा पूर्णतः सुखी और रोगमुक्त हो जाती है... क्या उनकी बातें मूर्खतापूर्ण नहीं लगतीं? "निश्चित रूप से, भगवान।"

"यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति चौराहे पर किसी महल के लिए सीढ़ी बना रहा हो। लोग उससे कह सकते हैं: "अच्छा, आप जिस महल के लिए सीढ़ी बना रहे हैं - क्या आप जानते हैं कि महल का मुख पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण की ओर होगा, या वह ऊँचा, नीचा या मध्यम ऊँचाई का होगा?" और वह कहेगा: "नहीं।" और वे कह सकते हैं: "तो फिर, आप नहीं जानते या नहीं देखते कि आप किस प्रकार के महल के लिए सीढ़ी बना रहे हैं?" और वह कहेगा: "नहीं।" क्या आपको नहीं लगता कि उस व्यक्ति की बात मूर्खतापूर्ण साबित होगी?" "बिल्कुल, भगवान।"

"पोत्थपाद, तीन प्रकार के 'अर्जित आत्म' होते हैं: स्थूल 'अर्जित आत्म', मन द्वारा निर्मित 'अर्जित आत्म' और निराकार आत्म। स्थूल 'अर्जित आत्म' क्या है? इसका स्वरूप होता है, यह चार महा तत्वों से बना होता है और भौतिक भोजन से पोषित होता है। मन द्वारा निर्मित 'आत्म' क्या है? इसका स्वरूप होता है, यह अपने सभी अंगों से परिपूर्ण होता है और किसी भी इंद्रिय में कोई दोष नहीं होता। निराकार 'अर्जित आत्म' क्या है? यह निराकार होता है और बोध से बना होता है।"

लेकिन मैं एक ऐसा सिद्धांत सिखाता हूँ जिससे स्थूल अर्जित अहंकार से मुक्ति मिलती है, जिससे अशुद्ध मानसिक अवस्थाएँ दूर हो जाती हैं और शुद्धिकरण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ प्रबल होती हैं, और व्यक्ति अपने ही अतिज्ञान से इस समय और यहीं ज्ञान की शुद्धता और पूर्णता को प्राप्त कर लेता है और उसमें बना रहता है। अब, पोत्थपाद, आप सोच सकते हैं: "शायद ये अशुद्ध मानसिक अवस्थाएँ दूर हो जाएँ...और फिर भी व्यक्ति दुखी रहे।" इसे इस तरह नहीं देखना चाहिए। यदि अशुद्ध अवस्थाएँ दूर हो जाएँ...तो केवल सुख और आनंद, शांति, सजगता और स्पष्ट जागरूकता ही उत्पन्न होती है - और यही सुखी अवस्था है।

मैं मन द्वारा निर्मित अर्जित अहंकार से छुटकारा पाने का सिद्धांत भी सिखाता हूँ...

मैं निराकार, अर्जित स्व से छुटकारा पाने का एक सिद्धांत भी सिखाता हूँ...

पोत्थपाद, यदि दूसरे हमसे पूछें: "मित्र, यह स्थूल अर्जित अहंकार क्या है जिसका त्याग करने का उपदेश तुम देते हो..." तो हमें उत्तर देना चाहिए: "यह वही स्थूल अर्जित अहंकार है जिससे छुटकारा पाने के लिए हम एक सिद्धांत सिखाते हैं..."

यदि दूसरे हमसे पूछें: "यह मन द्वारा निर्मित अर्जित स्व क्या है...?" यदि दूसरे हमसे पूछें: "यह निराकार अर्जित स्व क्या है...?"

"पोत्थापदा, आपका क्या विचार है? क्या वह कथन सही साबित नहीं होता?" "बिल्कुल, भगवान।"

"मानो कोई व्यक्ति किसी महल के लिए सीढ़ी बना रहा हो, जो महल के नीचे हो। लोग उससे कहें, 'अच्छा, आप जिस महल के लिए सीढ़ी बना रहे हैं, क्या आप जानते हैं कि महल का मुख पूर्व की ओर होगा या पश्चिम की ओर, या उत्तर की ओर या दक्षिण की ओर, या वह ऊँचा होगा, नीचा होगा या मध्यम ऊँचाई का होगा?' और वह कहेगा, 'यह सीढ़ी महल के ठीक नीचे है।' 'क्या आपको नहीं लगता कि उस व्यक्ति का कथन सही होगा?' 'बिल्कुल, भगवान।'"

"ठीक इसी प्रकार, पोत्थपाद, यदि दूसरे हमसे पूछें: "यह स्थूल अर्जित आत्म क्या है...?" "यह मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्म क्या है...?" "यह निराकार अर्जित आत्म क्या है...?" तो हम उत्तर देते हैं: "यह वही [स्थूल, मन द्वारा निर्मित, निराकार] अर्जित आत्म है जिससे छुटकारा पाने के लिए हम एक सिद्धांत सिखाते हैं, जिससे अशुद्ध मानसिक अवस्थाएँ दूर हो जाती हैं और शुद्धिकरण की ओर ले जाने वाली अवस्थाएँ प्रबल होती हैं, और व्यक्ति अपने ही अतिज्ञान से इसे प्राप्त करके यहीं और इसी क्षण ज्ञान की शुद्धता और पूर्णता में प्राप्त होता है और बना रहता है।" "क्या आपको नहीं लगता कि यह कथन सही है?" "निश्चित रूप से, भगवान।"

इस पर हाथी प्रशिक्षक के पुत्र चित्त ने भगवान से कहा, "हे भगवान, जब भी स्थूल प्रदत्त आत्मा विद्यमान हो, तो क्या मन द्वारा निर्मित प्रदत्त आत्मा या निराकार प्रदत्त आत्मा का अस्तित्व मानना गलत होगा? क्या केवल स्थूल प्रदत्त आत्मा ही वास्तव में विद्यमान है? और इसी प्रकार मन द्वारा निर्मित प्रदत्त आत्मा और निराकार प्रदत्त आत्मा के बारे में भी?"

"चित्त, जब भी स्थूल अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, तब हम मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा की बात नहीं करते, न ही निराकार अर्जित आत्मा की। हम केवल स्थूल अर्जित आत्मा की बात करते हैं। [18] जब भी मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, तब हम केवल मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा की बात करते हैं, और जब भी निराकार अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, तब हम केवल निराकार अर्जित आत्मा की बात करते हैं।"

"सिट्टा, मान लो कि वे तुमसे पूछें: "क्या तुम अतीत में अस्तित्व में थे या नहीं, क्या तुम भविष्य में अस्तित्व में रहोगे या नहीं, क्या तुम अभी अस्तित्व में हो या नहीं?" तुम क्या उत्तर दोगे?"

हे भगवान, यदि मुझसे ऐसा प्रश्न पूछा जाए, तो मैं कहूँगा: "मैं अतीत में विद्यमान था, मैं विद्यमान नहीं था; मैं भविष्य में विद्यमान रहूँगा, मैं विद्यमान नहीं रहूँगा; मैं अभी विद्यमान हूँ, मैं विद्यमान नहीं हूँ।" "हे भगवान, यही मेरा उत्तर होगा।"

"लेकिन, चित्त, अगर वे पूछें: 'क्या अतीत में अर्जित तुम्हारा स्वरूप ही तुम्हारा एकमात्र सच्चा स्वरूप है, और भविष्य और वर्तमान के स्वरूप झूठे हैं? या क्या भविष्य में जो तुम्हारा स्वरूप होगा वही एकमात्र सच्चा स्वरूप है, और अतीत और वर्तमान के स्वरूप झूठे हैं? या क्या तुम्हारा वर्तमान में अर्जित स्वरूप ही एकमात्र सच्चा स्वरूप है, और अतीत और भविष्य के स्वरूप झूठे हैं?' तो तुम क्या उत्तर दोगी?"

हे भगवान, यदि वे मुझसे ये बातें पूछें, तो मैं उत्तर दूँगा: "मेरे अतीत में अर्जित स्वरूप ही उस समय मेरा एकमात्र सच्चा स्वरूप था, भविष्य और वर्तमान स्वरूप झूठे थे। भविष्य में अर्जित स्वरूप ही तब एकमात्र सच्चा स्वरूप होगा; अतीत और वर्तमान स्वरूप झूठे होंगे। वर्तमान में अर्जित स्वरूप ही एकमात्र सच्चा स्वरूप है, अतीत और भविष्य स्वरूप झूठे हैं।" मैं इसी प्रकार उत्तर दूँगा।

"ठीक इसी प्रकार, चित्त, जब भी स्थूल अर्जित आत्मा उपस्थित होती है, तब हम मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा...[या] निराकार अर्जित आत्मा की बात नहीं करते हैं।"

"ठीक इसी प्रकार, चित्त, हम गाय का दुहते हैं, दूध से दही बनता है, दही से मक्खन बनता है, मक्खन से घी बनता है और घी से मलाई बनती है। और जब दूध होता है तो हम दही, मक्खन, घी या मलाई की बात नहीं करते, हम दूध की बात करते हैं; जब दही होता है तो हम मक्खन की बात नहीं करते... जब घी की मलाई होती है... तो हम मलाई की बात करते हैं।"

"इसी प्रकार, जब भी स्थूल अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, हम मन द्वारा निर्मित या निराकार अर्जित आत्मा की बात नहीं करते; जब भी मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, हम स्थूल या निराकार अर्जित आत्मा की बात नहीं करते; जब भी निराकार अर्जित आत्मा विद्यमान होती है, हम स्थूल अर्जित आत्मा या मन द्वारा निर्मित अर्जित आत्मा की बात नहीं करते, बल्कि निराकार अर्जित आत्मा की बात करते हैं। परन्तु, चित्त, ये तो केवल संसार में प्रचलित नाम, अभिव्यक्तियाँ, मुहावरे और पदनाम हैं, जिनका तथागत बिना किसी भ्रम के प्रयोग करते हैं।"

और ये शब्द सुनकर पोत्थपाद नामक यात्री ने भगवान से कहा, "उत्कृष्ट, भगवान, उत्कृष्ट! यह ऐसा है मानो किसी गिरी हुई चीज़ को खड़ा कर दिया गया हो, या किसी भटके हुए व्यक्ति को रास्ता दिखाया गया हो, या किसी अंधेरी जगह में तेल का दीपक जला दिया गया हो, ताकि देखने वाले वहाँ की चीज़ें देख सकें। ठीक इसी प्रकार भगवान ने विभिन्न तरीकों से धम्म की व्याख्या की है। भगवान, मैं भगवान, धम्म और संघ की शरण में जाता हूँ। भगवान मुझे आज से जीवन भर के लिए अपने गृहस्थ अनुयायी के रूप में स्वीकार करें!"

लेकिन हाथी प्रशिक्षक के पुत्र चित्त ने भगवान से कहा, “उत्कृष्ट, भगवान, उत्कृष्ट! यह ऐसा है जैसे कोई गिरी हुई चीज़ को उठा दे, या खोए हुए व्यक्ति को रास्ता दिखा दे, या अंधेरी जगह में तेल का दीपक जला दे ताकि देखने वाले वहाँ की चीज़ें देख सकें। ठीक इसी प्रकार भगवान ने विभिन्न तरीकों से धम्म की व्याख्या की है। हे भगवान, मैं भगवान, धम्म और संघ की शरण में जाता हूँ। हे भगवान, मुझे भगवान के हाथों दीक्षा प्राप्त हो, मुझे दीक्षा प्राप्त हो!”

और हाथी प्रशिक्षक के पुत्र चित्त ने भगवान के हाथों दीक्षा ग्रहण की। नवदीक्षित पूज्य चित्त ने एकांत में, एकांत में, अथक, उत्साही और दृढ़ निश्चय के साथ, थोड़े ही समय में उस परम सुख को प्राप्त कर लिया जिसके लिए अच्छे कुल के युवक गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश करते हैं, जो पवित्र जीवन की अद्वितीय पराकाष्ठा है। उन्होंने अपने अलौकिक ज्ञान से इसे यहीं और अभी अनुभव किया और उसमें निवास किया, यह जानते हुए कि: "जन्म नष्ट हो गया है, पवित्र जीवन जी लिया गया है, जो करना था वह कर लिया गया है, अब यहाँ कुछ भी शेष नहीं है।"

और आदरणीय चित्त, हाथी प्रशिक्षक के पुत्र, अरहंतों में से एक बन गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.10: सुभा सुत्त (डीएन 10)

1. 1. मैंने ऐसा सुना है। पूज्य आनंद एक बार अनाथपियोइक के निवास स्थान, जेतवन में स्थित सावत्थी में ठहरे हुए थे, भगवान के देहांत के कुछ समय बाद। उस समय तुडी के पुत्र युवा ब्राह्मण सुभा किसी काम से सावत्थी में रह रहे थे।

2. तब युवा ब्राह्मण सुभा ने एक युवक को संबोधित करते हुए कहा:

अब आओ, युवक। समा◌ॅआनंद के पास जाओ और मेरे नाम से पूछो कि क्या उनकी बीमारी और अस्वस्थता कम हो गई है, उनका स्वास्थ्य, शक्ति और सुख कैसा है; और कहो: “यह अच्छा होगा यदि आदरणीय आनंद कृपा करके तुड़ी के पुत्र, युवा ब्राह्मण सुभा से मिलने आएँ।”

3. “बहुत अच्छा, महोदय,” उस युवक ने उत्तर में कहा। और वह उस स्थान पर गया जहाँ पूज्य आनंद ठहरे हुए थे, और उनसे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन और प्रशंसा का आदान-प्रदान किया, और अलग से बैठ गया। और इस प्रकार बैठकर उसने पूज्य आनंद को वह संदेश दिया जो उसे सौंपा गया था।

4. यह संदेश सुनकर पूज्य आनंद ने उनसे कहा:

'युवक, अभी यह समय मेरे लिए सुविधाजनक नहीं है, क्योंकि मैंने अभी-अभी दवा ली है। लेकिन शायद मैं कल जा सकूँ, यदि परिस्थितियाँ और अवसर अनुकूल हों।'

तब वह युवक अपनी सीट से उठा और सुभा के पास जाकर उसे सब कुछ बताया और आगे कहा:

अतः महोदय, मामला अब तक इस प्रकार संपन्न हो चुका है कि यदि परिस्थितियाँ और अवसर अनुकूल प्रतीत हों तो शायद पूज्य आनंद कल आ सकें।

5. और जब रात्रि बीत गई, तो पूज्य आनंद ने सुबह जल्दी वस्त्र धारण किए और अपने वस्त्रों में, भिक्षापात्र लिए हुए, चैतिया देश के एक भिक्षु को अपने सेवक के रूप में साथ लेकर सुभा के घर गए और उनके लिए बिछाई गई चटाई पर बैठ गए। और तुड़ी के पुत्र, युवा ब्राह्मण सुभा, उनके पास आए और पूज्य आनंद से शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन और प्रशंसा करते हुए एक तरफ बैठ गए। और इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने पूज्य आनंद से कहा:

हे महोदय, आपने पूज्य गौतम की लंबे समय तक सेवा की है, निरंतर उनके निकट रहे हैं, उनकी संगति में रहे हैं। हे महोदय, आप जानते होंगे कि पूज्य गौतम किन बातों की प्रशंसा करते थे; किन बातों के लिए वे लोगों को प्रेरित करते थे, किन बातों में उन्हें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे। वे क्या थीं, आनंद?

6. हे ब्रह्म, तीन प्रकार के सिद्धांत हैं जिनकी परमेश्वर अक्सर प्रशंसा करते थे; वे लोगों को इन सिद्धांतों के प्रति प्रेरित करते थे, उन्हें इनमें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे। वे तीन सिद्धांत क्या हैं? सही आचरण से संबंधित श्रेष्ठ सिद्धांत, आत्म-एकाग्रता से संबंधित श्रेष्ठ सिद्धांत और बुद्धि से संबंधित श्रेष्ठ सिद्धांत।

और हे आनंद, यह सही आचरण (साला) से संबंधित इतना महान सिद्धांत क्या है जिसकी प्रशंसा में पूज्य गौतम गौतम अक्सर बोलते थे; जिसके लिए वे लोगों को प्रेरित करते थे, जिसमें वे उन्हें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे?

7.

30. 'और इस प्रणाली के अनुसार अभी भी कुछ और किया जाना बाकी है।'

“आनंद, यह कितना अद्भुत और रहस्यमय है—कि आचरण का यह इतना श्रेष्ठ समूह पूर्ण है, अपूर्ण नहीं; और इस समुदाय के बाहर अन्य समाॅस और ब्रह्माॅस में मुझे इसके समान कोई दूसरा नहीं दिखता। और यदि वे भी अपने भीतर ऐसा पा लें, तो वे इतने से ही संतुष्ट हो जाएँगे और कहेंगे: “इतना ही काफी है। हमने इतना कर लिया है। हमारे समाॅसत्व का उद्देश्य पूरा हो गया है।” परन्तु आप, आनंद, दूसरी ओर कहते हैं: “आपकी पद्धति के अनुसार अभी और भी कुछ करना बाकी है।”

सुभा सूत्र में पाठ के लिए प्रथम भाग यहीं समाप्त होता है।
II. 1. 'और हे आनंद, आत्म-एकाग्रता (समाधि) के विषय में यह महान सिद्धांत क्या है जिसकी प्रशंसा में पूज्य गौतम गौतम अक्सर बोलते थे; जिसके लिए वे लोगों को प्रेरित करते थे, जिसमें वे उन्हें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे?'

20. हे आनंद, बुद्धि (पातत�) के विषय में यह महान उपदेश क्या है, जिसकी प्रशंसा में पूज्य गौतम गौतम अक्सर बोलते थे; जिसके प्रति वे लोगों को प्रेरित करते थे, जिसमें वे उन्हें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे?

27. 'हे युवा ब्राह्मण, यह बुद्धि से संबंधित वह महान सिद्धांत है, जिसकी प्रशंसा में वह परम पूज्य व्यक्ति अक्सर बोलते थे; जिसके प्रति वे लोगों को प्रेरित करते थे, जिसमें वे उन्हें स्थापित करते थे और उन्हें दृढ़ बनाते थे।'

'यह कितना अद्भुत और रहस्यमय है, आनंद, कि बुद्धि से संबंधित सिद्धांतों का यह महान समूह पूर्ण है, अपूर्ण नहीं; और यह कि इस समुदाय के बाहर अन्य सामंतों और ब्रह्माओं में मुझे इसके समान कोई दूसरा सिद्धांत नहीं दिखता।'

और इस विषय में इससे आगे कुछ भी करना बाकी नहीं है। हे आनंद, आपके मुख के वचन अत्यंत उत्कृष्ट हैं! जैसे कोई व्यक्ति गिरी हुई वस्तु को उठा दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए व्यक्ति को सही मार्ग दिखा दे, या अंधकार में प्रकाश डाल दे ताकि देखने वाले बाहरी रूप देख सकें... ठीक उसी प्रकार, पूज्य आनंद ने अनेक रूपों में सत्य को मेरे दर्शन कराया है। और मैं, जी हाँ, पूज्य गौतम को अपना मार्गदर्शक, सत्य का मार्ग और संघ का मार्ग मानता हूँ। पूज्य आनंद मुझे अपना अनुयायी स्वीकार करें, उस व्यक्ति के रूप में जिसने आज से जीवन भर उन्हें अपना मार्गदर्शक माना है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.11: केवद्ध सुत्त (डीएन 11)

अंतर्वस्तु

सेटिंग

मैंने सुना है कि एक बार भगवान बुद्ध नालंदा में पवारिका के आम के बाग में ठहरे हुए थे। तब गृहस्थ केवट्टा भगवान बुद्ध के पास आए और वहाँ पहुँचकर प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। वहाँ बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, यह नालंदा शक्तिशाली, समृद्ध और घनी आबादी वाला है, और यहाँ भगवान बुद्ध पर आस्था रखने वाले लोग बहुतायत में हैं। यदि भगवान बुद्ध किसी भिक्षु को अपनी श्रेष्ठ मानवीय अवस्था से कोई चमत्कार दिखाने का निर्देश दें, तो यह अच्छा होगा, ताकि नालंदा में भगवान बुद्ध पर आस्था और भी अधिक बढ़ जाए।”

जब यह कहा गया, तो भगवान बुद्ध ने गृहस्थ केवट्टा से कहा, "केवट्टा, मैं भिक्षुओं को इस प्रकार शिक्षा नहीं देता: 'आओ, भिक्षुओं, श्वेत वस्त्र पहने हुए गृहस्थों को मानसिक शक्ति का चमत्कार दिखाओ।'"

दूसरी बार... तीसरी बार, गृहस्थ केवट्टा ने भगवान बुद्ध से कहा: "मैं भगवान बुद्ध से बहस नहीं करूँगा, लेकिन मैं आपसे कहता हूँ: हे भगवान, यह नालंदा शक्तिशाली, समृद्ध और घनी आबादी वाला है, और भगवान बुद्ध में आस्था रखने वाले लोगों से भरा हुआ है। यह अच्छा होगा यदि भगवान बुद्ध किसी भिक्षु को अपनी श्रेष्ठ मानवीय अवस्था से मानसिक शक्ति का चमत्कार दिखाने का निर्देश दें, ताकि नालंदा में भगवान बुद्ध में आस्था और भी अधिक बढ़ जाए।"

तीसरी बार, भगवान बुद्ध ने गृहस्थ केवट्टा से कहा, "केवट्टा, मैं भिक्षुओं को इस तरह से शिक्षा नहीं देता: 'आओ, भिक्षुओं, सफेद वस्त्र पहने हुए आम लोगों को मानसिक शक्ति का चमत्कार दिखाओ।'"

"केवट्टा, मैंने इन तीन चमत्कारों की घोषणा की है, जिन्हें मैंने स्वयं प्रत्यक्ष रूप से जाना और अनुभव किया है। वे तीन कौन से हैं? मानसिक शक्ति का चमत्कार, टेलीपैथी का चमत्कार और शिक्षा का चमत्कार।"

मानसिक शक्ति का चमत्कार

और मानसिक शक्ति का चमत्कार क्या है? एक ऐसा उदाहरण है जहाँ एक भिक्षु अनेक मानसिक शक्तियों का प्रयोग करता है। एक होकर वह अनेक हो जाता है; अनेक होकर वह एक हो जाता है। वह प्रकट होता है। वह लुप्त हो जाता है। वह दीवारों, प्राचीरों और पहाड़ों के आर-पार ऐसे चला जाता है मानो अंतरिक्ष में। वह पृथ्वी में ऐसे गोता लगाता है मानो वह जल हो। वह जल पर ऐसे चलता है मानो वह सूखी भूमि हो, बिना डूबे। पालथी मारकर वह पंखों वाले पक्षी की तरह हवा में उड़ता है। अपने हाथ से वह सूर्य और चंद्रमा को भी स्पर्श करता है, जो इतने शक्तिशाली और बलवान हैं। वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक भी प्रभाव डालता है।

फिर, जिस व्यक्ति को उस पर आस्था और दृढ़ विश्वास है, वह उसे अनेक प्रकार की मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए देखता है... अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालते हुए। वह यह बात उस व्यक्ति को बताता है जिसे उस पर कोई आस्था और दृढ़ विश्वास नहीं है, और कहता है, 'यह कितना अद्‌भुत है। कितना आश्चर्यजनक है, इस ध्यानमग्न व्यक्ति की शक्ति, उसका कौशल कितना महान है। अभी-अभी मैंने उसे अनेक प्रकार की मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए देखा... अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालते हुए।'

"तब, आस्थाहीन, दृढ़ विश्वासहीन व्यक्ति, आस्थावान और दृढ़ विश्वासहीन व्यक्ति से कहेगा: 'महोदय, गांधारी मंत्र नामक एक मंत्र है, जिसके द्वारा भिक्षु अनेक प्रकार की मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते थे... अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालते थे।' केवट्टा, आपका क्या विचार है - क्या आस्थाहीन, दृढ़ विश्वासहीन व्यक्ति, आस्थावान और दृढ़ विश्वासहीन व्यक्ति से यही नहीं कहेगा?"

"जी हां, भगवान, वह बिल्कुल यही कहता।"

"मानसिक शक्ति के चमत्कार की इस कमी को देखकर, केवट्टा, मुझे मानसिक शक्ति के चमत्कार से भयभीत, अपमानित और घृणा महसूस होती है।"

टेलीपैथी का चमत्कार

"और टेलीपैथी का चमत्कार क्या है? एक ऐसा मामला है जहां एक भिक्षु अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों के मन, मानसिक घटनाओं, विचारों, चिंतन को पढ़ता है, [और कहता है,] 'यह आपका चिंतन है, यह आपका चिंतन है, यह आपका मन है।'"

फिर, जिस व्यक्ति को उस पर आस्था और विश्वास है, वह उसे अन्य प्राणियों के मन पढ़ते हुए देखता है... वह यह बात उस व्यक्ति को बताता है जिसे उस पर कोई आस्था और विश्वास नहीं है, और कहता है, 'यह कितना अद्‌भुत है। कितना आश्चर्यजनक है, इस ध्यानमग्न व्यक्ति की शक्ति, उसकी क्षमता कितनी महान है। अभी-अभी मैंने उसे अन्य प्राणियों के मन पढ़ते हुए देखा...'

"तब, बिना आस्था और दृढ़ विश्वास वाला व्यक्ति, आस्था और दृढ़ विश्वास वाले व्यक्ति से कहेगा: 'महोदय, एक मंत्र है जिसे मानिका मंत्र कहते हैं, जिसके द्वारा भिक्षु अन्य प्राणियों के मन को पढ़ सकते हैं...' केवट्टा, आपको क्या लगता है - क्या बिना आस्था और दृढ़ विश्वास वाला व्यक्ति, आस्था और दृढ़ विश्वास वाले व्यक्ति से यही नहीं कहेगा?"

"जी हां, भगवान, वह बिल्कुल यही कहता।"

"टेलीपैथी के चमत्कार की इस कमी को देखकर, केवट्टा, मुझे टेलीपैथी के चमत्कार से भयभीत, अपमानित और घृणा महसूस हो रही है।"

शिक्षा का चमत्कार

और उपदेश का चमत्कार क्या है? एक उदाहरण है जहाँ एक भिक्षु इस प्रकार उपदेश देता है: 'अपने विचारों को इस दिशा में निर्देशित करो, उस दिशा में निर्देशित मत करो। चीजों पर इस तरह ध्यान दो, उस तरह ध्यान मत दो। इसे छोड़ दो, उसमें प्रवेश करो और लीन रहो।' इसे ही केवट्टा कहते हैं, उपदेश का चमत्कार।

इसके अतिरिक्त, एक ऐसा मामला भी है जहाँ तथागत संसार में प्रकट होते हैं, जो योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत होते हैं। वे धर्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय है। वे पवित्र जीवन की घोषणा करते हैं, जो अपने विशिष्ट पहलुओं और सार दोनों में पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है।

"गृहस्थ या गृहस्थ का पुत्र धम्म सुनकर तथागत में दृढ़ विश्वास प्राप्त करता है और चिंतन करता है: 'गृहस्थ जीवन बंधनकारी और धूल भरा मार्ग है। गृहस्थ जीवन खुले आकाश के समान है। घर में रहकर पूर्णतः परिपूर्ण, पूर्णतः शुद्ध, पॉलिश किए हुए शंख के समान पवित्र जीवन का अभ्यास करना आसान नहीं है। यदि मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, गेरुए वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाऊं तो क्या होगा?'"

"इसलिए कुछ समय बाद वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे छोटी हो या बड़ी, त्याग देता है; अपने रिश्तेदारों के समूह, चाहे छोटा हो या बड़ा, को छोड़ देता है; अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है।"

"जब वह इस प्रकार प्रस्थान कर लेता है, तो वह मठवासी नियमों से बंधे हुए जीवन व्यतीत करता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। अपने सद्गुणों में परिपूर्ण, वह अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करता है, सचेत और सतर्क रहता है, और संतुष्ट रहता है।"

सद्गुण पर संक्षिप्त खंड
और एक भिक्षु किस प्रकार सद्गुणों में परिपूर्ण होता है? वह जीवन लेने का त्याग करके, जीवन लेने से परहेज करता है। वह अपने दंड को त्यागकर, अपने चाकू को त्यागकर, सभी जीवित प्राणियों के कल्याण के प्रति सचेत, दयालु और करुणामय होकर निवास करता है। यही उसके सद्गुण का अंश है।
"जो कुछ दिया नहीं गया है, उसे लेने का त्याग करके, वह उसे लेने से परहेज करता है। वह केवल वही लेता है जो दिया गया है, केवल वही स्वीकार करता है जो दिया गया है, वह छिपकर नहीं, बल्कि शुद्ध आत्मा के माध्यम से जीता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।"
"अविवाह का त्याग करके, वह एकांतप्रिय, ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करता है, और गांववासियों के रीति-रिवाज के अनुसार यौन क्रिया से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।"
वह झूठी बातों का त्याग करके उनसे दूर रहता है। वह सत्य बोलता है, सत्य पर अडिग रहता है, दृढ़ और विश्वसनीय है, संसार को धोखा नहीं देता। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
विभाजनकारी भाषणों का त्याग करके वह उनसे दूर रहता है। जो कुछ उसने यहाँ सुना है, वह वहाँ नहीं बताता ताकि वहाँ के लोगों को यहाँ के लोगों से अलग न कर दे। जो कुछ उसने वहाँ सुना है, वह यहाँ नहीं बताता ताकि वहाँ के लोगों को वहाँ के लोगों से अलग न कर दे। इस प्रकार, जो लोग अलग हो गए हैं, उनके बीच सामंजस्य स्थापित करता है और जो एकजुट हैं, उन्हें और मजबूत करता है। वह सद्भाव से प्रेम करता है, सद्भाव में आनंदित होता है, सद्भाव का अनुभव करता है और सद्भाव उत्पन्न करने वाली बातें बोलता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
वह अपशब्दों का त्याग करके उनसे दूर रहता है। वह ऐसे शब्द बोलता है जो कानों को मधुर लगते हैं, स्नेहपूर्ण होते हैं, हृदय को छूते हैं, विनम्र होते हैं, आकर्षक होते हैं और सभी को प्रसन्न करते हैं। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
वह व्यर्थ की बातों का त्याग करके, व्यर्थ की बातों से दूर रहता है। वह समय पर बोलता है, तथ्यात्मक बातें बोलता है, जो लक्ष्य, धम्म और विनय के अनुरूप होती हैं। वह अनमोल, सामयिक, तर्कसंगत, सीमित और लक्ष्य से जुड़ी बातें बोलता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
वह बीज और वनस्पतियों को नुकसान पहुंचाने से परहेज करता है।
वह दिन में केवल एक बार ही भोजन करता है, शाम के भोजन से परहेज करता है और दिन के गलत समय पर भोजन करने से भी परहेज करता है।
वह नृत्य, गायन, वाद्य संगीत और शो देखने से परहेज करता है।
वह माला पहनने और सुगंध एवं सौंदर्य प्रसाधनों से खुद को सजाने से परहेज करता है।
वह ऊंचे और आलीशान पलंगों और कुर्सियों से परहेज करता है।
वह सोना और पैसा लेने से परहेज करता है।
वह बिना पका अनाज... कच्चा मांस... स्त्रियों और लड़कियों... पुरुष और महिला दासों... बकरियों और भेड़ों... मुर्गियों और सूअरों... हाथियों, मवेशियों, घोड़ों और घोड़ियों... खेतों और संपत्ति को स्वीकार करने से परहेज करता है।
वह संदेशों के आदान-प्रदान से... खरीद-फरोख्त से... झूठे तराजू, झूठी धातुओं और झूठे मापों से... रिश्वतखोरी, छल और धोखाधड़ी से परहेज करता है।
वह अंग-भंग करने, फांसी देने, कैद करने, खुलेआम लूटपाट करने, डकैती करने और हिंसा करने से परहेज करता है।
"यह भी उनके सद्गुण का एक हिस्सा है।"

सद्गुण पर मध्यवर्ती खंड
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, जड़ों, तनों, जोड़ों, कलियों और बीजों से उत्पन्न होने वाले इन जैसे हानिकारक बीजों और पौधों को नष्ट करने के आदी होते हैं, वह इन जैसे बीजों और पौधों को नष्ट करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, संचित वस्तुओं जैसे कि संचित भोजन, संचित पेय पदार्थ, संचित वस्त्र, संचित वाहन, संचित बिस्तर, संचित सुगंध और संचित मांस के उपभोग के आदी होते हैं, वह इन संचित वस्तुओं के उपभोग से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।
जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, नृत्य, गायन, वाद्य संगीत, नाटक, लोकगीत पाठ, ताली बजाना, झांझ और ढोल, मैजिक लैंटर्न के दृश्य, कलाबाजी और जादूगरी के करतब, हाथियों की लड़ाई, घोड़ों की लड़ाई, भैंसों की लड़ाई, बैलों की लड़ाई, बकरियों की लड़ाई, भेड़ों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई, बटेरों की लड़ाई; लाठियों से लड़ाई, मुक्केबाजी, कुश्ती, युद्ध-खेल, हाजिरी, युद्ध-प्रदर्शन और रेजिमेंटल परेड जैसे कार्यक्रमों को देखने के आदी होते हैं, वहीं वह इन कार्यक्रमों को देखने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, ऐसे व्यर्थ और आलस्यपूर्ण खेलों में लिप्त रहते हैं जैसे कि आठ पंक्तियों वाला शतरंज, दस पंक्तियों वाला शतरंज, हवा में शतरंज, हॉपस्कॉच, स्पिलिकिन्स, पासा, छड़ी के खेल, हस्तचित्र, गेंद के खेल, खिलौने की पाइपों से फूंक मारना, खिलौने के हल से खेलना, कलाबाजियां करना, खिलौने की पवनचक्कियों से खेलना, खिलौने के नाप, खिलौने के रथ, खिलौने के धनुष, हवा में खींचे गए अक्षरों का अनुमान लगाना, विचारों का अनुमान लगाना, विकृतियों की नकल करना - वह इन व्यर्थ और आलस्यपूर्ण खेलों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, इन प्रकार के उच्च और विलासितापूर्ण साज-सामान के आदी होते हैं—बड़े आकार के सोफे, नक्काशीदार जानवरों से सजे सोफे, लंबे बालों वाले कंबल, बहुरंगी पैचवर्क कंबल, सफेद ऊनी कंबल, फूलों या जानवरों की आकृतियों से कढ़ी हुई ऊनी कंबल, गद्देदार रजाई, झालरदार कंबल, रत्नों से कढ़ी हुई रेशमी कंबल; बड़े ऊनी कालीन; हाथी, घोड़े और रथ के गलीचे, हिरण की खाल के गलीचे, बारहसिंगा की खाल के गलीचे; शामियाना वाले सोफे, सिर और पैरों के लिए लाल तकियों वाले सोफे—वह इन प्रकार के उच्च और विलासितापूर्ण साज-सामान का उपयोग करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, सुगंध, सौंदर्य प्रसाधन और ऐसे अन्य सौंदर्य प्रसाधनों के आदी होते हैं जैसे शरीर पर पाउडर मलना, तेल से मालिश करना, सुगंधित जल से स्नान करना, अंगों को मलना, दर्पणों का उपयोग करना, मलहम, मालाएँ, सुगंध, क्रीम, चेहरे का पाउडर, कस्तूरी, कंगन, सिर के पट्टे, सजी हुई छड़ें, अलंकृत पानी की बोतलें, तलवारें, सुंदर धूप के चश्मे, सजी हुई चप्पलें, पगड़ी, रत्न, याक की पूंछ से बने झाड़ू, लंबी झालर वाले सफेद वस्त्र - वह इन सभी सुगंधों, सौंदर्य प्रसाधनों और सौंदर्य प्रसाधनों के उपयोग से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, राजाओं, लुटेरों, राज्य मंत्रियों; सेनाओं, चेतावनियों और युद्धों; भोजन और पेय; वस्त्र, फर्नीचर, मालाएँ और सुगंध; रिश्तेदारों; वाहनों; गाँवों, कस्बों, शहरों, ग्रामीण इलाकों; महिलाओं और नायकों; गली और कुएँ की गपशप; मृतकों की कहानियाँ; विविधता की कहानियाँ [अतीत और भविष्य की दार्शनिक चर्चाएँ], संसार और समुद्र की रचना, और वस्तुओं के अस्तित्व या न होने की चर्चाओं जैसे तुच्छ विषयों पर चर्चा करने के आदी होते हैं, वह इन तुच्छ विषयों पर चर्चा करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था से प्राप्त भोजन पर जीवन यापन करते हुए, इस प्रकार की बहसों में लिप्त रहते हैं — 'क्या आप इस सिद्धांत और अनुशासन को समझते हैं? मैं ही वह हूँ जो इस सिद्धांत और अनुशासन को समझता हूँ। आप इस सिद्धांत और अनुशासन को कैसे समझ सकते हैं? आप गलत तरीके से अभ्यास कर रहे हैं। मैं सही तरीके से अभ्यास कर रहा हूँ। मैं सुसंगत हूँ। आप नहीं। जो बात पहले कही जानी चाहिए थी, वह आपने अंत में कही। जो बात अंत में कही जानी चाहिए थी, वह आपने पहले कही। जिस बात पर आपने इतना समय विचार करने में लगाया, उसका खंडन हो गया है। आपका सिद्धांत ध्वस्त हो गया है। आप पराजित हो गए हैं। जाइए और अपने सिद्धांत को बचाने का प्रयास कीजिए; यदि संभव हो तो स्वयं को इस स्थिति से बाहर निकालिए!' — वह इस प्रकार की बहसों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न व्यक्ति, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन पर जीवन यापन करते हुए, राजाओं, राज्य मंत्रियों, कुलीन योद्धाओं, पुजारियों, गृहस्थों या युवकों जैसे लोगों के लिए संदेश पहुंचाने और काम करने के आदी होते हैं, जो कहते हैं, 'यहाँ जाओ, वहाँ जाओ, इसे वहाँ ले जाओ, उसे यहाँ से लाओ' - वह ऐसे लोगों के लिए संदेश पहुंचाने और काम करने से परहेज करता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के बदले दिए गए भोजन पर जीवन यापन करते हुए, षड्यंत्र रचते हैं, बहलाते हैं, इशारे करते हैं, नीचा दिखाते हैं और लाभ के बदले लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, वह इस प्रकार के षड्यंत्र और बहलाने-फुसलाने के अनुचित तरीकों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्गुण का एक हिस्सा है।

सद्गुण पर महान खंड

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, निम्न स्तर की कलाओं जैसे कि गलत तरीकों से अपना गुजारा करते हैं:

हाथ-पैरों पर निशान पढ़ना [जैसे, हस्तरेखा शास्त्र]; शकुन और संकेतों को पढ़ना; खगोलीय घटनाओं की व्याख्या करना [टूटते तारे, धूमकेतु]; सपनों की व्याख्या करना; शरीर पर निशान पढ़ना [जैसे, मस्तिष्क विज्ञान]; चूहों द्वारा कुतरे गए कपड़ों पर निशान पढ़ना; अग्नि आहुति देना, करछुल से आहुति देना, भूसी, चावल का पाउडर, चावल के दाने, घी और तेल की आहुति देना; मुख से आहुति देना; रक्त-बलि देना; उंगलियों के निशान के आधार पर भविष्यवाणी करना; भूगर्भ विद्या; राक्षसों को कब्रिस्तान में दफनाना; आत्माओं पर जादू करना; घर की सुरक्षा के मंत्रों का जाप करना; सांपों को वश में करना, विष विद्या, बिच्छू विद्या, चूहे विद्या, पक्षी विद्या, कौवे विद्या; दर्शन के आधार पर भविष्यवाणियां करना; सुरक्षात्मक ताबीज देना; पक्षियों और जानवरों की आवाजों की व्याख्या करना — वह इन जैसे गलत आजीविका और नीच कलाओं से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, गलत आजीविका से अपना गुजारा करते हैं, जैसे कि: शुभ और अशुभ रत्नों, वस्त्रों, लाठियों, तलवारों, भालों, तीरों, धनुषों और अन्य हथियारों का निर्धारण करना; स्त्रियों, लड़कों, लड़कियों, पुरुष दासों, महिला दासों; हाथियों, घोड़ों, भैंसों, बैलों, गायों, बकरियों, भेड़ों, मुर्गियों, बटेरों,

छिपकलियों, लंबे कान वाले कृन्तकों, कछुओं और अन्य जानवरों की पूजा करना — वह गलत आजीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, भविष्यवाणी जैसी नीच कलाओं द्वारा गलत तरीके से जीविका चलाते हैं:

शासक आगे बढ़ेंगे; शासक आगे बढ़ेंगे और लौटेंगे; हमारे शासक आक्रमण करेंगे और उनके शासक पीछे हटेंगे; उनके शासक आक्रमण करेंगे और हमारे शासक पीछे हटेंगे; हमारे शासकों की विजय होगी और उनके शासकों की पराजय होगी; उनके शासकों की विजय होगी और हमारे शासकों की पराजय होगी; इस प्रकार विजय होगी, इस प्रकार पराजय होगी — वह कुटिल जीविका से, इन जैसे नीच कामों से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, भविष्यवाणी जैसी नीच कलाओं द्वारा गलत तरीके से जीविका चलाते हैं:

चंद्र ग्रहण होगा; सूर्य ग्रहण होगा; नक्षत्रों का आवरण होगा; सूर्य और चंद्रमा अपने सामान्य पथ पर चलेंगे; सूर्य और चंद्रमा भटक जाएंगे; नक्षत्र अपने सामान्य पथ पर चलेंगे; नक्षत्र भटक जाएंगे; उल्का वर्षा होगी; आकाश में अंधेरा छा जाएगा; भूकंप आएगा; साफ आकाश से गरज सुनाई देगी; सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय, अस्त, अंधकार और प्रकाश होगा; चंद्र ग्रहण का यही परिणाम होगा... सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्रों का उदय, अस्त, अंधकार और प्रकाश - वह गलत आजीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, भविष्यवाणी जैसी नीच कलाओं द्वारा गलत तरीके से जीविका चलाते हैं:

खूब बारिश होगी; सूखा पड़ेगा; समृद्धि होगी; अकाल पड़ेगा; आराम और सुरक्षा होगी; खतरा होगा; बीमारी होगी; बीमारी से मुक्ति होगी; या वे गिनती, हिसाब-किताब, कविता रचना, या सुखवादी कलाओं और सिद्धांतों को सिखाकर जीविका कमाते हैं - वह गलत जीविका से, ऐसी नीच कलाओं से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, निम्न स्तर की कलाओं जैसे कि गलत तरीकों से अपना गुजारा करते हैं:

विवाह, सगाई, तलाक के लिए शुभ तिथियों की गणना करना; ऋण वसूलने या निवेश और ऋण लेने के लिए; आकर्षक या अनाकर्षक होने के लिए; गर्भपात या गर्भस्राव से पीड़ित महिलाओं का इलाज करने के लिए; किसी पुरुष की जीभ बांधने, उसके जबड़े को लकवाग्रस्त करने, उसके हाथों पर नियंत्रण खोने या बहरापन लाने के लिए मंत्रों का जाप करने के लिए; दर्पण, किसी युवती या किसी तांत्रिक से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए; सूर्य की पूजा करने, ब्रह्मा की पूजा करने, मुख से ज्वाला निकालने, भाग्य की देवी का आह्वान करने — वह इन सभी गलत आजीविकाओं और निम्न स्तर की कलाओं से दूर रहता है।

जबकि कुछ पुजारी और ध्यानमग्न लोग, आस्था के आधार पर दिए गए भोजन से अपना जीवन यापन करते हुए, निम्न स्तर की कलाओं जैसे कि गलत तरीकों से अपना गुजारा करते हैं:

देवताओं को वरदान के बदले उपहार देने का वादा करना; ऐसे वादे पूरे करना; प्रेत विद्या का अध्ययन करना; घर की सुरक्षा के मंत्र सिखाना; पौरुष शक्ति और नपुंसकता उत्पन्न करना; निर्माण स्थलों का अभिषेक करना; विधिपूर्वक मुख स्नान कराना; यज्ञ की अग्नि अर्पित करना; उल्टी कराने वाली दवाएँ, दस्त की दवाएँ, कफ निस्सारक दवाएँ, मूत्रवर्धक दवाएँ, सिरदर्द की दवाएँ तैयार करना; कान का तेल, आँखों में डालने वाली बूँदें, नाक से उपचार के लिए तेल, काजल और अन्य औषधियाँ तैयार करना; मोतियाबिंद का इलाज करना, शल्य चिकित्सा करना, बच्चों के चिकित्सक के रूप में कार्य करना, दवाओं का प्रयोग करना और उनके दुष्प्रभावों का उपचार करना — वह इन सभी अनुचित आजीविकाओं और निम्न स्तर के कार्यों से दूर रहता है। यह भी उसके सद्‌गुण का एक भाग है।

"इस प्रकार सद्‌गुणों में परिपूर्ण भिक्षु को अपने सद्‌गुणों के कारण संयम से कोई खतरा नहीं दिखता। जिस प्रकार अपने शत्रुओं को परास्त करने वाला महापुरुष योद्धा अपने शत्रुओं से कोई खतरा नहीं देखता, उसी प्रकार सद्‌गुणों में परिपूर्ण भिक्षु को अपने सद्‌गुणों के कारण संयम से कोई खतरा नहीं दिखता। सद्‌गुणों के इस श्रेष्ठ समूह से युक्त होकर वह निर्दोष होने के सुख के प्रति आंतरिक रूप से संवेदनशील होता है। इसी प्रकार एक भिक्षु सद्‌गुणों में परिपूर्ण होता है।"

इंद्रिय संयम

और एक भिक्षु अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा कैसे करता है? किसी आकृति को आँख से देखते समय, वह किसी भी विषय या विवरण पर ध्यान नहीं देता, जिससे—यदि वह आँख की शक्ति पर बिना संयम के ध्यान केंद्रित करे—तो लोभ या दु:ख जैसे बुरे, अकुशल गुण उस पर हावी हो सकते हैं। किसी ध्वनि को कान से सुनते समय... किसी गंध को नाक से सूंघते समय... किसी स्वाद को जीभ से चखते समय... किसी स्पर्श संवेदना को शरीर से महसूस करते समय... किसी विचार को बुद्धि से समझते समय, वह किसी भी विषय या विवरण पर ध्यान नहीं देता, जिससे—यदि वह बुद्धि की शक्ति पर बिना संयम के ध्यान केंद्रित करे—तो लोभ या दु:ख जैसे बुरे, अकुशल गुण उस पर हावी हो सकते हैं। इंद्रियों पर इस श्रेष्ठ संयम से संपन्न होकर, वह आंतरिक रूप से निष्कलंक होने के सुख के प्रति संवेदनशील होता है। इस प्रकार एक भिक्षु अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करता है।

जागरूकता और सतर्कता
और एक भिक्षु में सजगता और सतर्कता कैसे होती है? आगे बढ़ते और लौटते समय, वह सतर्कता से कार्य करता है। आगे देखते और पीछे हटते समय... अपने अंगों को मोड़ते और फैलाते समय... अपने बाहरी वस्त्र, ऊपरी वस्त्र और कुंड को ले जाते समय... खाते, पीते, चबाते और स्वाद लेते समय... पेशाब और शौच करते समय... चलते, खड़े होते, बैठते, सोते, जागते, बोलते और चुप रहते समय, वह सतर्कता से कार्य करता है। इस प्रकार एक भिक्षु में सजगता और सतर्कता होती है।

संतोष
और एक भिक्षु कैसे संतुष्ट रहता है? जैसे एक पक्षी जहाँ कहीं भी जाता है, अपने पंखों को ही अपना एकमात्र बोझ मानकर उड़ता है; वैसे ही वह अपने शरीर के लिए वस्त्रों के एक जोड़े और भूख मिटाने के लिए भिक्षा भोजन से संतुष्ट रहता है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, केवल अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को ही साथ ले जाता है। यही एक भिक्षु का संतोष है।

बाधाओं को त्यागना
"सद्‌गुणों के इस श्रेष्ठ समूह, इंद्रियों पर इस श्रेष्ठ संयम, इस श्रेष्ठ जागरूकता और सजगता तथा इस श्रेष्ठ संतोष से परिपूर्ण होकर, वह एकांत स्थान की तलाश करता है: जंगल, वृक्ष की छाया, पर्वत, घाटी, पहाड़ी गुफा, श्मशान भूमि, वन उपवन, खुला आकाश, भूसे का ढेर। भोजन के बाद, भिक्षा मांगने से लौटकर, वह बैठ जाता है, पैर मोड़कर बैठता है, शरीर को सीधा रखता है और जागरूकता को अपने ध्यान में लगाता है।"
संसार के प्रति लोभ का त्याग करके, वह लोभ रहित जागरूकता के साथ निवास करता है। वह अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है। द्वेष और क्रोध का त्याग करके, वह द्वेष रहित जागरूकता के साथ, सभी जीवों के कल्याण के प्रति सहानुभूति रखते हुए निवास करता है। वह अपने मन को द्वेष और क्रोध से शुद्ध करता है। आलस्य और सुस्ती का त्याग करके, वह आलस्य और सुस्ती रहित जागरूकता के साथ, सचेत, सतर्क और प्रकाश के प्रति जागरूक रहते हैं। वह अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है। बेचैनी और चिंता का त्याग करके, वह अविचलित रहते हैं, उनका मन आंतरिक रूप से शांत होता है। वह अपने मन को बेचैनी और चिंता से शुद्ध करते हैं। अनिश्चितता का त्याग करके, वह अनिश्चितता को पार कर चुके होते हैं, कुशल मानसिक गुणों के संबंध में उन्हें कोई उलझन नहीं होती। वह अपने मन को अनिश्चितता से शुद्ध करते हैं।
मान लीजिए कि एक व्यक्ति ऋण लेकर उसे अपने व्यवसाय में निवेश करता है। उसका व्यवसाय सफल होता है। वह अपने पुराने ऋण चुका देता है और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ऋण लेने से पहले मैंने उसे अपने व्यवसाय में निवेश किया था। अब मेरा व्यवसाय सफल हो गया है। मैंने अपने पुराने ऋण चुका दिए हैं और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच गया है।' इससे उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
"मान लीजिए कि एक व्यक्ति बीमार पड़ जाता है - उसे बहुत दर्द होता है और वह गंभीर रूप से अस्वस्थ है। उसे भोजन करने में आनंद नहीं आता और उसके शरीर में कोई शक्ति नहीं है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस बीमारी से ठीक हो जाता है। अब वह भोजन का आनंद लेता है और उसके शरीर में शक्ति आ जाती है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं बीमार था... अब मैं उस बीमारी से ठीक हो गया हूँ। मैं भोजन का आनंद लेता हूँ और मेरे शरीर में शक्ति है।' इसी कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।"
अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति जेल में बंद है। समय बीतने के साथ, अंततः वह उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं जेल में बंद था। अब मैं उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो गया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति गुलाम है, दूसरों के अधीन है, स्वयं के अधीन नहीं, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में असमर्थ है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस गुलामी से मुक्त हो जाता है, स्वयं के अधीन हो जाता है, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हो जाता है, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं गुलाम था... अब मैं उस गुलामी से मुक्त हो गया हूँ, स्वयं के अधीन हूँ, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हूँ, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा था। अब मैं उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
"इसी प्रकार, जब भिक्षु अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग नहीं करता, तो वह उन्हें ऋण, रोग, कारावास, दासता, वीरान देश का मार्ग समझता है। परन्तु जब वह अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग कर लेता है, तो वह उन्हें ऋणमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य, कारावास से मुक्ति, स्वतंत्रता, सुरक्षा का स्थान समझता है। अपने भीतर इनका त्याग देखकर वह प्रसन्न होता है। प्रसन्न होकर वह समाधि में लीन हो जाता है। समाधि में उसका शरीर शांत हो जाता है। शरीर शांत होने पर वह सुख के प्रति संवेदनशील हो जाता है। सुख का अनुभव करने पर उसका मन एकाग्र हो जाता है।"

चार ध्यान

"इंद्रिय सुख से पूर्णतः विमुख होकर, अकुशल मानसिक गुणों से विमुख होकर, वह प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद, जो निर्देशित चिंतन और विश्लेषण से परिपूर्ण होता है। वह इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। जैसे कोई कुशल स्नान विशेषज्ञ या उसका प्रशिक्षु पीतल के पात्र में स्नान पाउडर डालकर उसे गूंथता है और बार-बार पानी छिड़कता है, ताकि उसका पाउडर का गोला - संतृप्त, नमी से भरा, भीतर और बाहर से भीगा हुआ - फिर भी टपके नहीं; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। उसके संपूर्ण शरीर का कोई भी भाग एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अछूता नहीं रहता।"

इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त, निर्देशित विचारों और मूल्यांकनों को शांत करते हुए, वह द्वितीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन से मुक्त चेतना का एकीकरण - आंतरिक आश्वासन। वह अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। जैसे किसी झील में भीतर से ही जल निकलता रहता है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण से कोई प्रवाह नहीं होता, और आकाश से बार-बार भरपूर वर्षा होती रहती है, जिससे झील के भीतर से निकलने वाला ठंडा जल झील में समा जाता है, उसे ठंडे जल से भर देता है, झील का कोई भी भाग ठंडे जल से अछूता नहीं रहता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। उसके संपूर्ण शरीर का कोई भी भाग शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अछूता नहीं रहता।

इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

और इसके अलावा, जब परमानंद शांत हो जाता है, तो वह समभाव में रहता है, सचेत और जागरूक रहता है, और शरीर से सुख का अनुभव करता है। वह तीसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें बना रहता है, जिसके बारे में ऋषियों ने कहा है, 'समभाव और सचेत रहकर, वह सुखमय अवस्था में रहता है।' वह इस शरीर को परमानंद रहित आनंद से भर देता है। जैसे कमल के तालाब में, कुछ कमल, जो पानी में पैदा होते हैं और बढ़ते हैं, पानी में डूबे रहते हैं और पानी से बाहर नहीं निकलते, जिससे वे अपनी जड़ों से लेकर शीर्ष तक ठंडे पानी से भरे रहते हैं, और उन कमलों का कोई भी भाग ठंडे पानी से अछूता नहीं रहता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को परमानंद रहित आनंद से भर देता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी भाग परमानंद रहित आनंद से अछूता नहीं रहता।

इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

और इसके अलावा, सुख और तनाव के त्याग के साथ—जैसे पहले उल्लास और दुःख के लुप्त होने के साथ—वह चौथे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: समभाव और जागरूकता की शुद्धता, न सुख न तनाव। वह शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। जैसे कोई व्यक्ति सिर से पैर तक सफेद कपड़े से ढका बैठा हो ताकि उसके शरीर का कोई भी हिस्सा उससे अछूता न रहे; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी हिस्सा शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अछूता नहीं रहता।

इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

अंतर्दृष्टि ज्ञान

"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर आकार से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहाँ बंधी हुई है।' मान लीजिए कि शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है—आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण, और उसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा हो—और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसे अपने हाथ में लेकर इस प्रकार विचार करे: 'यह शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है, आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण। और इसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा है।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु उसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर आकार से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहीं बंधी हुई है।'

इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

मन द्वारा निर्मित शरीर

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने मन को एक मन-निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक अन्य शरीर की रचना करता है, जो आकार से युक्त, मन से निर्मित,

अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति म्यान से सरकंडा निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह म्यान है, यह सरकंडा है। म्यान एक चीज है, सरकंडा दूसरी, लेकिन सरकंडा म्यान से निकल गया है।' या जैसे कोई व्यक्ति म्यान से तलवार निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह तलवार है, यह म्यान है। तलवार एक चीज है, म्यान दूसरी, लेकिन तलवार म्यान से निकल गई है।' या यूं कहें कि कोई व्यक्ति सांप को उसके केंचुली से बाहर निकाल रहा हो। उसके मन में यह विचार आएगा: 'यह सांप है, यह उसकी केंचुली है। सांप एक चीज है, केंचुली दूसरी, लेकिन सांप को केंचुली से बाहर निकाल लिया गया है।' ठीक इसी प्रकार, जब भिक्षु का मन एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, लचीला, स्थिर और अविचलित हो जाता है, तो वह उसे मन से निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक और शरीर की रचना करता है, जो आकार से युक्त, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

अलौकिक शक्तियाँ
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह अनेक अलौकिक शक्तियों का प्रयोग करता है। एक होकर वह अनेक हो जाता है; अनेक होकर वह एक हो जाता है। वह प्रकट होता है। वह लुप्त हो जाता है। वह दीवारों, प्राचीरों और पहाड़ों के आर-पार ऐसे चला जाता है मानो अंतरिक्ष में। वह पृथ्वी में ऐसे गोता लगाता है मानो वह जल हो। वह जल पर बिना डूबे ऐसे चलता है मानो वह सूखी भूमि हो। पालथी मारकर वह पंखों वाले पक्षी की तरह हवा में उड़ता है। अपने हाथ से वह सूर्य और चंद्रमा को भी स्पर्श करता है, जो इतने शक्तिशाली और बलवान हैं। वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालता है। जैसे एक कुशल कुम्हार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार मिट्टी से अपनी पसंद का कोई भी बर्तन बना सकता है, या जैसे एक कुशल हाथीदांत तराशने वाला या उसका सहायक अपनी पसंद की मिट्टी से किसी भी प्रकार का बर्तन बना सकता है। वह अच्छी तरह से तैयार हाथीदांत से अपनी पसंद का कोई भी हाथीदांत का काम बना सकता है, या जैसे एक कुशल सुनार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार सोने से अपनी पसंद की कोई भी सोने की वस्तु बना सकता है; उसी प्रकार - अपने इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से - भिक्षु इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है... वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक भी प्रभाव डालता है।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

क्लेयरऑडियंस
"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध और उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह - शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे - दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट हों या दूर। ठीक वैसे ही जैसे यदि कोई व्यक्ति राजमार्ग पर यात्रा कर रहा हो और उसे ढोल, छोटे ढोल, शंख, झांझ और टॉम की आवाज़ें सुनाई दें, तो वह जान जाएगा, 'यह ढोल की आवाज़ है, यह छोटे ढोल की आवाज़ है, यह शंख की आवाज़ है, यह झांझ की आवाज़ है और यह टॉम की आवाज़ है।'" इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु उसे दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह—शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे दिव्य श्रवण शक्ति के माध्यम से—दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट की हों या दूर की।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

जानो, मन में क्या चल रहा है
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित होता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनूनी मन को जुनूनी मन के रूप में और जुनून रहित मन को जुनून रहित मन के रूप में पहचानता है। वह घृणा से ग्रसित मन को घृणा से ग्रसित मन के रूप में और घृणा रहित मन को घृणा रहित मन के रूप में पहचानता है। वह भ्रम से ग्रसित मन को भ्रम से ग्रसित मन के रूप में और भ्रम रहित मन को भ्रम रहित मन के रूप में पहचानता है। वह सीमित मन को सीमित मन के रूप में और बिखरे हुए मन को बिखरे हुए मन के रूप में पहचानता है। वह विस्तारित मन को विस्तारित मन के रूप में और अविस्तारित मन को अविस्तारित मन के रूप में पहचानता है। वह उत्कृष्ट मन (जो उच्चतम स्तर पर नहीं है) को उत्कृष्ट मन के रूप में और अविस्तारित मन को अविस्तारित मन के रूप में पहचानता है। अद्वितीय मन को अद्वितीय मन के रूप में पहचानता है। वह एकाग्र मन को एकाग्र मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। वह मुक्त मन को मुक्त मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। जैसे कोई युवती या पुरुष, जो आभूषणों का शौकीन हो, किसी चमकदार दर्पण या स्वच्छ जल से भरे कटोरे में अपने चेहरे का प्रतिबिंब देखकर यह जान ले कि वह 'दोषपूर्ण' है या 'दोषरहित' है। उसी प्रकार, अपने इस एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से, भिक्षु इसे अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य

व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनून से भरे मन को जुनून से भरे मन के रूप में और बिना जुनून वाले मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है... मुक्त मन को मुक्त मन के रूप में और असंलग्न मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है। अप्रकाशित मन, अप्रकाशित मन के रूप में।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

बीते जन्मों की यादें
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने पिछले जन्मों (यानी पूर्व जन्मों) के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को याद करता है, अर्थात् एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार, पाँच, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, सौ, एक हजार, एक लाख, ब्रह्मांडीय संकुचन के अनेक युग, ब्रह्मांडीय विस्तार के अनेक युग, ब्रह्मांडीय संकुचन और विस्तार के अनेक युग। वह स्मरण करता है, 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ।' उस अवस्था से विदा होकर मैं वहाँ पुनः उत्पन्न हुआ। वहाँ भी मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ। जीवन। उस अवस्था से गुजरकर, मैं यहाँ पुनः उत्पन्न हुआ।' इस प्रकार वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को उनके स्वरूप और विवरणों के साथ याद करता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने गाँव से दूसरे गाँव जाए, फिर उस गाँव से किसी और गाँव जाए, और फिर उस गाँव से वापस अपने गाँव आ जाए। उसके मन में यह विचार आएगा, 'मैं अपने गाँव से उस गाँव गया। वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं उस गाँव गया, और वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं वापस घर आ गया।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने पिछले जन्मों के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को उनके स्वरूपों और विवरणों सहित याद करता है।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

प्राणियों का देहांत और पुन: प्रकट होना
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर उन्मुख होता है। वह दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है, प्राणियों को मृत्यु और पुनर्जन्म लेते हुए देखता है और उनके कर्मों के अनुसार उनके निम्न और उच्चतर, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है: 'ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के बुरे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म किए - मृत्यु के बाद शरीर के टूटने से अभाव के लोक, बुरे गंतव्य, निचले लोकों, नरक में पुनर्जन्म लेते हैं। परन्तु ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के अच्छे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म करने वाले — शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, अच्छे स्थानों, स्वर्गलोक में पुनः प्रकट होते हैं। इस प्रकार — दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है — वह प्राणियों को मरते और पुनः प्रकट होते देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके हीन और श्रेष्ठ, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है। जैसे कि किसी शहर के केंद्रीय चौक में एक ऊँची इमारत हो, और उस पर खड़ा एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति लोगों को घर में प्रवेश करते, घर से बाहर निकलते, सड़क पर चलते और केंद्रीय चौक में बैठते हुए देखे। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ये लोग घर में प्रवेश कर रहे हैं, घर से बाहर निकल रहे हैं, सड़क पर चल रहे हैं और केंद्रीय चौक में बैठ रहे हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह—शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ दिव्य दृष्टि से—प्राणित और पुनर्जन्मित प्राणियों को देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके निम्न और उच्चतर, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है।
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।

मानसिक उथल-पुथल का अंत
इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ पाता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-वासना, कर्म-वासना और अज्ञान-वासना से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही उसे यह ज्ञान प्राप्त होता है, 'मुक्त हो गया।' वह समझ पाता है कि 'जन्म समाप्त हो गया, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया, कार्य पूरा हो गया। इस संसार में अब कुछ भी शेष नहीं है।' जैसे मान लीजिए कि किसी पहाड़ी घाटी में पानी का एक तालाब हो—साफ़, निर्मल और बेदाग—जहाँ किनारे पर खड़ा एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति सीपियाँ, कंकड़ और पत्थर देख सके, और साथ ही मछलियों के झुंड तैरते और आराम करते हुए देख सके, और उसके मन में यह विचार आए,

'यह तालाब साफ़, निर्मल और निर्मल है। यहाँ ये सीपियाँ, कंकड़ और पत्थर हैं, और साथ ही मछलियों के ये झुंड तैरते और आराम करते हुए हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ लेता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-संबंधों की हलचलों, कर्म-संबंधों की हलचलों और अज्ञान-संबंधों की हलचलों से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही, 'मुक्त' का ज्ञान प्राप्त होता है। वह यह समझ जाता है कि 'जन्म समाप्त हो गया है, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया है, कार्य पूरा हो गया है। इस संसार में अब और कुछ नहीं बचा है।'
इसे भी शिक्षा का चमत्कार कहा जाता है।
"ये वे तीन चमत्कार हैं जिनकी मैं घोषणा करता हूँ, केवट्टा, क्योंकि मैंने स्वयं इन्हें प्रत्यक्ष रूप से जाना और अनुभव किया है।"

देवताओं के साथ बातचीत

"एक बार, केवट्टा, इसी भिक्षु समुदाय के एक भिक्षु के मन में यह विचार आया: 'ये चार महान तत्व - पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु - कहाँ जाकर समाप्त होते हैं?' तब उन्होंने एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त की कि उनके एकाग्र मन में देवताओं तक पहुँचने का मार्ग प्रकट हो गया। अतः वे चार महान राजाओं के अनुयायियों के देवताओं के पास पहुँचे और वहाँ पहुँचकर उनसे पूछा, 'मित्रों, ये चार महान तत्व - पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु - कहाँ जाकर समाप्त होते हैं?'"
जब यह कहा गया, तो चार महान राजाओं के अनुयायियों के देवताओं ने भिक्षु से कहा, 'हम भी नहीं जानते कि चार महान तत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के। लेकिन चार महान राजा हैं जो हमसे कहीं अधिक उच्च और श्रेष्ठ हैं। उन्हें अवश्य ही पता होना चाहिए कि चार महान तत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के।'
"तो भिक्षु ने चारों महान राजाओं से संपर्क किया और वहाँ पहुँचकर उनसे पूछा, 'मित्रों, ये चारों महान तत्व कहाँ जाकर बिना किसी अवशेष के समाप्त होते हैं?'"
जब यह कहा गया, तो चारों महान राजाओं ने भिक्षु से कहा, 'हम भी नहीं जानते कि चारों महान तत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं। लेकिन तैंतीस देवता हैं जो हमसे कहीं अधिक उच्च और महान हैं। उन्हें अवश्य ही पता होगा...'
इसलिए भिक्षु तैंतीस देवताओं के पास पहुंचा और वहां पहुंचकर उनसे पूछा, 'मित्रों, ये चार महान तत्व... बिना किसी अवशेष के कहां समाप्त होते हैं?'
जब यह कहा गया, तो तैंतीस देवताओं ने भिक्षु से कहा, 'हम भी नहीं जानते कि चारों महान तत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के। लेकिन देवताओं के स्वामी सक्का हैं, जो हमसे कहीं अधिक उच्च और महान हैं। उन्हें अवश्य ही पता होना चाहिए...'
"तो भिक्षु देवताओं के शासक सक्का के पास पहुंचा और वहां पहुंचकर उससे पूछा, 'मित्र, ये चार महान तत्व... बिना किसी अवशेष के कहां समाप्त होते हैं?'"
जब यह कहा गया, तो देवताओं के स्वामी सक्का ने भिक्षु से कहा, 'मुझे भी नहीं पता कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं। लेकिन यम देवता हैं जो मुझसे कहीं अधिक श्रेष्ठ और महान हैं। उन्हें अवश्य पता होगा...'
यम देवताओं ने कहा, 'हमें भी नहीं पता... लेकिन सुयामा नाम का एक देवता है... उसे पता होना चाहिए...'
सुयामा ने कहा, 'मुझे भी नहीं पता... लेकिन संतुसिता नाम का एक देवता है... उसे पता होना चाहिए...'
"संतुशिता ने कहा, 'मुझे भी नहीं पता... लेकिन निम्मनारति देवता हैं... उन्हें पता होना चाहिए...'..."
"निमनारती देवताओं ने कहा, 'हमें भी नहीं पता... लेकिन सुनिमिता नाम का एक देवता है... उसे पता होना चाहिए...'..."
"सुनिमित्त ने कहा, 'मुझे भी नहीं पता... लेकिन परानिमित्तवासवत्ती देवता हैं... उन्हें तो पता होना चाहिए...'..."
"परनिम्मितवासवत्ती देवताओं ने कहा, 'हमें भी नहीं पता... लेकिन परनिम्मित वासवत्ती नाम के एक देवता हैं... उन्हें पता होना चाहिए...'..."
"तो भिक्षु वासवत्ती देवता के पास पहुंचा और वहां पहुंचकर उनसे पूछा, 'मित्र, ये चार महान तत्व... बिना किसी अवशेष के कहां समाप्त होते हैं?'"
जब यह कहा गया, तो वासवत्ती देवता ने भिक्षु से कहा, 'मुझे भी नहीं पता कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के। लेकिन ब्रह्मा के अनुयायी देवता मुझसे कहीं अधिक उच्च और श्रेष्ठ हैं। उन्हें अवश्य पता होगा कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं...'...
तब भिक्षु ने एकाग्रता की ऐसी अवस्था प्राप्त की कि ब्रह्मा के अनुयायियों के देवताओं तक जाने का मार्ग उनके एकाग्र मन में प्रकट हो गया। अतः वे ब्रह्मा के अनुयायियों के देवताओं के पास पहुँचे और वहाँ पहुँचकर उनसे पूछा, 'मित्रों, ये चार महान तत्व—पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु—अंत में कहाँ जाकर समाप्त होते हैं?'
जब यह कहा गया, तो ब्रह्मा के अनुयायियों के देवताओं ने भिक्षु से कहा, 'हम भी नहीं जानते कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के। लेकिन ब्रह्मा हैं, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, संभगवान स्वामी, सृष्टिकर्ता,

सृजनकर्ता, प्रधान, नियुक्तकर्ता और शासक, जो सभी के पिता हैं जो रहे हंह और जो होंगे। वे हमसे कहीं अधिक उच्च और श्रेष्ठ हैं। उन्हें ही पता होना चाहिए कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं... बिना किसी अवशेष के।'

"'लेकिन मित्रों, महान ब्रह्मा अब कहाँ हैं?'"

"'भिक्षु, हम भी नहीं जानते कि ब्रह्मा कहाँ हैं या किस रूप में हैं। लेकिन जब संकेत प्रकट होते हैं, प्रकाश चमकता है और एक तेज दिखाई देता है, तब ब्रह्मा प्रकट होंगे। क्योंकि ये ब्रह्मा के प्रकट होने के संकेत हैं: प्रकाश चमकता है और एक तेज दिखाई देता है।'"

फिर कुछ ही समय बाद ब्रह्मा प्रकट हुए।

"तो भिक्षु ने महान ब्रह्मा के पास जाकर कहा, 'मित्र, ये चार महान तत्व - पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु - कहाँ बिना किसी अवशेष के समाप्त होते हैं?'"

जब यह कहा गया, तो महान ब्रह्मा ने भिक्षु से कहा, 'मैं, भिक्षु, ब्रह्मा हूँ, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, संभगवान स्वामी, निर्माता, सृजनकर्ता, प्रधान, नियुक्तकर्ता और शासक, जो कुछ भी रहा है और जो कुछ भी होगा, उसका पिता।'

दूसरी बार, भिक्षु ने महान ब्रह्मा से कहा, 'मित्र, मैंने आपसे यह नहीं पूछा कि आप ब्रह्मा हैं, महान ब्रह्मा हैं, विजेता हैं, अजेय हैं, सर्वदर्शी हैं, सर्वशक्तिमान हैं, संभगवान स्वामी हैं, सृष्टिकर्ता हैं, निर्माता हैं, प्रधान हैं, नियुक्तकर्ता और शासक हैं, समस्त सृष्टि के पिता हैं। मैंने आपसे यह पूछा कि ये चार महान तत्व - पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु - कहाँ बिना किसी अवशेष के समाप्त होते हैं।'

"दूसरी बार, महान ब्रह्मा ने भिक्षु से कहा, 'मैं, भिक्षु, ब्रह्मा हूँ, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, संभगवान स्वामी, निर्माता, सृजनकर्ता, प्रधान, नियुक्तकर्ता और शासक, जो कुछ भी रहा है और जो कुछ भी होगा, उसका पिता हूँ।'

"तीसरी बार, भिक्षु ने महान ब्रह्मा से कहा, 'मित्र, मैंने आपसे यह नहीं पूछा कि आप ब्रह्मा हैं, महान ब्रह्मा हैं, विजेता हैं, अजेय हैं, सर्वदर्शी हैं, सर्वशक्तिमान हैं, संभगवान स्वामी हैं, निर्माता हैं, सृजनकर्ता हैं, प्रमुख हैं, नियुक्तकर्ता और शासक हैं, जो सभी के पिता हैं जो रहे हैं और जो होंगे। मैंने आपसे पूछा कि ये चार महान तत्व - पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु - कहाँ बिना किसी अवशेष के समाप्त होते हैं।"

तब ब्रह्मा ने भिक्षु का हाथ पकड़कर उसे एक तरफ ले जाते हुए उससे कहा, "ब्रह्मा के अनुयायियों के ये देवता मानते हैं, 'ब्रह्मा को सब कुछ ज्ञात है। ब्रह्मा को सब कुछ दिखाई देता है। ब्रह्मा अनभिज्ञ हैं। ब्रह्मा ने सब कुछ जान लिया है।' इसीलिए मैंने उनके सामने यह नहीं कहा कि मुझे भी नहीं पता कि चारों महातत्व कहाँ जाकर समाप्त होते हैं। अतः तुमने इस प्रश्न का उत्तर कहीं और खोज कर भगवान ब्रह्मा को अनदेखा करके गलत कार्य किया है। सीधे भगवान ब्रह्मा के पास लौट जाओ और वहाँ पहुँचकर उनसे यह प्रश्न पूछो। उनका उत्तर चाहे जो भी हो, उसे तुम दिल से ग्रहण करो।"

फिर—जैसे कोई बलवान पुरुष अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या फैलाई हुई भुजा को मोड़ता है—वैसे ही भिक्षु ब्रह्मलोक से विलीन हो गए और तुरंत मेरे सामने प्रकट हुए। मुझे प्रणाम करके वे एक तरफ बैठ गए। वहाँ बैठे-बैठे उन्होंने मुझसे कहा, 'हे भगवान, ये चार महान तत्व—पृथ्वी, द्रव, अग्नि और वायु—अंत में कहाँ जाकर समाप्त होते हैं?'

यह सुनकर मैंने उनसे कहा, 'एक बार, भिक्षु, कुछ समुद्री व्यापारी तट-दर्शन पक्षी लेकर अपने जहाज में सवार होकर रवाना हुए। जब उन्हें तट दिखाई नहीं दिया, तो उन्होंने उस पक्षी को छोड़ दिया। वह पूरब, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, सीधे ऊपर और सभी मध्य दिशाओं में उड़ गया। यदि उसे किसी भी दिशा में तट दिखाई दिया, तो वह वहाँ उड़ गया। यदि उसे किसी भी दिशा में तट दिखाई नहीं दिया, तो वह वापस जहाज पर लौट आया। उसी प्रकार, भिक्षु, अपने प्रश्न का उत्तर खोजते हुए ब्रह्मलोक तक जाकर, आप सीधे मेरे समक्ष आ गए हैं।'

"'आपका प्रश्न इस प्रकार नहीं होना चाहिए: ये चार महान तत्व - पृथ्वी गुण, द्रव गुण, अग्नि गुण और वायु गुण - कहाँ बिना किसी अवशेष के समाप्त होते हैं? इसके बजाय, इसे इस प्रकार होना चाहिए:

"पानी, धरती, आग और हवा का कोई आधार कहाँ नहीं है?"

"लंबाई और छोटी, खुरदरी और महीन, सुंदर और बदसूरत, मन और रूप का अंत कहाँ होता है?"

और इसका उत्तर यह है:

निर्वाण/मोक्ष अवस्था

"बिना किसी विशेषता के, बिना किसी अंत के, चारों ओर प्रकाशमान चेतना (अर्थात् अवर्णनीय गुणों से रहित अनंत रूप से प्रज्वलित दिव्य चेतना):

यहां जल, पृथ्वी, अग्नि और वायु का कोई आधार नहीं है (चार तत्व/धातु; अर्थात् तरलता, गुरुत्वाकर्षण, ऊष्मा और गैसीय गुण मौजूद नहीं हैं)।

यहां लंबा-छोटा, मोटा-पतला, सुंदर-बुरा, मन-रूप सब समाप्त हो जाते हैं। (अर्थात् यह सर्वत्र व्याप्त है, इसका कोई रूप नहीं है और न ही कोई विचार-मंथन है।)

शरीर-चेतना की गतिविधि के समाप्त होने के साथ ही प्रत्येक का अंत हो जाता है (स्थिरता)।

भगवान बुद्ध ने यही कहा था। इससे गृहस्थ केवट्टा को भगवान बुद्ध के वचन बहुत प्रसन्न हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.12: लोहिका सुत्त (डीएन 12)

अंतर्वस्तु

सेटिंग

मैंने सुना है कि एक बार भगवान बुद्ध कोसल पर्वतमाला में लगभग 500 भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ भ्रमण कर रहे थे और सलवाटिका पहुँचे। उस समय ब्राह्मण लोहिच्च सलवाटिका पर सामंती अधिकार के साथ शासन कर रहे थे - राजा पसेनदी कोसल द्वारा प्रदत्त एक शाही अनुदान के माध्यम से सलवाटिका की संपत्ति, घास, लकड़ी और अनाज पर उनका अधिकार था। उस समय उनके मन में एक बुरा विचार आया: "मान लीजिए कि कोई पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति किसी कुशल सिद्धांत पर पहुँच जाए। कुशल सिद्धांत प्राप्त करने के बाद, उसे किसी और को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बना ले। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा, लालची काम है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है?"

तब लोहिच्च ने सुना, "शाक्यों वंश के पुत्र, चिंतनशील गौतम, शाक्यों वंश से निकलकर लगभग 500 भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ कोसल पर्वतमाला में भ्रमण करते हुए सलावतिका पहुँचे हैं। और उस गुरु गौतम के बारे में यह सुप्रसिद्धि फैली है: 'वे वास्तव में एक धन्य, योग्य, और सही मायने में आत्म-जागृत, ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण, सुगठित, ब्रह्मांड के ज्ञाता, वश में किए जाने वाले व्यक्तियों के अद्वितीय प्रशिक्षक, मानव और दिव्य प्राणियों के गुरु, जागृत, धन्य हैं। उन्होंने प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा इस संसार को इसके देवों, मारों और ब्रह्माओं सहित, इसकी पीढ़ियों को उनके चिंतनशील और पुरोहितों सहित, उनके शासकों और आम लोगों सहित ज्ञात कराया है; उन्होंने आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय धम्म की व्याख्या की है; उन्होंने पवित्र जीवन की बारीकियों और उसके परिणामों दोनों का विस्तार से वर्णन किया है। सार, पूर्णतः परिपूर्ण, अत्यंत शुद्ध। ऐसे योग्य व्यक्ति को देखना सुखद है।

तब लोहिच्च ने नाई रोसिका से कहा: "आओ, प्रिय रोसिका। ध्यानमग्न गौतम के पास जाओ और वहाँ पहुँचकर उनसे पूछो कि क्या वे रोग और कष्टों से मुक्त हैं, चिंतामुक्त हैं, बलवान हैं और सुखमय जीवन जी रहे हैं। उनसे कहना, 'ब्राह्मण लोहिच्च, गुरु गौतम, आपसे पूछते हैं कि क्या आप रोग और कष्टों से मुक्त हैं, चिंतामुक्त हैं, बलवान हैं और सुखमय जीवन जी रहे हैं।' और फिर कहना, 'कृपा करके गुरु गौतम, भिक्षुओं के समुदाय सहित, कल ब्राह्मण लोहिच्च के साथ भोजन करने के लिए सहमत हों।'"

ब्राह्मण लोहिच्चा को "जैसा आप कहें, महाराज" कहकर उत्तर देते हुए, नाई रोसिका भगवान बुद्ध के पास गया और वहाँ पहुँचकर उन्हें प्रणाम करते हुए एक तरफ बैठ गया। वहाँ बैठे-बैठे उसने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, ब्राह्मण लोहिच्चा पूछ रहे हैं कि क्या भगवान बुद्ध रोग और कष्टों से मुक्त हैं, चिंतामुक्त हैं, बलवान हैं और सुखमय जीवन जी रहे हैं। और वे कहते हैं, 'भगवान बुद्ध, भिक्षुओं के समुदाय सहित, कल ब्राह्मण लोहिच्चा के साथ भोजन करने के लिए सहमत हों।'" भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दे दी।

तब नाई रोसिका ने भगवान की सहमति समझकर अपने आसन से उठकर भगवान को प्रणाम किया, उनके दाहिनी ओर रहते हुए उनकी परिक्रमा की और ब्राह्मण लोहिच्च के पास लौट आया। वहाँ पहुँचकर उसने लोहिच्च से कहा, "मैंने भगवान को आपके वचन सुना दिए हैं, [कि] 'हे भगवान, ब्राह्मण लोहिच्च ने पूछा है कि क्या भगवान रोग और कष्टों से मुक्त हैं, चिंतामुक्त हैं, बलवान हैं और सुखमय जीवन जी रहे हैं।' और उन्होंने कहा, 'भगवान, भिक्षुओं के समुदाय सहित, कल ब्राह्मण लोहिच्च के साथ भोजन करने के लिए सहमत हों।' और भगवान सहमत हो गए हैं।"

फिर, जैसे ही रात ढलने लगी, ब्राह्मण लोहिच्च ने अपने घर में उत्तम प्रकार के मुख्य और गैर-मुख्य भोजन तैयार करवाए और फिर नाई रोसिका से कहा, "आओ, प्रिय रोसिका। ध्यानमग्न गौतम के पास जाओ और वहाँ पहुँचकर समय की सूचना दो, [कहते हुए], 'हे गुरु गौतम, समय हो गया है। भोजन तैयार है।'"

ब्राह्मण लोहिक्का को "जैसा आप कहें, महाराज" कहकर उत्तर देते हुए नाई रोसिका भगवान बुद्ध के पास गया और वहाँ पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ खड़ा हो गया। वहाँ खड़े-खड़े उसने समय की घोषणा करते हुए कहा, "हे भगवान, समय हो गया है। भोजन तैयार है।"

फिर भगवान बुद्ध ने सुबह सवेरे अपने वस्त्र धारण किए, अपना कुंड और बाहरी वस्त्र लेकर भिक्षुओं के एक समुदाय के साथ सालावटिका की ओर प्रस्थान किया। इस बीच, नाई रोसिका भगवान बुद्ध के ठीक पीछे चल रहा था और उसने उनसे कहा, "हे भगवान,

ब्राह्मण लोहिच्च के मन में एक कुटिल विचार उत्पन्न हो गया है: 'मान लीजिए कि कोई पुरोहित या ध्यानमग्न व्यक्ति किसी निपुण सिद्धांत पर पहुँच जाए। निपुण सिद्धांत प्राप्त करने के बाद, उसे किसी और को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बना दे। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा और लोभपूर्ण कार्य है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है?' यदि भगवान बुद्ध ब्राह्मण लोहिच्च को इस कुटिल विचार से मुक्त कर दें तो यह अच्छा होगा।"

"शायद ऐसा ही होगा, रोसिका। शायद ऐसा ही होगा।"

फिर भगवान बुद्ध ब्राह्मण लोहिच्च के घर गए। वहाँ पहुँचकर वे एक तैयार आसन पर बैठ गए। ब्राह्मण लोहिच्च ने अपने हाथों से भगवान बुद्ध और भिक्षुओं के समुदाय को उत्तम भोजन परोसा और सभी प्रकार के पौष्टिक व्यंजन परोसे। जब भगवान बुद्ध ने भोजन कर लिया और कटोरे से हाथ हटा लिया, तो ब्राह्मण लोहिच्च एक नीचा आसन लेकर एक तरफ बैठ गए। जब वे वहाँ बैठे थे, तब भगवान बुद्ध ने उनसे कहा, "लोहिच्च, क्या यह सच है कि तुम्हारे मन में यह बुरा विचार आया है: 'मान लो कि कोई पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति किसी निपुण सिद्धांत पर पहुँच जाए। निपुण सिद्धांत प्राप्त करने के बाद, उसे किसी और को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बना ले। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा और लालच भरा काम है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है?'"

"जी हां, गुरु गौतम।"

"लोहिक्का, तुम क्या सोचते हो? क्या तुम सलावतिका पर राज नहीं करते?"

"जी हां, गुरु गौतम।"

"अब मान लीजिए कोई कहे, 'सलावतिका पर ब्राह्मण लोहिच्च का राज है। सलावतिका के फल और राजस्व का उपभोग केवल वही करे, न कि दूसरों के साथ साझा करे।' क्या इस तरह बोलने वाला व्यक्ति आपकी प्रजा के लिए बाधा उत्पन्न करने वाला होगा, या नहीं?"

"वह बाधाओं का निर्माता होगा, गुरु गौतम।"

और, बाधाओं का निर्माता होने के नाते, क्या वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति रखेगा या नहीं?

"हे गौतम गुरु, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाएगा।"

और जो व्यक्ति उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं रखता, क्या उसका मन उनके प्रति सद्भावना से भरा होगा या शत्रुता से?

"शत्रुता में, गुरु गौतम।"

"जब मन में द्वेष की भावना प्रबल हो जाती है, तो क्या कोई दृष्टिकोण गलत होता है या सही?"

"गलत विचार, गुरु गौतम।"

"अब, लोहिक्का, जो गलत मत रखता है, मैं तुमसे कहता हूँ, उसके लिए दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ।"

"लोहिक्का, तुम्हारा क्या विचार है? क्या राजा पसेनादि कोसला काशी और कोसला पर शासन नहीं करते?"

"जी हां, गुरु गौतम।"

"अब मान लीजिए कोई कहे, 'काशी और कोसला पर राजा पसेनादि कोसला का राज है। काशी और कोसला के फल और राजस्व का उपभोग केवल उन्हें ही करना चाहिए, न कि दूसरों के साथ साझा करना चाहिए।' क्या इस तरह बोलने वाला व्यक्ति राजा पसेनादि की प्रजा - आप और अन्य - के लिए बाधाएँ उत्पन्न करने वाला होगा या नहीं?"

"वह बाधाओं का निर्माता होगा, गुरु गौतम।"

और, बाधाओं का निर्माता होने के नाते, क्या वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति रखेगा या नहीं?

"हे गौतम गुरु, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाएगा।"

और जो व्यक्ति उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं रखता, क्या उसका मन उनके प्रति सद्भावना से भरा होगा या शत्रुता से?

"शत्रुता में, गुरु गौतम।"

"जब मन में द्वेष की भावना प्रबल हो जाती है, तो क्या कोई दृष्टिकोण गलत होता है या सही?"

"गलत विचार, गुरु गौतम।"

"अब, लोहिक्का, जो गलत मत रखता है, मैं तुमसे कहता हूँ, उसके लिए दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ।"

"तो फिर, लोहिच्चा, यदि कोई कहे, 'ब्राह्मण लोहिच्चा सलावतिका पर राज करता है। सलावतिका के फल और राजस्व का उपभोग केवल वही करे, और उन्हें दूसरों के साथ साझा न करे,' तो ऐसा कहने वाला व्यक्ति आपकी प्रजा के लिए बाधाएँ उत्पन्न करेगा। बाधाएँ उत्पन्न करने वाला होने के कारण, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूतिहीन होगा। उनके कल्याण के प्रति सहानुभूतिहीन व्यक्ति के मन में उनके प्रति द्वेष स्थापित हो जाएगा। जब मन द्वेष से ग्रस्त हो जाता है, तो गलत दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। मैं तुमसे कहता हूँ, गलत दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के लिए दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ। इसी प्रकार, यदि कोई कहे, 'मान लीजिए कि एक पुरोहित या ध्यानमग्न व्यक्ति किसी निपुण सिद्धांत पर पहुँच जाए। निपुण सिद्धांत पर पहुँचने के बाद, उसे किसी और को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह ठीक वैसा ही होगा जैसे कोई पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बना ले। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुराई है, एक लालच है..." 'कर्म, भला एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है?' - इस प्रकार बोलने वाला व्यक्ति उन अच्छे परिवार के बच्चों के लिए बाधा उत्पन्न करेगा जो तथागत द्वारा प्रकट किए गए सिद्धांत और अनुशासन को अपनाकर

उस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त करते हैं जहाँ वे जलप्रवेश, एक बार लौटकर आने का फल, अनाप-प्रवेश का फल और अर्हंतत्व का फल प्राप्त करते हैं; और उन लोगों के लिए भी जो देव अवस्था प्राप्त करने के लिए देव गर्भ को परिपक्व करते हैं। बाधा उत्पन्न करने वाला होने के कारण, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं रखेगा। उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति न रखने वाले व्यक्ति का मन उनके प्रति द्वेष से भर जाएगा। जब मन द्वेष से भर जाता है, तो गलत दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। गलत दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के लिए, मैं तुमसे कहता हूँ, दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ।

और यदि कोई कहे, 'काशी और कोसल पर राजा पसेनादि कोसल का राज है। काशी और कोसल के फल और राजस्व का उपभोग केवल वही करे, और दूसरों के साथ साझा न करे,' तो ऐसा कहने वाला राजा पसेनादि की प्रजा—आप और अन्य—के लिए बाधा उत्पन्न करने वाला होगा। बाधा उत्पन्न करने वाला होने के कारण, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूतिहीन होगा। उनके कल्याण के प्रति सहानुभूतिहीन व्यक्ति के मन में उनके प्रति द्वेष स्थापित हो जाएगा। जब मन में द्वेष स्थापित हो जाता है, तो गलत दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। गलत दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के लिए, मैं तुमसे कहता हूँ, दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ। इसी प्रकार, यदि कोई कहे, 'मान लीजिए कि एक पुजारी या ध्यानमग्न व्यक्ति किसी कुशल सिद्धांत पर पहुँच जाए। कुशल सिद्धांत पर पहुँचने के बाद, उसे किसी और को नहीं बताना चाहिए, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह ठीक वैसा ही होगा जैसे किसी पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बनाना। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना...' 'यह एक बुरा, लालच भरा कर्म है, भला एक व्यक्ति दूसरे का भला क्या कर सकता है?' - इस प्रकार बोलने वाला व्यक्ति उन अच्छे परिवार के बच्चों के लिए बाधा उत्पन्न करेगा जो तथागत द्वारा प्रकट किए गए सिद्धांत और अनुशासन को अपनाकर उस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त करते हैं जहाँ वे जलप्रवेश, एक बार लौटकर आने का फल, अनाप-प्रवेश का फल और अर्हंतत्व का फल प्राप्त करते हैं; और उन लोगों के लिए भी जो देव अवस्था प्राप्त करने के लिए देव गर्भ को परिपक्व करते हैं। बाधा उत्पन्न करने वाला होने के कारण, वह उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं रखेगा। जो उनके कल्याण के प्रति सहानुभूति नहीं रखता, उसका मन उनके प्रति द्वेष से भर जाता है। जब मन द्वेष से भर जाता है, तो गलत दृष्टि उत्पन्न होती है। गलत दृष्टि वाले व्यक्ति के लिए, मैं तुमसे कहता हूँ, दो ही गंतव्य हैं: या तो नरक या पशु गर्भ।

लोहिक्का, संसार में तीन प्रकार के शिक्षक हैं जिनकी आलोचना करना उचित है, और जब कोई इन प्रकार के शिक्षकों की आलोचना करता है, तो वह आलोचना सत्य, तथ्यात्मक, न्यायसंगत और निंदनीय होती है। वे तीन कौन से हैं?

एक ऐसा मामला है जहाँ एक शिक्षक चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाए हैं जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में जाता है। चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने के कारण वे अपने शिष्यों को यह शिक्षा देते हैं, 'यह तुम्हारे कल्याण के लिए है। यह तुम्हारी खुशी के लिए है।' उनके शिष्य न तो सुनते हैं, न ध्यान देते हैं, न ही ज्ञान प्राप्त करने का इरादा रखते हैं। वे शिक्षक के निर्देशों से भटककर अभ्यास करते हैं। उनकी आलोचना इस प्रकार की जानी चाहिए, 'हे पूज्यवर, आपने चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया है जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में जाता है। चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने के कारण आप अपने शिष्यों को यह शिक्षा देते हैं, 'यह तुम्हारे कल्याण के लिए है।' यह तुम्हारी खुशी के लिए है। तुम्हारे शिष्य न तो सुनते हैं, न ध्यान देते हैं, न ही ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, और गुरु के निर्देशों से भटककर अभ्यास करते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुरुष किसी स्त्री का पीछा करे जो उससे दूर भागती है, या किसी स्त्री को गले लगाए जो उससे मुंह मोड़ लेती है। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा, लालच भरा काम है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह संसार का पहला ऐसा गुरु है जो आलोचना के योग्य है, और जब कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करता है, तो वह आलोचना सत्य, तथ्यात्मक, न्यायसंगत और निर्दोष होती है।

फिर एक ऐसा मामला है जहाँ एक शिक्षक चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाया है जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में जाता है। चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने के कारण वह अपने शिष्यों को सिखाता है, 'यह तुम्हारे कल्याण के लिए है। यह तुम्हारी खुशी के लिए है।' उसके शिष्य सुनते हैं, ध्यान से सुनते हैं, ज्ञान प्राप्त करने का इरादा रखते हैं और शिक्षक के निर्देशों से विचलित हुए बिना अभ्यास करते हैं। उसकी आलोचना इस प्रकार की जानी चाहिए, 'हे पूज्यवर, आपने चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया है जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में जाता है। चिंतनशील जीवन के उस लक्ष्य को प्राप्त न कर पाने के कारण आप अपने शिष्यों को सिखाते हैं, 'यह तुम्हारे कल्याण के लिए है।' यह तुम्हारी खुशी के लिए है। तुम्हारे शिष्य सुनो, ध्यान से सुनो, ज्ञान प्राप्त करने का इरादा रखो और गुरु के निर्देशों से विचलित हुए बिना अभ्यास करो। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति अपने खेत की उपेक्षा करते हुए दूसरे के खेत में निराई-गुड़ाई करने की कल्पना करे। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा, लालच भरा काम है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह संसार में आलोचना के योग्य दूसरा गुरु है, और जब कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करता है, तो वह आलोचना सत्य, तथ्यात्मक, न्यायसंगत और निर्दोष होती है।

फिर एक ऐसा मामला है जहाँ एक शिक्षक ने चिंतनशील जीवन का वह लक्ष्य प्राप्त कर लिया है जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश करता है। चिंतनशील जीवन का वह लक्ष्य प्राप्त करने के बाद, वह अपने शिष्यों को सिखाता है, 'यह तुम्हारे कल्याण के लिए है। यह तुम्हारी खुशी के लिए है।' उसके शिष्य उसकी बात नहीं सुनते, ध्यान नहीं देते, ज्ञान प्राप्त करने का कोई इरादा नहीं रखते। वे शिक्षक के निर्देशों से भटककर अभ्यास करते हैं। उसकी आलोचना इस प्रकार की जानी चाहिए, 'हे पूज्यवर, आपने चिंतनशील जीवन का वह लक्ष्य प्राप्त कर लिया है जिसके लिए व्यक्ति गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में प्रवेश करता है।

चिंतनशील जीवन का वह लक्ष्य प्राप्त करने के बाद, आप अपने शिष्यों को सिखाते हैं, "यह तुम्हारे कल्याण के लिए है।" यह तुम्हारी खुशी के लिए है। तुम्हारे शिष्य न तो सुनते हैं, न ध्यान देते हैं, न ही ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, और गुरु के निर्देशों से भटककर अभ्यास करते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई पुराने बंधन को तोड़कर नया बंधन बना रहा हो। मैं कहता हूँ कि ऐसा करना एक बुरा, लालच भरा काम है, क्योंकि एक व्यक्ति दूसरे के लिए क्या कर सकता है? यह संसार में आलोचना के योग्य तीसरा गुरु है, और जब कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करता है, तो वह आलोचना सच्ची, तथ्यात्मक, न्यायसंगत और निंदनीय होती है।
यह सुनकर ब्राह्मण लोहिच्च ने भगवान बुद्ध से कहा, "परन्तु हे गौतम गुरु, क्या संसार में कोई ऐसा गुरु है जो आलोचना के योग्य न हो?"
"लोहिका, दुनिया में एक ऐसा शिक्षक भी है जो आलोचना के योग्य नहीं है।"
लेकिन हे गुरु गौतम, संसार में ऐसा कौन सा गुरु है जो आलोचना के योग्य नहीं है?
"लोहिच्चा, ऐसा मामला है जिसमें तथागत संसार में प्रकट होते हैं, जो योग्य और सही मायने में आत्म-जागृत हैं। वे धम्म का उपदेश देते हैं जो आरंभ में प्रशंसनीय, मध्य में प्रशंसनीय और अंत में प्रशंसनीय है। वे पवित्र जीवन की घोषणा करते हैं, जो अपने विशिष्ट पहलुओं और सार में पूर्णतः परिपूर्ण और अत्यंत शुद्ध है।"
"गृहस्थ या गृहस्थ का पुत्र धम्म सुनकर तथागत में दृढ़ विश्वास प्राप्त करता है और चिंतन करता है: 'गृहस्थ जीवन बंधनकारी और धूल भरा मार्ग है। गृहस्थ जीवन खुले आकाश के समान है। घर में रहकर पूर्णतः परिपूर्ण, पूर्णतः शुद्ध, पॉलिश किए हुए शंख के समान पवित्र जीवन का अभ्यास करना आसान नहीं है। यदि मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, गेरुए वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाऊं तो क्या होगा?'"
"इसलिए कुछ समय बाद वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे छोटी हो या बड़ी, त्याग देता है; अपने रिश्तेदारों के समूह, चाहे छोटा हो या बड़ा, को छोड़ देता है; अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है।"
"जब वह इस प्रकार प्रस्थान कर लेता है, तो वह मठवासी नियमों से बंधे हुए जीवन व्यतीत करता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। अपने सद्गुणों में परिपूर्ण, वह अपनी इंद्रियों के द्वारों की रक्षा करता है, सचेत और सतर्क रहता है, और संतुष्ट रहता है..."

बाधाओं को त्यागना
"सद्गुणों के इस श्रेष्ठ समूह, इंद्रियों पर इस श्रेष्ठ संयम, इस श्रेष्ठ जागरूकता और सजगता तथा इस श्रेष्ठ संतोष से परिपूर्ण होकर, वह एकांत स्थान की तलाश करता है: एक जंगल, किसी वृक्ष की छाया, एक पर्वत, एक घाटी, एक पहाड़ी गुफा, एक श्मशान भूमि, एक वन उपवन, खुला आकाश, या पुआल का ढेर। भोजन के बाद, भिक्षा मांगने के बाद, वह बैठ जाता है, पैर मोड़कर बैठता है, शरीर को सीधा रखता है और अपनी जागरूकता को एकाग्र करता है।"
संसार के प्रति लोभ का त्याग करके, वह लोभ रहित जागरूकता के साथ निवास करता है। वह अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है। द्वेष और क्रोध का त्याग करके, वह द्वेष रहित जागरूकता के साथ, सभी जीवों के कल्याण के प्रति सहानुभूति रखते हुए निवास करता है। वह अपने मन को द्वेष और क्रोध से शुद्ध करता है। आलस्य और सुस्ती का त्याग करके, वह आलस्य और सुस्ती रहित जागरूकता के साथ, सचेत, सतर्क और प्रकाश के प्रति जागरूक रहते हैं। वह अपने मन को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है। बेचैनी और चिंता का त्याग करके, वह अविचलित रहते हैं, उनका मन आंतरिक रूप से शांत होता है। वह अपने मन को बेचैनी और चिंता से शुद्ध करते हैं। अनिश्चितता का त्याग करके, वह अनिश्चितता को पार कर चुके होते हैं, कुशल मानसिक गुणों के संबंध में उन्हें कोई उलझन नहीं होती। वह अपने मन को अनिश्चितता से शुद्ध करते हैं।
मान लीजिए कि एक व्यक्ति ऋण लेकर उसे अपने व्यवसाय में निवेश करता है। उसका व्यवसाय सफल होता है। वह अपने पुराने ऋण चुका देता है और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ऋण लेने से पहले मैंने इसे अपने व्यवसाय में निवेश किया था। अब मेरा व्यवसाय सफल हो गया है। मैंने अपने पुराने ऋण चुका दिए हैं और पत्नी के भरण-पोषण के लिए अतिरिक्त धन बच गया है।' इससे उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
"मान लीजिए कि एक व्यक्ति बीमार पड़ जाता है - उसे बहुत दर्द होता है और वह गंभीर रूप से अस्वस्थ है। उसे भोजन करने में आनंद नहीं आता और उसके शरीर में कोई शक्ति नहीं है। समय बीतने के साथ, वह धीरे-धीरे ठीक हो जाता है। अब वह भोजन का आनंद लेता है और उसके शरीर में शक्ति आ जाती है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं बीमार था... अब मैं उस बीमारी से ठीक हो गया हूँ। मैं भोजन का आनंद लेता हूँ और मेरे शरीर में शक्ति है।' इसी कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।"
अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति जेल में बंद है। समय बीतने के साथ, अंततः वह उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं जेल में बंद था। अब मैं उस बंधन से सुरक्षित और स्वस्थ रूप से, बिना किसी संपत्ति के नुकसान के रिहा हो गया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।
"अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति गुलाम है, दूसरों के अधीन है, स्वयं के अधीन नहीं, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में असमर्थ है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस गुलामी से मुक्त हो जाता है, स्वयं के अधीन हो जाता है, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हो जाता है, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हो जाता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं गुलाम था... अब मैं उस गुलामी से मुक्त हो गया हूँ,

स्वयं के अधीन हूँ, दूसरों के अधीन नहीं, स्वतंत्र हूँ, और जहाँ चाहे वहाँ जाने में सक्षम हूँ।' इसी कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।"

अब मान लीजिए कि एक व्यक्ति धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा है। समय बीतने के साथ, वह अंततः उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आता है। उसके मन में यह विचार आएगा, 'पहले मैं धन और सामान लेकर एक सुनसान इलाके से होकर गुजर रहा था। अब मैं उस सुनसान इलाके से सुरक्षित और बिना किसी संपत्ति के नुकसान के बाहर निकल आया हूँ।' इस कारण उसे आनंद और खुशी का अनुभव होगा।

"इसी प्रकार, जब भिक्षु अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग नहीं करता, तो वह उन्हें ऋण, रोग, कारावास, दासता, वीरान देश का मार्ग समझता है। परन्तु जब वह अपने भीतर इन पाँच बाधाओं का त्याग कर लेता है, तो वह उन्हें ऋणमुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य, कारावास से मुक्ति, स्वतंत्रता, सुरक्षा का स्थान समझता है। अपने भीतर इनका त्याग देखकर वह प्रसन्न होता है। प्रसन्न होकर वह समाधि में लीन हो जाता है। समाधि में उसका शरीर शांत हो जाता है। शरीर शांत होने पर वह सुख के प्रति संवेदनशील हो जाता है। सुख का अनुभव करने पर उसका मन एकाग्र हो जाता है।"

चार ध्यान

"इंद्रिय सुख से पूर्णतः विरक्त, अकुशल मानसिक गुणों से विरक्त, वह प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन के साथ। वह इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से व्याप्त करता है, भर देता है। जैसे कोई कुशल स्नान विशेषज्ञ या उसका प्रशिक्षु पीतल के पात्र में स्नान पाउडर डालकर उसे गूंथता है और बार-बार पानी छिड़कता है, ताकि उसका स्नान पाउडर का गोला - संतृप्त, नमी से भरा, भीतर और बाहर से व्याप्त - फिर भी न टपके; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से व्याप्त करता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी भाग एकांतवास से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अप्रभावित नहीं रहता। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिच्चा, वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं है, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अधार्मिक होगी, और निंदनीय।

इसके अतिरिक्त, निर्देशित विचारों और मूल्यांकनों के शांत होने पर, वह दूसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें बना रहता है: शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन से मुक्त चेतना का एकीकरण - आंतरिक आश्वासन। वह अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। जैसे किसी झील में भीतर से ही जल निकलता रहता है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण से कोई प्रवाह नहीं होता, और आकाश से बार-बार भरपूर वर्षा होती रहती है, जिससे झील के भीतर से निकलने वाला ठंडा जल झील में समा जाता है, उसे ठंडे जल से भर देता है, झील का कोई भी भाग ठंडे जल से अछूता नहीं रहता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु अपने पूरे शरीर को शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से भर देता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी भाग शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद से अछूता नहीं रहता। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, वह एक ऐसा शिक्षक है जो संसार में आलोचना के योग्य नहीं है, और यदि कोई इस प्रकार के शिक्षक की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

और इसके अलावा, जैसे-जैसे आनंद की अनुभूति कम होती जाती है, वह समभाव में रहता है, सचेत और जागरूक रहता है, और शरीर से सुख का अनुभव करता है। वह तीसरे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें बना रहता है, जिसके बारे में श्रेष्ठजनों ने कहा है, 'समभाव में और सचेत रहते हुए, वह सुखमय अवस्था में रहता है।' वह इस शरीर को परमानंद से रहित आनंद से परिपूर्ण कर देता है। जैसे कमल के तालाब में, कुछ कमल, जो जल में ही जन्म लेते और बढ़ते हैं, जल में ही डूबे रहते हैं और जल से बाहर नहीं निकलते, जिससे वे जड़ से लेकर शीर्ष तक शीतल जल से परिपूर्ण हो जाते हैं, और उन कमलों का कोई भी भाग शीतल जल से अछूता नहीं रह सकता; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु इस शरीर को परमानंद से रहित आनंद से परिपूर्ण कर देता है। उसके संपूर्ण शरीर का कोई भी भाग परमानंद से रहित आनंद से अछूता नहीं रह सकता। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान उपलब्धि प्राप्त कर लेता है, लोहिच्चा, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

और इसके अलावा, सुख और दुख के त्याग के साथ—जैसे पहले उल्लास और दुःख के लुप्त होने के साथ—वह चौथे ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: समभाव और जागरूकता की शुद्धता, न सुख न दुख। वह शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। जैसे कोई व्यक्ति सिर से पैर तक सफेद कपड़े से ढका बैठा हो, ताकि उसके शरीर का कोई भी हिस्सा उससे अछूता न रहे; ठीक उसी प्रकार, भिक्षु शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अपने शरीर को व्याप्त करते हुए बैठता है। उसके पूरे शरीर का कोई भी हिस्सा शुद्ध, उज्ज्वल चेतना से अछूता नहीं रहता। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिच्चा, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

अंतर्दृष्टि ज्ञान

"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर आकार से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहीं बंधी हुई है।' मान लीजिए कि शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है—आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण, और उसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा हो—और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसे अपने हाथ में लेकर इस प्रकार विचार करे: 'यह शुद्धतम जल से बना एक सुंदर बेरिल रत्न है, आठ फलकों वाला, उत्तम रूप से पॉलिश किया हुआ, साफ, निर्मल, हर रूप से परिपूर्ण। और इसके बीच से एक नीला, पीला, लाल, सफेद या भूरा धागा गुजर रहा है।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु उसे ज्ञान और दृष्टि की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह समझता है: 'मेरा यह शरीर रूप से युक्त है, चार प्राथमिक तत्वों से बना है, माता-पिता से उत्पन्न है, चावल और दलिया से पोषित है, अस्थिरता, रगड़, दबाव, विघटन और विक्षेपण के अधीन है। और मेरी यह चेतना यहाँ टिकी हुई है और यहाँ बंधी हुई है।' जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

मन द्वारा निर्मित शरीर

"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने मन को एक मन-निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक अन्य शरीर की रचना करता है, जो रूप से परिपूर्ण, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता। जैसे कोई व्यक्ति म्यान से सरकंडा निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह म्यान है, यह सरकंडा है। म्यान एक चीज है, सरकंडा दूसरी, लेकिन सरकंडा म्यान से निकल गया है।' या जैसे कोई व्यक्ति म्यान से तलवार निकालता है। उसके मन में यह विचार आता है: 'यह तलवार है, यह म्यान है। तलवार एक चीज है, म्यान दूसरी, लेकिन तलवार म्यान से निकल गई है।'" या यूं कहें कि कोई व्यक्ति सांप को उसके केंचुली से बाहर निकाल रहा हो। उसके मन में यह विचार आएगा: 'यह सांप है, यह केंचुली है। सांप एक चीज है, केंचुली दूसरी, लेकिन सांप को केंचुली से बाहर निकाल लिया गया है।' ठीक इसी प्रकार, जब भिक्षु का मन एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित हो जाता है, तो वह उसे मन से निर्मित शरीर की रचना की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। इस शरीर से वह एक और शरीर बनाता है, जो रूप से परिपूर्ण, मन से निर्मित, अपने सभी अंगों में पूर्ण और अपनी क्षमताओं में किसी से कम नहीं होता। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

अलौकिक शक्तियाँ

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह अनेक अलौकिक शक्तियों का प्रयोग करता है। एक होकर वह अनेक हो जाता है; अनेक होकर वह एक हो जाता है। वह प्रकट होता है। वह लुप्त हो जाता है। वह दीवारों, प्राचीरों और पहाड़ों को ऐसे पार कर जाता है मानो अंतरिक्ष में। वह पृथ्वी में ऐसे गोता लगाता है मानो वह जल हो। वह जल पर ऐसे चलता है मानो वह सूखी भूमि हो, बिना डूबे। पालथी मारकर वह पंखों वाले पक्षी की तरह हवा में उड़ता है। अपने हाथ से वह सूर्य और चंद्रमा को भी स्पर्श करता है, जो इतने शक्तिशाली और बलवान हैं। वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक प्रभाव डालता है। जैसे एक कुशल कुम्हार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार मिट्टी से अपनी पसंद का कोई भी बर्तन बना सकता है, या जैसे एक कुशल हाथीदांत तराशने वाला या उसका सहायक अपनी पसंद की मिट्टी से किसी भी प्रकार का बर्तन बना सकता है। अच्छी तरह से तैयार हाथीदांत से वह अपनी पसंद का कोई भी हाथीदांत का काम कर सकता है, या जैसे एक कुशल सुनार या उसका सहायक अच्छी तरह से तैयार सोने से अपनी पसंद की कोई भी सोने की वस्तु बना सकता है; उसी प्रकार — अपने इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से — भिक्षु इसे अलौकिक शक्तियों के गुणों की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है... वह अपने शरीर से ब्रह्म लोकों तक भी प्रभाव डालता है। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिच्चा, वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

क्लेयरऑडियंस

"इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह इसे दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और प्रवृत्त करता है। वह - शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे - दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट हों या दूर। ठीक वैसे ही जैसे यदि कोई व्यक्ति राजमार्ग पर यात्रा कर रहा हो और उसे ढोल, छोटे ढोल, शंख, झांझ और टॉम-टॉम की ध्वनियाँ सुनाई दें, तो वह जान जाएगा, 'यह ढोल की ध्वनि है, यह छोटे ढोल की ध्वनि है, यह शंख की ध्वनि है, यह झांझ की

ध्वनि है और यह टॉम-टॉम की ध्वनि है।'" इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने मन को दिव्य श्रवण शक्ति की ओर निर्देशित और उन्मुख करता है। वह शुद्ध और मानवीय श्रवण शक्ति से परे दिव्य श्रवण शक्ति के माध्यम से दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है: दिव्य और मानवीय, चाहे निकट की हों या दूर की। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

जानो, मन में क्या चल रहा है

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित होता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनूनी मन को जुनूनी मन के रूप में और जुनून रहित मन को जुनून रहित मन के रूप में पहचानता है। वह घृणा से ग्रसित मन को घृणा से ग्रसित मन के रूप में और घृणा रहित मन को घृणा रहित मन के रूप में पहचानता है। वह भ्रम से ग्रसित मन को भ्रम से ग्रसित मन के रूप में और भ्रम रहित मन को भ्रम रहित मन के रूप में पहचानता है। वह सीमित मन को सीमित मन के रूप में और बिखरे हुए मन को बिखरे हुए मन के रूप में पहचानता है। वह विस्तारित मन को विस्तारित मन के रूप में और अविस्तारित मन को अविस्तारित मन के रूप में पहचानता है। वह उत्कृष्ट मन (जो उच्चतम स्तर पर नहीं है) को उत्कृष्ट मन के रूप में और सामान्य मन को सामान्य मन के रूप में पहचानता है। अद्वितीय मन को अद्वितीय मन के रूप में पहचानता है। वह एकाग्र मन को एकाग्र मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। वह मुक्त मन को मुक्त मन और असंलग्न मन को असंलग्न मन के रूप में पहचानता है। जैसे कोई युवती या पुरुष, जो आभूषणों का शौकीन हो, किसी चमकदार दर्पण या स्वच्छ जल से भरे कटोरे में अपने चेहरे का प्रतिबिंब देखकर यह जान ले कि वह 'दोषपूर्ण' है या 'दोषरहित' है। उसी प्रकार, अपने इस एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से, भिक्षु अन्य प्राणियों की चेतना के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित होता है। वह अन्य प्राणियों, अन्य व्यक्तियों की चेतना को अपनी चेतना से समाहित करके जानता है। वह जुनून से भरे मन को जुनून से भरे मन के रूप में और बिना जुनून वाले मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है... मुक्त मन को मुक्त मन के रूप में और असंलग्न मन को बिना जुनून वाले मन के रूप में पहचानता है। अविभाजित मन एक अविभाजित मन के समान है। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान उपलब्धि प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

बीते जन्मों की यादें

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह अपने पिछले जन्मों (यानी पूर्व जन्मों) के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को याद करता है, अर्थात् एक जन्म, दो जन्म, तीन जन्म, चार, पाँच, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, सौ, एक हजार, एक लाख, ब्रह्मांडीय संकुचन के अनेक युग, ब्रह्मांडीय विस्तार के अनेक युग, ब्रह्मांडीय संकुचन और विस्तार के अनेक युग। वह स्मरण करता है, 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ।' उस अवस्था से विदा होकर मैं वहाँ पुनः उत्पन्न हुआ। वहाँ भी मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे कुल का था, मेरा ऐसा रूप था। मेरा भोजन ऐसा था, सुख-दुख का ऐसा अनुभव था, मेरे जीवन का ऐसा अंत हुआ। जीवन। उस अवस्था से विदा होकर, मैं यहाँ पुनः जन्म लिया।' इस प्रकार वह अपने अनेक पूर्व जन्मों को उनके स्वरूप और विवरणों के साथ याद करता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने गाँव से दूसरे गाँव जाए, फिर उस गाँव से किसी और गाँव जाए, और फिर उस गाँव से वापस अपने गाँव आ जाए। उसके मन में यह विचार आएगा, 'मैं अपने गाँव से उस गाँव गया। वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं उस गाँव गया, और वहाँ मैं इस प्रकार खड़ा हुआ, इस प्रकार बैठा, इस प्रकार बोला और इस प्रकार चुप रहा। उस गाँव से मैं वापस घर आ गया।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने पिछले जन्मों के ज्ञान की ओर उन्मुख होता है। वह अपने अनेक पिछले जन्मों को उनके स्वरूपों और विवरणों सहित याद करता है। जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान उपलब्धि प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

प्राणियों का देहांत और पुन: प्रकट होना

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, निष्कलंक, दोषरहित, कोमल, लचीला, स्थिर और अविचलित मन से वह प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर उन्मुख होता है। वह दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है, प्राणियों को मृत्यु और पुनर्जन्म लेते हुए देखता है और उनके कर्मों के अनुसार उन्हें निम्न और उच्च, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली के रूप में पहचानता है: 'ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के बुरे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा की, गलत विचार रखे और गलत विचारों के प्रभाव में कर्म किए - मृत्यु के बाद शरीर के टूटने के साथ, अभाव के लोक, बुरे गंतव्य, निचले लोकों, नरक में पुनर्जन्म लेते हैं। लेकिन

ये प्राणी - जो शरीर, वाणी और मन के अच्छे आचरण से युक्त थे, जिन्होंने श्रेष्ठों की निंदा नहीं की, जिन्होंने सही विचार रखे और सही विचारों के प्रभाव में कर्म करने वाले — शरीर के नष्ट होने पर, मृत्यु के बाद, अच्छे स्थानों, स्वर्गलोक में पुनः प्रकट होते हैं। इस प्रकार — दिव्य दृष्टि से, जो शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ है — वह प्राणियों को मरते और पुनः प्रकट होते देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके हीन और श्रेष्ठ, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है। जैसे कि किसी शहर के केंद्रीय चौक में एक ऊँची इमारत हो, और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसके ऊपर खड़ा होकर लोगों को घर में प्रवेश करते, घर से बाहर निकलते, सड़क पर चलते और केंद्रीय चौक में बैठते हुए देखे। उसके मन में यह विचार आएगा, 'ये लोग घर में प्रवेश कर रहे हैं, घर से बाहर निकल रहे हैं, सड़क पर चल रहे हैं और केंद्रीय चौक में बैठ रहे हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। वह—शुद्ध और मानवीय दृष्टि से श्रेष्ठ दिव्य दृष्टि से—प्राणित और पुनर्जन्मित प्राणियों को देखता है, और वह उनके कर्मों के अनुसार उनके निम्न और उच्चतर, सुंदर और कुरूप, सौभाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली होने का बोध करता है... जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान विशिष्टता प्राप्त कर लेता है, लोहिच्चा, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

मानसिक उथल-पुथल का अंत

इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, निर्मल, कोमल, स्थिर और अविचलित मन से भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ पाता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-वासना, कर्म-वासना और अज्ञान-वासना से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही, 'मुक्त' होने का ज्ञान प्राप्त होता है। वह समझ पाता है कि 'जन्म समाप्त हो गया है, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया है, कार्य पूरा हो गया है। इस संसार में अब कुछ भी शेष नहीं है।' जैसे कि किसी पहाड़ी घाटी में पानी का एक तालाब हो—साफ़, निर्मल और बेदाग—जहाँ किनारे पर खड़ा एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति सीपियाँ, कंकड़ और छोटे पत्थर देख सके, और साथ ही मछलियों के झुंड तैरते और आराम करते हुए देख सके, और उसके मन में यह विचार आए, 'यह तालाब साफ़, निर्मल और निर्मल है। यहाँ ये सीपियाँ, कंकड़ और छोटे पत्थर हैं, और साथ ही मछलियों के ये झुंड तैरते और आराम करते हुए हैं।' इसी प्रकार—अपने एकाग्र, शुद्ध, उज्ज्वल, दोषरहित, कोमल, लचीले, स्थिर और अविचलित मन से—भिक्षु अपने मन को मानसिक हलचलों के अंत के ज्ञान की ओर निर्देशित और प्रेरित करता है। वह यह समझ लेता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्गम है... यह तनाव का अंत है... यह तनाव के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है... ये मानसिक हलचलें हैं... यह हलचलों का उद्गम है... यह हलचलों का अंत है... यह हलचलों के अंत की ओर ले जाने वाला मार्ग है।' इस प्रकार जानकर, इस प्रकार देखकर, उसका हृदय इंद्रिय-संबंधों की हलचलों, कर्म-संबंधों की हलचलों और अज्ञान-संबंधों की हलचलों से मुक्त हो जाता है। मुक्ति के साथ ही, 'मुक्त' का ज्ञान प्राप्त होता है। वह यह समझ लेता है कि 'जन्म समाप्त हो गया है, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया है, कार्य पूरा हो गया है। इस संसार में अब कुछ भी शेष नहीं है।' जब किसी गुरु का शिष्य इस प्रकार की महान उपलब्धि प्राप्त कर लेता है, लोहिक्का, तो वह गुरु संसार में आलोचना के योग्य नहीं होता, और यदि कोई इस प्रकार के गुरु की आलोचना करे, तो वह आलोचना झूठी, असत्य, अन्यायपूर्ण और निंदनीय होगी।

यह सुनकर ब्राह्मण लोहिच्च ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे गुरु गौतम, ऐसा लगता है जैसे किसी व्यक्ति ने नरक के गड्ढे में गिरते हुए दूसरे व्यक्ति को उसके बाल पकड़कर ऊपर खींच लिया हो और उसे स्थिर कर दिया हो। ठीक उसी प्रकार, गुरु गौतम ने मुझे नरक के गड्ढे में गिरते समय ऊपर खींच लिया और स्थिर कर दिया। हे गुरु गौतम, आप महान हैं! आप महान हैं! जैसे कोई उलटी हुई चीज़ को सीधा कर दे, छिपी हुई चीज़ को प्रकट कर दे, भटके हुए को रास्ता दिखा दे, या अंधेरे में दीपक जलाकर आँखों वाले को आकृतियाँ दिखा दे, ठीक उसी प्रकार गुरु गौतम ने अनेक तर्कों के द्वारा धम्म को स्पष्ट किया है। मैं गुरु गौतम की शरण में, धम्म की शरण में और भिक्षुओं के समुदाय की शरण में जाता हूँ। गुरु गौतम मुझे आज से जीवन भर के लिए एक गृहस्थ अनुयायी के रूप में याद रखें, जिसने उनकी शरण ली है।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> सिलकखंड-वग्गा >> 1.13: तेविज्जा सुत्त (डीएन 13)

1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार जब भगवान अपने लगभग पाँच सौ भाइयों के साथ कोसल से होकर यात्रा कर रहे थे, तब वे कोसल के एक ब्राह्मण गाँव, मानसकण में पहुँचे। वहाँ मानसकण में, भगवान मानसकण के उत्तर में अचिरवता नदी के किनारे स्थित आम के बाग में ठहरे।

2. उस समय बहुत से प्रतिष्ठित और धनी ब्राह्मण मानसकण में ठहरे हुए थे; जैसे कैका ब्राह्मण, तारुक्खा ब्राह्मण, पोक्खरसादी ब्राह्मण, जौसूणी ब्राह्मण, तोदेय्या ब्राह्मण और अन्य बहुत से प्रतिष्ठित और धनी ब्राह्मण।

3. अब वासेंझ और भारद्वाज के बीच (स्नान के बाद) टहलते हुए और विचारमग्न होकर इस बात पर बातचीत छिड़ गई कि सच्चा मार्ग कौन सा है और झूठा कौन सा।

4. युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ ने इस प्रकार कहा:

'यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष की ओर ले जाने वाला प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, वह ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में पहुँच जाता है। मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्राह्मण पोक्खरसादी ने की है।'

5. युवा ब्राह्मण भारद्वाज ने इस प्रकार कहा:

'यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष की ओर ले जाने वाला प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, उसे ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में ले जाता है। मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्रह्म तारुक्ख ने की है।'

6. परन्तु न तो युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ युवा ब्राह्मण भारद्वाज को मना सका, और न ही युवा ब्राह्मण भारद्वाज युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ को मना सका।

7. तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ ने युवा ब्राह्मण भारद्वाज से कहा:

"शाक्यों वंश के पुत्र भारद्वाज, समॅ ...

हे भारद्वाज, आइए हम उस स्थान पर चलें जहाँ समाॅगौतम विराजमान हैं; और वहाँ पहुँचकर हम समाॅगौतम से इस विषय में प्रश्न करें। समाॅगौतम जो कुछ भी हमें बताएँ, उसे हम ध्यान में रखें।

'बहुत खूब, मेरे मित्र!' युवा ब्राह्मण भारद्वाज ने युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ की बात से सहमति जताते हुए कहा।

8. तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ और युवा ब्राह्मण भारद्वाज उस स्थान पर गए जहाँ भगवान विराजमान थे।

और जब वे वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने परम पूज्य ईश्वर से शिष्टाचार और विनम्रता के अभिवादन और शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया और उनके बगल में बैठ गए।

और जब वे इस प्रकार बैठे थे, तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ह ने परमेश्वर से कहा:

गौतम जी, जब हम व्यायाम कर रहे थे और इधर-उधर टहल रहे थे, तभी हमारे बीच इस बात पर चर्चा शुरू हुई कि सच्चा मार्ग कौन सा है और झूठा कौन सा। मैंने इस प्रकार कहा:

"यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष की ओर ले जाने वाला प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, उसे ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में ले जाता है। मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्राह्मण पोक्खरसादि ने की है।"

भारद्वाज ने इस प्रकार कहा:

"यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष का प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, वह ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में पहुँच जाता है। मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्रह्म तारुक्ख ने की है।"

'इस मामले में, गौतम, हमारे बीच कलह, विवाद और मतभेद है।'

9. `तो तुम कहते हो, वासेन्हा, कि तुमने ऐसा कहा:

यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष की ओर ले जाने वाला प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है उसे ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में ले जाता है।

मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्राह्मण पोक्खरसादी ने की है।

भारद्वाज ने इस प्रकार कहा:

"यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष का प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, वह ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में पहुँच जाता है। मेरा तात्पर्य उस बात से है जिसकी घोषणा ब्रह्म तारुक्ख ने की है।"

तो फिर, हे वासेंह, तुम दोनों के बीच किस बात को लेकर कलह, विवाद या मतभेद है?

10. हे गौतम, सही और गलत मार्ग के विषय में। हे गौतम, अनेक ब्राह्मण अनेक मार्ग सिखाते हैं। अद्धरिया ब्राह्मण, तित्तिरिया ब्राह्मण, चंदोका ब्राह्मण, बावहरिजा ब्राह्मण। क्या ये सभी उद्धार के मार्ग हैं? क्या ये सभी ऐसे मार्ग हैं जो इन पर चलने वाले व्यक्ति को ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में ले जाएंगे?

'हे गौतम, जिस प्रकार किसी गाँव या कस्बे के पास अनेक और विभिन्न मार्ग होते हैं, परन्तु वे सब गाँव में आकर मिल जाते हैं, ठीक उसी प्रकार विभिन्न ब्राह्मणों द्वारा सिखाए गए अनेक मार्ग हैं - अधदरिया ब्राह्मण, तित्तिरिया ब्राह्मण, चंदोका ब्राह्मण (चंदवा ब्राह्मण), बवहरिजा ब्राह्मण। क्या ये सभी मार्ग मोक्षदायी हैं? क्या ये सभी मार्ग ऐसे हैं जो इन पर चलने वाले को ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था तक ले जाते हैं?'

11. 'क्या आप कहते हैं कि वे सभी सही राह पर चल रहे हैं, वासेन्हा?'

'मैं भी यही कहता हूं, गौतम।'

क्या आप सचमुच कहते हैं कि वे सभी सही नेतृत्व करते हैं, वासेन्हा?

तो मैं कहता हूँ, गौतम।

12.1 लेकिन फिर भी, वासेञ्ञ, क्या तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों में से एक भी ऐसा है जिसने ब्रह्मा को प्रत्यक्ष रूप से देखा हो?

नहीं, बिलकुल नहीं, गौतम।

या फिर, वासेञ्ञ, क्या ब्राह्मणों के उन शिक्षकों में से कोई एक ऐसा है जो तीनों वेदों का ज्ञाता है और जिसने ब्रह्मा को प्रत्यक्ष रूप से देखा है?

नहीं, बिलकुल नहीं, गौतम!

'क्या वासेञ्ञ, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों के शिष्यों में से कोई एक भी ऐसा है जिसने ब्रह्मा को साक्षात देखा हो?' 'नहीं, बिलकुल नहीं, गौतम!'

या फिर, वासेञ्ञ, क्या सातवीं पीढ़ी तक ब्राह्मणों में से एक भी ऐसा ब्राह्मण है जिसने ब्रह्मा को प्रत्यक्ष रूप से देखा हो?

नहीं, बिलकुल नहीं, गौतम!

13. `तो फिर, वासेञ्ञ, वे प्राचीन ब्राह्मण ऋषि जो तीनों वेदों में पारंगत थे, श्लोकों के रचयिता, श्लोकों के उद्घोषक, जिनके प्राचीन शब्द रूप का इस प्रकार जप, उच्चारण या रचना की गई थी, आज के ब्राह्मण उनका पुनः जप करते हैं या दोहराते हैं; ठीक उसी प्रकार उच्चारण या पाठ करते हैं जैसे पहले किया गया था, अर्थात् अञ्ञक, वामक, वामदेव, वेस्सामित्त, यमतग्गी, ऐंगिरिस, भारद्वाज, वासेञ्ञ, कस्सप और भगु ने भी इस प्रकार कहा था: "हम जानते हैं, हमने देखा है, ब्रह्मा कहाँ हैं, ब्रह्मा कहाँ से हैं?"'

'ऐसा नहीं है, गौतम!'

14. तब आप कहते हैं, वासेञ्ञ, कि सातवीं पीढ़ी तक भी किसी ब्राह्मण ने, न उनके गुरुओं ने, न उनके शिष्यों ने, न ही ब्रह्मा को प्रत्यक्ष रूप से देखा है। और प्राचीन ऋषियों ने भी, जिन्होंने श्लोकों की रचना की और उनका उच्चारण किया, उन प्राचीन शब्दों के लिए जिन्हें आज के ब्राह्मण इतनी सावधानी से उच्चारित करते हैं और ठीक उसी रूप में सुनाते हैं जैसे वे उन्हें विरासत में मिले हैं, उन्होंने भी ब्रह्मा के स्थान, उत्पत्ति और गंतव्य को जानने या देखने का दावा नहीं किया। अतः तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों ने वास्तव में कहा है: "जिसे हम नहीं जानते, जिसे हमने नहीं देखा, उसके साथ एकात्मता की अवस्था तक हम मार्ग दिखा सकते हैं, और कह सकते हैं: 'यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष का प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, वह ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था में पहुँच जाता है!'"

अब, वासेञ्ञा, तुम क्या सोचते हो? क्या यह बात इस तथ्य से स्पष्ट नहीं होती कि ब्राह्मणों की बातें, यद्यपि वे तीनों वेदों के ज्ञाता हैं, मूर्खतापूर्ण सिद्ध होती हैं?

सत्यतः, गौतम, ऐसी स्थिति में, यह निष्कर्ष निकलता है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं!

15. `सत्य ही, वासेञ्ञ, यह बात किसी भी तरह से संभव नहीं है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण उस चीज़ के साथ एकात्मता की अवस्था का मार्ग बता सकें जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है!

'हे वासेंह, जैसे जब अंधों की एक कतार एक दूसरे से चिपकी रहती है, तो न तो आगे वाला देख पाता है, न बीच वाला, न पीछे वाला, ठीक वैसे ही, हे वासेंह, मुझे लगता है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें भी सरासर अंधों की बातें हैं: पहला नहीं देख पाता, बीच वाला नहीं देख पाता, और न ही सबसे पीछे वाला देख पाता है। इसलिए तीनों वेदों में पारंगत इन ब्राह्मणों की बातें हास्यास्पद, मात्र शब्द, व्यर्थ और खोखली साबित होती हैं!'

16. 'अब तुम क्या सोचते हो, वासेञ्ञ? क्या तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण, अन्य साधारण लोगों की तरह, चंद्रमा और सूर्य को देख सकते हैं, जब वे प्रार्थना करते हैं, उनकी स्तुति करते हैं और उनकी पूजा करते हैं, और उनके उदय और अस्त होने के स्थान की ओर हाथ जोड़कर परिक्रमा करते हैं?'

'बिल्कुल, गौतम, वे कर सकते हैं।'

17. अब तुम क्या सोचते हो, वासेञ्ञ? तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण, जो अन्य साधारण लोगों की तरह ही, प्रार्थना, स्तुति और पूजा करते हुए, हाथ जोड़कर उनके उदय और अस्त होने के स्थान की ओर मुड़ते हुए, चंद्रमा और सूर्य को भलीभांति देख सकते हैं, क्या वे तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण चंद्रमा या सूर्य के साथ एकात्मता की अवस्था का मार्ग बता सकते हैं, यह कहते हुए: "यही सीधा मार्ग है, यही मोक्ष का प्रत्यक्ष मार्ग है, और जो इस मार्ग पर चलता है, उसे चंद्रमा या सूर्य के साथ एकात्मता की अवस्था तक ले जाता है?"

बिलकुल नहीं, गौतम।

18. `तो आप कहते हैं, वासेञ्ञ, कि ब्राह्मण उस चीज़ से एकात्म होने का मार्ग नहीं बता सकते जिसे उन्होंने देखा है, और आप यह भी कहते हैं कि न तो उनमें से किसी ने, न उनके शिष्यों ने, न ही उनकी सातवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों ने कभी ब्रह्मा को देखा है। और आप यह भी कहते हैं कि प्राचीन ऋषियों ने भी, जिनके वचनों का वे इतना आदर करते हैं, यह दावा नहीं किया कि वे जानते हैं, न ही उन्होंने देखा है कि ब्रह्मा कहाँ हैं, कहाँ से हैं या कहाँ जा रहे हैं। फिर भी ये तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण कहते हैं कि वे उस चीज़ से एकात्म होने का मार्ग

बता सकते हैं जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है। अब आप क्या सोचते हैं, वासेञ्ज? क्या यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि, ऐसा होने पर, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण साबित होती हैं?'

'सचमुच, गौतम, ऐसा होने पर तो यह सिद्ध होता है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं!'

19. 'बहुत अच्छा, वासेञ्ह। तो फिर, वासेञ्ह, यह बात किसी भी तरह से संभव नहीं है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण उस चीज़ के साथ एकात्मता की अवस्था का मार्ग दिखा सकें जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है!'

'बस, वासेन्हा, मानो कोई पुरुष कहे, "मैं इस देश की सबसे खूबसूरत महिला के लिए कितना तरसता हूँ, मैं उससे कितना प्यार करता हूँ!"'

और लोगों को उससे पूछना चाहिए, "अच्छा! मेरे प्रिय मित्र! इस देश की सबसे सुंदर स्त्री, जिसे तुम इतना प्यार करते हो और जिसके लिए तरसते हो, क्या तुम जानते हो कि वह सुंदर स्त्री कुलीन महिला है या ब्राह्मण स्त्री, या व्यापारी वर्ग की है या साद्र है?"

लेकिन जब उससे ऐसा पूछा जाए, तो उसे उत्तर देना चाहिए: "नहीं।"

और जब लोग उससे पूछें, "हे मेरे प्रिय मित्र! इस देश की सबसे सुंदर स्त्री, जिसे तुम इतना प्यार करते हो और जिसके लिए तरसते हो, क्या तुम जानते हो कि उस सबसे सुंदर स्त्री का नाम क्या है, या उसका पारिवारिक नाम क्या है, क्या वह लंबी है या छोटी या मध्यम कद की, सांवली है या भूरे बालों वाली या सुनहरे बालों वाली, या वह किस गाँव या कस्बे या शहर में रहती है?"

लेकिन जब उससे ऐसा पूछा जाए, तो उसे उत्तर देना चाहिए: "नहीं"।

और फिर लोग उससे कहेंगे, तो फिर, हे मेरे मित्र, जिसे तुम न तो जानते हो और न ही देखा है, क्या तुम उसी से प्रेम करते हो और उसके लिए तरसते हो?

और जब उससे ऐसा पूछा जाए, तो उसे उत्तर देना चाहिए: "हाँ।"

अब तुम क्या सोचते हो, वासेंहा? क्या ऐसा नहीं होगा कि उस आदमी की बातें मूर्खतापूर्ण थीं?

"सचमुच, गौतम, ऐसा होने पर यह पता चलेगा कि उस आदमी की बातें मूर्खतापूर्ण थीं!"

20. "हे वासेञ्ञ, यद्यपि मैं कहता हूँ कि ब्राह्मण उस चीज़ से एकात्म होने का मार्ग नहीं बता सकते जिसे उन्होंने देखा है, और आप यह भी कहते हैं कि न तो उनमें से किसी ने, न उनके शिष्यों ने, न ही उनकी सातवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों ने कभी ब्रह्मा को देखा है। और आप यह भी कहते हैं कि प्राचीन ऋषियों ने भी, जिनके वचनों का वे इतना आदर करते हैं, यह दावा नहीं किया कि वे जानते हैं, न ही उन्होंने देखा है कि ब्रह्मा कहाँ हैं, कहाँ से हैं या कहाँ जा रहे हैं। फिर भी ये तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण कहते हैं कि वे उस चीज़ से एकात्म होने का मार्ग बता सकते हैं जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है। अब आप क्या सोचते हैं, वासेञ्ज? क्या यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि, ऐसा होने पर, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं?"

'सचमुच, गौतम, ऐसा होने पर तो यह सिद्ध होता है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं!'

'बहुत अच्छा, वासेञ्च। तो फिर, वासेञ्च, यह बात किसी भी तरह से संभव नहीं है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण उस चीज के साथ एकात्मता की अवस्था का मार्ग दिखा सकें जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है।'

21. "हे वासेंह, मान लो कि कोई व्यक्ति चार सड़कों के चौराहे पर एक सीढ़ी बनाकर किसी महल में चढ़ता है। और लोग उससे कहते हैं, "हे मित्र, जिस महल में चढ़ने के लिए तुम यह सीढ़ी बना रहे हो, क्या तुम जानते हो कि वह पूर्व में है, या दक्षिण में, या पश्चिम में, या उत्तर में? क्या वह ऊँचा है, या नीचा है, या मध्यम आकार का है?""

और जब उससे ऐसा पूछा जाए, तो उसे उत्तर देना चाहिए: "नहीं"।

और लोग उससे कहेंगे, "लेकिन फिर, मेरे प्रिय मित्र, तुम किसी चीज़ पर चढ़ने के लिए सीढ़ी बना रहे हो, उसे एक हवेली समझ रहे हो, जिसके बारे में तुम न तो जानते हो और न ही तुमने उसे देखा है!"

और जब उससे ऐसा पूछा जाए, तो उसे उत्तर देना चाहिए: "हाँ"।

अब तुम क्या सोचते हो, वासेंहा? क्या ऐसा नहीं होगा कि उस आदमी की बातें मूर्खतापूर्ण थीं?

"सचमुच, गौतम, ऐसा होने पर यह पता चलेगा कि उस आदमी की बातें मूर्खतापूर्ण थीं!"

22. "हे वासेञ्ज, यद्यपि तुम कहते हो कि ब्राह्मण उस वस्तु से एकात्म होने का मार्ग नहीं बता सकते जिसे उन्होंने देखा है, और तुम यह भी कहते हो कि न तो उनमें से किसी ने, न उनके शिष्यों ने, न ही उनकी सातवीं पीढ़ी तक के पूर्वजों ने कभी ब्रह्मा को देखा है। और तुम यह भी कहते हो कि प्राचीन ऋषियों ने भी, जिनके वचनों का वे इतना आदर करते हैं, यह दावा नहीं किया कि वे जानते हैं, न ही उन्होंने देखा है कि ब्रह्मा कहाँ हैं, कहाँ से आए हैं या कहाँ जा रहे हैं। फिर भी ये तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण कहते हैं कि वे उस वस्तु से एकात्म होने का मार्ग बता सकते हैं जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है! अब तुम क्या सोचते हो, वासेञ्ज? क्या यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि, ऐसा होने पर, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं?"

'सचमुच, गौतम, ऐसा होने पर तो यह सिद्ध होता है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें मूर्खतापूर्ण हैं!'

23. 'बहुत अच्छा, वासेञ्ज। तो फिर, वासेञ्ज, यह बात किसी भी तरह से संभव नहीं है कि तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण उस चीज के साथ एकात्मता की अवस्था का मार्ग दिखा सकें जिसे वे न तो जानते हैं और न ही देखा है।'

24. "हे वासेञ्ञा, मान लो कि अचिरावत नदी जल से लबालब भरी हो और उफान पर हो। और कोई व्यक्ति जो उस पार काम से जा रहा हो, उस पार जाने के लिए निकल पड़े, और उस पार जाना चाहे, तो वह इस किनारे पर खड़ा होकर दूसरे किनारे से प्रार्थना करे, और कहे, 'हे दूसरे किनारे, इधर आओ! इस तरफ आ जाओ!'"

अब आप क्या सोचते हैं, वासेन्हा? क्या उस व्यक्ति के आह्वान, प्रार्थना, आशा और स्तुति के कारण अचिरावाता नदी का दूर वाला किनारा इस तरफ आ जाएगा?

बिलकुल नहीं, गौतम!

25. ठीक इसी प्रकार, वासेञ्ज, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण, उन गुणों का अभ्यास न करके जो वास्तव में मनुष्य को ब्राह्मण बनाते हैं, और उन गुणों का अभ्यास अपनाकर जो वास्तव में मनुष्य को गैर-ब्राह्मण बनाते हैं, इस प्रकार कहते हैं: "इंद्र का आह्वान करें, सोम का आह्वान करें, वरुण का आह्वान करें, आसन का आह्वान करें, प्रजापति का आह्वान करें, ब्रह्मा का आह्वान करें, महिद्धि का आह्वान करें, यम का आह्वान करें!" हे वासेञ्ज, यह बात किसी भी प्रकार से संभव नहीं है कि वे ब्राह्मण जो तीनों वेदों में पारंगत हैं, उन गुणों का अभ्यास न करें जो वास्तव में मनुष्य को ब्राह्मण बनाते हैं, और उन गुणों का अभ्यास करें जो वास्तव में मनुष्य को गैर-ब्राह्मण बनाते हैं, और वे अपने आह्वान, प्रार्थना, आशा और स्तुति के कारण, मृत्यु के बाद और शरीर के विलीन होने पर ब्रह्मा में विलीन हो जाएं!

26. "हे वासेंह, मान लीजिए कि अचिरावत नदी पूरी तरह से भरी हुई है और उफान पर है। और एक आदमी जो उस पार काम से जा रहा है, यहाँ आकर नदी पार करना चाहे। और वह इस किनारे पर एक मजबूत जंजीर से कसकर बंधा हो, उसके हाथ पीछे की ओर बंधे हों। अब हे वासेंह, क्या आप सोचते हैं कि वह आदमी अचिरावत नदी के इस किनारे से दूसरे किनारे तक कैसे पहुँच पाएगा?"

बिलकुल नहीं, गौतम!

27. `इसी प्रकार, वासेञ्ज्हा, पाँच ऐसी चीजें हैं जो कामवासना की ओर ले जाती हैं, जिन्हें अरहतों के अनुशासन में "श्रृंखला" और "बंधन" कहा जाता है।'

वे पाँच कौन-कौन से हैं?

आँखों से दिखाई देने वाले रूप; मनभावन, सुखद, आकर्षक रूप, जो कामवासना से प्रेरित होते हैं और आनंद उत्पन्न करते हैं। कानों से सुनाई देने वाली वैसी ही ध्वनियाँ। नाक से सुनाई देने वाली वैसी ही गंधें। जीभ से महसूस होने वाले वैसे ही स्वाद। स्पर्श से शरीर को महसूस होने वाले वैसे ही पदार्थ। कामवासना को प्रेरित करने वाली इन पाँच चीजों को अरहतों के अनुशासन में "शंख" और "बंधन" कहा जाता है। और कामवासना को प्रेरित करने वाली इन पाँच चीजों, वासेञ्ज, से तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण चिपके रहते हैं, वे इनसे मोहित हो जाते हैं, इनसे आसक्त हो जाते हैं, इनके नर्क को नहीं देखते, इनकी अनिश्चितता को नहीं जानते, और इस प्रकार इनका आनंद लेते हैं।

28. "और हे वासेञ्ज, निश्चय ही, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण, जो वास्तव में मनुष्य को ब्राह्मण बनाने वाले गुणों का अभ्यास नहीं करते, और वास्तव में मनुष्य को गैर-ब्राह्मण बनाने वाले गुणों का अभ्यास करते हैं, इन पाँच चीजों से आसक्त होकर, जो वासना को प्रेरित करती हैं, इनसे मोहित होकर, इनसे लगाव रखते हुए, इनके खतरे को अनदेखा करते हुए, इनकी अविश्वसनीयता को जाने बिना, इनका आनंद लेते हैं, और मृत्यु के बाद, शरीर के विघटन पर, ये ब्राह्मण ब्रह्मा में विलीन हो जाते हैं, ऐसी स्थिति किसी भी प्रकार से संभव नहीं है!"

29. "हे वासेंहा, मान लो कि अचिरावत नदी पानी से लबालब भरी हो और उफान पर हो। और कोई व्यक्ति जो उस पार काम से जा रहा हो, यहाँ आकर पार करना चाहे। और यदि वह अपने सिर तक खुद को ढककर इस किनारे पर सोने के लिए लेट जाए।"

अब तुम क्या सोचते हो, वासेंहा? क्या वह आदमी असिरावता नदी के इस किनारे से दूसरे किनारे तक पहुँच पाएगा?

बिलकुल नहीं, गौतम!

30. `इसी प्रकार, वासेञ्हा, अरहतों के अनुशासन में ये पाँच बाधाएँ हैं, जिन्हें "पर्दा", "बाधाएँ", "अड़चनें" और "उलझाव" कहा जाता है।'

वे पाँच कौन-कौन से हैं?

सांसारिक वासनाओं की बाधा, द्वेष की बाधा, मन और हृदय की सुस्ती और आलस्य की बाधा, घबराहट और चिंता की बाधा, अनिश्चितता की बाधा।

ये पाँच बाधाएँ, वासेञ्ह हैं, जिन्हें अरहतों के अनुशासन में पर्दा, अवरोध, अड़चन और उलझन कहा जाता है।

अब इन पांच बाधाओं के कारण, वासेञ्ह, तीनों वेदों में पारंगत ब्राह्मण भी आवरणग्रस्त, बाधित, अवरुद्ध और उलझे हुए हैं।

और हे वासेञ्ज, यह तो किसी भी प्रकार से संभव नहीं है कि वे ब्राह्मण जो तीनों वेदों में पारंगत हैं, उन गुणों का अभ्यास न करें जो वास्तव में मनुष्य को ब्राह्मण बनाते हैं, और उन गुणों का अभ्यास करें जो वास्तव में मनुष्य को गैर-ब्राह्मण बनाते हैं; वे पाँच बाधाओं से घिरे, अवरुद्ध, अवरुद्ध और उलझे हुए हों; और मृत्यु के बाद, शरीर के विघटन पर, वे ब्राह्मण ब्रह्मा में विलीन हो जाएँ!

31. 'हे वासेञ्ज, अब तुम क्या सोचते हो, और तुमने वृद्ध और वृद्ध ब्राह्मणों से क्या सुना है, जब शिष्य और गुरु आपस में बातचीत कर रहे होते हैं? क्या ब्रह्मा पत्नियों और धन के स्वामी हैं या नहीं?'

'वो गौतम नहीं है।'

क्या उसका मन क्रोध से भरा हुआ है, या क्रोध से मुक्त है?

क्रोध से मुक्त हो जाओ, गौतम।

क्या उसका मन द्वेष से भरा है, या द्वेष से मुक्त है?

'गौतम, द्वेष से मुक्त रहो।'

क्या उसका मन दूषित है, या फिर शुद्ध है?

'यह शुद्ध है, गौतम।'

क्या उसमें आत्मसंयम है, या नहीं?'

'हाँ, गौतम।'

32. 'अब तुम क्या सोचते हो, वासेञ्ञ, क्या वेदों में पारंगत ब्राह्मणों के पास पत्नियाँ और धन होते हैं या नहीं?'

'हाँ, गौतम।'

क्या उनके दिलों में क्रोध है या नहीं?

'उन्होंने कर दिया है, गौतम।'

क्या वे द्वेष रखते हैं, या नहीं?

'हाँ, गौतम।'

क्या वे हृदय से शुद्ध हैं या नहीं?

'वे नहीं हैं, गौतम।'

क्या उनमें आत्म-नियंत्रण है, या नहीं?

'उन्होंने ऐसा नहीं किया है, गौतम।'

33. `तो फिर तुम कहते हो, वासेञ्ञ, कि ब्राह्मणों के पास पत्नियाँ और धन-संपत्ति है, जबकि ब्रह्मा के पास नहीं है। क्या फिर ब्राह्मणों (जिनके पास पत्नियाँ और संपत्ति है) और ब्रह्मा (जिनके पास इनमें से कुछ भी नहीं है) के बीच समानता और एकरूपता हो सकती है?'

बिलकुल नहीं, गौतम!

34. 'बहुत अच्छा, वासेञ्ञ। लेकिन, यह बात तो बिलकुल भी संभव नहीं है कि वेदों में पारंगत ये ब्राह्मण, जो विवाहित और धनी जीवन व्यतीत करते हैं, मृत्यु के बाद, जब उनका शरीर नष्ट हो जाता है, ब्रह्मा से मिल जाएं, जिनके पास ये सब कुछ नहीं है!'

35. `तो फिर आप यह भी कहते हैं, वासेञ्ञ, कि ब्राह्मण अपने हृदयों में क्रोध और द्वेष धारण करते हैं, और हृदय से दूषित और अनियंत्रित होते हैं, जबकि ब्रह्मा क्रोध और द्वेष से मुक्त, हृदय से शुद्ध और आत्म-संयमित होते हैं। तो क्या ब्राह्मणों और ब्रह्मा के बीच सामंजस्य और समानता हो सकती है?'

बिलकुल नहीं, गौतम!

36. `बहुत अच्छा, वासेञ्ञ। ये ब्राह्मण, जो वेदों में पारंगत हैं, फिर भी अपने हृदय में क्रोध और द्वेष लिए हुए हैं, पापी और अनियंत्रित हैं, और मृत्यु के बाद, जब शरीर नष्ट हो जाता है, तो ब्रह्मा से मिल जाते हैं, जो क्रोध और द्वेष से मुक्त, हृदय से शुद्ध और आत्म-संयमित हैं, ऐसी स्थिति किसी भी तरह से संभव नहीं है!`

इसलिए, वासेञ्ञ, ब्राह्मण, यद्यपि वे तीनों वेदों में पारंगत हैं, जब वे (विश्वास में) बैठते हैं, तो वे (कीचड़ में) डूबते जा रहे हैं; और इस प्रकार डूबते हुए वे केवल निराशा की ओर बढ़ रहे हैं, जबकि वे यह सोच रहे हैं कि वे किसी सुखी भूमि में प्रवेश कर रहे हैं।

इसलिए ब्राह्मणों की त्रिविध बुद्धि, जो अपने तीनों वेदों में पारंगत हैं, को जलहीन रेगिस्तान कहा जाता है, उनकी त्रिविध बुद्धि को पथहीन जंगल कहा जाता है, उनकी त्रिविध बुद्धि को विनाश कहा जाता है!

37. जब उन्होंने ऐसा कहा, तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ ने भगवान से कहा:

'मुझे बताया गया है, गौतम, कि समा॑ गौतम ब्रह्मा के साथ मिलन की अवस्था प्राप्त करने का मार्ग जानते हैं।'

'वासेन्हा, तुम्हारा क्या विचार है, क्या मनसाकणा इस स्थान के निकट नहीं है, या इससे दूर नहीं है?'

'बिल्कुल सही, गौतम। मनसाकण यहाँ से निकट ही है, दूर नहीं है।'

अब, वासेञ्ह, आप क्या सोचते हैं? मान लीजिए कि कोई व्यक्ति मनसाकण में पैदा हुआ हो, और लोग उससे, जो उस समय तक कभी मनसाकण से बाहर नहीं निकला हो, पूछें कि मनसाकण जाने का रास्ता क्या है? क्या मनसाकण में पैदा हुए और पले-बढ़े उस व्यक्ति को कोई संदेह या कठिनाई होगी?

बिलकुल नहीं, गौतम! और क्यों? यदि वह व्यक्ति मानसकण में पैदा हुआ और पला-बढ़ा होता, तो मानसकण की ओर जाने वाला हर रास्ता उसे भली-भांति परिचित होता।

38. 'हे वासेञ्ह, जो मनसाकण में पैदा हुआ और पला-बढ़ा है, अगर उससे मनसाकण का मार्ग पूछा जाए तो वह संशय और कठिनाई में पड़ जाएगा, परन्तु तथागत को ब्रह्मा लोक की ओर ले जाने वाले मार्ग के विषय में पूछे जाने पर न तो संशय हो सकता है और न ही कठिनाई। क्योंकि हे वासेञ्ह, मैं ब्रह्मा को जानता हूँ, ब्रह्मा लोक को जानता हूँ, और उस मार्ग को भी जानता हूँ जो ब्रह्मा लोक में प्रवेश कर चुका है और उसमें जन्म ले चुका है!'

39. जब उसने ऐसा कहा, तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ ने भगवान से कहा:

मुझे भी यही बताया गया है, गौतम, कि समा॑ गौतम ब्रह्मा के साथ मिलन की अवस्था का मार्ग जानते हैं। यह अच्छा है! आदरणीय गौतम कृपा करके हमें ब्रह्मा के साथ मिलन की अवस्था का मार्ग दिखाएँ, आदरणीय गौतम ब्राह्मण जाति का उद्धार करें!

'तो सुनो, वासेन्हा, और ध्यान से सुनो, और मैं बोलूंगा!'

'ऐसा ही हो, भगवान!' युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ ने भगवान से सहमति जताते हुए कहा।

40. तब भगवान बुद्ध ने कहा:

हे वासेञ्ह, जान लो कि समय-समय पर तथागत इस संसार में जन्म लेते हैं, एक अरहत, पूर्णतः जागृत, ज्ञान और सत्त्व से परिपूर्ण, संसार के ज्ञान से परिपूर्ण, मनुष्यों के लिए अद्वितीय मार्गदर्शक, देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक, एक धन्य पुरुष, एक बुद्ध। वे स्वयं ही इस ब्रह्मांड को भली-भांति समझते और देखते हैं, मानो स्वर्ग के लोकों को देवताओं, मारों और ब्रह्माओं के साथ-साथ पाताल लोकों को उनके सामंतों और ब्राह्मणों, राजकुमारों और प्रजाओं के साथ; और फिर वे अपना ज्ञान दूसरों को प्रकट करते हैं। वे सत्य का प्रचार अक्षरशः और भावस्वरूप करते हैं, जो अपने उद्गम में सुंदर, अपने विकास में सुंदर और अपने समापन में सुंदर है; वे उच्चतर जीवन को उसकी संपूर्ण पवित्रता और संपूर्ण पूर्णता में प्रकट करते हैं।

41. गृहस्थ (गृहपति), या उसका कोई बच्चा, या किसी भी वर्ग का निम्न कुल का व्यक्ति उस सत्य को सुनता है। सत्य को सुनकर उसे तथागत में आस्था हो जाती है, और जब उसे वह आस्था प्राप्त हो जाती है तो वह इस प्रकार मन में विचार करता है:

गृहस्थ जीवन बाधाओं से भरा है, यह वासनाओं से दूषित मार्ग है: सांसारिक चीजों का त्याग करने वाले का जीवन वायु के समान मुक्त है। गृहस्थ जीवन में पूर्णतः, पूर्णतः, पूर्णतः परिपूर्णता में जीना गृहस्थ के लिए कितना कठिन है! इसलिए मुझे अपने बाल और दाढ़ी काट देने चाहिए, मुझे नारंगी रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए, और मुझे गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में चले जाना चाहिए।

फिर कुछ ही समय बाद, वह अपनी सारी संपत्ति, चाहे वह बड़ी हो या छोटी; अपने रिश्तेदारों के समूह, चाहे वे बहुत हों या कम, को त्यागकर अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लेता है, नारंगी रंग के वस्त्र धारण कर लेता है और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में चला जाता है।

42. जब वह इस प्रकार संन्यासी बन जाता है, तो वह उस संयम से भरा जीवन व्यतीत करता है जो संन्यासी के लिए अनिवार्य है। सत्यनिष्ठा उसका आनंद है, और वह उन छोटी से छोटी चीजों में भी खतरा देखता है जिनसे उसे बचना चाहिए। वह उपदेशों को अपनाता है और उनका पालन-पोषण करता है। वह अपने वचन और कर्म से अच्छाई को अपनाता है। वह अपने जीवन को पूर्णतः शुद्ध साधनों से चलाता है; उसका आचरण अच्छा होता है, वह अपनी इंद्रियों के द्वार पर पहरा देता है; सचेत और आत्मसंयमित होकर वह पूर्णतः सुखी रहता है!

43-75. `और, वासेन्हा, उसका आचरण कैसे अच्छा है?'

76. 'और वह अपने मन को प्रेम के विचारों से संसार के एक चौथाई भाग में व्याप्त कर लेता है, फिर दूसरे भाग में, फिर तीसरे भाग में, फिर चौथे भाग में। और इस प्रकार वह संपूर्ण विशाल संसार को, ऊपर, नीचे, चारों ओर और हर जगह, प्रेम से भरे हृदय से व्याप्त करता रहता है, जो दूरगामी, विशाल और असीम है।'

77. 'हे वासेंह, जिस प्रकार एक शक्तिशाली तुरही वादक बिना किसी कठिनाई के चारों दिशाओं में अपनी आवाज सुनाता है; उसी प्रकार आकार और जीवन वाले सभी प्राणियों में से वह किसी को भी अनदेखा या त्यागता नहीं है, बल्कि उन सभी को मुक्त मन और गहरे प्रेम से देखता है।'

'हे वासेञ्ञ, यही ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था प्राप्त करने का मार्ग है।'

78. 'और वह अपने मन को दुनिया के एक चौथाई हिस्से में दया, सहानुभूति और समभाव के विचारों से भर देता है, फिर दूसरे हिस्से में, फिर तीसरे हिस्से में, फिर चौथे हिस्से में। और इस प्रकार वह पूरी दुनिया को, ऊपर, नीचे, चारों ओर और हर जगह, दया, सहानुभूति और समभाव के हृदय से भरता रहता है, जो दूरगामी, विशाल और असीम है।'

79. 'हे वासेञ्ह, जिस प्रकार एक शक्तिशाली तुरही वादक बिना किसी कठिनाई के चारों दिशाओं में अपनी आवाज सुनाता है; उसी प्रकार वह आकार और जीवन वाले सभी प्राणियों में से किसी को भी अनदेखा या त्यागता नहीं है, बल्कि उन सभी को मुक्त मन से, गहरी दया, सहानुभूति और समभाव से देखता है।'

'हे वासेञ्ञ, यही ब्रह्मा के साथ एकात्मता की अवस्था प्राप्त करने का मार्ग है।'

80. 'अब तुम क्या सोचते हो, वासेञ्ञ्हा, क्या इस प्रकार जीवन यापन करने वाला भिक्षु स्त्रियों और धन का स्वामी होगा या नहीं?'

'वो ऐसा नहीं करेगा, गौतम!'

क्या वह क्रोध से भरा होगा, या क्रोध से मुक्त होगा?

'वह क्रोध से मुक्त हो जाएगा, गौतम!'

क्या उसका मन द्वेष से भरा होगा, या द्वेष से मुक्त होगा?

'गौतम, द्वेष से मुक्त हो!'

क्या उसका मन कलंकित होगा, या शुद्ध होगा?

'यह शुद्ध होगा, गौतम!'

क्या उसमें आत्म-संयम होगा या नहीं?

'ज़रूर करेगा, गौतम!'

81. `तो आप कहते हैं, वासेञ्ञ, कि भिक्षु गृहस्थ और सांसारिक चिंताओं से मुक्त है, और ब्रह्मा गृहस्थ और सांसारिक चिंताओं से मुक्त हैं। क्या तब भिक्षु और ब्रह्मा में कोई समानता और एकरूपता है?'

'हाँ, गौतम!'

'बहुत अच्छा, वासेञ्ञ। तो वास्तव में, वासेञ्ञ, कि गृहस्थी चिंताओं से मुक्त भिक्षु मृत्यु के बाद, जब शरीर विलीन हो जाता है, तो ब्रह्मा से एकात्म हो जाए, जो कि एक ही स्वरूप हैं, ऐसी स्थिति हर तरह से संभव है!'

तो हे वासेञ्ह, आप कहते हैं कि भिक्षु क्रोध और द्वेष से मुक्त, मन से शुद्ध और आत्म-संयमित होता है; और ब्रह्मा भी क्रोध और द्वेष से मुक्त, मन से शुद्ध और आत्म-संयमित होते हैं। तो वास्तव में, हे वासेञ्ह, जो भिक्षु क्रोध और द्वेष से मुक्त, मन से शुद्ध और आत्म-संयमित होता है, मृत्यु के बाद, जब शरीर विलीन हो जाता है, तो वह ब्रह्मा के साथ एकात्म हो जाता है, जो कि वही हैं; ऐसी स्थिति हर तरह से संभव है!

82. जब उन्होंने ऐसा कहा, तब युवा ब्राह्मण वासेञ्ञ और भारद्वाज ने भगवान बुद्ध से कहा:

हे भगवान, तेरे मुख के वचन अत्यंत उत्कृष्ट हैं! जैसे कोई गिरी हुई वस्तु को उठा दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए को सही मार्ग दिखा दे, या अंधकार में दीपक जला दे ताकि देखने वाले बाहरी चीजों को देख सकें, ठीक उसी प्रकार, हे भगवान, सत्य को अनेक उदाहरणों के द्वारा परमेश्वर ने हमें प्रकट किया है। और हम, हे भगवान, परमेश्वर को अपना मार्गदर्शक, सत्य और भाईचारा मानते हैं। परमेश्वर हमें आज से जीवन भर के लिए सच्चे शिष्य, सच्चे विश्वासी के रूप में स्वीकार करें!

अंतर्वस्तु

पाली संस्करण: पाली-अंग्रेज़ी संस्करण और पाली-देवनागरी संस्करण

मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान सावत्थी में, अनाथपिंडिका के उद्यान में, जेतवन में, करेरी कुटिया में ठहरे हुए थे। भिक्षा मांगने के बाद भोजन करने के लिए एकत्रित हुए कई भिक्षुओं के बीच करेरी मंडप में पूर्व जन्मों के विषय में गंभीर चर्चा हुई, क्योंकि वे कहने लगे, "पिछले जन्म में ऐसा था," या "वैसा था।"
और भगवान ने, मनुष्यों की क्षमताओं से परे, शुद्ध दिव्य श्रवण शक्ति से, उनकी बातें सुनीं। वे अपने आसन से उठकर करेरी मंडप में गए, वहाँ तैयार आसन पर बैठ गए और बोले, "भिक्षुओं, जब आप सब साथ बैठे थे तो आपकी क्या बातचीत चल रही थी? मैंने किस चर्चा में बाधा डाली?" और उन्होंने उन्हें बताया।
"तो, भिक्षुओं, क्या आप पूर्व जन्मों पर एक उचित प्रवचन सुनना चाहेंगे?"
"हे भगवान, अब समय आ गया है! हे शुभचिंतक, अब समय आ गया है! यदि भगवान पूर्व जन्मों पर उचित प्रवचन दें, तो भिक्षु उसे ध्यान से सुनेंगे और याद रखेंगे!"

"तो फिर, भिक्षुओं, ध्यान से सुनो, मैं बोलूंगा।"
"जी भगवान," भिक्षुओं ने उत्तर दिया, और भगवान ने कहा,
भिक्षुओं, इक्यावन युग पूर्व भगवान अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध विपस्सी संसार में अवतरित हुए। इकतीस युग पूर्व भगवान बुद्ध सिखि अवतरित हुए; उनसे ठीक इकतीसवें युग पूर्व भगवान बुद्ध वेसभु अवतरित हुए। और इस वर्तमान शुभ युग में भगवान बुद्ध काकुसंध, कोनागमना और कस्सपा संसार में अवतरित हुए। और भिक्षुओं, इस वर्तमान शुभ युग में मैं भी पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध के रूप में संसार में अवतरित हुआ हूँ।
"भगवान बुद्ध विपस्सी का जन्म क्षत्रिय वंश में हुआ था और वे क्षत्रिय परिवार में पले-बढ़े थे, भगवान बुद्ध सिखि भी इसी प्रकार; और भगवान बुद्ध वेस्सभु भी इसी प्रकार; भगवान बुद्ध ककुसंध का जन्म ब्राह्मण वंश में हुआ था और वे ब्राह्मण परिवार में पले-बढ़े थे; भगवान बुद्ध कोनागमना भी इसी प्रकार; भगवान बुद्ध कस्सपा भी इसी प्रकार; और मैं, भिक्षुओं, जो अब अरहंत और पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हूँ, का जन्म क्षत्रिय वंश में हुआ था और मैं क्षत्रिय परिवार में पले-बढ़े थे।"
"भगवान बुद्ध विपस्सी कोंडन्ना वंश के थे; भगवान सिख भी उसी वंश के थे; भगवान बुद्ध वेस्सभु भी उसी वंश के थे; भगवान बुद्ध ककुसंध कस्सपा वंश के थे; भगवान बुद्ध कोनागमना भी उसी वंश के थे; भगवान बुद्ध कस्सपा भी उसी वंश के थे; मैं, जो अब अरहंत और पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हूँ, गौतम वंश का हूँ।"
भगवान बुद्ध विपस्सी के समय में जीवन अवधि अस्सी हजार वर्ष थी; भगवान बुद्ध सिखि के समय में सत्तर हजार; भगवान बुद्ध वेस्सभु के समय में साठ हजार; भगवान बुद्ध काकुसंध के समय में चालीस हजार; भगवान बुद्ध कोनागमना के समय में तीस हजार; भगवान बुद्ध कस्सपा के समय में बीस हजार थी। मेरे समय में जीवन अवधि छोटी, सीमित और शीघ्र बीतने वाली है: बहुत कम लोग सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं।
"भगवान बुद्ध विपस्सी ने तुरही के फूल के वृक्ष की तलहटी में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया; भगवान बुद्ध सिखि ने सफेद आम के वृक्ष के नीचे; भगवान बुद्ध वेस्सभु ने साल के वृक्ष के नीचे; भगवान बुद्ध ककुसंध ने बबूल के वृक्ष के नीचे; भगवान बुद्ध कोनागमना ने अंजीर के वृक्ष के नीचे; भगवान बुद्ध कस्सपा ने बरगद के वृक्ष के नीचे; और मैंने असत्था वृक्ष की तलहटी में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया।"
"भगवान बुद्ध विप्पासी के महान शिष्यों खंडा और तिस्सा की जोड़ी थी; भगवान बुद्ध सिक्खी के पास अभिभू और संभव थे; भगवान बुद्ध वेस्साभु के पास सोना और उत्तरा थे; भगवान बुद्ध काकुसंध के पास विधुरा और संजीव थे; भगवान बुद्ध कोणगमन के पास भिय्योसा और उत्तरा थे; भगवान बुद्ध कस्सप के पास तिस्सा और भारद्वाज थे; मेरे पास अब महान शिष्यों शारिपुत्र और मोग्गल्लाना की जोड़ी है।
भगवान बुद्ध विपस्सी के शिष्यों की तीन सभाएँ थीं, एक में 6,800,000, एक में एक लाख और एक में 80 हजार भिक्षु थे, और इन तीनों सभाओं में सभी अरहंत थे; भगवान बुद्ध सिख धर्म के शिष्यों की तीन सभाएँ थीं: एक में एक लाख, एक में 80 हजार और एक में 70 हजार भिक्षु थे - सभी अरहंत; भगवान बुद्ध वेस्साभू की तीन सभाएँ थीं, एक में 80 हजार, एक में 70 हजार और एक में 60 हजार भिक्षु थे, सभी अरहंत; भगवान बुद्ध ककुसंध की एक सभा थी: 40 हजार भिक्षु - सभी अरहंत; भगवान बुद्ध कोनागमना की एक सभा थी: 30 हजार भिक्षु - सभी अरहंत; भगवान बुद्ध कस्सपा की एक सभा थी: 20 हजार भिक्षु - सभी अरहंत; मैं, भिक्षुओं, की शिष्यों की एक सभा है, 1250 भिक्षुओं की, और इस एक सभा में केवल अरहंत ही हैं।
"भगवान बुद्ध विपश्यी के निजी परिचारक भिक्षु अशोक थे; भगवान बुद्ध सिखी के खेमनकर थे; भगवान बुद्ध वेसाभु के उपसन्नक थे; भगवान बुद्ध काकुसंध के वुद्धिज थे; भगवान बुद्ध कोनागमन के सोथिजा थे; भगवान बुद्ध कस्पा के सब्बामित्त थे; मेरा मुख्य निजी परिचारक अब आनंद है।
भगवान बुद्ध विपस्सी के पिता राजा बंधुमा थे, उनकी माता रानी बंधुमती थीं और राजा बंधुमा की राजधानी बंधुमती थी। भगवान बुद्ध सिखि के पिता राजा अरुणा थे, उनकी माता रानी पभवती थीं; राजा अरुणा की राजधानी अरुणावती थी। भगवान बुद्ध वैशाभु के पिता राजा सुप्पतिता थे, उनकी माता रानी यशवती थीं; राजा सुप्पतिता की राजधानी अनोपमा थी। भगवान बुद्ध ककुसंध के पिता ब्राह्मण अग्गिदत्त थे, उनकी माता ब्राह्मण महिला विशाखा थीं। उस समय के राजा खेमा थे; उनकी राजधानी खेमावती थी। भगवान बुद्ध कनोगमना के पिता ब्राह्मण यन्नदत्त थे, उनकी माता ब्राह्मण महिला उत्तरा थीं। उस समय के राजा शोभ थे; उनकी राजधानी शोभवती थी। भगवान बुद्ध कस्सपा के पिता ब्राह्मण ब्रह्मदत्त थे, उनकी माता ब्राह्मण महिला धनवती थीं। उस समय के राजा किकी थे; उनकी राजधानी चारणसी थी। अब, भिक्षुओं, मेरे पिता राजा सुद्धोदन थे, मेरी माता रानी माया थीं, और राजसी राजधानी कपिलवस्तु थी।"
इस प्रकार भगवान ने कहा, और तब वह शुभचिंतक अपनी सीट से उठा और अपने आवास की ओर चला गया।
भगवान के जाने के तुरंत बाद, भिक्षुओं के बीच एक और चर्चा छिड़ गई।
"यह अद्भुत है, मित्रों, यह विस्मयकारी है, तथागत की महान शक्ति और सामर्थ्य - जिस प्रकार वे परिनिर्वाण प्राप्त करने वाले, बाधाओं को दूर करने वाले, भोग के मार्ग को काटने वाले, जन्म-जन्म के चक्र को समाप्त करने वाले और समस्त दुखों पर विजय प्राप्त करने वाले अतीत के बुद्धों को याद करते हैं। वे उनके जन्म, उनके नाम, उनके कुल, उनके जीवनकाल, उनसे जुड़े शिष्यों और सभाओं को याद करते हैं, 'इस प्रकार जन्म लेकर, ये भगवान ऐसे-ऐसे थे, उनके नाम, उनके कुल, उनकी साधना, उनका धर्म, उनका ज्ञान और उनकी मुक्ति ऐसी-ऐसी थी।' तो मित्रों, तथागत को वह गहन ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ जिससे वे यह याद रख पाते हैं कि, 'इस प्रकार जन्म

लेकर, ये भगवान ऐसे-ऐसे थे, उनके नाम, उनके कुल, उनकी साधना, उनका धर्म, उनका ज्ञान और उनकी मुक्ति ऐसी-ऐसी थी?' क्या किसी देवता ने उन्हें यह ज्ञान प्रकट किया?' यह उन भिक्षुओं की बातचीत थी, जो बीच में ही रुक गई।"

फिर भगवान विश्राम काल के एकांत से उठकर करेरी मंडप में गए और तैयार आसन पर बैठ गए। उन्होंने कहा,

"भिक्षुओं, जब आप सब साथ बैठे थे तो आपकी क्या बातचीत चल रही थी? मैंने किस चर्चा में बाधा डाली?" और भिक्षुओं ने उसे बताया।

"तथागत ने धम्म के सिद्धांतों के अपने गहन ज्ञान से इन बातों को समझा है; और देवताओं ने भी उन्हें बताया है। अच्छा, भिक्षुओं, क्या आप पिछले जन्मों के बारे में और अधिक सुनना चाहते हैं?"

"हे भगवान, अब समय आ गया है! हे शुभचिंतक, अब समय आ गया है! यदि भगवान पूर्व जन्मों पर उचित प्रवचन दें, तो भिक्षु उसे सुनेंगे और याद रखेंगे।"

"तो फिर, भिक्षुओं, ध्यान से सुनो, मैं बोलूंगा।"

"जी भगवान," भिक्षुओं ने उत्तर दिया, और भगवान ने कहा,

भिक्षुओं, इक्यावन युग पूर्व भगवान, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध विपस्सी संसार में अवतरित हुए। वे क्षत्रिय वंश के थे और एक क्षत्रिय परिवार में जन्मे। वे कोंडन्ना कुल के थे। उनका जीवनकाल अस्सी हजार वर्ष था। उन्होंने तुरही पुष्प वृक्ष की तलहटी में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। उनके दो श्रेष्ठ शिष्य खंडा और तिस्सा उनके प्रमुख अनुयायी थे। उनके शिष्यों की तीन सभाएँ थीं: एक में 6,800,000, दूसरी में एक लाख और तीसरी में अस्सी हजार भिक्षु, सभी अरहंत थे। उनके प्रमुख निजी सेवक भिक्षु अशोक थे। उनके पिता राजा बंधुमा और माता रानी बंधुमती थीं। राजा की राजधानी बंधुमती थी।

"और इसलिए, भिक्षुओं, बोधिसत्व विपस्सी सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक होकर तुषिता स्वर्ग से अपनी माता के गर्भ में अवतरित हुए। भिक्षुओं, यही नियम है।"

भिक्षुओं, यह नियम है कि जब कोई बोधिसत्व तुषिता स्वर्ग से अपनी माता के गर्भ में अवतरित होता है, तो इस संसार में, जिसमें देव, मार और ब्रह्मा, तपस्वी और ब्राह्मण, राजकुमार और मनुष्य सभी हैं, एक असीम, तेजस्वी प्रकाश प्रकट होता है जो सर्वोच्च देवताओं की महिमा से भी अधिक होता है। और संसार के अंत से परे जो भी अंधकारमय, अव्यवस्थित, अंधकारमय और काला स्थान है, जहाँ सूर्य और चंद्रमा की शक्तिशाली किरणें भी नहीं पहुँच पातीं, वे भी इस असीम, तेजस्वी प्रकाश से प्रकाशित होते हैं जो सर्वोच्च देवताओं की महिमा से भी अधिक होता है। और वहाँ पुनर्जन्म लेने वाले प्राणी इस प्रकाश से एक-दूसरे को पहचानते हैं और जानते हैं, 'यहाँ अन्य प्राणी भी जन्म ले चुके हैं!' और यह दस हजार गुना संसार-प्रणाली काँप उठती है, हिल उठती है और थरथरा उठती है। और यह असीम प्रकाश चमक उठता है। यही नियम है।

"यह नियम है कि जब कोई बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करता है, तो चारों दिशाओं से चार देवता उसकी रक्षा के लिए आते हैं और कहते हैं, 'कोई भी मनुष्य, कोई भी अमानवीय प्राणी, कोई भी वस्तु इस बोधिसत्व या इस बोधिसत्व की माता को हानि न पहुँचाए!' यही नियम है।"

"यह नियम है कि जब कोई बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करता है, तो उसकी माता स्वभाव से ही गुणी हो जाती है, वह किसी का जीवन लेने से, किसी की देन लेने से, यौन दुराचार से, झूठ बोलने से, और मादक पेय पदार्थों तथा आलस्य उत्पन्न करने वाली औषधियों से परहेज करती है। यही नियम है।"

"यह नियम है कि जब कोई बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करता है, तो माता के मन में किसी पुरुष से संबंधित कामुक विचार नहीं होते, और कोई भी पुरुष कामुक विचारों से उसे वश में नहीं कर सकता। यही नियम है।"

"यह नियम है कि जब कोई बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करता है, तो माता पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों का आनंद लेती है और उनसे परिपूर्ण होकर प्रसन्न होती है। यही नियम है।"

नियम यह है कि जब कोई बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करता है, तो माता किसी भी प्रकार की बीमारी से मुक्त होती हैं, वे सहज और निर्मल होती हैं, और वे अपने गर्भ में बोधिसत्व को उनके सभी अंगों और इंद्रियों सहित पूर्ण रूप से देख सकती हैं। भिक्षुओं, यह ऐसा है मानो कोई शुद्ध, उत्तम, आठ फलकों में सुगठित, निर्मल, चमकीला, दोषरहित और हर तरह से परिपूर्ण रत्न नीले, पीले, लाल, सफेद या नारंगी रंग के धागे में पिरोया गया हो। और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसे हाथ में लेकर उसका वर्णन इसी प्रकार करेगा। इसी प्रकार बोधिसत्व की माता, जो निर्मल हैं, उन्हें उनके सभी अंगों और इंद्रियों सहित पूर्ण रूप से देखती हैं। यही नियम है।

यह नियम है कि जब किसी बोधिसत्व की माता उसके जन्म के सात दिन बाद मर जाती है, तो उसका पुनर्जन्म तुषिता स्वर्ग में होता है। यही नियम है।

नियम यह है कि जहाँ अन्य स्त्रियाँ जन्म देने से पहले नौ या दस महीने तक गर्भ धारण करती हैं, वहीं बोधिसत्व की माता के साथ ऐसा नहीं है; वह जन्म देने से पहले ठीक दस महीने तक गर्भ धारण करती हैं। यही नियम है।

यह नियम है कि जहाँ अन्य स्त्रियाँ बैठकर या लेटकर प्रसव करती हैं, वहीं बोधिसत्व की माता के साथ ऐसा नहीं होता, वे खड़े होकर प्रसव करती हैं। यही नियम है।

यह नियम है कि जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से जन्म लेते हैं, तो सबसे पहले देवता उनका स्वागत करते हैं, और फिर मनुष्य, यही नियम है।

यह नियम है कि जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से जन्म लेते हैं, तो वे पृथ्वी को स्पर्श नहीं करते। चार देवता उनका स्वागत करते हैं और उन्हें उनकी माता के सामने रखते हुए कहते हैं, "हे महाराज, प्रसन्न होइए, आपको एक महान पुत्र प्राप्त हुआ है!" यही नियम है।
नियम यह है कि जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से जन्म लेते हैं, तो वे निर्मल, जल, बलगम, रक्त या किसी भी अशुद्धि से अपवित्र नहीं होते, बल्कि शुद्ध और बेदाग होते हैं। जैसे जब काशी के मलमल पर रत्न रखा जाता है, तो रत्न न तो मलमल को दूषित करता है और न ही मलमल रत्न को। ऐसा क्यों नहीं होता? क्योंकि दोनों ही शुद्ध होते हैं। ठीक उसी प्रकार बोधिसत्व निर्मल, जल, बलगम, रक्त या किसी भी अशुद्धि से अपवित्र नहीं होते, बल्कि शुद्ध और बेदाग होते हैं। यही नियम है।
"यह नियम है कि जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से प्रकट होते हैं, तो आकाश से जल की दो धाराएँ प्रकट होती हैं, एक ठंडी और दूसरी गर्म, जिनसे वे विधिपूर्वक बोधिसत्व और उनकी माता को स्नान कराते हैं। यही नियम है।"
"यह नियम है कि जन्म लेते ही बोधिसत्व उत्तर दिशा की ओर मुख करके दोनों पैरों पर दृढ़ता से खड़े हो जाते हैं, फिर सात कदम चलते हैं, और फिर एक सफेद छांव के नीचे चारों दिशाओं का अवलोकन करते हुए बैल के समान स्वर में घोषणा करते हैं, 'मैं संसार का मुखिया हूँ, संसार का सर्वोच्च हूँ, संसार का सबसे बड़ा हूँ। यह मेरा अंतिम जन्म है, अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। यही नियम है।'"
"यह नियम है कि जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से जन्म लेता है, तो इस संसार में, जिसमें देव, मार और ब्रह्मा, तपस्वी और ब्राह्मण, राजकुमार और मनुष्य सभी उपस्थित होते हैं, एक असीम, तेजस्वी प्रकाश प्रकट होता है जो सबसे शक्तिशाली देवों की महिमा से भी बढ़कर होता है। यही नियम है।"
"जब राजकुमार विपस्सी का जन्म हुआ, तो भिक्षुओं ने उन्हें राजा बंधुमा को दिखाया और कहा,
"महाराज, आपके घर पुत्र का जन्म हुआ है। हे महाराज, कृपा करके उसे देखिए।" राजा ने राजकुमार की ओर देखा और फिर संकेतों में निपुण ब्राह्मणों से कहा:
"आप सज्जन संकेतों के ज्ञाता हैं। राजकुमार की जांच कीजिए।"
ब्राह्मणों ने राजकुमार की जांच की और राजा बंधुमा से कहा,
महाराज, प्रसन्न होइए, क्योंकि आपके घर एक महान पुत्र का जन्म हुआ है। महाराज, यह आपके लिए एक बड़ा लाभ है, महाराज, कि आपके परिवार में ऐसा पुत्र जन्मा है। महाराज, यह राजकुमार एक महान पुरुष के बत्तीस गुणों से संपन्न है। ऐसे व्यक्ति के लिए केवल दो ही मार्ग खुले हैं। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो वह शासक बनेगा, धर्म का पालन करने वाला धर्मात्मा सम्राट, चारों दिशाओं का विजेता, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की है और सात रत्नों का स्वामी है। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवां रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र हैं जो वीर हैं, वीर व्यक्तित्व वाले हैं, शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने वाले हैं। उसने इस सागर से घिरे देश को बिना लाठी या तलवार के, धर्म के द्वारा जीता है। लेकिन यदि वह गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में प्रवेश करता है, तो वह अरहंत बन जाएगा, एक पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, जो संसार से पर्दा हटा देता है।
बुद्ध के बत्तीस (32) चिह्न
"और महाराज, ये बत्तीस महान व्यक्ति के लक्षण क्या हैं?"
I. उसके पैर समतल हैं।
II. उसके पैरों के तलवों पर हजार तीलियों वाले पहिए हैं
III. उसकी एड़ियाँ उभरी हुई हैं।
IV. उसकी उंगलियां और पैर की उंगलियां लंबी हैं।
V. उसके हाथ और पैर कोमल और मुलायम हैं।
VI. उसके हाथ और पैर जालीदार हैं (जालीदार?)
VII. उसके टखने बहुत ऊंचे हैं
VIII. उसके पैर हिरण जैसे हैं
IX. खड़े होकर और बिना झुके, वह अपने दोनों हाथों से अपने घुटनों को छू और रगड़ सकता है।
X. उसके पुरुष अंग एक आवरण में बंद हैं।
11. उसका रंग सुनहरा है, चमकदार।
XII. उसकी त्वचा इतनी कोमल और चिकनी है कि उस पर धूल भी नहीं चिपकती।
XIII. उसके शरीर के बाल अलग-अलग हैं, प्रत्येक रोमछिद्र पर एक-एक बाल है।
XIV. वे ऊपर की ओर बढ़ते हैं, नीले-काले रंग के, कॉलीरियम की तरह, दाहिनी ओर छल्ले में बढ़ते हैं।
XV. उनका शरीर ईश्वरीय रूप से सीधा है।
16. उसके पास सात उत्तल सतहें हैं।
सत्रहवीं। उसके शरीर का अगला भाग शेर के समान है।
XVIII. उसके कंधों के बीच कोई खोखलापन नहीं है।
XIX. उसका शरीर बरगद के पेड़ के समान है: उसकी ऊँचाई उसकी भुजाओं की लंबाई के बराबर है।
XX. उसका धड़ समरूप रूप से गोल है।

XXI. उसकी स्वाद की समझ एकदम उत्तम है।
XXII. उसके जबड़े शेर जैसे हैं
XXIII. उसके चालीस दांत हैं।
XXIV. उसके दांत समतुल्य हैं।
XXV. उसके दांतों के बीच कोई जगह नहीं है।
XXVI. उसके नुकीले दांत बहुत चमकीले हैं।
XXVII. उसकी जीभ बहुत लंबी है
XXVIII. उसकी आवाज ब्रह्मा जैसी है, जैसे कराविका पक्षी की आवाज होती है।
XXIX. उसकी आँखें गहरे नीले रंग की हैं।
XXX. उसकी पलकें गाय जैसी हैं।
XXXI. उसकी भौहों के बीच के बाल सफेद और रुई की तरह मुलायम हैं।
XXXII. उसका सिर शाही पगड़ी जैसा है।"

महाराज, यह राजकुमार एक महान पुरुष के बत्तीस लक्षणों से संपन्न है। ऐसे व्यक्ति के लिए केवल दो ही मार्ग खुले हैं। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे तो वह शासक बनेगा, धर्म का पालन करने वाला धर्मात्मा सम्राट, चारों दिशाओं का विजेता, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की है और सात रत्नों से परिपूर्ण है। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवां रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र हैं जो वीर हैं, वीर व्यक्तित्व वाले हैं, शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने वाले हैं। उसने इस सागर से घिरे देश को बिना लाठी या तलवार के, धर्म के द्वारा जीता है। परन्तु यदि वह गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन व्यतीत करे तो वह अरहंत बनेगा, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध बनेगा, जो संसार से पर्दा हटा देगा।

तब राजा बंधुमा ने उन ब्राह्मणों को नए वस्त्र पहनाकर उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी कर दीं।

और राजा बंधुमा ने राजकुमार विपस्सी के लिए दाइयों को नियुक्त किया। कुछ उन्हें दूध पिलाती थीं, कुछ उन्हें नहलाती थीं, कुछ उन्हें गोद में उठाती थीं, कुछ उन्हें झुलाती थीं। उन पर दिन-रात एक सफेद छत्र लगा रहता था, ताकि उन्हें सर्दी, गर्मी, घास या धूल से कोई नुकसान न हो। और राजकुमार विपस्सी लोगों के प्रिय थे। जैसे सभी लोग नीले, पीले या सफेद कमल को पसंद करते हैं, वैसे ही सभी लोग राजकुमार विपस्सी को प्यार करते थे। इस प्रकार उन्हें एक गोद से दूसरी गोद में ले जाया जाता था।

और राजकुमार विपस्सी की आवाज मधुर, सुंदर, मनमोहक और आनंददायक थी। जैसे हिमालय पर्वत में करविका पक्षी की आवाज अन्य सभी पक्षियों की तुलना में अधिक मधुर, सुंदर, मनमोहक और आनंददायक होती है, वैसे ही राजकुमार विपस्सी की आवाज भी उन सभी में सर्वश्रेष्ठ थी।

और पिछले कर्मों के फलस्वरूप, राजकुमार विपस्सी को दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, जिससे वे दिन-रात एक मील दूर तक देख सकते थे।

"राजकुमार विपस्सी तैंतीस देवताओं की तरह अविचलित और सतर्क रहते थे। उनकी इसी सतर्कता के कारण उन्हें 'विपस्सी' कहा जाने लगा। जब राजा बंधुमा किसी मामले की सुनवाई करते थे, तो वे राजकुमार विपस्सी को अपनी गोद में बिठाकर मामले के बारे में समझाते थे। फिर, उन्हें गोद से उतारकर, उनके पिता उन्हें मामले की बारीकियों को विस्तार से बताते थे। इसी कारण उन्हें विपस्सी के नाम से और भी अधिक पुकारा जाने लगा।"

तब राजा बंधुमा ने राजकुमार विपस्सी के लिए तीन महल बनवाए, एक बरसाती मौसम के लिए, एक सर्दी के मौसम के लिए और एक गर्मी के मौसम के लिए, ताकि पांचों इंद्रिय सुखों का ध्यान रखा जा सके। राजकुमार विपस्सी बरसाती मौसम के चारों महीनों तक बरसाती महल में बिना किसी पुरुष सेवक के, महिला संगीतकारों से घिरे रहे और उन्होंने कभी भी वह महल नहीं छोड़ा।

[जन्म संबंधी अनुभाग का अंत]

फिर, हे भिक्षुओं, अनेक वर्षों के बाद, सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद, राजकुमार विपस्सी ने अपने सारथी से कहा, 'सारथी, कुछ सुंदर रथ तैयार करो! हम मनोरंजन उद्यान का निरीक्षण करने चलते हैं।' सारथी ने ऐसा ही किया और फिर राजकुमार को सूचना दी, 'महाराज, सुंदर रथ तैयार हैं, अब आप अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।' और राजकुमार विपस्सी रथ पर सवार होकर जुलूस के साथ मनोरंजन उद्यान की ओर चल दिए।

"जब राजकुमार विपस्सी को मनोरंजन उद्यान ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा, जो छत की कड़ी की तरह झुका हुआ था, टूटा हुआ, छड़ी के सहारे लड़खड़ाता हुआ, बीमार, जिसकी जवानी पूरी तरह गायब हो चुकी थी। उसे देखकर उन्होंने सारथी से कहा, "सारथी, इस आदमी को क्या हुआ है? इसके बाल अन्य पुरुषों जैसे नहीं हैं, इसका शरीर अन्य पुरुषों जैसा नहीं है।"

"'राजकुमार, बूढ़ा आदमी इसी को कहते हैं।'"

"'लेकिन उसे बूढ़ा आदमी क्यों कहा जाता है?'"

"'राजकुमार, उन्हें बूढ़ा इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनके पास जीने के लिए अधिक समय नहीं बचा है।'"

लेकिन क्या मैं बूढ़ा होने के लिए उत्तरदायी हूँ, और क्या मैं बुढ़ापे से मुक्त नहीं हूँ?

"'राजकुमार, हम दोनों बूढ़े होने के योग्य हैं, और बुढ़ापे से मुक्त नहीं हैं।'"

"'तो फिर, सारथी, आज के लिए इतना ही काफी है मनोरंजन पार्क में। अब महल में लौट आओ।'"
"'बहुत अच्छा, राजकुमार,' सारथी ने कहा और राजकुमार विपस्सी को महल में वापस ले आया। वहाँ पहुँचकर राजकुमार विपस्सी शोक और निराशा से व्याकुल हो गए और रोते हुए बोले, 'इस जन्म पर धिक्कार है, क्योंकि जो जन्म लेता है उसे बुढ़ापा अवश्य ही प्रकट होता है!'"
तब राजा बंधुमा ने सारथी को बुलवाया और कहा, 'राजकुमार ने आनंद उद्यान में खूब मजे किए? क्या वह वहाँ खुश नहीं थे?'
"महाराज, राजकुमार को वहां आनंद नहीं आया, वह वहां खुश नहीं थे।"
"'उसने रास्ते में क्या देखा?'"
"तब सारथी ने राजा को सारी घटना बताई।"
तब राजा बंधुमा ने सोचा, 'राजकुमार विपस्सी को सिंहासन नहीं छोड़ना चाहिए, उन्हें गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में नहीं जाना चाहिए - संकेतों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें सच नहीं होनी चाहिए!' इसलिए राजा ने राजकुमार विपस्सी को पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों का और अधिक आनंद लेने का प्रबंध किया, ताकि वे राज्य पर शासन करें और गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में न जाएं। इस प्रकार राजकुमार पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों में लिप्त और उनके आदी होकर जीवन व्यतीत करते रहे।
कई वर्षों बाद, सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद, राजकुमार विपस्सी ने अपने सारथी से कहा, 'सारथी, कुछ सुंदर रथ तैयार करो! हम मनोरंजन उद्यान का निरीक्षण करने चलते हैं।' सारथी ने ऐसा ही किया और फिर राजकुमार को सूचना दी, 'महाराज, सुंदर रथ तैयार हैं, अब आप अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।' और राजकुमार विपस्सी रथ पर सवार होकर जुलूस के साथ मनोरंजन उद्यान की ओर चल दिए।
"जब राजकुमार विपस्सी को मनोरंजन उद्यान ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने एक बीमार व्यक्ति को देखा, जो बहुत कष्ट झेल रहा था, अपने ही मूत्र और मल में पड़ा हुआ था, और कुछ लोग उसे उठा रहे थे और कुछ उसे बिस्तर पर लिटा रहे थे। यह देखकर उन्होंने सारथी से कहा, 'इस आदमी को क्या हुआ है? इसकी आंखें अन्य पुरुषों जैसी नहीं हैं, इसका सिर अन्य पुरुषों जैसा नहीं है।'"
"राजकुमार, बीमार आदमी को यही कहते हैं।"
"लेकिन उसे बीमार आदमी क्यों कहा जाता है?"
"उन्हें राजकुमार इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अपनी बीमारी से मुश्किल से ही उबर पाते हैं।"
"लेकिन क्या मैं बीमार होने के लिए उत्तरदायी हूँ, और क्या मैं बीमारी से मुक्त नहीं हूँ?"
"राजकुमार, हम दोनों बीमार पड़ सकते हैं, और बीमारी से मुक्त नहीं हैं।"
"'तो फिर, सारथी, आज के लिए इतना ही काफी है मनोरंजन पार्क में। अब महल में लौट आओ।'"
"'बहुत अच्छा, राजकुमार,' सारथी ने कहा और राजकुमार विपस्सी को महल में वापस ले आया। वहाँ पहुँचकर राजकुमार विपस्सी शोक और निराशा से व्याकुल हो गए और रोते हुए बोले, 'इस जन्म पर धिक्कार है, क्योंकि जो जन्म लेता है उसे बीमारी अवश्य प्रकट होती है!'"
तब राजा बंधुमा ने सारथी को बुलवाया और कहा, 'राजकुमार ने आनंद उद्यान में खूब मजे किए? क्या वह वहाँ खुश नहीं थे?'
"महाराज, राजकुमार को वहां आनंद नहीं आया, वह वहां खुश नहीं थे।"
"'उसने रास्ते में क्या देखा?'"
"तब सारथी ने राजा को सारी घटना बताई।"
तब राजा बंधुमा ने सोचा, 'राजकुमार विपस्सी को सिंहासन नहीं छोड़ना चाहिए, उन्हें गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में नहीं जाना चाहिए - संकेतों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें सच नहीं होनी चाहिए!' इसलिए राजा ने राजकुमार विपस्सी को पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों का और अधिक आनंद लेने का प्रबंध किया, ताकि वे राज्य पर शासन करें और गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में न जाएं। इस प्रकार राजकुमार पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों में लिप्त और उनके आदी होकर जीवन व्यतीत करते रहे।
कई वर्षों बाद, सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद, राजकुमार विपस्सी ने अपने सारथी से कहा, 'सारथी, कुछ सुंदर रथ तैयार करो! हम मनोरंजन उद्यान का निरीक्षण करने चलते हैं।' सारथी ने ऐसा ही किया और फिर राजकुमार को सूचना दी, 'महाराज, सुंदर रथ तैयार हैं, अब आप अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।' और राजकुमार विपस्सी रथ पर सवार होकर जुलूस के साथ मनोरंजन उद्यान की ओर चल दिए।
"और जब राजकुमार विपस्सी को मनोरंजन पार्क ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने रंग-बिरंगे वस्त्र पहने और अर्थी लिए एक बड़ी भीड़ को इकट्ठा होते देखा। यह देखकर उन्होंने सारथी से कहा, 'ये लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं?'"
" 'राजकुमार, वे एक मृत व्यक्ति को यही कहते थे।'
"मुझे उस जगह ले चलो जहाँ मृत व्यक्ति है।"
“ ‘बहुत अच्छा, राजकुमार,’ सारथी ने कहा और उसने वैसा ही किया। राजकुमार विपस्सी ने मृत व्यक्ति के शव को देखा। फिर उसने सारथी से पूछा, ‘इसे मृत क्यों कहा जाता है?’”
"राजकुमार को मृत व्यक्ति कहा जाता है क्योंकि अब उसके माता-पिता और अन्य रिश्तेदार उसे फिर कभी नहीं देख पाएंगे, न ही वह उन्हें देख पाएगा।"
"लेकिन क्या मैं मृत्यु के अधीन हूँ, मृत्यु से मुक्त नहीं हूँ?"
"राजकुमार, हम दोनों ही मृत्यु के अधीन हैं, इससे मुक्त नहीं हैं।"

"'तो फिर, सारथी, आज के लिए इतना ही काफी है मनोरंजन पार्क में। अब महल में लौट आओ।'"
"'बहुत अच्छा, राजकुमार,' सारथी ने कहा और राजकुमार विपस्सी को महल में वापस ले आया। वहाँ पहुँचकर राजकुमार विपस्सी शोक और निराशा से व्याकुल हो गए और रोते हुए बोले, 'इस जन्म पर धिक्कार है, क्योंकि जन्म लेने वाले को मृत्यु अवश्य प्राप्त होती है!'"
तब राजा बंधुमा ने सारथी को बुलवाया और कहा, 'राजकुमार ने आनंद उद्यान में खूब मजे किए? क्या वह वहाँ खुश नहीं थे?'
"महाराज, राजकुमार को वहां आनंद नहीं आया, वह वहां खुश नहीं थे।"
"'उसने रास्ते में क्या देखा?'"
"तब सारथी ने राजा को सारी घटना बताई।"
तब राजा बंधुमा ने सोचा, 'राजकुमार विपस्सी को सिंहासन नहीं छोड़ना चाहिए, उन्हें गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में नहीं जाना चाहिए - संकेतों में पारंगत ब्राह्मणों की बातें सच नहीं होनी चाहिए!' इसलिए राजा ने राजकुमार विपस्सी को पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों का और अधिक आनंद लेने का प्रबंध किया, ताकि वे राज्य पर शासन करें और गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में न जाएं। इस प्रकार राजकुमार पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों में लिप्त और उनके आदी होकर जीवन व्यतीत करते रहे।
कई वर्षों बाद, सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद, राजकुमार विपस्सी ने अपने सारथी से कहा, 'सारथी, कुछ सुंदर रथ तैयार करो! हम मनोरंजन उद्यान का निरीक्षण करने चलते हैं।' सारथी ने ऐसा ही किया और फिर राजकुमार को सूचना दी, 'महाराज, सुंदर रथ तैयार हैं, अब आप अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।' और राजकुमार विपस्सी रथ पर सवार होकर जुलूस के साथ मनोरंजन उद्यान की ओर चल दिए।
"जब राजकुमार विपस्सी को मनोरंजन उद्यान ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने एक मुंडा हुआ सिर वाला व्यक्ति देखा, जो पीले रंग का वस्त्र पहने हुए आगे बढ़ रहा था। उन्होंने सारथी से कहा, 'उस आदमी को क्या हुआ है? उसका सिर अन्य पुरुषों जैसा नहीं है, और उसके वस्त्र भी अन्य पुरुषों जैसे नहीं हैं।'"
"'राजकुमार, उसे ही प्रस्थान करने वाला कहा जाता है।'"
"उसे 'प्रस्थान करने वाला' क्यों कहा जाता है?"
"राजकुमार, 'जिसने धर्म का अनुसरण किया है' से हमारा तात्पर्य उस व्यक्ति से है जो वास्तव में धम्म का पालन करता है, जो वास्तव में शांति में रहता है, अच्छे कर्म करता है, पुण्य कर्म संपन्न करता है, हानिरहित है और वास्तव में जीवित प्राणियों के प्रति करुणा रखता है।"
"'सारथी, उसे ठीक ही 'प्रस्थान करने वाला' कहा जाता है—वह जो वास्तव में धम्म का अनुसरण करता है, जो वास्तव में शांति में रहता है, अच्छे कर्म करता है, पुण्य कर्म संपन्न करता है, निर्दोष है और वास्तव में जीवों के प्रति करुणा रखता है। रथ को उसके पास ले चलो।'
" 'बहुत अच्छा, राजकुमार,' सारथी ने कहा और वैसा ही किया। और राजकुमार विपस्सी ने आगे जाने वाले व्यक्ति से प्रश्न किया।
"राजकुमार, एक सिद्ध पुरुष के रूप में मैं वास्तव में धम्म का अनुसरण करता हूँ...और जीवित प्राणियों के प्रति करुणा रखता हूँ।"
" 'तुम्हारा बुलावा बिल्कुल सही है, तुम आगे बढ़ चुके हो...'"
तब राजकुमार विपस्सी ने सारथी से कहा, 'तुम रथ लेकर महल वापस चले जाओ, लेकिन मैं यहीं रुकूंगा और अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा लूंगा, पीले वस्त्र धारण करूंगा और गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में प्रवेश करूंगा।'
" 'बहुत अच्छा, राजकुमार,' सारथी ने कहा और महल लौट गया। और राजकुमार विपस्सी ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर और पीले वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन त्यागकर तपस्वी जीवन में प्रवेश किया।"
"राजधानी बंधुमती से चौरासी हजार लोगों की एक विशाल भीड़ ने सुना कि राजकुमार विपस्सी ने संन्यासी जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया है। उन्होंने सोचा, 'यह कोई साधारण शिक्षा और अनुशासन नहीं है, कोई साधारण संन्यास नहीं है, जिसके लिए राजकुमार विपस्सी ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्र धारण करके संन्यासी जीवन व्यतीत किया है। यदि राजकुमार ने ऐसा किया है, तो हम क्यों न करें?' अतः चौरासी हजार भिक्षुओं की एक विशाल भीड़ ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर और पीले वस्त्र धारण करके बोधिसत्व विपस्सी का अनुसरण करते हुए संन्यासी जीवन व्यतीत किया। और बोधिसत्व अपने अनुयायियों के साथ गांवों, कस्बों और राजसी नगरों में भ्रमण करने लगे।"
तब बोधिसत्व एक एकांत स्थान पर जाकर यह सोचने लगे, 'मेरे लिए इस तरह की भीड़ के साथ रहना उचित नहीं है। मुझे अकेले रहना चाहिए, इस भीड़ से अलग।' अतः कुछ समय बाद वे भीड़ छोड़कर अकेले रहने लगे। चौरासी हजार लोग एक दिशा में चले गए और बोधिसत्व दूसरी दिशा में।
फिर, जब बोधिसत्व एकांत स्थान पर अकेले अपने निवास में प्रवेश कर गए, तो उन्होंने सोचा, "अफ़सोस, यह संसार दयनीय अवस्था में है: जन्म और मृत्यु है, मृत्यु है और अन्य अवस्थाओं में जाना और पुनर्जन्म है। और इस दुख, इस वृद्धावस्था और इस मृत्यु से बचने का कोई रास्ता किसी को नहीं पता। इस दुख, इस वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्ति कब मिलेगी?"
"और फिर, भिक्षुओं, बोधिसत्व ने सोचा, "किस अस्तित्व के साथ वृद्धावस्था और मृत्यु होती है? वृद्धावस्था और मृत्यु को कौन सी परिस्थितियाँ प्रभावित करती हैं?" और फिर, भिक्षुओं, गहन चिंतन से उत्पन्न ज्ञान के परिणामस्वरूप उन्हें यह अहसास हुआ, "जन्म के अस्तित्व के साथ वृद्धावस्था और मृत्यु होती है, जन्म वृद्धावस्था और मृत्यु को प्रभावित करता है।"
फिर उन्होंने सोचा, "जन्म किन परिस्थितियों पर निर्भर करता है?" और उन्हें यह अहसास हुआ, "जन्म का निर्धारण होना ही जन्म का निर्धारण करता है"... "जन्म का निर्धारण किन परिस्थितियों पर निर्भर करता है?"... "आसक्ति जन्म का निर्धारण करती है।"... "लालसा आसक्ति का निर्धारण करती है।"... "इंद्रिय लालसा का निर्धारण करती है।"... "संपर्क भावना का निर्धारण करता है।"... "छह इंद्रिय

आधार संपर्क का निर्धारण करते हैं।"... "मन और शरीर छह इंद्रिय आधारों का निर्धारण करते हैं।"... "चेतना मन और शरीर का निर्धारण करती है।"... और फिर बोधिसत्व विपस्सी ने सोचा, "किस सत्ता की उपस्थिति में चेतना उत्पन्न होती है? चेतना किन परिस्थितियों पर निर्भर करती है?" और फिर, गहन चिंतन से प्राप्त ज्ञान के परिणामस्वरूप, उन्हें यह अहसास हुआ, "मन और शरीर चेतना का निर्धारण करते हैं।"

"फिर, भिक्षुओं, बोधिसत्व विपस्सी ने सोचा, 'यह चेतना मन और शरीर में ही सिमट जाती है, इससे आगे नहीं बढ़ती। यहीं तक जन्म और क्षय, मृत्यु और अन्य अवस्थाओं में गिरना और पुनर्जन्म होता है; अर्थात् मन-शरीर चेतना को नियंत्रित करते हैं, चेतना मन-शरीर को नियंत्रित करती है, मन-शरीर छह इंद्रियों को नियंत्रित करता है, छह इंद्रियों का संबंध स्पर्श से होता है, संपर्क संवेदना से, संवेदना लालसा से, लालसा आसक्ति से, आसक्ति जन्म से, जन्म जन्म से, जन्म वृद्धावस्था और मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और कष्ट से उत्पन्न होता है। और इस प्रकार यह संपूर्ण दुःख उत्पन्न होता है।" और 'उत्पत्ति, उत्पत्ति' के विचार से ही बोधिसत्व विपस्सी में उन चीजों की अंतर्दृष्टि उत्पन्न हुई जो उन्होंने पहले कभी अनुभव नहीं की थीं, ज्ञान, बुद्धि, जागरूकता और प्रकाश उत्पन्न हुआ।

फिर उन्होंने सोचा, "अब किस बात के न रहने से वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती? किसके न रहने से वृद्धावस्था और मृत्यु का अंत होता है?" और फिर, गहन चिंतन से उत्पन्न ज्ञान के फलस्वरूप उन्हें यह अहसास हुआ, "जन्म के न रहने से वृद्धावस्था और मृत्यु नहीं होती। जन्म के न रहने से वृद्धावस्था और मृत्यु का अंत होता है... किसके न रहने से जन्म का अंत होता है?... होने के न रहने से जन्म का अंत होता है... आसक्ति के न रहने से होने का अंत होता है... लालसा के न रहने से आसक्ति का अंत होता है... संवेदना के न रहने से लालसा का अंत होता है... स्पर्श के न रहने से संवेदना का अंत होता है... छह इंद्रियों के न रहने से स्पर्श का अंत होता है..."

"मन और शरीर के समाप्त होने के साथ ही छह इंद्रियों का भी अंत हो जाता है... चेतना के समाप्त होने के साथ ही मन और शरीर का अंत हो जाता है... मन और शरीर के समाप्त होने के साथ ही चेतना का भी अंत हो जाता है।"

तब बोधिसत्व विपस्सी ने सोचा, "मुझे ज्ञान प्राप्ति का अंतर्दृष्टि मार्ग मिल गया है, अर्थात्:

"मन और शरीर के समाप्त होने से चेतना समाप्त हो जाती है; चेतना के समाप्त होने से मन और शरीर समाप्त हो जाते हैं; मन और शरीर के समाप्त होने से छह इंद्रिय आधार समाप्त हो जाते हैं; छह इंद्रिय आधारों के समाप्त होने से संपर्क समाप्त हो जाता है; संपर्क के समाप्त होने से भावना समाप्त हो जाती है; भावना के समाप्त होने से लालसा समाप्त हो जाती है; लालसा के समाप्त होने से आसक्ति समाप्त हो जाती है; आसक्ति के समाप्त होने से जन्म समाप्त हो जाता है; जन्म के समाप्त होने से वृद्धावस्था और मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, शोक और कष्ट समाप्त हो जाते हैं। और इस प्रकार यह संपूर्ण दुःख समाप्त हो जाता है।" और 'समाप्ति, समाप्ति' के विचार से बोधिसत्वों में विपस्सी का उदय हुआ, जिन्हें पहले कभी अनुभव नहीं की गई चीजों की अंतर्दृष्टि, ज्ञान, दृष्टि, जागरूकता और प्रकाश प्राप्त हुआ।

"फिर, भिक्षुओं, एक समय बोधिसत्व विपस्सी पांच आसक्ति स्कंधों के उदय और पतन का चिंतन करते हुए, 'ऐसा शरीर है, ऐसा इसका उदय होता है, ऐसा इसका क्षय होता है; ऐसी भावना है... ऐसी बोध शक्ति है... ऐसी मानसिक संरचनाएं हैं... ऐसी चेतना है... ऐसा इसका उदय होता है... ऐसा इसका क्षय होता है।' और जब वे पांच आसक्ति स्कंधों के उदय और पतन का चिंतन करते रहे, तो कुछ ही समय में उनका मन पूर्णतः विकारों से मुक्त हो गया।"

[द्वितीय खंड का अंत]

तब भिक्षुओं, परम पूज्य भगवान, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध विपस्सी ने सोचा, "मान लीजिए कि अब मैं धम्म का उपदेश दूं?" फिर उन्होंने सोचा, "मैंने इस धम्म को प्राप्त कर लिया है, जो गहन, देखने में कठिन, समझने में कठिन, शांत, उत्कृष्ट, तर्क से परे, सूक्ष्म और केवल बुद्धिमानों द्वारा ही समझा जा सकता है। परन्तु यह पीढ़ी आसक्ति में आनंदित होती है, उसमें प्रसन्न होती है और उसमें मग्न रहती है। परन्तु जो लोग आसक्ति में इतना आनंदित होते हैं, उनके लिए यह विषय, अर्थात् वस्तुओं की बद्ध प्रकृति, या प्रतीत्यसमुत्पाद, देखना कठिन है। सभी मानसिक संरचनाओं का शांत होना, पुनर्जन्म के सभी आधारों का त्याग, व्यथा का कम होना, वैराग्य, निश्चिंतता और निर्वाण भी उतना ही कठिन होगा। और यदि मैं दूसरों को धम्म का उपदेश दूं और वे मुझे न समझें, तो यह मेरे लिए थकावट और कष्ट का कारण होगा।"

और भगवान बुद्ध विपस्सी को अनायास ही यह श्लोक सूझा, जो पहले कभी नहीं सुना गया था:

"जो मैंने हासिल किया है, उसका प्रचार क्यों करूं?"

जो लोग वासना और घृणा से भरे होते हैं, वे इसे कभी समझ नहीं सकते।

यह धम्म सूक्ष्म और गहन रूप से आगे बढ़ता है।

इसे देखना मुश्किल है, भावनाओं में अंधे लोग इसे नहीं देख सकते।

जब भगवान बुद्ध विपस्सी इस प्रकार चिंतन कर रहे थे, तब उनका मन धम्म का उपदेश देने के बजाय निष्क्रियता की ओर झुका हुआ था। हे भिक्षुओं, भगवान बुद्ध विपस्सी के विचार एक महान ब्रह्मा को मानसिक रूप से ज्ञात हो गए। और उन्होंने सोचा, "हाय, संसार नष्ट हो रहा है, यह इसलिए नष्ट हो जाएगा क्योंकि परम पूज्य भगवान विपस्सी, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध का मन धम्म का उपदेश देने के बजाय निष्क्रियता की ओर झुका हुआ है!"

"तब यह महान ब्रह्मा, एक बलवान पुरुष की मुड़ी हुई भुजा को जितनी तेज़ी से फैला सकते हैं, उतनी ही तेज़ी से ब्रह्मालोक से विलीन हो गए और भगवान बुद्ध विपस्सी के समक्ष प्रकट हुए। अपने ऊपरी वस्त्र को एक कंधे पर रखकर और दाहिने घुटने पर बैठकर, उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान बुद्ध विपस्सी को प्रणाम किया और कहा, "हे भगवान, हे भगवान, हे उपकारक, हे भगवान, हे धर्म का उपदेश दें! कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनकी आँखों पर थोड़ी सी भी धूल नहीं है और वे धर्म का उपदेश न सुनकर नष्ट हो रहे हैं: वे धर्म के ज्ञाता बनेंगे!"
तब भगवान बुद्ध विपस्सी ने समझाया, "मैंने इस धम्म को प्राप्त कर लिया है, जो गहन, देखने में कठिन, समझने में कठिन, शांत, उत्कृष्ट, तर्क से परे, सूक्ष्म और केवल बुद्धिमानों द्वारा ही समझा जा सकता है। परन्तु यह पीढ़ी आसक्ति में आनंदित होती है, उसमें प्रसन्न होती है और उसमें मग्न रहती है। परन्तु जो लोग आसक्ति में इतना आनंदित होते हैं, उनके लिए यह विषय, अर्थात् वस्तुओं का बद्ध स्वरूप या आश्रित उत्पत्ति, देखना कठिन है। सभी मानसिक संरचनाओं का शांत होना, पुनर्जन्म के सभी आधारों का त्याग, व्यथा का कम होना, वैराग्य, निश्चिंतता और निर्वाण भी उतना ही कठिन होगा। और यदि मैं दूसरों को धम्म का उपदेश दूं और वे मुझे न समझें, तो यह मेरे लिए थकावट और कष्ट का कारण होगा।"
और ब्रह्मा ने भगवान बुद्ध विपस्सी से दूसरी और तीसरी बार शिक्षा देने का अनुरोध किया... तब भगवान बुद्ध विपस्सी ने ब्रह्मा के अनुरोध को पहचानते हुए और प्राणियों के प्रति करुणा से द्रवित होकर, बुद्ध दृष्टि से संसार का अवलोकन किया। उन्होंने ऐसे प्राणियों को देखा जिनकी आँखों पर कम धूल थी और बहुत धूल थी, जिनकी इंद्रियाँ तेज थीं और सुस्त थीं, जिनका स्वभाव अच्छा था और बुरा, जिन्हें सिखाना आसान था और कठिन, और उनमें से कुछ पाप और परलोक के भय में जी रहे थे। और जैसे नीले, लाल या सफेद कमलों के तालाब में कुछ पानी में जन्म लेते हैं, पानी में बढ़ते हैं और पानी को छोड़े बिना पानी में फलते-फूलते हैं, कुछ पानी में जन्म लेते हैं और सतह तक पहुँचते हैं, जबकि कुछ सतह पर पहुँचकर पानी से बाहर बढ़ते हैं और उससे अछूते रहते हैं, उसी प्रकार, भिक्षुओं, भगवान बुद्ध विपस्सी ने बुद्ध दृष्टि से संसार का अवलोकन करते हुए, कुछ प्राणियों को देखा जिनकी आँखों पर कम धूल थी और बहुत धूल थी, जिनकी इंद्रियाँ तेज थीं और सुस्त थीं, जिनका स्वभाव अच्छा था और बुरा, जिन्हें सिखाना आसान था और कठिन, और उनमें से कुछ पाप और परलोक के भय में जी रहे थे। पाप करने और परलोक के भय में जीना।
तब, उनके विचार को जानकर, महान ब्रह्मा ने भगवान बुद्ध विपस्सी को इन श्लोकों में संबोधित किया,
जैसे पहाड़ की चोटी पर खड़ा दर्शक नीचे लोगों को देखता है
इसलिए, हे ज्ञानवान व्यक्ति, सब कुछ देखते हुए, धम्म की ऊंचाइयों से नीचे देखो!
दुःख से मुक्त होकर, उन लोगों को देखो जो दुःख में डूबे हुए हैं, जन्म और वृद्धावस्था के बोझ से दबे हुए हैं।
उठो, वीर, युद्ध के विजेता, कारवां के नेता, संसार की यात्रा करो!
हे भगवान, धर्म का उपदेश दीजिए, और वे समझ जाएंगे।
और भगवान बुद्ध विपस्सी ने महान ब्रह्मा को श्लोकों में उत्तर दिया।
उनके लिए अमरता के द्वार खुले हैं!
जो लोग अब सुन रहे हैं, वे विश्वास प्रकट करें।
परेशानी के डर से मैंने पहले उपदेश नहीं दिया।
मनुष्यों के लिए उत्तम धर्म है, ब्रह्मा!
तब महान ब्रह्मा ने यह सोचकर कि "मैं ही भगवान बुद्ध विपस्सी के धम्म उपदेश का कारण रहा हूँ," भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर से गुजरते हुए वहीं से विलीन हो गए।
तब भगवान बुद्ध विपस्सी ने सोचा, "मैं सबसे पहले किसे यह धम्म सिखाऊँ? इसे कौन जल्दी समझ पाएगा?" फिर उन्होंने सोचा, "राजधानी बंधुमती में राजा का पुत्र खंडा और पुरोहित का पुत्र तिस्सा रहते हैं। वे बुद्धिमान, विद्वान और अनुभवी हैं, और लंबे समय से उनकी आँखों पर धूल नहीं जमी है। यदि मैं अब पहले खंडा और तिस्सा को धम्म सिखाऊँ, तो वे इसे जल्दी समझ जाएँगे।" और इस प्रकार भगवान बुद्ध विपस्सी, एक बलवान व्यक्ति की मुड़ी हुई भुजा की तरह तेज़ी से, ज्ञान के उस वृक्ष की जड़ से वहीं से विलीन हो गए और बंधुमती की राजराजभूमि में खेमा के हिरण उद्यान में पुनः प्रकट हुए।
और भगवान बुद्ध विपस्सी ने उद्यान रक्षक से कहा, "रक्षक, बंधुमती जाओ और राजकुमार खंडा और पुरोहित के पुत्र तिस्सा से कहो, 'हे भगवान, परम पूज्य भगवान विपस्सी, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध बंधुमती आए हैं और खेमा के हिरण उद्यान में ठहरे हुए हैं। वे आपसे मिलना चाहते हैं।'"
"हे भगवान," पार्क के रखवाले ने कहा और जाकर संदेश पहुंचा दिया।
फिर खंडा और तिस्सा ने कुछ उत्तम रथों को जोतकर भंडुमती से खेमा के हिरण पार्क की ओर प्रस्थान किया। वे रथों में जहाँ तक जा सकते थे, गए, फिर उतरकर पैदल चलते हुए भगवान बुद्ध विपस्सी के पास पहुँचे। उनके पास पहुँचकर उन्होंने उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए।
और भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें उदारता, नैतिकता और स्वर्ग पर क्रमबद्ध प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने इंद्रिय इच्छाओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा त्याग के लाभ को दर्शाया। और जब भगवान बुद्ध विपस्सी को पता चला कि खंडा और तिस्सा का मन तैयार, लचीला, बाधाओं से मुक्त, आनंदित और शांत है, तब उन्होंने बुद्ध के विशेष उपदेश का संक्षेप में प्रवचन दिया: दुखों पर, उनके उद्गम, उनके निवारण और मार्ग पर। और जिस प्रकार एक साफ कपड़ा, जिससे सभी दाग हटा दिए गए हों, रंग को पूर्णतः ग्रहण करता है, उसी

प्रकार राजकुमार खंडा और पुरोहित के पुत्र तिस्सा में, जब वे वहाँ बैठे थे, शुद्ध और निष्कलंक धम्म दृष्टि जागृत हुई, और उन्होंने जाना: जिन चीजों का उद्‌गम होता है, उनका अंत अवश्य होता है।

और उन्होंने धम्म को देखकर, प्राप्त करके, अनुभव करके और उसमें पूर्णतः विलीन होकर, संदेह से परे होकर, दूसरों पर निर्भर हुए बिना गुरु के सिद्धांत में पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लिया, और फिर कहा,

हे परम पूज्य भगवान, परम पूज्य! ऐसा लगता है मानो कोई गिरी हुई चीज़ को उठा रहा हो, या भटके हुए व्यक्ति को रास्ता दिखा रहा हो, या किसी अंधेरी जगह में तेल का दीपक जला रहा हो ताकि देखने वाले वहाँ की चीज़ें देख सकें। ठीक इसी प्रकार, भगवान ने विभिन्न तरीकों से धम्म की व्याख्या की है। हम भगवान और धम्म की शरण में जाते हैं। भगवान के हाथों से हमें दीक्षा प्राप्त हो, हमें दीक्षा प्राप्त हो!

"इस प्रकार राजकुमार खंडा और पुरोहित के पुत्र तिस्सा ने भगवान बुद्ध विपस्सी के हाथों दीक्षा ग्रहण की और उन्हें दीक्षा प्राप्त हुई। तब भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें धम्म पर प्रवचन दिया, उन्हें प्रेरित किया, उनमें जोश भर दिया और उन्हें प्रसन्न किया, साथ ही उन्हें सांसारिक वस्तुओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा निर्वाण के लाभ को समझाया। इस प्रवचन से प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न होकर, कुछ ही समय में उनका मन पूर्णतः सभी विकारों से मुक्त हो गया।"

भंडुमती से चौरासी हजार लोगों की एक विशाल भीड़ ने सुना कि भगवान बुद्ध विपस्सी खेमा के हिरण पार्क में ठहरे हुए हैं, और खंडा और तिस्सा ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन त्याग कर तपस्वी जीवन में प्रवेश कर लिया है। उन्होंने सोचा: यह कोई साधारण शिक्षा और अनुशासन नहीं है, कोई साधारण संन्यास नहीं है, जिसके लिए राजकुमार खंडा और पुरोहित के पुत्र तिस्सा ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्र धारण करके तपस्वी जीवन में प्रवेश किया है। यदि वे भगवान बुद्ध विपस्सी की उपस्थिति में ऐसा कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं? अतः चौरासी हजार लोगों की यह विशाल भीड़ भंडुमती से खेमा के हिरण पार्क के लिए रवाना हुई, जहाँ भगवान बुद्ध विपस्सी ठहरे हुए थे। जब वे उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए।

और भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें उदारता, नैतिकता और स्वर्ग पर क्रमबद्ध प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने इंद्रिय इच्छाओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा त्याग के लाभ को दर्शाया। जिस प्रकार एक साफ कपड़ा, जिससे सारे दाग हट गए हों, रंग को पूर्णतः ग्रहण करता है, उसी प्रकार उन चौरासी हजार लोगों में, जब वे वहाँ बैठे थे, शुद्ध और निष्कलंक धम्म दृष्टि उत्पन्न हुई, और उन्होंने जाना: जो भी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उनका अंत अवश्य होगा। और उन्होंने धम्म को देखकर, प्राप्त करके, अनुभव करके और उसमें पारंगत होकर, संदेह से परे होकर, दूसरों पर निर्भर हुए बिना गुरु के उपदेश में पूर्ण विश्वास प्राप्त करके कहा,

हे परम पूज्य भगवान, परम पूज्य! ऐसा लगता है मानो कोई गिरी हुई चीज़ को उठा रहा हो, या भटके हुए व्यक्ति को रास्ता दिखा रहा हो, या किसी अंधेरी जगह में तेल का दीपक जला रहा हो ताकि देखने वाले वहाँ की चीज़ें देख सकें। ठीक इसी प्रकार, भगवान ने विभिन्न तरीकों से धम्म की व्याख्या की है। हम भगवान और धम्म की शरण में जाते हैं। भगवान के हाथों से हमें दीक्षा प्राप्त हो, हमें दीक्षा प्राप्त हो!

और उन चौरासी हजार लोगों ने भगवान बुद्ध विपस्सी के हाथों दीक्षा ग्रहण की और उन्हें दीक्षा प्राप्त हुई। भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें धम्म पर प्रवचन देकर उपदेश दिया, उन्हें प्रेरित किया, उनमें जोश भर दिया और उन्हें प्रसन्न किया, साथ ही उन्हें सांसारिक वस्तुओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा निर्वाण के लाभ को समझाया। इस प्रवचन से प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न होकर, कुछ ही समय में उनका मन पूर्णतः सभी विकारों से मुक्त हो गया।

तब चौरासी हजार लोगों ने, जो पहले से ही निकले हुए थे, सुना: भगवान बुद्ध विपस्सी भांडुमती आए हैं और खेमा के हिरण पार्क में धर्मोपदेश दे रहे हैं। अतः चौरासी हजार लोगों का यह विशाल समूह भांडुमती में खेमा के हिरण पार्क की ओर चल पड़ा, जहाँ भगवान बुद्ध विपस्सी ठहरे हुए थे। जब वे उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए।

और भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें उदारता, नैतिकता और स्वर्ग पर क्रमबद्ध प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने इंद्रिय इच्छाओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा त्याग के लाभ को दर्शाया। जिस प्रकार एक साफ कपड़ा, जिससे सारे दाग हट गए हों, रंग को पूर्णतः ग्रहण करता है, उसी प्रकार उन चौरासी हजार लोगों में, जब वे वहाँ बैठे थे, शुद्ध और निष्कलंक धम्म दृष्टि उत्पन्न हुई, और उन्होंने जाना: जो भी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उनका अंत अवश्य होगा। और उन्होंने धम्म को देखकर, प्राप्त करके, अनुभव करके और उसमें पारंगत होकर, संदेह से परे होकर, दूसरों पर निर्भर हुए बिना गुरु के उपदेश में पूर्ण विश्वास प्राप्त करके कहा,

हे परम पूज्य भगवान, परम पूज्य! ऐसा लगता है मानो कोई गिरी हुई चीज़ को उठा रहा हो, या भटके हुए व्यक्ति को रास्ता दिखा रहा हो, या किसी अंधेरी जगह में तेल का दीपक जला रहा हो ताकि देखने वाले वहाँ की चीज़ें देख सकें। ठीक इसी प्रकार, भगवान ने विभिन्न तरीकों से धम्म की व्याख्या की है। हम भगवान और धम्म की शरण में जाते हैं। भगवान के हाथों से हमें दीक्षा प्राप्त हो, हमें दीक्षा प्राप्त हो!

और उन चौरासी हजार लोगों ने भगवान बुद्ध विपस्सी के हाथों दीक्षा ग्रहण की और उन्हें दीक्षा प्राप्त हुई। भगवान बुद्ध विपस्सी ने उन्हें धम्म पर प्रवचन देकर उपदेश दिया, उन्हें प्रेरित किया, उनमें जोश भर दिया और उन्हें प्रसन्न किया, साथ ही उन्हें सांसारिक वस्तुओं के खतरे, पतन और भ्रष्टाचार तथा निर्वाण के लाभ को समझाया। इस प्रवचन से प्रेरित, उत्साहित और प्रसन्न होकर, कुछ ही समय में उनका मन पूर्णतः सभी विकारों से मुक्त हो गया।

उस समय राजमति में 6,800,000 भिक्षुओं का विशाल समूह एकत्रित था। जब भगवान बुद्ध विपस्सी एकांतवास में चले गए, तो उन्होंने सोचा, "राजधानी में भिक्षुओं का यह विशाल समूह एकत्रित है। मान लीजिए कि मैं उन्हें अनुमति दूं, 'हे भिक्षुओं, अनेकों के कल्याण, अनेकों के सुख, संसार के प्रति करुणा, देवताओं और मनुष्यों के कल्याण और सुख के लिए विचरण करो। हे भिक्षुओं, दो-दो करके मत जाओ, बल्कि उस धम्म का प्रचार करो जो आरंभ में, मध्य में और अंत में सुंदर है, शाब्दिक और भाव दोनों में, और पूर्णतः परिपूर्ण पवित्र जीवन का प्रदर्शन करो। कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनकी आंखों पर थोड़ी सी भी धूल नहीं है और वे धम्म न सुनने के कारण नष्ट हो रहे हैं: वे धम्म के ज्ञाता बनेंगे। परन्तु ठीक छह वर्ष बाद तुम सब एक साथ राजमति में अनुशासन संहिता का पाठ करने के लिए एकत्रित होना।"

फिर एक महान ब्रह्मा ने भगवान बुद्ध विपस्सी के विचारों को जानकर, बलवान पुरुष की तरह शीघ्रता से ब्रह्मालोक से विमुख होकर भगवान बुद्ध विपस्सी के समक्ष प्रकट हुए। उन्होंने अपना वस्त्र एक कंधे पर डाला और हाथ जोड़कर भगवान को प्रणाम करते हुए कहा, "हे भगवान, हे शुभचिंतक! भगवान इस विशाल समूह को संसार के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के कल्याण और सुख के लिए, अनेकों के कल्याण और सुख हेतु भ्रमण करने की अनुमति दें। वे दो-दो करके न जाएं, बल्कि उस धम्म का प्रचार करें जो आरंभ में, मध्य में और अंत में सुंदर है, अक्षर और भाव दोनों में, और पूर्ण एवं परिपूर्ण पवित्र जीवन का प्रदर्शन करें। कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनकी आंखों पर धूल भी कम है और वे धम्म न सुनने के कारण नष्ट हो रहे हैं: वे धम्म के ज्ञाता बनेंगे।" और हम भी भिक्षुओं की ही तरह करेंगे: छह साल के अंत में हम भंडुमती आएंगे और अनुशासन संहिता का पाठ करेंगे।

"ऐसा कहकर ब्रह्मा ने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर से गुजरते हुए वहीं से विलीन हो गए। तब भगवान बुद्ध विपस्सी ने अपने विश्राम काल के एकांतवास से बाहर आकर भिक्षुओं को घटना का विवरण दिया।"

"मैं आप भिक्षुओं को अनेकों के कल्याण, देवताओं और मनुष्यों के सुख-समृद्धि के लिए विदेश भ्रमण करने की अनुमति देता हूँ। हे भिक्षुओं, दो-दो करके मत जाओ, बल्कि उस धम्म का प्रचार करो जो आरंभ में, मध्य में और अंत में सुंदर है, शाब्दिक और भाव दोनों में, और पूर्णतः परिपूर्ण पवित्र जीवन का प्रदर्शन करो। कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनकी आँखों पर थोड़ी सी भी धूल नहीं है और वे धम्म न सुनने के कारण नष्ट हो रहे हैं: वे धम्म के ज्ञाता बनेंगे। परन्तु ठीक छह वर्ष बाद आप सब एक साथ भंडुमती की राजराजधानी में अनुशासन संहिता का पाठ करने के लिए एकत्रित हों।" और उनमें से अधिकांश भिक्षु उसी दिन देश भ्रमण के लिए प्रस्थान कर गए।

उस समय जंबूद्वीप में चौरासी हजार धार्मिक निवास थे। एक वर्ष के अंत में देवता घोषणा करते थे: हे सज्जनों, एक वर्ष बीत गया, पाँच वर्ष शेष हैं। पाँच वर्ष पूरे होने पर आपको अनुशासन संहिता का पाठ करने के लिए भंडुमती लौटना है। और इसी प्रकार दो, तीन, चार, पाँच वर्ष पूरे होने पर भी। और जब छह वर्ष बीत गए, तो देवताओं ने घोषणा की: "हे सज्जनों, छह वर्ष बीत गए, अब अनुशासन संहिता का पाठ करने के लिए भंडुमती की राजराजधानी जाने का समय आ गया है!" और वे भिक्षु, कुछ अपनी स्वयं की मानसिक शक्तियों से, और कुछ देवताओं की शक्ति से, सभी एक ही दिन में अनुशासन संहिता का पाठ करने के लिए भंडुमती आ गए।

और फिर भगवान बुद्ध विपस्सी ने एकत्रित भिक्षुओं को निम्नलिखित उपदेश दिए:

धैर्य रखना ही सबसे बड़ा बलिदान है।
बुद्धों का कहना है कि निर्वाण सर्वोच्च है।
वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो दूसरों को नुकसान पहुंचाता हो।
जो व्यक्ति दूसरों को हानि पहुंचाता है, वह तपस्वी नहीं रहता।
बुराई न करना बल्कि अच्छाई को बढ़ावा देना।
बुद्धों का उपदेश है कि मन को शुद्ध करना चाहिए।
अपमान न करना, हानि न पहुंचाना, नियमों के अनुसार संयम बरतना।
भोजन में संयम, निवास स्थान का एकांत,
उच्च चिंतन के प्रति समर्पण, यही बुद्धों की शिक्षा है।

"एक बार, भिक्षुओं, मैं सुभागा वन में एक विशाल साल के वृक्ष की तलहटी में स्थित उक्कत्था में ठहरा हुआ था। वहाँ एकांतवास करते हुए मुझे यह विचार आया: 'पवित्र लोकों के देवताओं के निवास स्थान की तरह कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ मैं इतने लंबे समय से न गया हो। मान लीजिए कि मैं अभी उनके पास जाऊँ?' और फिर जैसे कोई बलवान पुरुष अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या फिर से मोड़ता है, उतनी ही तेज़ी से मैं उक्कत्था से विलीन हो गया और अविहा देवताओं के बीच प्रकट हुआ। और उनमें से हजारों मेरे पास आए, मुझे प्रणाम किया और एक तरफ खड़े हो गए। फिर उन्होंने कहा:

"महोदय, बुद्ध विपस्सी के संसार में प्रकट हुए 91 युग बीत चुके हैं।"

भगवान बुद्ध विपस्सी का जन्म क्षत्रिय वंश में हुआ और वे एक क्षत्रिय परिवार में पले-बढ़े; वे कोंडन्ना कुल के थे; उनके समय में जीवन अवधि 80,000 वर्ष थी; उन्होंने तुरही पुष्प वृक्ष के नीचे पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया; उनके दो श्रेष्ठ शिष्य खंडा और तिस्सा थे; उनके तीन शिष्यों की सभाएँ थीं, एक में 6,800,000, दूसरी में एक लाख और तीसरी में 80,000 भिक्षु थे, ये सभी अरहंत थे; उनके मुख्य सेवक भिक्षु अशोक थे, उनके पिता राजा बंधुमा थे, उनकी माता रानी भंडुमती थीं और उनके पिता की राजराजधानी भंडुमती थी। भगवान बुद्ध विपस्सी का त्याग इस प्रकार था, उनका प्रस्थान इस प्रकार था, उनका प्रयास इस प्रकार था, उनका पूर्ण ज्ञान इस प्रकार था; उनका चक्र इस प्रकार था।

"और हम, महोदय, जिन्होंने भगवान बुद्ध विपस्सी के मार्गदर्शन में पवित्र जीवन व्यतीत किया, इंद्रिय इच्छाओं से मुक्त होकर यहाँ अवतरित हुए हैं।"

"इसी प्रकार हजारों देव आए और उन्होंने कहा, 'हे भगवान, इस शुभ युग में, अब भगवान बुद्ध संसार में अवतरित हुए हैं। वे क्षत्रिय वंश के थे और एक क्षत्रिय परिवार में पले-बढ़े। वे गौतम कुल के थे। उनके समय में जीवनकाल अल्प, सीमित और शीघ्र बीतने वाला होता है: सौ वर्ष तक जीवित रहना दुर्लभ है। उन्होंने असत्थ वृक्ष के नीचे पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। उनके दो श्रेष्ठ शिष्य हैं, शारिपुत्र और मोग्गलाना। उनके शिष्यों की एक सभा है, जिसमें एक हजार दो सौ पचास भिक्षु हैं, जो सभी अरहंत हैं। उनके मुख्य सेवक आनंद हैं। उनके पिता राजा शुद्धोदन हैं, उनकी माता रानी माया थीं और उनके पिता की राजराजमहल कपिलवस्तु है। भगवान का ऐसा ही त्याग था, उनका ऐसा ही प्रस्थान था, उनका ऐसा ही प्रयास था, उनका ऐसा ही पूर्ण ज्ञान था; उनका ऐसा ही चक्र था।" और हम, महोदय, जिन्होंने भगवान के अधीन पवित्र जीवन व्यतीत किया है, अपनी इंद्रिय इच्छाओं से स्वयं को मुक्त करके, यहाँ अवतरित हुए हैं।

फिर मैं अविहा देवों के साथ अतप्पा देवों के दर्शन करने गया, फिर उनके साथ सुदस्सा देवों के दर्शन करने, फिर उनके साथ सुदस्सी देवों के दर्शन करने और फिर उन सभी के साथ अकनित्थ देवों के दर्शन करने गया। वहाँ हजारों देव आए, मुझे प्रणाम किया और एक तरफ खड़े होकर बोले, "हे भगवान, भगवान बुद्ध विपस्सी के संसार में प्रकट हुए 91 युग हो चुके हैं। भगवान बुद्ध विपस्सी क्षत्रिय वंश में जन्मे और क्षत्रिय परिवार में पले-बढ़े; वे कोंडन्ना कुल के थे; उनके समय में जीवनकाल 80,000 वर्ष था; उन्होंने तुरही पुष्प वृक्ष के नीचे पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया; उनके दो श्रेष्ठ शिष्य खंडा और तिस्सा थे; उनके तीन शिष्यों की सभाएँ थीं, एक में 6,800,000, एक में एक लाख और एक में 80,000 भिक्षु, ये सभी अरहंत थे; उनके प्रमुख निजी सेवक भिक्षु अशोक थे, उनके पिता राजा बंधुमा थे, उनकी माता रानी भंडुमती थीं और उनके पिता की राजराजभात भंडुमती थी। भगवान बुद्ध विपस्सी का त्याग ऐसा था, उनका प्रस्थान ऐसा था, उनका प्रयास ऐसा था, उनका पूर्ण ज्ञान ऐसा था; उनका चक्र ऐसा था।

"और हम, महोदय, जिन्होंने भगवान बुद्ध विपस्सी के मार्गदर्शन में पवित्र जीवन व्यतीत किया, इंद्रिय इच्छाओं से मुक्त होकर यहाँ अवतरित हुए हैं।"

"इसी प्रकार हजारों देव आए और उन्होंने कहा, 'हे भगवान, इस शुभ युग में, अब भगवान बुद्ध संसार में अवतरित हुए हैं। वे क्षत्रिय वंश के थे और एक क्षत्रिय परिवार में जन्मे थे; वे गौतम कुल के थे; उनके समय में जीवनकाल अल्प, सीमित और शीघ्र बीतने वाला था: सौ वर्ष तक जीवित रहना दुर्लभ था। उन्होंने असत्थ वृक्ष के नीचे पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया; उनके दो श्रेष्ठ शिष्य थे, शारिपुत्र और मोग्गलाना; उनके शिष्यों की एक सभा थी, जिसमें एक हजार दो सौ पचास भिक्षु थे, जो सभी अरहंत थे; उनके मुख्य निजी सेवक आनंद थे; उनके पिता राजा शुद्धोदन थे, उनकी माता रानी माया थीं, और उनके पिता की राजराजकंद कपिलवस्तु थी। भगवान का ऐसा त्याग, ऐसा प्रस्थान, ऐसा प्रयास, ऐसा पूर्ण ज्ञान; ऐसा चक्र-चक्र।'" और हम, महोदय, जिन्होंने भगवान के अधीन पवित्र जीवन व्यतीत किया है, अपनी इंद्रिय इच्छाओं से स्वयं को मुक्त करके, यहाँ अवतरित हुए हैं।

और इस प्रकार, हे भिक्षुओं, तथागत धर्म के मूलभूत सिद्धांतों के गहन अध्ययन द्वारा उन पूर्व बुद्धों को याद करते हैं जिन्होंने अनेकता को भेदते हुए, मार्ग प्रशस्त करते हुए, जीवन चक्र को पूर्ण करते हुए, समस्त दुखों से मुक्त होकर अंतिम निर्वाण प्राप्त किया है; वे उनके जन्म, उनके नाम, उनके कुल, उनकी आयु, उनके जुड़वां शिष्यों, उनके शिष्यों की सभाओं को याद करते हैं: "ये परम पूज्य बुद्ध इस प्रकार जन्मे, इस प्रकार नाम दिए गए, इस प्रकार उनका कुल था, इस प्रकार उनकी नैतिकता, उनका धर्म, उनका ज्ञान, उनका निवास स्थान था, इस प्रकार उनकी मुक्ति थी।"

इस प्रकार भगवान ने कहा, और भिक्षु उनके शब्दों से प्रसन्न होकर आनंदित हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.2 महा-निदान सुत्त(डीएन15)

अंतर्वस्तु

आश्रित सह-उत्पत्ति

मैंने सुना है कि एक बार भगवान कुरुओं के बीच रह रहे थे। कुरुओं का एक नगर है जिसका नाम कम्मसधम्मा है। वहाँ पूज्य आनंद भगवान के पास पहुँचे और उन्हें प्रणाम करके एक तरफ बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने भगवान से कहा, "हे भगवान, यह कितना अद्‌भुत और विस्मयकारी है कि यह आश्रित सह-उत्पत्ति कितनी गहरी है, और इसका स्वरूप कितना गहरा है, फिर भी मुझे यह बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है।"

[बुद्ध:] "आनंद, ऐसा मत कहो। ऐसा मत कहो। यह आश्रित सह-उत्पत्ति गहरी है, और इसका स्वरूप भी गहरा है। इस धम्म को न समझने और इसमें प्रवेश न करने के कारण ही यह पीढ़ी उलझे हुए धागे, गांठदार रस्सी, उलझी हुई सरकंडों और नरकटों के समान है, और पुनर्जन्म से परे, अभाव, दुख और बुरे गंतव्यों के लोकों से परे नहीं जा पाती।"

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या वृद्धावस्था और मृत्यु के लिए कोई सिद्ध आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'बुढ़ापा और मृत्यु किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होते हैं?' तो उसे कहना चाहिए, 'बुढ़ापा और मृत्यु जन्म से ही उत्पन्न होते हैं, क्योंकि जन्म ही उनकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या जन्म के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'जन्म किस आवश्यक शर्त से आता है?' तो उसे कहना चाहिए, 'जन्म होने से आता है, क्योंकि यही उसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या किसी अस्तित्व के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'उत्पत्ति किस आवश्यक शर्त से आती है?' तो उसे कहना चाहिए, 'उत्पत्ति आसक्ति से आती है, जो इसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या आसक्ति के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'आसक्ति किस अनिवार्य शर्त से उत्पन्न होती है?' तो उसे कहना चाहिए, 'आसक्ति लालसा से उत्पन्न होती है, जो इसकी अनिवार्य शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या लालसा के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'इच्छा किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होती है?' तो उसे कहना चाहिए, 'इच्छा का उत्पन्न होना अनुभूति से उत्पन्न होता है, जो इसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या भावना के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'भावना किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होती है?' तो उसे कहना चाहिए, 'भावना संपर्क से उत्पन्न होती है, क्योंकि संपर्क ही इसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या संपर्क के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'संपर्क किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होता है?' तो उसे कहना चाहिए, 'संपर्क नाम और रूप से उत्पन्न होता है, जो इसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या नाम और स्वरूप के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'नाम और रूप किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होते हैं?' तो उसे कहना चाहिए, 'नाम और रूप चेतना से उत्पन्न होते हैं, जो इसकी आवश्यक शर्त है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'क्या चेतना के लिए कोई सिद्ध करने योग्य आवश्यक शर्त है?' तो उसे उत्तर देना चाहिए, 'हाँ, है।'

यदि किसी से पूछा जाए, 'चेतना किस आवश्यक शर्त से उत्पन्न होती है?' तो उसे कहना चाहिए, 'चेतना नाम और रूप से उत्पन्न होती है, जो इसकी आवश्यक शर्त है।'

"इस प्रकार, आनंद, नाम और रूप के अनिवार्य नियम से चेतना उत्पन्न होती है। चेतना के अनिवार्य नियम से नाम और रूप उत्पन्न होते हैं। नाम और रूप के अनिवार्य नियम से संपर्क उत्पन्न होता है। संपर्क के अनिवार्य नियम से भावना उत्पन्न होती है। भावना के अनिवार्य नियम से तृष्णा उत्पन्न होती है। तृष्णा के अनिवार्य नियम से आसक्ति उत्पन्न होती है। आसक्ति के अनिवार्य नियम से जन्म उत्पन्न होता है। जन्म के अनिवार्य नियम से वृद्धावस्था, मृत्यु, दु:ख, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा उत्पन्न होती हैं। यही इस संपूर्ण तनाव का मूल है।"

वृद्धावस्था और मृत्यु

"'जन्म से ही वृद्धावस्था और मृत्यु अनिवार्य है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि जन्म से ही वृद्धावस्था और मृत्यु अनिवार्य है। यदि किसी भी प्रकार से, कहीं भी, किसी भी चीज का जन्म न हो—अर्थात, देवों का देवत्व अवस्था में, देवताओं का देवत्व अवस्था में, आत्माओं का आत्माओं अवस्था में, राक्षसों का राक्षस अवस्था में, मनुष्यों का मनुष्य अवस्था में, चौपायों का चौपायों अवस्था में, पक्षियों का पक्षी अवस्था में, नागों का नाग अवस्था में, या किसी भी प्राणी का अपनी मूल अवस्था में—जन्म के पूर्ण अभाव में, जन्म के रुकने से, क्या वृद्धावस्था और मृत्यु का बोध हो सकता है?"

"नहीं, भगवान।"

"अतः यही एक कारण है, यही एक वजह है, यही एक उत्पत्ति है, यही वृद्धावस्था और मृत्यु के लिए एक आवश्यक शर्त है, अर्थात् जन्म।"

जन्म "'जन्म एक आवश्यक शर्त के रूप में उत्पन्न होता है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि जन्म एक आवश्यक शर्त के रूप में कैसे उत्पन्न होता है। यदि किसी भी प्रकार से, कहीं भी, किसी भी चीज का कोई विकास न हो—अर्थात्, इंद्रियजन्य विकास, रूप विकास, या निराकार विकास—विकास की पूर्ण अनुपस्थिति में, विकास के रुकने से, क्या जन्म को समझा जा सकता है?"

"नहीं, भगवान।"

"अतः यही एक कारण है, यही एक तर्क है, यही एक उत्पत्ति है, यही जन्म के लिए एक आवश्यक शर्त है, अर्थात्, बनना।"

बनना

"'आसक्ति को एक अनिवार्य शर्त मानने से ही विकास होता है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि आसक्ति को एक अनिवार्य शर्त मानने से ही विकास होता है। यदि किसी भी प्रकार से, कहीं भी, किसी भी चीज से आसक्ति न हो—अर्थात्, इंद्रियों से आसक्ति, नियमों और प्रथाओं से आसक्ति, विचारों से आसक्ति, या आत्म-ज्ञान के सिद्धांतों से आसक्ति—तो आसक्ति के पूर्ण अभाव में, आसक्ति के समाप्त होने से ही, क्या विकास को समझा जा सकता है?"

"नहीं, भगवान।"

अत: यही कारण है, यही वजह है, यही उत्पत्ति है, यही होने की एक आवश्यक शर्त है, अर्थात् आसक्ति।

पकड़

"'आसक्ति की अनिवार्यता से आसक्ति उत्पन्न होती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि आसक्ति की अनिवार्यता से आसक्ति कैसे उत्पन्न होती है। यदि किसी भी प्रकार से, किसी भी चीज़ की, कहीं भी कोई आसक्ति न हो—अर्थात्, इंद्रिय सुख की आसक्ति, अस्तित्व की आसक्ति, अस्तित्वहीनता की आसक्ति—तो क्या आसक्ति का पूर्ण अभाव होने पर, आसक्ति के समाप्त होने पर, आसक्ति का पता लगाया जा सकता है?"

"नहीं, भगवान।"

अत: यही कारण है, यही वजह है, यही उत्पत्ति है, यही आसक्ति, अर्थात् लालसा के लिए एक आवश्यक शर्त है।

तीव्र इच्छा

"'इंद्रिय बोध एक आवश्यक शर्त है, जिससे लालसा उत्पन्न होती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि कैसे इंद्रिय बोध एक आवश्यक शर्त है, जिससे लालसा उत्पन्न होती है। यदि किसी भी प्रकार से, कहीं भी, किसी भी चीज का कोई भी अहसास न हो—अर्थात, आँख के संपर्क से उत्पन्न अहसास, कान के संपर्क से उत्पन्न अहसास, नाक के संपर्क से उत्पन्न अहसास, जीभ के संपर्क से उत्पन्न अहसास, शरीर के संपर्क से उत्पन्न अहसास, या बुद्धि के संपर्क से उत्पन्न अहसास—भावना के पूर्ण अभाव में, अहसास के समाप्त होने से, क्या लालसा को पहचाना जा सकता है?"

"नहीं, भगवान।"

अत: यही कारण है, यही वजह है, यही उत्पत्ति है, यही लालसा, अर्थात् भावना के लिए एक आवश्यक शर्त है।

लालसा पर निर्भर

"अब, लालसा भावना पर निर्भर है, खोज लालसा पर निर्भर है, प्राप्ति खोज पर निर्भर है, निर्धारण प्राप्ति पर निर्भर है, इच्छा और जुनून निर्धारण पर निर्भर हैं, आसक्ति इच्छा और जुनून पर निर्भर है, अधिकार भावना आसक्ति पर निर्भर है, कंजूसी अधिकार भावना पर निर्भर है, रक्षात्मकता कंजूसी पर निर्भर है, और रक्षात्मकता के कारण, जो रक्षात्मकता पर निर्भर है, विभिन्न बुराई और अकुशलतापूर्ण घटनाएं उत्पन्न होती हैं: लाठी और चाकू उठाना; संघर्ष, झगड़े और विवाद; आरोप लगाना, फूट डालने वाली बातें और झूठ।"

और इस तरह से यह समझा जा सकता है कि रक्षात्मकता के कारण ही विभिन्न प्रकार की बुरी और अकुशल घटनाएं उत्पन्न होती हैं: लाठी-चाकू उठाना; संघर्ष, झगड़े और विवाद; आरोप-प्रत्यारोप, फूट डालने वाली बातें और झूठ। यदि कहीं भी, किसी भी प्रकार से, किसी भी चीज के प्रति रक्षात्मकता बिल्कुल न हो, तो क्या रक्षात्मकता के पूर्ण अभाव में, रक्षात्मकता के समाप्त होने से ही विभिन्न प्रकार की बुरी और अकुशल घटनाएं - लाठी-चाकू उठाना; संघर्ष, झगड़े और विवाद; आरोप-प्रत्यारोप, फूट डालने वाली बातें और झूठ - उत्पन्न होंगी?

"नहीं, भगवान।"

"इस प्रकार यह एक कारण है, यह एक वजह है, यह एक उत्पत्ति है, यह विभिन्न बुराई, अकुशल घटनाओं के घटित होने के लिए एक आवश्यक शर्त है - लाठी और चाकू उठाना; संघर्ष, झगड़े और विवाद; आरोप, विभाजनकारी भाषण और झूठ - अर्थात् रक्षात्मकता।"

"'रक्षात्मकता कंजूसी पर निर्भर करती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि रक्षात्मकता कंजूसी पर कैसे निर्भर करती है। यदि कहीं भी, किसी भी रूप में, किसी भी चीज़ में बिल्कुल भी कंजूसी न हो, कंजूसी की पूर्ण अनुपस्थिति में, कंजूसी के समाप्त होने पर, क्या रक्षात्मकता को पहचाना जा सकेगा?"
"नहीं, भगवान।"
"अतः यही कारण है, यही वजह है, यही उत्पत्ति है, यही रक्षात्मकता, अर्थात् कंजूसी के लिए एक आवश्यक शर्त है।"
(इसी प्रकार, स्थितियों की श्रृंखला में पीछे की ओर देखें: कंजूसी, आसक्ति, अधिकार भावना, इच्छा और जुनून, निश्चितता, अधिग्रहण और खोज।)
"'खोज, भोग पर निर्भर है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि खोज, भोग पर कैसे निर्भर है। यदि किसी भी प्रकार की, किसी भी चीज़ की, कहीं भी कोई भोग न हो—अर्थात्, इंद्रिय भोग की भोग, अस्तित्व की भोग, अस्तित्वहीनता की भोग— भोग की पूर्ण अनुपस्थिति में, भोग के समाप्त होने पर, क्या खोज को समझा जा सकता है?"
"नहीं, भगवान।"
"अतः यही कारण है, यही तर्क है, यही उत्पत्ति है, यही खोज, अर्थात् लालसा के लिए आवश्यक शर्त है। अतः, आनंद, ये दो घटनाएँ [लालसा से जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु तक ले जाने वाली परिस्थितियों की श्रृंखला, और लालसा से कलह आदि तक ले जाने वाली परिस्थितियों की श्रृंखला], द्वैत के रूप में, अनुभूति में एक ही स्थान पर आकर मिल जाती हैं।"

अनुभूति

"'संपर्क एक आवश्यक शर्त है जिससे भावना उत्पन्न होती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि संपर्क एक आवश्यक शर्त कैसे है जिससे भावना उत्पन्न होती है। यदि किसी भी प्रकार से, किसी भी चीज का कहीं भी कोई संपर्क न हो—अर्थात, आँख का संपर्क, कान का संपर्क, नाक का संपर्क, जीभ का संपर्क, शरीर का संपर्क, या बुद्धि का संपर्क—संपर्क की पूर्ण अनुपस्थिति में, संपर्क के रुकने से, क्या भावना का अनुभव किया जा सकता है?"
"नहीं, भगवान।"
"अतः यही एक कारण है, यही एक वजह है, यही एक उत्पत्ति है, यही भावना, यानी संपर्क के लिए एक आवश्यक शर्त है।"

संपर्क

"'नाम और रूप के अनिवार्य शर्त होने से संपर्क उत्पन्न होता है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि नाम और रूप के अनिवार्य शर्त होने से संपर्क कैसे उत्पन्न होता है। यदि वे सभी गुण, लक्षण, विषय और संकेतक अनुपस्थित हों जिनके द्वारा नाम-समूह (मानसिक गतिविधि) का वर्णन किया जाता है, तो क्या रूप-समूह (भौतिक शरीर) के संबंध में पदनाम-संपर्क को पहचाना जा सकेगा?"
"नहीं, भगवान।"
"यदि वे सभी क्रमपरिवर्तन, संकेत, विषय और संकेतक अनुपस्थित हों जिनके द्वारा रूप-समूह का वर्णन किया जाता है, तो क्या नाम-समूह के संबंध में प्रतिरोध-संपर्क का पता लगाया जा सकेगा?"
"नहीं, भगवान।"
"यदि वे सभी क्रमपरिवर्तन, संकेत, विषय और संकेतक अनुपस्थित हों जिनके द्वारा नाम-समूह और रूप-समूह का वर्णन किया जाता है, तो क्या पदनाम-संपर्क या प्रतिरोध-संपर्क को पहचाना जा सकेगा?"
"नहीं, भगवान।"
"इस प्रकार यह एक कारण है, यह एक वजह है, यह एक उत्पत्ति है, यह संपर्क के लिए एक आवश्यक शर्त है, अर्थात् नाम और रूप।"

नाम और प्रपत्र

"'चेतना एक आवश्यक शर्त है जिससे नाम और रूप की उत्पत्ति होती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि चेतना एक आवश्यक शर्त के रूप में नाम और रूप की उत्पत्ति कैसे करती है। यदि चेतना माता के गर्भ में अवतरित न हो, तो क्या गर्भ में नाम और रूप का जन्म होगा?"
"नहीं, भगवान।"
"यदि गर्भ में उतरने के बाद चेतना चली जाए, तो क्या इस संसार के लिए नाम और रूप उत्पन्न होंगे?"
"नहीं, भगवान।"
"यदि किसी बालक या बालिका की चेतना को काट दिया जाए, तो क्या नाम और रूप परिपक्व होकर विकास करेंगे और परिपक्वता प्राप्त करेंगे?"
"नहीं, भगवान।"
"अतः यही एक कारण है, यही एक तर्क है, यही एक उत्पत्ति है, यही नाम और रूप, अर्थात् चेतना के लिए एक आवश्यक शर्त है।"

चेतना
"'नाम और रूप के अनिवार्य नियम से चेतना उत्पन्न होती है।' ऐसा कहा गया है। और यही वह तरीका है जिससे यह समझा जा सकता है कि नाम और रूप के अनिवार्य नियम से चेतना कैसे उत्पन्न होती है। यदि चेतना नाम और रूप में आधार न बनाए, तो क्या भविष्य में जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु और तनाव की उत्पत्ति का कोई प्रभाव देखा जा सकेगा?"
"नहीं, भगवान।"
"अतः यही एक कारण है, यही एक तर्क है, यही एक उत्पत्ति है, यही चेतना के लिए एक आवश्यक शर्त है, अर्थात् नाम और रूप।"
"जन्म, वृद्धावस्था, मृत्यु, देहांत और पुनर्जन्म की यही सीमा है। नामकरण, अभिव्यक्ति और चित्रण के साधन इसी सीमा तक हैं। विवेक का दायरा इसी सीमा तक विस्तारित होता है, यह चक्र इस संसार की अभिव्यक्ति (विवेचनशीलता) के लिए घूमता है - अर्थात् नाम और रूप के साथ चेतना।"

स्वयं की रूपरेखा
"आनंद, आत्मा का वर्णन करते समय हम किस हद तक उसका वर्णन करते हैं? या तो जब हम सजीव और परिमित आत्मा का वर्णन करते हैं, तो हम कहते हैं कि 'मेरी आत्मा सजीव और परिमित है।' या जब हम सजीव और अनंत आत्मा का वर्णन करते हैं, तो हम कहते हैं कि 'मेरी आत्मा सजीव और अनंत है।' या जब हम निराकार और परिमित आत्मा का वर्णन करते हैं, तो हम कहते हैं कि 'मेरी आत्मा निराकार और परिमित है।' या जब हम निराकार और अनंत आत्मा का वर्णन करते हैं, तो हम कहते हैं कि 'मेरी आत्मा निराकार और अनंत है।'"
अब, जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन करते समय उसे रूप और परिमितता से युक्त बताता है, वह या तो उसे वर्तमान में रूप और परिमितता से युक्त बताता है, या इस प्रकार से कि वह [स्वाभाविक रूप से] [भविष्य में/मृत्यु के बाद] रूप और परिमितता से युक्त हो जाएगा, या वह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि रूप और परिमितता से युक्त स्वयं का एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त कर देता है।
जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन करते समय उसे रूप और अनंतता से युक्त बताता है, वह या तो उसे वर्तमान में रूप और अनंतता से युक्त बताता है, या इस प्रकार की प्रकृति का बताता है कि वह [स्वाभाविक रूप से] भविष्य में/मृत्यु के बाद रूप और अनंतता से युक्त हो जाएगी, या वह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि रूप और अनंतता से युक्त स्वयं के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त कर देता है।
जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन करते समय उसे निराकार और सीमित रूप में वर्णित करता है, वह या तो उसे वर्तमान में निराकार और सीमित रूप में वर्णित करता है, या इस प्रकार के स्वरूप में कि वह [स्वाभाविक रूप से] [भविष्य में/मृत्यु के बाद] निराकार और सीमित हो जाएगा, या वह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि निराकार और सीमित स्वयं के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त कर देता है।
जो व्यक्ति अपने आत्म का वर्णन करते समय उसे निराकार और अनंत के रूप में वर्णित करता है, वह या तो उसे वर्तमान में निराकार और अनंत के रूप में वर्णित करता है, या इस प्रकार के स्वरूप में कि वह [स्वाभाविक रूप से] [भविष्य में/मृत्यु के बाद] निराकार और अनंत हो जाएगा, या वह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि निराकार और अनंत आत्म की एक निश्चित धारणा उसे ग्रस्त कर देती है।

स्वयं की गैर-परिभाषाएँ
"आनंद, जब हम स्वयं का वर्णन नहीं करते, तो किस हद तक हम उसका वर्णन नहीं करते? या तो जब हम सजीव और परिमित स्वयं का वर्णन नहीं करते, तो हम यह वर्णन नहीं करते कि 'मेरा स्वयं सजीव और परिमित है।' या जब हम सजीव और अनंत स्वयं का वर्णन नहीं करते, तो हम यह वर्णन नहीं करते कि 'मेरा स्वयं सजीव और अनंत है।' या जब हम निराकार और परिमित स्वयं का वर्णन नहीं करते, तो हम यह वर्णन नहीं करते कि 'मेरा स्वयं निराकार और परिमित है।' या जब हम निराकार और अनंत स्वयं का वर्णन नहीं करते, तो हम यह वर्णन नहीं करते कि 'मेरा स्वयं निराकार और अनंत है।"
अब, जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन न करते समय उसे रूप और परिमितता से युक्त नहीं मानता, न ही उसे वर्तमान में रूप और परिमितता से युक्त मानता है, न ही उसे इस प्रकार का मानता है कि वह [स्वाभाविक रूप से] भविष्य में/मृत्यु के बाद रूप और परिमितता से युक्त हो जाएगा, और न ही वह यह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि रूप और परिमितता से युक्त स्वयं का एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त नहीं करता।
जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन न करते समय उसे रूप और अनंतता से युक्त नहीं मानता, न ही उसे वर्तमान में रूप और अनंतता से युक्त मानता है, न ही उसे इस प्रकार का मानता है कि वह भविष्य में/मृत्यु के बाद स्वाभाविक रूप से रूप और अनंतता से युक्त हो जाएगा, और न ही वह यह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि रूप और अनंतता से युक्त स्वयं के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त नहीं करता।

जो व्यक्ति स्वयं का वर्णन न करते समय उसे निराकार और सीमित नहीं मानता, न ही वर्तमान में उसे निराकार और सीमित मानता है, न ही उसे इस प्रकार का मानता है कि वह भविष्य में/मृत्यु के बाद स्वाभाविक रूप से निराकार और सीमित हो जाएगा, और न ही वह यह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि निराकार और सीमित स्वयं के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त नहीं करता।
जो व्यक्ति अपने भीतर की आत्मा का वर्णन करते समय उसे निराकार और अनंत के रूप में नहीं चित्रित करता, न ही उसे वर्तमान में निराकार और अनंत के रूप में चित्रित करता है, न ही उसे इस प्रकार का मानता है कि वह भविष्य में/मृत्यु के बाद स्वाभाविक रूप से निराकार और अनंत हो जाएगी, और न ही वह यह मानता है कि 'यद्यपि यह अभी ऐसा नहीं है, मैं इसे ऐसा बना दूंगा।' ऐसी स्थिति में, यह कहना उचित है कि निराकार और अनंत आत्मा के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण उसे ग्रस्त नहीं करता।

स्वयं की मान्यताएँ

"आनंद, जब हम स्वयं की कल्पना करते हैं, तो हम किस हद तक कल्पना करते हैं? भावना को स्वयं मानकर हम यह कल्पना करते हैं कि 'भावना ही मेरा स्वयं है' [या] 'भावना मेरा स्वयं नहीं है: मेरा स्वयं [भावना से] अनभिज्ञ है' [या] 'न तो भावना मेरा स्वयं है, न ही मेरा स्वयं भावना से अनभिज्ञ है, बल्कि मेरा स्वयं भावना को महसूस करता है, क्योंकि मेरा स्वयं भावना के अधीन है।'
अब, जो कहता है, 'भावना ही मेरा स्वरूप है,' उससे इस प्रकार पूछा जाना चाहिए: 'मेरे मित्र, ये तीन भावनाएँ हैं - सुख की भावना, दुख की भावना और न सुख की भावना, न दुख की भावना। इन तीनों भावनाओं में से आप किसे अपना स्वरूप मानते हैं?' जिस क्षण सुख की भावना का अनुभव होता है, उस समय न तो दुख की भावना होती है और न ही सुख की भावना, न दुख की भावना। उस क्षण केवल सुख की भावना ही अनुभव होती है। जिस क्षण दुख की भावना का अनुभव होता है, उस समय न तो सुख की भावना होती है और न दुख की भावना। उस क्षण केवल दुख की भावना ही अनुभव होती है। जिस क्षण न सुख की भावना होती है और न दुख की भावना, उस समय न तो सुख की भावना होती है और न दुख की भावना। उस क्षण केवल सुख की भावना होती है, न दुख की भावना।
सुख की अनुभूति अस्थिर, कृत्रिम, परिस्थितियों पर निर्भर, क्षणभंगुर, विघटनशील, लुप्त और क्षीण होने के अधीन है। दुख की अनुभूति भी अस्थिर, कृत्रिम, परिस्थितियों पर निर्भर, क्षणभंगुर, विघटनशील, लुप्त और क्षीण होने के अधीन है। सुख और दुख दोनों की अनुभूति अस्थिर, कृत्रिम, परिस्थितियों पर निर्भर, क्षणभंगुर, विघटनशील, लुप्त और क्षीण होने के अधीन है। सुख की अनुभूति को 'स्व' के रूप में अनुभव करने पर, अपनी ही सुख की अनुभूति के समाप्त होने के साथ ही 'स्व' नष्ट हो जाता है। दुख की अनुभूति को 'स्व' के रूप में अनुभव करने पर, अपनी ही दुख की अनुभूति के समाप्त होने के साथ ही 'स्व' नष्ट हो जाता है। सुख और दुख दोनों की अनुभूति को 'स्व' के रूप में अनुभव करने पर, अपनी ही सुख और दुख दोनों की अनुभूति के समाप्त होने के साथ ही 'स्व' नष्ट हो जाता है।
"इस प्रकार, जो कहता है, 'भावना ही मेरा स्वरूप है,' वह तात्कालिक वर्तमान में एक अस्थिर, सुख-दुख में उलझे हुए, उत्पन्न होने और नष्ट होने वाले स्वरूप को मानकर ऐसा करता है।" हे आनंद, इस प्रकार भावना को स्वरूप मानना उचित नहीं है।
जो व्यक्ति कहता है, 'भावना आत्मा नहीं है: मेरी आत्मा भावना से विरक्त है,' उसे इस प्रकार संबोधित किया जाना चाहिए: 'मेरे मित्र, जहाँ कुछ भी बिल्कुल भी महसूस (अनुभव) नहीं किया जाता है, क्या वहाँ 'मैं हूँ' का विचार होगा?'
"नहीं, भगवान।"
"इस प्रकार, आनंद, यह मानना उचित नहीं है कि 'भावना मेरा स्व नहीं है: मेरा स्व (भावना से) अनभिज्ञ है।'
जो व्यक्ति कहता है, 'न तो मेरी भावना मेरा अस्तित्व है, न ही मैं भावना से अनभिज्ञ हूँ, बल्कि मेरा अस्तित्व ही भावना को महसूस करता है, क्योंकि मेरा अस्तित्व भावना के अधीन है,' उससे इस प्रकार कहा जाना चाहिए: 'मेरे मित्र, यदि भावनाएँ पूरी तरह से और हर तरह से बिना किसी अंश के समाप्त हो जाएँ, और भावनाएँ पूरी तरह से अस्तित्वहीन हो जाएँ, तो क्या 'मैं हूँ' का विचार भी अस्तित्व में रहेगा?'
"नहीं, भगवान।"
"इस प्रकार, आनंद, यह मानना उचित नहीं है कि 'न तो मेरा स्व भावहीन है, न ही मेरा स्व भावहीन है, बल्कि मेरा स्व भावहीन है, क्योंकि मेरा स्व भावहीन है।'
"आनंद, जब तक कोई भिक्षु भावना को आत्मा नहीं मानता, न ही आत्मा को विस्मृत मानता है, और न ही यह मानता है कि 'मेरी आत्मा भावना के अधीन है,' तब तक वह इस प्रकार न मानते हुए संसार में किसी भी चीज से पोषित नहीं होता (किसी भी चीज से आसक्त नहीं होता)। पोषित न होने पर वह विचलित नहीं होता। विचलित न होने पर वह भीतर से पूर्णतः मुक्त होता है। वह यह जान लेता है कि 'जन्म समाप्त हो गया, पवित्र जीवन पूर्ण हो गया, कार्य पूरा हो गया। इस संसार में अब कुछ भी शेष नहीं है।'"
"यदि कोई इस प्रकार मुक्त मन वाले भिक्षु के विषय में यह कहे कि 'तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान रहते हैं,' तो यह गलत होगा; यह कहना कि 'तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान नहीं रहते'... यह कहना कि 'तथागत मृत्यु के बाद विद्यमान भी हैं और नहीं भी'... यह कहना कि 'तथागत मृत्यु के बाद न तो विद्यमान हैं और न ही नहीं' तो यह गलत होगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने पदनाम की सीमा और पदनाम के विषय की सीमा, अभिव्यक्ति की सीमा और अभिव्यक्ति के विषय की सीमा, वर्णन की सीमा और वर्णन के विषय की सीमा, विवेक की सीमा और विवेक के विषय की सीमा, चक्र के घूमने की सीमा को प्रत्यक्ष रूप से जान लिया है: इसे प्रत्यक्ष रूप से जानने के बाद भिक्षु मुक्त हो जाता है। [यह कहना कि] 'मुक्त भिक्षु, इसे प्रत्यक्ष रूप से जानकर, न देखता है, न जानता है,' यह गलत होगा।"

चेतना के सात चरण
"आनंद, चेतना के ये सात स्तर और दो क्षेत्र हैं। वे कौन से सात हैं?"
"शरीर और धारणाओं की विविधता वाले प्राणी हैं, जैसे मनुष्य, कुछ देवता और कुछ निम्न लोकों के प्राणी। यह चेतना का पहला स्तर है।"
"शरीर की विविधता तथा बोध की विलक्षणता वाले प्राणी हैं, जैसे कि प्रथम [ध्यान] द्वारा उत्पन्न ब्रह्म सेना के देव और अभाव के चार लोकों में कुछ प्राणी। यह चेतना का दूसरा स्तर है।"
"ऐसे प्राणी हैं जिनका शरीर विलक्षण है और धारणाओं में विविधता है, जैसे कि तेजस्वी देव। यह चेतना का तीसरा स्तर है।"
"ऐसे प्राणी हैं जिनका शरीर और बोध विलक्षण है, जैसे कि सुंदर तेजस्वी देव। यह चेतना का चौथा स्तर है।"
"ऐसे प्राणी हैं जो भौतिक रूप की धारणाओं से पूर्णतः परे जाकर, प्रतिरोध की धारणाओं के लुप्त होने के साथ-साथ विविधता की धारणाओं पर ध्यान न देते हुए, 'अनंत अंतरिक्ष' को अनुभव करते हुए अंतरिक्ष की अनंतता के आयाम तक पहुँच जाते हैं। यही चेतना का पाँचवाँ स्तर है।"
"ऐसे प्राणी हैं जो अंतरिक्ष की अनंतता के आयाम को पूर्णतः पार करते हुए, 'अनंत चेतना' का अनुभव करते हुए, चेतना की अनंतता के आयाम तक पहुँचते हैं। यह चेतना का छठा स्तर है।"
"ऐसे प्राणी हैं जो चेतना की अनंतता के आयाम को पूर्णतः पार करते हुए, 'कुछ नहीं है' का अनुभव करते हुए, शून्यता के आयाम तक पहुँच जाते हैं। यह चेतना का सातवाँ स्तर है।"
"एक आयाम उन प्राणियों का है जिन्हें अनुभूति नहीं होती, और दूसरा आयाम वह है जिसमें न अनुभूति होती है और न अनुभूति। [ये दो क्षेत्र हैं।]"
अब, चेतना के प्रथम स्तर की बात करें तो— शरीर और धारणाओं की विविधता वाले प्राणी, जैसे मनुष्य, कुछ देवता और कुछ निम्न लोकों के प्राणी: यदि कोई उस [चेतना के स्तर] को जान ले, उसकी उत्पत्ति को जान ले, उसके क्षय को जान ले, उसके आकर्षण को जान ले, उसकी कमियों को जान ले और उससे मुक्ति के मार्ग को जान ले, तो क्या उस [समझ] के माध्यम से उसमें आनंद लेना उचित होगा?
"नहीं, भगवान।"
(इसी प्रकार चेतना के शेष सभी स्तरों और दो क्षेत्रों के साथ भी।)
"आनंद, जब चेतना के इन सात स्तरों और दो लोकों की उत्पत्ति, क्षय, आकर्षण, कमियों और उनसे मुक्ति को - उनके वास्तविक स्वरूप में - जान लेता है, तो एक भिक्षु आसक्ति के अभाव के कारण मुक्त हो जाता है, उसे विवेक के माध्यम से मुक्त भिक्षु कहा जाता है।"

आठ मुक्ति
"आनंद, ये आठ मुक्ति हैं। कौन सी आठ?"
"रूप से युक्त होने पर, व्यक्ति रूपों को देखता है। यही पहली मुक्ति है।"
"आंतरिक रूप से रूप का बोध न होने पर, व्यक्ति बाह्य रूप से रूपों को देखता है। यही दूसरी मुक्ति है।"
"व्यक्ति का ध्यान केवल सुंदरता पर केंद्रित होता है। यही तीसरी मुक्ति है।"
भौतिक रूप की धारणाओं से पूर्णतः परे जाकर, प्रतिरोध की धारणाओं के लुप्त होने पर, और विविधता की धारणाओं पर ध्यान न देते हुए, 'अनंत अंतरिक्ष' को अनुभव करते हुए, व्यक्ति अंतरिक्ष की अनंतता के आयाम में प्रवेश करता है और उसी में स्थिर रहता है। यही चौथी मुक्ति है।
"अंतरिक्ष की अनंतता के आयाम को पूर्णतः पार करते हुए, 'अनंत चेतना' को अनुभव करते हुए, व्यक्ति चेतना की अनंतता के आयाम में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है। यही पाँचवीं मुक्ति है।"
चेतना की अनंतता के आयाम को पूरी तरह से पार करते हुए, 'कुछ नहीं है' का अनुभव करते हुए, व्यक्ति शून्यता के आयाम में प्रवेश करता है और वहीं स्थिर रहता है। यही छठी मुक्ति है।
"शून्यता के आयाम को पूरी तरह से पार करने पर, व्यक्ति उस आयाम में प्रवेश करता है और बना रहता है जहाँ न तो अनुभूति होती है और न ही अनुभूति। यही सातवीं मुक्ति है।"
"जब व्यक्ति न तो अनुभूति और न ही अनुभूति के आयाम से पूरी तरह परे हो जाता है, तो वह अनुभूति और अनुभूति की समाप्ति में प्रवेश करता है और वहीं स्थिर रहता है। यही आठवीं मुक्ति है।"
जब कोई भिक्षु इन आठ मुक्ति को क्रमानुसार, विपरीत क्रम में, और दोनों ही क्रम में प्राप्त कर लेता है, जब वह इन्हें प्राप्त कर लेता है और जहाँ चाहे, जैसे चाहे और जब तक चाहे इनसे मुक्त हो जाता है, जब मानसिक मंथनों के अंत से वह मंथन-मुक्त जागरूकता और विवेक की मुक्ति में प्रवेश करता है और स्थिर रहता है, और इसे प्रत्यक्ष रूप से वर्तमान क्षण में जान लेता है और अनुभव कर लेता है,

तब उसे दोनों प्रकार से मुक्त भिक्षु कहा जाता है। और इससे भी उच्चतर या अधिक उत्कृष्ट दोनों प्रकार की मुक्ति का कोई और रूप नहीं है।
भगवान बुद्ध ने यही कहा था। पूज्य आनंद बुद्ध के शब्दों से प्रसन्न होकर प्रसन्न हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.3 महा-परिनिब्बान सुत्त(डीएन16)

अंतर्वस्तु

भाग एक: मगध में

1. मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान राजगृह में, गिद्ध शिखर नामक पहाड़ी पर निवास कर रहे थे। उस समय मगध के राजा अजातसत्तु, जो विदेही रानी के पुत्र थे, ने वज्जियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने इस प्रकार कहा, "ये वज्जी चाहे कितने भी शक्तिशाली और गौरवशाली क्यों न हों, मैं उनका संहार करूँगा, मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा, मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा।"

2. मगध के राजा अजातसत्तु ने अपने प्रधान मंत्री, ब्राह्मण वस्सकारा को संबोधित करते हुए कहा, "हे ब्राह्मण, भगवान बुद्ध के पास जाइए, मेरे नाम से उनके चरणों में प्रणाम कीजिए, उनके अच्छे स्वास्थ्य, शक्ति, आराम, शक्ति और सुख की कामना कीजिए और उनसे इस प्रकार कहिए: 'हे भगवान, मगध के राजा अजातसत्तु वज्जियों के विरुद्ध युद्ध करना चाहते हैं। उन्होंने इस प्रकार कहा है: "ये वज्जी, चाहे कितने भी शक्तिशाली और गौरवशाली क्यों न हों, मैं उनका संहार करूँगा, मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा, मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा।"' और भगवान बुद्ध जो भी उत्तर दें, उसे अच्छी तरह से याद रखिए और मुझे बताइए; क्योंकि तथागत झूठ नहीं बोलते।"

3. "महाराज, बहुत अच्छा," मगध के राजा अजातसत्तु की बात मानते हुए ब्राह्मण वस्साकरा ने सहमति व्यक्त की। उन्होंने अनेक भव्य रथ तैयार करने का आदेश दिया, स्वयं एक रथ पर सवार हुए और बाकी लोगों के साथ गिद्ध शिखर की ओर राजगृह के लिए रवाना हुए। वे रथ से जहाँ तक जा सकते थे, गए, फिर रथ से उतरकर पैदल ही भगवान बुद्ध के पास पहुँचे। भगवान बुद्ध से शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन करने और कई मधुर बातें कहने के बाद, वह एक तरफ बैठ गए और भगवान बुद्ध से इस प्रकार कहा: "आदरणीय गौतम, मगध के राजा अजातसत्तु, आपके चरणों में प्रणाम करते हैं और उनके अच्छे स्वास्थ्य, शक्ति, आराम, शक्ति और सुख की कामना करते हैं। वे वज्जियों के विरुद्ध युद्ध करना चाहते हैं और उन्होंने इस प्रकार कहा है: 'ये वज्जी, चाहे कितने भी शक्तिशाली और गौरवशाली क्यों न हों, मैं उनका संहार करूँगा, मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा, मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दूँगा।'"

किसी राष्ट्र के कल्याण की शर्तें

4. उस समय पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पीछे खड़े होकर उन्हें पंखा कर रहे थे, और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा: "आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी लोग अक्सर सभाएँ करते हैं, और क्या उनकी सभाओं में पर्याप्त लोग आते हैं?"

"मैंने सुना है, भगवान, कि ऐसा ही है।"

"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"

"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी शांतिपूर्वक एकत्रित और विलीन होते हैं और सद्भाव से अपने मामलों को निपटाते हैं?"

"मैंने सुना है, भगवान, कि वे ऐसा करते हैं।"

"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"

"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी न तो नए फरमान जारी करते हैं और न ही मौजूदा फरमानों को रद्द करते हैं, बल्कि अपने प्राचीन संविधानों के अनुसार ही कार्य करते हैं?"

"मैंने सुना है, भगवान, कि वे ऐसा करते हैं।"

"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"

"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी अपने बड़ों के प्रति आदर, सम्मान और श्रद्धा दिखाते हैं और उनकी बात सुनना उचित समझते हैं?"

"मैंने सुना है, भगवान, कि वे ऐसा करते हैं।"

"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"

"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी लोग अच्छे परिवारों की महिलाओं और युवतियों का अपहरण करने और उन्हें बंदी बनाने से परहेज करते हैं?"

"मैंने सुना है, भगवान, कि वे ऐसा करने से परहेज करते हैं।"
"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"
"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी लोग अपने मंदिरों के प्रति, चाहे वे शहर के अंदर हों या बाहर, आदर, सम्मान और श्रद्धा का भाव रखते हैं, और क्या वे उन्हें पहले की तरह उचित भेंट चढ़ाने से वंचित नहीं करते?"
"मैंने सुना है, भगवान, कि वे अपने मंदिरों का आदर करते हैं, और उन्हें अपनी भेंटों से वंचित नहीं करते हैं।"
"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों का पतन नहीं, बल्कि उनकी वृद्धि अपेक्षित है।"
"आनंद, तुमने क्या सुना है: क्या वज्जी अरहतों की विधिवत रक्षा और सुरक्षा करते हैं, ताकि जो अभी तक उस लोक में नहीं आए हैं वे आ सकें और जो पहले ही आ चुके हैं वे वहां शांति से रह सकें?"
"मैंने सुना है, भगवान, कि वे ऐसा करते हैं।"
"जब तक, आनंद, यही स्थिति बनी रहेगी, वज्जियों की वृद्धि अपेक्षित है, न कि उनका पतन।"
5. भगवान बुद्ध ने ब्राह्मण वस्सकारा को इन शब्दों में संबोधित किया: "हे ब्राह्मण, एक बार मैं वैशाली में सरंददा मंदिर में निवास कर रहा था, और वहीं मैंने वज्जियों को राष्ट्र के कल्याण के लिए इन सात सिद्धांतों का उपदेश दिया था। हे ब्राह्मण, जब तक ये सिद्धांत वज्जियों में बने रहेंगे, और वज्जी इसी के लिए जाने जाते रहेंगे, तब तक उनकी उन्नति निश्चित है, उनका पतन नहीं।"
तब ब्राह्मण वस्साकर ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे गौतम बुद्ध, यदि वज्जियों को कल्याणकारी इन गुणों में से केवल एक भी गुण प्राप्त हो जाए, तो उनकी उन्नति निश्चित है, पतन नहीं। तो फिर इन सातों गुणों का क्या? वास्तव में, मगध के राजा अजातसत्तु द्वारा वज्जियों को युद्ध में छल या कलह के अलावा कोई हानि नहीं पहुंचाई जा सकती। अच्छा, हे गौतम बुद्ध, हम अब चलते हैं, क्योंकि हमें बहुत कार्य करना है।"
"अब आप वही करें जो आपको उचित लगे, ब्राह्मण।" और मगध के प्रधान मंत्री ब्राह्मण वस्साकरा ने भगवान बुद्ध के शब्दों को स्वीकार करते हुए और उनसे प्रसन्न होकर अपने आसन से उठकर प्रस्थान किया।

भिक्षुओं का कल्याण

6. फिर, वासकारा के जाने के तुरंत बाद, भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को इस प्रकार संबोधित किया: "अब जाओ, आनंद, और राजगृह के चारों ओर जितने भिक्षु रहते हैं, उतने भिक्षुओं को सभा भवन में एकत्रित करो।"
"बहुत अच्छा, भगवान।" और पूज्य आनंद ने जैसा उनसे कहा गया था वैसा ही किया और भगवान को सूचित किया: "भिक्षुओं का समुदाय एकत्रित हो गया है, भगवान। अब भगवान अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।"
तब भगवान बुद्ध अपने आसन से उठे, सभा-गृह में गए, वहाँ अपने निर्धारित स्थान पर बैठे और भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली सात अवस्थाओं का वर्णन करूँगा। मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनो।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"
भिक्षुओं की वृद्धि अपेक्षित है, न कि उनका पतन, हे भिक्षुओं, जब तक वे नियमित रूप से और बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं; शांतिपूर्वक मिलते-जुलते हैं और संघ के कार्यों में सामंजस्य बनाए रखते हैं; जब तक वे कोई नए नियम नहीं बनाते और मौजूदा नियमों को समाप्त नहीं करते, बल्कि निर्धारित प्रशिक्षण संहिता (विनय) के अनुसार कार्य करते हैं; जब तक वे वरिष्ठ भिक्षुओं, दीर्घकालीन भिक्षुओं, दिवंगत भिक्षुओं, संघ के पिताओं और नेताओं के प्रति आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं और उनकी बातों को सुनना उचित समझते हैं; जब तक वे नवजीवन की लालसा के वश में नहीं आते; जब तक वे वन की गहराइयों को अपना निवास स्थान मानते हैं; जब तक वे स्वयं को सजगता में स्थापित करते हैं, ताकि संघ के वे गुणी भाई जो अभी तक नहीं आए हैं, वे भी आ सकें और जो आ चुके हैं वे शांति से रह सकें; हे भिक्षुओं, जब तक भिक्षुओं और संघ के बीच कल्याणकारी ये सात स्थितियाँ बनी रहती हैं। भिक्षुओं की यही विशेषता है, उनकी प्रगति अपेक्षित है, उनकी गिरावट नहीं।
7. "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली सात और शर्तें बताऊंगा। ध्यान से सुनो और जो मैं कह रहा हूं उस पर गौर करो।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"
भिक्षुओं का उत्थान होना निश्चित है, पतन नहीं। यह तब तक संभव है जब तक वे कर्मकांड, वार्ता, नींद और संगति में आनंद न लें, उनसे प्रसन्न न हों और उनके प्रति आसक्ति न रखें; जब तक वे बुरी इच्छाओं के वश में न हों; उनके बुरे मित्र, सहयोगी या साथी न हों; और जब तक वे किसी तुच्छ उपलब्धि के कारण अपने मार्ग में न रुकें। हे भिक्षुओं, जब तक ये सात गुण जो कल्याण की ओर ले जाते हैं, भिक्षुओं में बने रहते हैं और भिक्षु इसी गुण के लिए जाने जाते हैं, तब तक उनका उत्थान होना निश्चित है, पतन नहीं।

सात अच्छे गुण

8. "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली सात और शर्तें बताऊंगा। ध्यान से सुनो और जो मैं कह रहा हूँ उस पर गौर करो।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"

भिक्षुओं का पतन नहीं, बल्कि उनकी उन्नति अपेक्षित है। हे भिक्षुओं, जब तक उनमें आस्था रहेगी, जब तक उनमें नैतिक लज्जा और दुराचार का भय रहेगा, जब तक वे विद्या में निपुण, दृढ़, सचेत और बुद्धिमान रहेंगे। हे भिक्षुओं, जब तक कल्याणकारी ये सात गुण भिक्षुओं में विद्यमान रहेंगे और भिक्षु इन गुणों के लिए जाने जाएंगे, तब तक उनकी उन्नति अपेक्षित है, न कि उनका पतन।

ज्ञानोदय के सात कारक

9. "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली सात और शर्तें बताऊंगा। मेरी बातों को ध्यान से सुनो और समझो।"

"ऐसा ही हो, भगवान।"

भिक्षुओं का पतन नहीं, बल्कि उनकी उन्नति ही अपेक्षित है, जब तक वे ज्ञानोदय के सात कारकों का अभ्यास करते हैं, अर्थात्: सजगता, घटनाओं का अन्वेषण, ऊर्जा, आनंद, शांति, एकाग्रता और समभाव। जब तक ये सात गुण जो कल्याण की ओर ले जाते हैं, भिक्षुओं में बने रहते हैं और भिक्षु इसके लिए जाने जाते हैं, तब तक उनकी उन्नति ही अपेक्षित है, न कि उनका पतन।

सात धारणाएँ

10. "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली सात और शर्तें बताऊंगा। ध्यान से सुनो और जो मैं कह रहा हूं उस पर गौर करो।"

"ऐसा ही हो, भगवान।"

भिक्षुओं का पतन नहीं, बल्कि उनकी उन्नति ही अपेक्षित है, जब तक वे अनित्यता, अहंकारहीनता, शरीर की अशुद्धता, शरीर की दयनीयता, त्याग, वैराग्य और निश्चिंतता का ज्ञान विकसित करते हैं। जब तक ये सात गुण, जो कल्याण की ओर ले जाते हैं, भिक्षुओं में बने रहते हैं और भिक्षुओं की यह विशेषता ज्ञात होती है, तब तक उनकी उन्नति ही अपेक्षित है, न कि उनका पतन।

याद रखने योग्य छह स्थितियाँ

11. "भिक्षुओं, मैं कल्याण की ओर ले जाने वाली छह और शर्तें बताऊंगा। ध्यान से सुनो और जो मैं कह रहा हूँ उस पर गौर करो।"

"ऐसा ही हो, भगवान।"

भिक्षुओं का पतन नहीं, बल्कि उनकी उन्नति अपेक्षित है, जब तक वे कर्म, वचन और विचार से एक-दूसरे की प्रेममयी भावना से सेवा करते हैं, चाहे वह प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष; जब तक वे दान के रूप में प्राप्त वस्तुओं, यहाँ तक कि भिक्षापात्रों में रखी वस्तुओं का भी उपयोग समुदाय के गुणी सदस्यों के साथ साझा किए बिना नहीं करते; जब तक वे अपने भाइयों के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आचरण के उन नियमों का अभ्यास करते हैं जो पूर्ण, परिपूर्ण, निष्कलंक और शुद्ध, मुक्तिदायक, ज्ञानियों द्वारा प्रशंसित, सांसारिक चिंताओं से अप्रभावित और मन की एकाग्रता के लिए अनुकूल हैं; और अपने भाइयों के साथ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उस अंतर्दृष्टि को संजोते हैं जो श्रेष्ठ और मुक्तिदायक है और उस पर अमल करने वाले को दुखों के पूर्ण नाश की ओर ले जाती है। जब तक भिक्षुओं में कल्याणकारी ये छह स्थितियाँ बनी रहती हैं और भिक्षु इसके लिए जाने जाते हैं, तब तक उनकी उन्नति अपेक्षित है। उनकी गिरावट नहीं, बल्कि उनकी अपेक्षित प्रगति है।

भिक्षुओं को परामर्श

12. और भगवान बुद्ध, राजगृह में, गिद्ध शिखर नामक पहाड़ी पर निवास करते हुए, अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार सलाह देते थे:

"ऐसा-ऐसा सद्‌गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्‌गुणपूर्ण आचरण द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; और बुद्धि में पूर्णतः विकसित मन काम, अभिमान और अज्ञान के दोषों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।"

13. जब भगवान बुद्ध राजगृह में अपनी इच्छानुसार कुछ समय तक रहे, तो उन्होंने पूज्य आनंद से इस प्रकार कहा: "आओ, आनंद, हम अंबलत्थिका चलें।"

"ऐसा ही हो, भगवान।"

और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ अंबलत्थिका में अपना निवास स्थान बनाया।

14. अंबलत्थिका में भगवान बुद्ध राजा के विश्रामगृह में रहने आए; और वहाँ भी, भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को अक्सर इस प्रकार उपदेश दिया:

"ऐसा-ऐसा सद्‌गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्‌गुणपूर्ण आचरण द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; और बुद्धि में पूर्णतः विकसित मन कामवासना, अभिमान और अज्ञान के दोषों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।"

15. जब भगवान बुद्ध अंबलत्थिका में अपनी इच्छानुसार कुछ समय तक रहे, तो उन्होंने पूज्य आनंद से इस प्रकार कहा: "आओ, आनंद, हम नालंदा चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"
और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ नालंदा में अपना निवास स्थान बनाया और पवारिका के आम के बाग में रहने लगे।

सारिपुत्त की सिंह गर्जना

16. तब पूज्य सारिपुत्त भगवान बुद्ध के पास गए, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गए और उनसे इस प्रकार कहा:
"हे भगवान, मुझे भगवान बुद्ध पर यह विश्वास है कि भगवान बुद्ध से अधिक प्रबुद्ध कोई दूसरा संन्यासी या ब्राह्मण न तो कभी हुआ है, न कभी होगा और न ही वर्तमान में है।"
"सारिपुत्त, आपका यह वचन वास्तव में उदात्त और भगवानत्वपूर्ण है! एक साहसी वाणी, मानो सिंह की दहाड़ हो! परन्तु यह कैसे संभव है, सारिपुत्त? क्या आपको अतीत के उन पूर्णतः प्रबुद्ध अरहंतों के गुणों, उनकी ध्यान साधना, उनके ज्ञान, उनके निवास और उनकी मुक्ति का प्रत्यक्ष ज्ञान है?"
"ऐसा नहीं है, भगवान।"
"तो फिर यह कैसे है, सारिपुत्त? भविष्य के वे अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध पुरुष—क्या आपको उन सभी भगवानों के गुणों, उनकी ध्यान साधना, उनके ज्ञान, उनके निवास और उनकी मुक्ति के बारे में प्रत्यक्ष व्यक्तिगत ज्ञान है?"
"ऐसा नहीं है, भगवान।"
"तो फिर यह कैसे है, सारिपुत्त? मैं, जो इस समय अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध हूँ, क्या आपको मेरे सद्गुण, मेरी ध्यान साधना, मेरी बुद्धि, मेरे निवास और मेरी मुक्ति के बारे में प्रत्यक्ष व्यक्तिगत ज्ञान है?"
"ऐसा नहीं है, भगवान।"
"तो फिर, सारिपुत्त, यह स्पष्ट है कि आपको अतीत, भविष्य और वर्तमान के पूर्णतः प्रबुद्ध अरहतों का प्रत्यक्ष व्यक्तिगत ज्ञान नहीं है। फिर आप इतनी ऊँची और भगवानत्वपूर्ण वाणी, इतना साहसी कथन, मानो सिंह की दहाड़ की तरह, यह कहने का साहस कैसे कर सकते हैं: 'हे भगवान, मुझे भगवान बुद्ध पर यह विश्वास है कि उनसे अधिक प्रबुद्ध कोई दूसरा संन्यासी या ब्राह्मण न कभी हुआ है, न कभी होगा और न ही वर्तमान में है'?"
17. हे भगवान, मुझे अतीत, भविष्य और वर्तमान के पूर्णतः प्रबुद्ध अरहंतों का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है; फिर भी मुझे धम्म की वैधता का ज्ञान हो गया है। मान लीजिए, हे भगवान, किसी राजा का सीमावर्ती किला सुदृढ़ प्राचीरों और बुर्जों से सुदृढ़ है, उसमें एक ही द्वार है, और एक बुद्धिमान, अनुभवी और विवेकशील द्वारपाल है जो अजनबी को प्रवेश नहीं देता तथा मित्र को प्रवेश करने देता है। जब वह किले के चारों ओर जाने वाले मार्ग पर गश्त करता है, तो उसे प्राचीरों में एक भी ऐसा छेद या दरार नहीं दिखाई देती जिससे एक बिल्ली भी निकल सके। अतः वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है: 'इस नगर में प्रवेश करने या बाहर जाने वाले सभी स्थूल प्राणियों को इसी द्वार से होकर जाना होगा।' इसी प्रकार, हे भगवान, मुझे धम्म की वैधता का ज्ञान हो गया है।
"हे भगवान, अतीत के सभी धन्यजनों, अरहंतों, पूर्णतः प्रबुद्ध पुरुषों ने पांच बाधाओं, यानी बुद्धि को कमजोर करने वाले मानसिक विकारों का त्याग कर दिया था; उन्होंने अपने मन को ध्यान के चार आधारों में अच्छी तरह से स्थापित कर लिया था; उन्होंने ज्ञान के सात कारकों का विधिवत अभ्यास किया था, और वे अतुलनीय, सर्वोच्च ज्ञान में पूर्णतः प्रबुद्ध थे।"
और, हे भगवान, भविष्य के सभी धन्यजन, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध जन पाँच बाधाओं, उन मानसिक विकारों का त्याग करेंगे जो बुद्धि को कमजोर करते हैं; वे अपने मन को ध्यान के चार आधारों में अच्छी तरह स्थापित करेंगे; वे ज्ञान के सात कारकों का विधिवत अभ्यास करेंगे, और अतुलनीय, सर्वोच्च ज्ञान में पूर्णतः प्रबुद्ध होंगे।
और हे भगवान, भगवान बुद्ध भी, जो इस समय अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध हैं, उन्होंने पांच बाधाओं, यानी बुद्धि को कमजोर करने वाले मानसिक विकारों का त्याग कर दिया है; उन्होंने अपने मन को चार आधारों पर अच्छी तरह से स्थापित कर लिया है; उन्होंने ज्ञान के सात कारकों का विधिवत अभ्यास किया है, और वे अतुलनीय, सर्वोच्च ज्ञान में पूर्णतः प्रबुद्ध हैं।
18. और नालंदा में, पावारिका के आम के बाग में, भगवान बुद्ध अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार सलाह देते थे:
"ऐसा-ऐसा सद्गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्गुणपूर्ण आचरण द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता द्वारा पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; और बुद्धि में पूर्णतः विकसित मन कामवासना, अभिमान और अज्ञान के दोषों से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।"
19. जब भगवान ने नालंदा में अपनी इच्छानुसार समय व्यतीत किया, तब उन्होंने पूज्य आनंद को इस प्रकार संबोधित किया:
"आओ, आनंद, हम पातालगामा चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"

और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ पातालगामा में अपना निवास स्थान बनाया।
20. तब पाटालिगमा के भक्तों को पता चला, "भगवान पाटालिगमा आ गए हैं।" वे भगवान के पास गए, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गए और उनसे इस प्रकार कहा, "हे भगवान, कृपा करके हमारे सभा भवन में दर्शन कीजिए।" भगवान ने मौन रहकर सहमति दे दी।
21. भगवान बुद्ध की सहमति जानकर, पाटालिगमा के भक्त अपने-अपने स्थानों से उठे, उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया और उनकी ओर दाहिनी ओर मुख करके सभा भवन की ओर चल दिए। फिर उन्होंने सभा भवन को पूरी तरह से तैयार किया, फर्श को मिट्टी से ढका, बैठने की व्यवस्था की, पानी उपलब्ध कराया और एक दीपक जलाया। यह सब करने के बाद, वे भगवान बुद्ध के पास लौटे, उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया और एक तरफ खड़े होकर घोषणा की: "हे भगवान, सभा भवन तैयार है, फर्श पूरी तरह से मिट्टी से ढका हुआ है, बैठने की व्यवस्था और पानी उपलब्ध है और एक दीपक जलाया गया है। हे भगवान, जब चाहें तब आएँ।"
22. भगवान बुद्ध तैयार हुए और अपना कुंड और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के समूह के साथ सभा भवन में गए। पैर धोकर भगवान बुद्ध सभा भवन में प्रवेश कर मध्य स्तंभ के पास पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गए। भिक्षुओं के समूह ने भी पैर धोकर सभा भवन में प्रवेश किया और पश्चिमी दीवार के पास पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गए, ताकि भगवान बुद्ध उनके सामने हों। और पाटालिगमा के भक्तों ने भी पैर धोकर सभा भवन में प्रवेश किया और पूर्वी दीवार के पास पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठ गए, ताकि भगवान बुद्ध उनके सामने हों।

अनैतिक और नैतिक जीवन के फल

23. तब भगवान बुद्ध ने पाटालिगमा के भक्तों को इस प्रकार संबोधित किया: "अनैतिक मनुष्य, गृहस्थ, सद्‌गुणों से विमुख होकर पाँच विपत्तियों का सामना करते हैं: असावधानी के कारण धन की भारी हानि; बदनामी; हर समाज में, चाहे वह कुलीनों का हो, ब्राह्मणों का हो, गृहस्थों का हो या तपस्वियों का हो, भय और व्याकुलता में मृत्यु; और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, दुख के लोक में, दुखी अवस्था में, पाताल लोक में, नरक में पुनर्जन्म।"
24. "हे गृहस्थों, धर्मात्मा व्यक्ति को उसके सद्‌गुणों के अभ्यास से पाँच आशीर्वाद प्राप्त होते हैं: परिश्रम से धन में अत्यधिक वृद्धि; अच्छी प्रतिष्ठा; हर समाज में, चाहे वह कुलीनों का हो, ब्राह्मणों का हो, गृहस्थों का हो या तपस्वियों का हो, आत्मविश्वास से भरा व्यवहार; शांतिपूर्ण मृत्यु; और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर स्वर्गलोक में सुखी अवस्था में पुनर्जन्म।"
25. और भगवान बुद्ध ने रात का अधिकांश समय पाटालिगमा के भक्तों को धम्म का उपदेश देने, उन्हें प्रेरित करने, उनका ज्ञानवर्धन करने और उन्हें प्रसन्न करने में व्यतीत किया, जिसके बाद उन्होंने उन्हें यह कहते हुए विदा किया: "गृहस्थों, रात काफी आगे बढ़ चुकी है। आप अपनी सुविधानुसार जा सकते हैं।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और पाटालिगमा के भक्त अपनी सीटों से उठे, भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम किया और उनके सामने अपना दाहिना भाग रखते हुए चले गए। उनके जाने के तुरंत बाद भगवान बुद्ध एकांत में चले गए।
26. उस समय मगध के प्रधान मंत्री सुनीधा और वस्साकरा, वज्जियों से रक्षा के लिए पाटलिगामा में एक किला बनवा रहे थे। और हजारों की संख्या में देवताओं ने पाटलिगामा के स्थानों पर अपना अधिकार जमा लिया था। जिस क्षेत्र में उच्च शक्ति वाले देवता विराजमान थे, वहाँ उच्च शक्ति वाले अधिकारी भवन निर्माण में लगे हुए थे; और जहाँ मध्यम और निम्न शक्ति वाले देवता विराजमान थे, वहाँ मध्यम और निम्न शक्ति वाले अधिकारी भवन निर्माण में लगे हुए थे।
27. और भगवान बुद्ध ने दिव्य दृष्टि से, जो मनुष्यों की क्षमताओं से परे और शुद्ध है, पातालगामा में हजारों देवताओं को देखा, जिन्होंने विभिन्न स्थानों पर अधिकार कर लिया था। और रात्रि समाप्त होने से पहले, भोर होते हुए, भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, "हे आनंद, पातालगामा में नगर का निर्माण कौन कर रहा है?"
"मगध के प्रधान मंत्री, सुनीधा और वासकारा, वज्जियों से बचाव के लिए पाटलिगामा में एक किला बनवा रहे हैं।"
28. "आनंद, ऐसा लगता है मानो सुनीधा और वस्सकर ने तैंतीस देवताओं से परामर्श किया हो। क्योंकि मैंने, आनंद, दिव्य दृष्टि से, जो मनुष्यों की क्षमताओं से परे है, हजारों की संख्या में देवताओं को पाटलिगामा में स्थित स्थानों पर अधिकार जमाए हुए देखा है। जिस क्षेत्र में उच्च शक्ति वाले देवता विराजमान होते हैं, वहां उच्च शक्ति वाले अधिकारी भवन निर्माण में लगे रहते हैं; और जहां मध्यम और कम शक्ति वाले देवता विराजमान होते हैं, वहां मध्यम और कम शक्ति वाले अधिकारी भवन निर्माण में लगे रहते हैं। सचमुच, आनंद, आर्य वंश जहां तक फैला है और व्यापार मार्ग जहां तक जाते हैं, पाटलिपुत्त प्रमुख नगर होगा, एक व्यापार केंद्र। लेकिन पाटलिपुत्त, आनंद, तीन विपत्तियों - अग्नि, जल और कलह - से घिरा रहेगा।"
29. तब सुनीधा और वासकारा भगवान बुद्ध के पास गए और उन्हें विनम्रतापूर्वक प्रणाम करने और अनेक सुखद बातें करने के बाद एक तरफ खड़े होकर उनसे इस प्रकार कहा, "हे पूज्य गौतम, कल भिक्षुओं के समुदाय के साथ भोज के लिए हमारा निमंत्रण स्वीकार कीजिए।" और भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दे दी।
30. भगवान बुद्ध की सहमति जानकर, सुनीधा और वस्सकारा अपने-अपने निवास स्थानों के लिए प्रस्थान कर गए, जहाँ उन्होंने उत्तम प्रकार का भोजन, कठोर और नरम, तैयार करवाया। और जब समय हुआ, तो उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा: "हे पूज्य गौतम, भोजन तैयार है।"

तब भगवान बुद्ध ने सुबह के समय तैयार होकर, पान का पात्र और वस्त्र धारण करके भिक्षुओं के समुदाय के साथ सुनीधा और वस्सकारा के निवास पर गए, जहाँ उन्होंने अपने लिए तैयार आसन ग्रहण किया। सुनीधा और वस्सकारा ने स्वयं बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समुदाय की सेवा की और उन्हें उत्तम भोजन, कठोर और नरम, परोसा। जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और पान के पात्र से अपना हाथ हटा लिया, तो वे सभी नीची कुर्सियों पर बैठकर एक तरफ बैठ गए।
31. और भगवान बुद्ध ने इन छंदों के साथ उनका आभार व्यक्त किया:
वह जहाँ कहीं भी निवास करे, विवेकशील व्यक्ति पवित्र और गुणी लोगों की सेवा करता है; और इन योग्य लोगों को दान देकर, वह अपने पुण्य का सदुपयोग स्थानीय देवताओं के साथ करता है।
और इस प्रकार पूजनीय होने के कारण, वे भी उनका आदर करते हैं, उनके प्रति वैसे ही दयालु होते हैं जैसे एक माँ अपने इकलौते बेटे के प्रति होती है; और जो इस प्रकार देवताओं की कृपा का पात्र होता है, और उनका प्रिय होता है, उसे सौभाग्य प्राप्त होता है। इसके बाद, भगवान बुद्ध अपने आसन से उठे और प्रस्थान कर गए।

गंगा पार करना

32. तब सुनीधा और वस्सकारा भगवान बुद्ध के पीछे-पीछे कदम-कदम चलते हुए बोले, "जिस भी द्वार से आज गौतम संन्यासी प्रस्थान करेंगे, हम उसका नाम गौतम द्वार रखेंगे; और जिस घाट से वे गंगा पार करेंगे, उसका नाम भी गौतम घाट रखा जाएगा।" और ऐसा ही हुआ, द्वार के संबंध में।
33. जब भगवान बुद्ध गंगा नदी के पास पहुँचे, तो वह नदी पूरी तरह से भरी हुई थी, यहाँ तक कि कौवे भी उससे पानी पी रहे थे। कुछ लोग नाव या तैरने के साधन की तलाश में निकल पड़े, जबकि अन्य लोगों ने बेड़ा बाँध लिया, क्योंकि वे नदी पार करना चाहते थे। परन्तु भगवान बुद्ध, एक बलवान पुरुष के मुड़े हुए हाथ को फैलाने या अपने फैले हुए हाथ को समेटने की गति से ही, गंगा नदी के इस किनारे से लुप्त हो गए और उस पार जाकर खड़े हो गए।
34. और भगवान बुद्ध ने देखा कि पार जाने की इच्छा रखने वाले लोग नाव या तैरने वाली नाव की तलाश कर रहे थे, जबकि अन्य लोग बेड़े बाँध रहे थे। तब भगवान बुद्ध ने उन्हें इस प्रकार देखकर गंभीर वचन कहा:
जिन्होंने विशाल सागर पर पुल बनाया है, निचले इलाकों को बहुत पीछे छोड़ते हुए, जबकि अन्य अभी भी अपनी कमजोर नावों को बांधे हुए हैं, वे अतुलनीय ज्ञान द्वारा बचाए गए हैं।

भाग दो: वेसाली की यात्रा

चार आर्य सत्य

1. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, "आओ, आनंद, हम कोटिगामा चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ कोटिगामा में निवास करने लगे।
2. और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्षुओं, चार आर्य सत्यों को न जानने और न ही उनमें पूर्णतः प्रवेश करने के कारण ही यह जन्म-मृत्यु का चक्र मेरे और आपके द्वारा भोगा गया है। ये चार सत्य क्या हैं? ये हैं: दुख का आर्य सत्य; दुख के कारण का आर्य सत्य; दुख के निवारण का आर्य सत्य; और दुख के निवारण के मार्ग का आर्य सत्य। परन्तु अब, भिक्षुओं, इन आर्य सत्यों को जान लेने और उनमें पूर्णतः प्रवेश करने से, जीवन की लालसा का नाश हो गया है, पुनर्जन्म का मार्ग नष्ट हो गया है, और अब कोई नया पुनर्जन्म नहीं है।"
3. इस प्रकार भगवान बुद्ध ने कहा। और धन्य गुरु ने आगे कहा:
चार आर्य सत्यों को न जानने के कारण जन्म-जन्म का लंबा और थकाऊ मार्ग व्यतीत होता था। जब इनका ज्ञान हो जाता है, तो पुनर्जन्म का कारण दूर हो जाता है, दु:ख का मूल उखड़ जाता है; तब पुनर्जन्म का अंत हो जाता है। 4. और कोटिगामा में भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को अक्सर इस प्रकार उपदेश दिया: "ऐसा सद्गुण है; ऐसी एकाग्रता है; और ऐसा ज्ञान है। जब एकाग्रता सद्गुणों से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब ज्ञान एकाग्रता से पूर्णतः विकसित हो जाता है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; वह मन जो ज्ञान में पूर्णतः विकसित हो जाता है, कामवासना, कर्म और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त हो जाता है।"
5. जब भगवान बुद्ध कोटिगामा में अपनी इच्छानुसार कुछ देर ठहर गए, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा: "आओ, आनंद, हम नादिका चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ नादिका में ईंट के घर में निवास किया।

चार विशिष्ट उपलब्धियाँ

6. तब पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पास आए और आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम करके एक तरफ बैठ गए। उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, नादिका में भिक्षु सलहा और भिक्षुणी नंदा का देहांत हो गया है। इसी प्रकार सुदत्त और सुजाता, काकुधा, कलिंग, निकता, कटिस्सभ, तुत्था, संतुत्था, भद्दा और सुभद्दा का भी देहांत हो गया है। हे भगवान, उनका क्या भाग्य है? उनका भविष्य क्या होगा?”
7. "भिक्षु सलहा, आनंद ने इसी जीवनकाल में दोषों के नाश के द्वारा मन की दोषमुक्ति और ज्ञान के माध्यम से मुक्ति प्राप्त कर ली है, क्योंकि उन्होंने इसे स्वयं प्रत्यक्ष रूप से जान और अनुभव कर लिया है।"
"भिक्खुनी नंदा, आनंद, पांच निम्न बंधनों (जो प्राणियों को इंद्रियों के जगत से बांधते हैं) के विनाश के माध्यम से (शुद्धवास देवताओं के बीच) स्वतः ही उत्पन्न हुए हैं और उसी स्थान पर उनका अंत होगा, वे उस लोक से वापस लौटने के योग्य नहीं होंगे।"
"गृहस्थ सुदत्त, आनंद ने तीन बंधनों (आत्मविश्वास, संदेह और अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों की प्रभावकारिता में विश्वास) के नाश और काम, घृणा और भ्रम में कमी के माध्यम से एक बार पुनरावर्ती बन गया है और इस दुनिया में एक बार फिर लौटने के बाद दुख का अंत करने के लिए बाध्य है।"
"तीनों बंधनों के नाश के द्वारा सुजाता, आनंद नामक गृहस्थ स्त्री, धारा-प्रवेशक बन गई है और दुख की अवस्थाओं में गिरने से सुरक्षित, आश्वस्त और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर है।"
"पांच निम्न बंधनों (जो प्राणियों को इंद्रियों के जगत से बांधते हैं) के विनाश के माध्यम से, गृहस्थ ककुधा, आनंद, स्वतः ही (शुद्धवास देवताओं के बीच) उत्पन्न हुए हैं, और उसी स्थान पर उनका अंत होगा, वे उस लोक से वापस लौटने के योग्य नहीं होंगे।"
"इसी प्रकार कलिंग, निकटा, कटिस्भा, तुत्था, संतुत्था, भद्दा और सुभद्दा के साथ-साथ नादिका में पचास से अधिक गृहस्थों का भी यही हाल है। नादिका में आनंद द्वारा परलोक विदा हुए नब्बे से अधिक गृहस्थ, तीनों बंधनों के नाश और कामवासना, घृणा और मोह के कम होने के कारण, एक बार फिर इस संसार में लौटकर दुःख का अंत करने के लिए बाध्य हैं।"
"नादिका, आनंद में प्राण त्याग चुके पांच सौ से अधिक गृहस्थ, तीनों बंधनों के पूर्ण नाश के कारण, जलधारा में प्रवेश करने वाले बन गए हैं और दुख की अवस्थाओं में गिरने से सुरक्षित हैं, आश्वस्त हैं और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर हैं।"

धम्म का दर्पण

8. "लेकिन हे आनंद, वास्तव में मनुष्यों की मृत्यु कोई आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन यदि हर बार ऐसा होने पर तुम तथागत के पास आकर इस प्रकार उनके बारे में पूछोगे, तो यह उनके लिए कष्टदायी होगा। इसलिए, हे आनंद, मैं तुम्हें धर्म का दर्पण नामक शिक्षा दूंगा, जिसे प्राप्त करके श्रेष्ठ शिष्य, यदि वह चाहे, तो अपने बारे में कह सकता है: 'अब मेरा न तो नरक में, न पशु रूप में, न प्रेत रूप में, न ही किसी दुःख लोक में पुनर्जन्म होगा। मैं एक जल-प्रवेशक हूं, दुःख की अवस्थाओं में गिरने से सुरक्षित हूं, आश्वस्त हूं और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर हूं।'"
9. "और हे आनंद, वह शिक्षा क्या है जिसे धम्म का दर्पण कहा जाता है, जिसके द्वारा श्रेष्ठ शिष्य अपने बारे में इस प्रकार बता सकता है?"
"इस मामले में, आनंद, जो एक श्रेष्ठ शिष्य है, बुद्ध में अटूट विश्वास रखता है और कहता है: 'भगवान अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध हैं, ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण हैं, सुखी हैं, संसार के ज्ञाता हैं, प्राणियों के सर्वोपरि प्रशिक्षक हैं, देवताओं और मनुष्यों के गुरु हैं, प्रबुद्ध हैं, भगवान हैं।"
"उनका धम्म में अटूट विश्वास इस प्रकार है: 'भगवान द्वारा अच्छी तरह से प्रतिपादित धम्म स्पष्ट, शाश्वत, अध्ययन के लिए आमंत्रित करने वाला, मुक्ति की ओर ले जाने वाला, और बुद्धिमानों द्वारा अपने-अपने लिए समझा जाने वाला है।'
"वह भगवान बुद्ध के शिष्यों के संघ में अटूट विश्वास रखते हैं और कहते हैं: 'भगवान बुद्ध के शिष्यों का संघ, धार्मिकता, बुद्धिमत्ता और कर्तव्यनिष्ठा से फलता-फूलता है: अर्थात्, मनुष्यों के चार जोड़े, व्यक्तियों के आठ वर्ग। भगवान बुद्ध के शिष्यों का संघ सम्मान, आतिथ्य, भेंट और आदर के योग्य है - संसार में पुण्य कर्मों का सर्वोच्च क्षेत्र है।"
और उसमें वे गुण हैं जो श्रेष्ठजनों को प्रिय हैं, पूर्ण और परिपूर्ण, निष्कलंक और पवित्र, जो मुक्तिदायक हैं, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित हैं, (सांसारिक चिंताओं से) अप्रभावित हैं, और मन की एकाग्रता के लिए अनुकूल हैं।
10. "हे आनंद, यही वह शिक्षा है जिसे धम्म का दर्पण कहा जाता है, जिसके द्वारा श्रेष्ठ शिष्य स्वयं को इस प्रकार जान सकता है: 'अब मेरा पुनर्जन्म न तो नरक में होगा, न पशु रूप में, न प्रेत रूप में, न ही किसी दुःख लोक में। मैं एक सहज ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति हूँ, दुःख की अवस्थाओं में गिरने से सुरक्षित हूँ, आश्वस्त हूँ और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर हूँ।'"
11. और नादिका में, ईंट के घर में, भगवान बुद्ध अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार उपदेश देते थे: "ऐसा-ऐसा सद्गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्गुणों से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; काम, कर्म और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त वह मन है जो बुद्धि में पूर्णतः विकसित हो जाता है।"
12. जब भगवान बुद्ध नादिका में अपनी इच्छानुसार कुछ देर ठहर गए, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा, "आओ, आनंद, हम वैशाली चलें।"

"ऐसा ही हो, हे भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ वैशाली में अपना निवास स्थान बनाया और अंबपाली के उपवन में ठहरे।

जागरूकता और स्पष्ट समझ
13. तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: "हे भिक्षुओं, तुम सजग रहो, स्पष्ट रूप से समझो; मैं तुम्हें यही उपदेश देता हूँ।"
14. "और हे भिक्षुओं, भिक्षु कैसे सचेत रहता है? जब वह शरीर में शरीर का चिंतन करता है, गंभीर रूप से, स्पष्ट रूप से समझते हुए और सचेत रहते हुए, संसार के संबंध में इच्छा और दु:ख पर विजय प्राप्त कर लेता है; और जब वह भावनाओं में भावनाओं का, मन में मन का और मानसिक विषयों में मानसिक विषयों का चिंतन करता है, गंभीर रूप से, स्पष्ट रूप से समझते हुए और सचेत रहते हुए, संसार के संबंध में इच्छा और दु:ख पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब उसे सचेत कहा जाता है।"
15. "और हे भिक्षुओं, भिक्षु को स्पष्ट ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? जब वह अपने आने-जाने, आगे देखने और पीछे देखने, झुकने और अंगड़ाई लेने, वस्त्र धारण करने और पान पात्र उठाने, खाने-पीने, चबाने और स्वाद लेने, शौच करने और पेशाब करने, चलने, खड़े होने, बैठने, लेटने, सोने या जागते रहने, बोलने या चुप रहने के प्रति पूर्णतः सजग रहता है, तब उसे स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होता है।"
"हे भिक्षुओं, तुम सजग रहो और स्पष्ट रूप से समझो; मैं तुम्हें यही उपदेश देता हूँ।"

अंबापाली और लिच्छवी
16. तब वेश्या अंबपाली को पता चला, “लोग कहते हैं कि भगवान वैशाली आ गए हैं और मेरे आम के बाग में ठहरे हुए हैं।” उसने बहुत से भव्य रथ तैयार करवाने का आदेश दिया, स्वयं उनमें से एक पर सवार हुई और बाकी लोगों के साथ वैशाली से अपने उद्यान की ओर चल पड़ी। वह रथ में जहाँ तक जा सकती थी, वहाँ तक गई, फिर उतर गई; और भगवान के पास पैदल चलकर, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गई। भगवान ने वेश्या अंबपाली को धर्म का उपदेश दिया और उसे प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न किया।
17. इसके बाद वेश्या अंबपाली ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, कल भिक्षुओं के समुदाय के साथ भोज के लिए मेरा निमंत्रण स्वीकार कीजिए।” और भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दे दी।
तो, भगवान की सहमति से आश्वस्त होकर, वेश्या अंबपाली अपनी सीट से उठी, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और अपना दाहिना भाग उनकी ओर रखते हुए वहां से चली गई।
18. तब वैशाली के लिच्छवियों को पता चला, “वे कहते हैं कि भगवान वैशाली पहुँच गए हैं और अंबपाली के उपवन में ठहरे हुए हैं।” उन्होंने बड़ी संख्या में भव्य रथ तैयार करवाए, प्रत्येक पर एक-एक सवार हुआ और बाकी लिच्छवियों के साथ वैशाली से निकल पड़े। इन लिच्छवियों में से कुछ नीले रंग के वस्त्र और आभूषण पहने हुए थे, जबकि अन्य पीले, लाल और सफेद रंग के वस्त्र पहने हुए थे।
19. और ऐसा हुआ कि वेश्या अंबपाली ने युवा लिच्छवियों पर धुरी दर धुरी, पहिया दर पहिया और जुआ दर जुआ करके हमला कर दिया। तब लिच्छवियों ने कहा, "अंबपाली, तुम इस तरह हम पर हमला क्यों कर रही हो?"
"यद्यपि, ऐसा ही है, अन्यथा नहीं! क्योंकि भगवान बुद्ध को मैंने भिक्षुओं के समुदाय के साथ कल के भोज में आमंत्रित किया है!"
"अंबापाली, एक लाख के बदले खाना छोड़ दो!"
लेकिन उसने जवाब दिया: "यद्यपि आप मुझे वेसाली राज्य, उसके सहायक क्षेत्रों सहित, दे भी दें, तो भी मैं इतने महत्वपूर्ण भोजन को नहीं छोड़ूंगी।"
तब लिच्छवियों ने झुंझलाहट में उंगलियां चटकाते हुए कहा: "देखो, मित्रों! हम इस आम वाली लड़की से हार गए! हम इस आम वाली लड़की से पूरी तरह से मात खा गए!" लेकिन वे अंबपाली के बाग की ओर अपने रास्ते पर चलते रहे।
20. और भगवान बुद्ध ने दूर से लिच्छवियों को आते हुए देखा। फिर उन्होंने भिक्षुओं से कहा, “हे भिक्षुओं, जिन्होंने अभी तक तैंतीस देवताओं के दर्शन नहीं किए हैं, वे लिच्छवियों के इस समूह को देखें और उनका ध्यान लगाएं, क्योंकि वे तैंतीस देवताओं के समूह के समान हैं।”
21. तब लिच्छवियों ने अपने रथों को जहाँ तक जा सकते थे, वहाँ तक चलाया, फिर उतर गए; और भगवान बुद्ध के पास पैदल चलकर आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। भगवान बुद्ध ने लिच्छवियों को धम्म का उपदेश दिया, और उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न किया।
22. इसके बाद लिच्छवियों ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, कल भिक्षुओं के समुदाय के साथ भोज के लिए हमारा निमंत्रण स्वीकार करें।"
"लिच्छवी, कल के भोजन का निमंत्रण मैंने वेश्या अंबपाली से स्वीकार कर लिया है।"
तब लिच्छवियों ने झुंझलाहट में उंगलियां चटकाते हुए कहा: "देखो, मित्रों! हम इस आम वाली कन्या से हार गए! हम इस आम वाली कन्या से पूरी तरह से मात खा गए!" और फिर लिच्छवी, भगवान बुद्ध के शब्दों से प्रसन्न होकर, अपनी सीटों से उठे, उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया और उनके सामने अपना दाहिना भाग रखते हुए वहां से चले गए।

23. फिर रात बीत जाने के बाद, वेश्या अम्बापाली ने अपने उद्यान में उत्तम भोजन, हर प्रकार का, तैयार करवाया और भगवान बुद्ध को सूचित किया: "हे भगवान, समय हो गया है; भोजन तैयार है।" तब भगवान बुद्ध सुबह तड़के तैयार हुए और कुंड और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के समुदाय के साथ अम्बापाली के निवास पर गए और वहाँ अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। अम्बापाली स्वयं बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समुदाय की सेवा करती रही और उन्हें उत्तम भोजन, हर प्रकार का, परोसा।
24. जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और कटोरे से अपना हाथ हटा लिया, तब वेश्या अंबपाली ने एक नीची चौकी पर बैठकर एक तरफ खड़े होकर भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, मैं यह उद्यान बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समुदाय को अर्पित करती हूँ।" और भगवान बुद्ध ने उद्यान स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने अंबपाली को धम्म का उपदेश दिया, और उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न करके वे अपने आसन से उठे और चले गए।
25. वैशाली में, अंबपाली के उपवन में, भगवान बुद्ध अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार उपदेश देते थे: "ऐसा-ऐसा सद्गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्गुणों से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; काम, कर्म और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त वह मन है जो बुद्धि में पूर्णतः विकसित हो जाता है।"
26. जब भगवान बुद्ध अंबपाली के उपवन में अपनी इच्छानुसार कुछ देर ठहर गए, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा, "आओ, आनंद, हम बेलुवा के गाँव चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ बेलुवा ग्राम में निवास किया।

भगवान की जानलेवा बीमारी

27. उस समय भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा, "हे भिक्षुओं, अब जाओ और वैशाली के आसपास के किसी भी ऐसे स्थान पर शरण लो जहाँ तुम्हारा स्वागत हो, परिचितों और मित्रों के बीच, और वर्षा ऋतु वहीं व्यतीत करो। मैं वर्षा ऋतु यहीं बेलुवा गाँव में व्यतीत करूँगा।"
"हे भगवान, ऐसा ही हो," भिक्षुओं ने कहा।
28. परन्तु जब बुद्ध ने वर्षा ऋतु में प्रवेश किया, तो उन्हें एक गंभीर रोग हो गया और तीव्र एवं जानलेवा पीड़ा होने लगी। परन्तु बुद्ध ने उस पीड़ा को सजग, स्पष्टतः समझते हुए और अविचलित रहते हुए सहन किया।
29. तब भगवान बुद्ध के मन में यह विचार आया: "यदि मैं अपने सेवकों को संबोधित किए बिना, भिक्षु समुदाय से विदा लिए बिना ही इस दुनिया से विदा हो जाऊं, तो यह उचित नहीं होगा। इसलिए, मैं अपनी इच्छाशक्ति से इस रोग को वश में कर लूं, जीवन चक्र को जारी रखने का संकल्प लूं और आगे बढ़ता रहूं।"
30. और भगवान बुद्ध ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से रोग को दबा दिया, जीवन प्रक्रिया को जारी रखने का संकल्प लिया और जीवित रहे। इस प्रकार भगवान बुद्ध का रोग शांत हो गया।
31. और भगवान बुद्ध उस बीमारी से ठीक हो गए; और ठीक होने के तुरंत बाद वे अपने निवास स्थान से बाहर आए और भवन की छाया में, उनके लिए तैयार की गई आसन पर बैठ गए। तब पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पास गए, आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया और एक तरफ बैठकर उनसे कहा, "हे भगवान, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि भगवान बुद्ध फिर से आराम से हैं! यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि भगवान बुद्ध ठीक हो गए हैं! क्योंकि हे भगवान, जब मैंने भगवान बुद्ध को बीमार देखा तो ऐसा लगा जैसे मेरा अपना शरीर लता के समान कमजोर हो गया हो, मेरे आस-पास सब कुछ धुंधला हो गया हो और मेरी इंद्रियां काम करना बंद कर चुकी हों। फिर भी, हे भगवान, मुझे इस विचार से कुछ सांत्वना मिली कि भगवान बुद्ध भिक्षुओं के समुदाय के विषय में कुछ अंतिम उपदेश देने के बाद ही इस दुनिया से विदा होंगे।"
32. आदरणीय आनंद ने ऐसा कहा, परन्तु भगवान बुद्ध ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "आनंद, भिक्षु समुदाय मुझसे और क्या अपेक्षा रखता है? मैंने धम्म का निरूपण गूढ़ और बाह्य सिद्धांतों में भेद किए बिना किया है; आनंद, तथागत शिक्षाओं के विषय में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वे किसी शिक्षक की तरह अंत तक अपने पास रखते हों। जो कोई यह सोचता है कि भिक्षु समुदाय का नेतृत्व उन्हें करना चाहिए, या समुदाय उन पर निर्भर है, तो ऐसे व्यक्ति को ही भिक्षु समुदाय के विषय में अंतिम उपदेश देने होंगे। परन्तु आनंद, तथागत ऐसा कोई विचार नहीं रखते कि भिक्षु समुदाय का नेतृत्व उन्हें करना चाहिए, या समुदाय उन पर निर्भर है। तो भिक्षु समुदाय के विषय में उन्हें क्या उपदेश देने होंगे?"
"अब मैं दुर्बल हो गया हूँ, आनंद, बूढ़ा, उम्रदराज, काफी बूढ़ा। यह मेरा अस्सीवाँ वर्ष है, और मेरा जीवन समाप्त हो गया है। जैसे एक पुरानी गाड़ी, आनंद, बड़ी मुश्किल से चलती है, वैसे ही तथागत का शरीर भी सहारे के बिना नहीं चल पाता। आनंद, तथागत तभी अधिक आराम महसूस करते हैं जब वे बाह्य वस्तुओं का अनादर करते हुए, कुछ भावनाओं के शांत होने पर, निरूपी एकाग्रता की अवस्था में लीन हो जाते हैं।"
33. "इसलिए, हे आनंद, अपने आप में द्वीप बनो, अपने आप में शरण बनो, किसी बाहरी शरण की तलाश न करो; धम्म को अपना द्वीप बनाओ, धम्म को अपनी शरण बनाओ, किसी अन्य शरण की तलाश न करो।"

और हे आनंद, भिक्षु स्वयं में एक द्वीप, स्वयं में एक शरणस्थली कैसे होता है, जो किसी बाहरी शरण की तलाश नहीं करता; धम्म ही उसका द्वीप है, धम्म ही उसकी शरणस्थली है, वह किसी अन्य शरण की तलाश नहीं करता?
34. जब वह शरीर में शरीर का चिंतन करते हुए, गंभीर रूप से, स्पष्ट रूप से समझते हुए और सचेत होकर, संसार के संबंध में इच्छा और दुःख पर विजय प्राप्त कर लेता है; जब वह भावनाओं में भावनाओं का, मन में मन का और मानसिक विषयों में मानसिक विषयों का चिंतन करते हुए, गंभीर रूप से, स्पष्ट रूप से समझते हुए और सचेत होकर, संसार के संबंध में इच्छा और दुःख पर विजय प्राप्त कर लेता है, तब वास्तव में वह अपने आप में एक द्वीप है, अपने आप में एक शरणस्थल है, किसी बाहरी शरण की तलाश नहीं करता; धम्म को अपना द्वीप और धम्म को अपनी शरणस्थल बनाकर, किसी अन्य शरण की तलाश नहीं करता।
35. "हे आनंद, मेरे वे भिक्षु जो अभी या मेरे जाने के बाद, अपने लिए एक द्वीप की तरह, अपने लिए एक शरणस्थली की तरह रहते हैं, और किसी अन्य शरणस्थली की तलाश नहीं करते; धम्म को अपना द्वीप और शरणस्थली बनाकर, किसी अन्य शरणस्थली की तलाश नहीं करते: वे ही सर्वोच्च होंगे, 20 यदि उनमें सीखने की इच्छा हो।"

भाग तीन: जीने की इच्छा का त्याग

भगवान की प्रेरणा

1. फिर भगवान बुद्ध ने दोपहर से पहले तैयार होकर भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर वैशाली में भिक्षा मांगने गए। भिक्षा मांगने और भोजन करने के बाद लौटकर उन्होंने पूज्य आनंद से कहा, "आनंद, चटाई उठा लो और चलो आज का दिन चपाल मंदिर में व्यतीत करें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और पूज्य आनंद ने चटाई उठाई और भगवान बुद्ध के पीछे-पीछे कदम-दर-कदम चलने लगे।
2. भगवान बुद्ध चपाल मंदिर गए और अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। जब पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए, तब भगवान ने उनसे कहा, "हे आनंद, वैशाली सुंदर है; उदेना, गौतमक, सत्तंबक, बहुपुत्त, सरंददा और चपाल के मंदिर भी सुंदर हैं।"
3. और भगवान बुद्ध ने कहा: "हे आनंद, जिसने भी मानसिक शक्ति के चार तत्वों को विकसित किया है, अभ्यास किया है, उपयोग किया है, मजबूत किया है, बनाए रखा है, बारीकी से जांचा है और पूर्णता तक पहुँचाया है, वह चाहे तो पूरे विश्वकाल तक या उसके अंत तक जीवित रह सकता है। हे आनंद, तथागत ने ऐसा ही किया है। इसलिए तथागत चाहे तो पूरे विश्वकाल तक या उसके अंत तक जीवित रह सकते थे।"
4. परन्तु पूज्य आनंद भगवान बुद्ध द्वारा दिए गए स्पष्ट सुझाव, उस महत्वपूर्ण प्रेरणा को समझ नहीं पाए। मानो उनका मन मार से प्रभावित था, उन्होंने भगवान बुद्ध से यह प्रार्थना नहीं की: "हे भगवान, भगवान बुद्ध समस्त संसार में बने रहें! हे भगवान, हे सुखी बुद्ध समस्त संसार में बने रहें, जनसमूह के कल्याण और सुख के लिए, संसार पर दया करते हुए, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए!"
5. और जब भगवान ने दूसरी और तीसरी बार अपने शब्दों को दोहराया, तो पूज्य आनंद मौन रहे।
6. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा: "अब जाओ, आनंद, और जो तुम्हें उचित लगे वही करो।"
"जी भगवान, ऐसा ही हो।" और पूज्य आनंद अपने आसन से उठकर भगवान को आदरपूर्वक प्रणाम किया और अपना दाहिना भाग उनकी ओर करके कुछ दूरी पर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए।

मारा की अपील

7. जब पूज्य आनंद चले गए, तब दुष्ट मारा भगवान बुद्ध के पास आया। एक तरफ खड़े होकर उसने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, अब भगवान बुद्ध को उनके अंतिम प्राण त्यागने दीजिए; हे सुखी बुद्ध को पूर्णतः प्राण त्यागने दीजिए! भगवान के परिनिर्वाण का समय आ गया है।"
"हे भगवान, भगवान ने मुझसे ये शब्द कहे: 'हे दुष्ट, मैं तब तक अपने अंतिम प्राण त्याग नहीं दूंगा जब तक मेरे भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और स्त्रियां, सच्चे शिष्य न बन जाएं - बुद्धिमान, अनुशासित, योग्य और विद्वान, धम्म के संरक्षक, धम्म के अनुसार जीवन यापन करने वाले, उचित आचरण का पालन करने वाले, और गुरु के वचन को सीखकर, उसकी व्याख्या करने, उसका प्रचार करने, उसका उद्घोष करने, उसे स्थापित करने, उसे प्रकट करने, उसका विस्तार से वर्णन करने और उसे स्पष्ट करने में सक्षम न हो जाएं; जब तक कि प्रतिकूल मत उत्पन्न हों, तो वे उनका पूर्णतः और अच्छी तरह खंडन करने और इस प्रेरक और मुक्तिदायक धम्म का प्रचार करने में सक्षम न हो जाएं।"
8. "और अब, हे भगवान, भिक्षुओं और भिक्षुणियों, गृहस्थ पुरुषों और गृहस्थ महिलाओं, आप सभी इस प्रकार भगवान बुद्ध के शिष्य बन गए हैं। अतः, हे भगवान, भगवान बुद्ध के अंतिम परलोक में प्रवेश होने दीजिए! भगवान के परिनिर्वाण का समय आ गया है।"
हे भगवान, भगवान ने मुझसे ये शब्द कहे थे: 'हे दुष्ट, मैं तब तक परलोक नहीं जाऊँगा जब तक मेरे द्वारा सिखाया गया यह पवित्र जीवन सफल, समृद्ध, प्रसिद्ध, लोकप्रिय और व्यापक न हो जाए, जब तक यह देवताओं और मनुष्यों के बीच अच्छी तरह से घोषित न हो जाए।'

और ऐसा ही हुआ है। इसलिए, हे भगवान, भगवान को परलोक जाने दो, भगवान को पूर्णतः परलोक जाने दो! भगवान के परिनिर्वाण का समय आ गया है।
भगवान ने जीने की इच्छा का त्याग कर दिया।
9. यह सुनकर भगवान बुद्ध ने दुष्ट मारा से कहा, "हे दुष्ट, चिंता मत करो। शीघ्र ही तथागत का परिनिर्वाण होगा। तीन माह बाद तथागत का पूर्णतः परारोहण हो जाएगा।"
10. और कपाला तीर्थस्थल पर भगवान बुद्ध ने सचेतन और स्पष्ट रूप से समझते हुए जीवन जीने की इच्छा का त्याग कर दिया। भगवान बुद्ध द्वारा जीवन जीने की इच्छा का त्याग करने पर एक भयंकर भूकंप आया, जो भयावह और आश्चर्यजनक था, और आकाश में गर्जना हुई। भगवान बुद्ध ने इसे समझदारी से देखा और यह गंभीर वचन कहा:
जीवन का कारण, चाहे वह असीम हो या सीमित—जीवन की उत्पत्ति की प्रक्रिया—इसका ऋषि त्याग करते हैं। आंतरिक शांति और आनंद के साथ वे अपने जीवन के कारण को, मानो कवच की तरह, तोड़ देते हैं। 11. तब पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "यह वास्तव में अद्भुत और अत्यंत आश्चर्यजनक है! पृथ्वी ज़ोर से कांप रही है! यह कितना भयानक और आश्चर्यजनक है कि आकाश में गर्जना गूंज रही है! ऐसा क्या कारण हो सकता है कि इतना शक्तिशाली भूकंप आया?"

भूकंप के आठ कारण
12. पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पास आए और आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम करते हुए एक तरफ बैठ गए। फिर उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, “यह वास्तव में अद्भुत और अत्यंत आश्चर्यजनक है! पृथ्वी बहुत ज़ोर से कांप रही है! आकाश में गर्जना कितनी भयानक और विस्मयकारी है! ऐसा शक्तिशाली भूकंप आने का कारण क्या हो सकता है?”
13. तब भगवान बुद्ध ने कहा: "हे आनंद, भयंकर भूकंप आने के आठ कारण हैं। वे आठ कारण क्या हैं?"
14. "आनंद, यह विशाल पृथ्वी द्रव पर, द्रव वायुमंडल पर और वायुमंडल अंतरिक्ष पर स्थापित है। और जब, आनंद, वायुमंडल में तीव्र हलचल होती है, तो द्रव में हलचल उत्पन्न होती है। और द्रव की हलचल से पृथ्वी में कंपन उत्पन्न होती है। यही शक्तिशाली भूकंपों के उत्पन्न होने का पहला कारण है।"
15. "आनंद, जब कोई तपस्वी या महान शक्तिवान संत, जिसने अपने मन पर विजय प्राप्त कर ली हो, या कोई शक्तिशाली और सामर्थ्यवान देवता, पृथ्वी तत्व के सीमित पहलू पर और द्रव तत्व पर असीम एकाग्रता विकसित करता है, तो वह भी पृथ्वी को थरथराने, कांपने और हिलाने का कारण बनता है। यही दूसरा कारण है, भयंकर भूकंपों के उत्पन्न होने का दूसरा कारण।"
16-21. "हे आनंद, जब बोधिसत्व तुषिता लोक से विदा होकर अपनी माता के गर्भ में सचेत और स्पष्ट रूप से अवतरित होते हैं; और जब बोधिसत्व अपनी माता के गर्भ से सचेत और स्पष्ट रूप से अवतरित होकर बाहर आते हैं; और जब तथागत अतुलनीय, सर्वोच्च ज्ञान में पूर्णतः प्रबुद्ध हो जाते हैं; जब तथागत धम्म के उत्कृष्ट चक्र को गतिमान करते हैं; जब तथागत जीवन जीने की इच्छा का त्याग करते हैं; और जब तथागत निर्वाण की उस अवस्था में विलीन हो जाते हैं जिसमें आसक्ति का कोई तत्व शेष नहीं रहता — तब भी, हे आनंद, यह महान पृथ्वी कांपती, थरथराती और हिलती है।"
"आनंद, ये आठ कारण हैं, एक महान भूकंप आने के आठ कारण।"

आठ विधानसभाएँ
22. "अब, हे आनंद, आठ प्रकार की सभाएँ होती हैं, अर्थात् कुलीनों, ब्राह्मणों, गृहस्थों, तपस्वियों, चार महान राजाओं, तैंतीस देवताओं, मारों और ब्रह्माओं की सभाएँ।"
23. "और मुझे याद है, आनंद, कि मैंने इन आठ प्रकार की सभाओं में भाग लिया है, जिनमें सैकड़ों लोग शामिल थे। बैठने और बातचीत या चर्चा शुरू करने से पहले, मैंने अपना रूप और अपनी आवाज़ उनके जैसी बना ली। और इस प्रकार मैंने उन्हें धम्म का उपदेश दिया, और उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न किया। फिर भी जब मैं उनसे इस प्रकार बोल रहा था, वे मुझे पहचान नहीं पाए, और वे एक-दूसरे से पूछते रहे: 'यह कौन है जो हमसे बात कर रहा है? क्या यह कोई मनुष्य है या कोई देवता?'"
"फिर उन्हें धम्म का उपदेश देकर, उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न करके, मैं तुरंत अंतर्धान हो जाता था। और मेरे अंतर्धान हो जाने पर भी, वे मुझे पहचान नहीं पाते थे, और वे एक-दूसरे से पूछते थे: 'वह कौन है जो अंतर्धान हो गया है? क्या वह मनुष्य है या देवता?'"

"और इस प्रकार, आनंद, आठ प्रकार की सभाएँ होती हैं।"
महारत के आठ क्षेत्र
24. "आनंद, अब महारत के आठ क्षेत्र हैं। वे आठ कौन से हैं?"

25. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से अनुभव करते हुए, अपने से बाहर छोटे रूपों, सुंदर या बदसूरत, को देखता है और उन पर महारत हासिल कर लेता है, तो उसे पता चलता है कि वह उन्हें वैसे ही देखता और जानता है जैसे वे हैं - यह महारत का पहला क्षेत्र है।"
26. "जब कोई व्यक्ति, व्यक्तिपरक रूप से रूपों को देखते हुए, अपने से बाहर बड़े रूपों, सुंदर या बदसूरत, को देखता है और उन पर महारत हासिल कर लेता है, तो वह इस बात से अवगत होता है कि वह उन्हें वैसे ही देखता और जानता है जैसे वे हैं - यह महारत का दूसरा क्षेत्र है।"
27. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से न देखते हुए, अपने से बाहर मौजूद छोटे रूपों, सुंदर या बदसूरत, को देखता है और उन पर महारत हासिल कर लेता है, तो वह इस बात से अवगत होता है कि वह उन्हें वैसे ही देखता और जानता है जैसे वे हैं - यह महारत का तीसरा क्षेत्र है।"
28. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से न देखते हुए, अपने से बाहर बड़े रूपों, सुंदर या बदसूरत, को देखता है और उन पर महारत हासिल कर लेता है, तो वह इस बात से अवगत होता है कि वह उन्हें वैसे ही देखता और जानता है जैसे वे हैं - यह महारत का चौथा क्षेत्र है।"
29. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से अनुभव किए बिना, अपने से बाहर नीले रंग के, नीली चमक वाले रूप देखता है, जैसे सन के फूल या बनारस के महीन मलमल के समान, जो दोनों तरफ से पॉलिश किया हुआ नीला होता है, नीली चमक वाला होता है - जब ऐसा व्यक्ति अपने से बाहर नीले रंग के रूप देखता है, और उन पर महारत हासिल करके, यह जानता है कि वह उन्हें जैसा है वैसा ही देखता और जानता है - यह महारत का पाँचवाँ क्षेत्र है।"
30. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से देखे बिना, अपने से बाहर पीले रंग के, पीले रंग की, कनिकारा फूल के समान पीली चमक वाली, या दोनों तरफ से पॉलिश किए गए महीन बनारस मलमल के समान पीले रंग की, पीली चमक वाली आकृतियों को देखता है - जब ऐसा व्यक्ति अपने से बाहर पीले रंग की आकृतियों को देखता है, और उन पर महारत हासिल करके, यह जानता है कि वह उन्हें उनके वास्तविक रूप में देखता और जानता है - तो यह महारत का छठा क्षेत्र है।"
31. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से देखे बिना, अपने से बाहर ऐसे रूप देखता है जो लाल रंग के हों, बंधुजीवका फूल के समान लाल चमक वाले हों, या दोनों तरफ से पॉलिश किए गए महीन बनारस मलमल के समान लाल रंग के हों, लाल चमक वाले हों - जब ऐसा व्यक्ति अपने से बाहर लाल रंग के रूप देखता है, और उन पर महारत हासिल कर लेता है, और इस बात से अवगत होता है कि वह उन्हें उनके वास्तविक रूप में देखता और जानता है - तो यह महारत का सातवां क्षेत्र है।"
32. "जब कोई व्यक्ति, रूपों को व्यक्तिपरक रूप से अनुभव किए बिना, अपने से बाहर ऐसे रूप देखता है जो श्वेत हैं, श्वेत रंग के हैं, भोर के तारे के समान श्वेत चमक वाले हैं, या दोनों तरफ से पॉलिश किए गए उत्तम बनारस मलमल के समान श्वेत हैं - जब ऐसा व्यक्ति अपने से बाहर श्वेत रूपों को देखता है, और उन पर महारत हासिल करके, इस बात से अवगत होता है कि वह उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में देखता और जानता है - तो यह महारत का आठवां क्षेत्र है।"
"आनंद, ये ही महारत के आठ क्षेत्र हैं।"

आठ मुक्ति

33. "आनंद, अब आठ मुक्ति हैं। वे आठ कौन सी हैं?"
34. "स्वयं आकार धारण करके ही व्यक्ति आकारों को देखता है; यही प्रथम मुक्ति है।"
35. "अपने स्वयं के रूप से अनभिज्ञ होकर, व्यक्ति अपने से बाह्य रूपों को अनुभव करता है; यही दूसरी मुक्ति है।"
36. "सुंदरता का अनुभव करते हुए, व्यक्ति उस पर ध्यान केंद्रित करता है; यही तीसरी मुक्ति है।"
37. "पदार्थ की धारणाओं से पूर्णतः परे जाकर, इंद्रिय-प्रतिक्रिया की धारणाओं के लुप्त होने से, और विविधता-धारणाओं पर ध्यान न देकर, व्यक्ति अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र के प्रति सजग हो जाता है, उसे प्राप्त कर लेता है और उसमें स्थिर हो जाता है; यही चौथी मुक्ति है।"
38. "अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को पूर्णतः पार करके, व्यक्ति अनंत चेतना के क्षेत्र के प्रति सजग हो जाता है, उसे प्राप्त कर लेता है और उसमें स्थिर हो जाता है; यही पाँचवीं मुक्ति है।"
39. "अनंत चेतना के क्षेत्र को पूर्णतः पार करके, व्यक्ति शून्यता के क्षेत्र के प्रति सजग हो जाता है, उसे प्राप्त कर लेता है और उसमें स्थिर हो जाता है; यही छठी मुक्ति है।"
40. "शून्यता के क्षेत्र को पूर्णतः पार करके, व्यक्ति न तो बोध और न ही अबोध के क्षेत्र को प्राप्त करता है और उसमें निवास करता है; यही सातवीं मुक्ति है।"
41. "न तो बोध और न ही अबोध के क्षेत्र को पूर्णतः पार करके, व्यक्ति बोध और संवेदना की समाप्ति को प्राप्त करता है और उसमें स्थिर रहता है; यही आठवीं मुक्ति है।"
"आनंद, ये आठ मुक्ति हैं।"

मारा का पूर्व प्रलोभन

42. "आनंद, एक समय ऐसा था जब मैं परम ज्ञान प्राप्ति के तुरंत बाद, नेरांजरा नदी के किनारे, उरुवेला में, चरवाहों के बरगद के वृक्ष की तलहटी में निवास कर रहा था। तभी दुष्ट मारा मेरे पास आकर बोला: 'हे भगवान, अब भगवान को उनके अंतिम प्राण त्यागने दीजिए! भगवान को पूर्णतः प्राण त्यागने दीजिए! भगवान के परिनिर्वाण का समय आ गया है।'"

43. "तब, हे आनंद, मैंने दुष्ट मारा को उत्तर देते हुए कहा: 'हे दुष्ट, मैं तब तक अपने अंतिम प्राण त्याग नहीं दूंगा जब तक मेरे भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और स्त्रियां, सच्चे शिष्य न बन जाएं—बुद्धिमान, अनुशासित, योग्य और विद्वान, धम्म के संरक्षक, धम्म के अनुसार जीवन यापन करने वाले, उचित आचरण का पालन करने वाले और गुरु के वचन को सीखकर उसकी व्याख्या करने, उसका प्रचार करने, उसका उद्घोष करने, उसे स्थापित करने, उसे प्रकट करने, उसकी विस्तार से व्याख्या करने और उसे स्पष्ट करने में सक्षम न हो जाएं; जब तक कि प्रतिकूल मत उत्पन्न हों, तो वे उनका पूर्णतः और अच्छी तरह खंडन करने और इस प्रेरक और मुक्तिदायक धम्म का प्रचार करने में सक्षम न हो जाएं।'

44. "'हे दुष्ट, मैं तब तक अपनी अंतिम मृत्यु को प्राप्त नहीं होऊंगा, जब तक कि मेरे द्वारा सिखाया गया यह पवित्र जीवन सफल, समृद्ध, दूर-दूर तक प्रसिद्ध, लोकप्रिय और व्यापक न हो जाए, जब तक कि देवताओं और मनुष्यों के बीच इसका अच्छी तरह से प्रचार न हो जाए।'

45. "और आज फिर, आनंद, चपाला मंदिर में, दुष्ट मारा मेरे पास आया और बोला: 'हे भगवान, भिक्षुओं और भिक्षुणियों, गृहस्थ पुरुषों और गृहस्थ महिलाओं, सभी भगवान बुद्ध के सच्चे शिष्य बन गए हैं - बुद्धिमान, सुशासित, योग्य और विद्वान, धम्म के संरक्षक, धम्म के अनुसार जीवन यापन करने वाले, उचित आचरण में रहने वाले, और गुरु के वचन को सीखकर, उसकी व्याख्या करने, उसका प्रचार करने, उसका प्रचार करने, उसे स्थापित करने, उसे प्रकट करने, उसकी विस्तार से व्याख्या करने और उसे स्पष्ट करने में सक्षम हैं; और जब प्रतिकूल मत उत्पन्न होते हैं, तो वे अब उनका पूरी तरह और अच्छी तरह से खंडन करने और इस प्रेरक और मुक्तिदायक धम्म का प्रचार करने में सक्षम हैं।

"और अब, हे भगवान, भगवान बुद्ध द्वारा सिखाया गया यह पवित्र जीवन सफल, समृद्ध, दूर-दूर तक प्रसिद्ध, लोकप्रिय और व्यापक हो गया है, और देवताओं और मनुष्यों के बीच इसकी अच्छी तरह से चर्चा हो रही है। इसलिए, हे भगवान, भगवान बुद्ध को उनके अंतिम देहांत तक आने दें! भगवान को पूर्णतः विदा होने दें! भगवान के परिनिर्वाण का समय आ गया है।"

46. "और फिर, आनंद, मैंने दुष्ट मारा को उत्तर देते हुए कहा: 'दुष्ट, तुम परेशान मत हो। शीघ्र ही तथागत का परिनिर्वाण होगा। तीन माह बाद तथागत का पूर्णतः अंत हो जाएगा।'"

47. "और इस प्रकार, आनंद, आज चपाला मंदिर में तथागत ने जीने की इच्छा का त्याग कर दिया है।"

आनंद की अपील

48. इन शब्दों को सुनकर पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, हे भगवान! हे भगवान, समस्त विश्वकाल में समस्त जन कल्याण और सुख के लिए, जगत के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के कल्याण, सुख और कल्याण के लिए बने रहें!"

49. और भगवान बुद्ध ने उत्तर देते हुए कहा, "बस करो, आनंद। तथागत से विनती मत करो, क्योंकि आनंद, ऐसी विनती का समय बीत चुका है।"

50-51. लेकिन दूसरी और तीसरी बार, पूज्य आनंद ने भगवान से कहा: "हे भगवान, भगवान बने रहें! हे भगवान, समस्त विश्वकाल में बने रहें, असंख्य लोगों के कल्याण और सुख के लिए, जगत के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए!"

52. तब भगवान ने कहा: "आनंद, क्या तुम्हें तथागत के ज्ञानोदय में विश्वास है?" और पूज्य आनंद ने उत्तर दिया: "हाँ, हे भगवान, मुझे विश्वास है।"

"तो फिर, आनंद, तुम तथागत के विरुद्ध तीसरी बार तक भी कैसे डटे रह सकते हो?"

53. तब पूज्य आनंद ने कहा: "हे भगवान, यह मैंने स्वयं भगवान बुद्ध से सुना और सीखा है, जब भगवान बुद्ध ने मुझसे कहा था: 'हे आनंद, जिसने भी मानसिक शक्ति के चार तत्वों को विकसित किया है, अभ्यास किया है, उपयोग किया है, मजबूत किया है, बनाए रखा है, बारीकी से परखा है और पूर्णता तक पहुँचाया है, वह यदि चाहे तो एक संसार काल तक या उसके अंत तक जीवित रह सकता है। हे आनंद, तथागत ने ऐसा ही किया है। इसलिए तथागत भी यदि चाहें तो एक संसार काल तक या उसके अंत तक जीवित रह सकते हैं।'"

54. "और क्या तुमने इस पर विश्वास किया, आनंदा?"

"हां, हे भगवान, मैंने किया।"

"तो, आनंद, गलती तुम्हारी है। इसमें तुम असफल रहे, क्योंकि तुम तथागत द्वारा दिए गए स्पष्ट सुझाव, महत्वपूर्ण संकेत को समझ नहीं पाए और तुमने तथागत से वहाँ रहने का आग्रह नहीं किया। क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया होता, आनंद, तो तथागत शायद दो बार मना कर देते, लेकिन तीसरी बार वे मान जाते। इसलिए, आनंद, गलती तुम्हारी है; इसमें तुम असफल रहे।"

55. "राजगृह में, आनंद, जब मैं गिद्ध शिखर पर निवास कर रहा था, मैंने तुमसे कहा था: 'आनंद, राजगृह कितना सुखद है; गिद्ध शिखर कितना सुखद है। आनंद, जिसने भी विकास किया है... इसलिए तथागत, यदि चाहें तो, एक विश्वकाल तक या उसके अंत तक रह सकते हैं।'
56. "इसी प्रकार बरगद के वन में, लुटेरों की चट्टान पर, वेभारा पर्वत पर स्थित सत्तपन्नी गुफा में, इसिगिली की काली चट्टान पर, शीतल वन में स्थित सर्पों के कुंड में, तपौदा के वन में, गिलहरियों के चरागाह में स्थित बांस के वन में, जीवक के आम के वन में और हिरण उद्यान में स्थित छोटे से कोने में मैंने तुमसे इन्हीं शब्दों में कहा था: 'हे आनंद, राजगृह कितना सुखद है, ये स्थान कितने सुखद हैं। हे आनंद, जिसने भी विकास किया है... इसलिए तथागत, यदि चाहें तो, एक विश्वकाल तक या उसके अंत तक रह सकते हैं।"
लेकिन हे आनंद, तुम तथागत द्वारा दिए गए स्पष्ट सुझाव और महत्वपूर्ण प्रेरणा को समझ नहीं पाए और तुमने तथागत से रुकने का आग्रह नहीं किया। क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया होता, हे आनंद, तो तथागत शायद दो बार मना कर देते, लेकिन तीसरी बार वे मान जाते। इसलिए, हे आनंद, गलती तुम्हारी है; इसमें तुम असफल रहे।
57. "इसी प्रकार, हे आनंद, वैशाली में तथागत ने समय-समय पर तुमसे कहा है: 'हे आनंद, वैशाली सुंदर है; उदेना, गौतमक, सत्तंबक, बहुपुत्त, सरंददा और चपाल के मंदिर सुंदर हैं। हे आनंद, जिसने भी उन्नति की है... इसलिए तथागत चाहें तो एक युग के पूरे काल तक या उसके अंत तक वहाँ रह सकते हैं।'
"परन्तु हे आनंद, तथागत द्वारा दिए गए स्पष्ट सुझाव, उस महत्वपूर्ण प्रेरणा को तुम समझ नहीं पाए और तथागत से वहाँ रुकने का आग्रह नहीं किया। क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया होता, हे आनंद, तो तथागत दो बार मना कर देते, परन्तु तीसरी बार वे मान जाते। अतः, हे आनंद, गलती तुम्हारी है; इसमें तुम असफल रहे।"
58. "फिर भी, आनंद, क्या मैंने शुरू से ही यह नहीं सिखाया है कि जो कुछ भी प्रिय और प्यारा है, उसमें परिवर्तन, वियोग और विच्छेद अवश्य होगा? जो जन्म लेता है, अस्तित्व में आता है, बनता है और क्षय के अधीन है, उसके बारे में कोई कैसे कह सकता है: 'काश उसका विघटन न हो!' ऐसी कोई स्थिति हो ही नहीं सकती। और हे आनंद, तथागत ने जिस चीज का समापन कर दिया है, जिसे उन्होंने त्याग दिया है, छोड़ दिया है, त्याग दिया है और अस्वीकार कर दिया है - जीने की इच्छा - उसके बारे में तथागत ने एक बार ही कहा है: 'शीघ्र तथागत का परिनिर्वाण होगा। तीन माह बाद तथागत पूर्णतः परलोक चले जाएंगे।' और तथागत का जीवित रहने के लिए अपने वचनों को वापस लेना असंभव है।"

अंतिम चेतावनी

59. "तो फिर, आनंद, आइए हम महान वन में स्थित गैबल हाउस के हॉल में चलें।" और पूज्य आनंद ने उत्तर दिया: "ऐसा ही हो, भगवान।"
60. तब भगवान बुद्ध, पूज्य आनंद के साथ, महान वन में स्थित गैबल हाउस के हॉल में गए। वहाँ उन्होंने पूज्य आनंद से कहा, "हे आनंद, अब जाओ और वैशाली के आसपास रहने वाले सभी भिक्षुओं को सभा कक्ष में एकत्रित करो।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और पूज्य आनंद ने वैशाली के पड़ोस में रहने वाले सभी भिक्षुओं को इकट्ठा किया और उन्हें सभा-गृह में एकत्रित किया। फिर, भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम करते हुए, एक तरफ खड़े होकर उन्होंने कहा: "भिक्षुओं का समुदाय एकत्रित हो गया है, भगवान। अब भगवान बुद्ध अपनी इच्छा अनुसार कार्य करें।"
61. तब भगवान बुद्ध सभा-गृह में प्रवेश कर अपने लिए तैयार आसन पर बैठकर भिक्षुओं को उपदेश देते हुए बोले: "हे भिक्षुओं, मैं तुमसे कहता हूँ कि जिन शिक्षाओं का मुझे प्रत्यक्ष ज्ञान है और जिनका मैंने तुम्हें ज्ञान दिया है, उन्हें तुम भली-भांति सीखो, उनका अभ्यास करो, उन्हें विकसित करो और बार-बार उनका पालन करो, ताकि पवित्र जीवन स्थापित हो और दीर्घायु बना रहे, जनसमूह के कल्याण और सुख के लिए, संसार के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए।"
62. "हे भिक्षुओं, ये शिक्षाएँ क्या हैं? ये हैं ध्यान के चार आधार, चार उचित प्रयास, मानसिक शक्ति के चार घटक, पाँच इंद्रियाँ, पाँच शक्तियाँ, ज्ञान के सात कारक और आर्य अष्टांगिक मार्ग। हे भिक्षुओं, ये वे शिक्षाएँ हैं जिनका मुझे प्रत्यक्ष ज्ञान है, जो मैंने आपको बताई हैं, और जिनका आपको पूर्णतया अध्ययन, अभ्यास, विकास और नियमित रूप से साधना करनी चाहिए, ताकि पवित्र जीवन स्थापित हो और दीर्घकाल तक बना रहे, जनसमूह के कल्याण और सुख के लिए, संसार के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए।"
63. तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा, "हे भिक्षुओं, मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ: सभी मिश्रित वस्तुएँ निष्फल होने वाली हैं। पूरी लगन से प्रयास करो। तथागत के परिनिर्वाण का समय निकट है। तीन माह बाद तथागत का पूर्णतः परारोहण हो जाएगा।"
64. और ये शब्द कहने के बाद, धन्य पुरुष, गुरु ने फिर कहा:
मेरी उम्र अब पूरी हो चुकी है, जीवन का समय बहुत कम बचा है। मैं अब तुमसे विदा लेता हूँ, केवल अपने सहारे। हे भिक्षुओं, सचेत रहो, सजग रहो और शुद्ध गुणों से परिपूर्ण रहो!
दृढ़ संकल्प के साथ अपने मन की रक्षा करो! जो निरंतर धम्म और अनुशासन का अनुसरण करता है, वह जन्म-जन्म के चक्र से परे जाकर दुखों का अंत करेगा।

भाग चार: अंतिम भोजन
हाथी की नज़र
1. फिर भगवान बुद्ध ने दोपहर से पहले तैयार होकर भिक्षापात्र और वस्त्र धारण किया और वैशाली में भिक्षा मांगने गए। भिक्षा मांगने और भोजन करने के बाद, लौटकर उन्होंने हाथी जैसी दृष्टि से वैशाली की ओर देखा, 36 और पूज्य आनंद से कहा: "आनंद, यह अंतिम बार है जब तथागत वैशाली को देखेंगे। आओ, आनंद, हम भंडागम चलें।"
"ऐसा ही हो, हे भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक विशाल समुदाय के साथ भंडागामा में अपना निवास स्थान बनाया।
2. और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्षुओं, चार सिद्धांतों को न जानने और उनमें पारंगत न होने के कारण ही यह जन्म-मृत्यु का लंबा चक्र मेरे और आपके द्वारा सहा गया है। वे चार सिद्धांत क्या हैं? वे हैं: श्रेष्ठ सद्गुण, श्रेष्ठ एकाग्रता, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ मुक्ति। परन्तु अब, भिक्षुओं, इन सिद्धांतों को जान लेने और उनमें पारंगत हो जाने से, जीवन की लालसा समाप्त हो गई है, वह सब नष्ट हो गया है जो पुनर्जन्म की ओर ले जाता है, और अब कोई नया पुनर्जन्म नहीं है।"
3. और ये शब्द कहने के बाद, धन्य पुरुष, गुरु ने फिर कहा:
"सद्गुण, एकाग्रता, ज्ञान और मुक्ति अतुलनीय हैं।"
ये वे सिद्धांत हैं जिन्हें ख्यातिप्राप्त गौतम गौतम ने साकार किया था;
और, उन्हें जानकर, बुद्ध ने अपने भिक्षुओं को धम्म की शिक्षा दी।
वह, दुखों का नाश करने वाला, स्वामी, द्रष्टा, शांति में है।
4. भंडागम में भगवान बुद्ध अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार उपदेश देते थे: "ऐसा-ऐसा सद्गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्गुणों से परिपूर्ण हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता से परिपूर्ण हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; और जो मन बुद्धि में परिपूर्ण हो जाता है, वह कामवासना, कर्मकांड और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त हो जाता है।"
5. जब भगवान बुद्ध भंडागामा में अपनी इच्छानुसार कुछ समय तक रहे, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा: "आओ, आनंद, हम हत्थिगमा चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक विशाल समुदाय के साथ हत्थिगमा में अपना निवास स्थान बनाया।
और जब भगवान बुद्ध हत्थिगमा में अपनी इच्छा अनुसार कुछ समय तक रहे, तो उन्होंने अंबगामा में निवास किया, फिर जंबुगामा में। और इन सभी स्थानों पर भगवान बुद्ध भिक्षुओं को अक्सर इस प्रकार उपदेश देते थे: "ऐसा-ऐसा सद्गुण है; ऐसा-ऐसा एकाग्रता है; और ऐसा-ऐसा ज्ञान है। जब एकाग्रता सद्गुणों से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब ज्ञान एकाग्रता से पूर्णतः विकसित हो जाता है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; काम, कर्म और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त वह मन है जो ज्ञान में पूर्णतः विकसित हो जाता है।"
6. और जब भगवान बुद्ध जंबुगामा में अपनी इच्छानुसार कुछ समय तक ठहर गए, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा: "आओ, आनंद, हम भोगनगर चलें।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ भोगनगर में अपना निवास स्थान बनाया और आनंद मंदिर में ठहरे।
चार महान संदर्भ 7. और वहाँ भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: "हे भिक्षुओं, मैं तुम्हें चार महान संदर्भों के बारे में बताऊंगा। 37 मेरी बातों को ध्यान से सुनो और समझो।" और उन भिक्षुओं ने उत्तर दिया:
"ऐसा ही हो, भगवान।"
8-11. तब भगवान बुद्ध ने कहा: "इस प्रकार, भिक्षु, एक भिक्षु कह सकता है: 'भगवान बुद्ध के समक्ष, भाइयों, मैंने यह सुना और सीखा है: यह धम्म और अनुशासन है, गुरु का उपदेश है'; या: 'अमुक नाम के एक आश्रम में एक समुदाय रहता है जिसमें वरिष्ठ और एक मुखिया होते हैं। उस समुदाय के समक्ष, मैंने यह सुना और सीखा है: यह धम्म और अनुशासन है, गुरु का उपदेश है'; या: 'अमुक नाम के एक आश्रम में कई भिक्षु रहते हैं जो वरिष्ठ हैं, विद्वान हैं, जिन्होंने अपना मार्ग पूर्ण कर लिया है, जो धम्म, अनुशासन और सारांश के संरक्षक हैं। उन वरिष्ठों के समक्ष, मैंने यह सुना और सीखा है: यह धम्म और अनुशासन है, गुरु का उपदेश है'; या: 'अमुक नाम के एक आश्रम में एक अकेला भिक्षु रहता है जो एक एक विद्वान, अपने मार्ग को पूर्ण कर चुके, धम्म, अनुशासन और सारांश के संरक्षक, उस वरिष्ठ गुरु से मैंने आमने-सामने बैठकर यह सुना और सीखा है: यही धम्म और अनुशासन है, गुरु का उपदेश है।
ऐसे में, हे भिक्षुओं, ऐसे भिक्षु के कथन को न तो स्वीकृति से स्वीकार करना चाहिए और न ही तिरस्कार से। स्वीकृति और तिरस्कार दोनों के बिना, बल्कि वाक्यों का शब्द-दर-शब्द ध्यानपूर्वक अध्ययन करके, उन्हें प्रवचनों में ढूँढ़ना चाहिए और अनुशासन के अनुसार सत्यापित करना चाहिए। यदि वे न तो प्रवचनों में मिलें और न ही अनुशासन के अनुसार सत्यापित हों, तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिए: 'निश्चित रूप से, यह भगवान बुद्ध का वचन नहीं है; इसे उस भिक्षु ने - या उस समुदाय ने, या उन वरिष्ठों ने, या उस वरिष्ठ ने - गलत समझा है।' इस प्रकार, हे भिक्षुओं, आपको इसे अस्वीकार कर देना चाहिए। लेकिन यदि संबंधित वाक्य प्रवचनों में मिलें और अनुशासन के अनुसार सत्यापित हों, तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिए: 'निश्चित रूप से, यह भगवान बुद्ध का वचन है; इसे उस भिक्षु ने - या उस

समुदाय ने, या उन वरिष्ठों ने, या उस वरिष्ठ ने - अच्छी तरह से समझा है।' और इस प्रकार, भिक्षुओं, आप इसे पहले, दूसरे, तीसरे या चौथे संदर्भ में स्वीकार कर सकते हैं। भिक्षुओं, ये चार महान संदर्भ हैं जिन्हें आपको संरक्षित रखना चाहिए।

12. और भोगनगर में, आनंद मंदिर में, भगवान बुद्ध अक्सर भिक्षुओं को इस प्रकार उपदेश देते थे: "ऐसा-ऐसा सद्‌गुण है; ऐसी-ऐसी एकाग्रता है; और ऐसी-ऐसी बुद्धि है। जब एकाग्रता सद्‌गुणों से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; जब बुद्धि एकाग्रता से पूर्णतः विकसित हो जाती है, तो उसका फल महान होता है, उसका लाभ महान होता है; काम, कर्म और अज्ञान के दोषों से पूर्णतः मुक्त वह मन है जो बुद्धि में पूर्णतः विकसित हो जाता है।"

13. जब भगवान बुद्ध भोगनगर में अपनी इच्छानुसार कुछ समय तक रहे, तो उन्होंने पूज्य आनंद से कहा: "आओ, आनंद, हम पावा चलें।"

"ऐसा ही हो, भगवान।" और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ पावा में अपना निवास स्थान बनाया और चुंडा के आम के बाग में ठहरे, जो परिवार से धातुकर्मी थे।

बुद्ध का अंतिम भोजन

14. और चुंडा नामक धातुकर्मी को यह पता चला, "लोग कहते हैं कि भगवान पावा आ गए हैं और मेरे आम के बाग में ठहरे हुए हैं।" वह भगवान के पास गया और आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम करके एक तरफ बैठ गया। भगवान ने चुंडा नामक धातुकर्मी को धर्म का उपदेश दिया, उसे प्रेरित किया, उसका ज्ञानवर्धन किया और उसे प्रसन्न किया।

15. तब चुंडा ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, कल भिक्षुओं के समुदाय के साथ भोज के लिए मेरा निमंत्रण स्वीकार कीजिए।" और भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दे दी।

16. तब, भगवान की सहमति के बारे में आश्वस्त होकर, धातुकर्मी चुंडा अपनी सीट से उठा, आदरपूर्वक भगवान को प्रणाम किया और अपना दाहिना भाग उनकी ओर रखते हुए वहां से चला गया।

17. और रात बीत जाने के बाद, धातु कारीगर चुंडा ने अपने घर में उत्तम प्रकार का भोजन, कठोर और नरम, तथा सुकरा-मद्दवा की पर्याप्त मात्रा तैयार करवाई और भगवान बुद्ध को यह सूचना देते हुए कहा: "हे भगवान, भोजन तैयार है।"

18. तब भगवान बुद्ध ने दोपहर से पहले तैयार होकर, कुंड और वस्त्र लेकर भिक्षुओं के समुदाय के साथ चुंडा के घर गए और वहाँ अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। उन्होंने चुंडा से कहा, "चुंडा, तुमने जो सुकर-मद्दव तैयार किया है, उससे मेरी सेवा करो; अन्य भोजन, कठोर और नरम, उससे भिक्षुओं के समुदाय की सेवा करो।"

"ऐसा ही हो, भगवान।" और अपने द्वारा तैयार किए गए सुकरा-मद्दवा से उन्होंने भगवान बुद्ध की सेवा की; और अन्य कठोर और नरम भोजन से उन्होंने भिक्षुओं के समुदाय की सेवा की।

19. इसके बाद भगवान बुद्ध ने चुंडा से कहा, "हे चुंडा, सुकरमद्दव का जो भी भाग बच जाए, उसे गड्ढे में गाड़ दो। क्योंकि इस समस्त संसार में, देवताओं, मारों और ब्रह्माओं सहित, तपस्वियों और ब्राह्मणों, देवताओं और मनुष्यों के बीच, तथागत के सिवा कोई ऐसा नहीं है जो इसे खाकर पूर्णतः पचा सके।"

और धातुकर्मी चुंडा ने भगवान बुद्ध से कहा, "ऐसा ही हो, हे भगवान।" और सुकरा-मद्दवा का जो कुछ बचा था, उसे उसने एक गड्ढे में गाड़ दिया।

20. फिर वह भगवान बुद्ध के पास लौटकर आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। भगवान बुद्ध ने चुंडा नामक धातुकर्मी को धम्म का उपदेश दिया, उसे प्रेरित किया, उसका ज्ञानवर्धन किया और उसे प्रसन्न किया। इसके बाद वह अपने आसन से उठकर चले गए।

21. चुंडा नामक धातुकर्मी द्वारा परोसे गए भोजन को ग्रहण करने के तुरंत बाद, भगवान बुद्ध को भयंकर रोग, अर्थात् पेचिश हो गया, और उन्हें तीव्र एवं असहनीय पीड़ा होने लगी। परन्तु भगवान बुद्ध ने धैर्यपूर्वक, सर्वथा समझते हुए और अविचलित होकर उन पीड़ाओं को सहन किया।

22. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, "आओ, आनंद, हम कुशीनार चलें।" पूज्य आनंद ने उत्तर दिया, "ऐसा ही हो, भगवान।"

23. जब उन्होंने चुंडा का भोजन ग्रहण कर लिया, तब मैंने सुना कि उन्होंने धैर्यपूर्वक असहनीय पीड़ा सहन की। शुक्र-मद्दव से भगवान को एक भयंकर और दर्दनाक बीमारी हो गई। लेकिन उन्होंने प्रकृति की पीड़ा सहन की। "चलो, कुशीनारा चलें," उनका निडर शब्द था। जल का शुद्धिकरण 24. अब रास्ते में भगवान मुख्य मार्ग से हटकर एक वृक्ष के नीचे रुक गए। और उन्होंने पूज्य आनंद से कहा: "आनंद, कृपया मेरे ऊपरी वस्त्र को चार भागों में मोड़कर नीचे रख दें। मैं थक गया हूँ और थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ।"

"ऐसा ही हो, भगवान।" और पूज्य आनंद ने वस्त्र को चार भागों में मोड़कर नीचे रख दिया।

25. और भगवान बुद्ध अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए और पूज्य आनंद से कहा, "आनंद, कृपया मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ। मुझे प्यास लगी है और मैं पीना चाहता हूँ।"

26. तब पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध को उत्तर दिया, "परन्तु अभी-अभी, हे भगवान, बहुत से रथ, लगभग पाँच सौ रथ, यहाँ से गुजरे हैं, और पहियों के कारण उथला जल कट गया है, जिससे वह मटमैला और गंदा बह रहा है। परन्तु हे भगवान, ककुत्था नदी तो बिल्कुल

पास ही है, और उसका जल निर्मल, सुखद, शीतल और पारदर्शी है। वह सुगम्य और रमणीय स्थान पर स्थित है। वहाँ भगवान बुद्ध अपनी प्यास बुझा सकते हैं और अपने अंगों को तरोताजा कर सकते हैं।"
27-29. लेकिन भगवान बुद्ध ने दूसरी बार निवेदन किया, और पूज्य आनंद ने पहले की तरह ही उत्तर दिया। फिर तीसरी बार भगवान बुद्ध ने कहा: "आनंद, कृपया मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ। मुझे प्यास लगी है और मैं पीना चाहता हूँ।"
30. तब पूज्य आनंद ने उत्तर दिया, "ऐसा ही हो, भगवान।" और उन्होंने कटोरा उठाया और नदी की ओर चल दिए। पहियों के कारण उथला जल, जो मटमैला और मैला बह रहा था, पूज्य आनंद के पास आते ही साफ और शांत हो गया, शुद्ध और सुखद।
31. तब पूज्य आनंद ने सोचा: "तथागत की शक्ति और महिमा वास्तव में अद्भुत और अत्यंत आश्चर्यजनक है!"
32. फिर उसने कटोरे में जल लिया और उसे भगवान बुद्ध के पास ले जाकर कहा, "तथागत की शक्ति और महिमा वास्तव में अद्भुत और अत्यंत आश्चर्यजनक है! क्योंकि यह उथला जल, जो पहियों के कारण मटमैला और गंदा बह रहा था, मेरे पास आते ही साफ और स्थिर, शुद्ध और सुखद हो गया। अब भगवान बुद्ध इस जल को पी लें। हे भगवान बुद्ध, इसे पी लें।" और भगवान बुद्ध ने जल पी लिया।

पुक्कुसा द मल्ला
33. अब ऐसा हुआ कि मल्ल वंश का एक पुक्कुसा, जो अलारा कलामा का शिष्य था, कुसिनारा से पावा की ओर जा रहा था।
34. जब उसने भगवान को एक वृक्ष के नीचे बैठे देखा, तो वह उनके पास गया, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गया। फिर उसने भगवान से कहा, "हे भगवान, यह कितना अद्भुत है, हे भगवान, यह कितना आश्चर्यजनक है कि संसार से विदा हुए लोग कितनी शांति में रहते हैं।"

35. "एक बार, हे भगवान, अलारा कलामा यात्रा पर थे और वे राजमार्ग से हटकर एक पेड़ की छाया में बैठ गए ताकि दिन की गर्मी से बच सकें। तभी, हे भगवान, बहुत सी गाड़ियाँ, लगभग पाँच सौ गाड़ियाँ, एक-एक करके उनके पास से गुज़रीं। फिर, हे भगवान, एक व्यक्ति जो उन गाड़ियों के काफिले के पीछे चल रहा था, उनके पास आया और उनसे बोला, 'क्या आपने, महाराज, बहुत सी गाड़ियाँ देखीं जो आपके पास से गुज़रीं?' अलारा कलामा ने उत्तर दिया, 'मैंने उन्हें नहीं देखा, भाई।' 'पर, महाराज, आपने शोर तो ज़रूर सुना होगा?' 'मैंने नहीं सुना, भाई।' तब उस व्यक्ति ने उनसे पूछा, 'तो, महाराज, शायद आप सो रहे थे?' 'नहीं, भाई, मैं सो नहीं रहा था।' 'तो, महाराज, क्या आप होश में थे?' 'हाँ, भाई।' तब उस व्यक्ति ने कहा: 'तो फिर, महाराज, जब आप होश में थे और जाग रहे थे, तब भी आपने एक के बाद एक आपके पास से गुज़रने वाली इतनी बड़ी संख्या में गाड़ियाँ, यहाँ तक कि पाँच सौ गाड़ियाँ, नहीं देखीं और न ही उनका शोर सुना? अरे, महाराज, आपका वस्त्र भी उनकी धूल से सना हुआ है!' इस पर अलारा कलामा ने उत्तर दिया: 'जी हाँ, भाई।'
36. "और हे भगवान, उस व्यक्ति के मन में यह विचार आया: 'यह कितना अद्भुत है, वास्तव में कितना आश्चर्यजनक है, उन लोगों की शांति की अवस्था जिसमें वे रहते हैं जो संसार से विदा हो चुके हैं!' और उसके मन में अलारा कलामा में गहरा विश्वास उत्पन्न हुआ, और वह अपने मार्ग पर चल पड़ा।"
37. "अब तुम क्या सोचते हो, पुक्कुसा? इनमें से कौन सा काम करना अधिक कठिन है, कौन सी स्थिति का सामना करना अधिक कठिन है — कि कोई व्यक्ति सचेत और जागृत अवस्था में, एक के बाद एक गुजरती हुई असंख्य गाड़ियों, यहाँ तक कि पाँच सौ गाड़ियों को न देखे और न ही उनकी आवाज़ सुने, या फिर सचेत और जागृत अवस्था में, भारी बारिश के बीच, गरजते बादलों, चमकती बिजली और बिजली कड़कने के बावजूद, न तो उसे देखे और न ही उसकी आवाज़ सुने?"
38. "हे भगवान, पाँच सौ गाड़ियाँ - बल्कि छह, सात, आठ, नौ सौ, या एक हज़ार या यहाँ तक कि लाखों गाड़ियाँ - इसकी तुलना में क्या हैं?"
39. "एक बार, पुक्कुसा, मैं अतुमा में ठहरा हुआ था और वहाँ एक खलिहान में मेरा निवास था। उस समय भारी बारिश हो रही थी, गरज हो रही थी, बिजली चमक रही थी और बिजली कड़क रही थी। खलिहान के पास दो किसान भाई, चार बैलों के साथ मारे गए, और अतुमा से एक बड़ी भीड़ उस स्थान पर उमड़ पड़ी जहाँ वे मारे गए थे।
40. "उस समय, पुक्कुसा, मैं खलिहान से बाहर आ गया था और दरवाजे के सामने सोच-विचार करते हुए इधर-उधर टहल रहा था। तभी भीड़ में से एक आदमी मेरे पास आया, आदरपूर्वक मेरा अभिवादन किया और एक तरफ खड़ा हो गया।
41. "और मैंने उससे पूछा, 'भाई, इतनी बड़ी भीड़ यहाँ क्यों इकट्ठा हुई है?' उसने उत्तर दिया, 'अभी-अभी, भगवान, बहुत तेज़ बारिश हुई, गरज हुई, बिजली चमकी और बिजली कड़की। और दो किसान भाई पास ही में चार बैलों के साथ मारे गए। इसी कारण इतनी बड़ी भीड़ यहाँ इकट्ठा हुई है। लेकिन भगवान, आप कहाँ थे?'"
"'मैं यहीं था, भाई।' 'फिर भी, भगवान, क्या आपने इसे नहीं देखा?' 'मैंने इसे नहीं देखा, भाई।' 'पर वह शोर, भगवान, आपने अवश्य सुना होगा?' 'मैंने नहीं सुना, भाई।' तब उस व्यक्ति ने मुझसे पूछा: 'तो, भगवान, शायद आप सो रहे थे?' 'नहीं, भाई, मैं सो नहीं रहा था।' 'तो, भगवान, आप सचेत थे?' 'हाँ, भाई।' तब उस व्यक्ति ने कहा: 'तो, भगवान, सचेत और जागृत रहते हुए, भारी बारिश के बीच, गरजते बादलों, चमकती बिजली और कड़कती बिजली के बीच, आपने न तो इसे देखा और न ही शोर सुना?' और मैंने उसे उत्तर दिया: 'मैंने नहीं सुना, भाई।'

42. "और उस पुक्कुसा के मन में यह विचार आया: 'यह कितना अद्‌भुत है, वास्तव में कितना आश्चर्यजनक है, उन लोगों की शांति की अवस्था जिसमें वे रहते हैं जो संसार से विमुख हो गए हैं!' और उसके मन में मुझ पर गहरा विश्वास जागा, और उसने आदरपूर्वक मुझे प्रणाम किया, और अपनी दाहिनी ओर मेरी ओर रखते हुए वह अपने मार्ग पर चल पड़ा।"
43. यह सुनकर मल्ल वंश के पुक्कुसा ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, अलारा कलामा में जो आस्था मेरे मन में थी, उसे मैं अब प्रचंड हवा में बिखेर देता हूँ, उसे बहती धारा की तरह बहने देता हूँ! हे भगवान, उत्तम, हे भगवान, परम उत्तम! हे भगवान, मानो कोई गिरी हुई वस्तु को सीधा खड़ा कर दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए को मार्ग दिखा दे, या अंधकार में दीपक जला दे ताकि आँखें रखने वाले देख सकें—ठीक इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने अनेक तरीकों से धर्म का प्रसार किया है। अतः हे भगवान, मैं भगवान बुद्ध, धर्म और भिक्षु समुदाय की शरण लेता हूँ। भगवान बुद्ध मुझे अपने शिष्य के रूप में, जीवन के अंत तक, स्वीकार करें।”
44. तब मल्ला वंश के पुक्कुसा ने एक व्यक्ति से कहा, “मित्र, मेरे लिए तुरंत सुनहरे रंग के दो वस्त्र लाओ, जो चमकीले और पहनने के लिए तैयार हों।” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “ठीक है, महोदय।”
45. जब वस्त्र लाए गए, तो मल्ल कुल के पुक्कुसा ने उन्हें भगवान बुद्ध को अर्पित करते हुए कहा, “हे भगवान, दया करके इसे मुझसे स्वीकार करें।” तब भगवान बुद्ध ने कहा, “पुक्कुसा, मुझे एक वस्त्र पहनाओ, और आनंद को दूसरा वस्त्र पहनाओ।”
"ऐसा ही हो, भगवान।" और फिर उन्होंने एक वस्त्र भगवान बुद्ध को पहनाया और दूसरे वस्त्र से पूज्य आनंद को आदरणीय बना दिया।
46. फिर भगवान बुद्ध ने मल्ल वंश के पुक्कुसा को धम्म का उपदेश दिया, और उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रसन्न किया। इसके बाद पुक्कुसा अपने आसन से उठे, भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम किया और अपना दाहिना भाग उनकी ओर करके अपने मार्ग पर चल दिए।
47. मल्ल वंश के पुक्कुसा के चले जाने के तुरंत बाद, पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध के शरीर पर सुनहरे रंग के, चमकीले और पहनने के लिए तैयार वस्त्रों का समूह लपेटा। परन्तु जब वस्त्रों का समूह भगवान बुद्ध के शरीर पर लपेटा गया, तो वे मानो फीके पड़ गए और उनकी चमक फीकी पड़ गई।
48. और पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, यह कितना अद्‌भुत है, वास्तव में कितना आश्चर्यजनक है, तथागत की त्वचा कितनी निर्मल और तेजस्वी प्रतीत होती है! हे भगवान, यह स्वर्ण रंग का वस्त्र, जो चमकीला और पहनने के लिए तैयार था, अब जब इसे भगवान बुद्ध के शरीर पर पहनाया गया है, तो ऐसा लगता है मानो इसकी चमक फीकी पड़ गई हो।"
49. "हाँ, आनंद। आनंद, दो अवसर हैं जब तथागत की त्वचा अत्यंत निर्मल और तेजस्वी दिखाई देती है। ये दो अवसर कौन से हैं? आनंद, वह रात जब तथागत पूर्णतः सर्वोच्च ज्ञान से परिपूर्ण हो जाते हैं, और वह रात जब तथागत निर्वाण की अवस्था में अंतःस्रावित हो जाते हैं, जिसमें आसक्ति का कोई अंश नहीं रह जाता। आनंद, ये दो अवसर हैं जब तथागत की त्वचा अत्यंत निर्मल और तेजस्वी दिखाई देती है।"
50. "और अब आज रात के आखिरी पहर में, आनंद, मल्लाओं के सालावन में, कुसिनारा के पास, दो साल के पेड़ों के बीच, तथागत अपने परिनिर्वाण को प्राप्त करेंगे। अतः, आनंद, अब हम ककुत्था नदी की ओर चलें।"
51. पुक्कुसा के उपहार, स्वर्ण वस्त्रों से सुशोभित, गुरु का रूप दर्शन में तेजस्वी था। 52. फिर भगवान भिक्षुओं के एक बड़े समुदाय के साथ काकुत्था नदी पर गए।
53. फिर वह जल में उतरा और स्नान करके जल पिया। जल से बाहर आकर वह आम के बाग में गया और वहाँ पूज्य चुंडक से बोला, “हे चुंडक, कृपया मेरे ऊपरी वस्त्र को चार भागों में मोड़कर नीचे रख दीजिए। मैं थका हुआ हूँ और थोड़ी देर विश्राम करना चाहता हूँ।”
"ऐसा ही हो, भगवान।" और चुंडक ने वस्त्र को चार भागों में मोड़कर नीचे रख दिया।
54. भगवान बुद्ध दाहिनी ओर सिंह की मुद्रा में लेट गए, एक पैर दूसरे पर रखकर, और उठने के समय को ध्यान में रखते हुए, पूरी तरह सचेत और स्पष्ट रूप से इस प्रकार बैठ गए। और पूज्य चुंडक भगवान बुद्ध के ठीक सामने बैठ गए।
55. बुद्ध ककुत्था नदी पर आए, जहाँ शीतल और निर्मल जल की सुखद धारा बहती है; वहाँ उन्होंने अपने थके हुए शरीर को निर्मल जल से धोया - वे समस्त जगत में सर्वोच्च हैं! और स्नान और जलपान करने के बाद, गुरु सीधे नदी पार चले गए, भिक्षु उनके पीछे-पीछे चल रहे थे।
पवित्र सत्यों का प्रवचन देते हुए, महान गुरु आम के बाग की ओर चल पड़े। वहाँ उन्होंने वृद्ध चुंडक से कहा, "कृपा करके मेरा वस्त्र, जो चार भागों में तह किया हुआ है, नीचे रख दीजिए।" तब वृद्ध चुंडक ने बिजली की गति से गुरु की आज्ञा का पालन किया। थके-हारे गुरु चटाई पर लेट गए, और चुंडक उनके सामने जमीन पर बैठ गए।
कुंडा के पश्चाताप को दूर करना
56. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, “हे आनंद, ऐसा हो सकता है कि कोई धातुकर्मी चुंडा को यह कहकर दुखी करे: ‘हे मित्र चुंडा, यह तुम्हारे लिए लाभ नहीं, बल्कि हानि है कि तथागत ने तुमसे अपना अंतिम भिक्षा ग्रहण किया और फिर अपने प्राण त्यागे।’ तब, हे आनंद, चुंडा के दुःख को इस प्रकार दूर किया जाना चाहिए: ‘हे मित्र चुंडा, यह तुम्हारे लिए लाभ है, आशीर्वाद है कि तथागत ने तुमसे अपना अंतिम भिक्षा ग्रहण किया और फिर अपने प्राण त्यागे। क्योंकि, मित्र, मैंने भगवान बुद्ध से आमने-सामने बैठकर यह सुना और सीखा है: “दो प्रकार के भिक्षापात्र हैं जिनका फल और परिणाम समान है, जो अन्य सभी प्रकार के भिक्षापात्रों के फल और परिणाम से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। वे दो कौन से हैं? एक वह जिसे तथागत ने पूर्णतः ज्ञान प्राप्त करने से पहले ग्रहण किया था; और वह प्रसाद जिसे

तथागत ने निर्वाण अवस्था में प्रवेश करने से पहले ग्रहण किया था, जिसमें आसक्ति का कोई अंश नहीं रहता। अपने कर्म से पुण्य चुंडा ने पुण्य अर्जित किया है जो दीर्घायु, सौंदर्य, कल्याण, यश, स्वर्गिक पुनर्जन्म और भगवानत्व का कारण बनता है। इस प्रकार, हे आनंद, चुंडा नामक धातुकर्मी के पश्चाताप को दूर किया जाना चाहिए।
57. तब भगवान बुद्ध ने उस बात को समझकर यह गंभीर वचन कहा:
जो दान करता है, उसके सद्‌गुण बढ़ते हैं; जो आत्मसंयमित है, वह किसी से घृणा नहीं करता; जो सद्‌गुणों में निपुण है, वह बुराई से दूर रहता है, और कामवासना, घृणा और समस्त भ्रमों को जड़ से उखाड़ फेंककर शांति प्राप्त करता है।

भाग पाँच: कुसिनारा में
अंतिम विश्राम स्थल
1. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को संबोधित करते हुए कहा: "आओ, आनंद, हम हिरण्यवती के दूसरे किनारे पर चलें और कुसिनारा के निकट मल्लों के सालावन में जाएँ।"
"ऐसा ही हो, भगवान।"
2. और भगवान बुद्ध, भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ, हिरण्यवती नदी के दूसरे किनारे पर, कुसिनारा के निकट मल्ल वंश के साला वन में गए। और वहाँ उन्होंने पूज्य आनंद से कहा:
3. "आनंद, कृपया मेरे लिए जुड़वां साल के पेड़ों के बीच उत्तर दिशा की ओर मुख करके एक पलंग तैयार कर दीजिए। मैं थक गया हूँ, आनंद, और लेटना चाहता हूँ।"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और पूज्य आनंद ने वही किया जो भगवान ने उनसे करने को कहा था।
तब भगवान बुद्ध दाहिनी ओर सिंह की मुद्रा में लेट गए, एक पैर दूसरे पर रखकर, और इस प्रकार सचेत और स्पष्ट रूप से समझते हुए स्वयं को व्यवस्थित किया।
4. उस समय दोनों साल के वृक्ष पूरी तरह खिल उठे, यद्यपि यह फूल खिलने का मौसम नहीं था। और वे फूल तथागत के शरीर पर बरसने लगे, गिरे, बिखरे और तथागत की पूजा में उन पर बिखेर दिए गए। आकाश से दिव्य मंदारव के फूल और दिव्य चंदन का चूर्ण तथागत के शरीर पर बरसने लगा, गिरे, बिखरे और तथागत की पूजा में उन पर बिखेर दिए गए। और दिव्य स्वरों और दिव्य वाद्ययंत्रों की ध्वनि ने तथागत के प्रति श्रद्धा से आकाश में संगीत की गूंज पैदा कर दी।
5. और भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, "आनंद, यद्यपि यह फूल खिलने का मौसम नहीं है, फिर भी दोनों साल के वृक्ष पूरी तरह खिले हुए हैं। और ये फूल तथागत के शरीर पर बरसते हैं, गिरते हैं, बिखरते हैं और तथागत की पूजा में उन पर बिखरे जाते हैं। आकाश से दिव्य मूंगा फूल और दिव्य चंदन का पाउडर तथागत के शरीर पर बरसता है, गिरता है, बिखरता है और तथागत की पूजा में उन पर बिखरता है। दिव्य स्वरों और दिव्य वाद्ययंत्रों की ध्वनि तथागत के प्रति श्रद्धा से वातावरण में संगीत उत्पन्न करती है।"
6. "लेकिन हे आनंद, तथागत को सर्वोच्च सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, पूजा और आदर इस प्रकार नहीं मिलता। बल्कि, हे आनंद, जो भी भिक्षु या भिक्षुणी, गृहस्थ पुरुष या गृहस्थ स्त्री, धम्म का पालन करता है, धम्म में सत्यनिष्ठा से जीवन व्यतीत करता है, धम्म के मार्ग पर चलता है, उसी के द्वारा तथागत को सर्वोच्च सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, पूजा और आदर मिलता है। अतः, हे आनंद, तुम्हें इस प्रकार स्वयं को प्रशिक्षित करना चाहिए: 'हम धम्म का पालन करेंगे, धम्म में सत्यनिष्ठा से जीवन व्यतीत करेंगे, धम्म के मार्ग पर चलेंगे।'"
देवताओं का शोक
7. उस समय पूज्य उपवना भगवान बुद्ध के सामने खड़े होकर उन्हें पंखा कर रहे थे। तब भगवान बुद्ध ने उन्हें डांटते हुए कहा, "भिक्षु, हट जाओ, मेरे सामने मत खड़े हो।"
8. और पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "यह पूज्य उपवन लंबे समय से भगवान बुद्ध की सेवा में उनके साथ रहे हैं, उनसे घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे हैं और उनकी सेवा करते रहे हैं। फिर भी, अब बिल्कुल अंत में, भगवान बुद्ध उन्हें फटकारते हैं। अब क्या कारण हो सकता है, भगवान बुद्ध ने पूज्य उपवन को यह कहकर क्यों फटकारा: 'भिक्षु, हट जाओ, मेरे सामने मत खड़े हो'?"
9-10. पूज्य आनंद ने अपने विचार भगवान बुद्ध को बताए। भगवान बुद्ध ने कहा: "आनंद, इस दस लोकों में शायद ही कोई ऐसा देवता हो जो तथागत के दर्शन के लिए एकत्रित न हुआ हो। कुशीनार के पास मल्ल वंश के सालावन के चारों ओर बारह योजन की दूरी तक ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ बाल की नोक से भी चुभन हो और वह शक्तिशाली देवताओं से भरा न हो। और ये देवता, आनंद, शिकायत कर रहे हैं: 'हम दूर से तथागत के दर्शन के लिए आए हैं। क्योंकि संसार में तथागत, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्तियों का उदय दुर्लभ है। और आज रात के अंतिम पहर में तथागत का परिनिर्वाण होगा। परन्तु इस महान शक्ति वाले भिक्षु ने स्वयं को भगवान बुद्ध के ठीक सामने स्थापित कर लिया है, उन्हें छिपा लिया है, जिससे अब, बिल्कुल अंत में, हम उनके दर्शन से वंचित रह गए हैं।' इसलिए, आनंद, देवता शिकायत करते हैं।
11. "हे भगवान, भगवान किस प्रकार के देवताओं के बारे में जानते हैं?"
12-13. "हे आनंद, अंतरिक्ष और पृथ्वी पर ऐसे देवता हैं जो सांसारिक स्वभाव के हैं; बिखरे बालों के साथ वे रोते हैं, भुजाएँ ऊपर उठाकर रोते हैं; जमीन पर गिरकर वे करवटें बदलते हुए विलाप करते हैं: 'भगवान बहुत जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! सुखी भगवान बहुत जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! संसार की आँख बहुत जल्दी दृष्टि से ओझल हो जाएगी!'"

14. "परन्तु वे देवता जो वासना से मुक्त, सजग और बोधशील हैं, इस प्रकार चिंतन करते हैं: 'सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं। ऐसा कैसे हो सकता है?'"

आनंद की चिंता
15. "हे भगवान, पहले वर्षा ऋतु समाप्त होने पर भिक्षु अपने निवास स्थान से निकलकर तथागत के दर्शन करने जाते थे, और हमें उन पूजनीय भिक्षुओं के साथ समय बिताने और संगति करने का सौभाग्य प्राप्त होता था जो भगवान बुद्ध के दर्शन करने और उनकी सेवा करने आते थे। परन्तु हे भगवान, भगवान बुद्ध के चले जाने के बाद हमें यह सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा।"

चार तीर्थस्थल
16. "आनंद, ऐसे चार स्थान हैं जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को श्रद्धापूर्वक दर्शन करना चाहिए। वे चार स्थान कौन से हैं?"
17. "'यहाँ तथागत का जन्म हुआ था!' हे आनंद, यह वह स्थान है जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को अवश्य जाना चाहिए और श्रद्धा भाव से देखना चाहिए।"
18. "'यहाँ तथागत को अद्वितीय, सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ!' आनंद, यह वह स्थान है जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को श्रद्धा भाव से दर्शन करना चाहिए।"
19. "'यहाँ तथागत ने धम्म के अद्वितीय चक्र को गतिमान किया!' हे आनंद, यह वह स्थान है जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को श्रद्धा भाव से दर्शन करना चाहिए।"
20. "'यहाँ तथागत निर्वाण की अवस्था में विलीन हो गए, जिसमें आसक्ति का कोई अंश नहीं रहता!' हे आनंद, यह वह स्थान है जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को अवश्य जाना चाहिए और श्रद्धा भाव से देखना चाहिए।"
21. "हे आनंद, ये चार स्थान हैं जहाँ एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति को श्रद्धापूर्वक दर्शन करना चाहिए। और वास्तव में, हे आनंद, इन स्थानों पर धर्मनिष्ठ भिक्षु और भिक्षुणियाँ, गृहस्थ पुरुष और स्त्रियाँ आएँगे, यह चिंतन करते हुए: 'यहाँ तथागत का जन्म हुआ! यहाँ तथागत को अद्वितीय, सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ! यहाँ तथागत ने अद्वितीय धम्म चक्र को गतिमान किया! यहाँ तथागत निर्वाण की उस अवस्था में विलीन हो गए जिसमें आसक्ति का कोई अंश नहीं रहता!'"
22. "और हे आनंद, जो कोई भी इस प्रकार की तीर्थयात्रा पर दृढ़ विश्वास के साथ मरता है, शरीर के विखंडन के बाद, मृत्यु के बाद, वह स्वर्गिक सुख के लोक में पुनर्जन्म लेगा।"
23. तब पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा: "हे भगवान, हमें स्त्रियों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?"
"आनंद, उन्हें मत देखो।"
"लेकिन, हे भगवान, अगर हम उन्हें देख लें तो?"
"आनंद, कुछ मत बोलो।"
"लेकिन, हे भगवान, यदि वे हमसे बात करें तो?"
"तो फिर, आनंद, तुम्हें ध्यान स्थापित करना चाहिए।"
24. तब पूज्य आनंद ने कहा: "हे भगवान, तथागत के शरीर के संबंध में हमें क्या करना चाहिए?"
हे आनंद, तथागत के शरीर का आदर करने में संकोच न करो। बल्कि, हे आनंद, अपने हित में परिश्रम और तत्परता दिखाओ। निडरता, उत्साह और दृढ़ संकल्प के साथ अपने हित के लिए प्रयास करो। क्योंकि हे आनंद, तथागत के भक्त बुद्धिमान, बुद्धिमान ब्राह्मण और बुद्धिमान गृहस्थ हैं, और वे ही तथागत के शरीर का आदर करेंगे।
25. तब पूज्य आनंद ने कहा: "परन्तु हे भगवान, तथागत के शरीर के संबंध में उन्हें क्या करना चाहिए?"
"हे आनंद, ठीक उसी प्रकार जैसे किसी सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर के प्रति किया जाता है।"
"पर हे भगवान, वे एक सार्वभौमिक सम्राट के शरीर के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं?"
26. "हे आनंद, सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर को पहले नए लिनेन में लपेटा जाता है, फिर रूई में, इस प्रकार पाँच सौ परतों तक लिनेन और पाँच सौ परतों तक रूई लपेटी जाती है। जब यह हो जाता है, तो सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर को एक लोहे के तेल पात्र में रखा जाता है, जिसे एक अन्य लोहे के पात्र में बंद कर दिया जाता है, सभी प्रकार की सुगंधित लकड़ियों से एक चिता बनाई जाती है, और इस प्रकार सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर को जलाया जाता है; और एक चौराहे पर सर्वशक्तिमान सम्राट के लिए एक स्तूप स्थापित किया जाता है। हे आनंद, सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर के साथ ऐसा ही किया जाता है। और हे आनंद, जैसे सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर के साथ किया जाता है, वैसे ही तथागत के शरीर के साथ भी किया जाना चाहिए; और एक चौराहे पर तथागत के लिए भी एक स्तूप स्थापित किया जाना चाहिए। और जो कोई भी उस स्थान पर मालाएँ, धूप या चंदन का लेप चढ़ाएगा, या श्रद्धा अर्पित करेगा, और जिसका मन वहाँ शांत हो जाएगा - यह उसके लिए दीर्घकालिक कल्याण और सुख का कारण होगा।"
27. "आनंद, चार व्यक्ति स्तूप के योग्य हैं। वे चार कौन हैं? तथागत, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति स्तूप के योग्य हैं; इसी प्रकार पच्चेकबुद्ध, तथागत के शिष्य और विश्व सम्राट भी योग्य हैं।"

28-31. "आनंद, तथागत, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति स्तूप के योग्य क्यों हैं? क्योंकि, आनंद, 'यह उस परम पूज्य अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति का स्तूप है!' यह विचार मात्र से ही अनेक लोगों के हृदय शांत और प्रसन्न हो जाते हैं; और इस प्रकार शांत होकर और उसमें दृढ़ विश्वास के साथ, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन के समय, वे स्वर्गिक सुख के लोक में पुनर्जन्म लेते हैं। और ऐसा ही 'यह उस पच्चेकबुद्ध का स्तूप है!' या 'यह उस तथागत, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध व्यक्ति के शिष्य का स्तूप है!' या 'यह उस धर्मात्मा राजा का स्तूप है जिसने धम्म के अनुसार शासन किया!' यह विचार मात्र से ही होता है।" — बहुत से लोगों के हृदय शांत और प्रसन्न होते हैं; और इस प्रकार शांत होकर और उनमें दृढ़ विश्वास स्थापित करके, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन के समय, वे स्वर्गिक सुख के लोक में पुनर्जन्म लेंगे। और इसी कारण, आनंद, ये चारों व्यक्ति स्तूप के योग्य हैं।

आनंद का शोक

32. तब पूज्य आनंद विहार में गए और द्वार के चौखट से टेक लगाकर रोने लगे: "मैं अभी भी एक विद्यार्थी ही हूँ, और मुझे अभी भी अपनी पूर्णता के लिए प्रयास करना है। लेकिन, हाय, मेरे गुरु, जो मुझ पर इतने दयालु थे, अब इस दुनिया से विदा होने वाले हैं!"

33. और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं से कहा, "हे भिक्षुओं, आनंद कहाँ है?"

"परमेश्वर आनंद विहार में चले गए हैं और वहाँ द्वार के चौखट से टेक लगाकर रो रहे हैं: 'मैं अभी भी एक विद्यार्थी हूँ, और मुझे अभी भी अपनी पूर्णता के लिए प्रयास करना है। लेकिन, हाय, मेरे गुरु, जो मुझ पर इतने दयालु थे, अब इस दुनिया से विदा होने वाले हैं!'"

34. तब भगवान बुद्ध ने एक भिक्षु से पूज्य आनंद को उनके पास लाने को कहा और बोला: "हे भिक्षु, जाओ और आनंद से कहो, 'मित्र आनंद, गुरुजी तुम्हें बुला रहे हैं।'"

"ऐसा ही हो, भगवान।" और वह भिक्षु जाकर पूज्य आनंद से वैसे ही बोला जैसे भगवान बुद्ध ने उससे कहा था। पूज्य आनंद भगवान बुद्ध के पास गए, उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए।

35. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, "बस करो, आनंद! शोक मत करो, विलाप मत करो! क्या मैंने शुरू से ही यह नहीं सिखाया है कि जो कुछ भी प्रिय और प्यारा है, उसमें परिवर्तन, वियोग और विच्छेद अवश्य है? जो जन्म लेता है, अस्तित्व में आता है, बनता है और क्षय के अधीन है, उसके बारे में कोई कैसे कह सकता है: 'काश उसका अंत न हो!'? ऐसी कोई स्थिति हो ही नहीं सकती। अब, आनंद, तुमने लंबे समय तक तथागत की सेवा कर्म, वचन और विचार से प्रेमपूर्वक, कृपापूर्वक, प्रसन्नता से, पूरे मन से और असीम रूप से की है। तुमने महान पुण्य अर्जित किया है, आनंद! अब तुम्हें ऊर्जा लगानी चाहिए, और शीघ्र ही तुम भी दोषों से मुक्त हो जाओगे।"

आनंद की प्रशंसा

36. तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्षुओं, बीते समय के भगवान, अरहंतों और पूर्णतः प्रबुद्ध पुरुषों के भी मेरे आनंद के समान ही उत्तम और समर्पित सेवक भिक्षु थे। और हे भिक्षुओं, आने वाले समय के भगवान, अरहंतों और पूर्णतः प्रबुद्ध पुरुषों के भी ऐसे ही सेवक होंगे।"

37. "आनंद, हे भिक्षुओं, अत्यंत योग्य और विवेकशील हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि भिक्षुओं के लिए तथागत से मिलने का उचित समय क्या है, भिक्षुणियों के लिए क्या समय है, गृहस्थ पुरुषों और गृहस्थ महिलाओं के लिए क्या समय है; राजाओं और राज्य मंत्रियों के लिए क्या समय है; अन्य संप्रदायों के शिक्षकों और उनके अनुयायियों के लिए क्या समय है।"

38. हे भिक्षुओं, आनंद में चार दुर्लभ और श्रेष्ठ गुण पाए जाते हैं। वे चार गुण क्या हैं? हे भिक्षुओं, यदि भिक्षुओं का एक समूह आनंद के दर्शन करने जाए, तो वे उन्हें देखकर आनंदित हो जाते हैं; और यदि वे उनसे धर्म के विषय में बात करें, तो वे उनके प्रवचन से आनंदित हो जाते हैं; और जब वे मौन हो जाते हैं, तो वे निराश हो जाते हैं। इसी प्रकार, जब भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष या गृहस्थ महिलाएं आनंद के दर्शन करने जाएं, तो वे उन्हें देखकर आनंदित हो जाते हैं; और यदि वे उनसे धर्म के विषय में बात करें, तो वे उनके प्रवचन से आनंदित हो जाते हैं; और जब वे मौन हो जाते हैं, तो वे निराश हो जाते हैं।

39. हे भिक्षुओं, एक सर्वज्ञानी सम्राट में चार दुर्लभ और श्रेष्ठ गुण पाए जाते हैं। वे चार गुण क्या हैं? हे भिक्षुओं, यदि कुलीनों का एक समूह सर्वज्ञानी सम्राट के दर्शन करने जाए, तो वे उन्हें देखकर प्रसन्न हो जाते हैं; और यदि वे तब बोलते हैं, तो वे उनके वचनों से प्रसन्न हो जाते हैं; और जब वे मौन हो जाते हैं, तो वे निराश हो जाते हैं। ऐसा ही तब होता है जब ब्राह्मणों, गृहस्थों या तपस्वियों का एक समूह सर्वज्ञानी सम्राट के दर्शन करने जाता है।

40. "और ठीक इसी प्रकार, भिक्षुओं, आनंद में ये चार दुर्लभ और श्रेष्ठ गुण पाए जाते हैं।"

कुसिनारा का अतीत का गौरव

41. यह सुनकर पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, ऐसा न हो कि भगवान बुद्ध इस नीच स्थान, इस जंगल के बीच बसे असभ्य कस्बे में, प्रांत की एक मात्र चौकी में, परारोहण करें। हे भगवान, चंपा, राजगृह, सावत्थी, सकेत, कोसंबी और बनारस जैसे महान नगर हैं - भगवान बुद्ध का अंतिम संस्कार इनमें से किसी एक में हो। क्योंकि इन नगरों में अनेक धनी कुलीन, ब्राह्मण और गृहस्थ निवास करते हैं जो तथागत के भक्त हैं, और वे तथागत के अवशेषों को उचित सम्मान देंगे।"

42. "ऐन, ऐसा मत कहो! यह मत कहो: 'यह नीच जगह, जंगल के बीचोंबीच बसा यह असभ्य कस्बा, प्रांत की एक मात्र चौकी।' ऐन, बहुत समय पहले महा सुदस्सन नाम का एक राजा था, जो सर्वव्यापी सम्राट, धर्मात्मा राजा, पृथ्वी के चारों दिशाओं का विजेता था,

जिसका राज्य सुरक्षित था और जो सात रत्नों से संपन्न था।53 ऐन, उस राजा महा सुदस्सन का राज निवास कुसिनारा में था, जिसे तब कुसावती कहा जाता था, और यह पूर्व से पश्चिम तक बारह योजन और उत्तर से दक्षिण तक सात योजन तक फैला हुआ था।
43. "हे आनंद, कुसावती राजधानी बहुत शक्तिशाली, समृद्ध और घनी आबादी वाली थी, जहाँ बहुत से लोग आते-जाते थे और भोजन की प्रचुरता थी। जिस प्रकार देवताओं का राजनिवास, अलकमंडा, शक्तिशाली, समृद्ध और घनी आबादी वाला, देवताओं द्वारा बहुत बार आने-जाने वाला और भोजन की प्रचुरता वाला होता है, उसी प्रकार कुसावती की राजराज राजधानी भी शक्तिशाली, समृद्ध और घनी आबादी वाली थी।"
44. "आनंद, कुसावती दिन-रात दस ध्वनियों से लगातार गूंजती रहती थी—हाथियों का चिंघाड़ना, घोड़ों का हिनहिनाना, रथों की खड़खड़ाहट, ढोल और तबले की थाप, संगीत और गीत, जयकार, तालियाँ और 'खाओ, पियो और आनंद करो!' के नारे।"

मल्लों का विलाप

45. "अब, आनंद, कुसिनारा जाओ और मल्लों को यह घोषणा करो: 'हे वसेत्थों, आज रात के अंतिम पहर में तथागत का परिनिर्वाण होगा। हे वसेत्थों, पास आओ! बाद में इस विचार से पश्चाताप मत करना कि 'हमारे नगर में तथागत का परिनिर्वाण हुआ था, परन्तु हम अंत में उनके दर्शन नहीं कर पाए!'"
"ऐसा ही हो, भगवान।" और पूज्य आनंद ने स्वयं को तैयार किया, और कुंड और वस्त्र लेकर एक साथी के साथ कुसिनारा चले गए।
46. उस समय मल्ल समुदाय के लोग किसी सार्वजनिक कार्य के लिए सभा भवन में एकत्रित हुए थे। पूज्य आनंद उनके पास आए और घोषणा की: "हे वसेत्थों, आज रात के अंतिम पहर में तथागत का परिनिर्वाण होगा। हे वसेत्थों, पास आओ! बाद में इस बात का पश्चाताप मत करना कि 'तथागत का परिनिर्वाण हमारे नगर में हुआ, परन्तु हम अंत में उनके दर्शन नहीं कर पाए।'"
47. जब उन्होंने पूज्य आनंद के ये शब्द सुने, तो मल्ल अपने पुत्रों, अपनी पत्नियों और अपने पुत्रों की पत्नियों सहित अत्यंत व्यथित हुए; कुछ अपने बिखरे बालों के साथ, निराशा में बाहें उठाकर रोने लगे; वे जमीन पर गिर पड़े, इधर-उधर लुढ़कते हुए विलाप करने लगे: "भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! शुभ पुरुष कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! कितनी जल्दी संसार की आँख दृष्टि से ओझल हो जाएगी!"
48. और इस प्रकार दुखी और शोक से व्याकुल होकर मल्ला लोग अपने पुत्रों, अपनी पत्नियों और अपने पुत्रों की पत्नियों के साथ मल्लाओं के मनोरंजन उद्यान, साला उपवन में, उस स्थान पर गए जहाँ पूज्य आनंद विराजमान थे।
49. और पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "यदि मैं कुसिनारा के मल्लों को एक-एक करके भगवान को प्रणाम करने की अनुमति दूं, तो उन सभी के भगवान के समक्ष प्रस्तुत होने से पहले ही रात हो जाएगी। इसलिए मैं उन्हें कुल के अनुसार अलग-अलग कर दूं, प्रत्येक परिवार को एक समूह में, और फिर उन्हें भगवान के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करूं: 'हे भगवान, फलां नाम का मल्ल, अपनी पत्नियों और बच्चों, अपने सेवकों और अपने मित्रों के साथ, भगवान के चरणों में प्रणाम करता है।'"
50. और पूज्य आनंद ने मल्लों को कुल के अनुसार, प्रत्येक परिवार को एक समूह में बाँटकर, भगवान बुद्ध के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रकार पूज्य आनंद ने कुसिनारा के मल्लों को कुल के अनुसार, प्रत्येक परिवार को एक समूह में, रात्रि के पहले पहर में ही भगवान बुद्ध के समक्ष प्रस्तुत करवाया।

अंतिम धर्मांतरित

51. उस समय सुभद्दा नामक एक विचरणशील तपस्वी कुशीनार में निवास कर रहा था। सुभद्दा नामक विचरणशील तपस्वी ने सुना कि "आज रात के तीसरे पहर में तपस्वी गौतम का परिनिर्वाण होगा।"
52. तब उनके मन में यह विचार आया: "मैंने प्राचीन और पूजनीय घुमंतू तपस्वियों, गुरुओं के गुरुओं से सुना है कि तथागतों, अरहंतों, पूर्णतः प्रबुद्धों का उदय संसार में दुर्लभ है। फिर भी आज ही रात के अंतिम पहर में तपस्वी गौतम का परिनिर्वाण होगा। अब मेरे मन में संदेह है; परन्तु तपस्वी गौतम पर मुझे इतना विश्वास है कि वे मुझे धम्म का ऐसा उपदेश देंगे जिससे मेरा यह संदेह दूर हो जाएगा।"
53. तब भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा मल्लों के मनोरंजन उद्यान, साला वन में गए और पूज्य आनंद के पास पहुँचकर उन्हें अपने विचार बताए। उन्होंने पूज्य आनंद से कहा, "मित्र आनंद, यदि मुझे तपस्वी गौतम के समक्ष उपस्थित होने की अनुमति मिल जाए तो अच्छा होगा।"
54. लेकिन पूज्य आनंद ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "बस करो, मित्र सुभद्दा! तथागत को परेशान मत करो। भगवान थके हुए हैं।"
55-56. फिर भी दूसरी और तीसरी बार विचरण करने वाले तपस्वी सुभद्दा ने अपना निवेदन किया, और दूसरी और तीसरी बार पूज्य आनंद ने उसे अस्वीकार कर दिया।
57. भगवान बुद्ध ने उनकी बातचीत सुनी और पूज्य आनंद को बुलाकर कहा, "आनंद, रुको! सुभद्दा को मना मत करो। आनंद, सुभद्दा को तथागत के समक्ष प्रवेश करने की अनुमति दी जा सकती है। क्योंकि वह मुझसे जो कुछ भी पूछेगा, ज्ञान की प्राप्ति के लिए पूछेगा, न कि किसी अपराध के लिए। और मैं उसे जो उत्तर दूंगा, वह उसे सहजता से समझ आ जाएगा।"
58. तब पूज्य आनंद ने भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा से कहा: "तो जाओ, मित्र सुभद्दा, भगवान तुम्हें जाने की अनुमति देते हैं।"

59. तब भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा भगवान बुद्ध के पास पहुँचे और उन्हें विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया। उनसे सौहार्दपूर्ण और शालीन अभिवादन करने के बाद, सुभद्दा एक तरफ बैठ गए और भगवान बुद्ध से कहा, “हे पूज्य गौतम, ऐसे तपस्वी और ब्राह्मण हैं जो शिष्यों के बड़े समूहों के प्रमुख हैं, जिनके साथ बहुत से अनुयायी होते हैं, जो स्कूलों के नेता हैं, जो प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हैं, और जनमानस में उनका बहुत सम्मान है, जैसे पुराण कस्सपा, मक्खली गोसला, अजित केशकंबली, पकुधा कच्चयन, संजय बेलत्थिपुत्त, निगंथ नटपुत्त। क्या इन सभी ने मोक्ष प्राप्त कर लिया है, जैसा कि उनमें से प्रत्येक का मानना है, या किसी ने नहीं, या ऐसा है कि कुछ ने मोक्ष प्राप्त कर लिया है और अन्य ने नहीं?”

60. "बस करो, सुभद्दा! चाहे जो भी हो, चाहे उन सभी ने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो, जैसा कि उनमें से प्रत्येक मानता है, या चाहे किसी ने भी न किया हो, या चाहे कुछ ने आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो और कुछ ने नहीं। मैं तुम्हें धम्म सिखाऊंगा, सुभद्दा; ध्यान से सुनो और समझ लो, फिर मैं बोलूंगा।"

"ऐसा ही हो, भगवान।"

शेर की दहाड़

61. भगवान बुद्ध ने कहा, “हे सुभद्दा, जिस भी धर्म और अनुशासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग नहीं पाया जाता, न ही उसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ श्रेणी का कोई सच्चा तपस्वी पाया जाता है। परन्तु जिस भी धर्म और अनुशासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग पाया जाता है, उसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी का सच्चा तपस्वी पाया जाता है। हे सुभद्दा, इसी धर्म और अनुशासन में आर्य अष्टांगिक मार्ग पाया जाता है; और इसी में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के सच्चे तपस्वी पाए जाते हैं। अन्य गुरुओं की प्रणालियाँ सच्चे तपस्वियों से रहित हैं। परन्तु हे सुभद्दा, यदि भिक्षु धार्मिक जीवन व्यतीत करें, तो संसार अरहतों से रहित नहीं होगा।”

62. "मैं, सुभद्दा, उस समय मात्र उनतीस वर्ष की थी,

जब मैंने संसार का त्याग करके पुण्य की खोज की; सुभद्दा, तब से इक्यावन वर्ष बीत चुके हैं, और इस पूरे समय में मैं सद्गुण और सत्य के क्षेत्र में भटकता रहा हूँ, और इसके सिवा कोई प्रथम श्रेणी का संत नहीं है। न ही द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ श्रेणी का कोई संत है। अन्य गुरुओं की प्रणालियाँ सच्चे तपस्वियों से रहित हैं। परन्तु सुभद्दा, यदि भिक्षु धर्मपरायण जीवन व्यतीत करें, तो संसार अरहतों से वंचित नहीं रहेगा।

63. यह सुनकर, भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे भगवान, परम श्रेष्ठ! हे भगवान, मानो कोई गिरी हुई वस्तु को सीधा खड़ा कर दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए को मार्ग दिखा दे, या अंधकार में दीपक प्रज्वलित कर दे ताकि देखने वाले देख सकें — ठीक इसी प्रकार भगवान बुद्ध ने अनेक तरीकों से धम्म का प्रसार किया है। अतः, हे भगवान, मैं भगवान बुद्ध, धम्म और भिक्षु समुदाय की शरण लेता हूँ। भगवान बुद्ध से मुझे संघ में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्राप्त हो।”

64. "सुभद्दा, जो कोई भी पहले किसी अन्य संप्रदाय का अनुयायी रहा हो और इस धर्म एवं अनुशासन में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्राप्त करना चाहता हो, वह चार माह की परिवीक्षा पर रहता है। उन चार माहों के अंत में, यदि भिक्षु उससे संतुष्ट हों, तो वे उसे भिक्षु के रूप में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्रदान करते हैं। फिर भी, इस मामले में मैं व्यक्तित्वों के अंतर को स्वीकार करता हूँ।"

65. "हे भगवान, यदि कोई व्यक्ति, जो पहले किसी अन्य पंथ का अनुयायी रहा हो, इस धम्म और अनुशासन में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्राप्त करना चाहता है, तो वह चार महीने की परिवीक्षा अवधि में रहे, और उन चार महीनों के अंत में, यदि भिक्षु उससे संतुष्ट हों, तो वे उसे भिक्षु के रूप में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्रदान करें - तो मैं चार वर्ष की परिवीक्षा अवधि में रहूँगा। और उन चार वर्षों के अंत में, यदि भिक्षु मुझसे संतुष्ट हों, तो वे मुझे भिक्षु के रूप में प्रवेश और उच्च दीक्षा प्रदान करें।"

66. परन्तु भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद को बुलाया और उनसे कहा, "आनंद, सुभद्दा को संघ में प्रवेश दिया जाए।" पूज्य आनंद ने उत्तर दिया, "ऐसा ही हो, भगवान।"

67. तब भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा ने पूज्य आनंद से कहा: "हे मित्र आनंद, यह आपके लिए लाभ की बात है, आशीर्वाद की बात है कि स्वयं गुरु की उपस्थिति में आपको शिष्य के रूप में दीक्षा का अभिषेक प्राप्त हुआ है।"

68. इस प्रकार हुआ कि भ्रमणशील तपस्वी सुभद्दा ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में दीक्षा और उच्चतर दीक्षा प्राप्त की। दीक्षा के समय से ही पूज्य सुभद्दा एकांत, एकांतप्रिय, उत्साही और दृढ़ निश्चयी रहे। शीघ्र ही उन्होंने उस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जिसके लिए एक योग्य व्यक्ति सही मायने में गृहस्थी छोड़कर तपस्वी जीवन की ओर प्रस्थान करता है, जो पवित्र जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है; और स्वयं उच्चतर ज्ञान से इसे प्राप्त करके वे उसमें निवास करने लगे। उन्होंने जाना: "जन्म नष्ट हो गया; उच्चतर जीवन पूर्ण हो गया; अब कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है, और इस जीवन के बाद कुछ भी शेष नहीं रहता।" और पूज्य सुभद्दा अरहतों में से एक और बन गए, और वे स्वयं भगवान बुद्ध द्वारा परिवर्तित अंतिम शिष्य थे।

भाग छह: मृत्यु

भगवान का अंतिम उपदेश

1. अब भगवान बुद्ध ने पूज्य आनंद से कहा, “हे आनंद, हो सकता है कि तुममें से कुछ के मन में यह विचार आए: ‘गुरु का वचन समाप्त हो गया है; अब हमारे पास कोई गुरु नहीं है।’ परन्तु हे आनंद, ऐसा मत सोचो। क्योंकि मैंने जिस धर्म और अनुशासन का प्रचार किया है, वही मेरे जाने के बाद तुम्हारा गुरु होगा।”
2. "और, आनंद, यद्यपि अब भिक्षु एक दूसरे को 'मित्र' कहकर संबोधित करते हैं, मेरे जाने के बाद ऐसा न हो। आनंद, वरिष्ठ भिक्षु कनिष्ठ भिक्षुओं को उनके नाम, उनके पारिवारिक नाम या 'मित्र' कहकर संबोधित कर सकते हैं; परन्तु कनिष्ठ भिक्षुओं को वरिष्ठ भिक्षुओं को 'आदरणीय महोदय' या 'महामहिम' कहकर संबोधित करना चाहिए।"
3. "यदि चाहा जाए, आनंद, तो मेरे जाने के बाद संघ छोटे और गौण नियमों को समाप्त कर सकता है।"
4. "आनंद, मेरे जाने के बाद, भिक्षु चन्ना पर कड़ी सजा लगाई जाए।"
लेकिन हे भगवान, इससे भी बड़ी सजा क्या है?
"आनंद, भिक्षु चन्ना जो चाहे कह सकता है, लेकिन भिक्षुओं को न तो उससे बातचीत करनी चाहिए, न ही उसे उपदेश देना चाहिए और न ही उसे चेतावनी देनी चाहिए।"
5. तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "हे भिक्षुओं, हो सकता है कि आप में से कोई बुद्ध, धम्म, संघ, मार्ग या साधना के विषय में संशय या दुविधा में हो। तो प्रश्न पूछिए, हे भिक्षुओं! बाद में इस विचार से पश्चाताप न कीजिए कि 'गुरु हमारे सामने उपस्थित थे, फिर भी हम उनसे आमने-सामने प्रश्न पूछने में असफल रहे।'"
6. परन्तु यह सुनकर भिक्षु चुप हो गए। फिर भी भगवान बुद्ध ने उनसे दूसरी और तीसरी बार कहा: “हे भिक्षुओं, हो सकता है कि तुममें से कोई बुद्ध, धम्म, संघ, मार्ग या साधना के विषय में संशय या दुविधा में हो। तो प्रश्न करो, भिक्षुओं! पश्चात में यह सोचकर पश्चाताप मत करो कि ‘गुरु हमारे समक्ष उपस्थित थे, फिर भी हमने उनसे प्रश्न नहीं पूछा।’”
और दूसरी और तीसरी बार भी भिक्षु चुप रहे। तब भगवान बुद्ध ने उनसे कहा, "हे भिक्षुओं, हो सकता है कि गुरु के प्रति आदर के कारण आप प्रश्न न पूछें। तो हे भिक्षुओं, अपने मित्र से दूसरे मित्र को यह बात बता दें।" फिर भी भिक्षु चुप रहे।
7. तब पूज्य आनंद ने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान, यह कितना अद्भुत है, अत्यंत आश्चर्यजनक है! भिक्षुओं के समुदाय में मेरा यह विश्वास है कि बुद्ध, धम्म, संघ, मार्ग या अभ्यास के विषय में एक भी भिक्षु को कोई संदेह या उलझन नहीं है।"
"आनंद, तुम आस्था के कारण ऐसा कहते हो। लेकिन आनंद, तथागत को यह पूर्ण विश्वास है कि इस भिक्षु समुदाय में एक भी भिक्षु ऐसा नहीं है जिसे बुद्ध, धम्म, संघ, मार्ग या साधना के विषय में संदेह या दुविधा हो। क्योंकि आनंद, इन पाँच सौ भिक्षुओं में सबसे निम्नतम भिक्षु भी धारा में प्रवेश करने वाला है, पतन से सुरक्षित, आश्वस्त और ज्ञानोदय की ओर अग्रसर है।"
8. और भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "हे भिक्षुओं, मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ: सभी मिश्रित वस्तुएँ निष्फल होने वाली हैं। पूरी लगन से प्रयास करो!"
तथागत के ये अंतिम शब्द थे।

भगवान बुद्ध निर्वाण कैसे प्राप्त हुए

9. भगवान बुद्ध प्रथम ध्यान में प्रवेश कर गए। प्रथम ध्यान से उठकर वे द्वितीय ध्यान में प्रवेश कर गए। द्वितीय ध्यान से उठकर वे तृतीय ध्यान में प्रवेश कर गए। तृतीय ध्यान से उठकर वे चतुर्थ ध्यान में प्रवेश कर गए। चतुर्थ ध्यान से उठकर वे अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र की प्राप्ति से उठकर वे अनंत चेतना के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। अनंत चेतना के क्षेत्र की प्राप्ति से उठकर वे शून्यता के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। शून्यता के क्षेत्र की प्राप्ति से उठकर वे न तो बोध और न ही अबोध के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। न तो बोध और न ही अबोध के क्षेत्र की प्राप्ति से उठकर उन्होंने बोध और संवेदना की समाप्ति को प्राप्त कर लिया।
10. और पूज्य आनंद ने पूज्य अनुराधा से कहा, "पूज्य अनुराधा, भगवान बुद्ध का देहांत हो गया है।"
"नहीं, मित्र आनंद, भगवान बुद्ध का निधन नहीं हुआ है। वे चेतना और संवेदना के निश्चिंत होने की अवस्था में प्रवेश कर चुके हैं।"
11. फिर भगवान बुद्ध ने अनुभूति और संवेदना के अंत से ऊपर उठकर, न अनुभूति और न अ अनुभूति के क्षेत्र में प्रवेश किया। न अनुभूति और न अ अनुभूति के क्षेत्र की प्राप्ति से ऊपर उठकर, उन्होंने शून्यता के क्षेत्र में प्रवेश किया। शून्यता के क्षेत्र की प्राप्ति से ऊपर उठकर, उन्होंने अनंत चेतना के क्षेत्र में प्रवेश किया। अनंत चेतना के क्षेत्र की प्राप्ति से ऊपर उठकर, उन्होंने अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रवेश किया। अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र की प्राप्ति से ऊपर उठकर, उन्होंने चौथे ध्यान में प्रवेश किया। चौथे ध्यान से ऊपर उठकर, उन्होंने तीसरे ध्यान में प्रवेश किया। तीसरे ध्यान से ऊपर उठकर, उन्होंने दूसरे ध्यान में प्रवेश किया। दूसरे ध्यान से ऊपर उठकर, उन्होंने पहले ध्यान में प्रवेश किया।
प्रथम ध्यान से उठकर वे द्वितीय ध्यान में प्रवेश कर गए। द्वितीय ध्यान से उठकर वे तृतीय ध्यान में प्रवेश कर गए। तृतीय ध्यान से उठकर वे चतुर्थ ध्यान में प्रवेश कर गए। और चतुर्थ ध्यान से उठकर वे तुरंत परास्त हो गए।

दुनिया की प्रतिध्वनि

12. और जब भगवान बुद्ध का देहांत हो गया, तो उनके परिनिर्वाण के साथ ही एक भयंकर भूकंप आया, जो भयानक और चौंकाने वाला था, और आकाश में गर्जना गूंज उठी।

13. और जब भगवान बुद्ध का देहांत हो गया, उनके परिनिर्वाण के साथ ही, ब्रह्म सहमपति ने यह श्लोक कहा:
सभी को जाना है— सभी जीवित प्राणियों को अपना मिश्रित रूप त्यागना होगा। हाँ, यहाँ तक कि एक, उनके जैसा एक गुरु, एक अद्वितीय प्राणी, ज्ञान में शक्तिशाली, प्रबुद्ध, भी देह त्याग चुके हैं। 14. और जब भगवान बुद्ध का देह त्याग हो गया, उनके परिनिर्वाण के साथ ही, देवताओं के राजा सक्का ने यह श्लोक कहा:
सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, उनका जन्म और विनाश निश्चित है; अस्तित्व में आने के बाद वे नष्ट हो जाती हैं; जब वे सदा के लिए समाप्त हो जाती हैं, तब शांति सुखद होती है। 15. और जब भगवान बुद्ध का परनिर्वाण हो गया, उसी समय पूज्य अनुराधा ने यह श्लोक कहा:
श्वास का कोई संचलन नहीं, परन्तु स्थिर हृदय से, इच्छाओं से मुक्त और शांत — इस प्रकार ऋषि का अंत हुआ। मृत्यु के कष्टों से अविचलित, उनका मन, बुझती हुई लौ के समान, मुक्ति पा गया। 16. और जब भगवान बुद्ध का परनिर्वाण हो गया, उसी समय पूज्य आनंद ने यह श्लोक कहा:
फिर भय का माहौल छा गया और रोंगटे खड़े हो गए, जब सर्वसिद्ध बुद्ध का देहांत हुआ। 17. फिर, जब भगवान बुद्ध का देहांत हो गया, तो कुछ भिक्षु, जो अभी तक वासना से मुक्त नहीं हुए थे, अपने हाथ उठाकर रोने लगे; और कुछ जमीन पर गिरकर इधर-उधर लुढ़कते हुए विलाप करने लगे: "भगवान बुद्ध कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! शुभ बुद्ध कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! संसार की आँख कितनी जल्दी दृष्टि से ओझल हो गई!"
लेकिन जो भिक्षु कामवासना से मुक्त थे, सचेत थे और स्पष्ट रूप से समझते थे, उन्होंने इस प्रकार चिंतन किया: "सभी चीजें क्षणभंगुर हैं। भला ऐसा कैसे हो सकता है?"
18. तब पूज्य अनुराधा ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "बस करो, मित्रों! शोक मत करो, विलाप मत करो! क्योंकि क्या भगवान बुद्ध ने यह नहीं कहा है कि जो कुछ भी प्रिय और प्यारा है, उसमें परिवर्तन, वियोग और विच्छेद अवश्य होगा? जो जन्म लेता है, अस्तित्व में आता है, बनता है और क्षय के अधीन है, उसके बारे में कोई कैसे कह सकता है: 'काश उसका विघटन न हो!'? हे मित्रों, देवता दुखी हैं।"
लेकिन, आदरणीय महोदय, आदरणीय अनुराधा किन देवताओं के बारे में जानते हैं?
"हे आनंद, मित्र, अंतरिक्ष और पृथ्वी पर ऐसे देवता हैं जो सांसारिक विचारों से प्रेरित हैं; बिखरे बालों के साथ वे रोते हैं, भुजाएँ उठाकर रोते हैं; जमीन पर गिरकर करवटें बदलते हुए विलाप करते हैं: 'भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! जगत की आँख कितनी जल्दी दृष्टि से ओझल हो गई!' परन्तु जो देवता वासना से मुक्त हैं, सचेत हैं और स्पष्ट रूप से समझते हैं, वे इस प्रकार चिंतन करते हैं: 'सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं। ऐसा कैसे हो सकता है?'"
19. अब पूज्य अनुराधा और पूज्य आनंद ने शेष रात्रि धम्म पर चर्चा करते हुए बिताई। फिर पूज्य अनुराधा ने पूज्य आनंद से कहा, "हे मित्र आनंद, अब कुसिनारा जाओ और मल्लों को यह सूचना दो: 'परमेश्वर वसेत्थास का निधन हो गया है। अब तुम जो उचित समझो, वही करो।'"
"ऐसा ही हो, पूज्यवर।" और पूज्य आनंद ने सुबह स्वयं को तैयार किया, और पान और वस्त्र लेकर एक साथी के साथ कुसिनारा चले गए।
20. उस समय कुसिनारा के मल्ल इसी विषय पर विचार करने के लिए सभा भवन में एकत्रित हुए थे। तभी पूज्य आनंद उनके पास आए और घोषणा की: "हे वसेत्थास, भगवान बुद्ध का देहांत हो गया है। अब आप जो उचित समझें, वही करें।"
जब उन्होंने पूज्य आनंद के ये शब्द सुने, तो मल्ल अपने पुत्रों, अपनी पत्नियों और अपने पुत्रों की पत्नियों सहित अत्यंत व्यथित हुए; कुछ अपने बिखरे बालों के साथ, निराशा में बाहें उठाकर रोने लगे; वे ज़मीन पर गिर पड़े, इधर-उधर लुढ़कते हुए विलाप करने लगे: “भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! सुखी भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! संसार की आँख कितनी जल्दी दृष्टि से ओझल हो गई!”
अवशेषों को श्रद्धांजलि
21. तब कुसिनारा के मल्लों ने अपने आदमियों को आदेश दिया, “अब कुसिनारा में जितने भी इत्र, पुष्पमालाएँ और संगीतकार हैं, उन सबको इकट्ठा करो।” और मल्ल, इत्र, पुष्पमालाएँ, संगीतकारों और पाँच सौ जोड़ी वस्त्रों के साथ, मल्लों के मनोरंजन उद्यान, साला वन में गए और भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर के पास पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाएँ और इत्र से भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की और मंडप व तंबू लगाकर सारा दिन भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर के प्रति आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट करते हुए बिताया। फिर उनके मन में यह विचार आया, “आज का दिन बहुत बीत चुका है, इसलिए हम भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर का दाह संस्कार नहीं कर सकते। हम इसे कल करेंगे।”
और दूसरे दिन, और तीसरे, चौथे, पाँचवें और छठे दिन भी, उन्होंने नृत्य, गीत, संगीत, फूलों की मालाओं और इत्र से भगवान बुद्ध के शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की, और मंडप और तंबू बनाकर, उन्होंने पूरा दिन भगवान बुद्ध के शरीर के प्रति सम्मान, आदर और श्रद्धा प्रदर्शित करने में बिताया।
लेकिन सातवें दिन उनके मन में यह विचार आया: "हमने नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाओं और इत्र से भगवान के शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की है, आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट की है; अब आइए हम भगवान के शरीर को दक्षिण की ओर शहर के दक्षिणी भाग और उससे आगे ले जाएं, और वहां शहर के दक्षिण में भगवान के शरीर का अंतिम संस्कार करें।"

और प्रमुख परिवारों के आठ मल्लाओं ने अपने सिर के ऊपरी भाग को धोकर और नए कपड़े पहनकर, इस विचार के साथ कि "हम भगवान बुद्ध के शरीर को उठाएंगे," ऐसा करने का प्रयास किया, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके।
22. तब मल्लों ने पूज्य अनुराधा से कहा, "हे पूज्य अनुराधा, क्या कारण है? ये आठ प्रमुख परिवारों के मल्ल, जिन्होंने अपने सिर के मुकुट से स्नान किया और नए वस्त्र पहने हुए थे, इस विचार से कि 'हम भगवान के शरीर को उठा लेंगे', ऐसा करने का प्रयास तो करते हैं, पर ऐसा करने में असमर्थ क्यों हैं?"
"हे वसेत्थास, तुम्हारा एक उद्देश्य है, देवताओं का दूसरा।"
"तो फिर, आदरणीय महोदय, देवताओं का उद्देश्य क्या है?"
"हे वसेत्थास, तुम्हारा उद्देश्य यह है: 'हमने नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाओं और इत्र से भगवान बुद्ध के शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की है, और आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट की है; अब हम भगवान बुद्ध के शरीर को दक्षिण की ओर शहर के दक्षिणी भाग और उससे आगे ले जाएं, और वहां शहर के दक्षिण में भगवान बुद्ध के शरीर का अंतिम संस्कार करें।' लेकिन देवताओं, वसेत्थों का उद्देश्य यह है: "हमने दिव्य नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाओं और इत्र से भगवान के शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की है, और आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट की है; अब हम भगवान के शरीर को उत्तर की ओर नगर के उत्तरी भाग में ले चलें; और उत्तरी द्वार से होते हुए नगर के मध्य से गुजरें, और फिर पूर्व की ओर नगर के पूर्वी भाग में जाएँ; और पूर्वी द्वार से गुजरते हुए, हम इसे मल्ल वंश के चैत्य, मकुता-बंधन में ले जाएँ, और वहाँ भगवान के शरीर का दाह संस्कार करें।"
"हे पूज्यवर, देवताओं की यही इच्छा हो, वैसा ही हो।"
23. तब कुसिनारा का सारा क्षेत्र, यहाँ तक कि धूल के ढेर और कूड़े के ढेर भी, घुटनों तक मंदारवा के फूलों से ढक गए। 62 कुसिनारा के देवताओं और मल्लों ने भगवान बुद्ध के शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की। नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाओं और सुगंध से, दिव्य और मानवीय दोनों तरह से, आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट की गई। और वे भगवान बुद्ध के शरीर को उत्तर की ओर नगर के उत्तरी भाग में ले गए; और उत्तरी द्वार से होकर वे नगर के मध्य से होते हुए पूर्व की ओर नगर के पूर्वी भाग में गए; और पूर्वी द्वार से होकर वे भगवान बुद्ध के शरीर को मल्लों के चैत्य, मकुटा-बंधन में ले गए और वहाँ रख दिया।
24. तब कुसिनारा के मल्लों ने पूज्य आनंद से कहा, "हे पूज्य आनंद, तथागत के शरीर के संबंध में हमें क्या करना चाहिए?"
"उसी प्रकार, वसेत्थास, जैसे किसी सार्वभौमिक सम्राट के शरीर के प्रति किया जाता है।"
लेकिन हे पूज्य आनंद, वे एक सार्वभौमिक सम्राट के शरीर के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं?
"सर्वशक्तिमान सम्राट, वसेत्थास, के शरीर को पहले नए लिनेन में लपेटा जाता है, फिर रूई से। फिर से नए लिनेन में लपेटा जाता है, फिर रूई से, और इसी तरह लिनेन और रूई की पाँच सौ परतों तक लपेटा जाता है। जब यह हो जाता है, तो सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर को एक लोहे के तेल पात्र में रखा जाता है, जिसे एक और लोहे के पात्र में बंद कर दिया जाता है, और सभी प्रकार की सुगंधित लकड़ियों से एक चिता बनाई जाती है, और इस प्रकार सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर को जला दिया जाता है। और एक चौराहे पर सर्वशक्तिमान सम्राट के लिए एक स्तूप बनाया जाता है। इस प्रकार, वसेत्थास, सर्वशक्तिमान सम्राट के शरीर के साथ किया जाता है।"
और हे वसेत्थों, जैसे किसी विश्व सम्राट के शरीर का सम्मान किया जाता है, वैसे ही तथागत के शरीर का सम्मान किया जाना चाहिए; और चौराहे पर तथागत के लिए एक स्तूप भी स्थापित किया जाना चाहिए। और जो कोई भी उस स्थान पर माला, धूप या चंदन का लेप चढ़ाए, या श्रद्धा अर्पित करे, और जिसका मन वहाँ शांत हो जाए, वह उसके लिए दीर्घकालिक कल्याण और सुख का कारण बनेगा।
25. तब मल्लों ने अपने आदमियों को आदेश दिया, "अब मल्लों की सारी रूई इकट्ठा करो!" कुसिनारा के मल्लों ने भगवान बुद्ध के शरीर को नए लिनेन से लपेटा, फिर रूई से। फिर उन्होंने उसे नए लिनेन से लपेटा, फिर रूई से। इस प्रकार उन्होंने लिनेन की पाँच सौ परतें और रूई की पाँच सौ परतें लपेटीं। जब यह कार्य पूरा हो गया, तो उन्होंने भगवान बुद्ध के शरीर को एक लोहे के तेल पात्र में रखा, जिसे एक और लोहे के पात्र में बंद कर दिया गया। उन्होंने सभी प्रकार की सुगंधित लकड़ियों की चिता बनाई और उस पर भगवान बुद्ध के शरीर को रख दिया।
26. उस समय पूज्य महा कस्सपा पाँच सौ भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ पावा से कुसिनारा की यात्रा कर रहे थे। रास्ते में पूज्य महा कस्सपा राजमार्ग से हटकर एक वृक्ष की गोद में बैठ गए।
और एक अजीवक पावा जा रहा था, और वह कुसिनारा से एक मंदारवा फूल लेकर आया था। पूज्य महा कस्सपा ने दूर से अजीवक को आते देखा, और पास आकर उससे कहा, "मित्र, क्या तुम हमारे गुरु के बारे में कुछ जानते हो?"
"जी हां, मित्र, मुझे पता है। तपस्वी गौतम के देहांत को अब सात दिन हो गए हैं। मैं वहीं से यह मंदारवा का फूल लाया हूं।"
27. तब कुछ भिक्षु, जो अभी तक वासना से मुक्त नहीं हुए थे, अपने हाथ उठाकर रोने लगे; और कुछ जमीन पर गिरकर इधर-उधर लुढ़कते हुए विलाप करने लगे: "भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! भगवान कितनी जल्दी परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए! जगत की आँख कितनी जल्दी दृष्टि से ओझल हो गई!"
28. उस समय, सुभद्दा नामक एक भिक्षु, जिन्होंने वृद्धावस्था में ही संन्यास लिया था, सभा में बैठे थे। उन्होंने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "बस करो, मित्रों! शोक मत करो, विलाप मत करो! हम उस महान तपस्वी से छुटकारा पा चुके हैं। मित्रों, बहुत समय तक हम उनके इस कथन से पीड़ित रहे कि 'यह तुम्हारे लिए उचित है; वह तुम्हारे लिए उचित नहीं है।' अब हम अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सकेंगे, और जो हम नहीं चाहते, वह नहीं करेंगे।"

लेकिन पूज्य महा कस्सपा ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: "बस करो मित्रों! शोक मत करो, विलाप मत करो! क्योंकि क्या भगवान बुद्ध ने यह नहीं कहा है कि जो कुछ भी प्रिय और प्यारा है, उसमें परिवर्तन, वियोग और विच्छेद अवश्य होगा? जो जन्म लेता है, अस्तित्व में आता है, बनता है और क्षय के अधीन है, उसके बारे में कोई कैसे कह सकता है: 'यह नष्ट न हो!'?"
29. उस समय, प्रमुख परिवारों के चार मल्ल भिक्षुओं ने अपने सिर के मुकुट से स्नान किया और नए वस्त्र धारण किए, यह सोचकर कि "हम भगवान बुद्ध की चिता को प्रज्वलित करेंगे," उन्होंने ऐसा करने का प्रयास किया, परन्तु वे ऐसा नहीं कर सके। तब मल्ल भिक्षुओं ने पूज्य अनुराधा से कहा, "हे पूज्य अनुराधा, इसका क्या कारण है कि प्रमुख परिवारों के इन चार मल्ल भिक्षुओं ने अपने सिर के मुकुट से स्नान किया और नए वस्त्र धारण किए, यह सोचकर कि "हम भगवान बुद्ध की चिता को प्रज्वलित करेंगे," उन्होंने ऐसा करने का प्रयास किया, परन्तु वे ऐसा नहीं कर सके?"
"हे वसेत्थास, तुम्हारा एक उद्देश्य है, देवताओं का दूसरा।"
"तो फिर, आदरणीय महोदय, देवताओं का उद्देश्य क्या है?"
वसेत्था देवताओं का उद्देश्य यह है: 'पूज्य महा कस्सपा पांच सौ भिक्षुओं के एक विशाल समूह के साथ पावा से कुसिनारा जा रहे हैं। जब तक पूज्य महा कस्सपा भगवान के चरणों में प्रणाम न कर लें, तब तक उनकी चिता को प्रज्वलित न किया जाए।'
"हे पूज्यवर, देवताओं की यही इच्छा हो, वैसा ही हो।"
30. पूज्य महा कस्सपा कुसिनारा में मल्ल भिक्षुओं के चैत्य, मकुता-बंधन स्थित भगवान बुद्ध की चिता के पास पहुँचे। उन्होंने अपना ऊपरी वस्त्र एक कंधे पर रखा और हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए भगवान बुद्ध के शरीर की ओर दाहिना भाग रखते हुए चिता के तीन चक्कर लगाए और भगवान बुद्ध के चरणों में प्रणाम किया। पाँच सौ भिक्षुओं ने भी ऐसा ही किया।
और जब पूज्य महा कस्सपा और पांच सौ भिक्षुओं ने श्रद्धांजलि अर्पित कर दी, तो भगवान बुद्ध की चिता स्वतः ही प्रज्वलित हो गई।
31. और ऐसा हुआ कि जब भगवान बुद्ध का शरीर जलाया गया, तो त्वचा, ऊतक, मांस, नसें और तरल पदार्थ के कोई अवशेष या कण नहीं बचे; केवल हड्डियाँ ही शेष रहीं। जैसे घी या तेल जलने पर कोई कण या राख नहीं बचती, वैसे ही जब भगवान बुद्ध का शरीर जलाया गया, तो त्वचा, ऊतक, मांस, नसें और तरल पदार्थ के कोई अवशेष या कण नहीं बचे; केवल हड्डियाँ ही शेष रहीं। और पाँच सौ लिनेन के आवरणों में से केवल दो ही अविचलित रहे, भीतरी और बाहरी।
32. और जब भगवान बुद्ध का शरीर जला दिया गया, तो आकाश से जल बरसा और भगवान बुद्ध की चिता को बुझा दिया, और साल के पेड़ों से जल निकला, और कुसिनारा के मल्ल अनेक प्रकार के इत्रों से सुगंधित जल लाए, और उन्होंने भी भगवान बुद्ध की चिता को बुझा दिया।
और कुसिनारा के मल्लों ने भगवान बुद्ध के अवशेषों को अपने सभा भवन में रखा, और उन्हें भालों की जाली से घेर दिया तथा धनुषों की बाड़ से घेर दिया; और वहाँ सात दिनों तक उन्होंने नृत्य, गीत, संगीत, पुष्पमालाओं और इत्र से भगवान बुद्ध के अवशेषों को श्रद्धांजलि अर्पित की, और भगवान बुद्ध के अवशेषों के प्रति आदर, सम्मान और श्रद्धा प्रकट की।
अवशेषों का विभाजन
33. तब मगध के राजा अजातसत्तु, जो विदेही रानी के पुत्र थे, को यह सूचना मिली कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, "भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और मैं भी उसी जाति का हूँ। मैं भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हूँ। मैं भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाऊँगा और उनके सम्मान में एक उत्सव आयोजित करूँगा।"
34. वैशाली के लिच्छवियों को यह पता चला कि कुसिनारा में भगवान बुद्ध का निधन हो गया है। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, "भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और हम भी उसी जाति के हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।"
35. कपिलवस्तु के शाक्यों को यह जानकर कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं, उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा और कहा, "भगवान बुद्ध हमारे कुल में श्रेष्ठ थे। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।"
36. और अल्लाकप्पा के बुलियों को यह पता चला कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, "भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और हम भी उसी जाति के हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।"
37. रामागामा के कोलियों को यह पता चला कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, "भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और हम भी उसी जाति के हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।"
38. और वेथादीप ब्राह्मण को यह पता चला कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, "भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे और मैं ब्राह्मण हूँ। मैं भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हूँ। मैं भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करूँगा और उनके सम्मान में एक उत्सव आयोजित करूँगा।"

39. पावा के मल्लों को यह पता चला कि भगवान बुद्ध कुसिनारा में देहांत हो गए हैं। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, “भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और हम भी उसी जाति के हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।”
40. परन्तु जब उन्होंने ये शब्द सुने, तो कुसिनारा के मल्लों ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, “भगवान बुद्ध हमारे नगर में देहांत कर चुके हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का कोई भी अंश किसी को नहीं देंगे।” तब ब्राह्मण डोना ने सभा को संबोधित करते हुए कहा:
मेरी ओर से एक शब्द, महोदय, कृपया ध्यान दें! हमारे बुद्ध ने हमें सदा संयम बरतने का उपदेश दिया है; यह अनुचित होगा यदि उनके अवशेषों की रक्षा को लेकर कलह, युद्ध और रक्तपात हो, जो श्रेष्ठ पुरुष थे! महोदय, आइए हम सब मित्रतापूर्वक आठ भागों में बाँटने पर सहमत हों—ताकि दूर-दूर तक स्तूप स्थापित हों और उन्हें देखकर मानवजाति सर्वज्ञानी में आस्था प्राप्त करे! "ऐसा ही हो, ब्राह्मण! आप स्वयं अवशेषों को आठ बराबर भागों में बाँट लें।"
ब्राह्मण डोना ने सभा से कहा, “ऐसा ही हो, महोदय।” उन्होंने भगवान बुद्ध के अवशेषों को आठ बराबर भागों में उचित रूप से विभाजित किया और ऐसा करने के बाद सभा को संबोधित करते हुए कहा, “यह कलश मुझे दे दीजिए। मैं इस कलश पर एक स्तूप बनवाऊंगा और इसके सम्मान में एक उत्सव आयोजित करूंगा।” और वह कलश ब्राह्मण डोना को दे दिया गया।
41. तब पिप्पलीवन के मोरियाओं को पता चला कि कुसिनारा में भगवान बुद्ध का निधन हो गया है। उन्होंने कुसिनारा के मल्लों को संदेश भेजा, “भगवान बुद्ध योद्धा जाति के थे, और हम भी उसी जाति के हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों का एक अंश प्राप्त करने के योग्य हैं। हम भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप का निर्माण करेंगे और उनके सम्मान में एक उत्सव मनाएंगे।”
“भगवान बुद्ध के अवशेषों का कोई अंश शेष नहीं है; उनके अवशेष विभाजित हो चुके हैं। परन्तु यहाँ से राख ले लो।” और वे वहाँ से राख ले गए।
42. मगध के राजा अजातसत्तु, जो विदेही रानी के पुत्र थे, ने राजगृह में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। वैशाली के लिच्छवियों ने वैशाली में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। कपिलवस्तु के शाक्यों ने कपिलवस्तु में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। अल्लाकप्पा के बुलियों ने अल्लाकप्पा में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। रामागम के कोलियों ने रामागम में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। वेथाद्वीप के ब्राह्मण ने वेथाद्वीप में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। पावा के मल्लों ने पावा में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव आयोजित किया। कुसिनारा के मल्लों ने कुसिनारा में भगवान बुद्ध के अवशेषों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव आयोजित किया। ब्राह्मण दोना ने कलश पर एक स्तूप बनवाया और उसके सम्मान में एक उत्सव आयोजित किया। और पिप्पलीवन के मोरियाओं ने पिप्पलीवन में अस्थियों पर एक स्तूप बनवाया और उनके सम्मान में एक उत्सव आयोजित किया।
इस प्रकार, अवशेषों के लिए आठ स्तूप, कलश के लिए नौवां और राख के लिए दसवां स्तूप बनाए गए।
और पुराने समय में ऐसा ही होता था।
43. सर्वदर्शी, सर्वज्ञ पुरुष के आठ अवशेष थे। सात जंबुद्वीप में और एक रामागम में नाग वंश के राजाओं द्वारा पूजनीय हैं। एक दांत तावतिंसा स्वर्ग में, एक कलिंग राज्य में और एक नाग राजाओं द्वारा पूजनीय है। उनके प्रकाश से यह समृद्ध पृथ्वी अपने उत्कृष्ट उपहारों से संपन्न है; क्योंकि सर्वदर्शी पुरुष के अवशेषों का सबसे अच्छा सम्मान उन्हीं द्वारा किया जाता है जो सम्मान के योग्य हैं - देवताओं, नागों, मनुष्यों के स्वामियों, हाँ, मानव जाति के सर्वोच्च लोगों द्वारा। हाथ जोड़कर प्रणाम करो! क्योंकि सैकड़ों युगों में सर्व-प्रबुद्ध पुरुष से मिलना वास्तव में कठिन है!

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.4 महा सुदासन सुत्त(DN17)

एक बार भगवान अपने अंतिम निर्वाण से कुछ समय पहले कुसिनारा में मल्लाओं के साल के बाग में दो साल के पेड़ों के बीच ठहरे हुए थे।

आदरणीय आनंद भगवान के पास आए, उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गए और बोले, "हे भगवान, भगवान इस निर्धन छोटे से, मिट्टी-मिट्टी से बने कस्बे में, जो घने जंगल में दूर-दूर तक फैला हुआ है, अपना प्राण न त्यागें! हे भगवान, चंपा, राजगृह, सावत्थी, सकेता, कोसंबी या वाराणसी जैसे अन्य महान नगर हैं। उन स्थानों पर धनी क्षत्रिय, ब्राह्मण और गृहस्थ हैं जो तथागत के भक्त हैं और वे तथागत के अंतिम संस्कार का उचित प्रबंध करेंगे।"

"आनंद, इसे जंगल के सुदूर इलाके में स्थित एक दयनीय, मिट्टी और लकड़ी से बना छोटा सा कस्बा मत कहो! आनंद, एक समय की बात है, राजा महासुदस्सन एक चक्र-चालक सम्राट थे, एक न्यायप्रिय और धर्मात्मा राजा, जिन्होंने चारों दिशाओं में देश पर विजय प्राप्त की थी और अपने राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित की थी। और इस राजा महासुदस्सन ने इसी कुसिनारा को कुसावती नाम से अपनी राजधानी बनाया था। यह पूर्व से पश्चिम तक बारह योजन लंबा और उत्तर से दक्षिण तक सात योजन चौड़ा था। कुसावती समृद्ध, खुशहाल और घनी आबादी वाला शहर था, लोगों से भरा हुआ और भोजन का भरपूर भंडार था। जैसे देव-नगर अलकमंडा समृद्ध है..., वैसे ही कुसावती का राजसी नगर था। और कुसावती नगर दिन-रात दस ध्वनियों से कभी मुक्त नहीं होता था: हाथियों, घोड़ों, रथों, ढोल, सारंगी, गायन, झांझ और घंटों की आवाज।" दसवें स्थान पर 'खाओ, पियो और मौज करो' के नारों के साथ।

"कुसावती का शाही शहर सात दीवारों से घिरा हुआ था। एक सोने की, एक चांदी की, एक बेरिल की, एक क्रिस्टल की, एक माणिक की, एक पन्ना की और एक-एक प्रकार के रत्नों की बनी हुई थी।"

कुसावती सात पंक्तियों में एक ही प्रकार के ताड़ के वृक्षों से घिरी हुई थी। स्वर्ण वृक्षों के तने स्वर्ण रंग के थे और उन पर चांदी के पत्ते और फल लगे थे, चांदी के वृक्षों के तने चांदी रंग के थे और उन पर स्वर्ण रंग के पत्ते और फल लगे थे। बेरिल वृक्षों के तने बेरिल रंग के थे और उन पर क्रिस्टल रंग के पत्ते और फल लगे थे, क्रिस्टल रंग के वृक्षों के तने क्रिस्टल रंग के थे और उन पर बेरिल रंग के पत्ते और फल लगे थे। माणिक वृक्षों के तने माणिक रंग के थे और उन पर पन्ना रंग के पत्ते और फल लगे थे, पन्ना वृक्षों के तने पन्ना रंग के थे और उन पर माणिक रंग के पत्ते और फल लगे थे, जबकि सभी प्रकार के रत्नों के वृक्षों के तने, पत्ते और फल एक समान थे। हवा से हिलते हुए पत्तों की ध्वनि सुरीली, मनमोहक, मधुर और मदहोश कर देने वाली थी, ठीक वैसे ही जैसे पांच प्रकार के वाद्ययंत्रों को कुशल वादक एक साथ बजाते हैं। और, आनंद, कुसावती में जो लोग व्यभिचारी और शराबी थे, उनकी इच्छाएं हवा में लहराते पत्तों की ध्वनि से शांत हो जाती थीं।

"राजा महासुदस्सन सात रत्नों और चार गुणों से संपन्न थे। वे सात गुण क्या हैं? एक बार, व्रत के दिन, उन्हें हजार तीलियों वाला, धुरी, हब और सभी सहायक उपकरणों से सुसज्जित दिव्य चक्र-रत्न प्रकट हुआ। इसे देखकर राजा महासुदस्सन ने सोचा: 'मैंने सुना है कि जब विधिवत अभिषिक्त क्षत्रिय राजा पंद्रहवें व्रत के दिन ऐसा चक्र देखता है, तो वह चक्र-चक्कर लगाने वाला राजा बन जाता है। काश मैं भी ऐसा राजा बन सकूँ!'"

फिर, राजा अपने आसन से उठकर, अपने एक कंधे को अपने वस्त्र से ढकते हुए, अपने बाएं हाथ में एक सोने का पात्र लेकर, अपने दाहिने हाथ से चक्र पर स्वर्णजल छिड़का और कहा: 'हे महान चक्र-खजाने, हे महान चक्र-खजाने, विजय प्राप्त करने!' चक्र पूर्व दिशा की ओर घूमा, और राजा महासुदस्सन अपनी चार सेनाओं के साथ उसके पीछे-पीछे चले। और जिस भी देश में चक्र रुका, राजा अपनी चार सेनाओं के साथ वहीं निवास करने लगे।

और, पूर्वी क्षेत्र में जो राजा उसके विरुद्ध थे, वे आकर बोले: 'हे महाराज, आपका स्वागत है! हम आपके अधीन हैं, महाराज। हम पर शासन कीजिए, महाराज!' और राजा ने कहा: 'किसी की जान मत लो। जो न दिया गया हो, उसे मत लो। यौन दुराचार मत करो। झूठ मत बोलो। शराब मत पियो। भोजन संयम से करो।' और पूर्वी क्षेत्र में जो राजा उसके विरुद्ध थे, वे उसकी प्रजा बन गए।

और जब चक्र पूर्वी समुद्र में समा गया, तो वह उभरा और दक्षिण की ओर मुड़ गया, और राजा महासुदस्सन अपनी चार गुना सेना के साथ उसके पीछे-पीछे चले। और वे राजा... उसके अधीन हो गए। दक्षिणी समुद्र में समा जाने के बाद वह पश्चिम की ओर मुड़ गया..., पश्चिमी समुद्र में समा जाने के बाद वह उत्तर की ओर मुड़ गया, और राजा महासुदस्सन अपनी चार गुना सेना के साथ उसके पीछे-पीछे चले... और जो उत्तरी क्षेत्र में उसका सामना कर रहे थे, वे उसके अधीन हो गए।

फिर, समुद्र से समुद्र तक के सभी क्षेत्रों को जीतकर, चक्र-खजाना कुसावती की राजराजधानी में लौटा और राजा के महल के सामने, जब वह एक मामले की सुनवाई कर रहे थे, मानो महल की शोभा बढ़ाने के लिए रुका। और इस प्रकार चक्र-खजाना राजा महासुदस्सन के सामने प्रकट हुआ।

फिर राजा महासुदस्सना के सामने हाथी-खजाना प्रकट हुआ, जो शुद्ध सफेद रंग का, सात गुना शक्तिशाली और हवा में उड़ने की अद्भुत शक्ति से युक्त था। वह उपोसथा नाम का एक शाही हाथी था। उसे देखकर राजा ने सोचा, 'कितना अद्भुत सवारी करने वाला हाथी है, काश इसे वश में किया जा सकता!' और यह हाथी-खजाना एक प्रशिक्षित हाथी की तरह वश में हो गया। एक बार राजा ने उसे परखने के लिए भोर होते ही उस पर सवार होकर एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक की यात्रा की और नाश्ते के समय तक कुसावती लौट आए। इस प्रकार हाथी-खजाना राजा महासुदस्सना के सामने प्रकट हुआ।

फिर अश्व-रत्न राजा महासुदस्सना के समक्ष प्रकट हुआ, जिसका सिर कौवे जैसा था, घने काले अयाल थे, और उसमें हवा में उड़ने की अद्भुत शक्ति थी। वह वलाहाका नामक एक शाही घोड़ा था। राजा ने सोचा, 'कितना अद्भुत वाहन है, काश इसे वश में किया जा सकता!' और यह अश्व-रत्न एक लंबे समय से प्रशिक्षित शुद्ध नस्ल के घोड़े की तरह नियंत्रण में आ गया... और इस प्रकार अश्व-रत्न राजा महासुदस्सना के समक्ष प्रकट हुआ।

फिर राजा महासुदस्सना को वह रत्न प्रकट हुआ। वह शुद्ध, उत्कृष्ट, आठ फलकों में तराशा हुआ, निर्मल, चमकीला और हर तरह से परिपूर्ण बेरिल था। इस रत्न की चमक पूरे एक योजन तक फैली रही। एक बार राजा ने इसे परखने के लिए अपनी चार गुना सेना के साथ अंधेरी रात में रात्रियुद्ध किया, और रत्न को अपने ध्वज के शीर्ष पर स्थापित किया। आसपास के गांवों में रहने वाले सभी लोग दिन का उजाला समझकर अपना दैनिक कार्य करने लगे। इस प्रकार राजा महासुदस्सना को वह रत्न प्रकट हुआ।

फिर, राजा महासुदस्सन के समक्ष स्त्री-खजाने प्रकट हुईं। वे सुंदर, मनमोहक, कमल के समान रंग की थीं, न अधिक लंबी, न अधिक छोटी, न अधिक पतली, न अधिक मोटी, न अधिक सांवली, न अधिक गोरी, बल्कि देव-समान सौंदर्य से परिपूर्ण थीं। उनकी त्वचा रुई या रेशम जैसी कोमल थी, और उनके अंग गर्मी में शीतल और सर्दी में गर्म रहते थे। उनके शरीर से चंदन की सुगंध और होठों से कमल की सुगंध आती थी। यह स्त्री-खजाने राजा के सामने उठती और बाद में लौटती, और सदा उनकी प्रसन्नता के लिए तत्पर रहती, और उनकी वाणी मधुर थी। यह स्त्री-खजाने राजा के प्रति विचार में भी विश्वासघाती नहीं थीं, कर्म में तो बिल्कुल भी नहीं। इस प्रकार, स्त्री-खजाने राजा महासुदस्सन के समक्ष प्रकट हुईं।

फिर गृहस्थ महासुदस्सन के सामने प्रकट हुए। कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त दिव्य दृष्टि से उन्होंने देखा कि कहाँ-कहाँ धन छिपा है, चाहे वह स्वामी का हो या स्वामीहीन का। वे राजा के पास आए और बोले, 'महाराज, चिंता न करें, मैं आपके धन की उचित देखभाल करूँगा।' एक बार राजा ने उनकी परीक्षा लेने के लिए गंगा के मध्य में एक जहाज पर सवार होकर धारा में बह गए। तब उन्होंने गृहस्थ से कहा, 'गृहस्थ, मुझे कुछ सोने के सिक्के चाहिए!' 'ठीक है महाराज, जहाज को एक किनारे पर ले आइए।' 'मुझे सोने के सिक्के यहीं चाहिए!' तब गृहस्थ ने दोनों हाथों से पानी को छुआ और सोने के सिक्कों से भरा एक पात्र निकाला और कहा, 'क्या इतना काफी है महाराज? क्या इससे काम चल जाएगा महाराज?' राजा ने कहा, 'बस इतना ही काफी है, गृहस्थ, इतना ही काफी है, आपने मेरी पर्याप्त सेवा कर दी है।' और इस प्रकार गृहस्थ राजा महासुदस्सन के सामने प्रकट हुए।

फिर सलाहकार-खजाने वाले राजा महासुदस्सन के सामने प्रकट हुए। वे बुद्धिमान, अनुभवी, चतुर और सक्षम थे, और राजा को यह सलाह देने में सक्षम थे कि क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वे राजा के पास आए और बोले: 'महाराज, भयभीत न हों, मैं आपको सलाह दूंगा।' और इस प्रकार सलाहकार-खजाने वाले राजा महासुदस्सन के सामने प्रकट हुए, और उन्हें सातों खजाने प्राप्त हुए।

"आनंद, फिर से बताओ, राजा महासुदस्सन चार गुणों से संपन्न थे। वे क्या हैं? पहला, राजा सुंदर, आकर्षक, मनमोहक थे, उनका रंग उत्तम कमल के समान था, जो अन्य पुरुषों से श्रेष्ठ था।"

"दूसरा, वह दीर्घायु थे, अन्य पुरुषों से अधिक समय तक जीवित रहे।"

"तीसरा, वह बीमारी से मुक्त था, उसकी पाचन शक्ति अच्छी थी, और वह अन्य पुरुषों की तुलना में सर्दी और गर्मी से कम प्रभावित होता था।"

चौथी बात, वे ब्राह्मणों और गृहस्थों के प्रिय और लोकप्रिय थे। जैसे एक पिता अपने बच्चों का प्रिय होता है, वैसे ही वे ब्राह्मणों और गृहस्थों के प्रिय थे। और वे राजा के प्रिय थे, जैसे बच्चे अपने पिता के प्रिय होते हैं। एक बार राजा अपनी चार सेनाओं के साथ मनोरंजन उद्यान के लिए निकले, तो ब्राह्मण और गृहस्थ उनके पास आकर बोले, 'महाराज, धीरे चलें, ताकि हम आपको यथासंभव लंबे समय तक

देख सकें!' तब राजा ने सारथी से कहा, 'रथ को धीरे चलाओ ताकि मैं इन ब्राह्मणों और गृहस्थों को यथासंभव लंबे समय तक देख सकूँ।' इस प्रकार राजा महासुदस्सन इन चारों गुणों से संपन्न थे।

तब राजा महासुदस्सन ने सोचा, "मान लो मैं ताड़ के पेड़ों के बीच सौ धनुष की दूरी पर कमल के तालाब बनवाऊँ।" और उन्होंने ऐसा ही किया। कमल के तालाबों की दीवारें चार रंगों की टाइलों से बनी थीं: सोना, चाँदी, बेरिल और क्रिस्टल। प्रत्येक तालाब तक पहुँचने के लिए चार सीढ़ियाँ थीं: एक सोने की, एक चाँदी की, एक बेरिल की और एक क्रिस्टल की। सोने की सीढ़ी में सोने के खंभे और चाँदी की रेलिंग व रेलिंग थीं, और इसी प्रकार आगे भी। कमल के तालाबों में दो प्रकार की चौखटें थीं: सोने की और चाँदी की। सोने की चौखटों में सोने के खंभे और चाँदी की रेलिंग व रेलिंग थीं, और चाँदी की चौखटों में चाँदी के खंभे और सोने की रेलिंग व रेलिंग थीं।

तब राजा ने सोचा, "मान लीजिए कि मैं प्रत्येक तालाब के लिए उपयुक्त फूल उपलब्ध कराऊँ, जिनसे मालाएँ बनाई जा सकें—नीले, पीले, लाल और सफेद कमल, जो बिना मुरझाए सभी ऋतुओं तक टिके रहें?" और उसने ऐसा ही किया। फिर उसने सोचा, "मान लीजिए कि मैं इन तालाबों के किनारों पर स्नान कराने वालों को नियुक्त कर दूँ, ताकि वे वहाँ आने वालों को स्नान करा सकें?" और उसने ऐसा ही किया। फिर उसने सोचा, "मान लीजिए कि मैं इन तालाबों के किनारों पर दान-पुण्य के केंद्र स्थापित कर दूँ, ताकि जिन्हें भोजन की आवश्यकता हो, उन्हें भोजन मिल सके, जिन्हें पानी की आवश्यकता हो, उन्हें वस्त्र मिल सकें, जिन्हें परिवहन की आवश्यकता हो, उन्हें सोने की जगह मिल सके, जिन्हें पत्नी की आवश्यकता हो, उन्हें पत्नी मिल सके और जिन्हें सोने के सिक्के की आवश्यकता हो, उन्हें वह मिल सके?" और उसने ऐसा ही किया।

तब ब्राह्मणों और गृहस्थों ने बहुत धन लेकर राजा के पास जाकर कहा, "महाराज, यह धन हमने विशेष रूप से आपके लिए एकत्रित किया है, कृपया इसे स्वीकार करें।" राजा ने कहा, "धन्यवाद मित्रों, लेकिन मेरे पास वैध आय से पर्याप्त धन है। यह आपका है, और आप इसके अलावा और भी ले जा सकते हैं!" राजा द्वारा इस प्रकार मना किए जाने पर वे एक तरफ हट गए और सोचने लगे, "हमारे लिए इस धन को वापस घर ले जाना उचित नहीं होगा। मान लीजिए कि हम राजा महासुदासन के लिए एक निवास स्थान बनवाते हैं।" अतः वे राजा के पास गए और कहा, "महाराज, हम आपके लिए एक निवास स्थान बनवाएंगे," और राजा ने मौन रहकर इसे स्वीकार कर लिया।

तब देवताओं के स्वामी सक्का ने राजा महासुदस्सन के मन में विचार जान लिया और अपने सेवक देव विस्सकम्मा से कहा, "हे मित्र विस्सकम्मा, आओ और राजा महासुदस्सन के लिए एक निवास स्थान, धम्म नामक महल का निर्माण करो।" विस्सकम्मा ने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा, भगवान," और जैसे कोई बलवान पुरुष अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता या फिर से मोड़ता है, वैसे ही वह तैंतीस देवताओं के स्वर्ग से विलीन हो गया और राजा महासुदस्सन के सामने प्रकट होकर उनसे कहा, "महाराज, मैं आपके लिए एक निवास स्थान, धम्म नामक महल का निर्माण करूँगा।" राजा ने मौन रहकर सहमति दे दी और विस्सकम्मा ने उनके लिए धम्म महल का निर्माण किया।

"आनंद, धम्म का महल, पूर्व से पश्चिम तक एक योजन लंबा और उत्तर से दक्षिण तक आधा योजन चौड़ा था। पूरा महल मनुष्य की ऊंचाई से तीन गुना ऊँचाई तक चार रंगों - सोना, चांदी, बेरिल और क्रिस्टल - की टाइलों से बना था, और इसमें इन्हीं चार रंगों के चौरासी हजार स्तंभ थे। इसमें इन्हीं चार रंगों की चौबीस सीढ़ियाँ थीं, और सोने की सीढ़ियों में सोने के खंभे और चांदी की रेलिंग व बैंस्टर थे... इसमें इन्हीं रंगों के चौरासी हजार कक्ष भी थे। सोने के कक्ष में चांदी का पलंग था, चांदी के कक्ष में सोने का पलंग, बेरिल कक्ष में हाथीदांत का पलंग और क्रिस्टल कक्ष में चंदन का पलंग था। सोने के कक्ष के द्वार पर चांदी के तने, सोने के पत्तों और फलों वाला चांदी का ताड़ का पेड़ बना था... चांदी के कक्ष के द्वार पर सोने के तने, पत्तों और फलों वाला सोने का ताड़ का पेड़ बना था, बेरिल कक्ष के द्वार पर क्रिस्टल के तने और बेरिल के पत्तों और फलों वाला क्रिस्टल का ताड़ का पेड़ बना था... क्रिस्टल कक्ष के द्वार पर क्रिस्टल से बने पत्तों और फलों के साथ एक बेरिल ताड़ के पेड़ की आकृति बनी हुई थी।

तब राजा ने सोचा: 'मान लीजिए कि मैं उस विशाल गुंबददार कक्ष के द्वार के पास, जहाँ मैं दिन के समय बैठता हूँ, सोने के खजूर के पेड़ों का एक छोटा सा बाग बनवा दूँ?' और उसने ऐसा ही किया।

धम्म महल के चारों ओर दो प्राचीरें थीं, एक सोने की और एक चांदी की। सोने वाली प्राचीर में सोने के खंभे, चांदी की रेलिंग और रेलिंग थीं, और चांदी वाली प्राचीर में चांदी के खंभे, सोने की रेलिंग और रेलिंग थीं।

धम्म महल दो झंकारदार घंटियों के जालों से घिरा हुआ था। एक जाल सोने का था जिसमें चांदी की घंटियाँ लगी थीं, दूसरा चांदी का था जिसमें सोने की घंटियाँ लगी थीं। जब हवा से ये घंटियों के जाल हिलते थे, तो इनकी ध्वनि सुरीली, मनमोहक, मीठी और मदहोश कर देने

वाली होती थी, ठीक वैसे ही जैसे पाँचों प्रकार के वाद्ययंत्रों को कुशल और प्रशिक्षित वादक एक साथ बजाते हैं। कुसावती में जो व्यभिचारी और शराबी थे, उनकी इच्छाएँ भी इन घंटियों के जालों की ध्वनि से शांत हो जाती थीं।

"और जब धम्म महल बनकर तैयार हुआ, तो उसे देखना मुश्किल था, वह आँखों को चकाचौंध कर देता था, ठीक वैसे ही जैसे शरद ऋतु में वर्षा ऋतु के अंतिम महीने में, जब आसमान साफ और बादलों से रहित होता है, तो कोहरे को चीरते हुए सूरज को देखना मुश्किल होता है, धम्म महल भी जब बनकर तैयार हुआ तो ऐसा ही था।"

तब राजा ने सोचा, 'क्या मैं धम्म महल के सामने धम्म नाम का एक कमल-झील बनवाऊँ?' और उसने ऐसा ही किया। यह झील पूर्व से पश्चिम तक एक योजन लंबी और उत्तर से दक्षिण तक आधी योजन चौड़ी थी, और सोने, चांदी, बेरिल और क्रिस्टल की चार श्रेणियों की टाइलों से बनी थी। इस तक जाने के लिए चार अलग-अलग प्रकार की चौबीस सीढ़ियाँ थीं: सोने, चांदी, बेरिल और क्रिस्टल की। सोने की सीढ़ियों में सोने के खंभे और चांदी की रेलिंग और डंडे थे, चांदी की सीढ़ियों में सोने की रेलिंग और डंडे थे...

"तब धम्म झील सात प्रकार के ताड़ के पेड़ों से घिरी हुई थी। हवा से हिलते पत्तों की ध्वनि सुरीली, मनमोहक, मधुर और मदहोश कर देने वाली थी, ठीक वैसे ही जैसे प्रशिक्षित और कुशल वादकों द्वारा एक साथ बजाए जाने वाले पाँच प्रकार के वाद्ययंत्रों की ध्वनि होती है। और, आनंद, कुसावती में जो लोग स्वच्छंद और शराबी थे, उनकी इच्छाएँ भी हवा में लहराते पत्तों की ध्वनि से शांत हो जाती थीं।"

"जब धम्म महल और धम्म झील का निर्माण पूरा हो गया, तो राजा महासुदस्सना ने उस समय के तपस्वियों या ब्राह्मणों, या ऐसे पूजनीय लोगों की सभी इच्छाओं को पूरा करने के बाद, धम्म महल में प्रवेश किया।"

तब राजा महासुदस्सन ने सोचा, 'यह किस कर्म का फल है, किस कर्म का परिणाम है कि मैं अब इतना शक्तिशाली और बलवान हूँ?' फिर उन्होंने सोचा: 'यह तीन प्रकार के कर्मों का फल है, परिणाम है: दान, संयम और परहेज।'

तब राजा विशाल गुंबददार कक्ष में गया और द्वार पर खड़े होकर बोला: 'कामवासना का विचार समाप्त हो जाए! द्वेष का विचार समाप्त हो जाए! क्रूरता का विचार समाप्त हो जाए! बस यहीं तक, इससे आगे नहीं, कामवासना, द्वेष और क्रूरता का विचार!'

फिर राजा विशाल गुंबददार कक्ष में गए, सोने के पलंग पर पालथी मारकर बैठ गए और सभी इंद्रिय-इच्छाओं से विरक्त होकर, अस्वस्थ मानसिक अवस्थाओं से मुक्त होकर, प्रथम ध्यान में प्रवेश कर गए और उसमें स्थिर रहे, जो चिंतन और मनन से युक्त, वैराग्य से उत्पन्न, आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण होता है। मन के शांत और एकाग्र होने पर, वे द्वितीय ध्यान में प्रवेश कर गए और उसमें स्थिर रहे, जो चिंतन और मनन रहित, एकाग्रता से उत्पन्न, आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण होता है। आनंद के लुप्त होने पर, अविचलित, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहते हुए, उन्होंने स्वयं में उस आनंद का अनुभव किया जिसके बारे में श्रेष्ठजन कहते हैं: 'धन्य है वह जो समभाव और सजगता में रहता है', वे तृतीय ध्यान में प्रवेश कर गए और उसमें स्थिर रहे। और सुख-दुख का त्याग करके, और पूर्व के सुख-दुख के लुप्त होने पर, वे चतुर्थ ध्यान में प्रवेश कर गए और उसमें स्थिर रहे, जो सुख-दुख से परे, समभाव और सजगता से शुद्ध होता है।

फिर राजा विशाल गुंबददार कक्ष से निकलकर स्वर्ण गुंबददार कक्ष में गए और चांदी के पलंग पर पालथी मारकर बैठ गए। वे पहले एक चौथाई, फिर दूसरे, तीसरे और चौथे चौथाई भाग में प्रेममयी भाव से परिपूर्ण होकर विचरण करते रहे। इस प्रकार वे प्रेममयी भाव को ऊपर, नीचे और चारों ओर, हर जगह फैलाते रहे, सदा प्रेममयी भाव से परिपूर्ण, असीम, और घृणा या द्वेष से रहित होकर। उन्होंने करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव से भी ऐसा ही किया।

राजा महासुदस्सन के चौरासी हजार नगरों में उनकी राजधानी कुसावती प्रमुख थी; उनके चौरासी हजार महलों में धम्म प्रमुख था; उनके चौरासी हजार गुंबददार महलों में विशाल गुंबददार कक्ष प्रमुख था; उनके चौरासी हजार पलंग सोने, चांदी, हाथी दांत, चंदन के बने थे, ऊन से ढके थे, कदली हिरण की खाल से सजे थे, सिर ढकने के लिए आवरण थे और दोनों सिरों पर लाल तकिए थे; उनके चौरासी हजार हाथी सोने के आभूषणों, सोने के झंडों और सोने के जालों से सजे थे, उनमें शाही हाथी उपोसथ प्रमुख था; उनके चौरासी हजार रथ शेर की खाल, बाघ की खाल, तेंदुए की खाल या नारंगी रंग के कपड़े से ढके थे, सोने के आभूषणों, सोने के झंडों और सोने के जालों से सजे थे, उनमें रथ वेजयंत प्रमुख था; उनकी चौरासी हजार पत्नियों में रानी सुभद्दा प्रमुख थीं; उनके चौरासी हजार गृहस्थों में... गृहस्थ-खजाने का प्रमुख अधिकारी था; उसके चौरासी हजार खत्तिया सेवकों में सलाहकार-खजाने का प्रमुख अधिकारी था; उसकी चौरासी हजार गायों के लिए उत्तम जूट की रस्सियाँ और चांदी के दूध के बर्तन थे; उसके चौरासी हजार वस्त्रों के गट्ठे उत्तम लिनन, कपास, रेशम और ऊन के थे; उसके चौरासी हजार चावल के प्रसाद जरूरतमंदों के लिए शाम और सुबह उपलब्ध थे।

उस समय, राजा महासुदस्सन के चौरासी हजार हाथी सुबह-शाम उनकी सेवा में तत्पर रहते थे। उन्होंने सोचा, 'ये चौरासी हजार हाथी सुबह-शाम मेरी सेवा में तत्पर रहते हैं। अगर प्रत्येक शताब्दी के अंत में बयालीस हजार हाथी बारी-बारी से मेरी सेवा में तत्पर रहें तो कैसा रहेगा?' उन्होंने अपने राजकोष के सलाहकार को इसी प्रकार निर्देश दिए, और ऐसा ही किया गया।

और, आनंद, कई सौ-लाखों वर्षों के बाद, रानी सुभद्दा ने सोचा: 'महासुदस्सन को देखे हुए बहुत समय हो गया है। मान लो, मैं उनसे मिलने जाऊं?' इसलिए उन्होंने अपनी दासियों से कहा: 'चलो, अपने सिर धो लो और साफ कपड़े पहन लो। महासुदस्सन को देखे हुए बहुत समय हो गया है। हम उनसे मिलने चलते हैं।' 'जी महाराज', उन्होंने कहा और आदेशानुसार तैयार होकर रानी के पास लौट आईं। रानी सुभद्दा ने सलाहकार-कोषाध्यक्ष से कहा: 'मित्र सलाहकार, चार गुना सेना तैयार कर लो। महासुदस्सन को देखे हुए बहुत समय हो गया है। हम उनसे मिलने चलते हैं।' 'बहुत अच्छा, महाराज', सलाहकार-कोषाध्यक्ष ने कहा और चार गुना सेना तैयार करके रानी को सूचना दी: 'अब समय आ गया है कि आप अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करें।'

तब रानी सुभद्दा अपनी चार गुना सेना और स्त्रियों के साथ धम्म महल गईं और अंदर जाकर विशाल गुंबददार कक्ष में जाकर द्वार के चौखट से टेक लगाकर खड़ी हो गईं। राजा महासुदस्सन ने सोचा, 'यह लोगों की भीड़ जैसा शोर कैसा है?' और द्वार से बाहर आकर उन्होंने रानी सुभद्दा को द्वार के चौखट से टेक लगाकर खड़ा देखा। उन्होंने कहा, 'वहीं ठहरो, रानी! अंदर मत आओ!'

तब राजा महासुदस्सना ने एक व्यक्ति से कहा: 'हे महोदय, उस विशाल गुंबददार कक्ष में जाइए, सोने का पलंग बाहर लाइए और उसे सोने के ताड़ के पेड़ों के बीच रख दीजिए।' 'अच्छी बात है महाराज,' उस व्यक्ति ने कहा और वैसा ही किया। तब राजा महासुदस्सना ने एक पैर दूसरे पर रखकर दाहिनी ओर सिंह मुद्रा धारण की, वे सचेत और पूरी तरह जागरूक थे।

तब रानी सुभद्दा ने सोचा, 'राजा महासुदस्सन की इंद्रियां शुद्ध हो गई हैं, उनका रंग निर्मल और तेजस्वी है, ओह--मुझे उम्मीद है कि वे मरे नहीं हैं!' इसलिए उन्होंने उनसे कहा, 'महाराज, आपके चौरासी हजार नगरों में कुसावती प्रमुख है। एक कामना कीजिए, वहां रहने की इच्छा जगाइए!' इस प्रकार, उन्हें उनकी सभी राजसी संपत्तियों की याद दिलाते हुए उन्होंने उन्हें जीवित रहने की कामना करने के लिए प्रेरित किया।

इस पर राजा महासुदस्सन ने रानी से कहा, "महारानी, आपने लंबे समय तक मुझसे मधुर, मनभावन और आकर्षक बातें कीं, लेकिन अब इस आखिरी समय में आपकी बातें मुझे अप्रिय, अरुचिकर और अनाकर्षक लग रही हैं।" "महाराज, फिर मैं आपसे कैसे बात करूँ?"

"आपको इस प्रकार बोलना चाहिए: 'सभी मनभावन और आकर्षक वस्तुएँ परिवर्तन के अधीन हैं, लुप्त हो सकती हैं, रूप बदल सकती हैं। हे भगवान, लालसा से ग्रस्त होकर मत मरो। लालसा से ग्रस्त होकर मरना कष्टदायी और निंदनीय है। आपके चौरासी हजार नगरों में कुसावती प्रमुख है: इच्छा का त्याग करो, उनमें रहने की लालसा का त्याग करो... आपके चौरासी हजार महलों में धम्म प्रमुख है: इच्छा का त्याग करो, वहाँ रहने की लालसा का त्याग करो...'"

यह सुनकर रानी सुभद्दा फूट-फूटकर रोने लगीं। फिर अपने आँसू पोंछते हुए उन्होंने कहा, 'हे महाराज, जो भी चीज़ें मनभावन और आकर्षक होती हैं, वे क्षणिक होती हैं...हे महाराज, लालसा से ग्रस्त होकर मत मरिए...'

इसके कुछ ही समय बाद राजा महासुदस्सन का निधन हो गया; और जिस प्रकार एक गृहस्थ या उसका पुत्र अच्छे भोजन के बाद उनींदापन महसूस करता है, उसी प्रकार उन्हें भी मृत्यु का अहसास हुआ और उन्हें ब्रह्मलोक में अनुकूल पुनर्जन्म प्राप्त हुआ।

राजा महासुदस्सना चौरासी हजार वर्षों तक बालकों के क्रीड़ाओं में लिप्त रहे, चौरासी हजार वर्षों तक उन्होंने उपसदन का कार्य किया, चौरासी हजार वर्षों तक उन्होंने राजा के रूप में शासन किया और चौरासी हजार वर्षों तक गृहस्थ के रूप में उन्होंने धम्म लोक में पवित्र जीवन व्यतीत किया। और, चार दिव्य निवासों का अभ्यास करने के बाद, शरीर के नष्ट होने पर उनका ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म हुआ।

"आनंद, तुम शायद सोचते होगे कि उस समय राजा महासुदस्सन कोई और था। लेकिन ऐसा मत सोचो, क्योंकि उस समय मैं ही राजा महासुदस्सन था। वे चौरासी हजार नगर, जिनमें कुसावती प्रमुख था, मेरे थे,...वे चौरासी हजार चावल की भेंटें...मेरी थीं।"

"और उन चौरासी हजार शहरों में से मैं केवल एक में रहा, कुसावती,... मेरी चौरासी हजार पत्नियों में से केवल एक ने मेरी देखभाल की, और उसका नाम खत्तियानी या वेलामिकानी था; मेरे पास कपड़े के चौरासी हजार गट्ठों में से केवल एक ही था...; चौरासी हजार चावल के प्रसाद में से केवल एक ही उत्तम करी थी जिसे मैंने खाया।"

"देखो, आनंद, अतीत की वे सभी सशर्त अवस्थाएँ कैसे लुप्त हो गईं और बदल गईं! अतः, आनंद, सशर्त अवस्थाएँ क्षणभंगुर हैं, वे अस्थिर हैं, वे हमें कोई सुख नहीं दे सकतीं, और ऐसी स्थिति में, आनंद, हमें सशर्त अवस्थाओं में प्रसन्न नहीं होना चाहिए, हमें उनमें रुचि लेना छोड़ देना चाहिए और उनसे मुक्त हो जाना चाहिए।"

"आनंद, मुझे याद है कि मैंने छह बार इसी स्थान पर शरीर त्यागा था, और सातवीं बार मैंने एक चक्र चलाने वाले सम्राट के रूप में, एक धर्मात्मा राजा के रूप में, जिसने चारों दिशाओं पर विजय प्राप्त की थी और एक मजबूत शासन स्थापित किया था, और जो सात रत्नों का स्वामी था, शरीर त्यागा था। लेकिन, आनंद, मुझे इस संसार में, चाहे इसमें देव, मार और ब्रह्मा हों, या इस पीढ़ी में, चाहे इसमें तपस्वी और ब्राह्मण हों, राजकुमार और आम लोग हों, कोई ऐसा स्थान नहीं दिखता जहाँ तथागत आठवीं बार शरीर त्यागेंगे।"

तब भगवान ने कहा। जब शुभचिंतक ने यह कहा, तो शिक्षक ने कहा:

"अस्थायी वस्तुएँ क्षणभंगुर होती हैं, उनका उत्थान और पतन होता रहता है; उत्थान के बाद वे नष्ट हो जाती हैं, उनका क्षणभंगुर होना ही सच्चा आनंद है।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.5जनवासभा सुत्त(डीएन18)

मैंने ऐसा सुना है:

1. एक समय भगवान नादिका में ईंट के घर में ठहरे हुए थे। उस समय भगवान अपने अनुयायियों के पुनर्जन्म के बारे में घोषणाएँ करते थे, जो चारों ओर की जनजातियों में, काशी, कोसल, वज्जी, मल्ल, चेती, वामसा, कुरु, पंचाल, मच्छ और सूरसेन में, मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। वे कहते थे: 'अमुक व्यक्ति का वहाँ पुनर्जन्म हुआ है, और अमुक व्यक्ति का वहाँ।' 2. नादिका से पचास से अधिक अनुयायी, जिन्होंने इस संसार से बंधे पाँच बंधनों को पूर्णतः नष्ट करके मृत्यु को प्राप्त किया, 3 सर्वोच्च स्वर्ग के उत्तराधिकारी बन गए हैं, जहाँ वे पूर्णतः विलीन हो जाते हैं, और फिर कभी वापस नहीं लौटते। नादिका के नब्बे अनुयायी, जिन्होंने तीनों बंधनों को पूर्णतः नष्ट कर दिया है और कामवासना, द्वेष और मोह को न्यूनतम स्तर तक कम कर दिया है, एक बार जन्म लेने वाले बन गए हैं और इस संसार में अपने पहले जन्म पर दुखों का अंत करेंगे। नादिका के पाँच सौ से अधिक अनुयायी, जिन्होंने तीनों बंधनों को पूर्णतः नष्ट कर दिया है और परिवर्तित हो गए हैं, किसी भी दुःखपूर्ण अवस्था में पुनर्जन्म नहीं ले सकते, बल्कि उन्हें (मार्ग के उच्चतर चरणों की) अंतर्दृष्टि प्राप्त होने का आश्वासन दिया जाता है।

2. नादिका में रहने वाले अनुयायियों ने जब ये रहस्योद्घाटन सुने, तो वे परम पूज्य और प्रसन्न हुए और आनंद से भर उठे क्योंकि परमेश्वर ने उनके सामने रखी गई समस्याओं का समाधान कर दिया था।

3. अब पूज्य आनंद ने [भगवान द्वारा की गई इन घोषणाओं और नादिका में अनुयायियों द्वारा महसूस की गई संतुष्टि के बारे में] सुना।

4. और उनके मन में यह विचार आया: — 'परन्तु वहाँ [202] अनुयायी भी थे, जिनमें से अनेक, और दीर्घ धार्मिक अनुभव वाले थे, जो देहांत में चले गए। कोई सोच सकता है कि अंग और में कोई देहांत में चले गए अनुयायी नहीं थे। क्योंकि वे भी बुद्ध, धर्म और व्यवस्था में पूर्ण विश्वास रखते थे, उन्होंने नैतिक उपदेशों का पालन किया था। फिर भी, उनके विषय में, क्योंकि वे देहांत में चले गए, भगवान ने कुछ भी घोषित नहीं किया है। उनके विषय में प्रतिक्रिया उत्पन्न करना निश्चय ही उचित होगा; क्योंकि बहुत से लोग विश्वास करेंगे और परलोक में आनंदित होंगे। फिर वहाँ सेनिया बिम्बिसार भी थे, जो के राजा थे, धर्मात्मा और धर्मपरायण शासक, पुरोहितों और गृहस्थों, नगरवासियों और गाँववासियों के प्रति दयालु थे। उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल रही है, लोग कह रहे हैं: "हमारे धर्मात्मा राजा, जिन्होंने हमें इतना सुख दिया, का निधन हो गया! हमने उस धर्मात्मा राजा के राज्य में कितना सुख भोगा!" अब उनका भी बुद्ध, धर्म और व्यवस्था में पूर्ण विश्वास था, और उन्होंने नैतिक उपदेशों का पालन किया। और लोगों ने यह भी कहा है, "सेनिया बिम्बिसार, के राजा, जो अपनी मृत्यु तक भगवान की स्तुति करते रहे, का निधन हो गया है।" जो मर गए हैं, उनके विषय में भगवान ने कुछ भी घोषित नहीं किया है। उनके बारे में प्रतिक्रिया उत्पन्न करना निश्चित रूप से अच्छा होगा; क्योंकि बहुत से लोग विश्वास करेंगे, और आगे चलकर आनंद में प्रवेश करेंगे। इसके अलावा, भगवान ने में सर्वोच्च अंतर्दृष्टि प्राप्त की। अब जहाँ यह हुआ, वहाँ में के उन अनुयायियों के विषय में भगवान की ओर से कोई घोषणा क्यों नहीं है जो मर गए हैं? [203] यदि भगवान उनके विषय में कुछ भी घोषित नहीं करते हैं, तो उन्हें दुख होगा। और चूंकि उन्हें दुख होगा, तो भगवान चुप कैसे रह सकते हैं? '

5, 6. इस प्रकार मगधियों के अनुयायियों के विषय में एकांत में चिंतन करने के बाद, पूज्य आनंद अगले दिन सुबह उठे और भगवान बुद्ध के समक्ष आए, और वहाँ पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। इस प्रकार बैठे-बैठे उन्होंने भगवान बुद्ध को वह सब कुछ बताया जो उन्होंने सुना और सोचा था। [204] और भगवान बुद्ध के समक्ष अपने विचार समाप्त करने के बाद, वे अपनी सीट से उठे, भगवान बुद्ध को सही ढंग से प्रणाम किया और चले गए।

7. फिर पूज्य आनंद के चले जाने के कुछ ही समय बाद, भगवान ने सुबह वस्त्र धारण किए और एक कटोरा और लबादा लेकर नादिका में भिक्षा मांगने के लिए निकल पड़े। नादिका में भिक्षा मांगने के बाद, भोजन करने पर, जब वे भिक्षा मांगने के बाद वापस लौटे और अपने पैर धोए, तो वे ईंट के घर में प्रवेश कर गए और एक तैयार आसन पर बैठ गए, मगधियों के अनुयायियों के बारे में सोचते हुए, मनन करते हुए और अपना पूरा ध्यान उन पर केंद्रित करते हुए, मन ही मन कहने लगे: 'मैं उनका भविष्य, इस जीवन के बाद उनका भाग्य, ये भले लोग कहाँ जा रहे हैं, उनका क्या नसीब है, यह सब जानूंगा।' और भगवान ने मगधियों के अनुयायियों को देखा, वे कहाँ जा रहे थे, [205] और उनका क्या नसीब था। फिर संध्या के समय, भगवान ध्यान से उठकर ईंट के घर से बाहर निकले और आवास के पीछे छाया में बिछी चटाई पर बैठ गए।

8. तब पूज्य आनंद भगवान के समक्ष आए, उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। इस प्रकार बैठे हुए उन्होंने भगवान से कहा: "हे भगवान, आप अत्यंत शांत प्रतीत होते हैं, मानो आपकी इंद्रियों की शांति के कारण आपका चेहरा दमक रहा हो। क्या भगवान ने आज सुखद दिन बिताया है?"

9. जब तुमने मुझे, आनंद, मगधियों के अनुयायियों के विषय में वह भाषण दिया और चले गए, तब मैं नादिका में भिक्षा मांगने गया, भोजन किया, लौटा, पैर धोए और ईंट के घर में प्रवेश किया, वहाँ बिछी चटाई पर बैठ गया और उन मगधियों के बारे में सोचने लगा, मनन करने लगा और अपना सारा ध्यान उन मगधियों के भविष्य, इस जीवन के बाद उनके भाग्य, इन भले लोगों के गंतव्य, उनके भाग्य के बारे में जानने का संकल्प लिया। और मैंने, आनंद, उन मगधियों के अनुयायियों को देखा, उन भले लोगों के गंतव्य, उनके भाग्य के बारे में। तब एक अदृश्य आत्मा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए कहा: — "मैं जन-वसभा हूँ, हे परम पूज्य; मैं जन-वसभा हूँ, हे स्वागत करने योग्य!" अब, हे आनंद, क्या आप यह स्वीकार करते हैं कि आपने कभी जन-वसभा नाम वाले किसी व्यक्ति के बारे में सुना है? 'मैं स्वीकार करता हूँ, भगवान, कि मैंने कभी जन-वसभा नाम वाले किसी व्यक्ति के बारे में नहीं सुना है। इसके अलावा, भगवान, जन-वसभा जैसा नाम सुनकर मैं रोमांचित हो गया हूँ और मुझे लगता है कि जन-वसभा नाम वाला कोई साधारण आत्मा नहीं हो सकता।'

10. उन शब्दों के बोले जाने के बाद, स्वयं आनंद, एक तेजस्वी स्वरूप में मेरे सामने प्रकट हुए। और उन्होंने दूसरा उच्चारण किया: — "हे परम पूज्य, मैं बिम्बिसार हूँ! हे स्वागतयोग्य, मैं बिम्बिसार हूँ! हे भगवान, यह सातवीं बार है कि मैं महान राजा वेसवना के साथ पुनर्जन्म ले रहा हूँ। मानव राजा के रूप में मृत्यु को प्राप्त करने के बाद, मैं स्वर्ग में अमानव राजा बन गया हूँ।"

अतः सात, फिर सात, कुल मिलाकर चौदह पुनर्जन्म—इतना तो मैं अपने बीते हुए जन्मों के बारे में जानता हूँ। हे भगवान, मैं, जिसे दुःखपूर्ण अवस्थाओं में पुनर्जन्म न लेने का भाग्य प्राप्त है, अपने इस भाग्य के प्रति लंबे समय से सचेत हूँ, और अब मेरे भीतर एक पुनर्जन्म लेने की इच्छा है।

'यह कितना अद्भुत है, कितना चमत्कारी है कि आप, आदरणीय जन-वासभा, मुझसे कहते हैं: — "मैं, जिसका जन्म दुःख के राज्यों में नहीं होना तय है, अपने इस भाग्य के प्रति सजग हूँ;" और फिर कहते हैं: — "अब मेरे मन में एक बार जन्म लेने की इच्छा है।" आदरणीय जन-वासभा को इतनी उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त होने का ज्ञान कैसे हुआ?'

11. हे परम पूज्य, तेरे वचन के सिवा कोई नहीं, हे धन्य! तेरे वचन के सिवा कोई नहीं! जिस क्षण से मैं पूर्ण और संपूर्ण विश्वास के साथ परम पूज्य के पास गया, उसी क्षण से, हे भगवान, [207] मैं, जिसका जन्म दुःख की अवस्थाओं में नहीं होना तय है, उस नियति के प्रति सचेत हो गया; और अब मैं एक बार जन्म लेने वाला बनना चाहता हूँ। हे भगवान, मुझे राजा वेसवज़ा द्वारा राजा वीरहुका के पास किसी कार्य के संबंध में संदेश लेकर भेजा गया है; और रास्ते में मैंने परम पूज्य को ईंट के घर में प्रवेश करते और बैठकर विचार करते, मनन करते, अपना पूरा ध्यान मृत मगधियों के अनुयायियों पर केंद्रित करते देखा, ताकि उनके भविष्य, इस जीवन के बाद उनके भाग्य का पता चल सके; कि वे भले लोग कहाँ जा रहे हैं, उनका भाग्य क्या है। हे भगवान, अभी कुछ क्षण पहले ही मैंने राजा वेसवज़ा से आमने-सामने सुना था और उनके मुख से ही समझा था कि उन्होंने क्या कहा था... मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वे भले लोग कहाँ जा रहे थे और उनका क्या भाग्य था, इसलिए मैंने परमेश्वर से मिलने और उन्हें यह बताने का निर्णय लिया। हे भगवान, ये दो कारण हैं जिनके कारण मैं परमेश्वर से मिलने आया हूँ।

12. हे भगवान, बहुत समय पहले, ऐसा हुआ कि जिस महीने में साधना शुरू करने का समय था, उस महीने की पूर्णिमा की पंद्रहवीं तिथि के पर्व की रात, आषाढ़ महीने में, तैंतीस देवताओं का समूह, जो उनके साथ था, शुभ सभा के कक्ष में एकत्रित हुआ। उनके चारों ओर विशाल दिव्य समूह विराजमान था; और आकाश के चारों दिशाओं में चार महान राजा विराजमान थे। पूर्व के राजा धतरत्थ पश्चिम की

ओर मुख करके अपनी सेना के प्रमुख थे; दक्षिण के राजा वीरहक उत्तर की ओर मुख करके अपनी सेना के प्रमुख थे; पश्चिम के राजा विरुपाक्ख पूर्व की ओर मुख करके अपनी सेना के प्रमुख थे; और उत्तर के राजा वेसवम दक्षिण की ओर मुख करके अपनी सेना के प्रमुख थे। [208] हे भगवान, जब भी तैंतीस देवताओं का समूह अपने सुविचार सभा कक्ष में एकत्रित होकर बैठता है, और उनके चारों ओर दिव्य देवमंडल विराजमान होता है, तथा आकाश के चारों दिशाओं में चार महान राजा विराजमान होते हैं, तो चारों के बैठने का क्रम इस प्रकार होता है। इसके बाद हमारे बैठने का क्रम आता है। और हे भगवान, वे देवता जो हाल ही में तैंतीस देवताओं के समूह में पुनर्जन्म लेकर आए थे क्योंकि उन्होंने परम पूज्य के अधीन उच्चतर जीवन व्यतीत किया था, वे रूप और महिमा में अन्य देवताओं से कहीं अधिक तेजस्वी थे। और इस पर, हे भगवान, तैंतीस देवता प्रसन्न और प्रसन्न हुए, आनंद और प्रसन्नता से भर गए, और कहने लगे: — "सचमुच, हे सज्जनों, दिव्य देवमंडल बढ़ रहा है, और विशाल देवमंडल घट रहा है।"

13. हे देवताओं के स्वामी, सक्का ने जब तैंतीस शिष्यों के दल की संतुष्टि देखी, तो उन्होंने इन छंदों में अपनी स्वीकृति व्यक्त की:

तैंतीस, निश्चय ही, देवता और भगवान दोनों आनंदित होते हैं, तथागत का आदर करते हैं और परम दिव्य ब्रह्मांडीय नियम का सम्मान करते हैं, क्योंकि वे नए सिरे से पुनर्जीवित, सुंदर और प्रकाशमान देवताओं को देखते हैं, जिन्होंने पहले पवित्र जीवन व्यतीत किया था, सुखी ऋषि के अधीन, पराक्रमी ऋषि के श्रोता, जिन्होंने उच्च सत्यों को प्राप्त किया था।

इधर आओ; और महिमा में अन्य सभी देवता भी फीके पड़ जाएंगे।

वे इसे बड़ी खुशी से देखते हैं, स्वामी और तैंतीस दोनों।

वे तथागत का आदर करते हैं और ब्रह्मांडीय नियम को श्रेष्ठ मानते हैं।

हे भगवान, यहाँ [209] तैंतीस देवता और भी अधिक प्रसन्न और प्रसन्न हुए तथा आनंद और प्रसन्नता से भर गए, और कहने लगे: — "निश्चित रूप से स्वर्गीय सेनाएँ बढ़ रही हैं, विशाल सेनाएँ घट रही हैं!"

14. फिर, हे भगवान, जिस उद्देश्य से तैंतीस देवता शुभ परामर्श कक्ष में अपने-अपने स्थानों पर एकत्रित हुए थे, उस विषय में उन्होंने परामर्श किया और विचार-विमर्श किया; और उस विषय के विषय में चारों महान राजाओं को संबोधित किया गया, और उस विषय के विषय में चारों महान राजाओं को उनके स्थानों पर खड़े होकर चेतावनी दी गई: —

कहे गए शब्द को राजाओं ने स्वीकार कर लिया, वे मन से शांत और स्थिर होकर अपने-अपने स्थान पर खड़े रहे।

15. तब, हे भगवान, उत्तर दिशा से एक तेजस्वी प्रकाश निकला, और देवताओं की दिव्य महिमा से भी बढ़कर एक तेज चारों ओर फैल गया। तब, हे भगवान, देवताओं के राजा सक्का ने तैंतीस देवताओं के अनुयायियों से कहा: — "हे मित्रों, अब जो संकेत दिखाई दे रहे हैं, — जो प्रकाश उदय हो रहा है, जो तेज प्रकट हो रहा है — उनके अनुसार ब्रह्मा प्रकट होंगे। क्योंकि ब्रह्मा के प्रकट होने का यही संकेत है, अर्थात् जब प्रकाश उदय होता है और महिमा चमकती है।"

अब शगुन दिखाई देने लगे हैं, इसलिए ब्रह्मा निकट आ रहे हैं, क्योंकि यही ब्रह्मा का संकेत है, यही विशाल वैभव और महिमा है।

16. तब, हे भगवान, तैंतीस देवताओं ने अपने-अपने स्थानों पर बैठकर कहा: — "हम इस प्रकाश के परिणाम का पता लगाएंगे; जब हमें इसका ज्ञान हो जाएगा, तब हम उससे मिलने जाएंगे।" चारों महान राजा भी अपने-अपने स्थानों पर बैठकर यही बात कहने लगे। [210] और जब उन्होंने यह सुना, तो तैंतीस देवताओं ने एकमत होकर कहा: — "हम इस प्रकाश के परिणाम का पता लगाएंगे; जब हमें इसका ज्ञान हो जाएगा, तब हम उससे मिलने जाएंगे।"

17. हे भगवान, जब ब्रह्मा सनकुमार तैंतीस देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं, तो वे एक (अपेक्षाकृत) स्थूल व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होते हैं, जिसे उन्होंने विशेष रूप से सृजित किया है। क्योंकि ब्रह्मा का सामान्य स्वरूप तैंतीस देवताओं की दृष्टि को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त रूप से साकार नहीं होता। और हे भगवान, जब ब्रह्मा सनकुमार तैंतीस देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं, तो वे रंग और महिमा में अन्य देवताओं को भी मात देते हैं। हे भगवान, जिस प्रकार सोने की बनी मूर्ति मनुष्य के शरीर को मात देती है, उसी प्रकार जब ब्रह्मा सनकुमार तैंतीस देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं, तो वे रंग और महिमा में अन्य देवताओं को भी मात देते हैं। और हे भगवान, जब ब्रह्मा सनकुमार तैंतीस देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं, तो उस सभा में कोई भी देवता उन्हें प्रणाम नहीं करता, न ही खड़ा होता है, न ही

उन्हें बैठने के लिए आमंत्रित करता है। वे सभी चुपचाप हाथ जोड़कर, पालथी मारकर बैठे हैं और सोच रहे हैं: "ब्रह्मा सना कुमार जिस भी देवता से कुछ भी चाहता है, वह उसी के दीवान पर बैठ जाता है।" और जिस भी देवता के पास वह बैठता है, वह देवता परम संतोष और परम आनंद से भर जाता है, ठीक वैसे ही जैसे नवगठित क्षत्रिय राजा परम संतोष और परम आनंद से भर जाता है।

18. [211] इसलिए, हे भगवान, ब्रह्मा सनवकुमार ने एक स्थूल शरीर धारण करके पंचमंजित युवक का रूप धारण किया और तैंतीस देवताओं के समूह के समक्ष इस प्रकार प्रकट हुए। वे आकाश में ऊपर उठकर पालथी मारकर बैठ गए। हे भगवान, जिस प्रकार एक बलवान व्यक्ति अच्छी तरह बिछे हुए दीवान या समतल भूमि पर पालथी मारकर बैठ जाता है, उसी प्रकार ब्रह्मा सनवकुमार वायु में ऊपर उठकर आकाश में पालथी मारकर बैठ गए। तैंतीस देवताओं के समूह की शांति देखकर उन्होंने इन श्लोकों में अपनी प्रसन्नता व्यक्त की: —

हे भगवान, तैंतीस देवता और भगवान, आनंदित हों।

वे तथागत का आदर करते हैं और ब्रह्मांडीय नियम को श्रेष्ठ मानते हैं।

जबकि वे इन देवताओं को नव-उत्पन्न, सुंदर और उज्ज्वल देखते हैं,

जिन्होंने पहले पवित्र जीवन जिया था, उस धन्य व्यक्ति के अधीन,

परम ऋषि के वे श्रोता, जिन्होंने उच्चतर सत्यों को प्राप्त कर लिया था,

इधर आओ; और महिमा में अन्य सभी देवता भी फीके पड़ जाएंगे।

वे इसे बड़ी खुशी से देखते हैं, भगवान और तैंतीस दोनों।

वे तथागत का आदर करते हैं और ब्रह्मांडीय नियम को श्रेष्ठ मानते हैं।

19. यह ब्रह्मा सनकुमार के भाषण का विषय था । उन्होंने इसे आठ गुणों वाली वाणी में बोला—एक ऐसी वाणी में जो धाराप्रवाह, सुबोध, मधुर, श्रव्य, निरंतर, स्पष्ट, गहरी और गूंजदार थी। और हे भगवान, ब्रह्मा सनकुमार ने अपनी वाणी से उस सभा से संवाद किया, तो उसकी ध्वनि सभा से बाहर नहीं जा सकी। जिसकी वाणी में ये आठ गुण होते हैं, उसे ब्रह्मा वाणी वाला कहा जाता है।

20. तब, भगवान ब्रह्मा सना/जकुमार ने अपने तैंतीस रूप बनाकर, प्रत्येक तैंतीस देवता के पलंग पर बैठकर, देवताओं को इस प्रकार संबोधित किया: —

हे तैंतीस देवताओं, अब आप क्या सोचते हैं? क्योंकि परमेश्वर ने जन कल्याण, जन सुख, संसार पर दया, देवताओं और मनुष्यों के हित, कल्याण और सुख के लिए कार्य किया है, इसलिए हे महोदय, जिन्होंने बुद्ध की शरण ली है, सत्य की शरण ली है, और संघ की शरण ली है, वे मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर पुनर्जन्म लेते हैं, उनमें से कुछ परानिम्मित-वासवत्ती देवताओं के समूह में, कुछ तुषिता देवताओं के समूह में, या यम के अनुयायियों के समूह में, या तैंतीस देवताओं के समूह में, या चार महान राजाओं के समूह में। जो सबसे निचले समूह में आते हैं, वे गंधर्व सेना में शामिल होते हैं।

21. यही ब्रह्मा सनावकुमार के भाषण का विषय था। और उन्होंने इसे इस प्रकार बोला कि प्रत्येक देवता को लगा: — "जो मेरे दीवान पर विराजमान है, वही बोल रहा है।"

जब एक ब्रह्मा-रूप बोलता है, तो तैंतीस सब बोलते हैं; जब एक रूप चुपचाप बैठता है, तो वे सब चुपचाप बैठते हैं। तब तैंतीस अपने राजा के साथ सोचते हैं, पाई जो मेरे पलंग पर है, वही अकेला है जिसने बात की।

22. तब, भगवान ब्रह्मा सनकुमार हॉल के एक छोर पर गए और [213] देवताओं के स्वामी सक्का के दीवान पर बैठकर तैंतीस देवताओं को संबोधित किया: —

हे मेरे भगवान, तैंतीसवें, आप क्या सोचते हैं कि परम ज्ञाता, सर्वज्ञ अरहंत, बुद्ध ने इद्धि प्राप्ति के चार मार्गों को विकास, दक्षता और विस्तार के लिए किस पूर्णता से प्रकट किया है? वे कौन से मार्ग हैं? प्रथम मार्ग में, एक भाई एकाग्रता और प्रयास तथा इच्छा के संयोजन से युक्त मार्ग का अभ्यास करता है। द्वितीय मार्ग में, एक भाई एकाग्रता और प्रयास तथा ऊर्जा के संयोजन से युक्त मार्ग का अभ्यास करता है। तृतीय मार्ग में, एक भाई एकाग्रता और प्रयास तथा एक प्रमुख विचार के संयोजन से युक्त मार्ग का अभ्यास करता है। चतुर्थ मार्ग में, एक भाई एकाग्रता और प्रयास तथा अन्वेषण के संयोजन से युक्त मार्ग का अभ्यास करता है। हे महोदय, ये परम ज्ञाता, सर्वज्ञ अरहंत, बुद्ध द्वारा प्रकट किए गए इद्धि प्राप्ति के चार मार्ग हैं, जो इसके विकास, दक्षता और विस्तार के लिए हैं। अब वे संन्यासी या अतीत में जिन ब्राह्मणों ने इद्धि के एक या एक से अधिक रूपों का आनंद लिया है, उन्होंने केवल इन्हीं रूपों में अभ्यास और सुधार के माध्यम से ऐसा किया है। और भविष्य में जिन संन्यासियों या ब्राह्मणों को इद्धि के एक या एक से अधिक रूपों का आनंद मिलेगा, वे सभी केवल इन्हीं रूपों में अभ्यास और सुधार के माध्यम से ऐसा करेंगे। और वर्तमान समय में जिन संन्यासियों या ब्राह्मणों को इद्धि के एक या एक से अधिक रूपों का आनंद मिलता है, वे सभी केवल इन्हीं रूपों में अभ्यास और सुधार के माध्यम से ऐसा करते हैं।

हे मेरे भगवान, तैंतीस, क्या आप मुझमें इद्धि की ऐसी सामर्थ्य देखते हैं?

"हाँ, ब्रह्मा।"

"मैं भी, महोदय, इन्हीं इद्धि [214] में अभ्यास और सुधार के माध्यम से, उसमें ऐसी शक्ति और सामर्थ्य प्राप्त कर चुका हूँ।"

23. ब्रह्मा सनम कुमार के भाषण का विषय यही था । और ऐसा कहकर उन्होंने तैंतीस देवताओं को संबोधित किया:

"हे मेरे भगवान, तैंतीस देवताओं, अब आप उन तीन मार्गों के बारे में क्या सोचते हैं जिनसे परम आनंद प्राप्त किया जा सकता है, जिसे सर्वज्ञानी, साक्षी, अरहंत, परम बुद्ध ने प्रकट किया है? वे तीन मार्ग कौन से हैं?"

सबसे पहले, महोदय, एक ऐसे भाई का उदाहरण लीजिए जो इंद्रिय सुखों में लिप्त होकर बुरी परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रहा है। एक अवसर पर उसे आर्य सत्य का ज्ञान प्राप्त होता है, वह उसका अध्ययन करता है और उसके मुख्य एवं सहायक दोनों सिद्धांतों को ग्रहण करता है। इस ज्ञान को ग्रहण करने, अध्ययन करने और ग्रहण करने के बाद वह इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरी परिस्थितियों से मुक्त जीवन व्यतीत करता है। इन परिस्थितियों में उसे सहजता और उससे भी बढ़कर, आनंद का अनुभव होता है। जिस प्रकार संतुष्टि की भावना प्रसन्नता में परिवर्तित हो सकती है, उसी प्रकार इन परिस्थितियों में उसे पहले सहजता प्राप्त होती है, और फिर उससे भी बढ़कर, आनंद प्राप्त होता है। महोदय, यही परम आनंद की प्राप्ति का मार्ग है, जिसे परम बुद्ध ने प्रकट किया है।

24. इसके बाद, महोदय, एक ऐसे भाई का उदाहरण लीजिए जिसमें कर्म, वाणी और विचार से उत्पन्न होने वाली स्थूल अवस्थाएँ पूरी तरह शांत नहीं हुई हैं। एक अवसर पर वह आर्य सत्य का उपदेश सुनता है, उसका अध्ययन करता है और मुख्य एवं सहायक दोनों सिद्धांतों को ग्रहण करता है। इस श्रवण, अध्ययन और ग्रहण के फलस्वरूप, उसमें कर्म, वाणी और विचार से उत्पन्न होने वाली स्थूल अवस्थाएँ पूरी तरह शांत हो जाती हैं। और इससे उसे सहजता का अनुभव होता है, और फिर सहजता से भी बढ़कर, आनंद प्राप्त होता है। जिस प्रकार आत्मसंतुष्टि की भावना प्रसन्नता में परिवर्तित हो सकती है, उसी प्रकार उन परिस्थितियों में, पहले सहजता उत्पन्न होती है और फिर सहजता से भी बढ़कर, आनंद प्राप्त होता है। [215] महोदय, यही परमानंद को प्राप्त करने का मार्ग है, जिसे परम बुद्ध ने प्रकट किया है।

25. तीसरे स्थान पर, महोदय, एक ऐसे भाई का उदाहरण लीजिए जो वास्तव में यह नहीं जानता कि 'यह अच्छा है', 'यह बुरा है', 'यह गलत है', 'यह गलत नहीं है', 'इसका पालन करना चाहिए', 'इससे बचना चाहिए', 'यह नीच है', 'यह उत्तम है', 'यह अंधकार और उजाले के मिश्रित गुणों वाला है'। एक अवसर पर वह आर्य सत्य सुनता है, उसका अध्ययन करता है और मुख्य एवं सहायक सिद्धांतों को ग्रहण करता है। इस प्रकार सुनने, अध्ययन करने और ग्रहण करने के बाद, वह वास्तव में जान जाता है कि 'यह अच्छा है', वह वास्तव में जान जाता है कि 'यह बुरा है', 'यह गलत है', 'यह गलत नहीं है', 'इसका पालन करना चाहिए', 'इससे बचना चाहिए', 'यह नीच है', 'यह उत्तम है', 'यह अंधकार और उजाले के मिश्रित गुणों वाला है'। इस प्रकार जानने और देखने से उसका अज्ञान दूर हो जाता है और ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। अज्ञान के इस विनाश और ज्ञान के उदय से उसे सहजता का अनुभव होता है और फिर सहजता से भी बढ़कर सुख प्राप्त होता है। जैसे संतुष्टि की भावना प्रसन्नता में परिवर्तित हो सकती है, वैसे ही इन परिस्थितियों में उनके लिए पहले आराम उत्पन्न होता है, और फिर आराम से भी बढ़कर, सुख। हे महोदय, यही परम आनंद की प्राप्ति का मार्ग है, जिसे सर्वज्ञानी, सर्वदृष्टिशील, अरहंत, परम बुद्ध ने प्रकट किया है।

ये [216] परम आनंद तक पहुँचने के तीन मार्ग हैं, जो परम ज्ञाता, सर्वज्ञानी, अरहंत, परम बुद्ध द्वारा प्रकट किए गए हैं।"

26. हे भगवान, इस विषय पर ब्रह्मा सना कुमार ने प्रवचन दिया। और ऐसा कहकर उन्होंने तैंतीस देवताओं को संबोधित किया: —

हे तैंतीस देवताओं, अब आप क्या सोचते हैं कि परम पूज्य, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी अरहंत, बुद्ध ने अच्छे प्राणों को प्राप्त करने हेतु ध्यान के चार आरंभों को किस पूर्णता से प्रकट किया है? और वे चार कौन से हैं? हे सज्जनों, एक ऐसे भाई को लीजिए जो अपने शरीर के प्रति सचेत, आत्म-नियंत्रित और जागरूक रहता है, ताकि वह संसार की वस्तुओं के लोभ से उत्पन्न होने वाले दुःख को पहचान सके। इस प्रकार, सचेत रहकर वह उचित एकाग्रता और उचित शांति प्राप्त करता है। अपने शरीर में उचित एकाग्रता और उचित शांति प्राप्त करके, वह अपने से परे सभी भौतिक रूपों का ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है। इस प्रकार, वह अपनी भावनाओं, अपने हृदय और अपने विचारों के प्रति सचेत, आत्म-नियंत्रित और जागरूक रहता है, ताकि वह संसार की वस्तुओं के लोभ से उत्पन्न होने वाले दुःख को पहचान सके। अतः, आत्मिक रूप से सजग रहकर, वह उचित एकाग्रता और उचित शांति प्राप्त करता है। अपने भावों, हृदय और विचारों में उचित एकाग्रता और उचित शांति धारण करके, वह अपने से बाह्य अन्य व्यक्तियों के विचारों का ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है।

हे महोदय, ये वे चार आरंभिक चरण हैं जिनके द्वारा परम ज्ञात, सर्वज्ञानी, सर्वदृष्टिशील, अरहंत, परम बुद्ध द्वारा पूर्णतः प्रकट किए गए पुण्य को प्राप्त किया जा सकता है।

27. इस विषय पर ब्रह्मा सनम कुमार ने बात की। और बोलने के बाद उन्होंने तैंतीस देवताओं को संबोधित किया: —

हे मेरे भगवान, तैंतीसवें देवता, आप उस पूर्णता के बारे में क्या सोचते हैं जिसके साथ परम पूज्य, जो जानते हैं, जो देखते हैं, अरहंत, परम बुद्ध ने सही परमानंद के अभ्यास और परमानंद की पूर्णता के लिए बौद्धिक एकाग्रता की सात आवश्यकताओं को प्रकट किया है? वे सात कौन सी हैं? सही विचार, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, [217] सही प्रयास, सही जागरूकता। हे सज्जनों, इन सात कारकों द्वारा तैयार की गई विचार एकाग्रता को इसके आधारों और इसकी आवश्यकताओं के साथ श्रेष्ठ सही परमानंद कहा जाता है। सही विचार बनाए रखने के लिए सही इरादा पर्याप्त है, सही इरादे को बनाए रखने के लिए सही वाणी पर्याप्त है, सही वाणी को बनाए रखने के लिए सही कर्म पर्याप्त है, सही कर्म को बनाए रखने के लिए सही आजीविका पर्याप्त है, सही आजीविका को बनाए रखने के लिए सही प्रयास पर्याप्त है, सही प्रयास को बनाए रखने के लिए सही जागरूकता पर्याप्त है, सही जागरूकता को बनाए रखने के लिए सही परमानंद पर्याप्त है, सही ज्ञान पर्याप्त है। सही आनंद और सही स्वतंत्रता को बनाए रखना ही सही ज्ञान को बनाए रखने के लिए पर्याप्त है।

यदि कोई सही वाणी बोलने वाला, महोदय, यह कहे: — 'परमेश्वर ने सत्य का सुंदर प्रचार किया है, — वह मानदंड जो इस जीवन में फलदायी है, जो क्षणिक लाभ नहीं देता, जो सबका स्वागत करता है, जो आगे और ऊपर ले जाता है, ताकि प्रत्येक बुद्धिवान व्यक्ति स्वयं समझ सके!' तब यह कहना: "निर्वाण के द्वार खुले हैं!"

क्योंकि, महोदय, जो कोई भी बुद्ध में अटूट विश्वास रखता है, सत्य में अटूट विश्वास रखता है, संघ में अटूट विश्वास रखता है, और श्रेष्ठों को प्रसन्न करने वाले गुणों से संपन्न है; और हमारे बीच जो भी नए देवता प्रकट हुए हैं, जो धर्म द्वारा यहाँ लाए गए हैं, अर्थात् चौबीस लाख से अधिक शिष्य अब मर चुके हैं; ये सभी तीन बंधनों के पूर्ण विनाश के माध्यम से परिवर्तित हो गए हैं, और किसी भी दुःख की अवस्था में पुनर्जन्म नहीं ले सकते, बल्कि अंतर्दृष्टि (मार्ग के उच्चतम चरणों की) प्राप्त करने के लिए आश्वस्त हैं। [218] इसके अलावा यहाँ एक बार लौटने वाले भी हैं;

लेकिन उस दूसरी नस्ल के बारे में बताने के लिए, जो उच्चतर योग्यता की है, अरे! मैं कहानी का हिसाब नहीं लगा सकता, कहीं ऐसा न हो कि मैं सच्चाई के विरुद्ध अपराध कर बैठूँ।

28. हे भगवान, यही ब्रह्मा सनम कुमार के प्रवचन का विषय था । उनके प्रवचन के विषय में महान राजा वेसवना के मन में यह विचार आया : “यह वास्तव में कितना अद्‌भुत है, हे महोदय, कितना आश्चर्यजनक है कि ऐसा गौरवशाली गुरु हो, सत्य का ऐसा गौरवशाली प्रचार हो, और विशिष्टता के ऐसे गौरवशाली मार्ग बताए जाएँ!”

तब, भगवान ब्रह्मा सनावकुमार ने महान राजा वेसवना के मन में इस विचार को भांपते हुए उनसे इस प्रकार कहा:

"अब मेरे स्वामी, महान राजा वेसवना, आपका क्या विचार है ? अतीत में भी एक ऐसा ही गौरवशाली शिक्षक, सत्य का ऐसा ही गौरवशाली प्रचार और विशिष्टता के ऐसे गौरवशाली मार्ग प्रकट करने वाला व्यक्ति रहा है, और भविष्य में भी एक ऐसा ही गौरवशाली शिक्षक, [214] सत्य का ऐसा ही गौरवशाली प्रचार और विशिष्टता के ऐसे गौरवशाली मार्ग प्रकट करने वाला व्यक्ति होगा।"

29. यह वह विषय था जिसके बारे में ब्रह्मा सनम कुमार ने तैंतीस देवताओं से बात की थी। जब महान राजा वेसवना ने स्वयं इसे सुना और स्वीकार किया, तो उन्होंने अपने अनुयायियों को इसकी सूचना दी। जब आत्मा जनवसभा ने स्वयं वेसवना द्वारा बताई गई इस प्रकार की सूचना सुनी, तो उन्होंने भगवान को इसकी सूचना दी । जब भगवान ने स्वयं इसे सुना और स्वीकार किया, और अंतर्ज्ञान से भी इसे जान लिया, तो उन्होंने आनंद को इसकी सूचना दी। जब पूज्य आनंद ने स्वयं इसे भगवान से सुना और स्वीकार किया, तो उन्होंने भाइयों और बहनों, विश्वासी गृहस्थ पुरुषों और गृहस्थ महिलाओं को इसकी सूचना दी। और यह प्रणाली प्रभावशाली और समृद्ध होती गई और इसमें शामिल होने वालों की संख्या के साथ विस्तारित और विस्तृत होती गई, क्योंकि यह मनुष्यों के बीच इतनी अच्छी तरह से फैल गई थी।

जनवासभा की कहानी यहीं समाप्त होती है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.6 महा गोविंदा सुत्त(DN19)

एक बार भगवान (बुद्ध) राजधा में, गिद्ध शिखर पर ठहरे हुए थे। जब रात लगभग समाप्त होने वाली थी, तब गंधर्वों के देव पंचसिखा ने गिद्ध शिखर को अपनी तेजस्वी रोशनी से जगमगाते हुए भगवान के पास आकर उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ खड़े हो गए और बोले, "हे भगवान, मैं आपको वह सब बताना चाहता हूँ जो मैंने स्वयं तैंतीस करोड़ देवों की उपस्थिति में देखा और अनुभव किया है।" भगवान ने कहा, "तो बताओ, पंचसिखा।"

हे भगवान, प्राचीन काल में, बहुत समय पहले, वर्षा ऋतु के अंत में पंद्रहवें व्रत के दिन तैंतीस करोड़ देवता एकत्रित हुए और इस बात पर प्रसन्न हुए कि देवताओं की सेना बढ़ रही थी और असुरों की सेना घट रही थी। तब सक्का ने यह श्लोक कहा:

"तैंतीस देवता और उनके नेता आनंदित होते हैं, तथागत (गौतम बुद्ध) और धम्म के सत्य की स्तुति करते हुए, नवजन्मित, सुंदर और तेजस्वी देवताओं को देखकर, जिन्होंने पवित्र जीवन (ब्रह्मचर्य) व्यतीत किया है, अब वे अच्छे से पुनर्जन्म लेकर आए हैं। यश और वैभव में सभी को पीछे छोड़ते हुए, शक्तिशाली ऋषि के शिष्यों को चुना गया है। यह देखकर, तैंतीस (करोड़ देवता) और उनके नेता आनंदित होते हैं, तथागत और धम्म के सत्य की स्तुति करते हैं।"

"हे भगवान, इस पर तैंतीस देवता और भी अधिक प्रसन्न हुए और कहने लगे: 'देवताओं की सेना बढ़ रही है, असुरों की सेना घट रही है!'"

तब सक्का ने उनकी संतुष्टि देखकर तैंतीस देवताओं से कहा: 'हे सज्जनों, क्या आप भगवान की स्तुति में आठ सत्य कथन सुनना चाहेंगे?' और उनकी सहमति प्राप्त करने पर उसने घोषणा की:

"'हे तैंतीस स्वामियों, आपका क्या विचार है? जिस प्रकार से भगवान ने अनेकों के कल्याण, अनेकों की खुशी, संसार के प्रति करुणा, देवताओं और मनुष्यों के कल्याण और सुख के लिए प्रयास किए हैं - अतीत हो या वर्तमान, भगवान के सिवा हमें ऐसे गुणों वाला कोई गुरु नहीं मिलता।"

भगवान ने सही और गलत, निंदनीय और निर्दोष, अनुसरण करने योग्य और न करने योग्य, नीच और श्रेष्ठ, घृणित, उचित और मिश्रित गुणों का भली-भांति स्पष्टीकरण दिया है। और भगवान के सिवा कोई ऐसा प्रचारक नहीं है जो इन बातों का प्रचार करता हो।

"भगवान ने अपने शिष्यों को निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग को भली-भांति समझाया है, और निर्वाण और मार्ग एक हो जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे गंगा और यमुना का जल मिलकर बहता है। और निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग का उद्घोषक भगवान के सिवा कोई और नहीं मिलता।"

"और भगवान ने शिष्यों और उन लोगों को भी साथी बना लिया है जिन्होंने भगवान का जीवन जीकर विकृतियों को दूर कर दिया है, और भगवान उन सभी के साथ निवास करता है, सब एक ही बात में आनंदित होते हैं। और हमें भगवान के सिवा ऐसा कोई शिक्षक नहीं मिल सकता।"

"भगवान को दिए गए उपहार उत्तम हैं, उनकी प्रसिद्धि इतनी स्थापित है कि मुझे लगता है कि क्षत्रिय उनसे जुड़े रहेंगे, फिर भी भगवान उन्हें बिना किसी अहंकार के भोजन भेंट करते हैं। और हमें भगवान के सिवा कोई ऐसा शिक्षक नहीं मिलता जो ऐसा करता हो।"

"और भगवान जैसा बोलता है वैसा ही करता है, और जैसा करता है वैसा ही बोलता है। और हमें भगवान के सिवा कोई ऐसा शिक्षक नहीं मिलता जो सिद्धांत के हर पहलू में ऐसा ही करता हो... ।"

भगवान ने संदेह को दूर कर दिया है, सभी "कैसे" और "क्यों" से परे जाकर, उन्होंने अपने लक्ष्य और सर्वोच्च पवित्र जीवन (या ब्रह्मचर्य जीवन) के संबंध में अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है। और हम भगवान के सिवा ऐसा कोई शिक्षक नहीं पाते जिसने ऐसा किया हो, चाहे हम अतीत की बात करें या वर्तमान की।

और जब सक्का ने इस प्रकार भगवान की स्तुति में ये आठ सत्य कथन घोषित किए, तो तैंतीस देवता भगवान की स्तुति में सुनी गई बातों से और भी अधिक प्रसन्न, आनंदित और प्रसन्न हुए।

तब कुछ देवताओं ने समझाया: 'हे भगवान! यदि केवल चार पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध संसार में प्रकट हों और भगवान की तरह धम्म का उपदेश दें, तो यह अनेकों के कल्याण और सुख के लिए होगा, संसार के प्रति करुणा से प्रेरित होकर, देवताओं और मनुष्यों के कल्याण और सुख के लिए होगा!' और कुछ ने कहा: 'चार पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्धों की आवश्यकता नहीं है - तीन ही पर्याप्त होंगे!' और अन्य ने कहा: 'तीन की आवश्यकता नहीं है - दो ही पर्याप्त होंगे!'

इस पर सक्का ने कहा: 'यह असंभव है, सज्जनों, ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही विश्व व्यवस्था में दो पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध एक साथ प्रकट हों। ऐसा संभव नहीं है। भगवान बुद्ध को दीर्घायु होने की कृपा हो, अनेक वर्षों तक वे रोग और विपत्तियों से मुक्त रहें! यह अनेकों के कल्याण और सुख के लिए होगा, संसार के प्रति करुणावश यह देवताओं और मनुष्यों दोनों के कल्याण और सुख के लिए होगा!'

तब तैंतीस देवताओं ने सुधम्म हॉल में एकत्रित होकर जिस विषय पर विचार-विमर्श किया, उस पर आपस में परामर्श किया और चारों महान राजाओं को, जो अपनी सीटों पर अविचल खड़े थे, इस विषय पर सलाह और चेतावनी दी गई।

"राजाओं ने निर्देश दिए, उनके बोले गए शब्दों पर ध्यान दिया, वे शांत और गंभीर भाव से अपनी सीटों के पास खड़े रहे।"

"एक तीव्र प्रकाश प्रकट हुआ, जो ब्रह्मा के आगमन की सूचना दे रहा था। सभी ने अपने-अपने स्थान ग्रहण कर लिए, इस आशा के साथ कि ब्रह्मा पलंग पर विराजमान होंगे।"

तब ब्रह्मा सनंकुमार (या सनत्कुमार) अपने स्वर्ग से अवतरित होकर, उनकी प्रसन्नता देखकर, इन श्लोकों का उच्चारण किया:

"'तैंतीस के देवता आनंदित होते हैं, उनका नेता भी...'"

"ब्रह्मा सनंकुमार की आवाज में आठ गुण थे।"

तब तैंतीस देवताओं ने ब्रह्मा सनंकुमार से कहा, "हे ब्रह्मा, यह अच्छा है! हमने जो सुना उससे हम प्रसन्न हैं। देवताओं के स्वामी सक्का ने भी भगवान के विषय में आठ सत्य कथन बताए हैं, जिससे हम भी प्रसन्न हैं।" तब ब्रह्मा ने सक्का से कहा, "हे देवताओं के स्वामी, यह अच्छा है। हम भी भगवान के विषय में वे आठ सत्य कथन सुनना चाहते हैं।" सक्का ने कहा, "बहुत अच्छा, हे महान ब्रह्मा," और उन्होंने वे आठ कथन दोहराए।

"'हे भगवान ब्रह्मा, आप क्या सोचते हैं...?' और ब्रह्मा सनंकुमार भगवान की स्तुति में सुनी गई बातों से प्रसन्न, अतिप्रसन्न और आनंदित हो गए।"

ब्रह्मा सनंकुमार ने स्थूल रूप धारण किया और पंचसिखा के रूप में प्रकट हुए। इस प्रकार पालथी मारकर बैठे हुए उन्होंने तैंतीस देवताओं से कहा: 'भगवान कब से सर्वशक्तिमान ज्ञान में से एक हैं?'

एक समय की बात है, दिसमपति नाम का एक राजा था। उसका पुरोहित एक ब्राह्मण था जिसका नाम गोविन्द था। राजा का पुत्र रेणु नामक एक युवक था और गोविन्द का पुत्र ज्योतिपाला था। राजकुमार रेणु और ज्योतिपाला, छह अन्य क्षत्रियों के साथ मिलकर आठ मित्रों का एक समूह बनाते थे। समय बीतने पर गोविन्द का देहांत हो गया और राजा दिसमपति ने उसके लिए शोक व्यक्त करते हुए कहा, 'हाय, ठीक उसी क्षण जब हमने अपने सभी दायित्व गोविन्द को सौंप दिए थे और हम पांचों इंद्रियों के सुखों में लिप्त थे, गोविन्द का देहांत हो गया!'

यह सुनकर राजकुमार रेनू ने कहा, "महाराज, प्रबंधक की मृत्यु पर अधिक शोक न करें! उनका पुत्र ज्योतिपाला अपने पिता से अधिक चतुर है और लाभप्रद बातों को बेहतर ढंग से पहचानता है। आपको ज्योतिपाला को वह सारा व्यवसाय सौंप देना चाहिए जो आपने उनके पिता को सौंपा था।" "क्या ऐसा है, मेरे पुत्र?" "जी महाराज।"

तब राजा ने एक व्यक्ति को बुलाया और कहा: "हे मेरे सज्जन, इधर आओ, युवक ज्योतिपाला के पास जाओ और कहो: 'आदरणीय ज्योतिपाला कुशल मंगल हों! राजा दिसमपति ने तुम्हें बुलवाया है, वे तुमसे मिलना चाहते हैं।'" उस व्यक्ति ने कहा, "महाराज, आपको नमस्कार," और संदेश पहुँचा दिया। संदेश पाकर ज्योतिपाला ने कहा, "महोदय, आपको नमस्कार," और राजा से मिलने चले गए। राजा के दरबार में प्रवेश करते ही उन्होंने राजा से शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए। राजा ने कहा: "हम चाहते हैं कि आदरणीय ज्योतिपाला हमारे मामलों का प्रबंधन करें। मना मत करना। मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के स्थान पर नियुक्त करूँगा और तुम्हें प्रबंधक के रूप में अभिषेक करूँगा।" ज्योतिपाला ने उत्तर दिया, "आपको नमस्कार।"

इसलिए राजा दिसमपति ने ज्योतिपाला को उसके पिता के स्थान पर प्रबंधक नियुक्त किया। पदभार ग्रहण करने के बाद ज्योतिपाला ने वही कार्य संपन्न किए जो उसके पिता करते थे, और कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जो उनके पिता ने न किया हो। उसने वे सभी कार्य पूरे किए जो उसके पिता ने किए थे, और कोई अन्य कार्य नहीं किया। लोगों ने कहा, 'यह ब्राह्मण सचमुच एक प्रबंधक है! वास्तव में यह एक महान प्रबंधक है!' और इस प्रकार युवा ब्राह्मण ज्योतिपाला को महान प्रबंधक (महा गोविंदा) के नाम से जाना जाने लगा।

एक दिन महा गोविंदा (महा गोविन्द) छह सरदारों के समूह के पास गए और बोले: 'राजा दिसमपति वृद्ध, दुर्बल और उम्र से ग्रस्त हैं। उनका जीवन निकट है और वे अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। कौन जानता है कि मनुष्य कितने समय तक जीवित रहेंगे? जब राजा दिसमपति की मृत्यु होगी, तो राज-निर्माताओं का दायित्व होगा कि वे राजकुमार रेणु को राजा के रूप में राज्याभिषेक करें। हे सज्जनों, आप राजकुमार रेणु के पास जाकर कहें: "हम भगवान रेणु के प्रिय, प्रिय और कृपापात्र मित्र हैं, उनके सुख-दुखों में भागीदार हैं। हमारे भगवान राजा दिसमपति वृद्ध हैं... जब उनकी मृत्यु होगी, तो राज-निर्माताओं का दायित्व होगा कि वे भगवान रेणु को राजा के रूप में राज्याभिषेक करें। यदि भगवान रेणु को राज प्राप्त हो, तो वे इसे हमारे साथ साझा करें।"'

"बहुत अच्छा, महाराज," छह सरदारों ने कहा और वे राजकुमार रेणु के पास गए और उनसे उसी प्रकार बात की जैसे महा गोविंदा ने प्रस्ताव रखा था: "अच्छा, सज्जनों, मेरे अलावा और कौन समृद्ध होना चाहिए, सिवाय आपके? यदि, सज्जनों, मैं राजगद्दी प्राप्त करता हूँ, तो मैं इसे आपके साथ साझा करूँगा।"

कुछ समय बाद राजा दिसमपति का निधन हो गया, और राजा बनाने वालों ने उनके स्थान पर राजकुमार रेणु को राजा घोषित कर दिया। राजा बनने के बाद रेणु ने पांचों इंद्रियों के सुखों में लिप्त हो गए। तब महा गोविंदा (महा गोविन्द) छह सरदारों के पास गए और बोले, 'हे सज्जनों, अब राजा दिसमपति का निधन हो गया है और उनके स्थान पर राजा बने भगवान रेणु पांचों इंद्रियों के सुखों में लिप्त हो गए हैं। कौन जाने इसका क्या परिणाम होगा? इंद्रिय सुख मादक होते हैं। आप उनके पास जाकर कहें, 'राजा दिसमपति का निधन हो गया है और भगवान रेणु को राजा घोषित कर दिया गया है। क्या आपको अपना वचन याद है, हे स्वामी?'

उन्होंने ऐसा ही किया, और राजा ने कहा: 'सज्जनों, मुझे अपना वचन याद है। उत्तर में इतना विशाल और दक्षिण में बैलगाड़ी के आगे के हिस्से की तरह संकरा, इस विशाल पृथ्वी राज्य को सात बराबर भागों में कौन विभाजित कर सकता है?' 'हे भगवान, महा गोविंदा के सिवा कौन?'

"तब राजा रेणु ने महा गोविंदा (महा गोविंदा) के पास एक व्यक्ति को यह कहने के लिए भेजा: 'महाराज, राजा ने आपको बुलवाया है।' वह व्यक्ति गया, और महा गोविंदा राजा के पास आए, उनसे शिष्टाचार का आदान-प्रदान किया और एक तरफ बैठ गए। तब राजा ने

कहा: 'महा गोविंदा, जाइए और इस विशाल राज्य को, जो उत्तर में इतना चौड़ा और दक्षिण में रथ के आगे के हिस्से की तरह इतना संकरा है, सात बराबर भागों में बाँट दीजिए।' महा गोविंदा ने कहा, 'बहुत अच्छा, महाराज', और उन्होंने वैसा ही किया।"

और राजा रेनू का देश केंद्र में था:

"दंतपुरा कलिगों को, पोटाका अस्सकों को, महिस्सति अवंतीस को, रोरुका सोविरस को। मिथिला विदेहों को, कैम्पा अंगों को, बनारस काशी को, इस प्रकार प्रबंधक ने निपटान किया।

"छह रईस अपने-अपने लाभ और योजना की सफलता से प्रसन्न थे: 'जो हम चाहते थे, जिसकी हमने कामना की थी, जिसका हमने लक्ष्य रखा था और जिसके लिए हमने प्रयास किया था, वह हमें मिल गया है!'"

"सत्तभू, ब्रह्मदत्त, वेस्सभु और भरत, रेनू और दो धतारथ, ये सात भरत राजा हैं।

तब छह सरदार महा गोविंदा के पास आए और बोले, 'हे पूज्य स्वामी, जिस प्रकार आप राजा रेणु के प्रिय, प्यारे और निष्ठावान मित्र थे, उसी प्रकार आप हमारे भी हैं। कृपया हमारे मामलों का प्रबंधन कीजिए! हमें विश्वास है कि आप मना नहीं करेंगे।' अतः उन्होंने सात अभिषिक्त राजाओं के राज्यों का प्रशासन संभाला और सात विशिष्ट ब्राह्मणों तथा सात सौ उन्नत शिष्यों को मंत्रों का शिक्षण भी दिया।

समय बीतने के साथ ही महा गोविंदा के बारे में अच्छी-अच्छी बातें फैलने लगीं: 'महा गोविंदा ब्रह्मा को अपनी आँखों से देख सकते हैं, उनसे आमने-सामने बात कर सकते हैं और उनसे सलाह ले सकते हैं!' तब उन्होंने सोचा: 'अब मेरे बारे में भी यह अच्छी बात फैल रही है कि मैं ब्रह्मा को अपनी आँखों से देख सकता हूँ,...लेकिन यह सच नहीं है। हालाँकि, मैंने वृद्ध और सम्मानित ब्राह्मणों, गुरुओं के गुरुओं से सुना है कि जो कोई भी वर्षा ऋतु के चार महीनों में करुणा की एकाग्रता विकसित करते हुए ध्यान में लीन हो जाता है, वह ब्रह्मा को अपनी आँखों से देख सकता है, उनसे आमने-सामने बात कर सकता है और उनसे सलाह ले सकता है। मान लीजिए कि मैं ऐसा करूँ!'

"तब महान प्रबंधक राजा रेणु के पास गए और उन्हें यह खबर सुनाई, और अपनी इच्छा बताई कि वे एकांतवास में जाकर करुणा पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। 'और मेरे पास भोजन लाने के अलावा कोई नहीं आएगा।' 'आदरणीय प्रबंधक, जैसा आप उचित समझें।'

"छह रईसों ने भी उत्तर दिया: 'आदरणीय प्रबंधक, जैसा आपको उचित लगे वैसा करें।'

"वह सात ब्राह्मणों और सात सौ शिष्यों के पास गए और उन्हें अपने इरादों के बारे में बताया, और कहा: 'तो सज्जनों, आप उन मंत्रों का पाठ जारी रखें जो आपने सुने और सीखे हैं, और उन्हें एक दूसरे को सिखाएं।' 'आदरणीय स्टीवर्ड, जैसा आप उचित समझें', उन्होंने उत्तर दिया।"

"फिर वह अपनी चालीस समान पदस्थ पत्नियों के पास गया, और उन्होंने कहा: 'रेवरेंड स्टीवर्ड, जैसा आपको उचित लगे वैसा करें।'

इसलिए महा गोविंदा ने नगर के पूर्व में एक नया निवास स्थान बनवाया और वर्षा ऋतु के चार महीनों के लिए वहाँ शरण ली, करुणा में लीन रहे और भोजन देने के अलावा कोई उनके पास नहीं आया। परन्तु चार महीने बीतने पर उन्हें केवल असंतोष और थकान का अनुभव हुआ, क्योंकि वे सोचने लगे: 'मैंने सुना है कि जो कोई वर्षा ऋतु के चार महीनों के लिए करुणा में लीन होकर ध्यान करता है, वह ब्रह्मा को अपने दर्शन कर सकता है...परन्तु मैं ब्रह्मा को अपने दर्शन नहीं कर सकता, और न ही उनसे बात कर सकता हूँ, चर्चा कर सकता हूँ या परामर्श कर सकता हूँ!'

"ब्रह्मा सनंकुमार ने उनके विचारों को जान लिया और एक बलवान व्यक्ति की तरह तेज़ी से अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाकर फिर से मोड़ने की तरह, वे ब्रह्मलोक से विलीन हो गए और महागोविन्द के समक्ष प्रकट हुए। महागोविन्द भयभीत और कांप उठे, और ऐसा दृश्य देखकर उनके रोंगटे खड़े हो गए जैसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। इस प्रकार भयभीत, कांपते हुए और रोंगटे खड़े होते हुए उन्होंने ब्रह्मा सनंकुमार को इन श्लोकों में संबोधित किया:

"'हे शानदार दर्शन, गौरवशाली और दिव्य, आप कौन हैं, भगवान? मैं आपका नाम जानना चाहता हूँ।'"

"'मैं सर्वोच्च स्वर्ग में सभी के द्वारा ज्ञात हूँ; ब्रह्मा सनकुमार - मुझे इसी प्रकार जानो।'"

"'एक आसन, पैरों के लिए जल और केक ब्रह्मा के लिए उपयुक्त हैं। भगवान स्वयं तय करें कि वे किस प्रकार का आतिथ्य सत्कार चाहते हैं।'

"हम इस भेंट को स्वीकार करते हैं: अब बताइए कि आप हमसे क्या चाहते हैं—इस जीवन में लाभ का वरदान, या अगले जीवन में। कहिए, भगवान, प्रबंधक, आप क्या चाहते हैं।"

तब महा गोविंदा (महा गोविंदा) ने सोचा, 'ब्रह्म सनंकुमार मुझे वरदान दे रहे हैं। मुझे क्या चुनना चाहिए—इस जीवन के लाभ या आने वाले जीवन के लाभ?' फिर उन्होंने सोचा, 'मैं इस जीवन के लाभों का ज्ञाता हूं, और दूसरे लोग इस बारे में मुझसे सलाह लेते हैं। मान लीजिए कि मैं ब्रह्मा सनंकुमार से आने वाले जीवन के लाभ के लिए कुछ मांगूं?' और उन्होंने ब्रह्मा से इन श्लोकों में प्रार्थना की:

"'मैं ब्रह्म सनंकुमार से यह पूछता हूँ, संदेह करने वाले से, जो संदेह रहित है, मैं पूछता हूँ (दूसरों के लिए भी पूछता हूँ): ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे मनुष्य अमर ब्रह्मलोक तक पहुँच सकें?'"

"'वह व्यक्ति जो सभी अधिकारपरक विचारों का त्याग करता है, एकाकी, एकाग्र, करुणामय, दुर्गंध से विरक्त, कामवासना से मुक्त—इस प्रकार स्थापित होकर और इस प्रकार अभ्यास करके, मनुष्य अमर ब्रह्मलोक को प्राप्त कर सकते हैं।'

मैं "स्वार्थी विचारों का त्याग" समझता हूँ। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी छोटी-बड़ी सभी संपत्तियों का त्याग कर देता है, अपने रिश्तेदारों (कम-ज़्यादा) को छोड़ देता है, और बाल-दाढ़ी मुंडवाकर गृहस्थ जीवन से निकलकर तपस्वी जीवन में प्रवेश करता है। मैं "स्वार्थी विचारों का त्याग" इसी प्रकार समझता हूँ। मैं "एकाग्र, एकाग्र" भी समझता हूँ। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अकेले ही निकल जाता है और जंगल में, किसी वृक्ष की छाया में, पर्वतीय घाटी में, किसी पथरीली गुफा में, श्मशान भूमि में, जंगल में या खुले मैदान में घास के ढेर पर अपना निवास स्थान चुनता है। मैं "करुणा से परिपूर्ण" भी समझता हूँ। इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपने मन के एक भाग को करुणा से परिपूर्ण करता है, फिर दूसरे, फिर तीसरे और चौथे भाग को। इस प्रकार व्यक्ति संपूर्ण संसार को, ऊपर, नीचे, चारों ओर, हर जगह, चारों ओर, करुणा से परिपूर्ण, विस्तृत, असीम, घृणा और द्वेष से मुक्त मन से परिपूर्ण करता है। मैं "करुणा से परिपूर्ण" इसी प्रकार समझता हूँ। लेकिन भगवान के "दुर्गंध से दूर" होने के बारे में कहे गए शब्द मुझे समझ नहीं आते:

"'हे ब्रह्मा, मनुष्यों में 'दुर्गंध' से आपका क्या तात्पर्य है? हे ज्ञानी, कृपया इस विषय में मेरी अज्ञानता दूर करें। वह कौन सी बाधा है जिसके कारण मनुष्य दुर्गंधयुक्त और सड़ता हुआ, ब्रह्मलोक से विमुख होकर नरक की ओर अग्रसर होता है?'"

क्रोध, झूठ, छल और कपट, लोभ, अभिमान और ईर्ष्या, लालच, संदेह और दूसरों को हानि पहुँचाना, लोभ और घृणा, सुस्ती और भ्रम: इन सबसे निकलने वाली घिनौनी दुर्गंध मनुष्य को नरक की ओर ले जाती है, ब्रह्मलोक से अलग कर देती है।

"'जैसा कि मैं दुर्गंध के बारे में भगवान के शब्दों को समझता हूँ, गृहस्थ जीवन जीने वाले व्यक्ति के लिए इन चीजों पर काबू पाना आसान नहीं है। इसलिए मैं गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी अवस्था में जाऊँगा।' 'आदरणीय प्रबंधक, जैसा आपको उचित लगे वैसा करें।'"

"तब महा गोविंदा (महा गोविन्द) राजा रेणु के पास गए और बोले: 'हे स्वामी, कृपया अपने मामलों के प्रबंधन के लिए एक और मंत्री नियुक्त करें। मैं गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में जाना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने मुझे संसार की दुर्गंध के बारे में बताया है, जिसे गृहस्थ जीवन जीने से आसानी से दूर नहीं किया जा सकता, इसलिए मैं तपस्वी जीवन में जा रहा हूँ।"

"'इस राज्य के स्वामी, राजा रेणु, मैं घोषणा करता हूँ, आपको स्वयं शासन करना होगा, मैं अब आपको कोई सलाह नहीं दूंगा!'"

"'यदि तुम्हें किसी चीज की कमी हो, तो मैं उसे पूरा कर दूंगा, यदि कोई तुम्हें चोट पहुंचाए, तो मेरी शाही भुजाएँ तुम्हारी रक्षा करेंगी। तुम मेरे पिता, मैं तुम्हारा पुत्र, प्रबंधक, यहीं रहो!'"

"'मुझे किसी चीज की कमी नहीं है, कोई भी मुझे नुकसान पहुंचाने वाला नहीं है; मैंने किसी इंसान की आवाज नहीं सुनी - मैं घर पर नहीं रह सकता।'

"'अमानव"—वह कैसा है जो पुकारता है, कि तुम अचानक घर और हम सबको छोड़ देते हो?'

"इस साधना पर जाने से पहले मैंने यज्ञ करने, पवित्र अग्नि प्रज्वलित करने और कुश घास बिखेरने के बारे में सोचा था। लेकिन अब—ब्रह्मलोक से शाश्वत ब्रह्मा प्रकट हुए। मैंने उनसे पूछा, उन्होंने उत्तर दिया: मैं अब और नहीं रह सकता।"

"'आदरणीय स्टीवर्ड, मुझे आपके शब्दों पर भरोसा है। ऐसे शब्द एक बार सुनने के बाद, आपके पास कोई और विकल्प नहीं बचा था। हम आपका अनुसरण करेंगे: स्टीवर्ड, आप हमारे स्वामी बनें। एक बेरिल रत्न की तरह, शुद्ध, उत्तम जल से बना, इतना पवित्र, हम आपके पदचिन्हों पर चलेंगे।'

"यदि आदरणीय स्टीवर्ड गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन अपनाते हैं, तो मैं भी ऐसा ही करूंगा। आप जहां भी जाएंगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।"

तब महा गोविंदा (महा गोविंदा) छह सरदारों के पास गए और उनसे कहा, 'हे स्वामियों, कृपया अपने मामलों के प्रबंधन के लिए एक और मंत्री नियुक्त करें। मैं गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में जाना चाहता हूँ...' और छह सरदार एक तरफ जाकर आपस में सलाह करने लगे, 'ये ब्राह्मण धन के लालची हैं। शायद हम महा गोविंदा को धन से मना लें।' तो वे उनके पास वापस आए और बोले, 'महोदय, इन सात राज्यों में बहुत धन है। जितना चाहें उतना ले लीजिए।' 'बस, सज्जनों, मुझे अपने स्वामियों से पहले ही बहुत धन मिल चुका है। यही वह धन है जिसका मैं त्याग कर रहा हूँ ताकि गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में जा सकूँ, जैसा कि मैंने स्पष्ट किया है।'

फिर छह सरदार एक तरफ जाकर आपस में सलाह करने लगे: 'ये ब्राह्मण स्त्रियों के लालची हैं। शायद हम स्त्रियों के ज़रिए महामहिम को मना सकें।' तो वे उनके पास आए और बोले: 'महोदय, इन सात राज्यों में बहुत सी स्त्रियाँ हैं। आप अपनी पसंद की चुन लीजिए!' 'बस कीजिए, महोदय, मेरे पास पहले से ही चालीस समान पत्नियाँ हैं, और मैं उन्हें छोड़कर गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में जा रहा हूँ, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है।'

"यदि आदरणीय स्टीवर्ड गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन अपनाते हैं, तो हम भी वैसा ही करेंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।"

"'यदि तुम उन वासनाओं का त्याग कर दो जो अधिकांश मनुष्यों को बांधती हैं, तो प्रयास करो, बलवान बनो और धैर्यपूर्वक सहन करो! यही सीधा मार्ग है, अद्वितीय मार्ग है, सत्य का मार्ग है, जो अच्छे लोगों द्वारा संरक्षित है, और ब्रह्मा के लोक की ओर ले जाता है।'"

"तो, हे लॉर्ड स्टीवर्ड, बस सात साल प्रतीक्षा कीजिए, और फिर हम भी तपस्वी जीवन में चले जाएंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।"

"सज्जनों, सात साल बहुत लंबा समय है, मैं सात साल तक इंतजार नहीं कर सकता! कौन बता सकता है कि लोग कितने समय तक जीवित रहेंगे? हमें अगले लोक में जाना है, हमें ज्ञान के माध्यम से सीखना होगा, हमें सही काम करना होगा और पवित्र जीवन जीना होगा, क्योंकि जन्म लेने वाला कोई भी प्राणी अमर नहीं होता। अब मैं जैसा मैंने समझाया है, वैसे ही आगे बढ़ रहा हूँ।"

"'अच्छा, आदरणीय स्टीवर्ड, बस छह साल, पाँच साल, चार साल, तीन साल, दो साल, एक साल प्रतीक्षा कीजिए, और फिर हम भी तपस्वी जीवन में चले जाएंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।'"

"'सज्जनों, एक साल बहुत लंबा समय है...' 'तो फिर सात महीने इंतजार कीजिए...'"

"'सज्जनों, सात महीने बहुत लंबा समय है...' 'तो छह महीने प्रतीक्षा करें,...पांच महीने,...चार महीने,...तीन महीने,...दो महीने,...एक महीना,...आधा महीना...'"

"'सज्जनों, आधा महीना बहुत लंबा समय है...' 'तो, आदरणीय प्रबंधक, बस सात दिन प्रतीक्षा कीजिए जब तक हम अपने राज्य अपने पुत्रों और भाइयों को सौंप देते हैं। सात दिनों के अंत में हम तपस्वी जीवन में प्रवेश करेंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।' 'सात दिन लंबा समय नहीं है, मैं सहमत हूँ, मेरे स्वामी।'

तब महा गोविंदा (महा गोविंदा) सात ब्राह्मणों और उनके सात सौ उन्नत शिष्यों के पास गए और उनसे कहा, "हे पूज्यवर, अब आपको मंत्रों का शिक्षण प्राप्त करने के लिए किसी अन्य गुरु की खोज करनी होगी। मैं गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में प्रवेश करने जा रहा हूँ। ब्रह्मा ने मुझे संसार की दुर्गंध के बारे में बताया है, जिसे गृहस्थ जीवन से आसानी से दूर नहीं किया जा सकता, इसलिए मैं तपस्वी जीवन में प्रवेश कर रहा हूँ।" "हे पूज्यवर, ऐसा मत कीजिए! तपस्वी जीवन में शक्ति और लाभ कम है, जबकि ब्राह्मण जीवन में शक्ति और लाभ अधिक है!" "ऐसी बातें मत कहिए, सज्जनों! इसके अलावा, मुझसे अधिक शक्ति और लाभ किसके पास है? मैं राजाओं के लिए राजा के समान, ब्राह्मणों के लिए ब्रह्मा के समान, गृहस्थों के लिए देवता के समान रहा हूँ, और जैसा कि मैंने समझाया है, मैं गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में प्रवेश करने के लिए यह सब त्याग रहा हूँ।" 'यदि आदरणीय स्टीवर्ड गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन अपनाते हैं, तो हम भी ऐसा ही करेंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।'

तब महा गोविंदा (महा गोविंदा) अपनी चालीस पत्नियों के पास गए और बोले: 'तुममें से जो भी महिला चाहे, अपने परिवार में वापस जाकर दूसरा पति खोज सकती है। मैं संन्यासी जीवन में जाने का इरादा रखता हूँ...' 'आप ही हमारे लिए एकमात्र रिश्तेदार हैं, एकमात्र पति जो हम चाहते हैं। यदि पूज्य स्वामी संन्यासी जीवन में जाते हैं, तो हम भी ऐसा ही करेंगे। आप जहाँ भी जाएँगे, हम आपका अनुसरण करेंगे।'

और महा गोविंदा ने सात दिनों के अंत में अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा ली, पीले वस्त्र धारण किए और गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में प्रवेश किया। उनके साथ सात अभिषिक्त क्षत्रिय राजा, सात धनी और प्रतिष्ठित ब्राह्मण अपने सात सौ उन्नत शिष्यों के साथ, उनकी चालीस समतुल्य पत्नियाँ, कई हजार क्षत्रिय, कई हजार ब्राह्मण, कई हजार गृहस्थ और कुछ हरम की स्त्रियाँ भी थीं।

और इस प्रकार, इस दल के साथ, महान प्रबंधक गांवों, कस्बों और राजसी शहरों में विचरण करते थे। और जब भी वे किसी गांव या कस्बे में आते थे, वे राजाओं के लिए राजा के समान, ब्राह्मणों के लिए ब्रह्मा के समान, और गृहस्थों के लिए देवता के समान होते थे। और उन दिनों, जब भी कोई छींकता या ठोकर खाता था, वे कहते थे: 'महान प्रबंधक की जय हो! सात के मंत्री की जय हो!'

और महा गोविंदा (महा गोविंदा) ने प्रेम से परिपूर्ण मन से एक भाग को, फिर दूसरे, तीसरे और चौथे भाग को भी व्याप्त किया। उन्होंने संपूर्ण जगत को, ऊपर, नीचे, चारों ओर, करुणा से परिपूर्ण मन से, सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण मन से, समभाव से परिपूर्ण मन से, घृणा और द्वेष से मुक्त मन से व्याप्त किया। इस प्रकार उन्होंने अपने शिष्यों को ब्रह्मलोक से मिलन का मार्ग सिखाया।

और उस समय जो भी महागुरु के शिष्य थे और जिन्होंने उनकी शिक्षा को पूर्णतः आत्मसात कर लिया था, वे शरीर के विखंडन के बाद ब्रह्मलोक में एक सुखमय लोक में पुनर्जन्म लेते थे। और जिन्होंने उनकी शिक्षा को पूर्णतः आत्मसात नहीं किया था, वे या तो परानिम्मित-वासवत्ती देवताओं के बीच, निम्मनारति देवताओं के बीच, तुषिता देवताओं के बीच, यम देवताओं के बीच, तैंतीस देवताओं के देवताओं के बीच, या चार महाराजों के देवताओं के बीच पुनर्जन्म लेते थे। और उनमें से जो भी सबसे निम्नतम लोक प्राप्त करते थे, वह गंधर्वों का था। इस प्रकार उन सभी लोगों का पुनर्जन्म निष्फल या बंजर नहीं था, बल्कि फलदायी और लाभदायक था।

"क्या आपको यह याद है, भगवान?" "हाँ, पंचसिखा। उस समय मैं ब्राह्मण था, महा गोविंदा, और मैंने उन शिष्यों को ब्रह्मलोक के साथ मिलन का मार्ग सिखाया था।"

"हे पंचसिखा, वह पवित्र जीवन (या ब्रह्मचर्य) वैराग्य, वैराग्य, शांति, परमज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर नहीं ले जाता, बल्कि केवल ब्रह्मलोक में जन्म की ओर ले जाता है, जबकि मेरा पवित्र जीवन निश्चय ही वैराग्य, वैराग्य, शांति, परमज्ञान, आत्मज्ञान, निर्वाण की ओर ले जाता है। यही आर्य अष्टांगिक मार्ग है, अर्थात् सही दृष्टि, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही एकाग्रता।"

"और, पंचसिखा, मेरे जिन शिष्यों ने मेरी शिक्षा को पूर्णतः आत्मसात कर लिया है, उन्होंने अपने अलौकिक ज्ञान से इसी जीवन में विकारों का नाश करके हृदय और मन की निर्मल स्वतंत्रता को प्राप्त कर लिया है। और जिन्होंने इसे पूर्णतः आत्मसात नहीं किया है, उनमें से कुछ पाँच निम्न बंधनों के नाश से स्वतः ही पुनर्जन्म लेंगे और इस संसार में वापस आए बिना निर्वाण को प्राप्त करेंगे; कुछ तीन बंधनों के नाश और लोभ, घृणा और मोह के कम होने से एक बार जन्म लेने वाले बनेंगे, जो दुखों का अंत करने से पहले एक बार अपने संसार में लौटेंगे; और कुछ तीन बंधनों के नाश से धारा-विजेता बनेंगे, जो दुखों की अवस्थाओं में नहीं पड़ सकते और ज्ञानोदय के प्रति आश्वस्त रहेंगे। इस प्रकार इन सभी लोगों का प्रस्थान निष्फल या बांझ नहीं था, बल्कि फलदायी और लाभदायक था।"

इस प्रकार भगवान ने कहा, और गंधर्वों में से पंचसिखा भगवान के वचनों से प्रसन्न और आनंदित हुआ। उसने उन्हें प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर से गुजर कर वहाँ से विमुख हो गया।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.7 महा-समय सुत्त(डीएन20)

मैंने सुना है कि एक बार भगवान कपिलवस्तु के विशाल वन क्षेत्र में शाक्यों के बीच निवास कर रहे थे, उनके साथ लगभग पाँच सौ भिक्षुओं का एक बड़ा संघ था, जो सभी अरहंत थे। दस लोकों के अधिकांश देवता भगवान और भिक्षु संघ के दर्शन के लिए एकत्रित हुए थे। तब शुद्ध लोकों के चार देवताओं के मन में यह विचार आया: "भगवान कपिलवस्तु के विशाल वन क्षेत्र में शाक्यों के बीच निवास कर रहे हैं, उनके साथ लगभग पाँच सौ भिक्षुओं का एक बड़ा संघ है, जो सभी अरहंत हैं। दस लोकों के अधिकांश देवता भगवान और भिक्षु संघ के दर्शन के लिए एकत्रित हुए हैं। आइए हम भी भगवान के पास जाएँ और वहाँ पहुँचकर उनके समक्ष एक-एक श्लोक का पाठ करें।"

फिर, जैसे कोई बलवान पुरुष अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैलाता है या फैलाई हुई भुजा को मोड़ता है, वैसे ही वे देवता शुद्ध लोकों के देवताओं के बीच से लुप्त हो गए और भगवान बुद्ध के समक्ष पुनः प्रकट हुए। भगवान बुद्ध को प्रणाम करने के बाद, वे एक तरफ खड़े हो गए। जब वे वहाँ खड़े थे, तब एक देवता ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में यह श्लोक पढ़ा:

वन में एक महान सभा: देवों की सेना एकत्रित हुई है। हम इस धम्म सभा में अजेय संघ के दर्शन करने आए हैं। तब एक अन्य देवता ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में यह श्लोक पढ़ा:

वहाँ भिक्षु एकाग्रचित्त हैं, उन्होंने अपने मन को स्थिर कर लिया है। सारथी की तरह, ज्ञानी लोग अपनी इंद्रियों को संजोए रखते हैं। फिर एक अन्य देवता ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में यह श्लोक पढ़ा:

बंजर भूमि को चीरते हुए, चौखट को काटते हुए, इंद्र के स्तंभ को उखाड़ते हुए, अविचलित होकर, वे शुद्ध, निष्कलंक विचरण करते हैं, युवा नाग जिन्हें दूरदर्शी ने भलीभांति प्रशिक्षित किया है। तब एक अन्य देवता ने भगवान बुद्ध की उपस्थिति में यह श्लोक पढ़ा:

जो बुद्ध की शरण में आए हैं, वे दुःख के लोक में नहीं जाएँगे। मानव शरीर त्यागकर वे देवमंडल में विलीन हो जाएँगे। तब भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, “भिक्षुओं, दस लोकों के अधिकांश देवता तथागत और भिक्षु संघ के दर्शन करने के लिए एकत्रित हुए हैं। जो अतीत में शुद्ध आत्मा-जागृत थे, उनका देवमंडल अधिकतम मेरे वर्तमान के समान ही था। जो भविष्य में शुद्ध आत्मा-जागृत होंगे, उनका देवमंडल अधिकतम मेरे वर्तमान के समान ही होगा। मैं तुम्हें देवमंडलों के नाम विस्तार से बताऊँगा। मैं तुम्हें देवमंडलों के नाम सिखाऊँगा। ध्यान से सुनो और ग्रहण करो। मैं बोलूँगा।”

“जैसा आप कहें, भगवान,” भिक्षुओं ने उत्तर दिया। भगवान बुद्ध ने कहा:

मैं स्तुतिगान का एक श्लोक पढ़ता हूँ। जो आत्माओं के निवास स्थान में रहते हैं, जो पर्वतीय गुफाओं में रहते हैं, दृढ़, एकाग्र, असंख्य, छिपे हुए शेरों के समान, जिन्होंने भय पर विजय प्राप्त की है, निर्मल, पवित्र, शांत और अविचलित: यह जानकर कि उनमें से 500 से अधिक कपिलवस्तु वन में आए हैं, गुरु ने अपने उपदेशों से प्रसन्न शिष्यों से कहा, "देवों की सेना आ गई है। हे भिक्षुओं, उनका पता लगाओ!" प्रबुद्ध गुरु के उपदेश को सुनकर उन्होंने लगन से प्रयास किया। उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, अमानवीय प्राणियों के दर्शन हुए। कुछ ने 100, कुछ ने 1,000, कुछ ने 70,000 देखे, कुछ ने 100,000 अमानवीय प्राणियों के दर्शन किए। कुछ ने असंख्य देवताओं के दर्शन प्राप्त किए जो हर दिशा में व्याप्त थे। यह सब जानकर, दिव्यदर्शी ने बोलने की प्रेरणा पाई। तब गुरु ने अपने शिष्यों से कहा, जो उनके उपदेशों से प्रसन्न थे, "देव सेनाएं आ गई हैं। हे भिक्षुओं, जैसे-जैसे मैं उनके महिमामंडनों का एक-एक करके वर्णन करता हूँ, वैसे-वैसे उनका पता लगाओ।"

कपिलवस्तु की भूमि में निवास करने वाले 7,000 यक्ष, जो शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित हैं, भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

हिमालय से आए 6,000 यक्ष, जो विभिन्न रंगों के हैं, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित हैं, भिक्षुओं की वन सभा में पहुंचे हैं।

साता पर्वत से विभिन्न रंगों के 3,000 यक्ष, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर भिक्षुओं की वन सभा की ओर आ रहे हैं।

विभिन्न रंगों वाले ये 16,000 यक्ष, जो शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित हैं, भिक्षुओं की वन सभा की ओर आ रहे हैं।

वेसमित्ता से आए 500 यक्ष, जो विभिन्न रंगों के, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित हैं, भिक्षुओं की वन सभा में पहुँच गए हैं।

राजगृह से कुंभिरा, जो वेपुल्ला पर्वत पर निवास करता है, 100,000 से अधिक यक्षों के साथ आया है - राजगृह से कुंभिरा: वह भी वन सभा में आया है।

और धतरत्थ, जो पूर्वी दिशा के राजा के रूप में, गंधर्वों के स्वामी के रूप में शासन करते हैं: वे एक महान और गौरवशाली राजा हैं, और उनके अनेक पुत्र इंद्र हैं, जो अत्यंत शक्तिशाली हैं। शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर वे भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

और वीरुल, जो दक्षिण दिशा के राजा और कुम्भंडों के स्वामी हैं: वे एक महान और गौरवशाली राजा हैं, और उनके अनेक पुत्र इंद्र हैं, जो अत्यंत शक्तिशाली हैं। शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर वे भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

और विरुपाक्खा, जो पश्चिम दिशा के राजा और नागों के स्वामी के रूप में शासन करते हैं: वे एक महान और गौरवशाली राजा हैं, और उनके अनेक पुत्र इंद्र हैं, जो अत्यंत शक्तिशाली हैं। शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर वे भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

और कुबेर, जो उत्तर दिशा के राजा और यक्षों के स्वामी हैं: वे एक महान और गौरवशाली राजा हैं, और उनके अनेक पुत्र इंद्र हैं, जो अत्यंत शक्तिशाली हैं। शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर वे भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

पूर्व दिशा से धतरत्था, दक्षिण से वीरुल्हक, पश्चिम से विरुपाक्खा, उत्तर दिशा से कुबेर: चारों दिशाओं को समाहित करने वाले ये चार महान राजा, तेजस्वी रूप में कपिलवस्तु वन में विराजमान हैं।

उनके कपटी सामंत भी आ गए हैं— छल-कपट, विश्वासघाती— माया, कुतेन्दु, वेतेन्दु, वितु और वितुता, चंदन (कामुक सुख का स्वामी), किन्नुघंडु, निघंडु, पाणदा (नकलची), मतली (देवों का सारथी), चित्तसेना (गंधब्बत), राजा नल (जनता का बैल), पंचसिखा (तिंबरू और उसकी पुत्री सूरियावच्छसा) के साथ आए हैं। ये और अन्य राजा, अपने राजाओं सहित गंधब्बत, आनंद मनाते हुए भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

फिर नभासा, वेसाली और तच्चका झील से भी नागा आए हैं। कम्बलस, अस्सटारस, पयागास और उनके परिजन। और यमुना नदी से प्रतिष्ठित नागा, धतरत्थ आते हैं। महान नागा एरावन्ना: वह भी वन सभा में आये हैं।"

नाग राजाओं पर शीघ्रता से आक्रमण करने वाले, दिव्य, द्विज, पंखयुक्त, शुद्ध दृष्टि वाले गरुड़ आकाश से वन के मध्य में आए। चित्रा और सुपन्ना उनके नाम हैं। लेकिन बुद्ध ने नाग राजाओं को सुरक्षित किया, उन्हें सुपन्ना से बचाया। एक-दूसरे से स्नेहपूर्ण शब्दों में बात करते हुए, नागों और सुपन्नाओं ने बुद्ध को अपना आश्रय बनाया।

"ज्वलित हाथ वाले इंद्र से पराजित, समुद्र में रहने वाले असुर, वासव के भाई - शक्तिशाली, प्रतिष्ठित - अत्यंत भयानक कालकंज, दानवेघास असुर वेपचित्ति और सुचित्ति, पहाड़द, नमुचि के साथ, और बलि के सौ पुत्र, सभी वेरोका नाम के, शक्तिशाली सेनाओं से सुसज्जित होकर अपने आदरणीय राहु के पास पहुँचे और बोले: 'हे भगवान, अब भिक्षुओं की वन सभा का अवसर है।'"

जल, पृथ्वी, अग्नि और वायु के देवता यहाँ आए हैं। वरुण, सोम और यश सहित सद्भावना और करुणा के देवों की सेना के प्रतिष्ठित देवता यहाँ आए हैं। ये दस प्रकार के देव, विभिन्न रंगों वाले, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर भिक्षुओं की वन सभा में पहुँचे हैं।

विष्णु और सहाली, असम और यम जुड़वाँ, चंद्रमा पर आश्रित और चंद्रमा के चारों ओर घूमने वाले देवता आ गए हैं। सूर्य पर आश्रित और सूर्य के चारों ओर घूमने वाले देवता आ गए हैं। राशि चक्र के तारों के चारों ओर घूमने वाले देवता और बादलों के अप्सराएँ आ गए हैं। वसुओं के मुखिया, प्राचीन दानदाता सक्का आ गए हैं। ये दस गुना देवमंडल, सभी विविध रंगों वाले, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर, भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

फिर सहभू देव अग्नि की लपटों के समान प्रज्वलित होकर आते हैं। अरित्तक, रोज, नीले रंग के देव, वरुण और सहधम्म, अच्चुत और अनेजक, सुलेय्या और रुचिर, और वासवनेसी देव आ चुके हैं। ये दस प्रकार के देव, विविध रंगों वाले, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुंचे हैं।

समना और महा समना, मनुसा और महा मनुसा, क्रीड़ा में लिप्त देवता, साथ ही मन में लिप्त देवता भी आ चुके हैं। फिर स्वर्ण-परागित देवता और लाल वस्त्र धारण करने वाले देवता आते हैं। पराग और महा पराग, प्रतिष्ठित देवता आ चुके हैं। ये दस प्रकार के देव, सभी विविध रंगों वाले, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित, भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

श्वेत देव, लालिमा लिए हरे देव, भोर के देव, पूर्णतः श्वेत वस्त्र धारण किए हुए देवों के नेतृत्व में वेघनों के साथ आ चुके हैं। विच्छण आ चुके हैं। सदामत्त, हरगज और प्रतिष्ठित बहुरंगी देव, प्रज्वलित पजुन्न, जो हर दिशा में वर्षा लाते हैं: ये दस विविध देवों की सेना, जो विभिन्न रंगों से परिपूर्ण, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित हैं, भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँची हैं।

खेमिया, तुषिता और यम, प्रतिष्ठित कत्थक, लम्बितक और लामा प्रमुख, ज्योतिनामा और आसव, निम्मनारती, और परानिम्मिता आ चुके हैं। ये दस प्रकार के देवमंडल, सभी विविध रंगों वाले, शक्तिशाली, तेजस्वी, आकर्षक, प्रतिष्ठित और आनंदित होकर भिक्षुओं की वन सभा में आ पहुँचे हैं।

ये 60 देव समूह, सभी विविध रंगों के, एक क्रम में व्यवस्थित होकर आए हैं, साथ ही अन्य भी इसी प्रकार [सोच रहे हैं:] 'हम उन्हें देखेंगे जिन्होंने जन्म को पार कर लिया है, जिनकी कोई सीमा नहीं है, जिन्होंने बाढ़ को पार कर लिया है, जो सर्वशक्तिमान हैं, बुराई से परे हैं, जैसे बादल से निकला चंद्रमा।'

सुब्रह्म और परमत्त ब्रह्मा, सर्वशक्तिमान के पुत्रों सनंकुमार और तिस्सा सहित, वन सभा में आए हैं। महान ब्रह्मा, जो 1000 ब्रह्म लोकों पर विराजमान हैं, जो वहाँ स्वतः प्रकट हुए, तेजस्वी हैं: वे गौरवशाली हैं, भयानक शरीर वाले हैं। और दस ब्रह्मा सम्राट, जिनमें से प्रत्येक अपने-अपने राज्य का स्वामी है - और उनके बीच हरिता ब्रह्मा अपने अनुयायियों से घिरे हुए आए हैं।

जब ये सभी देवता इंद्र और ब्रह्मा सहित आ गए, तो मारा भी आ गया। अब उस अंधकारमय देवता की मूर्खता तो देखो! [उसने कहा:] "आओ, इन्हें पकड़ो! इन्हें बांधो! इन्हें वासना से जकड़ लो! इन्हें चारों ओर से घेर लो! किसी को भी भागने मत दो!" इस प्रकार उस महान योद्धा ने अपने हाथ से ज़मीन पर थपथपाते हुए, अपनी अंधकारमय सेना को उकसाया, जिससे एक भयानक शोर मच गया, मानो कोई तूफ़ानी बादल गरज, बिजली और मूसलाधार बारिश के साथ फट रहा हो। लेकिन फिर वह क्रोधित होकर पीछे हट गया, किसी को भी अपने वश में नहीं कर पाया। यह सब जानकर, दूरदर्शी ने बोलने का निश्चय किया। तब गुरु ने अपने शिष्यों से कहा, जो उनके उपदेशों से प्रसन्न थे, "मारा की सेना आ गई है। भिक्षुओं, उनका पता लगाओ!" प्रबुद्ध गुरु के निर्देश को सुनकर, उन्होंने पूरी लगन से प्रयास किया। सेना उन लोगों से पीछे हट गई जो वासना से रहित थे, उनके शरीर पर एक बाल भी नहीं उठा। युद्ध में जीत हासिल करने के बाद - प्रतिष्ठा से भरपूर, भय से परे - वे सभी प्राणियों के साथ आनंद मनाते हैं: मानव जाति में उत्कृष्ट शिष्य।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.8 सक्कपन्हा सुत्त(डीएन21)

(देवताओं/देवदूतों के राजा इंद्र (शक्र) के प्रश्न)

मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान मगध में, राजगृह के पूर्व में, अम्बासंडा नामक ब्राह्मण गाँव के पास, वेदिया पर्वत के उत्तर में स्थित इंद्रशाला गुफा में ठहरे हुए थे। उस समय देवताओं के स्वामी सक्का को भगवान के दर्शन करने की तीव्र इच्छा हुई। सक्का ने सोचा, 'परमेश्वर, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, अब कहाँ ठहरे हुए हैं?' तब भगवान के स्थान का ज्ञान प्राप्त करके सक्का ने तैंतीस देवताओं से कहा, 'हे सज्जनों, भगवान अब मगध में, राजगृह के पूर्व में, अम्बासंडा नामक ब्राह्मण गाँव के पास, वेदिया पर्वत के उत्तर में स्थित इंद्रशाला गुफा में ठहरे हुए हैं। यदि हम जाकर भगवान के दर्शन करें तो कैसा रहेगा?'

'बहुत अच्छा, भगवान, और आपको सौभाग्य प्राप्त हो,' तैंतीस देवताओं ने उत्तर दिया।

तब सक्का ने गंधर्वों के पंचसिखा से कहा: 'भगवान राजगृह के पूर्व में, अम्बासंडा नामक ब्राह्मण गाँव के पास, और उस गाँव के उत्तर में वेदिया पर्वत पर स्थित इंद्रशाला गुफा में मगध में ठहरे हुए हैं। मैं उनसे मिलने जाना चाहता हूँ।'

'बहुत अच्छा, भगवान,' पंचसिखा ने कहा और अपना पीला बेलुव-लकड़ी का वीणा लेकर सक्का के पीछे चल पड़ा। और, जैसे कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को तेज़ी से फैलाता है या फिर से मोड़ता है, वैसे ही तैंतीस देवताओं से घिरे और पंचसिखा के साथ सक्का, तैंतीस देवताओं के स्वर्ग से विलीन हो गया और राजगृह के पूर्व में, अम्बासंडा नामक ब्राह्मण गाँव के पास, वेदिया पर्वत पर स्थित गाँव के उत्तर में, मगध में प्रकट हुआ।

फिर वेडिया पर्वत पर एक प्रचंड प्रकाश चमका, जिससे अम्बासंडा गाँव जगमगा उठा — देवताओं की शक्ति इतनी महान थी कि आसपास के गाँवों में लोग कहने लगे: 'देखो! आज वेडिया पर्वत में आग लग गई है! यह जल रहा है! यह लपटों में घिरा हुआ है! क्या बात है कि वेडिया पर्वत और अम्बासंडा इस तरह जगमगा रहे हैं?' और वे इतने भयभीत हो गए कि उनके रोंगटे खड़े हो गए।

तब सक्का ने कहा: 'पंचसिखा, जब तथागत ध्यान की अवस्था में लीन होते हैं और एकांत में रहते हैं, तो हम जैसे लोगों के लिए उनके निकट जाना कठिन होता है। परन्तु हे पंचसिखा, यदि तुम सर्वप्रथम भगवान का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लो, तो हम भी उनके पास जाकर पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध के दर्शन कर सकेंगे।'

'बहुत अच्छा, भगवान,' पंचसिखा ने कहा और अपना पीला बेलुव-लकड़ी का वीणा लेकर इंद्रशाला गुफा की ओर चल पड़ा। यह सोचते हुए कि 'यह न तो भगवान से बहुत दूर है और न ही बहुत पास, और वे मेरी वाणी सुन लेंगे,' वह एक तरफ खड़ा हो गया। फिर, अपने वीणा की धुन पर, उसने बुद्ध, धर्म, अरहंतों और प्रेम की स्तुति में ये श्लोक गाए:

'महोदया, आपके पिता टिंबारू का नमस्कार।'

ओह, सुंदर धूप, मैं उसे उचित सम्मान देता हूँ।

किसके पुत्र ने तुम्हारे जैसी सुंदर कन्या को जन्म दिया?

मेरे हृदय की प्रसन्नता का कारण कौन है?

पसीने से तरबतर व्यक्ति के लिए हवा के झोंके की तरह सुखद।

या प्यासे व्यक्ति के लिए शीतल पेय के समान,

आपकी असीम सुंदरता मुझे अत्यंत प्रिय है।

जिस प्रकार धम्म अरहंतों के लिए है।

जैसे बीमार व्यक्ति के लिए दवा,

या फिर किसी भूखे व्यक्ति को पोषण प्रदान करना,

हे कृपालु महिला, मुझे मुक्ति दिलाओ।

मेरी प्रचंड ज्वालाओं से ठंडा हुआ पानी।

गर्मी से बेहाल हाथी

वह एक कमल-कुंड की तलाश करता है जिस पर वह तैर सके।

उस फूल की पंखुड़ियाँ और परागकण

तो मैं तुम्हारी प्यारी गोद में समा जाऊंगा।

जैसे हाथी को अंकुश से प्रेरित किया जाता है,

भाले और बरछी के चुभन की परवाह नहीं करता।

इसलिए मैं अनभिज्ञ होकर यह नहीं जानता कि मैं क्या कर रहा हूँ।

तुम्हारे सुंदर रूप से मोहित हो गया हूँ।

तुम्हारे द्वारा मेरा हृदय दृढ़ बंधनों में जकड़ा हुआ है।

मेरे सारे विचार पूरी तरह बदल गए हैं, और मैं

मुझे अपना पुराना कोर्स अब नहीं मिल रहा है:

मैं उस मछली की तरह हूँ जो कांटे में फंस गई हो।

आओ, मुझे गले लगाओ, सुंदर जांघों वाली कन्या।

अपनी प्यारी आँखों से मुझे थाम लो,

मुझे अपनी बाहों में ले लो, बस यही मेरी विनती है!

हे कन्या, मेरी इच्छा पहले तो बहुत कम थी।

लहराते बालों की लटें, लेकिन वे तेजी से बढ़ रही थीं।

जैसे-जैसे अरहंतों को मिलने वाले वरदान बढ़ते जाते हैं।

मैंने उपहारों से जो भी पुण्य अर्जित किया है

उन महानुभावों को मेरा प्रतिफल प्राप्त हो।

जब यह पक जाए, तो मेरा प्यार बन जाना, मेरे सूर्य!

ठीक वैसे ही जैसे वह ऋषि प्रसन्न होते, यदि वह

यदि किसी को सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हो जाए,

इसलिए मुझे आपके साथ एक हो जाने में बहुत खुशी होगी।

यदि सक्का, तैंतीस देवताओं के स्वामी

यदि संयोगवश आप मुझे कोई वरदान प्रदान करें,

मुझे सिर्फ तुम्हारी ही चाहत है, तुम्हारे लिए मेरा प्यार बहुत प्रबल है।

हे बुद्धिमान कन्या, आपके पिता, मैं उनका आदर करता हूँ।

जैसे कोई साल का पेड़ पूरी तरह से खिल गया हो,

अपने प्यारे और सुंदर बच्चों की खातिर।'

यह सुनकर भगवान ने कहा, 'पंचसिखा, तुम्हारे वाद्ययंत्रों की ध्वनि तुम्हारे गीत के साथ इतनी अच्छी तरह घुलमिल जाती है, और तुम्हारा गीत वाद्ययंत्रों के साथ, कि न तो कोई दूसरे पर हावी होता है। तुमने बुद्ध, धर्म, अरहंतों और प्रेम पर ये श्लोक कब रचे?'

हे भगवान, यह उस समय की बात है जब भगवान बुद्ध ज्ञान प्राप्ति से पहले नेरंजारा नदी के किनारे एक चरवाहे के बरगद के पेड़ के नीचे ठहरे हुए थे। उस समय मुझे गंधर्व वंश के राजा तिंबरू की पुत्री, सूर्य के समान तेजस्वी भद्दा से प्रेम हो गया। परन्तु वह किसी और से प्रेम करती थी। वह सारथी मताली के पुत्र सिखद्दी से प्रेम करती थी। जब मुझे पता चला कि मैं किसी भी तरह से उसे प्राप्त नहीं कर सकता, तो मैंने अपना पीला बेलुवा-लकड़ी का वीणा उठाया और गंधर्व वंश के राजा तिंबरू के घर गया, और वहाँ मैंने वे श्लोक गाए। हे भगवान, श्लोक सुनकर भद्दा सूर्यवाच्चा ने मुझसे कहा: 'हे भगवान, मैंने स्वयं उस भगवान को नहीं देखा है, यद्यपि मैंने उनके बारे में तब सुना था जब मैं तैंतीस देवताओं के सुधम्म हॉल में नृत्य करने गई थी।' और चूंकि, महोदय, आप उस परम भगवान की इतनी प्रशंसा करते हैं, तो आइए आज मिलते हैं। और इस प्रकार, भगवान, मैं उस महिला से मिला, तब नहीं बल्कि बाद में।

तब सक्का ने सोचा, 'पंचसिखा और भगवान आपस में सौहार्दपूर्ण बातचीत कर रहे हैं,' इसलिए उसने पंचसिखा को पुकारा: 'हे प्रिय पंचसिखा, मेरी ओर से भगवान को प्रणाम करो और कहो, "भगवान सक्का, देवताओं के राजा, अपने सेवकों और अनुयायियों के साथ, भगवान के चरणों में नमन करते हैं।"'

'बहुत अच्छा, भगवान,' पंचसिखा ने कहा और वैसा ही किया।

'पंचसिखा, देवताओं के राजा सक्का, उनके मंत्री और अनुयायी सभी प्रसन्न रहें, क्योंकि वे सभी सुख की कामना करते हैं: देव, मनुष्य, असुर, नाग, गंधर्व और अन्य सभी प्राणी समूह!' तथागत ऐसे शक्तिशाली प्राणियों का इसी प्रकार अभिवादन करते हैं। इस अभिवादन के बाद, सक्का इंद्रशाला गुफा में प्रवेश कर गए, भगवान को प्रणाम किया और एक तरफ खड़े हो गए, और पंचसिखा सहित तैंतीस देवताओं ने भी ऐसा ही किया।

फिर इंदसला गुफा में, देवताओं की शक्ति से, उबड़-खाबड़ रास्ते चिकने हो गए, संकरे हिस्से चौड़े हो गए और घोर अंधेरी गुफा उजाले से भर गई। तब भगवान ने सक्का से कहा: 'यह अद्‌भुत है, यह चमत्कार है कि पूज्य कोसिया, जिनके पास करने के लिए बहुत कुछ है, यहाँ आए हैं!' 'भगवान, मेरी बहुत समय से भगवान के दर्शन करने की इच्छा थी, लेकिन मैं तैंतीस देवताओं के कार्य में इतना व्यस्त रहा कि आ नहीं सका। एक बार भगवान श्रावस्ती में सलाला कुटिया में ठहरे हुए थे, और मैं भगवान के दर्शन करने श्रावस्ती गया।'

उस समय भगवान किसी ध्यान में बैठे थे, और राजा वेसवना की पत्नी भुंजतु उनकी सेवा में हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम कर रही थीं। मैंने उनसे कहा, "देवी, कृपया मेरी ओर से भगवान को प्रणाम करें और कहें: 'देवताओं के राजा सक्का अपने सेवकों और अनुयायियों के साथ भगवान के चरणों में प्रणाम करते हैं।' लेकिन उन्होंने कहा, "महोदय, भगवान के दर्शन का यह सही समय नहीं है, वे ध्यान में हैं।"

"तो फिर, देवी, जब भगवान ध्यान से उठें, तो कृपया उन्हें मेरा संदेश बता दें।" हे भगवान, क्या उस महिला ने मेरी ओर से आपको प्रणाम किया और क्या भगवान को उनका संदेश याद है?

'उन्होंने मुझे, देवताओं के राजा, प्रणाम किया और मुझे याद है कि उन्होंने क्या कहा था। मुझे यह भी याद है कि आपके रथ के पहियों ने ही मुझे मेरी ध्यान अवस्था से जगाया था।'

हे भगवान, मुझसे पहले तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में अवतरित हुए उन देवताओं ने मुझे बताया और आश्वस्त किया है कि जब भी तथागत, पूर्णतः प्रबुद्ध अरहंत बुद्ध संसार में अवतरित होते हैं, तो देवताओं की संख्या बढ़ जाती है और असुरों की संख्या घट जाती है। वास्तव में, मैंने स्वयं इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है। हे भगवान, यहीं कपिलवस्तु में गोपिका नामक एक शाक्य कन्या थी, जिसे बुद्धों, धम्म और संघ में गहरी आस्था थी और जो नियमों का पूर्णतया पालन करती थी। उसने स्त्रीत्व का त्याग कर पुरुष बनने का विचार किया। फिर, उसकी मृत्यु के बाद, शरीर के विखंडन के समय, वह एक सुखद गंतव्य पर गई, तैंतीस देवताओं के बीच स्वर्ग में पुनर्जन्म लेकर, हमारे पुत्रों में से एक के रूप में, देवताओं के पुत्र गोपका के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके अलावा, तीन भिक्षु थे जिन्होंने भगवान के मार्गदर्शन में पवित्र जीवन व्यतीत किया और गंधर्वों के निम्नतम रूप में पुनर्जन्म लिया। वे हमारे परिचारकों और सेवकों के रूप में पाँचों इंद्रियों के सुखों में लिप्त होकर जीवन व्यतीत करते थे। इस पर गोपाका ने उन्हें फटकारते हुए कहा, "हे महाराज, आप किस बात में लिप्त थे कि आपने भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का पालन नहीं किया? मैं बुद्ध में आस्था रखने वाली स्त्री थी... मैंने स्त्रीत्व का त्याग कर दिया... और तैंतीस देवताओं के बीच पुनर्जन्म लेकर गोपाका देव पुत्र के रूप में जानी जाती हूँ। परन्तु आप, भगवान बुद्ध के अधीन पवित्र जीवन व्यतीत करने के बाद, गंधर्वों के निम्न जीवन में पुनर्जन्म लेकर आए हैं!" इस प्रकार फटकार सुनकर उन दोनों देवों ने तुरंत सजगता प्राप्त कर ली और ब्रह्मा के अनुचरों के धाम को प्राप्त कर लिया। परन्तु उनमें से एक इंद्रिय सुखों में लिप्त रहा।

गोपाका ने कहा:

"एक बार उस सर्वज्ञानी के अनुशासन का पालन करो,"

उस समय मेरा नाम गोपिका था।

बुद्ध, धम्म पर दृढ़ विश्वास रखते हुए

मैंने संघ की सेवा प्रसन्नतापूर्वक की।

उन्हें दी गई निष्ठापूर्ण सेवा के लिए

अब मुझे देखो, मैं सक्का का पुत्र हूँ।

त्रिविध स्वर्ग में पराक्रमी

तेजस्वी; मेरा नाम गोपाका है।

फिर मैंने पूर्व भिक्षुओं को देखा, जो पहुँच चुके थे।

गंधब्बा के पद से ऊँचा नहीं।

जिनका मानव जन्म पहले हुआ था

और उन्होंने बुद्ध द्वारा सिखाई गई जीवनशैली का अनुसरण किया।

हमने उन्हें भोजन और पेय पदार्थ उपलब्ध कराए।

और हमने अपने घरों में उनकी सेवा की।

क्या उनके कान नहीं थे, कि वे इस प्रकार आशीर्वाद देते?

फिर भी बुद्ध के नियम को नहीं समझ पाए?

प्रत्येक को स्वयं ही समझना होगा

वह धम्म जो दृष्टिवान व्यक्ति द्वारा सिखाया जाता है,

और अच्छी तरह से प्रचारित। मैं, आपकी सेवा में,

मैंने उस महान व्यक्ति के अच्छे शब्द सुने,

और इस तरह मेरा जन्म हुआ, एक सक्का पुत्र के रूप में।

त्रिविध स्वर्ग में पराक्रमी,

और तेजस्वी, जबकि आप,

यद्यपि आपने मनुष्यों के राजकुमार की सेवा की

और उन्होंने स्वयं वैसा ही अनुकरणीय जीवन जिया जैसा उन्होंने सिखाया था।

विनम्र अवस्था में पुनः प्रकट हुए हैं

और आपने अपना उचित पद प्राप्त नहीं किया है,

यह देखना बेहद दुखद दृश्य है।

अपने धर्म-साथियों को इतनी नीचता पर ले जाने लगा

हे गंधब्बा-आत्माओं, तुम

लेकिन देवताओं की सेवा करने आओ,

और मैं तो पूरी तरह बदल गया हूँ!

घरेलू जीवन से, और स्त्री होने से, मैं

अब मेरा पुनर्जन्म एक पुरुष के रूप में हुआ है, एक देवता के रूप में।

दिव्य आनंद में मग्न!

जब गोपाका ने इस प्रकार फटकार लगाई,

गौतम का सच्चा शिष्य,

अत्यंत व्याकुल होकर उन सभी ने उत्तर दिया:

"अफ़सोस, चलो चलते हैं और पूरी ताकत से प्रयास करते हैं।"

और अब दूसरों के गुलाम मत बनो!

और उन तीनों में से दो को काफी संघर्ष करना पड़ा।

और शिक्षक के वचन को ध्यान में रखा।

उन्होंने अपने हृदयों को कामवासना से मुक्त किया।

इच्छाओं में खतरे को भांपना,

और उस हाथी की तरह जो फट जाता है

उन्होंने सभी बंधन तोड़ दिए।

कामवासना के बंधन और बेड़ियाँ,

उस शैतान की बेड़ियाँ

इस पर काबू पाना बहुत मुश्किल है — और इस प्रकार

स्वयं देवता, तैंतीस

इंद्र और प्रजापति के साथ,

काउंसिल हॉल में कौन सिंहासन पर विराजमान था?

ये दोनों नायक, अपनी वासनाओं से मुक्त,

उन्हें पछाड़ दिया और बहुत पीछे छोड़ दिया।

यह देखकर वासावा भयभीत हो गया।

उन देवताओं के समूह में सबसे प्रमुख,

रोते हुए बोला, "देखो ये निचले दर्जे के लोग कैसे हैं।"

तैंतीस देवताओं को भी पीछे छोड़ दो!

फिर अपने शासकों के भय के बारे में सुनकर...

गोपाका ने वासवा से कहा:

मनुष्य जगत में भगवान इंद्र

एक बुद्ध, जिन्हें शाक्य ऋषि कहा जाता है,

उसने कामवासना पर महारत हासिल कर ली है।

और ये उनके वे शिष्य थे जो असफल हो गए थे।

मृत्यु के समय सचेतन अवस्था में,

अब मैंने मेरी मदद से इसे वापस पा लिया है।

हालांकि उनमें से एक पीछे छूट गया है

और गंधबों के बीच अभी भी निवास करता है,

ये दोनों, सर्वोच्च ज्ञान के आधार पर स्थापित हैं,

गहन ध्यान में देवताओं को भी ठुकरा दो!

किसी भी शिष्य को कभी संदेह नहीं होना चाहिए

वह सत्य अभी भी साकार हो सकता है

इन आवासों में रहने वालों द्वारा।

जिसने बाढ़ पार कर ली और आगे बढ़ गया

सभी शंकाओं का अंत, हमारी ओर से उचित सम्मान,

हम बुद्ध, विजेता, भगवान को अर्पित करते हैं।"

यहां भी उन्हें सच्चाई का पता चल गया, और इसलिए

उच्चतर प्रतिष्ठा की सीमा को पार कर चुके हैं।

उन दोनों ने इससे भी ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया है।

ब्रह्मा के अनुचरों के लोकों में। और हम

हे भगवान, हम इस आशा से आए हैं कि हमें लाभ प्राप्त होगा।

वह सत्य, और यदि भगवान हमें अनुमति दें,

अपने प्रश्न भगवान से पूछने के लिए।

तब भगवान ने सोचा: 'सक्का ने लंबे समय तक पवित्र जीवन व्यतीत किया है। वह जो भी प्रश्न पूछेगा, वे प्रासंगिक होंगे, निरर्थक नहीं, और वह मेरे उत्तरों को शीघ्रता से समझ लेगा।' अतः भगवान ने सक्का को इस श्लोक में उत्तर दिया:

'सक्का, जो कुछ भी तुम चाहो, मुझसे मांग लो!'

आपके सवाल का मैं जवाब दे दूंगा।

इस प्रकार आमंत्रित किए जाने पर, देवताओं के स्वामी सक्का ने भगवान से अपना पहला प्रश्न पूछा: 'हे भगवान, किन बंधनों से प्राणी बंधे हुए हैं - देवता, मनुष्य, असुर, नाग, गंधर्व और अन्य सभी प्रकार के प्राणी - जिनके कारण, यद्यपि वे घृणा, द्वेष, शत्रुता या दुर्भावना के बिना शांति से रहना चाहते हैं, फिर भी वे घृणा में लीन रहते हैं, एक दूसरे को हानि पहुँचाते हैं, शत्रुतापूर्ण और द्वेषपूर्ण व्यवहार करते हैं?' यह सक्का का भगवान से पहला प्रश्न था, और भगवान ने उत्तर दिया: 'हे देवताओं के स्वामी, ईर्ष्या और लोभ के बंधन ही प्राणियों को बांधते हैं, जिसके कारण यद्यपि वे घृणा के बिना रहना चाहते हैं... फिर भी वे घृणा में लीन रहते हैं, एक दूसरे को हानि पहुँचाते हैं, शत्रुतापूर्ण और द्वेषपूर्ण व्यवहार करते हैं।' यह भगवान का उत्तर था, और सक्का प्रसन्न होकर बोले: 'हे भगवान, ऐसा ही है, हे शुभचिंतक! भगवान के उत्तर से मेरा संदेह और अनिश्चितता दूर हो गई है!'

तब सक्का ने अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के बाद एक और प्रश्न पूछा: 'परन्तु महोदय, ईर्ष्या और लोभ किस कारण उत्पन्न होते हैं, इनका मूल क्या है, ये कैसे पैदा होते हैं, कैसे उत्पन्न होते हैं? किसकी उपस्थिति के कारण ये उत्पन्न होते हैं, किसकी अनुपस्थिति के कारण ये उत्पन्न होते हैं?'

'हे देवताओं के स्वामी, ईर्ष्या और लोभ, पसंद और नापसंद से उत्पन्न होते हैं; यही इनका मूल है; इसी प्रकार इनका जन्म होता है; जब ये मौजूद होते हैं, तब इनका जन्म होता है; जब ये अनुपस्थित होते हैं, तब इनका जन्म नहीं होता।'

लेकिन महोदय, पसंद और नापसंद किस कारण उत्पन्न होती है?... किसकी उपस्थिति के कारण वे उत्पन्न होती हैं, और किसकी अनुपस्थिति के कारण वे उत्पन्न नहीं होती हैं?

'हे देवताओं के स्वामी, वे इच्छा से उत्पन्न होते हैं... इच्छा की उपस्थिति के कारण वे उत्पन्न होते हैं, इच्छा की अनुपस्थिति के कारण वे उत्पन्न नहीं होते।'

'लेकिन महोदय, इच्छा का जन्म किस कारण होता है?'

'देवताओं के स्वामी, इच्छा चिंतन से उत्पन्न होती है... जब मन किसी बात पर चिंतन करता है, तो इच्छा उत्पन्न होती है; जब मन किसी बात पर चिंतन नहीं करता, तो इच्छा उत्पन्न नहीं होती।'

लेकिन महोदय, सोचने की क्षमता किस चीज से उत्पन्न होती है?

'विस्तार की प्रवृत्ति से ही चिंतन का जन्म होता है... जब यह प्रवृत्ति मौजूद होती है, तब चिंतन का जन्म होता है; जब यह अनुपस्थित होती है, तब चिंतन का जन्म नहीं होता।'

'महोदय, उस भिक्षु ने कौन सा अभ्यास किया है जिसने सही मार्ग प्राप्त कर लिया है जो आवश्यक है और प्रजनन की प्रवृत्ति को रोकने की ओर ले जाता है?'

'देवताओं के स्वामी, मैं घोषणा करता हूँ कि सुख दो प्रकार के होते हैं: एक वह जिसे पाने का प्रयास करना चाहिए, और दूसरा वह जिससे बचना चाहिए। यही बात दुख और समभाव पर भी लागू होती है।'

'मैंने सुख के विषय में यह क्यों कहा? सुख को मैं इस प्रकार समझता हूँ: जब मैंने देखा कि ऐसे सुख की खोज में अशुभ तत्व बढ़ते हैं और शुभ तत्व घटते हैं, तो ऐसे सुख से बचना चाहिए। और जब मैंने देखा कि ऐसे सुख की खोज में अशुभ तत्व घटते हैं और शुभ तत्व बढ़ते हैं, तो ऐसे सुख की प्राप्ति करनी चाहिए। अब, चिंतन और मनन से युक्त सुख और बिना चिंतन से युक्त सुख में, बाद वाला अधिक श्रेष्ठ है। यही बात दुख और समभाव पर भी लागू होती है। और हे देवताओं के स्वामी, यही वह अभ्यास है जिसे सही मार्ग पर चलने वाले भिक्षु ने अपनाया है... जो प्रजनन की प्रवृत्ति को समाप्त करता है।' और सक्का ने भगवान के उत्तर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

तब सक्का ने अपनी प्रशंसा व्यक्त करने के बाद एक और प्रश्न पूछा: 'अच्छा, महोदय, उस भिक्षु ने कौन सा अभ्यास किया है जिसने नियमों के अनुसार आवश्यक संयम प्राप्त कर लिया है?'

हे देवताओं के स्वामी, मैं घोषणा करता हूँ कि शारीरिक आचरण दो प्रकार के होते हैं: एक वह जिसका पालन करना चाहिए और दूसरा वह जिससे बचना चाहिए। यही बात वाणी और लक्ष्यों की प्राप्ति पर भी लागू होती है। मैंने शारीरिक आचरण के संबंध में यह क्यों कहा है? क्योंकि मैंने शारीरिक आचरण को इस प्रकार समझा है: जब मैंने देखा कि कुछ कर्मों के करने से अस्वास्थ्यकर कारक कम होते हैं और स्वास्थ्यकर कारक बढ़ते हैं, तो ऐसे कर्मों का पालन करना चाहिए। इसीलिए मैंने यह भेद किया है। यही बात वाणी और लक्ष्यों की प्राप्ति पर भी लागू होती है। और हे देवताओं के स्वामी, यही वह अभ्यास है जिसे उस भिक्षु ने अपनाया है जिसने नियमों के अनुसार आवश्यक संयम प्राप्त कर लिया है। और सक्का ने भगवान के उत्तर पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

तब सक्का ने एक और प्रश्न पूछा: 'अच्छा, महोदय, उस भिक्षु ने कौन सा अभ्यास किया है जिसने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है?'

'देवताओं के स्वामी, मैं घोषणा करता हूँ कि आँखों से देखी जाने वाली वस्तुएँ दो प्रकार की होती हैं: एक वो जिनका पीछा किया जाना चाहिए, और दूसरी वो जिनसे बचा जाना चाहिए। यही बात कान, नाक, जीभ, शरीर और मन द्वारा देखी जाने वाली वस्तुओं पर भी लागू होती है।'

इस पर सक्का ने कहा, "हे भगवान, भगवान ने संक्षेप में जो बताया है, उसका सही अर्थ मैं भली-भांति समझ गया हूँ। हे भगवान, आँख से दिखाई देने वाली कोई भी वस्तु, यदि उसकी खोज से अस्वास्थ्यकर तत्व बढ़ते हैं और स्वास्थ्यकर तत्व घटते हैं, तो उसकी खोज नहीं करनी चाहिए; यदि उसकी खोज से अस्वास्थ्यकर तत्व घटते हैं और स्वास्थ्यकर तत्व बढ़ते हैं, तो ऐसी वस्तु की खोज करनी चाहिए। यही बात कान, नाक, जीभ, शरीर और मन से अनुभव की जाने वाली वस्तुओं पर भी लागू होती है। इस प्रकार मैं भगवान ने संक्षेप में जो बताया है, उसका सही अर्थ भली-भांति समझ गया हूँ, और इस प्रकार भगवान के उत्तर से मैंने अपने संदेह को दूर कर लिया है और अनिश्चितता से छुटकारा पा लिया है।"

तब सक्का ने एक और प्रश्न पूछा: 'हे महोदय, क्या सभी तपस्वी और ब्राह्मण एक ही सिद्धांत का उपदेश देते हैं, एक ही अनुशासन का अभ्यास करते हैं, एक ही चीज चाहते हैं और एक ही लक्ष्य का पीछा करते हैं?'

'नहीं, देवताओं के शासक, वे ऐसा नहीं करते।'

'लेकिन महोदय, वे ऐसा क्यों नहीं करते?'

'हे देवताओं के स्वामी, यह संसार अनेक और विविध तत्वों से बना है। ऐसे में, प्राणी इनमें से किसी न किसी तत्व का अनुसरण करते हैं, और जिस तत्व का वे अनुसरण करते हैं, उसके प्रति वे प्रबल रूप से आसक्त हो जाते हैं, और घोषणा करते हैं: 'यही सत्य है, बाकी सब असत्य है!' इसलिए, वे सभी एक ही बात नहीं सिखाते, एक ही लक्ष्य का पीछा नहीं करते।'

'हे महोदय, क्या सभी तपस्वी और ब्राह्मण पूर्णतः निपुण, बंधनों से मुक्त, पवित्र जीवन में परिपूर्ण हैं, क्या वे पूर्णतः लक्ष्य तक पहुँच चुके हैं?'

'नहीं, देवताओं के शासक।'

'ऐसा क्यों है महोदय?'

'केवल वे ही लोग पूर्णतः निपुण, बंधनों से मुक्त, पवित्र जीवन में परिपूर्ण और लक्ष्य तक पूर्णतः पहुँच चुके हैं जो भोग-विलास से मुक्त हो चुके हैं।'

तब सक्का ने भगवान बुद्ध के वचनों से प्रसन्न होकर और अपनी सहमति व्यक्त करते हुए उनसे कहा: "लालसा एक रोग है, लालसा एक फोड़ा है, लालसा एक तीर है। यह व्यक्ति को बहकाती है, उसे किसी न किसी अवस्था में खींच ले जाती है, यही कारण है कि व्यक्ति उच्च और निम्न अवस्थाओं में पुनर्जन्म लेता है। जबकि अन्य बाहरी पुरोहितों और ध्यानियों ने मुझे ये प्रश्न पूछने का अवसर नहीं दिया, भगवान बुद्ध ने विस्तार से उत्तर दिया है, जिससे उन्होंने मेरी अनिश्चितता और उलझन के तीर को दूर कर दिया है।"

"देवताओं के शासक, क्या आपको याद है कि आपने अन्य पुजारियों और ध्यानियों से ये प्रश्न पूछे थे?"

"जी भगवान, मुझे याद है कि मैंने अन्य पुजारियों और ध्यानियों से ये प्रश्न पूछे थे।"

"यदि आपको कोई असुविधा न हो, तो क्या आप मुझे बता सकते हैं कि उन्होंने क्या जवाब दिया?"

"भगवान बुद्ध या उनके जैसे किसी व्यक्ति के साथ बैठने में कोई असुविधा नहीं होती।"

"तो मुझे बताइए, देवताओं के शासक।"

"मैंने उन लोगों के पास जाकर, जिन्हें मैं एकांतवास में रहने वाले पुजारी और ध्यानमग्न मानता था, उनसे ये प्रश्न पूछे। लेकिन जब मैंने उनसे ये प्रश्न पूछे, तो वे असमंजस में पड़ गए। असमंजस में होने के कारण, उन्होंने मुझसे ही पूछा, 'आपका नाम क्या है?'"

पूछे जाने पर मैंने उत्तर दिया, 'मैं, महोदय, देवताओं का शासक सक्का हूँ।'

"तो उन्होंने मुझसे आगे पूछा, 'लेकिन इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए आपने कौन सा कर्म किया?'"

"इसलिए मैंने उन्हें धम्म का उतना ही ज्ञान दिया जितना मैंने सुना और समझा था। और वे बस इतना ही जानकर संतुष्ट हो गए: 'हमने देवताओं के स्वामी सक्का के दर्शन किए हैं और उन्होंने हमारे प्रश्नों के उत्तर दिए हैं!' इस प्रकार, मेरे उनके शिष्य बनने के बजाय, वे मेरे शिष्य बन गए। परन्तु हे भगवान, मैं भगवान बुद्ध का शिष्य हूँ, एक ऐसा शिष्य जो सफलता की राह पर चल पड़ा है, दृढ़ निश्चयी हूँ, फिर कभी दुखों की अवस्थाओं में नहीं पड़ूँगा, आत्मज्ञान की ओर अग्रसर हूँ।"

"देवताओं के स्वामी, क्या आपको याद है कि आपने इससे पहले कभी ऐसी खुशी और आनंद का अनुभव किया था?" "जी हां, स्वामी, मुझे याद है।"

"और आपको याद है कि आपने पहले कभी ऐसा सुख और आनंद कैसे अनुभव किया था?" "एक बार, हे भगवान, देव और असुर युद्ध में आमने-सामने थे। उस युद्ध में देव विजयी हुए, जबकि असुर हार गए। युद्ध जीतने के बाद, मेरे मन में यह विचार आया: 'असुरों का जो भी दिव्य पोषण रहा है, देवों का जो भी दिव्य पोषण रहा है, अब देव दोनों उसका आनंद लेंगे।' परन्तु मेरा सुख और आनंद हिंसा और शस्त्रों के क्षेत्र में प्राप्त हुआ। इससे वैराग्य, वैराग्य, शांति, प्रत्यक्ष ज्ञान, आत्म-जागरूकता, मुक्ति आदि प्राप्त नहीं हुई। परन्तु भगवान बुद्ध के धर्म का पाठ सुनकर मेरा जो सुख और आनंद प्राप्त हुआ, वह हिंसा और शस्त्रों से रहित क्षेत्र में है। इससे वैराग्य, वैराग्य, शांति, प्रत्यक्ष ज्ञान, आत्म-जागरूकता, मुक्ति आदि प्राप्त होती है।"

'हे देवताओं के स्वामी, जब आप इस प्रकार की संतुष्टि और आनंद का अनुभव कर रहे होते हैं, तो आपके मन में कौन-कौन सी बातें आती हैं?' 'हे भगवान, ऐसे समय में, मेरे मन में छह बातें आती हैं जिनसे मुझे आनंद मिलता है:

मैं, जो मात्र एक देवता के रूप में विद्यमान हूं, ने प्राप्त किया है

कर्म के फलस्वरूप, एक और सांसारिक जीवन का अवसर।

हे भगवान, यही पहली बात है जो मेरे मन में आती है।

'देवताओं के इस अमानवीय क्षेत्र को पीछे छोड़ते हुए,

मैं बिना किसी चूक के उस गर्भ की खोज करूंगा जिसे मैं पाना चाहता हूं।'

वह भगवान दूसरी चीज है...

'मेरी समस्याएं हल हो गईं, मैं खुशी-खुशी बुद्ध के नियमों का पालन करूंगा।'

संयमित और सचेत, और स्पष्ट जागरूकता से परिपूर्ण।"

हे भगवान, यही तीसरी बात है...

और यदि इससे मुझमें ज्ञान की प्राप्ति हो जाए,

एक ज्ञानी व्यक्ति के रूप में मैं वहीं निवास करूंगा और अपने अंत की प्रतीक्षा करूंगा।

हे भगवान, यही चौथी बात है...

'फिर जब मैं दोबारा मानव जगत को छोडूंगा, तो मैं

एक बार फिर देवता, और सर्वोच्च पद वाले देवता।'

हे भगवान, यह पाँचवीं बात है...

'देवताओं से भी अधिक गौरवशाली हैं अद्वितीय देवता।'

जिनके बीच रहकर मैं अपना अंतिम निवास बनाऊंगा।'

हे भगवान, यह छठी बात है जो मेरे मन में आती है, और ये वे छह बातें हैं जिनसे मुझे आनंद मिलता है:

मैं लंबे समय तक भटकता रहा, असंतुष्ट, संशय में डूबा हुआ।

तथागत की खोज में। मैंने सोचा

एकांतवास और सादगी में रहने वाले संन्यासी

वे अवश्य ही प्रबुद्ध होंगे: मैं उनकी खोज करूंगा।

मुझे सफलता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए, और क्या करना चाहिए?

लेकिन इससे असफलता ही मिलती है? — ऐसा पूछा गया तो

वे मुझे यह नहीं बता सके कि मुझे उस रास्ते पर कैसे चलना है।

इसके बजाय, जब उन्हें पता चला कि मैं राजा हूँ

देवताओं ने मुझसे पूछा कि मैं उनके पास क्यों आया था।

और मैंने ही उन्हें वह सब सिखाया जो मुझे पता था।

धम्म के विषय में, और इस पर प्रसन्न होकर, वे

वह चिल्लाया: "हमने वासवा, भगवान को देख लिया है!"

लेकिन अब — मैंने बुद्ध को देख लिया है, और मेरे संदेह दूर हो गए हैं।

मेरे सारे डर दूर हो गए हैं, मेरी सारी आशंकाएं दूर हो गई हैं।

और अब मैं प्रबुद्ध व्यक्ति को नमन करता हूँ।

अंधकार को चित्रित करने वाले को श्रद्धांजलि अर्पित!

तृप्ति के विषय में, बुद्ध को, जो अद्वितीय भगवान हैं,

महान नायक, सूर्य के रिश्तेदार!

जिस प्रकार ब्रह्मा की पूजा देवता करते हैं,

इसलिए आज हम भी आपकी पूजा करते हैं।

हे प्रबुद्ध पुरुष, और अद्वितीय गुरु,

मानव जगत में जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

या फिर स्वर्ग में, देवताओं के निवास स्थान में!

तब देवताओं के स्वामी सक्का ने गंधर्वों के पंचसिखा से कहा, 'हे मेरे प्रिय पंचसिखा, तुमने भगवान बुद्ध का ध्यान आकर्षित करने में मेरी बहुत सहायता की है। तुम्हारे द्वारा ही हमें भगवान बुद्ध, अरहंत, परम प्रबुद्ध बुद्ध के दर्शन करने का अवसर मिला। मैं तुम्हारा पिता बनूंगा, तुम गंधर्वों के राजा बनोगे, और मैं तुम्हें भद्दा सूर्यचच्चासा दूंगा, जिसकी तुमने कामना की थी।' तब देवताओं के स्वामी सक्का ने अपने हाथ से पृथ्वी को स्पर्श किया और तीन बार कहा,

उस परम पूज्य, उस धन्य, उस सच्चे आत्मजागृत व्यक्ति को नमन!

उस परम पूज्य, उस धन्य, उस सच्चे आत्मजागृत व्यक्ति को नमन!

उस परम पूज्य, उस धन्य, उस सच्चे आत्मजागृत व्यक्ति को नमन!

जब यह व्याख्या दी जा रही थी, तभी सक्का को धूल रहित, निष्कलंक धम्म दृष्टि प्राप्त हुई - "जो कुछ भी उत्पत्ति के अधीन है, वह सब समाप्ति के अधीन है" - जैसा कि उनके देव अनुयायियों को भी हुआ था।

ये वे प्रश्न थे जिनका उत्तर भगवान बुद्ध ने सक्का के कहने पर दिया।

तिपिटक » सुत्त पिटक » दीघ निकाय » 2.9 महा-सतिपत्थन सुत्त(DN22)

अंतर्वस्तु

मैंने सुना है कि एक बार भगवान बुद्ध कुरु देश में ठहरे हुए थे। वहाँ कुरुओं का एक नगर है जिसका नाम कम्मसधम्मा है। वहाँ भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्षुओं।"

"भगवान," भिक्षुओं ने उत्तर दिया।

भगवान बुद्ध ने कहा: "यह प्राणियों के शुद्धिकरण, दुःख और विलाप पर विजय, पीड़ा और कष्ट के निवारण, सही विधि की प्राप्ति और मुक्ति की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग है - दूसरे शब्दों में, संदर्भ के चार ढाँचे। वे चार कौन से हैं?"

"एक ऐसा मामला है जिसमें एक भिक्षु शरीर पर ही एकाग्र रहता है - उत्साही, सतर्क और सचेत - संसार के प्रति लालच और व्याकुलता को त्यागकर। वह भावनाओं... मन... मानसिक गुणों पर ही एकाग्र रहता है - उत्साही, सतर्क और सचेत - संसार के प्रति लालच और व्याकुलता को त्यागकर।"

शरीर (काया)

काया-अनुपस्सना (शरीर पर ध्यान)

"और एक भिक्षु शरीर पर ही कैसे केंद्रित रहता है?"

अनापना ध्यान

[1] "ऐसा मामला है जहाँ एक भिक्षु - जंगल में, किसी पेड़ की छाया में, या किसी खाली इमारत में जाकर - अपने पैरों को क्रॉस करके बैठ जाता है, अपने शरीर को सीधा रखता है और ध्यान को आगे [शाब्दिक रूप से: छाती के सामने] रखता है। हमेशा सचेत रहते हुए, वह साँस लेता है; सचेत रहते हुए वह साँस छोड़ता है।
लंबी सांस लेते समय, वह महसूस करता है कि वह लंबी सांस ले रहा है; या लंबी सांस छोड़ते समय, वह महसूस करता है कि वह लंबी सांस छोड़ रहा है। छोटी सांस लेते समय, वह महसूस करता है कि वह छोटी सांस ले रहा है; या छोटी सांस छोड़ते समय, वह महसूस करता है कि वह छोटी सांस छोड़ रहा है। वह अपने आप को पूरे शरीर के प्रति संवेदनशील होकर सांस लेने और पूरे शरीर के प्रति संवेदनशील होकर सांस छोड़ने का अभ्यास कराता है। वह अपने आप को शरीर की हलचल को शांत करते हुए सांस लेने और शांत करते हुए सांस छोड़ने का अभ्यास कराता है। जैसे एक कुशल खराद कारीगर या उसका शिष्य, जब लंबी मोड़ बनाता है, तो महसूस करता है कि वह लंबी मोड़ बना रहा है, या जब छोटी मोड़ बनाता है, तो महसूस करता है कि वह छोटी मोड़ बना रहा है; उसी प्रकार एक भिक्षु, जब लंबी सांस लेता है, तो महसूस करता है कि वह लंबी सांस ले रहा है; या छोटी सांस छोड़ते समय, वह महसूस करता है कि वह छोटी सांस छोड़ रहा है... वह अपने आप को शरीर की हलचल को शांत करते हुए सांस लेने और शांत करते हुए सांस छोड़ने का अभ्यास कराता है।
इस प्रकार वह आंतरिक रूप से शरीर पर, या बाह्य रूप से शरीर पर, या दोनों ही रूपों में एकाग्र रहता है। या वह शरीर के संबंध में उत्पत्ति की घटना पर, शरीर के संबंध में नश्वरता की घटना पर, या शरीर के संबंध में उत्पत्ति और नश्वरता की घटना पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'शरीर है' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी चीज से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु शरीर पर एकाग्र रहता है।
अनापना ध्यान का समापन
[2] "इसके अलावा, चलते समय भिक्षु को यह अहसास होता है कि वह चल रहा है। खड़े होने पर उसे यह अहसास होता है कि वह खड़ा है। बैठने पर उसे यह अहसास होता है कि वह बैठा है। लेटने पर उसे यह अहसास होता है कि वह लेटा है। या उसका शरीर जिस भी स्थिति में हो, वह उसी तरह से अहसास करता है।"
"इस तरह वह आंतरिक रूप से शरीर पर ही केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इसी तरह एक भिक्षु शरीर पर ही केंद्रित रहता है।"

संपजना (पूर्ण ज्ञान)
[3] "इसके अलावा, आगे बढ़ते और लौटते समय, वह पूरी तरह सतर्क रहता है; आगे देखते और पीछे देखते समय... अपने अंगों को मोड़ते और फैलाते समय... अपना बाहरी लबादा, अपना ऊपरी वस्त्र और अपना कटोरा ले जाते समय... खाते, पीते, चबाते और स्वाद लेते समय... पेशाब और शौच करते समय... चलते, खड़े होते, बैठते, सोते, जागते, बात करते और चुप रहते समय, वह पूरी तरह सतर्क रहता है।"
"इस तरह वह आंतरिक रूप से शरीर पर ही केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इसी तरह एक भिक्षु शरीर पर ही केंद्रित रहता है।"
मानसिका (शरीर पर ध्यान देना)
[4] "इसके अलावा... जैसे कि दोनों सिरों पर खुले हुए एक बोरे में कई प्रकार के अनाज भरे हों - गेहूँ, चावल, मूंग, राजमा, तिल, छिलका उतारा हुआ चावल - और एक अच्छी दृष्टि वाला व्यक्ति उसे बाहर निकालते हुए सोचे, 'यह गेहूँ है। यह चावल है। ये मूंग हैं। ये राजमा हैं। ये तिल हैं। यह छिलका उतारा हुआ चावल है,' उसी प्रकार, भिक्षुओं, एक भिक्षु इस शरीर पर, पैरों के तलवों से ऊपर तक, सिर के मुकुट से नीचे तक, त्वचा से घिरे और कई प्रकार की अशुद्ध चीजों से भरे हुए, विचार करता है: 'इस शरीर में सिर के बाल, शरीर के बाल, नाखून, दांत, त्वचा, मांस, नसें, हड्डियाँ, अस्थि मज्जा, गुर्दे, हृदय, यकृत, फुफ्फुस, तिल्ली, फेफड़े, बड़ी आंत, छोटी आंत, गला, मल, पित्त, कफ, मवाद, रक्त, पसीना, वसा, आँसू, त्वचा का तेल, लार, बलगम, जोड़ों में तरल पदार्थ, मूत्र हैं।'"
"इस तरह वह आंतरिक रूप से शरीर पर ही केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इसी तरह एक भिक्षु शरीर पर ही केंद्रित रहता है।"
[5] "इसके अलावा... जिस प्रकार एक कुशल कसाई या उसका प्रशिक्षु, गाय को मारने के बाद, चौराहे पर बैठकर उसके टुकड़े करता है, उसी प्रकार भिक्षु इस शरीर का - चाहे वह किसी भी स्थिति में हो, चाहे वह किसी भी प्रकार से व्यवस्थित हो - गुणों के संदर्भ में चिंतन करता है: 'इस शरीर में पृथ्वी गुण, द्रव गुण, अग्नि गुण और वायु गुण हैं।'
"इस तरह वह आंतरिक रूप से शरीर पर ही केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इसी तरह एक भिक्षु शरीर पर ही केंद्रित रहता है।"
[6] "इसके अलावा, मानो वह किसी श्मशान में फेंके गए शव को देखे - एक दिन, दो दिन, तीन दिन पहले मृत - फूला हुआ, पीला पड़ा हुआ और सड़ता हुआ, वह इसे इसी शरीर पर लागू करता है, 'यह शरीर भी: यही इसकी प्रकृति है, यही इसका भविष्य है, यही इसका अपरिहार्य भाग्य है'..."

या फिर, मानो वह किसी श्मशान भूमि में फेंके गए शव को देखे, जिसे कौवे, गिद्ध, बाज, कुत्ते, लकड़बग्घे और अन्य कई जीव नोंच रहे हों... मांस और खून से सना हुआ कंकाल, नसों से जुड़ा हुआ... खून से सना हुआ मांसहीन कंकाल, नसों से जुड़ा हुआ... बिना मांस या खून का कंकाल, नसों से जुड़ा हुआ... हड्डियाँ अपनी नसों से अलग होकर चारों दिशाओं में बिखरी हुई हैं - यहाँ हाथ की हड्डी, वहाँ पैर की हड्डी, यहाँ पिंडली की हड्डी, वहाँ जांघ की हड्डी, यहाँ कूल्हे की हड्डी, वहाँ रीढ़ की हड्डी, यहाँ पसली, वहाँ छाती की हड्डी, यहाँ कंधे की हड्डी, वहाँ गर्दन की हड्डी, यहाँ जबड़े की हड्डी, वहाँ दाँत, यहाँ खोपड़ी... हड्डियाँ सफेद हो गई हैं, कुछ-कुछ सीपियों के रंग जैसी... ढेर लगी हुई, एक साल से भी अधिक पुरानी... चूर्ण में परिवर्तित: वह इसे इसी शरीर पर लगाता है, 'यह शरीर भी: यही इसका स्वभाव है, यही इसका भविष्य है, यही इसका अपरिहार्य भाग्य है।'
इस प्रकार वह आंतरिक रूप से शरीर पर, या बाह्य रूप से शरीर पर, या दोनों ही रूपों में एकाग्र रहता है। या वह शरीर के संबंध में उत्पत्ति की घटना पर, शरीर के संबंध में नश्वरता की घटना पर, या शरीर के संबंध में उत्पत्ति और नश्वरता की घटना पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'शरीर है' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी चीज से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु शरीर पर एकाग्र रहता है।

भावनाएँ/संवेदनाएँ (वेदना)
वेदना-अनुपस्सना (वेदना पर ध्यान)
"एक भिक्षु स्वयं में ही भावनाओं/संवेदनाओं (वेदना) पर कैसे एकाग्र रहता है? एक उदाहरण है कि जब एक भिक्षु को कोई पीड़ादायक भावना महसूस होती है, तो वह यह पहचानता है कि उसे पीड़ादायक भावना महसूस हो रही है। जब उसे कोई सुखद भावना महसूस होती है, तो वह यह पहचानता है कि उसे सुखद भावना महसूस हो रही है। जब उसे न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना महसूस होती है, तो वह यह पहचानता है कि उसे न तो पीड़ादायक और न ही सुखद भावना महसूस हो रही है।"
जब वेदना के अनुसार शरीर की कोई पीड़ादायक अनुभूति होती है, तो व्यक्ति यह पहचान लेता है कि वह शरीर की पीड़ादायक अनुभूति का अनुभव कर रहा है। जब शरीर से इतर कोई पीड़ादायक अनुभूति होती है, तो व्यक्ति यह पहचान लेता है कि वह शरीर से इतर कोई पीड़ादायक अनुभूति का अनुभव कर रहा है। जब शरीर से कोई सुखद अनुभूति होती है, तो व्यक्ति यह पहचान लेता है कि वह शरीर से इतर कोई सुखद अनुभूति का अनुभव कर रहा है। जब शरीर से ऐसी अनुभूति होती है जो न तो पीड़ादायक है और न ही सुखद, तो व्यक्ति यह पहचान लेता है कि वह शरीर से इतर कोई पीड़ादायक अनुभूति का अनुभव कर रहा है। जब शरीर से ऐसी अनुभूति होती है जो न तो पीड़ादायक है और न ही सुखद, तो व्यक्ति यह पहचान लेता है कि वह शरीर से इतर कोई पीड़ादायक अनुभूति का अनुभव कर रहा है।
इस प्रकार वह आंतरिक रूप से वेदनाओं पर, या बाह्य रूप से भावनाओं पर, या दोनों पर एकाग्र रहता है। या वह भावनाओं की उत्पत्ति, उनके नष्ट होने, या उनके उत्पन्न होने और नष्ट होने की प्रक्रिया पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'भावनाएँ हैं' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी वस्तु से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु भावनाओं पर एकाग्र रहता है।
मन (चित्त)
चित्त-अनुपस्सना (मन/जागरूकता पर ध्यान)
"एक भिक्षु मन पर ही कैसे एकाग्र रहता है? एक स्थिति यह है कि जब मन में वासना होती है, तो भिक्षु यह पहचानता है कि मन में वासना है। जब मन में वासना नहीं होती, तो वह यह पहचानता है कि मन में वासना नहीं है। जब मन में घृणा होती है, तो वह यह पहचानता है कि मन में घृणा है। जब मन में घृणा नहीं होती, तो वह यह पहचानता है कि मन में घृणा नहीं है। जब मन में भ्रम होता है, तो वह यह पहचानता है कि मन में भ्रम है। जब मन भ्रम रहित होता है, तो वह यह पहचानता है कि मन भ्रम रहित है।"
जब मन सीमित होता है, तो वह जान लेता है कि मन सीमित है। जब मन बिखरा हुआ होता है, तो वह जान लेता है कि मन बिखरा हुआ है। जब मन विस्तृत होता है, तो वह जान लेता है कि मन विस्तृत है। जब मन विस्तृत नहीं होता, तो वह जान लेता है कि मन विस्तृत नहीं है। जब मन श्रेष्ठ होता है, तो वह जान लेता है कि मन श्रेष्ठ है। जब मन असीम होता है, तो वह जान लेता है कि मन असीम है। जब मन एकाग्र होता है, तो वह जान लेता है कि मन एकाग्र है। जब मन एकाग्र नहीं होता, तो वह जान लेता है कि मन एकाग्र नहीं है। जब मन मुक्त होता है, तो वह जान लेता है कि मन मुक्त है। जब मन मुक्त नहीं होता, तो वह जान लेता है कि मन मुक्त नहीं है।
इस प्रकार वह आंतरिक रूप से मन पर, या बाह्य रूप से मन पर, या दोनों ही रूपों में एकाग्र रहता है। या वह मन की उत्पत्ति, मन के क्षय, या मन की उत्पत्ति और क्षय की घटनाओं पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'मन है' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी चीज से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु मन पर एकाग्र रहता है।

मानसिक गुण (धम्म)
धम्म-अनुपस्सना (धम्म पर ध्यान)
"और एक भिक्षु स्वयं में मौजूद मानसिक गुणों पर कैसे केंद्रित रहता है?"

[1] "एक स्थिति ऐसी है जिसमें एक भिक्षु पाँच बाधाओं के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर ही एकाग्र रहता है। और एक भिक्षु पाँच बाधाओं के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर कैसे एकाग्र रहता है? एक स्थिति ऐसी है जिसमें, भीतर में कामुक इच्छा की उपस्थिति होने पर, एक भिक्षु यह समझता है कि 'मेरे भीतर कामुक इच्छा मौजूद है।' या, भीतर में कामुक इच्छा की अनुपस्थिति होने पर, वह यह समझता है कि 'मेरे भीतर कामुक इच्छा मौजूद नहीं है।' वह यह समझता है कि अजन्मी कामुक इच्छा कैसे उत्पन्न होती है। और वह यह समझता है कि एक बार उत्पन्न होने के बाद कामुक इच्छा का त्याग कैसे होता है। और वह यह समझता है कि त्यागी गई कामुक इच्छा भविष्य में फिर कभी प्रकट नहीं होती। (यही सूत्र शेष बाधाओं के लिए भी दोहराया जाता है: द्वेष, आलस्य और सुस्ती, बेचैनी और चिंता, और अनिश्चितता।)

इस प्रकार वह आंतरिक रूप से मानसिक गुणों पर, या बाह्य रूप से, या दोनों ही रूपों में एकाग्र रहता है। या वह मानसिक गुणों के उद्भव, उनके क्षय, या उनके उद्भव एवं क्षय पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'मानसिक गुण हैं' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी वस्तु से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु पाँच बाधाओं के संदर्भ में मानसिक गुणों पर एकाग्र रहता है।

उपादान-खंड (समुच्चय के कारण रुकावट/चिपके रहना)

[2] "इसके अतिरिक्त, भिक्षु पाँच आसक्ति-समूहों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर ही एकाग्र रहता है। और वह पाँच आसक्ति-समूहों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर कैसे एकाग्र रहता है? एक स्थिति यह है जहाँ एक भिक्षु [समझता है]: 'रूप ऐसा है, उसकी उत्पत्ति ऐसी है, उसका लुप्त होना ऐसा है। भावना ऐसी है... बोध ऐसा है... रचनाएँ ऐसी हैं... चेतना ऐसी है, उसकी उत्पत्ति ऐसी है, उसका लुप्त होना ऐसा है।'"

"इस प्रकार वह आंतरिक रूप से स्वयं में मौजूद मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इस प्रकार एक भिक्षु पांच आसक्ति-समूहों के संदर्भ में स्वयं में मौजूद मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है।"

आयतन (इंद्रियां)

[3] "इसके अतिरिक्त, भिक्षु छह आंतरिक और बाह्य इंद्रियों के संदर्भ में स्वयं में ही मानसिक गुणों पर एकाग्र रहता है। और वह छह आंतरिक और बाह्य इंद्रियों के संदर्भ में स्वयं में ही मानसिक गुणों पर कैसे एकाग्र रहता है? वह आँख को देखता है, वह रूपों को देखता है, वह उन दोनों पर निर्भर बंधन को देखता है। वह यह देखता है कि कैसे एक अजन्मे बंधन का उदय होता है। और वह यह देखता है कि एक बार उत्पन्न होने के बाद बंधन का त्याग कैसे होता है। और वह यह देखता है कि त्यागे गए बंधन का भविष्य में कोई पुन: प्रकट होना नहीं होता है। (यही सूत्र शेष इंद्रियों: कान, नाक, जीभ, शरीर और बुद्धि के लिए दोहराया जाता है।)

"इस प्रकार वह आंतरिक रूप से स्वयं में मौजूद मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से केंद्रित रहता है... संसार की किसी भी चीज से प्रेरित हुए बिना। इस प्रकार एक भिक्षु छह प्रकार की आंतरिक और बाह्य इंद्रिय माध्यमों के संदर्भ में स्वयं में मौजूद मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है।"

बोझांग (ज्ञानोदय कारक)

[4] "इसके अतिरिक्त, भिक्षु जागृति/ज्ञानोदय के सात कारकों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर ही केंद्रित रहता है। और वह जागृति के सात कारकों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर कैसे केंद्रित रहता है? एक स्थिति यह है कि जब जागृति के कारक के रूप में सजगता उपस्थित होती है, तो वह यह समझता है कि 'जागृति के कारक के रूप में सजगता मुझमें उपस्थित है।' या, जब जागृति के कारक के रूप में सजगता उपस्थित नहीं होती है, तो वह यह समझता है कि 'जागृति के कारक के रूप में सजगता मुझमें उपस्थित नहीं है।' वह यह समझता है कि जागृति के कारक के रूप में अविकसित सजगता कैसे उत्पन्न होती है। और वह यह समझता है कि जागृति के कारक के रूप में सजगता के विकास की पराकाष्ठा कैसे होती है, एक बार जब यह उत्पन्न हो जाती है। (यही सूत्र जागृति के शेष कारकों के लिए भी दोहराया जाता है: गुणों का विश्लेषण, दृढ़ता, परमानंद, शांति, एकाग्रता और समभाव।)

"इस प्रकार वह आंतरिक रूप से मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है, या बाह्य रूप से... संसार की किसी भी चीज से आसक्त नहीं रहता (उससे आसक्ति नहीं रखता)। इस प्रकार एक भिक्षु जागृति के सात कारकों के संदर्भ में मानसिक गुणों पर केंद्रित रहता है।"

सक्का (चार आर्य सत्य)

[5] "इसके अतिरिक्त, भिक्षु चार आर्य सत्यों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर ही केंद्रित रहता है। और वह चार आर्य सत्यों के संदर्भ में स्वयं मानसिक गुणों पर कैसे केंद्रित रहता है? एक स्थिति यह है कि वह वास्तव में मौजूद स्थिति में यह देखता है कि 'यह तनाव है... यह तनाव का उद्गम है... यह तनाव का निवारण है... यह तनाव के निवारण की ओर ले जाने वाला मार्ग है।'"

[क] "अब तनाव का महान सत्य क्या है? जन्म तनावपूर्ण है, बुढ़ापा तनावपूर्ण है, मृत्यु तनावपूर्ण है; शोक, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा तनावपूर्ण हैं; अपनों से संबंध तनावपूर्ण है; प्रियजनों से वियोग तनावपूर्ण है; मनचाही चीज न मिलना तनावपूर्ण है। संक्षेप में, ये पाँचों आसक्ति-समूह तनावपूर्ण हैं।"

और जन्म क्या है? जन्म लेना, वंशानुक्रम, अस्तित्व में आना, प्रकट होना, विभिन्न प्राणियों के समूह का प्रकट होना और विभिन्न प्राणियों के इंद्रिय-क्षेत्रों का अधिग्रहण, जो भी हो, उसे जन्म कहा जाता है।

"और बुढ़ापा क्या है? किसी भी प्राणी समूह में होने वाली बुढ़ापा, जीर्णता, टूटन, बालों का सफेद होना, झुर्रियों का आना, जीवन शक्ति में कमी आना, क्षमताओं का कमजोर होना, यही बुढ़ापा कहलाता है।"
और मृत्यु क्या है? जो कुछ भी मरना, देहांत होना, विखंडन होना, लुप्त होना, मरना, मृत्यु होना, समय की समाप्ति, समुच्चय का विखंडन, शरीर का त्याग, विभिन्न प्राणियों के जीवन की शक्ति में रुकावट आना, वह सब मृत्यु कहलाता है।
और दुःख क्या है? किसी दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति का दुःख, शोक, उदासी, आंतरिक दुःख, किसी पीड़ादायक घटना से प्रभावित व्यक्ति की आंतरिक उदासी, वही दुःख कहलाता है।
और विलाप क्या है? किसी दुर्भाग्य से पीड़ित व्यक्ति का रोना, शोक करना, विलाप करना, विलाप करना, शोक करना, विलाप करना, यही विलाप कहलाता है।
"और दर्द क्या है? शरीर में होने वाली किसी भी प्रकार की पीड़ा, शारीरिक असुविधा, या शारीरिक संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ा या असुविधा को दर्द कहा जाता है।"
और पीड़ा क्या है? मानसिक पीड़ा, मानसिक बेचैनी, मानसिक संपर्क से उत्पन्न होने वाली पीड़ा या बेचैनी के रूप में जो कुछ भी अनुभव किया जाता है, उसे पीड़ा कहते हैं।
और निराशा क्या है? दुर्भाग्य से पीड़ित, किसी पीड़ादायक घटना से ग्रस्त व्यक्ति की निराशा, हताशा, व्याकुलता ही निराशा कहलाती है।
"और अपनों के साथ संगति का तनाव क्या है? एक स्थिति वह होती है जब व्यक्ति को अप्रिय, अरुचिकर, अप्रिय दृश्य, ध्वनि, सुगंध, स्वाद या स्पर्श का अनुभव होता है; या व्यक्ति का उन लोगों से संबंध, संपर्क, रिश्ता या संवाद होता है जो उसका बुरा चाहते हैं, उसकी हानि चाहते हैं, उसे असुविधा पहुंचाना चाहते हैं, और उसे बंधनों से मुक्त नहीं करना चाहते। इसे अपनों के साथ संगति का तनाव कहते हैं।"
"प्रियजन से वियोग का कष्ट क्या होता है? यह वह स्थिति है जब मनभावन, सुखद, आकर्षक दृश्य, ध्वनियाँ, सुगंध, स्वाद या स्पर्श संवेदनाएँ प्राप्त नहीं होतीं; या फिर उन लोगों से कोई संबंध, संपर्क, रिश्ता या संवाद नहीं होता जो उनका भला चाहते हैं, जो उनके लाभ की कामना करते हैं, जो उनके आराम की कामना करते हैं, जो उन्हें बंधनों से मुक्ति दिलाना चाहते हैं, न ही माता-पिता, भाई, बहन, मित्रों, साथियों या रिश्तेदारों से। इसे ही प्रियजन से वियोग का कष्ट कहते हैं।"
और इच्छा पूरी न होने का तनाव क्या है? जन्म के अधीन प्राणियों में यह इच्छा उत्पन्न होती है, 'हे भगवान, हम जन्म के अधीन न हों, और जन्म हमारे लिए कभी न आए।' लेकिन यह इच्छा करने से प्राप्त नहीं होता। यही इच्छा पूरी न होने का तनाव है। वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा के अधीन प्राणियों में यह इच्छा उत्पन्न होती है, 'हे भगवान, हम वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा के अधीन न हों, और वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु, दुःख, विलाप, पीड़ा, कष्ट और निराशा हमारे लिए कभी न आए।' लेकिन यह इच्छा करने से प्राप्त नहीं होता। यही इच्छा पूरी न होने का तनाव है।
और वे पाँच आसक्ति-समूह क्या हैं जो संक्षेप में तनाव हैं? रूप एक आसक्ति-समूह के रूप में, भावना एक आसक्ति-समूह के रूप में, बोध एक आसक्ति-समूह के रूप में, कल्पनाएँ एक आसक्ति-समूह के रूप में, चेतना एक आसक्ति-समूह के रूप में: इन्हें ही वे पाँच आसक्ति-समूह कहा जाता है जो संक्षेप में तनाव हैं।
इसे तनाव का महान सत्य कहा जाता है।
[ख] "और तनाव की उत्पत्ति का महान सत्य क्या है? वह लालसा जो आगे के विकास को जन्म देती है - जुनून और आनंद के साथ, यहाँ और वहाँ दोनों समय का आनंद लेते हुए - अर्थात्, कामुकता की लालसा, विकास की लालसा, गैर-विकास की लालसा।"
और यह लालसा जब उत्पन्न होती है, तो कहाँ से उत्पन्न होती है? और जब यह निवास करती है, तो कहाँ निवास करती है? संसार के संदर्भ में जो कुछ भी मनभावन और आकर्षक होता है, वहीं से यह लालसा उत्पन्न होती है। और जब यह निवास करती है, तो वहीं निवास करती है।
और संसार के संदर्भ में क्या मनमोहक और आकर्षक है? संसार के संदर्भ में आँख ही मनमोहक और आकर्षक है। जब यह लालसा उत्पन्न होती है, तो वहीं से उत्पन्न होती है। जब यह लालसा ठहरती है, तो वहीं ठहरती है।
कान... नाक... जीभ... शरीर... बुद्धि...
"रूप... ध्वनियाँ... गंध... स्वाद... स्पर्श संवेदनाएँ... विचार..."
"दृष्टि-चेतना... कान-चेतना... नाक-चेतना... जीभ-चेतना... शरीर-चेतना... बुद्धि-चेतना..."
"आँखों का संपर्क... कानों का संपर्क... नाक का संपर्क... जीभ का संपर्क... शारीरिक संपर्क... बौद्धिक संपर्क..."
आँखों के संपर्क से उत्पन्न भावना... कानों के संपर्क से उत्पन्न भावना... नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना... जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना... शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना... बुद्धि के संपर्क से उत्पन्न भावना...
आकृतियों की अनुभूति... ध्वनियों की अनुभूति... गंधों की अनुभूति... स्वादों की अनुभूति... स्पर्श संवेदनाओं की अनुभूति... विचारों की अनुभूति...
"रूपों के लिए इरादा... ध्वनियों के लिए इरादा... गंधों के लिए इरादा... स्वादों के लिए इरादा... स्पर्श संवेदनाओं के लिए इरादा... विचारों के लिए इरादा..."

रूपों की लालसा... ध्वनियों की लालसा... गंधों की लालसा... स्वादों की लालसा... स्पर्श संवेदनाओं की लालसा... विचारों की लालसा...

"रूपों पर केंद्रित विचार... ध्वनियों पर केंद्रित विचार... गंधों पर केंद्रित विचार... स्वादों पर केंद्रित विचार... स्पर्श संवेदनाओं पर केंद्रित विचार... विचारों पर केंद्रित विचार..."

रूपों का मूल्यांकन... ध्वनियों का मूल्यांकन... गंधों का मूल्यांकन... स्वादों का मूल्यांकन... स्पर्श संवेदनाओं का मूल्यांकन... विचारों का मूल्यांकन, संसार के संदर्भ में मनमोहक और आकर्षक है। यहीं से यह लालसा उत्पन्न होती है। यहीं पर यह निवास करती है।

इसे तनाव की उत्पत्ति का महान सत्य कहा जाता है।

[ग] "और तनाव के निवारण का महान सत्य क्या है? शेष न रहने वाला लुप्त होना और निवारण, त्याग, परित्याग, मुक्ति और उस लालसा को छोड़ देना।"

और जब इस लालसा का त्याग किया जाता है, तो यह कहाँ त्यागी जाती है? और जब यह समाप्त होती है, तो यह कहाँ समाप्त होती है? संसार के संदर्भ में जो कुछ भी प्यारा और आकर्षक है: त्यागे जाने पर, यह लालसा वहीं त्यागी जाती है। वहीं, समाप्त होने पर, यह समाप्त होती है।

और संसार के संदर्भ में क्या मनमोहक और आकर्षक है? संसार के संदर्भ में आँख ही मनमोहक और आकर्षक है। जब इस दृष्टि का त्याग हो जाता है, तो यह लालसा भी समाप्त हो जाती है। जब यह समाप्त हो जाती है, तो यह लालसा भी समाप्त हो जाती है।

कान... नाक... जीभ... शरीर... बुद्धि...

"रूप... ध्वनियाँ... गंध... स्वाद... स्पर्श संवेदनाएँ... विचार..."

"दृष्टि-चेतना... कान-चेतना... नाक-चेतना... जीभ-चेतना... शरीर-चेतना... बुद्धि-चेतना..."

"आँखों का संपर्क... कानों का संपर्क... नाक का संपर्क... जीभ का संपर्क... शारीरिक संपर्क... बौद्धिक संपर्क..."

आँखों के संपर्क से उत्पन्न भावना... कानों के संपर्क से उत्पन्न भावना... नाक के संपर्क से उत्पन्न भावना... जीभ के संपर्क से उत्पन्न भावना... शरीर के संपर्क से उत्पन्न भावना... बुद्धि के संपर्क से उत्पन्न भावना...

आकृतियों की अनुभूति... ध्वनियों की अनुभूति... गंधों की अनुभूति... स्वादों की अनुभूति... स्पर्श संवेदनाओं की अनुभूति... विचारों की अनुभूति...

"रूपों के लिए इरादा... ध्वनियों के लिए इरादा... गंधों के लिए इरादा... स्वादों के लिए इरादा... स्पर्श संवेदनाओं के लिए इरादा... विचारों के लिए इरादा..."

रूपों की लालसा... ध्वनियों की लालसा... गंधों की लालसा... स्वादों की लालसा... स्पर्श संवेदनाओं की लालसा... विचारों की लालसा...

"रूपों पर केंद्रित विचार... ध्वनियों पर केंद्रित विचार... गंधों पर केंद्रित विचार... स्वादों पर केंद्रित विचार... स्पर्श संवेदनाओं पर केंद्रित विचार... विचारों पर केंद्रित विचार..."

रूपों का मूल्यांकन... ध्वनियों का मूल्यांकन... गंधों का मूल्यांकन... स्वादों का मूल्यांकन... स्पर्श संवेदनाओं का मूल्यांकन... विचारों का मूल्यांकन, विश्व के संदर्भ में मनमोहक और आकर्षक है। यहीं पर, जब इसे त्याग दिया जाता है, तो यह लालसा भी त्याग जाती है। यहीं पर, जब यह समाप्त हो जाती है, तो यह समाप्त हो जाती है।

इसे ही तनाव से मुक्ति का महान सत्य कहा जाता है।

[घ] "और तनाव से मुक्ति दिलाने वाले अभ्यास के मार्ग का महान सत्य क्या है? बस यही महान अष्टमार्ग: सही दृष्टि, सही संकल्प, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता।"

और सही दृष्टिकोण क्या है? तनाव के संबंध में ज्ञान, तनाव की उत्पत्ति के संबंध में ज्ञान, तनाव की समाप्ति के संबंध में ज्ञान, तनाव की समाप्ति की ओर ले जाने वाले अभ्यास के तरीके के संबंध में ज्ञान: यही सही दृष्टिकोण कहलाता है।

और सही संकल्प क्या है? त्याग की आकांक्षा रखना, द्वेष से मुक्ति पाना, अहिंसा की ओर अग्रसर होना: यही सही संकल्प कहलाता है।

और सही वाणी क्या है? झूठ बोलने से, फूट डालने वाली बातों से, अपशब्द बोलने से और व्यर्थ की बातों से बचना ही सही वाणी कहलाता है।

और सही कर्म क्या है? जीवन लेने से, चोरी करने से और अवैध यौन संबंध से दूर रहना। यही सही कर्म कहलाता है।

और सही आजीविका क्या है? एक ऐसा मामला है जिसमें श्रेष्ठ पुरुषों का एक शिष्य बेईमानी से आजीविका छोड़कर सही आजीविका से अपना जीवन यापन करता है: इसे सही आजीविका कहा जाता है।

और सही प्रयास क्या है? वह स्थिति है जब एक भिक्षु इच्छा उत्पन्न करता है, प्रयास करता है, दृढ़ता जगाता है, अपने इरादे को कायम रखता है और उसे लागू करता है ताकि अभी तक उत्पन्न न हुए बुरे, अकुशल गुणों का उदय न हो... उत्पन्न हो चुके बुरे, अकुशल गुणों का त्याग हो... अभी तक उत्पन्न न हुए कुशल गुणों का उदय हो... (और) उत्पन्न हो चुके कुशल गुणों का रखरखाव, भ्रम से मुक्ति, वृद्धि, परिपूर्णता, विकास और पराकाष्ठा हो: इसे सही प्रयास कहा जाता है।

और सही ध्यान क्या है? एक ऐसा मामला है जिसमें एक भिक्षु शरीर पर ही एकाग्र रहता है—उत्साही, सतर्क और सचेत—संसार के प्रति लोभ और व्याकुलता को त्यागकर। वह भावनाओं पर ही एकाग्र रहता है... मन पर ही... मानसिक गुणों पर ही—उत्साही, सतर्क और सचेत—संसार के प्रति लोभ और व्याकुलता को त्यागकर। इसे ही सही ध्यान कहते हैं।
और सही एकाग्रता क्या है? एक ऐसा मामला है जहाँ एक भिक्षु - इंद्रियों से पूर्णतः विरक्त होकर, अकुशल (मानसिक) गुणों से विरक्त होकर - प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: एकांत से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन के साथ। निर्देशित विचार और मूल्यांकन के शांत होने पर, वह द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: शांति से उत्पन्न परमानंद और आनंद, निर्देशित विचार और मूल्यांकन से मुक्त चेतना का एकीकरण - आंतरिक आश्वासन। परमानंद के लुप्त होने पर वह समभाव में, सचेत और जागरूक होकर, सुख के प्रति शारीरिक रूप से संवेदनशील होकर स्थिर रहता है। वह तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसके बारे में ऋषि कहते हैं, 'समभाव और सचेत होकर, वह सुखमय अवस्था में रहता है।' सुख और दुख के त्याग के साथ - जैसे पहले उल्लास और दुःख के लुप्त होने के साथ - वह चतुर्थ ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है: समभाव और जागरूकता की शुद्धता, न सुख न दुख। इसे ही सही एकाग्रता कहते हैं।
इसे ही तनाव से मुक्ति दिलाने वाले अभ्यास के मार्ग का महान सत्य कहा जाता है।
इस प्रकार वह आंतरिक रूप से मानसिक गुणों पर, या बाह्य रूप से, या दोनों ही रूपों में एकाग्र रहता है। या वह मानसिक गुणों के उद्भव, उनके क्षय, या उनके उद्भव एवं क्षय की घटनाओं पर एकाग्र रहता है। या उसका यह सजग रहना कि 'मानसिक गुण हैं' ज्ञान और स्मरण की सीमा तक बना रहता है। और वह स्वतंत्र रहता है, संसार की किसी भी वस्तु से आसक्त नहीं रहता। इस प्रकार एक भिक्षु चार आर्य सत्यों के संदर्भ में मानसिक गुणों पर एकाग्र रहता है...

निष्कर्ष
"अब, यदि कोई व्यक्ति सात वर्षों तक इस प्रकार से संदर्भ के इन चार ढाँचों को विकसित करता है, तो उससे दो में से एक फल की अपेक्षा की जा सकती है: या तो यहीं और अभी ज्ञान, या - यदि आसक्ति-पोषण का कोई अवशेष बचा हो - तो अनात्म।"
"सात साल तो छोड़ ही दीजिए। यदि कोई व्यक्ति इन चार संदर्भों को इस प्रकार छह साल... पांच... चार... तीन... दो साल... एक साल... सात महीने... छह महीने... पांच... चार... तीन... दो महीने... एक महीना... आधा महीना तक विकसित करता रहे, तो उसे दो में से एक परिणाम की उम्मीद की जा सकती है: या तो यहीं और अभी ज्ञान प्राप्त हो जाएगा, या - यदि आसक्ति-आधारित जीवन का कोई अंश शेष रहे - तो पुनर्जन्म नहीं होगा।"
"आधे महीने की तो बात ही छोड़िए। यदि कोई व्यक्ति सात दिनों तक इस प्रकार इन चार संदर्भों को विकसित करे, तो उसे दो में से एक फल की उम्मीद की जा सकती है: या तो यहीं और अभी ज्ञान प्राप्त हो जाए, या - यदि आसक्ति-आधारित जीवन का कोई अंश शेष रहे - तो अनात्मवाद प्राप्त हो जाए।"
"'यह प्राणियों के शुद्धिकरण, दुःख और विलाप पर विजय पाने, पीड़ा और कष्ट के निवारण, सही विधि की प्राप्ति और मुक्ति की अनुभूति का सीधा मार्ग है - दूसरे शब्दों में, संदर्भ के चार ढाँचे।' ऐसा कहा गया था, और इसी के संदर्भ में कहा गया था।"
भगवान बुद्ध ने यही कहा था। भिक्षुओं को भगवान बुद्ध के वचन सुनकर प्रसन्नता हुई।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 2.10 पयासी सुत्त(DN23)
पायसी सूत्र में
राजकुमार पायसी पुनर्जन्म (पुनरावतार) के सिद्धांत (और कर्मों के परिणाम स्वरूप) के अस्तित्व पर विवाद करते हैं, लेकिन इसका प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

मैंने ऐसा सुना है: एक बार पूज्य (वरिष्ठ भिक्षु) कुमार-कस्सपा लगभग पाँच सौ भिक्षुओं के एक समूह के साथ कोसल का भ्रमण कर रहे थे और वे सेताव्य नामक एक नगर में पहुँचे, जहाँ उन्होंने ठहरने का निर्णय लिया। उन्होंने नगर के सबसे उत्तरी क्षेत्र में, सिम्सपा नामक वन में एक निवास स्थान चुना। राजकुमार पायसी भी सेताव्य में रह रहे थे, क्योंकि यह कोसल के शासक राजा पसेनदी द्वारा उन्हें उपहार में दिया गया था। यह वन हरा-भरा था और इसकी आबादी बहुत अधिक थी, साथ ही भोजन और जल की प्रचुर उपलब्धता भी थी। पता चला कि राजकुमार पायसी एक विकृत सोच से ग्रसित थे - उनका मानना था, "मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है, हमारे अपने संसार के अलावा कोई दूसरा संसार नहीं है। न तो देवदूत हैं और न ही राक्षस। अच्छे और बुरे कर्मों का कोई परिणाम नहीं होता।"

अब सेताव्य के लोगों में यह बात फैलने लगी थी कि तपस्वी कुमार-कस्सपा उनके सुंदर नगर में रहने आए हैं और वे बुद्ध के शिष्य हैं। कुमार के बारे में चारों ओर प्रशंसा की बातें फैल रही थीं, जैसे: 'वह कुमार, वह बुद्धिमान और अनुभवी हैं।' 'वह कुमार, वह अपनी उम्र से कहीं अधिक ज्ञानवान हैं।' 'वह कुमार, वह एक कुशल वक्ता हैं - वह हमारे प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं।' 'क्या आपने सुना? उत्तरी वन में रहने वाले तपस्वी कुमार - वह एक पवित्र अरहंत हैं! ऐसे पुरुषों को देखना हमेशा सुखद होता है।' जैसे ही यह खबर फैली, लोग कुमार से मिलने वन की ओर चल पड़े।

राजकुमार पायसी अपने बरामदे में बैठे हुए थे और उन्होंने इन लोगों को जंगल की ओर जाते देखा। स्वाभाविक रूप से, इससे उनकी जिज्ञासा जागी और उन्होंने अपने एक रक्षक से पूछा कि वे क्या कर रहे हैं। रक्षक ने बताया कि कुमार-कस्सपा जंगल में ठहरे हुए हैं और उनके बारे में बहुत अच्छी बातें हो रही हैं, हर जगह लोग उन्हें संत बता रहे हैं। रक्षक ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, 'जंगल में जाने वाले लोग स्वयं कुमार के दर्शन करना चाहते हैं।'

हम्म। यह तो बहुत दिलचस्प साबित हो सकता है। जाओ और उन्हें रोको, उन्हें मेरे लिए इंतज़ार करने को कहो, क्योंकि मैं भी आ रहा हूँ। यह कुमार झूठी बातें फैला रहा है, लोगों के दिमाग में मृत्यु के बाद जीवन, परलोक, देवदूत और राक्षस जैसी बातें भर रहा है, और उसका दावा है कि हर कर्म का फल होता है। मूर्खता!

"जी हां, मेरे स्वामी," रेंजर ने कहा और उसने संदेश पहुंचा दिया।

इसलिए राजकुमार पायसी लोगों के साथ जंगल में गए, जहाँ वे कुमार के निवास पर पहुँचे। उन्होंने कुमार से अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए, जबकि उन्होंने समूह के अन्य लोगों को भी ऐसा ही करते देखा। कुछ लोग अत्यंत श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर कुमार को प्रणाम कर रहे थे। अन्य लोग उन्हें अपने बराबर, लगभग बराबर, या थोड़ा अधिक बराबर मानकर अभिवादन कर रहे थे। कुछ ने केवल सिर हिलाया, या कुछ भी नहीं किया, और बस बैठ गए।

जब सब लोग बैठ गए, तो राजकुमार पायसी ने कहा, "आदरणीय कुमार, मेरा मानना है कि कर्मों का कोई फल नहीं होता। मेरा मानना है कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है, हमारे संसार के परे कोई दूसरा संसार नहीं है। मुझे लगता है कि देवदूत और राक्षस तो बच्चों के सपनों की बातें हैं।"

"हम्म... राजकुमार," कुमार ने जवाब दिया, उनकी आवाज़ किसी डॉक्टर की तरह लग रही थी जो किसी मरीज़ का निदान कर रहा हो। "आपका दृष्टिकोण अनोखा है, क्योंकि मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो इस तरह से बात करता हो। हम्म... मुझे लगता है कि मुझे इस बारे में आपसे कुछ सवाल पूछने चाहिए। आपका क्या विचार है, राजकुमार? क्या सूर्य और चंद्रमा इस दुनिया में मौजूद हैं, या इससे अलग हैं? क्या वे मनुष्य हैं? या वे कोई दिव्य अमानवीय प्राणी हैं?"

"आरोवर कुमार, वे इस दुनिया से परे मौजूद हैं, और वे दिव्य और अमानवीय हैं।"

"तो फिर, राजकुमार, क्या आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि अन्य लोक भी अस्तित्व में हो सकते हैं, कि देवदूत और राक्षस केवल सपनों की चीजें नहीं हैं, और कर्मों का फल अवश्य मिलता है?"

"कुमारा, तुम इस बारे में कुछ भी कहो, मेरा दृष्टिकोण अपरिवर्तित रहेगा।"

"क्यों? क्या आपके पास कोई कारण है?"

"सहज रूप में।"

"शायद, राजकुमार, आप इसे मेरे साथ साझा कर सकते हैं?"

"आरवियन कुमारा, मेरे मित्रों, सहकर्मियों और रिश्तेदारों में ऐसे लोग हैं जो हत्या करते हैं, चोरी करते हैं, यौन दुराचार करते हैं; ऐसे लोग हैं जो झूठ बोलते हैं, अपशब्द और कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं, व्यर्थ की गपशप में लिप्त रहते हैं, घृणा और पूर्वाग्रह से भरे हुए हैं, गलत विचारों से लबालब भरे हुए हैं। कई बार, जब वे अपनी मृत्युशय्या पर थे, बीमार और पीड़ित थे, जब उनके ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं थी, मैंने उनसे कहा: "कुछ धर्मगुरु कहते हैं कि आप जैसे लोगों को मरने के बाद परलोक में दुर्भाग्य का सामना करना पड़ेगा, कि आप एक भयानक जगह में, दुखों की जगह में, यातना कक्ष जैसी दुनिया में जन्म लेंगे: नरक लोक में। यदि उनकी बात सच है, तो मेरे मित्र, आप निश्चित रूप से ऐसी ही दुनिया में पहुँचेंगे। यदि आप वहाँ पहुँचते हैं, और यदि स्वर्गदूतों और राक्षसों के अस्तित्व, परलोक और आपके कर्मों के परिणामों के बारे में उनकी बात सही है, तो कृपया मुझे सूचित करें, या किसी दूत को भेजकर मुझे सूचित करें। आप मेरे लिए हमेशा भरोसेमंद और विश्वसनीय रहे हैं; और अगर आप कहते हैं कि आपने ये चीजें देखी हैं, तो मेरे लिए यही काफी

सबूत है।" आदरणीय कुमारा, वे इस बात पर सहमत हो गए, और आज तक उनकी तरफ से एक भी शब्द नहीं आया है, न ही उन्होंने कोई संदेशवाहक भेजा है। यही कारण है कि मैं अपने विचार पर कायम हूं।"

"हम्म। मुझे लगता है, राजकुमार, कि हमें इसकी और जाँच करनी चाहिए। इस परिदृश्य पर विचार करें: एक चोर को पकड़ा जाता है और आपके पास लाया जाता है, और उसे पकड़ने वाला कहता है, "यह आदमी चोर है, महाराज, रंगे हाथों पकड़ा गया है, और उसके सामने बीस गवाह हैं! उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

अब मान लीजिए कि आपने कहा, "उसे सबक सिखाओ: उसके हाथ बांधकर उसे पूरे शहर में घुमाओ, उसकी दाढ़ी और बाल दोनों मुंडवा दो और फिर उसका सिर उसके कंधों से अलग करके पूरे शहर के सामने प्रदर्शित करो।"

"अब मान लीजिए, राजकुमार, कि चोर बीच में ही टोकते हुए बोले, 'नहीं। मुझे सज़ा देने से पहले फलाँ गाँव में अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने जाना है। मुझे उनसे मिलने दीजिए, फिर मैं लौट आऊँगा।' आपका क्या विचार है? क्या आप उसकी इच्छा पूरी करेंगे और उस पर भरोसा करेंगे कि वह जल्लाद के पास लौट आएगा? या आप उसका सिर धड़ से अलग कर देंगे?"

"उसे नजरअंदाज कर दिया जाएगा, कुमार, और उसका सिर तुरंत काट दिया जाएगा।"

"राजकुमार, इस पर विचार कीजिए: आपके मित्र को राक्षस नरक में घसीटकर एक महाराक्षस के पास ले जाते हैं, जलती हुई जंजीरों से जकड़ा हुआ, नुकीली चट्टानों से टकराकर खून से लथपथ और घायल अवस्था में - और यातना के उपकरणों के पास ले जाने से पहले, वह महाराक्षस से कहता है, "क्षमा कीजिए? राक्षस? मुझे वापस जाने दीजिए - मैंने अपने मित्र, राजकुमार पायसी को एक संदेश पहुंचाने का वादा किया था..." जिस प्रकार आप चोर की अनदेखी करके उसका सिर कलम करवा देते, उसी प्रकार महाराक्षस आपके मित्र की अनदेखी करेगा।"

"वाह! आप चाहे कुछ भी कह लें, पूज्य कुमारा, आप मुझे मना नहीं सकते। मेरे विचार अटल हैं!"

"फिर से? क्यों?"

"आरवन्न कुमारा, मेरे कुछ मित्र ऐसे भी हैं जो इस विचारधारा के विपरीत हैं, जो हर प्रकार के बुरे कामों से दूर रहते हैं, अच्छे कामों में लगे रहते हैं और सही विचारों से परिपूर्ण हैं। कई बार वे भी मृत्युशय्या पर थे, बीमार थे, पीड़ा झेल रहे थे, और उनके ठीक होने की कोई आशा नहीं थी। तब मैंने उनसे कहा: "कुछ धर्मगुरु कहते हैं कि आप जैसे लोग मृत्यु के बाद परम आनंद के स्थान पर जाते हैं। आप हमेशा से भरोसेमंद और विश्वसनीय रहे हैं, इसलिए जब आपकी मृत्यु हो, और यदि आप ऐसे स्थान पर जाएँ, तो वापस आएँ या किसी दूत को भेजें और मुझे बताएँ कि यह सच है या नहीं।" वे इस बात से सहमत हो गए, और आज तक न तो वे आए हैं और न ही उन्होंने किसी दूत को भेजा है। इसीलिए मेरा मत आज भी अटल है।"

"हम्म। राजकुमार, इस पर विचार कीजिए: मान लीजिए एक आदमी पत्थर से ठोकर खाकर एक गहरे गड्ढे में सिर के बल गिर जाता है। इस गड्ढे में ताजा गोबर और गंदी चीजों से निकला पित्त है - साथ ही कीड़े, मक्खियां, परजीवी और गोबर की गंध पसंद करने वाले जीव भी हैं। इस मल में बलगम भी मिला हुआ है, और इस गड्ढे में रहने वाले हर जीव के रोमछिद्रों से लगातार मवाद निकल रहा है। फिर, यह देखकर आप अपने आदमियों से कहते हैं, "जल्दी! उसे बाहर निकालो!" और वे ऐसा ही करते हैं। उसे बचाकर, आप उसके शरीर से बलगम, पित्त और अन्य असंख्य गंदगी को साफ करवाते हैं। फिर, उसे अपना मेहमान बनाकर, आप उसे नए रेशमी वस्त्र, इत्र, गहने और अन्य सभी प्रकार के उत्तम आभूषणों से सजाते हैं। फिर, वह महल में आपके साथ अनेकों सुखों का आनंद लेता है। आपका क्या विचार है, राजकुमार? क्या वह कभी स्वेच्छा से उस गड्ढे में वापस जाना चाहेगा जहाँ से आपने उसे निकलवाया था?"

उफ़। नहीं। घिनौना...

"ओह क्यों नहीं?"

"क्योंकि कोई भी समझदार व्यक्ति स्वेच्छा से ऐसे गड्ढे में कदम नहीं रखेगा! यह घिनौना है, और मुझे लगता है कि यहां मौजूद हर कोई इससे सहमत होगा!"

"खैर, राजकुमार, जिस प्रकार आपको कीड़े-मकोड़ों के सिरे और रोमछिद्रों से बलगम निकालने वाले जीव घृणित लगते हैं, उसी प्रकार स्वर्गदूतों को मनुष्य घृणित लगते हैं, और उनके लिए मनुष्यलोक गोबर से भरे गड्ढे के समान है। तो फिर आप अपने मित्रों से यह अपेक्षा क्यों करते हैं कि वे केवल आपको संदेश देने के लिए स्वेच्छा से इस गंदगी के गड्ढे में उतरें? स्वीकार कीजिए, राजकुमार, कि आपका दृष्टिकोण गलत है!"

"अरे! आप जो भी कहें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता — मेरे विचार अटल हैं।"

"अच्छा, क्या आपके पास कोई और कारण है?"

"जी हां, रेवरेंड कुमारा।"

"मुझे इसके बारे में बताओ ताकि हम इसकी तह तक पहुँच सकें।" कुमार-कस्सपा ने कहा, जिसका अर्थ था राजकुमार के गलत विचारों की जड़, हालांकि राजकुमार का मानना था कि उनका मतलब अन्य लोकों के अस्तित्व के रहस्य से था।

"हे पूज्य कुमारा, मेरे कुछ मित्र थे जिन्होंने सही मार्ग का अनुसरण किया, वे हर तरह से बहुत अच्छे लोग और नागरिक थे। कुछ धर्मगुरुओं के अनुसार, उन्हें तो तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में जाना चाहिए था। फिर भी, जब उनमें से एक की मृत्यु हुई, तो मैंने उनसे कहा, "तुम हमेशा भरोसेमंद और विश्वसनीय रहे हो। कुछ धर्मगुरुओं का कहना है कि तुम्हारी जीवनशैली और सही मार्ग का अनुसरण करने के कारण तुम्हारा पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में होगा। यदि ऐसा है, तो कृपया आकर मुझे बताएं कि क्या यह सच है, या किसी दूत को भेजकर मुझे बताएं कि क्या यह सच है। आज तक उन्होंने न तो मुझसे संपर्क किया है और न ही कोई दूत भेजा है।"

हम्म। अच्छा, राजकुमार... ज़रा सोचो। तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में समय अलग गति से चलता है और लोग बहुत लंबी आयु जीते हैं। हमारी सदी के सौ वर्षों में, उनके लिए केवल एक दिन, चौबीस घंटे ही बीते होंगे। इन सौ वर्षों के तीस दिन मिलकर उनका एक महीना बनाते हैं, ऐसे बारह महीने मिलकर एक वर्ष बनाते हैं और ऐसे हज़ार वर्ष लगभग तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में जन्म लेने वालों का जीवनकाल होता है। मान लो कि तुम्हारा मित्र यह तय करे, "मैं राजकुमार को अपना संदेश देने के लिए उस अपवित्र दुनिया में बस कुछ समय के लिए वापस जाऊँगा — मैं कल निकलूँगा। या शायद, इस जगह को थोड़ा और देखने के बाद, दो-तीन दिनों में, मैं उनसे मिलने के लिए निकलूँगा।" — क्या वह ऐसा कर पाता?

"बिल्कुल नहीं, पूज्य कुमार, क्योंकि आपके दिए तर्क के अनुसार, जब तक वह वहाँ तीन दिन बिताएगा, तब तक हम सब मर चुके होंगे। लेकिन मुझे नहीं लगता कि तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में जन्म लेने वाले इतने लंबे समय तक जीवित रहते हैं, या समय की गति अलग होती है। आपको उनके जीवनकाल या उनके समय के बारे में कैसे पता है?"

आह! राजकुमार, ज़रा सोचिए, एक ऐसा व्यक्ति जो जन्म से ही दृष्टिहीन हो। उसने कभी प्रकाश और अंधकार, नीला और लाल, चंद्रमा और सूर्य का अनुभव नहीं किया हो। वह व्यक्ति शायद कहे, "प्रकाश और अंधकार तो अवास्तविक चीज़ें हैं, उनका अस्तित्व ही नहीं हो सकता, वे तो बच्चों के सपनों की बातें हैं।" या "रंग? यह विचार ही मेरे लिए असंभव है! मुझे इन चीज़ों का ज्ञान नहीं है, इसलिए इनका अस्तित्व ही नहीं हो सकता।" क्या वह सही होगा, राजकुमार?

"क्या? नहीं। जिस कमरे में हम अभी हैं, उसमें भी प्रकाश और अंधकार मौजूद है। रंग हमारे चारों ओर मौजूद हैं। ऐसा व्यक्ति गलत होगा।"

"राजकुमार, आप उस अंधे व्यक्ति के समान हैं। जैसा आप मानते हैं, भौतिक आँखों से परलोक नहीं देखे जा सकते। वे पवित्र पुरुष, वे तपस्वी जो एकांतवास में जाकर आध्यात्मिक विकास करते हैं, उन्हें ही शुद्ध दृष्टि प्राप्त होती है। यह शुद्ध दृष्टि भौतिक आँख से कहीं अधिक शक्तिशाली है, क्योंकि इससे वे परलोक को उसके राक्षसों और देवदूतों सहित देख सकते हैं। इसी प्रकार हम पवित्र पुरुष परलोक में देख पाते हैं। इसी प्रकार हम राक्षसों और देवदूतों के बारे में, और तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में निवास करने वालों के बारे में जानते हैं। इसी प्रकार हम जानते हैं कि कर्मों का फल होता है।"

"मेरी राय अब भी अटल है, रेवरेंड कुमारा, आप कुछ भी कहें।"

"आप विश्वास क्यों नहीं करते?"

"हाहा! आप जैसे पवित्र पुरुष मृत्यु के बाद मिलने वाले अद्‌भुत जीवन के बारे में, किसी दूसरे लोक में मिलने वाले अनगिनत सुख-सुविधाओं के बारे में बड़ी ही काव्यात्मक बातें करते हैं। लेकिन ध्यान दीजिए, पूज्य कुमार: उनमें से एक भी दुख या मृत्यु नहीं चाहता। वे सभी सुख-सुविधाओं के लिए और यथासंभव लंबे समय तक जीने के लिए प्रयासरत हैं। यदि ऐसे स्वर्ग लोक मौजूद हैं और ये पवित्र पुरुष उन्हें देख सकते हैं, तो वे स्वयं को चाकू क्यों नहीं मार लेते, या विष क्यों नहीं पी लेते, या किसी चट्टान से कूदकर इन स्वर्गों की यात्रा को शीघ्र क्यों नहीं कर लेते? वे ऐसा नहीं करते! यही एक और कारण है कि मैं दूसरे लोकों, स्वर्गदूतों और राक्षसों, या कर्म (कर्मों के फल) में विश्वास नहीं करता।"

हम्म। इस दृष्टांत पर गौर कीजिए और ध्यान से विचार कीजिए: एक धनी व्यक्ति की दो पत्नियाँ थीं। एक पत्नी गर्भवती थी और दूसरी का दस या बारह वर्ष का पुत्र था। पुत्र ही इस धनी व्यक्ति का उत्तराधिकारी था। पिता की मृत्यु हो गई और पुत्र अपनी विरासत पर दावा करने गया, लेकिन गर्भवती माँ ने विनती की, "रुको! मेरे बच्चे के जन्म तक रुको! यदि बच्चा लड़का हुआ, तो उसे इस संपत्ति का आधा हिस्सा मिलेगा, लेकिन यदि लड़की हुई, तो वह आपकी दासी बन जाएगी।" अपने और अपने बच्चे के लिए आधी संपत्ति पाने की इच्छा से, वह उत्तराधिकारी के विरासत पर दावा करने आने पर हर बार यही विनती करती थी। फिर उसने चाकू उठाया और बच्चे के जन्म को शीघ्र करने और इस प्रकार अपनी संपत्ति प्राप्त करने के लिए अपना गर्भ चीरने का प्रयास किया। हालाँकि, ऐसा करने में उसने स्वयं को और अजन्मे बच्चे दोनों को नष्ट कर दिया।

"इसी प्रकार, यदि कोई व्यक्ति परलोकों का सुख भोगने के लिए अपना प्राण त्याग देता है, तो वह न केवल इस जीवन को, बल्कि अगले जीवन को भी नष्ट कर देता है। पास्ता को पूरी तरह उबलने से पहले नहीं खाना चाहिए, वरना आपके दांत और पेट खराब हो जाएंगे। पवित्र पुरुषों द्वारा अर्जित पुण्य उनके जीवनकाल के साथ बढ़ता ही जाता है। अब, राजकुमार, अपनी गलती स्वीकार कीजिए।"

"नहीं। मैं अपने विचारों पर अडिग हूं, आपने जो कहा उससे उनमें कोई बदलाव नहीं आया है।"

"अरे? क्या आपके पास कोई और कारण है?"

"हां, और भी बहुत कुछ।"

"अच्छा, शर्माओ मत। मुझे अपना कारण बताओ।"

"आदरणीय कुमार, एक बार एक चोर को मेरे पास लाया गया, जो चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया था और उसे सज़ा मिलनी ज़रूरी थी। जब उसे सज़ा सुनाने का समय आया, तो मैंने कहा, "इस आदमी को ले जाओ और इसे एक बड़े बर्तन में डाल दो, इसके हाथ-पैर बांध दो और मुंह पर पट्टी बांध दो। फिर बर्तन के ऊपर गीली चमड़ी से सील कर दो और उसे बिना गर्म की हुई मिट्टी से ढक दो। फिर बर्तन को चूल्हे में रख दो और तेज़ आग जला दो।" उन्होंने वैसा ही किया। जब वह मर गया, तो बर्तन को बाहर निकाला गया और खोला गया। फिर, मुंह पर बंधी पट्टी हटाकर हमने देखा कि क्या उसकी आत्मा, उसका प्राण, उसका सार - बाहर निकलकर अंततः मुक्त हो जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, न कोई आत्मा थी, न कोई प्राण, न कोई सार। इसीलिए मुझे लगता है कि कोई दूसरा लोक नहीं है।"

"बहुत बढ़िया। अच्छा, राजकुमार, जब आप झपकी ले रहे होते हैं, या सो रहे होते हैं, तो क्या आप मानते हैं कि आपको कहीं और की जगहें दिखाई देती हैं? तालाब और सुंदर जंगल, या शायद बादलों में बने महल? या शायद गहरी गुफाएँ?"

"कुछ ऐसा ही, लेकिन हां, मुझे सपने आते हैं, रेवरेंड कुमारा।"

"क्या तुम्हारी रक्षा के लिए नौकर और रखैलें नहीं तैनात हैं?"

"हाँ मैं हूँ।"

"और क्या उन्होंने कभी सोते समय तुम्हारी आत्मा को आते-जाते देखा है?"

"अह... नहीं।"

"खैर, राजकुमार, यदि वे आपके जीवित रहते आपकी आत्मा को नहीं देख सकते, तो आप किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा को देखने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?"

"जो भी हो। मैं अब भी इस बात पर कायम हूं कि अन्य दुनियाएं मौजूद नहीं हैं, बल्कि हो ही नहीं सकतीं।"

"अरे? लेकिन क्यों?"

राजकुमार ने आत्मा के पलायन को देखने के लिए अपने द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों के बारे में बताना शुरू किया, जो सभी मूर्खतापूर्ण थे। हर बार, कुमार ने उन्हें एक दृष्टांत देकर समझाया कि वे तरीके कारगर क्यों नहीं होंगे और यह साबित क्यों नहीं करते कि अन्य लोक, कर्म (परिणामस्वरूप) और सूक्ष्म जगत का अस्तित्व नहीं है। अंत में, कुमार ने देखा कि इस बात को न मानने का हमेशा एक और कारण होगा, इसलिए उन्होंने कुछ नया करने का प्रयास किया। उन्होंने राजकुमार को एक मनुष्य और एक अनाथ बच्चे का दृष्टांत सुनाया।

कुमार ने शुरू करते हुए कहा, "एक बार एक मैला-कुचैला साधु, जो अग्नि उपासक था, जिसके बाल और शरीर दोनों ही मैले थे, एक सुनसान झोपड़ी में गया और उसे वहाँ एक छोटा बच्चा मिला। उस साधु ने सोचा कि बच्चे को जंगली जानवरों के लिए छोड़ना ठीक नहीं होगा, इसलिए उसने उसे गोद में उठा लिया और अपने बेटे की तरह पाला। एक बार जब लड़का बारह साल का था, तो किसी कारणवश उसे पास के एक गाँव जाना पड़ा। वह नहीं चाहता था कि उसके जाने के बाद उसकी आग बुझ जाए, इसलिए उसने लड़के को आग जलाए रखने का निर्देश दिया। उस साधु ने बच्चे से कहा, "अगर आग बुझ जाए, तो यह कुल्हाड़ी लो, ये लकड़ियाँ लो और इस सूखी सामग्री से नई आग जला लेना।" वह साधु काफी देर तक चला गया, और लड़का अपने खेल में मग्न होने के कारण आग को बुझने दिया। जब उसने यह देखा, तो उसे साधु की बातें ठीक से याद नहीं रहीं, और उसने कुल्हाड़ी से सूखी सामग्री पर वार करके आग जलाने की कोशिश की। उसने बार-बार कोशिश की, लेकिन फिर भी आग नहीं जली। जब वह आदमी लौटा तो लड़का वही कर रहा था। "क्यों?" उस अचंभित आदमी ने कहा, "क्या तुम कुल्हाड़ी से सूखी लकड़ियों पर मार रहे हो, और आग को बुझने क्यों दे रहे हो?" लड़के ने समझाया, और उस आदमी ने उसे डांटते हुए कहा, "मूर्ख मत बनो - इस तरह से कभी आग नहीं लग सकती! देखो, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।" और ऐसा कहते हुए, उसने उसे आग जलाना सिखाया।

"ठीक उसी तरह, राजकुमार, जिस प्रकार उस बच्चे ने आग की खोज के लिए मूर्खतापूर्ण तरीका अपनाया, तुम भी दूसरे लोकों के प्रमाण खोजने के लिए मूर्खतापूर्ण तरीके अपना रहे हो! इन बुरे विचारों को त्याग दो, राजकुमार, अन्यथा भविष्य में तुम्हें बहुत कष्ट सहना पड़ेगा!"

"नहीं, आदरणीय महोदय, आपके शब्दों के बावजूद मैं इन विचारों को नहीं छोड़ सकता। मेरे स्वामी, राजा पसेनादी, मेरे विचारों को जानते हैं, और अन्य स्थानों के सभी राजा भी। यदि मैं इतने लंबे समय तक और इतनी मेहनत से इनका बचाव करने के बाद इन्हें छोड़ दूं, तो वे सब मुझे मूर्ख समझेंगे!"

"हम्म। अच्छा, राजकुमार, इस पर विचार करो। एक बार एक विशाल कारवां था, जिसमें हजारों गाड़ियां और माल ढोने वाले जानवर थे। यह कारवां जहां भी गया, वहां का सारा सामान, लकड़ी, घास, फल और जड़ी-बूटियां, सब खत्म हो गया। इस समूह के दो नेता थे, प्रत्येक आधे हिस्से का प्रभारी था, और उन्होंने यह निर्णय लिया कि अलग-अलग रास्तों पर जाना ही बुद्धिमानी होगी, कहीं ऐसा न हो कि वे सब कुछ खत्म कर दें और अन्य यात्रियों के लिए रास्ता बंद कर दें।"

पहला सरदार पर्याप्त सामान इकट्ठा करके आगे बढ़ा। रास्ते में उसे और उसके साथियों को एक चालाक राक्षस मिला, जिसने मनुष्य का रूप धारण कर रखा था। राक्षस ने ताजे फूलों का मुकुट पहन रखा था और उसके हाव-भाव से साफ पता चल रहा था कि वह किसी हरे-भरे इलाके से गुजरा है। उसने सरदार से कहा, "आगे रास्ते में पर्याप्त से अधिक सामान है। अगर तुम अपना इकट्ठा किया हुआ सामान अपने पास रखोगे, तो तुम्हारी गति धीमी हो जाएगी। इसे छोड़ दो, तुम जल्दी पहुँच जाओगे।" काफिले के सरदार ने उसकी बात मान ली और उसने अपना अतिरिक्त पानी, लकड़ी, भोजन और जड़ी-बूटियाँ फेंक दीं। लेकिन रास्ते में कुछ भी नहीं मिला और वे कई दिनों तक बिना कुछ खाए-पिए चलते रहे। अंत में, पोषक तत्वों की कमी से उनकी मृत्यु हो गई और वह चालाक राक्षस आया और उनके शरीर को खा गया, केवल हड्डियाँ ही बचीं।

दूसरे नेता ने लंबा रास्ता चुना और कुछ हफ़्तों बाद उसका सामना उसी धूर्त राक्षस से हुआ। राक्षस ने उससे भी वही बात कही। लेकिन नेता समझदार था और अपने साथियों से सलाह मशवरा करके उसने अपना सामान अपने पास रखने का फैसला किया, भले ही वह बोझ

ही क्यों न हो। आगे का रास्ता सचमुच सुनसान था, लेकिन उसके साथियों और जानवरों ने भरपेट खाना खाया। तभी उन्हें पहले कारवां की हड्डियाँ और छोड़ा हुआ सामान मिला। नेता ने सोचा, "उस आदमी ने उसे धोखा देकर उसका सामान छुड़वा दिया होगा। कितना अफ़सोस! मुझे समझदारी से काम लेना चाहिए - मुझे अपना कम कीमती सामान वहीं छोड़ देना चाहिए और उसके छोड़े हुए कीमती सामान को अपने साथ ले जाना चाहिए।" और उसने ऐसा ही किया और सुरक्षित रूप से अपनी मंज़िल तक पहुँच गया।

"राजकुमार, तुम उस पहले नेता की तरह हो - तुम अपने हित के लिए उपयोगी चीज़ों को त्यागकर भी आगे बढ़ते रहते हो। इससे केवल मुसीबत और दुर्भाग्य ही आएगा! इसके बजाय दूसरे नेता की तरह बनो - जो तुम्हारे लिए अच्छा है उसे अपनाओ और जो बेकार है उसे त्याग दो! अपनी बुरी सोच को छोड़ दो और लाभकारी सोच को अपनाओ!"

"मैं ऐसा नहीं कर सकता, मैं ऐसा नहीं करूंगा। मैं राजा और अन्य शासकों को यह सोचने नहीं दूंगा कि मैं मूर्ख हूं।"

"राजकुमार! एक किसान के बारे में सोचिए, जो यात्रा करते समय सूखे गोबर का एक विशाल ढेर देखता है और सोचता है, 'मैं इसे ईंधन के रूप में इस्तेमाल कर सकता हूँ।' तो वह अपना लबादा लेता है, गोबर के उस विशाल ढेर को उससे लपेटता है और उसे लेकर चला जाता है। लेकिन घर लौटते समय, तेज बारिश शुरू हो जाती है और गोबर गीला हो जाता है। गीला होने के कारण, वह रिसने लगता है और किसान पर टपकने लगता है, जिससे वह मल से लथपथ हो जाता है और बदबू आने लगती है। राहगीरों ने उसे देखा और कहा, 'तुम्हें इसे फेंक देना चाहिए, फिर बारिश तुम्हें साफ करने में मदद करेगी, न कि तुम्हें गंदगी से ढक देगी।' लेकिन किसान ने उत्तर दिया, 'नहीं, मुझे इसे ईंधन के लिए रखना ही होगा!' और आगे बढ़ गया।"

"राजकुमार, तुम उस किसान की तरह हो! तुम अपने बुरे विचारों को एक तरह का ईंधन मानते हो और उनसे चिपके रहते हो - लेकिन वे तुम्हें केवल गोबर और गंदगी से ढक देते हैं! तुम्हें उन्हें त्याग देना चाहिए।"

"ओह, उफ़! लेकिन नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि मैं राजघराने को यह सोचने नहीं दे सकता कि मैं मूर्ख हूँ!"

"राजकुमार, इस पर विचार कीजिए: मान लीजिए दो आदमी भाग्य बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह तय करते हैं कि वे किसी पुराने, भूले हुए शहर में खजाने की खोज पर जाएं। ऐसा करते हुए उन्हें सरकंडों का एक बड़ा ढेर मिलता है, और वे अपने लबादों को बोरियों में बदलकर सरकंडों को ले जाते हैं। हालांकि, कुछ देर बाद उन्हें सन का एक ढेर मिलता है। "अरे वाह, क्या किस्मत है!" एक दोस्त ने कहा, "हम वैसे भी इन सरकंडों से सन बनाने वाले थे! तो अब हम सरकंडों को फेंक सकते हैं और सन ले जा सकते हैं!" - और वह अपने सरकंडों को फेंक देता है और अपने लबादे को सन से भर लेता है। लेकिन दूसरा आदमी सरकंडों को अपने पास रखता है, यह सोचकर, "मैंने इन्हें अच्छे से बांध दिया है, अपनी बोरी को खोलना मूर्खता होगी, वरना फिर से बांधना ही पड़ेगा।"

फिर कुछ समय बाद, खोज जारी रखते हुए, उन्हें कुछ बढ़िया रेशमी कपड़े मिलते हैं, और वही घटना फिर से घटित होती है। एक दोस्त रेशमी कपड़े ले लेता है, जबकि दूसरा अपने सरकंडे अपने पास ही रखता है। और फिर वही घटना दोबारा घटित होती है, इस बार सोने के सिक्कों का ढेर होता है।

"खैर, हम तो वैसे भी सरकंडे और रेशमी कपड़े बेचना चाहते थे, तो क्यों न इसके बजाय सोना ले जाएं?"

"नहीं, दोस्त, मैं अपने सरकंडों से संतुष्ट हूँ।"

"अगर इससे आपको खुशी मिलती है, तो अपनी मर्जी करो!"

लेकिन जब वे घर लौटे, तो सोने का ढेर रखने वाला आदमी बहुत अमीर हो गया, क्योंकि उसने सोने का इस्तेमाल निवेश और व्यापार में किया — और इससे उसका, उसकी पत्नी, बच्चों और माता-पिता का लंबे समय तक भरण-पोषण हुआ। वहीं, सरकंडों वाला आदमी अपने सरकंडों से अमीर नहीं हुआ, क्योंकि अंत में उसने उन्हें उस बोरी से कभी नहीं निकाला, और वे वहीं सड़ कर बदबू देने लगे।

"राजकुमार, तुम उस आदमी की तरह हो जिसके पास सरकंडों की बोरी है! अपने बुरे विचारों को त्याग दो! उन्हें तुम्हें नुकसान न पहुँचाने दो!"

"ऐसे शब्द... आदरणीय, बल्कि परम पूज्य अरहंत कुमार-कस्सपा, आपके वचन मुझे छू गए हैं, और आपके दृष्टांतों ने मुझे दिखाया है कि मैं सत्य की खोज के लिए मूर्खतापूर्ण तरीके अपना रहा हूँ। ऐसा लगता है जैसे आपने गिरी हुई चीज़ को सीधा खड़ा कर दिया हो। मैं आज आपके तीक्ष्ण उत्तर सुनने आया था, क्योंकि मैं वाद-विवाद में रुचि रखता था, लेकिन आज मैं कुछ बहुत ही मूल्यवान सीखकर जा रहा हूँ - मानो यात्रा करते हुए अचानक कोई छिपा हुआ हीरा मिल गया हो। आप अपने उपदेशों को इतनी सरलता से समझाते हैं कि वे सुनने और समझने में आसान हो जाते हैं, और आपकी बातें वास्तव में अर्थपूर्ण होती हैं। हे कुमार, मैं बुद्ध, धम्म और संघ की शरण लेता हूँ। मुझे इस रूप में स्वीकार करें: आज से लेकर अपने अंतिम दिन तक एक गृहस्थ अनुयायी के रूप में। हे भगवान, हमें उपदेश दीजिए!"

अतः बुद्ध के शिष्य कुमार तपस्वी ने उदारता और दान के महत्व पर उपदेश दिया।

इससे प्रेरित होकर राजकुमार पायसी ने जरूरतमंदों के लिए एक दान-पुण्य संस्था स्थापित की। कोई भी जरूरतमंद, चाहे वह केवल बदकिस्मत हो या तपस्वी, उनकी संस्था में जाकर वस्त्र और भोजन प्राप्त कर सकता था, हालांकि भोजन की गुणवत्ता घटिया थी और वस्त्र खुरदुरे बोरे से बने थे। यह व्यवस्था उन्हें और जरूरतमंदों को भी रास आई, लेकिन दान-पुण्य संस्था के संचालन का जिम्मा संभाल रहे उत्तरा नामक एक चिंतित रईस ने टिप्पणी की, "मुझे लगता है कि इस दान-पुण्य के माध्यम से मुझे और राजकुमार पायसी को बहुत अलग-अलग प्रतिफल मिलेंगे।"

यह सुनकर राजकुमार ने उत्तरा से कहा, "मैं अपने दान के लिए पुरस्कार की अपेक्षा रखता हूं और मुझे ऐसा करने में कोई बुराई नहीं दिखती।"

"हाँ, लेकिन हे भगवान, जो भोजन और वस्त्र आप देते हैं... मैं उन्हें छूने का दिखावा भी नहीं करूँगा, और आप स्वयं भी अपने सबसे मोटे जूतों से उन पर नहीं चलेंगे!"

"हम्म... अच्छा..."

"महाराज, आप आधे-अधूरे मन से किए गए दान से अच्छे प्रतिफल की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?"

राजकुमार ने आह भरी और फिर कहा, "जैसी आपकी इच्छा। घटिया गुणवत्ता वाले भोजन और वस्त्रों को त्याग दें, और इसके बजाय ऐसा भोजन और वस्त्र दें जैसा मैं स्वयं या आप स्वयं उपयोग में लाते।"

"जी महाराज।" और उन्होंने ठीक वैसा ही किया।

मृत्यु के बाद, राजकुमार पायसी का जन्म एक मध्यम दर्जे के स्वर्ग में मध्यम दर्जे के देवदूतों के बीच हुआ, क्योंकि यद्यपि वे बहुत उदार थे, फिर भी उनका मन उदार होने में संकोच करता था और वे जो कुछ भी देते थे, उसमें कंजूसी करते थे। वहीं, उत्तरा का पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में हुआ, क्योंकि वे निःशर्त और बिना किसी कंजूसी के उदार थे।

जैसा कि बाद में पता चला, बुद्ध के शिष्यों में से एक, गवमपति, उसी स्वर्ग में दोपहर की झपकी लेने के आदी थे जहाँ राजकुमार पयासी का पुनर्जन्म हुआ था, और जब वे अगली बार वहाँ गए, तो उन्होंने राजकुमार को पहचान लिया।

"क्या आप वही व्यक्ति नहीं हैं जो झूठे विचारों से चिपके रहे?"

"हां, लेकिन मैंने उन्हें बहुत पहले ही त्याग दिया है, इसके लिए मैं आदरणीय कुमार का आभारी हूं।"

"ओह। आपको देखकर अच्छा लगा, और यह सुनकर भी अच्छा लगा। आपकी चैरिटी चलाने वाली उस उत्तरा का क्या हुआ?"

"उनका पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में हुआ—ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के एक भी चीज दान की और उनकी उदारता असीमित थी।"

"हां दिलचस्प।"

"आदरणीय महोदय?"

"जी हां, राजकुमार?"

"मुझ पर एक कृपा करो - जब तुम वापस जाओ, तो सबको मेरे और उत्तरा के भाग्य के बारे में बताओ, ताकि वे मेरी गलती न दोहराएं!"

गवमपति ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, और अपने साथियों से यह कहा:

"राजकुमार पायसी का पुनर्जन्म एक साधारण स्वर्ग में साधारण देवदूतों के साथ हुआ, क्योंकि दान देने के बावजूद उन्हें उसमें कोई संकोच नहीं था। उत्तरा, जो केवल दान का प्रबंध करते थे, तैंतीस देवताओं के स्वर्ग में गए, क्योंकि उन्हें दान देने में कोई संकोच नहीं था। इससे सीख लो! जो कुछ भी दान करो, उसमें कभी संकोच मत करो!"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.1पतिका सुत्त(DN24)

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान मल्लों के बीच ठहरे हुए थे। अनुपिया मल्लों के एक कस्बे का नाम है। भगवान ने सुबह सवेरे वस्त्र धारण किए, अपना वस्त्र और भिक्षापात्र ग्रहण किया और अनुपिया में भिक्षा मांगने गए। तब उन्होंने सोचा, 'अनुपिया में भिक्षा मांगने जाना मेरे लिए अभी बहुत जल्दी है। क्यों न मैं घुमंतू भगवगोत्त के आश्रम में दर्शन करने जाऊं?' और उन्होंने ऐसा ही किया।

और घुमंतू भगव-गोत्त ने कहा, 'हे भगवान, आपका स्वागत है! अंततः भगवान यहाँ आने के लिए अपना मार्ग बदल कर आए हैं। बैठिए, भगवान, आसन तैयार है।' भगवान तैयार आसन पर बैठ गए, और भगव ने एक छोटी चौकी ली और एक तरफ बैठ गए। फिर उन्होंने कहा, 'हे भगवान, कुछ दिन पहले लिच्छवी सुनक्खत्त मेरे पास आए और कहा, "भगव, मैंने भगवान को छोड़ दिया है। मैं अब उनके अधीन नहीं हूँ।" क्या सचमुच ऐसा है, भगवान?'

'यह सच है, भगगव।'

कुछ दिन पहले, सुनक्खत्ता मेरे पास आया, मुझे प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गया और बोला: "हे भगवान, मैं भगवान को छोड़ रहा हूँ, मैं अब भगवान के अधीन नहीं हूँ।" तो मैंने उससे कहा: "सुनक्खत्ता, क्या मैंने कभी तुमसे कहा था: 'आओ, सुनक्खत्ता, मेरे अधीन रहो'?"

"कोई भगवान नहीं।"

"या क्या तुमने कभी मुझसे कहा है: 'हे भगवान, मैं आपके शासन के अधीन रहूंगा'?"

"कोई भगवान नहीं।"

"तो, सुनक्खत्ता, अगर मैंने तुमसे ऐसा नहीं कहा और तुमने मुझसे ऐसा नहीं कहा - हे मूर्ख, तुम कौन हो और क्या त्याग रहे हो? सोचो, हे मूर्ख, इसमें तुम्हारी कितनी गलती है।"

"हे भगवान, आपने कोई चमत्कार नहीं किया है।"

और क्या मैंने कभी तुमसे कहा है: 'मेरे शासन के अधीन आओ और मैं तुम्हारे लिए चमत्कार करूंगा'?

"कोई भगवान नहीं।"

"या क्या तुमने कभी मुझसे कहा है: 'हे भगवान, यदि तुम मेरे लिए चमत्कार करोगे तो मैं तुम्हारे शासन के अधीन रहूंगा'?"

"कोई भगवान नहीं।"

"तो फिर, सुनक्खत्ता, ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने ऐसे कोई वादे नहीं किए थे, और तुमने ऐसी कोई शर्तें नहीं रखी थीं। ऐसी स्थिति में, हे मूर्ख, तुम कौन हो और क्या त्याग रहे हो?"

"सुनक्खत्ता, आपका क्या विचार है? चमत्कार हों या न हों - क्या मेरे धम्म शिक्षण का उद्देश्य इसका अभ्यास करने वाले को दुखों के पूर्ण नाश की ओर ले जाना है?"

"हाँ, भगवान।"

इसलिए, सुनक्खत्ता, चाहे चमत्कार किए जाएं या न किए जाएं, मेरे धम्म उपदेश का उद्देश्य अभ्यास करने वाले को दुखों के पूर्ण नाश की ओर ले जाना है। फिर चमत्कार करने का क्या उद्देश्य रह जाता है? हे मूर्ख, विचार करो कि इसमें तुम्हारा कितना दोष है।

"हे भगवान, आप चीजों की शुरुआत के बारे में नहीं सिखाते।"

और क्या मैंने कभी तुमसे कहा है: 'मेरे शासन के अधीन आओ और मैं तुम्हें चीजों की शुरुआत सिखाऊंगा'?

"नहीं, भगवान।"

"...ऐसी स्थिति में, हे मूर्ख व्यक्ति, तुम कौन हो और तुम क्या त्याग रहे हो?"

"सुनक्खत्ता, आपने वज्जियों के बीच अनेक प्रकार से मेरी प्रशंसा की है, यह कहते हुए: 'यह भगवान अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हैं, जो ज्ञान और आचरण से परिपूर्ण हैं, कल्याणकारी हैं, संसार के ज्ञाता हैं, मनुष्यों को वश में करने में अतुलनीय प्रशिक्षक हैं, देवताओं और मनुष्यों के गुरु हैं, बुद्ध हैं, भगवान हैं।' आपने अनेक प्रकार से धम्म की प्रशंसा की है, जो यहाँ और अभी दृश्यमान है, कालातीत है, अवलोकन के लिए आमंत्रित करता है, आगे की ओर ले जाता है, जिसे बुद्धिमानों द्वारा स्वयं के लिए अनुभव किया जाना है।" आपने अनेक प्रकार से भिक्षुओं के संघ की प्रशंसा करते हुए कहा है: 'भगवान के शिष्यों का संघ सुप्रशिक्षित है, सत्यनिष्ठा में प्रशिक्षित है, विधिपूर्वक प्रशिक्षित है, उत्कृष्ट रूप से प्रशिक्षित है, अर्थात् चार युग्मों के पुरुष, आठ प्रकार के व्यक्ति। यह भगवान के शिष्यों का संघ है, आदर के योग्य, श्रद्धा के योग्य, दान के योग्य, अभिवादन के योग्य, पुण्य के लिए संसार में अद्वितीय क्षेत्र है।'

"इन तरीकों से आपने मेरी, धम्म की और वज्जियों के बीच इस संप्रदाय की प्रशंसा की है। और मैं आपसे कहता हूँ, मैं आपसे कहता हूँ, सुनक्खत्त, ऐसे लोग होंगे जो कहेंगे: 'सुनक्खत्त लुच्छवी तपस्वी गौतम के अधीन पवित्र जीवन धारण करने में असमर्थ थे, और इस असमर्थता के कारण उन्होंने प्रशिक्षण छोड़ दिया और नीच जीवन में लौट गए।' सुनक्खत्त, वे यही कहेंगे।" और, भगगव, मेरे शब्दों पर सुनक्खत्त ने इस धम्म और शिष्यों को ऐसे छोड़ दिया जैसे नरक में जाने वाला कोई व्यक्ति।"

हे भगगव, एक बार मैं खुलुओं के बीच, उनके नगर उत्तराका में ठहरा हुआ था। सुबह-सुबह मैं वस्त्र और कुंड लेकर भिक्षा मांगने उत्तराका गया, मेरे साथ सुनक्खत्त भी था। उस समय नग्न तपस्वी कोरक्खत्तिया, जिसे "कुत्ते के समान" कहा जाता था, चारों पैरों पर जमीन पर लेटकर भोजन को अपने मुँह से चबाकर खा रहा था। उसे देखकर सुनक्खत्त ने सोचा, "यही तो असली अरहंत तपस्वी है, जो

चारों पैरों पर जमीन पर लेटकर भोजन को अपने मुँह से चबाकर खाता है।" और मैं उसके मन में यह विचार जान गया और उससे कहा, "हे मूर्ख, क्या तू शाक्यों का अनुयायी होने का दावा करता है?"

"हे भगवान, इस प्रश्न से आपका क्या तात्पर्य है?"

"सुनक्खत्ता, क्या आपने उस नग्न तपस्वी को चारों पैरों पर घूमते हुए देखकर यह नहीं सोचा: 'यही तो असली अरहंत तपस्वी है, जो जमीन पर लेटकर चारों पैरों पर घूमता है और केवल अपने मुंह से ही भोजन चबाता और खाता है'?"

"जी भगवान, मैंने किया। क्या परम पूज्य भगवान दूसरों को उनके अरहंत पद से वंचित रखते हैं?"

"मैं दूसरों के अरहंत पद से ईर्ष्या नहीं करता, हे मूर्ख! यह बुरी सोच केवल तुम्हारे मन में उत्पन्न हुई है। इसे त्याग दो, अन्यथा यह तुम्हारे लिए लंबे समय तक हानि और दुःख का कारण बनेगी! यह नग्न तपस्वी कोरक्खत्तिया, जिसे तुम सच्चा अरहंत मानते हो, सात दिनों में अपच से मर जाएगा, और मरने के बाद वह कालकंज असुरों के बीच पुनर्जन्म लेगा, जो असुरों की सबसे नीच श्रेणी हैं। और मरने के बाद उसे श्मशान भूमि में बिरना घास के ढेर पर फेंक दिया जाएगा। यदि तुम चाहो, हे सुनक्खत्त, तो तुम उसके पास जाकर उससे पूछ सकते हो कि क्या वह अपने भाग्य को जानता है। और हो सकता है कि वह तुम्हें बताए: 'मित्र सुनक्खत्त, मैं अपना भाग्य जानता हूँ। मेरा पुनर्जन्म कालकंज असुरों के बीच हुआ है, जो असुरों की सबसे नीच श्रेणी हैं।'"

तब सुनक्खत्त कोरक्खत्तिया के पास गया और उसे मेरी भविष्यवाणी के बारे में बताया, और कहा: "इसलिए, मित्र कोरक्खत्तिया, अपने खाने-पीने का बहुत ध्यान रखो, ताकि तपस्वी गौतम की बातें गलत साबित हो जाएँ!" सुनक्खत्त को तथागत की बातों के गलत साबित होने का इतना यकीन था कि उसने सातों दिन एक-एक करके गिने। लेकिन सातवें दिन कोरक्खत्तिया की बदहजमी से मृत्यु हो गई, और मरने के बाद वह कालकंज असुरों के बीच फिर से प्रकट हुआ, और उसके शरीर को श्मशान भूमि में बिरना घास के ढेर पर फेंक दिया गया।

जब सुनक्खत्त ने यह सुना, तो वह श्मशान भूमि में बिराना घास के ढेर के पास गया, जहाँ कोरक्खत्तिया लेटा हुआ था। उसने उसके शरीर पर तीन बार हाथ से प्रहार किया और कहा, "मित्र कोरक्खत्तिया, क्या तुम अपना भाग्य जानते हो?" कोरक्खत्तिया उठ बैठा और अपने हाथ से अपनी पीठ रगड़ते हुए बोला, "मित्र सुनक्खत्त, मैं अपना भाग्य जानता हूँ। मेरा पुनर्जन्म कालकंज असुरों के बीच हुआ है, जो असुरों की सबसे नीच श्रेणी है।" और इतना कहकर वह फिर से गिर पड़ा।

फिर सुनक्खत्ता मेरे पास आया, मुझे प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गया। मैंने उससे कहा: 'सुनक्खत्ता, तुम्हारा क्या विचार है? मैंने तुम्हें 'कुत्ते-आदमी' के बारे में जो बताया था, क्या वह सच हुआ या नहीं?'

"हे भगवान, यह सब उसी तरह हुआ है जैसा आपने कहा था, अन्यथा नहीं।"

"तो, सुनक्खत्ता, आपका क्या विचार है? क्या कोई चमत्कार हुआ है या नहीं?"

"हे भगवान, ऐसा होने पर चमत्कार हुआ है, अन्यथा नहीं।"

"तो फिर, हे मूर्ख, क्या तुम मुझसे, मेरे ऐसे चमत्कार करने के बाद भी, यह कहते हो: 'हे भगवान, आपने तो कोई चमत्कार नहीं किया है।'? हे मूर्ख, सोचो, गलती तुम्हारी ही कितनी बड़ी है।" और मेरी बात सुनकर सुनक्खत्ता ने इस धम्म और अनुशासन को ऐसे त्याग दिया जैसे कोई नरक का दंड भुगत रहा हो।

'एक बार, भगगव, मैं वैशाली में, महान वन के गैबल हॉल में ठहरा हुआ था। उस समय वैशाली में कलारमुत्थक नाम का एक नग्न तपस्वी रहता था, जिसने वज्जिया की राजधानी में अपार लाभ और प्रसिद्धि प्राप्त की थी। उसने सात नियमों का पालन किया था: "जब तक मैं जीवित रहूंगा, मैं नग्न तपस्वी रहूंगा और कोई वस्त्र नहीं धारण करूंगा; जब तक मैं जीवित रहूंगा, मैं पवित्र रहूंगा और यौन संबंध से दूर रहूंगा; जब तक मैं जीवित रहूंगा, मैं मादक पेय और मांस का सेवन करूंगा, उबले हुए चावल और खट्टे दूध से परहेज करूंगा; जब तक मैं जीवित रहूंगा, मैं वैशाली के पूर्व में स्थित उदेना मंदिर, दक्षिण में स्थित गौतमका मंदिर, पश्चिम में स्थित सत्तम्बा मंदिर और उत्तर में स्थित बहुपुत्त मंदिर से आगे कभी नहीं जाऊंगा।" और इन्हीं सात नियमों का पालन करने के कारण उसने वज्जिया की राजधानी में अपार लाभ और प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

अब सुनक्खत्त कलारमुत्थक से मिलने गए और उनसे एक प्रश्न पूछा जिसका उत्तर वे नहीं दे सके। उत्तर न दे पाने के कारण सुनक्खत्त क्रोधित, चिड़चिड़े और अड़ियल हो गए। लेकिन सुनक्खत्त ने सोचा, "कहीं मैं इस सच्चे अरहंत तपस्वी को नाराज न कर दूं। मैं नहीं चाहता कि ऐसा कुछ हो जिससे मुझे हमेशा के लिए हानि और दुर्भाग्य हो!"

तब सुनक्खत्ता मेरे पास आया, मुझे प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गया। मैंने उससे कहा, "हे मूर्ख, क्या तू शाक्य वंश का अनुयायी होने का दावा करता है?" "हे भगवान, इस प्रश्न से आपका क्या तात्पर्य है?"

"सुनक्खत्ता, क्या तुम कलारमुत्थक से मिलने नहीं गए थे और उनसे कोई ऐसा प्रश्न नहीं पूछा था जिसका वे उत्तर न दे सकें, और क्या उन्होंने तब क्रोध, रोष और चिड़चिड़ेपन के लक्षण नहीं दिखाए थे? और क्या तुमने यह नहीं सोचा था: 'कहीं मैं इस सच्चे अरहंत तपस्वी को नाराज न कर दूं। मैं नहीं चाहता कि ऐसा कुछ हो जिससे मुझे चिरस्थायी हानि और दुर्भाग्य हो'?"

"जी भगवान, मैंने किया। क्या परम पूज्य भगवान दूसरों को उनके अरहंत पद से वंचित रखते हैं?"

"मैं दूसरों के अरहंत बनने से ईर्ष्या नहीं करता, हे मूर्ख! यह बुरी सोच केवल तुम्हारे मन में उत्पन्न हुई है। इसे त्याग दो, अन्यथा यह तुम्हारे लिए लंबे समय तक हानि और दुःख का कारण बनेगी! यह नग्न तपस्वी, जिसे तुम सच्चा अरहंत मानते हो, शीघ्र ही वस्त्र धारण करके विवाहित हो जाएगा और उबले हुए चावल और खट्टे दूध पर जीवन व्यतीत करेगा। वह वैशाली के सभी तीर्थों से भी आगे निकल जाएगा और अपनी प्रतिष्ठा पूरी तरह खोकर मर जाएगा।" और वास्तव में, ऐसा ही हुआ।

"तब सुनाक्खत्ता ने जो कुछ हुआ था, उसे सुनकर मेरे पास आया... और मैंने कहा, "सुनाक्खत्ता, तुम्हारा क्या विचार है? क्या कलारमुत्थक के बारे में मैंने जो कहा था, वह सच हुआ या नहीं? ...क्या कोई चमत्कार हुआ है या नहीं?"... और मेरी बात सुनकर सुनाक्खत्ता ने इस धम्म और अनुशासन को ऐसे छोड़ दिया जैसे उसे नरक की सजा मिली हो।"

"एक बार, भगव, मैं वैशाली के महान वन में स्थित गैबल हॉल में ठहरा हुआ था। उस समय वैशाली में पतिकपुत्त नाम का एक नग्न तपस्वी रहता था, जिसने वज्जिआ की राजधानी में बहुत ख्याति और समृद्धि प्राप्त की थी। उसने वैशाली की सभा में यह घोषणा की: 'तपस्वी गौतम स्वयं को ज्ञानी पुरुष होने का दावा करते हैं, और मैं भी यही दावा करता हूँ। यह उचित है कि ज्ञानी पुरुष चमत्कार करके अपनी बुद्धिमत्ता का प्रमाण दे। यदि तपस्वी गौतम मुझसे मिलने के लिए आधा रास्ता भी तय करके आएँ, तो मैं भी ऐसा ही करूँगा। तब हम दोनों चमत्कार कर सकते हैं और यदि तपस्वी गौतम एक चमत्कार करें, तो मैं दो करूँगा। यदि वे दो करें, तो मैं चार करूँगा। और यदि वे चार करें, तो मैं आठ करूँगा। तपस्वी गौतम जितने चमत्कार करें, मैं उससे दोगुने चमत्कार करूँगा!'"

तब सुनक्खत्ता मेरे पास आया, मुझे प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गया और मुझे बताया कि पतिकपुत्त ने क्या कहा था। मैंने कहा: "सुनक्खत्ता, वह नग्न तपस्वी पतिकपुत्त मुझसे आमने-सामने मिलने के योग्य नहीं है जब तक कि वह अपने शब्द वापस न ले ले, उस विचार को त्याग न दे और उस दृष्टिकोण को छोड़ न दे। और यदि वह अन्यथा सोचता है, तो उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

हे भगवान, परमेश्वर अपने शब्दों का ध्यान रखें, और उपकार करने वाले अपने शब्दों का ध्यान रखें!

"तुम मुझसे ऐसा कहकर क्या कहना चाहते हो?"

हे भगवान, परमेश्वर पतिकपुत्त के आगमन के विषय में कोई निश्चित कथन दे सकते हैं। परन्तु वे किसी रूपांतरित होकर आ सकते हैं, और इस प्रकार परमेश्वर के वचनों को असत्य कर सकते हैं!

लेकिन, सुनक्खत्ता, क्या तथागत कोई ऐसा कथन कहेंगे जो अस्पष्ट हो?

"हे भगवान, क्या भगवान स्वयं जानते हैं कि पतिकपुत्त का क्या होगा? या किसी देवता ने तथागत को बताया है?"

"सुनक्खत्ता, मैं यह अपने मन से जानता हूँ, और एक देवता ने भी मुझे बताया है। क्योंकि लिच्छवियों के सेनापति अजिता का परसों निधन हो गया और उनका पुनर्जन्म तैंतीस देवताओं के साथ हुआ है। वे मुझसे मिलने आए और बोले: हे भगवान, नग्न तपस्वी पतिकपुत्त एक धृष्ट झूठा है! उसने वज्जी राजधानी में घोषणा की: 'लिच्छवियों के सेनापति अजिता का पुनर्जन्म नरक में हुआ है!' परन्तु

मेरा पुनर्जन्म नरक में नहीं, बल्कि तैंतीस देवताओं के साथ हुआ है। वह एक धृष्ट झूठा है...' अतः, सुनक्खत्ता, मैं जो कह रहा हूँ वह अपने मन से जानता हूँ, और एक देवता ने भी मुझे बताया है। और अब, सुनक्खत्ता, मैं वैशाली में भिक्षा मांगने जा रहा हूँ। लौटकर, भोजन करने के बाद, मैं दोपहर के विश्राम के लिए पतिकपुत्त के उद्यान में जाऊँगा। आप उसे जो चाहें कह सकते हैं।"

फिर, वस्त्र धारण करके, मैंने अपना वस्त्र और भिक्षापात्र लिया और वैशाली में भिक्षा मांगने चला गया। लौटकर मैं दोपहर के विश्राम के लिए परिकापुत्त के उद्यान में गया। इसी बीच सुनक्खत्त वैशाली में दौड़ा और सभी प्रमुख लिच्छवियों से कहा, "मित्रों, भगवान वैशाली में भिक्षा मांगने गए हैं, और उसके बाद वे परिकापुत्त के उद्यान में दोपहर के विश्राम के लिए गए हैं। आओ, मित्रों, अकेले आओ! दो महान तपस्वी चमत्कार करने जा रहे हैं!" और सभी प्रमुख लिच्छवियों ने सोचा, "दो महान तपस्वी चमत्कार करने जा रहे हैं! चलो चलें!" और वह विभिन्न संप्रदायों के प्रतिष्ठित और धनी ब्राह्मणों के पास गया और उन्हें भी यही बात बताई, और उन्होंने भी सोचा, "चलो चलें!" और इस प्रकार ये सभी लोग परिकापुत्त के उद्यान में आ गए, सैकड़ों-हजारों की संख्या में।

'और पतिकपुत्त ने सुना कि ये सभी लोग उसके उद्यान में आए हैं, और तपस्वी गौतम दोपहर के विश्राम के लिए वहाँ गए हैं। यह खबर सुनकर वह भय और कंपकंपी से कांप उठा, और उसके रोंगटे खड़े हो गए। और इस प्रकार भयभीत और कांपते हुए, रोंगटे खड़े हुए, वह यात्रियों के तिन्दुका आवास की ओर चल पड़ा।' जब सभी उपस्थित लोगों ने सुना कि वह तिन्दुका के आश्रम में गए हैं, तो उन्होंने एक व्यक्ति को पतिकपुत्त के पास जाकर उनसे यह कहने का आदेश दिया: "मित्र पतिकपुत्त, आइए! ये सभी लोग आपके उद्यान में आए हैं, और तपस्वी गौतम दोपहर के विश्राम के लिए वहाँ गए हैं। क्योंकि आपने वैशाली में सभा में घोषणा की थी: 'तपस्वी गौतम स्वयं को ज्ञानवान मानते हैं, और मैं भी यही दावा करता हूँ। यह उचित है कि ज्ञानवान व्यक्ति चमत्कार करके अपनी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित करे। यदि तपस्वी गौतम मुझसे मिलने के लिए आधा रास्ता तय करेंगे, तो मैं भी ऐसा ही करूँगा। तब हम दोनों चमत्कार कर सकते हैं और यदि तपस्वी गौतम एक चमत्कार करेंगे, तो मैं दो करूँगा। यदि वे दो करेंगे, तो मैं चार करूँगा। और यदि वे चार करेंगे, तो मैं आठ करूँगा। तपस्वी गौतम जितने चमत्कार करेंगे, मैं उससे दोगुने चमत्कार करूँगा!' अतः अब आधा रास्ता तय कीजिए: तपस्वी गौतम आपसे मिलने के लिए आधा रास्ता तय कर चुके हैं और आपके उद्यान में दोपहर के विश्राम के लिए बैठे हैं।"

वह आदमी जाकर संदेश लेकर गया, और उसे सुनकर पतिकपुत्त ने कहा: "मैं आ रहा हूँ, मित्र, आ रहा हूँ!" लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह अपनी सीट से उठ नहीं सका। तब उस आदमी ने कहा: "क्या हुआ है तुम्हें, मित्र पतिकपुत्त? क्या तुम्हारी कमर सीट से चिपक गई है या सीट तुम्हारी कमर से चिपक गई है? तुम बार-बार कह रहे हो: 'मैं आ रहा हूँ, मित्र, आ रहा हूँ!' लेकिन तुम बस छटपटा रहे हो और अपनी सीट से उठ नहीं पा रहे हो।" और ये शब्द सुनकर भी पतिकपुत्त छटपटाता रहा लेकिन उठ नहीं सका।

और जब उस व्यक्ति को यह एहसास हुआ कि पतिकपुत्त स्वयं को रोक नहीं सकता, तो वह सभा में वापस गया और स्थिति की सूचना दी। और मैंने उनसे कहा: "नग्न तपस्वी पतिकपुत्त मुझसे आमने-सामने मिलने में सक्षम नहीं है जब तक कि वह अपने शब्दों को वापस न ले, उस विचार को त्याग न दे और उस दृष्टिकोण को छोड़ न दे। और यदि वह अन्यथा सोचता है, तो उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

तब, लिच्छवियों के मंत्रियों में से एक भगव अपने आसन से उठे और बोले, "महोदय, ज़रा रुकिए, मैं देख लेता हूँ कि क्या मैं पतिकपुत्त को सभा में ला सकता हूँ।" इसलिए वे तिन्दुका के आवास पर गए और पतिकपुत्त से कहा, "पतिकपुत्त, मेरे साथ आइए। आपका आना ही बेहतर होगा। ये सभी लोग आपके उद्यान में आए हैं और तपस्वी गौतम दोपहर के विश्राम के लिए वहाँ गए हैं। यदि आप आएँगे, तो हम आपको विजेता बना देंगे और तपस्वी गौतम को पराजित कर देंगे।"

और पट्टिकापुत्त ने कहा, "मैं आ रहा हूँ, मित्र, मैं आ रहा हूँ," लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद वह अपनी सीट से उठ नहीं सका...

तो मंत्री सभा में लौट आए और स्थिति की रिपोर्ट दी। तब मैंने कहा, "नग्न तपस्वी पतिकपुत्त मुझसे आमने-सामने तब तक नहीं मिल सकते जब तक वे अपने शब्द वापस न ले लें, उस विचार को त्याग न दें और उस दृष्टिकोण को छोड़ न दें। और यदि वे इसके विपरीत सोचते हैं, तो उनका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

तब लकड़ी के कटोरे वाले तपस्वी के शिष्य जलिया अपनी सीट से उठे... तिन्दुका के आवास पर गए और पतिकपुत्त से कहा: "चलिए पतिकपुत्त... यदि आप आएंगे, तो हम आपको विजेता बनाएंगे और तपस्वी गौतम को पराजित होने देंगे।"

और पतिकपुत्त ने कहा: "मैं आ रहा हूँ, मित्र, मैं आ रहा हूँ!" लेकिन लाख कोशिश करने पर भी वह अपनी सीट से उठ नहीं सका...

तब जब जलिया को स्थिति का एहसास हुआ, तो उसने कहा, "पतिकपुत्त, बहुत समय पहले, पशुओं के राजा सिंह ने सोचा, 'मान लो मैं किसी जंगल के पास अपना मांद बना लूँ। फिर मैं शाम को बाहर निकलकर जम्हाई लूँगा, चारों दिशाओं का जायजा लूँगा, तीन बार सिंह की दहाड़ मारूँगा और फिर मवेशियों के चरागाह की ओर चल दूँगा। वहाँ मैं झुंड में से सबसे अच्छे मवेशी को चुनकर उसका शिकार करूँगा और कोमल मांस का अच्छा भोज करके अपने मांद में लौट आऊँगा।' और उसने ऐसा ही किया।"

"एक बूढ़ा सियार था जो शेर के छोड़े हुए भोजन पर पल-बढ़कर मोटा हो गया था, और वह घमंडी और बलवान था। उसने सोचा: 'मेरे और शेर, जो जानवरों का राजा है, में क्या अंतर है? मान लो मैं जंगल में अपना मांद बना लूँ...' तो उसने उसी के अनुसार एक मांद चुना और शाम को बाहर निकलकर चारों दिशाओं का जायजा लिया, और फिर सोचा: 'अब मैं शेर की तरह तीन बार दहाड़ूँगा', और उसने अपनी जाति की तरह, एक सियार की दहाड़ निकाली। भला इस सियार की दयनीय दहाड़ का शेर की दहाड़ से क्या लेना-देना है? ठीक उसी तरह, पतिकपुत्त, तुम भी धनवान के पुण्य पर जीते हो और उसके छोड़े हुए भोजन पर पलते हो, यह सोचकर कि तुम तथागतों, अरहंतों और पूर्ण रूप से प्रबुद्ध बुद्धों के बराबर हो सकते हो। लेकिन इन दयनीय पतिकपुत्तों का उनसे क्या लेना-देना है?"

'तब, इस दृष्टांत की सहायता से भी पतिकपुत्त को अपने आसन से उठाने में असमर्थ होकर, जलिया ने यह श्लोक कहा:

खुद को शेर समझते हुए सियार कहता है

'मैं जानवरों का राजा हूँ' और दहाड़ने की कोशिश की।

शेर की दहाड़ जैसी, लेकिन केवल गरजने जैसी आवाज।

शेर तो शेर है और सियार तो सियार ही रहेगा।

ठीक इसी तरह पतिकपुत्त, तुम भी उस कल्याणकारी की उपलब्धियों पर जी रहे हो..."

और, इस श्लोक की सहायता से भी पतिकपुत्त को उसके आसन से उठने में असमर्थ होकर, जलिया ने यह श्लोक कहा:

"दूसरे के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए, और पोषित होते हुए"

जूठे टुकड़ों पर वह अपना सियार जैसा स्वभाव भूल जाता है।

मन में सोचते हुए: "मैं एक बाघ हूँ!" दहाड़ने की कोशिश की

एक जोरदार दहाड़, लेकिन उसके बजाय केवल चीखने जैसी आवाज।

शेर तो शेर है और सियार तो सियार ही रहेगा।

ठीक इसी तरह पतिकपुत्त, तुम भी उस कल्याणकारी की उपलब्धियों पर जी रहे हो..."

और, इस दृष्टांत से भी पतिकपुत्ता को अपनी सीट से उठने में असमर्थ होकर, जलिया सभा में लौट आया और स्थिति की रिपोर्ट दी।

तब मैंने कहा: "पतिकपुत्त मुझसे आमने-सामने मिलने में सक्षम नहीं है जब तक कि वह अपने शब्द वापस न ले ले, उस विचार को त्याग न दे और उस दृष्टिकोण को छोड़ न दे। भले ही अच्छे लुच्छवी यह सोचें: 'चलो इसे रस्सियों से बांधकर जुते हुए बैलों से यहाँ घसीटकर लाते हैं', वह रस्सियों को तोड़ देगा। वह मुझसे आमने-सामने मिलने में सक्षम नहीं है... यदि वह इसके विपरीत सोचता है, तो उसका सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

तब, हे भगगव, मैंने धर्म पर प्रवचन देकर उस सभा को उपदेश दिया, प्रेरित किया, उत्साह से भर दिया और प्रसन्न किया। इस प्रकार उस समूह को महान बंधन से मुक्त करके, चौरासी हजार प्राणियों को महान संकट के मार्ग से बचाकर, मैं अग्नि तत्व में प्रवेश कर सात ताड़ के वृक्षों की ऊँचाई तक वायु में विलीन हो गया, और फिर सात और ताड़ के वृक्षों की ऊँचाई तक एक किरण प्रक्षेपित की जिससे वह प्रज्वलित हुई और सुगंध बिखेरी, और फिर मैं उस विशाल वन में स्थित छज्जेदार हॉल में पुनः प्रकट हुआ।

और तभी सुनक्खत्ता मेरे पास आया, मुझे प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गया। मैंने कहा, "सुनक्खत्ता, तुम्हारा क्या विचार है? मैंने तुम्हें पतिकपुत्त के बारे में जो बताया था, क्या वह सच हुआ या नहीं?"

"हाँ, भगवान।"

"और क्या कोई चमत्कार हुआ है या नहीं?"

"हाँ, भगवान।"

"तो फिर, हे मूर्ख, क्या तुम मेरे इस चमत्कार के बाद भी मुझसे यही कहते हो: 'हे भगवान, आपने तो कोई चमत्कार ही नहीं किया'? हे मूर्ख, सोचो, इसमें तुम्हारी कितनी गलती है।" और, मेरी बात सुनकर भगवम ने सुनक्खत्ता को इस धम्म और अनुशासन से ऐसे त्याग दिया जैसे वह नरक का दंड पा चुका हो।

'भग्गव, मैं सृष्टि की आदिम उत्पत्ति को जानता हूँ, और केवल इतना ही नहीं, बल्कि उससे भी अधिक मूल्यवान ज्ञान को जानता हूँ। मैं अपने ज्ञान के वश में नहीं हूँ, और उसके वश में न होकर मैं उस निर्वाह को भलीभूत कर लेता हूँ, जिसके ज्ञान से तथागत भी कुटिल पथ पर नहीं भटकते। भग्गव, कुछ तपस्वी और ब्राह्मण ऐसे हैं जिन्होंने यह सिद्धांत घोषित किया है कि समस्त सृष्टि की उत्पत्ति किसी देवता, या ब्रह्मा द्वारा हुई है। मैं उनके पास गया और उनसे कहा: "आदरणीय महोदय, क्या यह सत्य है कि आप यह घोषणा करते हैं कि समस्त सृष्टि की उत्पत्ति किसी देवता, या ब्रह्मा द्वारा हुई है?"'

"हाँ," उन्होंने उत्तर दिया

"तो फिर, आदरणीय शिक्षकों का क्या कहना है कि यह सब कैसे हुआ?" लेकिन वे इसका उत्तर नहीं दे सके, इसलिए उन्होंने मुझसे ही यह प्रश्न पूछा और मैंने उत्तर दिया:

"भिक्षुओं, एक समय ऐसा आता है, चाहे देर से ही सही, लंबे समय के बाद, जब यह संसार संकुचित होता है। संकुचन के समय, अधिकांश प्राणी आभासर ब्रह्म लोक में पुनर्जन्म लेते हैं। और वहाँ वे मन से निर्मित, आनंद में लिप्त, स्वयंप्रकाशित, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी रूप में निवास करते हैं - और वे बहुत लंबे समय तक इसी अवस्था में रहते हैं।"

गलत धारणा संख्या 5: "परन्तु एक समय आता है, चाहे देर से ही सही, जब यह संसार फैलने लगता है। इस फैलते हुए संसार में ब्रह्मा का एक खाली महल प्रकट होता है। तब एक प्राणी, अपने जीवनकाल या अपने पुण्यों के समाप्त होने के कारण, आभासर लोक से गिरकर उस खाली ब्रह्मा-महल में आ जाता है। और वहाँ वह मन से विवश होकर, आनंद में लिप्त होकर, स्वयंप्रकाशित होकर, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी रूप में निवास करता है - और वह बहुत लंबे समय तक उसी अवस्था में रहता है।"

"तब इतने लंबे समय तक अकेले रहने वाले इस प्राणी में बेचैनी, असंतोष और चिंता उत्पन्न होती है, और वह सोचता है: 'काश, कुछ अन्य प्राणी यहाँ आ जाएँ!' और अन्य प्राणी, अपने जीवनकाल या अपने पुण्य कर्मों के समाप्त होने के कारण, आभासर लोक से गिरकर ब्रह्मलोक में इस प्राणी के साथी के रूप में आ जाते हैं। और वे वहाँ मनमग्न होकर निवास करते हैं... और वे बहुत लंबे समय तक उसी अवस्था में रहते हैं।"

और फिर, हे भिक्षुओं, जो प्राणी सबसे पहले वहाँ उत्पन्न हुआ, वह सोचता है: "मैं ब्रह्मा हूँ, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी, सर्वशक्तिमान, भगवान, सृष्टिकर्ता, शासक, नियुक्तकर्ता और व्यवस्थापक, समस्त अस्तित्व का पिता। इन प्राणियों की रचना मैंने की है। ऐसा कैसे? क्योंकि सबसे पहले मेरे मन में यह विचार आया: 'काश, कुछ अन्य प्राणी यहाँ आ जाएँ!' यही मेरी इच्छा थी, और फिर ये प्राणी अस्तित्व में आए!" परन्तु जो प्राणी बाद में उत्पन्न हुए, वे सोचते हैं: "हे मित्रों, यह ब्रह्मा हैं, महान ब्रह्मा, विजेता, अजेय, सर्वदर्शी,

सर्वशक्तिमान, भगवान, सृष्टिकर्ता, शासक, नियुक्तकर्ता और व्यवस्थापक, समस्त अस्तित्व का पिता। ऐसा कैसे? हमने देखा है कि वे पहले यहाँ थे, और हम उनके बाद उत्पन्न हुए।"

और जो प्राणी सबसे पहले उत्पन्न हुआ, वह उनसे अधिक दीर्घायु, अधिक सुंदर और अधिक शक्तिशाली है। और ऐसा हो सकता है कि कोई प्राणी उस लोक से गिरकर इस संसार में आ जाए। इस संसार में आकर वह गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चला जाता है। संन्यास लेने के बाद वह परिश्रम, लगन, परिश्रम और उचित ध्यान से ऐसी मानसिक एकाग्रता प्राप्त कर लेता है कि उसे अपना पिछला जन्म तो याद आ जाता है, पर उससे पहले का कोई जन्म याद नहीं आता। और वह सोचता है: 'वह ब्रह्मा, ... उसने हमें बनाया है, और वह स्थिर, अटल, शाश्वत, परिवर्तनहीन, सदा-सदा एक समान है। परन्तु हम, जिन्हें उस ब्रह्मा ने सृजित किया है, हम क्षणभंगुर, अस्थिर, अल्पायु हैं, हमारा नश्वर नाशवान है, और हम इस संसार में आए हैं।'

"हे पूज्यवर, इसी कारण आप यह सिखाते हैं कि समस्त सृष्टि की उत्पत्ति एक देवता, या ब्रह्मा द्वारा हुई है।" और उन्होंने कहा, "हे पूज्यवर गौतम, हमने यह आपके बताए अनुसार सुना है।" परन्तु मैं सृष्टि की आदि उत्पत्ति जानता हूँ... और अपने ज्ञान के वश में न होकर मैंने वह तृप्ति प्राप्त कर ली है, जिसके अहसास से तथागत भी अपंग मार्ग पर नहीं भटक सकते।

"कुछ तपस्वी और ब्राह्मण यह कहते हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति सुख-भोग के कारण हुई... कुछ मन के भ्रष्ट होने के कारण हुई... कुछ संयोगवश हुई... परन्तु मैं सृष्टि की उत्पत्ति जानता हूँ... और अपने ज्ञान के वश में न होकर मैंने वह तृप्ति प्राप्त कर ली है, जिसके अहसास से तथागत भी कुटिल पथ पर नहीं भटकते।"

और मैं, भगव, जो यह सिखाता और घोषित करता हूँ, कुछ तपस्वियों और ब्राह्मणों द्वारा गलत, व्यर्थ, झूठे और कुतर्कपूर्ण आरोपों का शिकार बनाया गया हूँ, जो कहते हैं: "तपस्वी गौतम और उनके भिक्षु दोनों ही गलत मार्ग पर हैं। उन्होंने कहा है कि जो कोई भी 'सुंदर' नामक मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, उसे सब कुछ घृणित लगता है।" लेकिन मैं ऐसा नहीं कहता। मैं तो यह कहता हूँ कि जब भी कोई 'सुंदर' नामक मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तो वह जानता है कि वह सुंदर है।

'हे भगवान, जो लोग भगवान और उनके भिक्षुओं पर त्रुटि का आरोप लगाते हैं, वे स्वयं ही गलत मार्ग पर हैं। मैं भगवान से इतना प्रसन्न हूँ कि मुझे विश्वास है कि भगवान मुझे "सुंदरता" नामक मुक्ति को प्राप्त करना और उसमें बने रहना सिखा सकते हैं।'

'हे भगगव, भिन्न मतों, भिन्न प्रवृत्तियों, भिन्न प्रभावों, भिन्न अनुशासनों और भिन्न गुरुओं से प्रभावित होने के कारण तुम्हारे लिए "सुंदरता" नामक मुक्ति को प्राप्त करना और उसमें बने रहना कठिन है। तुम्हें मुझ पर भरोसा रखते हुए, कड़ी मेहनत करनी होगी, भगगव।'

'हे भगवान, भले ही मेरे लिए "सुंदरता" नामक मुक्ति को प्राप्त करना और उसमें बने रहना कठिन हो, फिर भी मैं भगवान पर अपना भरोसा रखूंगा।'

इस प्रकार भगवान ने कहा, और भगव नामक यात्री भगवान के शब्दों से प्रसन्न और आनंदित हुआ।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.2 उडुम्बरिकासिहानादा सुत्त(25)

मैंने ऐसा सुना है:

1. एक बार भगवान राजगृह के पास, गिद्ध शिखर पर ठहरे हुए थे। उस समय रानी उदंबरिका के उद्यान में, जो कि संन्यासियों के लिए निर्धारित था, संन्यासी निग्रोध1 अपने साथ लगभग तीन हजार संन्यासियों का एक बड़ा समूह लेकर ठहरे हुए थे। गृहस्थ संधान दोपहर में राजगृह से भगवान से मिलने निकले। तब उन्हें यह विचार आया: अभी भगवान से मिलने का समय नहीं है; वे विश्राम कर रहे होंगे। न ही मन साधना कर रहे भाइयों से मिलने का समय है; वे भी विश्राम कर रहे होंगे। क्या मैं उदंबरिका के उद्यान जाकर संन्यासी निग्रोध को ढूँढ़ लूँ? और संधान ने ऐसा ही किया।

2. उस समय निग्रोध नामक घुमक्कड़ अपने बड़े समूह के साथ बैठा था, सभी ऊँची आवाज़ में, शोर-शराबे के साथ, तरह-तरह की बचकानी बातें कर रहे थे, जैसे: राजाओं, लुटेरों [37] और राजकीय अधिकारियों की कहानियाँ; सेनाओं, दहशतों और लड़ाइयों की कहानियाँ; खाने-पीने की चीज़ों, कपड़ों, बिस्तरों, मालाओं और इत्रों के बारे में बातें; रिश्तेदारों के बारे में बातें; रथों, गाँवों, कस्बों, शहरों और देशों के बारे में बातें; महिलाओं के बारे में बातें;1 नायकों के बारे में बातें; गली-नुक्कड़ों और पानी भरने की जगहों की गपशप; भूत-प्रेत की कहानियाँ; बेतरतीब बातें; दुनिया और समुद्र पर अटकलबाज़ी वाली बातें; अस्तित्व और गैर-अस्तित्व पर बातें।

3. और निग्रोध नामक घुमंतू ने दूर से गृहस्थ संधान को आते देखा, और अपने साथियों को शांत रहने का आदेश देते हुए कहा: "महोदय, शांत रहो और शोर मत करो। समना गौतम का एक शिष्य, गृहस्थ संधान आ रहा है। काजगाह में गौतम के जितने भी श्वेत वस्त्रधारी शिष्य निवास करते हैं, उनमें से यह संधान भी एक है। ये सज्जन शांति पसंद करते हैं; इन्हें शांति का प्रशिक्षण दिया गया है; ये शांति की प्रशंसा करते हैं। कितना अच्छा होता यदि सभा की शांति देखकर वह हमारे साथ शामिल होना उचित समझता।" और जब उसने ऐसा कहा, तो घुमंतू चुप हो गए।

4. अब गृहस्थ संधान, निग्रोध नामक तपस्वी के पास आया और उससे शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन और प्रशंसा करते हुए उसके पास बैठ गया। बैठे-बैठे संधान ने निग्रोध से कहा, "ये पूजनीय तपस्वी, जो अपने-अपने विचार रखते हैं, जब मिलते हैं और एक साथ आते हैं, तो उनकी बातचीत का तरीका भगवान के आचरण से भिन्न है। वे ऊँची आवाज़ में, शोर-शराबे के साथ, तरह-तरह की बचकानी बातें करते हैं (अर्थात्... [38] अस्तित्व और गैर-अस्तित्व पर)। परन्तु भगवान वन के एकांत और एकांत स्थानों में विचरण करते हैं, जहाँ शोर न के बराबर होता है, जहाँ चरागाहों से हवाएँ चलती हैं,1 फिर भी जो मनुष्यों की आँखों से छिपी होती हैं, आत्मचिंतन के लिए उपयुक्त होती हैं।"

5. जब संधाना ने बोल लिया, तो निग्रोधा ने उत्तर दिया: हे गृहस्थ, देखो, क्या तुम जानते हो कि समना गौतम किससे बात करते हैं? वे किससे संवाद करते हैं? किसके साथ संवाद करने से उन्हें ज्ञान की स्पष्टता प्राप्त होती है? 2 समना गौतम की अंतर्दृष्टि एकांतवास के कारण नष्ट हो गई है। वे सभा का संचालन करने में सहज नहीं हैं। वे बातचीत के लिए तैयार नहीं रहते। वे केवल विषय के बाहरी पहलुओं में ही लगे रहते हैं। 3 जैसे एक आँख वाली गाय वृत्त में चलते हुए केवल बाहरी किनारों का अनुसरण करती है, वैसे ही समना गौतम हैं। हे गृहस्थ, यदि समना गौतम इस सभा में आ जाएँ, तो हम केवल एक प्रश्न से ही उन्हें वश में कर सकते हैं; हाँ, मुझे लगता है कि हम उन्हें खाली घड़े की तरह पलट सकते हैं।

6. अब भगवान ने अपनी असाधारण, शुद्ध और मनुष्य की श्रवण शक्ति से गृहस्थ संधान और घुमक्कड़ निग्रोध के बीच की बातचीत सुनी। गिद्ध शिखर से उतरकर वे सुमगधा नदी के किनारे स्थित मोरों के चरागाह में आए और वहाँ खुले में टहलने लगे। निग्रोध ने उन्हें इस प्रकार टहलते देखा और अपने साथियों को शांत रहने का आदेश देते हुए कहा: "महोदय, शांत रहो और शोर मत करो। समना गौतम सुमगधा नदी के किनारे स्थित मोरों के चरागाह में खुले में टहल रहे हैं। यह सज्जन शांति में प्रसन्न होते हैं और शांति की प्रशंसा करते हैं; कितना अच्छा होता यदि वे सभा की शांति देखकर हमारे साथ शामिल होना उचित समझते। यदि समना गौतम इस सभा में आते, तो हम उनसे यह प्रश्न पूछ सकते थे;" हे भगवान, यह परम पूज्य का धर्म क्या है जिसमें वह अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करता है, और जिसे परम पूज्य द्वारा इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि उन्हें आराम मिले, और जिसे वे शिष्य अपना परम सहारा और धर्म का मूलभूत सिद्धांत मानते हैं?

जब उसने यह कहा तो घुमंतू लोग चुप रहे।

7. तब परमेश्वर निग्रोध के पास गए, और निग्रोध ने उनसे कहा: हे परमेश्वर, आपका स्वागत है! परमेश्वर ने यहाँ आने का निर्णय लेने में बहुत समय लगाया है। कृपया बैठ जाइए। यहाँ एक व्यक्ति बैठा है।

भगवान निग्रोध तैयार आसन पर बैठ गए, और निग्रोध उनके बगल में नीचा आसन लेकर बैठ गए। निग्रोध से बैठे हुए भगवान ने कहा, "हे निग्रोध, तुम यहाँ बैठकर किस विषय पर चर्चा कर रहे हो, और मैंने तुम्हारी किस बातचीत में बाधा डाली है?" [40] तब निग्रोध ने भगवान से उत्तर दिया, "हे भगवान, हमने अभी-अभी सुमगधा नदी के किनारे मोरों के चरागाह में भगवान को खुले में टहलते हुए देखा है, और उन्हें इस प्रकार देखकर हमने कहा, "यदि समना गौतम इस सभा में आएँ, तो हम उनसे यह प्रश्न पूछ सकते हैं: हे भगवान, भगवान का यह धर्म क्या है, जिसमें वे अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करते हैं, और जिसे भगवान द्वारा प्रशिक्षित शिष्य, जो सुख प्राप्त करने के लिए इस प्रकार प्रशिक्षित होते हैं, अपना परम सहारा और धर्म का मूल सिद्धांत मानते हैं?"

निग्रोधा, क्या यह कठिन है कि कोई व्यक्ति, चाहे उसका मत, विचारधारा या मत अलग हो, अभ्यास और शिक्षा के बिना उस बात को समझ पाए जिसमें मैं अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करता हूँ, और जिसे वे, सुख प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित होकर, अपना परम सहारा और धर्म का मूल सिद्धांत मानते हैं? निग्रोधा, अब मुझसे अपने ही सिद्धांत, जीवन की कठोर संयमशीलता के बारे में एक प्रश्न पूछिए: इन आत्म-यातनाओं की पूर्ति किसमें है और इनकी पूर्ति न होने में क्या है?

जब उन्होंने यह कहा, तो घुमंतू लोग शोर मचाते हुए जोर से चिल्लाए: अद्भुत, महोदय! यह कितना अद्भुत है, महोदय, समना गौतम की महान प्रतिभा और क्षमताएं कि वे अपने सिद्धांतों को रोककर दूसरों के सिद्धांतों पर चर्चा के लिए आमंत्रित करते हैं!

8. तब निग्रोध ने भटकने वालों को शांत रहने का आदेश दिया और भगवान से इस प्रकार कहा: हे भगवान, हम आत्म-यातना का पालन करते हैं; हम उन्हें आवश्यक मानते हैं; हम उनका पालन करते हैं। उनकी पूर्ति और उनकी पूर्ति किसमें निहित है? मान लीजिए, निग्रोध, कि एक तपस्वी 2 नग्न रहता है, कुछ ढीले-ढाले वस्त्र पहनता है, अपने हाथ चाटता है, किसी के आने या रुकने का आदर नहीं करता; [41] किसी द्वारा विशेष रूप से लाई गई, विशेष रूप से तैयार की गई या किसी निमंत्रण को स्वीकार नहीं करता। वह खाना पकाने के

बर्तन के मुँह से ली गई कोई भी चीज़, दहलीज के भीतर रखी गई कोई भी चीज़, ओखली में रखी कोई भी चीज़, लकड़ियों के बीच रखी कोई भी चीज़ या चक्की में रखी कोई भी चीज़ स्वीकार नहीं करता; दो लोगों के एक साथ भोजन करने से कुछ भी ग्रहण नहीं करता, न ही गर्भवती महिला से, न ही दूध पिलाने वाली माँ से, न ही किसी पुरुष के साथ संभोग करने वाली स्त्री से, न ही सूखे में एकत्र किया गया भोजन, न ही जहाँ कुत्ता हो, न ही जहाँ मक्खियाँ भिनभिना रही हों, न ही वह मछली या मांस ग्रहण करता है, न ही मादक पेय, न ही मादक पदार्थ, न ही दलिया। वह या तो एक घर में रहने वाला (एक निवाला खाने वाला) होता है; या दो घर में रहने वाला (दो निवाला खाने वाला) होता है; या सात घर में रहने वाला (सात निवाला खाने वाला) होता है। वह एक, दो या सात भिक्षा पर अपना जीवन यापन करता है। वह दिन में एक बार, या हर दो दिन में एक बार, या हर सात दिन में एक बार भोजन करता है। इस प्रकार वह नियमित अंतराल पर, यहाँ तक कि आधे महीने तक, नियमानुसार भोजन करने के अभ्यास में लगा रहता है। वह या तो जड़ी-बूटियों, या जंगली चावल, या निवारा के बीज, या चमड़े के छिलके, या हाटा, या चावल के रसक में मौजूद पाउडर, चावल की मैल, तिलहन के आटे, घास, गोबर, जंगल से मिले फलों और जड़ों, [42] या गिरे हुए फलों पर निर्भर रहता है। वह मोटे भांग के कपड़े, मोटे मिश्रित कपड़े, छोड़े हुए शवों के कपड़े, छोड़े हुए चिथड़े, या तिरिता की छाल के कपड़े पहनता है; या फिर वह हिरण की खाल, या उसी की जालीदार पट्टियाँ, या कुसा के रेशे, या छाल के वस्त्र, या शंख के कपड़े, या मानव बालों का कंबल, या घोड़े के बालों का कंबल, या उल्लू के पंखों का वस्त्र पहनता है। वह बाल और दाढ़ी नोचने वाला है, दोनों को नोचने का आदी है; खड़ा होने वाला; एड़ियों पर झुकने वाला, इस तरह बैठने पर खुद को (आगे बढ़ने के लिए) ज़ोर लगाने का आदी है; कांटों की सेज पर सोने वाला, अपने पलंग पर लोहे के कांटे या नुकीली कीलें लगाने वाला; तख्तों का बिस्तर इस्तेमाल करने वाला; ज़मीन पर सोने वाला; केवल एक करवट सोने वाला; धूल-मिट्टी से सना हुआ और खुले में रहने वाला; जहाँ मन करे वहाँ बैठने वाला; गंदगी खाने का आदी; शराब न पीने का आदी; तीसरी बार शाम बिताने वाला। निग्रोधा, तुम क्या सोचती हो? यदि ये सब बातें सच हैं, तो क्या आत्म-यातना का पालन किया जा रहा है या नहीं?

हे भगवान, यदि ये बातें सत्य हैं, तो आत्म-यातना का पालन किया जा रहा है, न कि इसके विपरीत।

अब मैं, निग्रोधा, यह पुष्टि करती हूँ कि इस प्रकार की गई आत्म-यातना द्वारा तपस्या में कई तरह से दोष 1 शामिल है।

9. हे भगवान, आप किस प्रकार से यह पुष्टि करते हैं कि इसमें दोष शामिल है?

हे निग्रोध, यदि कोई तपस्वी तपस्या करता है और उस तपस्या के कारण आत्मसंतुष्ट हो जाता है, तो उसका उद्देश्य पूर्ण हो जाता है।2 हे निग्रोध, यह तपस्वी के लिए दोष है। [43] फिर, हे निग्रोध, यदि कोई तपस्वी तपस्या करता है और उस तपस्या के कारण स्वयं को श्रेष्ठ समझता है तथा दूसरों को तुच्छ समझता है, तो यह भी तपस्वी के लिए दोष है। फिर, हे निग्रोध, यदि कोई तपस्वी तपस्या करता है और उस तपस्या के कारण मदहोश और आसक्त हो जाता है तथा लापरवाह हो जाता है, तो यह भी तपस्वी के लिए दोष है।

10. और फिर, निग्रोधा, जब कोई तपस्वी तपस्या करता है, तो उसे उपहार, ध्यान और प्रसिद्धि प्राप्त होती है। इससे वह आत्मसंतुष्ट हो जाता है और उसका उद्देश्य पूरा हो जाता है। यह भी तपस्वी के लिए एक दोष है। और फिर, निग्रोधा, उपहार, ध्यान और प्रसिद्धि प्राप्त करने से तपस्वी स्वयं को श्रेष्ठ समझता है और दूसरों को तुच्छ समझता है। यह भी तपस्वी के लिए एक दोष है।

और फिर, निग्रोध उपहारों, ध्यान और प्रसिद्धि को प्राप्त करने के चक्कर में मदहोश और मोहित हो जाता है और लापरवाह हो जाता है। यह भी तपस्वी के लिए एक दोष है।

और फिर, निग्रोध, जब कोई तपस्वी तपस्या करता है, तो वह भोजन में भेद करने लगता है, यह कहते हुए: यह मुझे भाता है; यह मुझे भाता नहीं है। बाद वाले को वह जानबूझकर त्याग देता है। पहले वाले के प्रति वह लालची और आसक्त हो जाता है, और उनमें निहित खतरे को अनदेखा करते हुए, उन्हें असुरक्षित न समझते हुए, उनसे चिपका रहता है और उनका आनंद लेता है। यह भी तपस्वी में एक दोष बन जाता है। [44] और फिर, निग्रोध, उपहारों, ध्यान और प्रसिद्धि की लालसा के कारण, वह सोचता है: राजा मुझ पर ध्यान देंगे, और उनके अधिकारी भी; और कुलीन, ब्राह्मण, गृहस्थ और विद्यालय संस्थापक भी। यह भी तपस्वी में एक दोष बन जाता है।

11. और फिर, निग्रोधा, एक तपस्वी किसी संन्यासी या ब्राह्मण पर नाराज़गी जताते हुए कहता है: वह व्यक्ति हर तरह की चीज़ें खाकर अपना जीवन यापन करता है: कंदों से उगी चीज़ें, या कोंपलों से, या बेरों से, या पाँचवें, बीजों से, 1 उन सबको अपने उस पहिए रहित वज्र के समान जबड़े से चबाकर — और वे उसे पवित्र पुरुष कहते हैं! 2 यह भी तपस्वी में एक दोष है।

फिर निग्रोध, एक तपस्वी, एक ब्राह्मण को देखता है कि नागरिक उसका आदर-सम्मान कर रहे हैं, उसे भेंट चढ़ा रहे हैं और उसका सम्मान कर रहे हैं। यह देखकर वह सोचता है: नागरिक इस विलासितापूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्ति पर ध्यान देते हैं; उसका आदर-

सम्मान करते हैं और उसे भेंट चढ़ाते हैं, जबकि मुझ जैसे तपस्वी को, जो वास्तव में सादा जीवन जीता है, न तो कोई ध्यान देता है, न आदर करता है, न सम्मान करता है, न भेंट चढ़ाता है! इस प्रकार वह नागरिकों से ईर्ष्या और द्वेष रखने लगता है। यह भी तपस्वी के लिए एक दोष है।

और फिर, निग्रोधा, एक तपस्वी सार्वजनिक रूप से बैठने वाला बन जाता है।3 यह भी तपस्वी में एक दोष बन जाता है।

और फिर, तपस्वी निग्रोध, जब लोगों के बीच भिक्षा मांगने के लिए चक्कर लगाते हैं, तो दबे पांव चलते हैं,1 मानो कह रहे हों: यह मेरी तपस्या का हिस्सा है; यह मेरी तपस्या का हिस्सा है। यह भी तपस्वी में एक दोष बन जाता है। [45] और फिर, तपस्वी निग्रोध रहस्यमयी व्यवहार करते हैं। जब उनसे पूछा जाता है: क्या आप इसे स्वीकार करते हैं? तो वे स्वीकार न करते हुए कहते हैं: मैं करता हूँ, या स्वीकार करते हुए कहते हैं: मैं नहीं करता। इस प्रकार वे जानबूझकर झूठ बोलते हैं। . . . यह भी तपस्वी में एक दोष बन जाता है।

12. और फिर, निग्रोधा, जब तथागत या तथागत के शिष्य, विधि का उपदेश देते हुए, किसी प्रशंसनीय विधि का प्रयोग करते हैं, तो तपस्वी उसकी सराहना नहीं करता। यह भी तपस्वी के लिए एक दोष बन जाता है।

और फिर, निग्रोध, तपस्वी अपना आपा खो सकता है और शत्रुता रख सकता है। यह भी तपस्वी का दोष है। और फिर, निग्रोध, तपस्वी पाखंडी और कपटी होने के साथ-साथ ईर्ष्यालु और द्वेषी भी हो सकता है; वह धूर्त और चालाक, कठोर हृदय और अभिमानी हो जाता है; वह बुरी इच्छाओं का पालन करता है और उनका गुलाम बन जाता है; वह गलत मतों का पालन करता है, अनुभवहीन सिद्धांतों में लीन हो जाता है;2 अपने अनुभव की गलत व्याख्या करता है;3 लालची और त्याग से विमुख हो जाता है। यह भी तपस्वी का दोष है।

निग्रोधा, इस बारे में आपका क्या विचार है? क्या ये बातें आत्म-यातना की तपस्या में खामियां हैं, या नहीं?

हे भगवान, ये सब बातें आत्म-यातना में दोष हैं। हे भगवान, यह संभव है कि एक तपस्वी में ये सभी दोष हों, और इनमें से कोई एक दोष तो और भी अधिक हो।

13. अब विपरीत मामला लीजिए, निग्रोध: एक तपस्वी तपस्या का मार्ग अपनाता है। उस मार्ग के माध्यम से वह आत्मसंतुष्ट नहीं होता, न ही उसके उद्देश्य पूरे होते हैं [46]। ऐसा होने पर, वह उस हद तक शुद्ध हो जाता है।

और फिर, निग्रोध, वह... न तो स्वयं को श्रेष्ठ समझता है और न ही दूसरों को तुच्छ समझता है... वह न तो मदहोश होता है, न ही मोह में डूबता है और न ही लापरवाह होता है... वह उपहारों, ध्यान और प्रसिद्धि से आत्मसंतुष्ट और तिरस्कारपूर्ण नहीं हो जाता, न ही वह इसके कारण स्वयं को श्रेष्ठ समझता है और न ही दूसरों को तुच्छ समझता है, न ही वह इसके कारण मदहोश होता है, न ही मोह में डूबता है और न ही लापरवाह होता है; वह भोजन में भेद नहीं करता, यह कहते हुए कि: यह मुझे पसंद है, यह मुझे पसंद नहीं है, जानबूझकर बाद वाले को त्यागकर पहले वाले के प्रति लालची और मोह में डूबा हुआ नहीं रहता, उनमें छिपे खतरे को देखे बिना या उनकी असुरक्षा को समझे बिना उनसे चिपका रहता है और उनका आनंद लेता है; वह उपहारों, ध्यान और प्रसिद्धि की लालसा में यह नहीं सोचता कि राजा, उनके अधिकारी, और इसी तरह कुलीन, ब्राह्मण, गृहस्थ और विद्यालय संस्थापक भी मुझ पर ध्यान देंगे।

14. और फिर, वह किसी संन्यासी या ब्राह्मण पर यह कहकर शिकायत नहीं करता [47] कि वह व्यक्ति हर तरह की चीजों पर जीता है—उदाहरण के लिए कंद, अंकुर, बेर, गांठ, या पांचवा, बीजों से उगी हुई चीजों पर—उन सबको अपने उस पहिए रहित वज्र के समान जबड़े से चबाकर, और वे उसे पवित्र पुरुष कहते हैं! जब वह किसी संन्यासी या ब्राह्मण को नागरिकों द्वारा ध्यान, आदर, सम्मान और भेंट प्राप्त करते देखता है, तो वह यह नहीं सोचता: नागरिक इस व्यक्ति पर ध्यान देते हैं जो हर तरह की चीजों पर जीता है; वे उसका आदर और सम्मान करते हैं और उसे भेंट देते हैं, जबकि मुझ पर, जो एक तपस्वी के रूप में वास्तव में कठोर जीवन जीता हूँ, वे न तो ध्यान देते हैं, न आदर, न सम्मान, न भेंट, और इस प्रकार वह नागरिकों से ईर्ष्या और द्वेष नहीं रखता; वह सार्वजनिक रूप से नहीं बैठता, न ही नागरिकों के बीच छिपकर घूमता है मानो यह कहने के लिए: यह मेरी तपस्या का हिस्सा है; यह मेरी सादगी का हिस्सा है। वह रहस्यमयी बातें नहीं करता, न ही पूछे जाने पर कि क्या वह इससे सहमत है, कहता है, "मैं सहमत हूँ," जबकि वह सहमत नहीं होता, या कहता है, "मैं सहमत नहीं हूँ," जबकि वह सहमत होता है। इस प्रकार वह जानबूझकर झूठ बोलने से बचता है।

15. और फिर, जब तथागत या तथागत के शिष्य, नियम का उपदेश देते हुए, किसी प्रशंसनीय विधि का प्रयोग करते हैं, तो वे उसकी सराहना करते हैं। वे क्रोधित नहीं होते और न ही शत्रुता रखते हैं; वे पाखंडी और कपटी, ईर्ष्यालु और द्वेषी, धूर्त और चालाक, कठोर हृदय वाले [48] और अभिमानी नहीं बनते; वे बुरी इच्छाएँ नहीं रखते और न ही उनके वश में होते हैं; वे झूठे मत नहीं रखते और न ही

अनुभवजन्य सिद्धांतों में लीन होते हैं, अनुभव को विकृत नहीं करते, लोभी नहीं होते और त्याग से विमुख नहीं होते। अनुभववाद से अप्रभावित रहने, लोभी न होने और त्याग में लीन रहने से ही वे शुद्ध होते हैं। निग्रोध, आप क्या सोचते हैं? ऐसा होने पर, क्या इन बातों से तपस्या वास्तव में शुद्ध हो जाती है या नहीं?

हे भगवान, इन चीजों की तपस्या वास्तव में पवित्र होती है, अपवित्र नहीं; यह सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है, यह सार तक पहुँचती है।

नहीं, निग्रोधा, अभी तक तपस्या सर्वोच्च श्रेणी की नहीं हुई है, न ही सार तक पहुंची है; बल्कि यह तो केवल बाहरी टुकड़ों तक ही पहुंची है।

16. हे भगवान, तपस्या किस प्रकार सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है और सार तक पहुँचती है? यदि परमेश्वर मेरी तपस्या को सर्वोच्च स्थान और सार तक पहुँचा दें तो यह कितना अच्छा होगा!

निग्रोधा, एक ऐसे तपस्वी का उदाहरण लीजिए जो चौगुने पहर के संयम से आत्मसंयमित है। चौगुने पहर का संयम क्या है? यह वह स्थिति है जब कोई तपस्वी किसी भी सजीव प्राणी को चोट नहीं पहुँचाता, न ही किसी सजीव प्राणी को चोट पहुँचाने का कारण बनता है, और न ही उसका समर्थन करता है। [49] वह बिना दी हुई वस्तु नहीं लेता, और न ही उसका समर्थन करता है। वह झूठ नहीं बोलता, न ही झूठ बुलवाता है, और न ही उसका समर्थन करता है। वह इंद्रिय सुखों की लालसा नहीं करता, न ही दूसरों को उनकी लालसा करने के लिए प्रेरित करता है, और न ही उसका समर्थन करता है। अब, निग्रोधा, इस प्रकार तपस्वी चौगुने पहर के संयम से आत्मसंयमित हो जाता है।

अब चूंकि वह इस प्रकार आत्मसंयमित है, और उसकी तपस्या इसी में निहित है, वह ऊपर की ओर अग्रसर होता है 2 और निम्नतर चीजों की ओर नहीं लौटता। वह अपने बैठने के लिए कोई एकांत स्थान चुनता है 3 - जंगल में, किसी वृक्ष की तलहटी में, पहाड़ी पर, पर्वतीय घाटी में, या चट्टानी गुफा में, श्मशान में, या खुले मैदानों में पुआल के ढेर पर। और भिक्षा मांगने के बाद वहां लौटकर, भोजन समाप्त होने पर वह पालथी मारकर बैठ जाता है, शरीर को सीधा रखता है, और अपनी बुद्धि को सतर्क और एकाग्र रखता है। संसार की लालसा को त्यागकर, वह लालसा रहित हृदय से रहता है, और अपने मन को लोभ से शुद्ध करता है। द्वेष के नासूर को त्यागकर, वह शत्रुता रहित हृदय से रहता है, प्रत्येक प्राणी के प्रति दयालु और करुणामय होता है, 4 और अपने मन को द्वेष से शुद्ध करता है। आलस्य और सुस्ती को त्यागकर, वह दोनों से मुक्त रहता है; प्रकाश के प्रति सचेत, सजग और आत्मसंयमित होकर वह अपने मन को आलस्य और सुस्ती से शुद्ध करता है। हड़बड़ी और चिंता को त्यागकर वह उत्तेजना से मुक्त रहता है; हृदय में शांति लिए वह अपने मन को हड़बड़ी और चिंता से शुद्ध करता है। संदेह को त्यागकर वह उस व्यक्ति के समान रहता है जो उलझन से परे हो चुका है; अच्छे-बुरे के बारे में संशय में न रहकर वह अपने मन को संदेह से शुद्ध करता है।

17. इन पाँच बाधाओं को दूर करके और अंतर्दृष्टि से हृदय को दूषित करने वाली चीजों की शक्ति को कमजोर करके, वह प्रेम से भरे अपने मन को संसार के एक चौथाई भाग में, फिर दूसरे, तीसरे और चौथे भाग में व्याप्त करता है। इस प्रकार वह संपूर्ण संसार को, ऊपर, नीचे, चारों ओर और हर जगह, प्रेम से भरे विचारों से व्याप्त करता रहता है, जो प्रचुर, उदात्त और असीम हैं, घृणा और द्वेष से मुक्त हैं। वह करुणा से भरे अपने मन को संसार में व्याप्त करता है... और वह समभाव से भरे अपने मन को संसार में व्याप्त करता है। और इस प्रकार संपूर्ण विशाल संसार—ऊपर, नीचे, चारों ओर और हर जगह—वह समभाव से परिपूर्ण, प्रचुर, उदात्त और असीम हृदय से व्याप्त रहता है, जो घृणा और दुर्भावना से मुक्त है।

निग्रोधा, इस बारे में तुम्हारा क्या विचार है? क्या इन चीजों से की गई तपस्या वास्तव में पवित्र हो जाती है या नहीं?

हे भगवान, निश्चय ही इन बातों से तपस्या वास्तव में शुद्ध हो जाती है, अशुद्ध नहीं होती, सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है और सार तक पहुँचती है।

नहीं, निग्रोधा, तपस्या ने अभी तक सर्वोच्च स्थान या वास्तविकता प्राप्त नहीं की है; बल्कि यह तो केवल सतही स्तर तक ही सीमित है।2

18. हे भगवान, तपस्या किस प्रकार सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर पूर्णत: सार तक पहुँचती है? कितना अच्छा होगा यदि भगवान मेरी तपस्याओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त करा दें और उन्हें पूर्णत: सार तक पहुँचा दें!

निग्रोधा, उस तपस्वी का उदाहरण लीजिए जो चार प्रकार के संयम से आत्मसंयमित है। इस प्रकार आत्मसंयम के कारण और इसी तपस्या में समाहित होने के कारण, वह ऊपर की ओर अग्रसर होता है और निम्नतर चीजों की ओर नहीं लौटता। वह अपने विश्राम के लिए कोई एकांत स्थान चुनता है... और उन पाँच बाधाओं को दूर करके, और अंतर्दृष्टि से हृदय को दूषित करने वाली चीजों की शक्ति को कमजोर करके, प्रेम, दया, सहानुभूति और समभाव से परिपूर्ण होकर अपने मन को संसार में व्याप्त करता है। वह बीते दिनों की अपनी विभिन्न अस्थायी अवस्थाओं को याद करता है—एक जन्म, या दो, या तीन, या चार, या पाँच जन्म, या दस, या बीस, या तीस, या चालीस, या पचास, या सौ, [51] या एक हजार, या एक लाख जन्म, विघटन के कई युगों से, विकास के कई युगों से गुज़रते हुए: ऐसे स्थान पर, ऐसा मेरा नाम था, ऐसा मेरा परिवार था, ऐसा मेरा रंग था, ऐसा मेरा भोजन था, ऐसा मेरा असुविधा या आराम का अनुभव था, और ऐसी मेरे जीवन की सीमाएँ थीं। जब मैं उस अवस्था से विदा हुआ, तो मैंने ऐसे स्थान पर पुनः जन्म लिया। वहाँ मेरा ऐसा नाम, ऐसा परिवार, ऐसा रंग, ऐसा भोजन, ऐसा असुविधा या आराम का अनुभव था, और ऐसी मेरे जीवन की सीमाएँ थीं। जब मैं उस अवस्था से विदा हुआ, तो मैंने यहाँ पुनः जन्म लिया... इस प्रकार वह बीते दिनों की अपनी अस्थायी अवस्थाओं को उनके सभी विवरणों और सभी रूपों में याद करता है।

निग्रोधा, इस बारे में आपका क्या विचार है? क्या इन चीजों से की गई तपस्या वास्तव में शुद्ध होती है या नहीं?

हे भगवान, निश्चय ही इन बातों से तपस्या वास्तव में शुद्ध हो जाती है, अशुद्ध नहीं, सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है और सार तक पहुँचती है।

नहीं, निग्रोधा, तपस्या अभी तक सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके सार तक नहीं पहुंची है, हालांकि यह अंतर्निहित रेशों तक अवश्य पहुंच जाती है।

19. हे भगवान, तपस्या किस प्रकार शिखर और सार तक पहुँचती है? कितना अच्छा होता यदि परमेश्वर मेरी तपस्याओं को शिखर और सार तक पहुँचा देते!

निग्रोध, उस तपस्वी का उदाहरण लीजिए जो चार प्रकार के पहर के संयम से आत्मसंयमित है, जिसने पाँच बाधाओं को दूर कर दिया है, जिसने अपने मन को प्रेम, दया, सहानुभूति और समभाव से संसार में व्याप्त कर लिया है, और जिसने अपने बीते दिनों की विभिन्न अस्थायी अवस्थाओं को उनके सभी विवरणों [52] और उनके सभी रूपों में याद किया है। वह मनुष्यों की दृष्टि से परे, शुद्ध देव-दृष्टि से प्राणियों को एक रूप से विलीन होकर दूसरे रूप में धारण करते हुए देखता है; वह नीच और श्रेष्ठ, सुंदर और बदसूरत, सुखी और दुखी को उनके कर्मों के अनुसार मृत्यु को प्राप्त करते हुए पहचानता है: अमुक-अमुक योग्य लोग,1 कर्म, वचन और विचार में दुष्ट, आर्यों के निंदक, गलत विचारों को धारण करने वाले, गलत विचारों से उत्पन्न कर्मों को अर्जित करने वाले, मृत्यु के बाद शरीर के विघटन पर, वे किसी दुखद या कष्टमय अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं; परन्तु अमुक प्राणी, जो कर्म, वचन और विचार में अच्छे हैं, आर्यों की निंदा नहीं करते, सही विचारों को धारण करते हैं, सही विचारों से फल प्राप्त करते हैं, वे शरीर के नष्ट होने पर स्वर्ग में किसी सुखी अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं। इस प्रकार, मनुष्य की दृष्टि से परे शुद्ध देव दृष्टि से, वे प्राणियों को एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जन्म लेते हुए देखते हैं; वे नीच और श्रेष्ठ, सुंदर और अशुभ, सुखी और दुखी, सभी को उनके कर्मों के अनुसार मृत्यु को प्राप्त होते हुए पहचानते हैं। निग्रोधा, इस विषय में आपका क्या विचार है?

क्या इन चीजों से तपस्या करने पर वास्तव में पवित्रता प्राप्त होती है या नहीं? हे भगवान, इन चीजों से तपस्या करने पर वास्तव में पवित्रता प्राप्त होती है, अपवित्रता नहीं; यह सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है और सार तक पहुँचती है।

इस प्रकार, निग्रोधा, तपस्या सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती है और सार तक पहुँचती है। इसलिए, निग्रोधा, जब तुम मुझसे कहते हो: हे भगवान, परमेश्वर का यह धर्म क्या है, जिसमें वे अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करते हैं, और जिसे परमेश्वर द्वारा प्रशिक्षित होकर वे सुख प्राप्त करते हैं, और उसे अपना परम सहारा और धर्म का मूल सिद्धांत मानते हैं? मैं कहता हूँ कि यह उससे भी उच्च और उत्कृष्ट स्तर का विषय है जिसमें मैं अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करता हूँ, ताकि वे मेरे द्वारा प्रशिक्षित होकर सुख प्राप्त करें और उसे अपना परम सहारा और धर्मपरायण जीवन का मूल सिद्धांत मानें।

जब उसने ऐसा कहा, तो घुमंतू लोग शोर मचाने लगे और जोर-जोर से चिल्लाने लगे: इसमें हम और हमारे गुरु दोनों ही निष्कलंक हैं। हम उनकी शिक्षा से परे कुछ भी उच्चतर नहीं जानते।

20. जब गृहस्थ संधान को यह अहसास हुआ कि ये भटकने वाले, यद्यपि उनके विचार भिन्न हैं, भगवान की बातें सुन रहे हैं, ध्यान दे रहे हैं और समझने का प्रयास कर रहे हैं, तब उन्होंने निग्रोध से कहा: 1 हे निग्रोध, अभी तुम मुझसे कह रहे थे: हे गृहस्थ, अब जान लो कि समना गौतम किससे बात करते हैं; किससे संवाद करते हैं; किसके साथ संवाद करके उन्हें ज्ञान की स्पष्टता प्राप्त होती है? समना गौतम की अंतर्दृष्टि एकांतवास के कारण नष्ट हो गई है। वे सभा का संचालन करने में सहज नहीं हैं। वे बातचीत में तत्पर नहीं हैं। वे केवल सतही बातों में ही लगे रहते हैं। जैसे एक आँख वाली गाय वृत्त में घूमते हुए हमेशा बाहरी किनारों का अनुसरण करती है, वैसे ही समना गौतम हैं। हे गृहस्थ, यदि समना गौतम इस सभा में आ जाएँ, तो हम केवल एक प्रश्न से ही उन्हें वश में कर सकते हैं; हाँ, मुझे लगता है कि हम उन्हें खाली घड़े की तरह पलट सकते हैं। अब परम पूज्य भगवान, अरहंत बुद्ध, हमारे बीच आ गए हैं; उन्हें सभा में असहज दिखाओ; उन्हें एक आँख वाली गाय की तरह गोल-गोल घूमते हुए दिखाओ; अपने एक ही प्रश्न से उन्हें शांत कर दो, उन्हें एक खाली बर्तन की तरह पलट दो।

जब उसने ऐसा कहा, तो निग्रोधा चुपचाप और नाराज होकर, पीठ झुकाए और सिर झुकाए बैठी रही, सोच में डूबी हुई और हक्का-बक्का सी।

21. अब जब परमेश्वर ने उसकी स्थिति देखी, तो उन्होंने कहा: हे निग्रोधा, क्या यह सच है कि तुमने यह बात कही?

हे भगवान, यह सच है कि मैंने वह भाषण दिया था, मैं कितना मूर्ख था, कितना बेवकूफ था, कितना गलत था।

निग्रोधा, इस विषय में आपका क्या विचार है? क्या आपने कभी आदरणीय, वृद्ध संतों, जो आपके गुरु और आपके गुरुओं के गुरु थे, से यह कहते सुना है: "जो बीते युगों में अरहंत, परम बुद्ध थे, वे जब एकत्रित होते थे, तो ऊँची आवाज़ में, शोर-शराबे के साथ, तरह-तरह की बचकानी बातें करते थे, जैसे राजाओं, डाकुओं आदि की बातें, या अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के विषय में चिंतन करते थे, जैसा कि आप और आपके गुरु अब करते हैं?" या उन्होंने यह कहा: "वे संत जंगल के एकांत और एकांत स्थानों में जाया करते थे, जहाँ शोर न के बराबर होता था, जहाँ चरागाहों से हवाएँ चलती थीं, फिर भी जो मनुष्यों की आँखों से छिपे रहते थे, आत्मचिंतन के लिए उपयुक्त स्थान थे, जैसा कि मैं अब करता हूँ?"

हे भगवान, मैंने पूजनीय, वृद्ध संतों, हमारे गुरुओं और हमारे गुरुओं के गुरुओं से यह सुना है: बीते युगों में जो अरहंत, परम बुद्ध थे, उनका यह कार्य नहीं था कि जब वे एकत्रित हों, तो ऊँची आवाज़ में, शोर-शराबे के साथ, तरह-तरह की बचकानी बातें करें... या अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के विषय में अटकलबाज़ी करें, जैसा कि मैं अब अपने विश्वास में करता हूँ, बल्कि उनका कार्य था वनों के एकांत और एकांत स्थानों में जाना, जहाँ शोर न के बराबर होता है, जहाँ चरागाहों से हवाएँ चलती हैं, फिर भी जो मनुष्यों की आँखों से छिपी होती हैं, आत्म-चिंतन के लिए उपयुक्त स्थान, जैसा कि परम पूज्य बुद्ध अब करते हैं।

हे निग्रोधा, तुम स्वयं बुद्धिमान और वृद्ध होते हुए भी क्या यह बात तुम्हें नहीं सूझी? परम पूज्य हैं वे; वे ज्ञान के धर्म का उपदेश देते हैं। परम पूज्य हैं वे; वे आत्म-संयम के धर्म का उपदेश देते हैं। परम पूज्य हैं वे; वे शांत हैं; वे शांति के धर्म का उपदेश देते हैं। परम पूज्य हैं वे; [55] वे मोक्ष के धर्म का उपदेश देते हैं। 1 परम पूज्य हैं वे; वे शांति के धर्म का उपदेश देते हैं। 2

22. जब यह कहा गया, तो निग्रोध नामक यात्री ने परम पूज्य से इस प्रकार कहा:3 हे भगवान, मुझसे एक अपराध हो गया है, मैं मूर्ख, नासमझ और पापी हूँ, जिसने परम पूज्य के विषय में ऐसा कहा। हे भगवान, कृपया मेरे इस अपराध को स्वीकार करें, ताकि भविष्य में मैं स्वयं को संयमित रख सकूँ।

निग्रोध, तुमने जो किया वह एक अपराध था; तुमने मेरे बारे में जो कहा वह मूर्खतापूर्ण, नासमझ और गलत था। निग्रोध, तुमने इसे अपराध मानते हुए अपने कर्मों के अनुसार स्वीकार किया है, इसलिए हम तुम्हारा स्वीकारोक्ति स्वीकार करते हैं। निग्रोध, आर्यों के अनुशासन में यही प्रथा है कि जो कोई अपने दोष को दोष मानता है और उसे स्वीकार करता है, वह भविष्य में आत्मसंयम प्राप्त करेगा।

लेकिन मैं, निग्रोध, तुमसे यह कहता हूँ:4 मेरे पास एक बुद्धिमान, ईमानदार, स्पष्टवादी और सीधा-सादा व्यक्ति आए—मैं उसे शिक्षा दूँगा, मैं उसे नियम सिखाऊँगा। यदि वह सिखाए अनुसार अभ्यास करे, तो स्वयं को जानने और इसी क्षण उस परम धर्म और लक्ष्य को प्राप्त करने में, जिसके लिए कुलवासी गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में जाते हैं, उसे सात वर्ष लगेंगे। नहीं, निग्रोध, सात वर्ष ही रहने दो। यदि वह सिखाए अनुसार अभ्यास करे, तो स्वयं को जानने और इसी क्षण उस परम धर्म और लक्ष्य को प्राप्त करने में, जिसके लिए कुलवासी गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में जाते हैं, उसे छह वर्ष, पाँच वर्ष, चार वर्ष, तीन वर्ष, दो वर्ष, एक वर्ष, ... छह महीने ... पाँच, तीन, दो महीने, एक महीना, आधा महीना लगेगा। नहीं, निग्रोध, आधा महीना ही रहने दो। मेरे पास एक बुद्धिमान, ईमानदार,

स्पष्टवादी और सीधा-सादा व्यक्ति आए; मैं उसे शिक्षा दूंगा, मैं उसे नियम सिखाऊंगा, और यदि वह सिखाए गए अनुसार अभ्यास करे, तो स्वयं उस सर्वोच्च धर्म और लक्ष्य को जानने और समझने में उसे सात दिन लगेंगे, जिसके लिए कुलवासी गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी अवस्था में जाते हैं।

23. हे निग्रोधा, शायद तुम सोचोगी: समना गौतम ने शिष्य पाने की इच्छा से ऐसा कहा है; परन्तु तुम मेरे शब्दों की व्याख्या इस प्रकार न करो। जो तुम्हारा गुरु है, वही तुम्हारा गुरु बना रहे। हे निग्रोधा, शायद तुम सोचोगी: समना गौतम ने हमें हमारे नियम से विमुख करने की इच्छा से ऐसा कहा है; परन्तु तुम मेरे शब्दों की व्याख्या इस प्रकार न करो। जो तुम्हारा नियम है, वही तुम्हारा नियम बना रहे। हे निग्रोधा, शायद तुम सोचोगी: समना गौतम ने हमें हमारी आजीविका के तरीके से विमुख करने की इच्छा से ऐसा कहा है; परन्तु तुम मेरे शब्दों की व्याख्या इस प्रकार न करो। जो तुम्हारी आजीविका का तरीका है, वही बना रहे। हे निग्रोधा, शायद तुम सोचोगी: समना गौतम ने हमें हमारे उन सिद्धांतों के बारे में पुष्ट करने की इच्छा से ऐसा कहा है जो गलत हैं, और जिन्हें हमारे समुदाय के लोग गलत मानते हैं; लेकिन तुम इस प्रकार मेरे शब्दों की व्याख्या नहीं कर सकते। तुम्हारे सिद्धांतों में जो बातें गलत हैं और तुम्हारे समुदाय के लोग उन्हें गलत मानते हैं, उन्हें तुम अपने लिए वैसा ही रहने दो। शायद, निग्रोधा, तुम सोचोगे: समना गौतम ने यह इसलिए कहा है ताकि हमें हमारे सिद्धांतों की उन बातों से अलग किया जा सके जो अच्छी हैं और हमारे समुदाय के लोग उन्हें अच्छा मानते हैं; लेकिन तुम इस प्रकार मेरे शब्दों की व्याख्या नहीं कर सकते। तुम्हारे सिद्धांतों में जो बातें अच्छी हैं और तुम्हारे समुदाय के लोग उन्हें अच्छा मानते हैं, उन्हें तुम अपने लिए वैसा ही रहने दो।

अत: हे निग्रोधा, मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ, न तो शिष्य प्राप्त करने के लिए, न ही नियम से विमुख करने के लिए, न ही आजीविका के तरीके से विमुख करने के लिए, न ही तुम्हें बुरे सिद्धांतों में दृढ़ करने के लिए, और न ही अच्छे सिद्धांतों से विमुख करने के लिए। परन्तु, हे निग्रोधा, कुछ बुरी बातें ऐसी हैं जिन्हें दूर नहीं किया जा सकता, जो भ्रष्ट करती हैं, जन्म-पुनरावृत्ति का कारण बनती हैं, दुख लाती हैं, बुराई का परिणाम देती हैं, और भविष्य में जन्म, क्षय और मृत्यु का कारण बनती हैं। और इन्हीं को दूर करने के लिए मैं नियम का उपदेश देता हूँ, जिसके अनुसार यदि तुम चलोगे, तो भ्रष्ट करने वाली बातें दूर हो जाएँगी, पवित्रता लाने वाली बातें बढ़ेंगी और फलेंगी-फूलेंगी, और तुम सब यहीं और अभी अपने लिए पूर्ण और प्रचुर अंतर्दृष्टि की समझ और अनुभूति प्राप्त करोगे और उसमें बने रहोगे।

24. जब उसने ऐसा कहा, तो घुमक्कड़ चुपचाप और नाराज़ होकर, कमर झुकाए और सिर झुकाए बैठे रहे, चिंतन करते और अवाक रह गए, उनके हृदय मारा के प्रति समर्पित थे।

तब परमेश्वर ने सोचा: इन सभी मूर्ख पुरुषों पर शैतान का साया है, इसलिए उनमें से किसी के मन में भी यह विचार नहीं आएगा: आओ, अब हम समना गौतम द्वारा सिखाए गए पवित्र जीवन का अनुसरण करें, ताकि हम उसे जान सकें। सात दिनों का अंतराल क्या मायने रखता है?

फिर भगवान ने रानी उदंबरिका द्वारा यात्रियों के लिए निर्धारित उद्यान में सिंह गर्जना करते हुए आकाश में उड़ान भरी और गिद्ध शिखर पर उतरे। तब गृहस्थ संधना भी राजगृह लौट गए।

(उदुम्बरिका सिहानफिदा-सुत्तंता समाप्त हो गया है।)

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.3 चक्कावत्तिसिहानादा सुत्त (DN26)

अंतर्वस्तु

सुत्त

शाश्वत शिक्षा

एक बार भगवान मगधियों के बीच मतुला में ठहरे हुए थे। तब उन्होंने कहा: "भिक्षुओं!" "भगवान," उन्होंने उत्तर दिया, और भगवान ने कहा:

"भिक्षुओं, अपने आप में एक द्वीप बनो, अपने लिए एक शरणस्थल बनो, और किसी अन्य शरणस्थल की आवश्यकता न हो। धम्म को अपना द्वीप बनाओ, धम्म को अपनी शरणस्थल बनाओ, धम्म को अपना द्वीप बनाओ, धम्म को अपनी शरणस्थल बनाओ, और किसी अन्य शरणस्थल की आवश्यकता न हो? यहाँ, एक भिक्षु शरीर को शरीर के रूप में ध्यान करते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, भावनाओं को भावनाओं के रूप में ध्यान करते हुए, ... वह मन की वस्तुओं को ध्यान करते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, ध्यान करते हुए रहता है।"

"भिक्षुओं, अपने पैतृक क्षेत्रों में ही रहो। ऐसा करने से मारा को कोई आश्रय या ठिकाना नहीं मिलेगा। यह पुण्य केवल अच्छे कर्मों के संचय से ही बढ़ता है।"

एक पूर्व शासक दलहानेमी

"एक समय की बात है, भिक्षुओं, दलहानेमी नाम का एक चक्र-घुमाने वाला राजा था, जो धर्म का पालन करने वाला, चारों दिशाओं का विजेता, अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित करने वाला और सात रत्नों का स्वामी था। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थी रत्न और सातवाँ रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र थे जो वीर थे, वीर व्यक्तित्व वाले और शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने वाले थे। उसने इस सागर-घिरे देश को बिना लाठी या तलवार के, धर्म के द्वारा जीता था।"

और, कई सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद, राजा दलहानेमी ने एक व्यक्ति से कहा: 'हे मेरे जन, जब भी तुम देखो कि पवित्र चक्र-खजाना अपनी जगह से खिसक गया है, तो मुझे सूचना देना।' 'जी महाराज', उस व्यक्ति ने उत्तर दिया। और कई सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद उस व्यक्ति ने देखा कि पवित्र चक्र-खजाना अपनी जगह से खिसक गया है। यह देखकर उसने राजा को सूचना दी। तब राजा दलहानेमी ने अपने सबसे बड़े पुत्र, युवराज को बुलवाया और कहा: "मेरे पुत्र, पवित्र चक्र-खजाना अपनी जगह से खिसक गया है। और मैंने सुना है कि जब किसी चक्र-चालक सम्राट के साथ ऐसा होता है, तो उसका जीवन अधिक समय तक नहीं चलता। मैंने सांसारिक सुखों का भरपूर आनंद ले लिया है, अब स्वर्गीय सुखों की खोज का समय है। हे मेरे पुत्र, तुम इस सागर-बद्ध भूमि का कार्यभार संभाल लो। मैं अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्र धारण करके गृहस्थ जीवन त्याग कर संन्यासी जीवन व्यतीत करूंगा।" अपने सबसे बड़े पुत्र को विधिवत राजा के रूप में स्थापित करने के बाद, राजा दलहानेमी ने अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा ली, पीले वस्त्र धारण किए और गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन में चले गए। और, राजा के संन्यासी बनने के सात दिन बाद, पवित्र चक्र-खजाना गायब हो गया।

फिर एक व्यक्ति अभिषेक किए गए खत्तिया बादशाह के पास आया और बोला, 'महाराज, आपको यह जानना चाहिए कि पवित्र चक्र-खजाना लुप्त हो गया है।' यह सुनकर राजा व्यथित हुए और दुखी हुए। वे राजऋषि के पास गए और उन्हें यह खबर सुनाई। राजऋषि ने उनसे कहा, 'मेरे पुत्र, चक्र-खजाने के लुप्त होने पर शोक या दुखी न हों। चक्र-खजाना आपके पूर्वजों की विरासत नहीं है। लेकिन अब, मेरे पुत्र, आपको आर्य चक्र-चालक बनना होगा। और तब ऐसा हो सकता है कि यदि आप आर्य चक्र-चालक सम्राट के कर्तव्यों का

पालन करें, तो पंद्रहवें व्रत के दिन, जब आप अपना सिर धोकर व्रत के लिए अपने महल के शीर्ष पर स्थित बरामदे में जाएँ, तो पवित्र चक्र-खजाना आपको हजार तीलियों वाला, धुरी, केंद्रक और सभी सहायक वस्तुओं सहित प्रकट हो जाएगा।'

"'लेकिन महाराज, आर्य चक्र-घुमाने वाले सम्राट का कर्तव्य क्या है?'" हे मेरे पुत्र, तुम स्वयं धम्म पर निर्भर रहो, उसका आदर करो, उसका सम्मान करो, उसे संजोकर रखो, उसे प्रणाम करो और उसकी पूजा करो, धम्म को अपना प्रतीक और ध्वज मानकर, धम्म को अपना स्वामी मानकर, अपने घर, अपनी सेना, अपने सरदारों और सामंतों, ब्राह्मणों और गृहस्थों, नगर और गाँव के लोगों, तपस्वियों और ब्राह्मणों, पशुओं और पक्षियों की धम्म के अनुसार रक्षा और संरक्षण करो। अपने राज्य में किसी भी प्रकार का अपराध न होने दो, और जरूरतमंदों को संपत्ति दो। और तुम्हारे राज्य में जितने भी तपस्वी और ब्राह्मण इंद्रिय मोह का त्याग करके संयम और नम्रता के प्रति समर्पित हैं, जो स्वयं को वश में रखते हैं, स्वयं को शांत रखते हैं और भोग-विलास के अंत के लिए प्रयासरत हैं, वे समय-समय पर तुम्हारे पास आकर तुमसे परामर्श करें कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, क्या निंदनीय है और क्या निंदनीय है, क्या पालन करने योग्य है और क्या नहीं। और कौन सा कार्य अंततः हानि और दुःख का कारण बनेगा, और कौन सा कल्याण और सुख का, तुम्हें सुनना चाहिए, और उन्हें बुराई से बचने और भलाई करने के लिए कहना चाहिए। हे मेरे पुत्र, यही आर्य चक्र-घुमाने वाले सम्राट का कर्तव्य है।'

"जी महाराज," राजा ने कहा और उन्होंने आर्य चक्र-चालक सम्राट के कर्तव्यों का पालन किया। ऐसा करते हुए, पंद्रहवें व्रत के दिन, जब उन्होंने अपना सिर धोकर व्रत के लिए अपने महल के शीर्ष पर बने बरामदे में गए, तो उन्हें हजार तीलियों वाला, धुरी, हब और सभी सहायक उपकरणों से सुसज्जित पवित्र चक्र-खजाना प्रकट हुआ। तब राजा ने सोचा: 'मैंने सुना है कि जब विधिवत अभिषेक किया हुआ क्षत्रिय राजा पंद्रहवें व्रत के दिन ऐसा चक्र देखता है, तो वह चक्र-चालक सम्राट बन जाता है। काश मैं भी ऐसा सम्राट बन सकूँ!'

फिर, राजा अपने आसन से उठकर, अपने एक कंधे को अपने वस्त्र से ढककर, अपने बाएँ हाथ में एक सोने का पात्र लेकर, अपने दाहिने हाथ से चक्र पर स्वर्ण का छिड़काव किया और कहा: 'यह महान चक्र-खजाना घूमे, यह महान चक्र-खजाना विजय प्राप्त करे!' चक्र पूर्व की ओर घूमा, और राजा अपनी चार गुना सेना के साथ उसके पीछे-पीछे चला। और जिस भी देश में चक्र रुका, राजा अपनी चार गुना सेना के साथ वहाँ निवास करने लगा। और पूर्वी क्षेत्र में उसका विरोध करने वाले लोग आकर बोले: 'हे महाराज, आपका स्वागत है! हम आपके हैं, महाराज। हम पर शासन कीजिए, महाराज।' और राजा ने कहा: 'किसी की जान मत लो। जो दिया न गया हो, उसे मत लो। यौन दुराचार मत करो। झूठ मत बोलो। मादक पेय मत पियो। भोजन में संयम बरतो।' और पूर्वी क्षेत्र में उसका विरोध करने वाले लोग उसकी प्रजा बन गए।

"फिर पहिया दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर घूमा... फिर पहिया-खजाने ने समुद्र से समुद्र तक की भूमि पर विजय प्राप्त कर ली और शाही राजधानी में लौट आया और राजा के महल के सामने रुक गया, जैसे कि वह किसी मामले की सुनवाई कर रहा हो, मानो शाही महल को सुशोभित करने के लिए।"

और एक दूसरे चक्र-घुमाने वाले सम्राट ने भी ऐसा ही किया, और तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे और सातवें राजा ने भी... एक आदमी को यह देखने के लिए कहा कि क्या चक्र अपनी जगह से खिसक गया है। और उस ऋषि के जाने के सात दिन बाद चक्र गायब हो गया।

फिर एक व्यक्ति राजा के पास आया और बोला, 'महाराज, आपको यह जानना चाहिए कि पवित्र चक्र-खजाना लुप्त हो गया है।' यह सुनकर राजा बहुत दुखी और उदास हुए। लेकिन वे राजमह के पास जाकर उनसे चक्र-चढ़ाने वाले राजा के कर्तव्यों के बारे में नहीं पूछे। इसके बजाय, उन्होंने अपनी ही सोच के अनुसार प्रजा पर शासन किया, और इस प्रकार शासन किए जाने पर प्रजा उतनी समृद्ध नहीं हुई जितनी कि पिछले राजाओं के शासनकाल में हुई थी, जिन्होंने चक्र-चढ़ाने वाले राजा के कर्तव्यों का पालन किया था। तब मंत्री, सलाहकार, कोषाधिकारी, रक्षक, द्वारपाल और मंत्रोच्चार करने वाले राजा के पास आए और बोले:

"महाराज, जब तक आप अपने विचारों के अनुसार और पूर्व के चक्र-परिवर्तकों के शासनकाल से भिन्न तरीके से लोगों पर शासन करते रहेंगे, तब तक लोग समृद्ध नहीं होंगे। महाराज, आपके राज्य में ऐसे मंत्री हैं, जिनमें हम भी शामिल हैं, जिन्होंने इस ज्ञान को संरक्षित रखा है कि एक चक्र-परिवर्तक को कैसे शासन करना चाहिए। महाराज, हमसे पूछिए, हम आपको बताएंगे!"

उत्तराधिकार के बाद नैतिक पतन

तब राजा ने सभी मंत्रियों और अन्य लोगों को एक साथ बुलाया और उनसे परामर्श किया। उन्होंने राजा को एक शासक के कर्तव्यों के बारे में समझाया। उनकी बात सुनकर राजा ने सुरक्षा और पहरेदारी का प्रबंध किया, लेकिन उसने जरूरतमंदों को संपत्ति नहीं दी, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी फैल गई। गरीबी फैलने के साथ ही एक व्यक्ति ने वह ले लिया जो उसे नहीं दिया गया था, इस प्रकार उसने चोरी का अपराध किया। उन्होंने उसे गिरफ्तार कर राजा के समक्ष पेश किया और कहा: 'महाराज, इस व्यक्ति ने वह लिया जो उसे नहीं दिया गया था, जिसे हम चोरी कहते हैं।' राजा ने उससे कहा: 'क्या यह सच है कि तुमने वह लिया जो तुम्हें नहीं दिया गया था - जिसे चोरी कहते हैं?' 'हाँ, महाराज।' 'क्यों?' 'महाराज, मेरे पास जीने के लिए कुछ नहीं है।' तब राजा ने उस व्यक्ति को कुछ संपत्ति देते हुए कहा, "हे मेरे सज्जन, इससे तुम अपना भरण-पोषण कर सकते हो, अपने माता-पिता का सहारा बन सकते हो, पत्नी और बच्चों का पालन-पोषण कर सकते हो, व्यापार कर सकते हो और संन्यासियों और ब्राह्मणों को दान दे सकते हो, जिससे तुम्हारा आध्यात्मिक कल्याण होगा और तुम्हें स्वर्गलोक में सुखद पुनर्जन्म प्राप्त होगा।" "बहुत अच्छा, महाराज," उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

और ठीक ऐसा ही एक दूसरे आदमी के साथ भी हुआ।

फिर लोगों ने सुना कि राजा उन लोगों को संपत्ति दे रहा है जिन्होंने वह लिया है जो उन्हें नहीं दिया गया था, और उन्होंने सोचा: 'काश हम भी ऐसा ही करें!' फिर एक और आदमी ने वह लिया जो उसे नहीं दिया गया था, और वे उसे राजा के सामने ले आए। राजा ने उससे पूछा

कि उसने ऐसा क्यों किया, और उसने उत्तर दिया: 'महाराज, मेरे पास जीने के लिए कुछ नहीं है।' तब राजा ने सोचा: 'अगर मैं हर उस व्यक्ति को संपत्ति देता रहूँ जो वह लेता है जो उसे नहीं दिया गया है, तो यह चोरी और भी बढ़ जाएगी। बेहतर होगा कि मैं इसका अंत कर दूँ, इसे हमेशा के लिए खत्म कर दूँ, और इसका सिर काट दूँ।' इसलिए उसने अपने आदमियों को आदेश दिया: 'इस आदमी के हाथों को एक मजबूत रस्सी से कसकर पीछे बाँध दो, इसका सिर पूरी तरह से मुंडवा दो, और इसे ढोल की कर्कश ध्वनि के साथ गलियों और चौकों से होते हुए दक्षिणी द्वार से बाहर ले जाओ, और वहाँ इसे मृत्युदंड देकर इसका सिर काट दो!' और उन्होंने ऐसा ही किया।

यह सुनकर लोगों ने सोचा: 'चलो अब हम अपने लिए तेज तलवारें बनवाते हैं, और फिर हम किसी से भी वह सब कुछ छीन लेंगे जो हमें नहीं दिया गया है, जिसे चोरी कहते हैं, हम उनका अंत कर देंगे, उन्हें हमेशा के लिए खत्म कर देंगे और उनके सिर काट देंगे।' इसलिए, कुछ तेज तलवारें प्राप्त करके, उन्होंने गांवों, कस्बों और शहरों पर जानलेवा हमले किए, और राजमार्गों पर लूटपाट करते हुए अपने पीड़ितों के सिर काट डाले।

इस प्रकार, जरूरतमंदों को संपत्ति न देने से गरीबी व्यापक हो गई, गरीबी बढ़ने से वंचितों को छीनने की प्रवृत्ति बढ़ गई, चोरी बढ़ने से हथियारों का प्रयोग बढ़ गया, हथियारों के बढ़ते प्रयोग से हत्याएं बढ़ गईं—और हत्याओं में वृद्धि के कारण लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और जीवन अवधि और सुंदरता में इस कमी के परिणामस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि अस्सी हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल चालीस हजार वर्ष ही जीवित रहे।

"और चालीस हजार वर्ष तक जीवित रहने वाली पीढ़ी के एक व्यक्ति ने वह लिया जो उसे नहीं दिया गया था। उसे राजा के समक्ष लाया गया, जिसने उससे पूछा: 'क्या यह सच है कि तुमने वह लिया जो तुम्हें नहीं दिया गया था - जिसे चोरी कहा जाता है?' 'नहीं, महाराज', उसने उत्तर दिया, इस प्रकार जानबूझकर झूठ बोला।"

"इस प्रकार, जरूरतमंदों को संपत्ति न देने के कारण, ...जीवन लेने की प्रवृत्ति बढ़ गई, और जीवन लेने की प्रवृत्ति से झूठ बोलने की प्रवृत्ति बढ़ गई, झूठ बोलने की प्रवृत्ति बढ़ने से लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और परिणामस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि चालीस हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल बीस हजार वर्ष ही जीवित रहे।"

"और बीस हजार वर्ष तक जीवित रहने वाली पीढ़ी के एक व्यक्ति ने वह ले लिया जो उसे नहीं दिया गया था। दूसरे व्यक्ति ने राजा के समक्ष उसकी निंदा करते हुए कहा, 'महाराज, फलां व्यक्ति ने वह ले लिया जो उसे नहीं दिया गया था', इस प्रकार उसने दूसरे की बुराई की।"

इस प्रकार, जरूरतमंदों को संपत्ति न देने से...दूसरों की बुराई करने की प्रवृत्ति बढ़ गई, और परिणामस्वरूप, लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और फलस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि बीस हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल दस हजार वर्ष ही जीवित रहे।

"और जो पीढ़ी दस हजार वर्ष तक जीवित रही, उनमें से कुछ सुंदर थे और कुछ बदसूरत। और बदसूरत लोगों ने सुंदर लोगों से ईर्ष्या करते हुए दूसरों की पत्नियों के साथ व्यभिचार किया।"

"इस प्रकार, जरूरतमंदों को संपत्ति न देने के कारण, यौन दुराचार बढ़ गया, और परिणामस्वरूप लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और फलस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि दस हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल पांच हजार वर्ष ही जीवित रहे।"

और जिस पीढ़ी की जीवन अवधि पाँच हज़ार वर्ष थी, उसमें दो बातें बढ़ गईं: कठोर भाषा और व्यर्थ की बातें, जिसके परिणामस्वरूप लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और फलस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि पाँच हज़ार वर्ष थी, उनके बच्चे कुछ ढाई हज़ार वर्ष तक जीवित रहे, और कुछ केवल दो हज़ार वर्ष तक।

और जिस पीढ़ी की जीवन अवधि ढाई हजार वर्ष थी, उसमें लोभ और घृणा बढ़ गई, और परिणामस्वरूप लोगों की जीवन अवधि कम हो गई, उनकी सुंदरता कम हो गई, और फलस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि ढाई हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल एक हजार वर्ष ही जीवित रहे।

"जिन लोगों की जीवन अवधि एक हजार वर्ष थी, उनमें गलत धारणाएं बढ़ गईं...और परिणामस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि एक हजार वर्ष थी, उनके बच्चे केवल पांच सौ वर्ष ही जीवित रहे।"

"और जिस पीढ़ी की जीवन अवधि पाँच सौ वर्ष थी, उसमें तीन चीजें बढ़ गईं: व्यभिचार, अत्यधिक लालच और विकृत प्रथाएँ...और परिणामस्वरूप, जिनकी जीवन अवधि पाँच सौ वर्ष थी, उनके बच्चे कुछ ढाई सौ वर्ष तक जीवित रहे, कुछ केवल दो सौ वर्ष तक।"

और जिनकी आयु ढाई सौ वर्ष थी, उनमें ये बातें बढ़ गईं: माता-पिता के प्रति, तपस्वियों और ब्राह्मणों के प्रति, और कुल के मुखिया के प्रति अनादर।

"इस प्रकार, जरूरतमंदों को संपत्ति न देने के कारण, माता-पिता, तपस्वियों और ब्राह्मणों तथा कुल के मुखिया के प्रति अनादर बढ़ गया, और परिणामस्वरूप लोगों की आयु और सुंदरता कम हो गई, और जिनकी आयु ढाई शताब्दियाँ थी, उनके बच्चे केवल सौ वर्ष ही जीवित रहे।"

बुद्ध द्वारा भविष्यवाणियाँ

भिक्षुओं, एक समय आएगा जब इन लोगों के बच्चों की आयु दस वर्ष होगी। और उनके समय में, लड़कियाँ पाँच वर्ष की आयु में विवाह योग्य हो जाएँगी। और उनके समय में ये स्वाद लुप्त हो जाएँगे: घी, मक्खन, तिल का तेल, गुड़ और नमक। उनके बीच कुद्रुसा अनाज

मुख्य भोजन होगा, जैसे आज चावल और करी हैं। और उनके समय में, नैतिक आचरण के दस मार्ग पूरी तरह से लुप्त हो जाएँगे, और बुराई के दस मार्ग अत्यधिक प्रचलित हो जाएँगे: दस वर्ष की आयु वालों के लिए 'नैतिक' शब्द का कोई अर्थ नहीं होगा, तो भला कोई नैतिक मार्ग पर कैसे चल सकता है? जो लोग माता-पिता, संन्यासियों और ब्राह्मणों, कुल के मुखिया का आदर नहीं करते, वे ही मान-सम्मान और प्रतिष्ठा के पात्र होंगे। जैसे आज माता-पिता, संन्यासियों और ब्राह्मणों, कुल के मुखिया का आदर करने वाले लोगों की प्रशंसा और सम्मान होता है, वैसे ही इसके विपरीत करने वालों के साथ भी होगा।

दस वर्ष की आयु वाले लोगों में माता या चाची, माता की भाभी, शिक्षक की पत्नी या पिता की पत्नियों आदि का कोई ध्यान नहीं रखा जाएगा—वे सभी दुनिया में बकरियों और भेड़ों, मुर्गियों और सूअरों, कुत्तों और सियार की तरह अनैतिक रूप से संबंध बनाएंगे। उनमें एक-दूसरे के प्रति भयंकर शत्रुता, तीव्र घृणा, तीव्र क्रोध और हत्या के विचार व्याप्त होंगे, माता का बच्चे के प्रति और बच्चे का माता के प्रति, पिता का बच्चे के प्रति और बच्चे का पिता के प्रति, भाई का भाई के प्रति, भाई का बहन के प्रति, ठीक वैसे ही जैसे शिकारी जिस जानवर का पीछा करता है उससे घृणा करता है...

"और दस वर्ष की आयु वाले प्राणियों के लिए सात दिनों का 'तलवार-अंतराल' आएगा, जिसके दौरान वे एक-दूसरे को जंगली जानवर समझ लेंगे। उनके हाथों में तेज तलवारें आ जाएंगी और यह सोचकर कि 'यह एक जंगली जानवर है!' वे उन तलवारों से एक-दूसरे की जान ले लेंगे। लेकिन कुछ प्राणी ऐसे भी होंगे जो सोचेंगे: 'चलो हम किसी को न मारें और न ही किसी के हाथों मारे जाएं! चलो हम घास के घने जंगलों, वन-छिपारियों, वृक्षों के समूह, दुर्गम नदियों या दुर्गम पहाड़ों की ओर चलें और जंगल की जड़ों और फलों पर जीवन व्यतीत करें।' और वे अपने छिपने के स्थानों से निकलकर एकमत होकर एक साथ आनंद मनाएंगे और कहेंगे: 'हे अच्छे प्राणियों, मैं देखता हूं कि तुम जीवित हो!'" और फिर उन प्राणियों के मन में यह विचार आएगा, 'बुरे मार्गों के आदी होने के कारण ही हमने अपने सगे-संबंधियों को खोया है, इसलिए अब हम अच्छे कार्य करें! हम कौन से अच्छे कार्य कर सकते हैं? आइए हम जीवन लेने से बचें और इस अच्छे कार्य को अपनाकर इसका अभ्यास करें। ऐसे अच्छे कार्य करने से उनकी आयु और सौंदर्य में वृद्धि होगी। और जिनकी आयु दस वर्ष थी, उनके बच्चे बीस वर्ष तक जीवित रहेंगे।'

तब उन प्राणियों को यह विचार आएगा: 'अच्छे कर्मकांडों का पालन करने से ही हमारी आयु और सौंदर्य में वृद्धि हुई है, इसलिए हमें और भी अच्छे कर्मकांड करने चाहिए। हमें वह सब कुछ लेने से बचना चाहिए जो हमें नहीं दिया गया है, यौन दुराचार से, झूठ बोलने से, निंदा करने से, कठोर वाणी से, व्यर्थ की बातों से, लोभ से, द्वेष से और गलत दृष्टिकोण से दूर रहना चाहिए; हमें तीन चीजों से बचना चाहिए: व्यभिचार, अत्यधिक लोभ और कुटिल कर्मकांड; हमें अपने माता-पिता, तपस्वियों और ब्राह्मणों और कुल के मुखिया का आदर करना चाहिए और इन अच्छे कर्मों में निरंतर बने रहना चाहिए।'

और वे ये कार्य करेंगे, और इसी कारण उनकी आयु और सौंदर्य में वृद्धि होगी। जिनकी आयु बीस वर्ष है, उनके बच्चे चालीस वर्ष तक जीवित रहेंगे, उनके बच्चे अस्सी वर्ष तक, उनके बच्चे एक सौ साठ वर्ष तक, उनके बच्चे तीन सौ बीस वर्ष तक, उनके बच्चे छह सौ चालीस वर्ष तक जीवित रहेंगे; जिनकी आयु छह सौ चालीस वर्ष है, उनके बच्चे दो हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे, उनके बच्चे चार हजार वर्ष तक, उनके बच्चे आठ हजार वर्ष तक, और उनके बच्चे बीस हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे, चालीस हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे, और उनके बच्चे अस्सी हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे।

अस्सी हजार वर्ष की आयु वाले लोगों में, लड़कियाँ पाँच सौ वर्ष की आयु में विवाह योग्य हो जाएँगी। और ऐसे लोग केवल तीन प्रकार के रोगों से ग्रसित होंगे: लोभ, उपवास और वृद्धावस्था। और उन लोगों के समय में जंबूद्वीप महाद्वीप शक्तिशाली और समृद्ध होगा, और गाँव, कस्बे और शहर एक दूसरे से एक मुर्गे की उड़ान की दूरी पर होंगे। यह जंबूद्वीप, अविची की तरह, उतना ही घना होगा जितना जंगल सरकंडों और झाड़ियों से घना होता है। उस समय आज का वाराणसी केतुमती नामक एक शाही नगरी होगा, शक्तिशाली और समृद्ध, लोगों से भरा हुआ और अच्छी तरह से सुसज्जित। जंबूद्वीप में चौरासी हजार नगर होंगे, जिनकी राजधानी केतुमती होगी।

और अस्सी हजार वर्ष की आयु वाले लोगों के समय में, केतुमारी की राजधानी में शंखा नामक एक राजा का उदय होगा, जो चक्र-घुमाने वाला सम्राट, धर्म का पालन करने वाला धर्मनिष्ठ सम्राट और चारों दिशाओं का विजेता होगा...

और उस समय, जब अस्सी हजार वर्ष की आयु वाले लोग होंगे, तब संसार में एक परम पूज्य भगवान, पूर्णतः प्रबुद्ध अरहंत बुद्ध, मेत्तेय का जन्म होगा, जो ज्ञान और आचरण से परिपूर्ण, कल्याणकारी, संसार के ज्ञाता, मनुष्यों को वश में करने वाले अतुलनीय प्रशिक्षक, देवताओं और मनुष्यों के गुरु, प्रबुद्ध और धन्य होंगे, ठीक वैसे ही जैसे मैं अभी हूँ। वे अपने अलौकिक ज्ञान से इस ब्रह्मांड को, इसके देवताओं, मारों और ब्रह्माओं सहित, इसके तपस्वियों और ब्राह्मणों सहित, और इस पीढ़ी को, इसके राजकुमारों और लोगों सहित, पूर्णतः जानेंगे और प्रचार करेंगे, ठीक वैसे ही जैसे मैं अभी करता हूँ। वे धम्म का उपदेश देंगे, जो आरंभ में सुंदर, मध्य में सुंदर और अंत में सुंदर है, भाव और अक्षर दोनों में, और ठीक वैसे ही जैसे मैं अभी करता हूँ, पवित्र जीवन (ब्रह्मचर्य/संयम) को उसकी पूर्णता और शुद्धता में प्रचारित करेंगे। उनके साथ हजारों भिक्षुओं का समूह होगा, ठीक वैसे ही जैसे मेरे साथ सैकड़ों भिक्षुओं का समूह है।

तब राजा शंख, राजा महा-पानादा द्वारा निर्मित महल का पुनर्निर्माण करेंगे और उसमें निवास करने के बाद उसे त्याग देंगे तथा तपस्वियों, ब्राह्मणों, भिखारियों, यात्रियों और दरिद्रों को भेंट कर देंगे। फिर वे अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर पीले वस्त्र धारण करेंगे और परम बुद्ध मेत्तेय के मार्गदर्शन में गृहस्थ जीवन त्याग देंगे। प्रस्थान करने के बाद वे एकांत में, एकांतवास में, उत्साही, उत्सुक और दृढ़ निश्चय के साथ रहेंगे और शीघ्र ही अपने अलौकिक ज्ञान और संकल्प से इसी जीवन में ब्रह्मचर्य के उस अद्वितीय लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे, जिसके लिए अच्छे परिवार के युवक गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यास लेते हैं और उसमें निवास करते हैं।

अंत में, क्या करें?
"भिक्षुओं, अपने आप में एक द्वीप बनो, अपने आप में एक शरणस्थल बनो, जिसके अलावा कोई और शरणस्थल न हो। धम्म को अपना द्वीप बनाओ, धम्म को अपना शरणस्थल बनाओ, जिसके अलावा कोई और शरणस्थल न हो। और एक भिक्षु अपने आप में एक द्वीप की तरह कैसे रहता है...? यहाँ, एक भिक्षु शरीर को शरीर के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखते हुए, मन को मन के रूप में देखते हुए, मन की वस्तुओं को मन की वस्तुओं के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर रहता है।"
"हे भिक्षुओं, अपने पैतृक निवासों में ही रहो। ऐसा करने से तुम्हारी आयु बढ़ेगी, तुम्हारी सुंदरता बढ़ेगी, तुम्हारी खुशी बढ़ेगी, तुम्हारा धन बढ़ेगा, तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी।"
"एक भिक्षु के लिए जीवन की अवधि क्या है? यहाँ, एक भिक्षु शक्ति के मार्ग का विकास करता है, जो इच्छाशक्ति के साथ इरादे की एकाग्रता है, शक्ति का मार्ग जो ऊर्जा की एकाग्रता है..., शक्ति का मार्ग जो चेतना की एकाग्रता है..., शक्ति का मार्ग जो इच्छाशक्ति के साथ अन्वेषण की एकाग्रता है। शक्ति के इन चारों मार्गों का बार-बार अभ्यास करके वह, यदि चाहे, तो पूरी एक शताब्दी या शताब्दी के शेष भाग तक जीवित रह सकता है। यही मैं एक भिक्षु के लिए जीवन की अवधि कहता हूँ।"
"एक भिक्षु के लिए सौंदर्य क्या है? यहाँ, एक भिक्षु सही आचरण का अभ्यास करता है, अनुशासन के अनुसार संयमित रहता है, व्यवहार और आदतों में परिपूर्ण होता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है, और अपने द्वारा अपनाए गए प्रशिक्षण के नियमों का पालन करता है। यही एक भिक्षु के लिए सौंदर्य है।"
"एक भिक्षु के लिए सुख क्या है? यहाँ, एक भिक्षु, सात इच्छाओं से विरक्त होकर...प्रथम ध्यान में प्रवेश करता है,...द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ ध्यान में,...समभाव और सजगता से शुद्ध होकर। यही एक भिक्षु के लिए सुख है।"
और एक भिक्षु के लिए धन क्या है? यहाँ, एक भिक्षु, अपने हृदय में करुणा से परिपूर्ण होकर, एक दिशा, दूसरी दिशा, तीसरी दिशा, चौथी दिशा में व्याप्त रहता है। इस प्रकार वह पूरे संसार में, ऊपर, नीचे, हर दिशा में—हर जगह—हमेशा करुणा से परिपूर्ण, असीम, घृणा या द्वेष से रहित मन से व्याप्त रहता है। फिर, अपने हृदय में करुणा से परिपूर्ण होकर,...सहानुभूतिपूर्ण आनंद से परिपूर्ण होकर,...समभाव से परिपूर्ण हृदय से परिपूर्ण होकर,...वह पूरे संसार में, ऊपर, नीचे, हर दिशा में, हर जगह—हमेशा समभाव से परिपूर्ण, असीम, घृणा या द्वेष से रहित मन से व्याप्त रहता है। यही एक भिक्षु के लिए धन है।
"एक भिक्षु के लिए शक्ति क्या है? यहाँ, भिक्षु विकारों के नाश द्वारा हृदय की उस निर्मल मुक्ति और ज्ञान की मुक्ति में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसे उसने इसी जीवन में अपने अलौकिक ज्ञान और अनुभूति से प्राप्त किया है। यही एक भिक्षु के लिए शक्ति है।"
"भिक्षुओं, मैं मारा की शक्ति से अधिक कठिन विजय प्राप्त करने वाली शक्ति नहीं मानता। यह पुण्य केवल सद्गुणों के संचय से ही बढ़ता है।"
इस प्रकार भगवान ने कहा, और भिक्षु उनके शब्दों से प्रसन्न और आनंदित हुए।

टिपिटका » सुत्त पिटक » दीघा निकाय >> 3.4अग्गन्ना सुत्त(डीएन27)

अग्गन्ना सुत्त
एक बार भगवान सावत्थी में, पूर्वी उद्यान में मिगारा की माता के महल में ठहरे हुए थे। उस समय वसेत्था और भारद्वाज भी भिक्षुओं के बीच रहते थे और स्वयं भिक्षु बनने की आशा रखते थे। शाम को भगवान अपनी एकांत साधना से उठे और महल से बाहर आकर उसकी छाया में टहलने लगे।

वसेत्था ने यह देखा और भारद्वाज से कहा, "मित्र भारद्वाज, भगवान बाहर आ गए हैं और इधर-उधर टहल रहे हैं। चलो उनके पास चलते हैं। शायद हमें स्वयं भगवान से धर्म पर प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो।" भारद्वाज ने कहा, "जी हाँ," और वे भगवान के पास गए, उन्हें प्रणाम किया और उनके साथ चलने लगे।

तब भगवान ने वसेत्थ से कहा, "वसेत्थ, तुम दोनों जन्म से ब्राह्मण हो और ब्राह्मण परिवार में रहकर गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में आए हो। क्या ब्राह्मण तुम्हें बुरा-भला नहीं कहते?" "जी हाँ, भगवान, ब्राह्मण हमें बुरा-भला कहते हैं। वे हमेशा की तरह निंदा करने से पीछे नहीं हटते। भगवान, ब्राह्मण कहते हैं: 'ब्राह्मण जाति सर्वोच्च जाति है, बाकी सब नीच हैं; ब्राह्मण जाति गोरी है, बाकी सब काली हैं; ब्राह्मण शुद्ध हैं, गैर-ब्राह्मण नहीं; ब्राह्मण ब्रह्मा के सच्चे बच्चे हैं, उनके मुख से जन्मे हैं, ब्रह्मा के वंशज हैं। और तुम, तुमने सर्वोच्च जाति

को त्यागकर नीच जाति के छोटे तपस्वियों, सेवकों, ब्रह्मा के चरणों से जन्मे काले लोगों के साथ संगति कर ली है! ऐसे लोगों के साथ रहना तुम्हारे लिए ठीक नहीं है!' भगवान, ब्राह्मण इसी तरह हमें बुरा-भला कहते हैं।"

"तो, वसेत्था, ब्राह्मण ऐसा कहकर अपनी प्राचीन परंपरा को भूल गए हैं। क्योंकि हम ब्राह्मण स्त्रियों, ब्राह्मणों की पत्नियों को देख सकते हैं, जो मासिक धर्म से गुजरती हैं, गर्भवती होती हैं, बच्चे को जन्म देती हैं और उन्हें दूध पिलाती हैं। फिर भी ये गर्भ से जन्मे ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से जन्म लेने की बात करते हैं... ये ब्राह्मण ब्रह्मा का गलत अर्थ निकालते हैं, झूठ बोलते हैं और बहुत पुण्य कमाते हैं।"

"वसेत्था, ये चार जातियाँ हैं: क्षत्रिय, ब्राह्मण, व्यापारी और कारीगर। और कभी-कभी कोई क्षत्रिय जीवन छीन लेता है, बिना माँगे कुछ ले लेता है, यौन दुराचार करता है, झूठ बोलता है, निंदा करता है, कठोर भाषा का प्रयोग करता है या व्यर्थ की बातें करता है, लालची, द्वेषपूर्ण या गलत विचारों वाला होता है। इस प्रकार, ऐसे कार्य अनैतिक माने जाते हैं, निंदनीय माने जाते हैं, जिनसे बचना चाहिए, आर्यों के लिए अशोभनीय माने जाते हैं, काले कर्मों से भरे होते हैं और बुद्धिमानों द्वारा निंदनीय माने जाते हैं, और ये कभी-कभी क्षत्रियों में भी पाए जाते हैं, और यही बात ब्राह्मणों, व्यापारियों और कारीगरों पर भी लागू होती है।"

कभी-कभी, एक क्षत्रिय भी जीवन लेने से परहेज करता है,...वह लोभी, द्वेषी या गलत विचारों वाला नहीं होता। इस प्रकार, नैतिक और निर्दोष माने जाने वाले, अनुसरण योग्य और अनुसरण करने योग्य माने जाने वाले, आर्यों के लिए उपयुक्त और उपयुक्त माने जाने वाले मार्ग, उज्ज्वल परिणामों वाले और बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित ऐसे गुण कभी-कभी क्षत्रियों में पाए जाते हैं, और इसी प्रकार ब्राह्मणों, व्यापारियों और कारीगरों में भी पाए जाते हैं।

"चूंकि ज्ञानियों द्वारा निंदा और प्रशंसा किए जाने वाले अंधकार और प्रकाश दोनों गुण चारों जातियों में समान रूप से विकेंद्रीकृत हैं, इसलिए ज्ञानी ब्राह्मण जाति के सर्वोच्च होने के दावे को स्वीकार नहीं करते। ऐसा क्यों है? क्योंकि, वसेत्था, चारों जातियों में से जो कोई भी भिक्षु बन जाता है, जो अरहंत बनकर विकारों का नाश करता है, जिसने जीवन व्यतीत किया है, जो करना आवश्यक था वह किया है, बोझ उतार दिया है, सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया है, कर्मों के बंधनों को तोड़ दिया है और परम ज्ञान के माध्यम से मुक्त हो गया है—उसे धम्म के कारण सर्वोच्च घोषित किया जाता है, न कि अधर्म के कारण।"

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

यह दृष्टांत आपको स्पष्ट करेगा कि धम्म इस संसार और परलोक में सर्वोत्तम कैसे है। कोसल के राजा पसेनादि को पता चलता है: 'संन्यासी गौतम शाक्यों के पड़ोसी कुल से निकले हैं।' शाक्यों कोसल के राजा के अधीन हैं। वे उन्हें विनम्र सेवा अर्पित करते हैं, उन्हें प्रणाम करते हैं, उठकर उन्हें आदर देते हैं और उचित सेवा प्रदान करते हैं। और, जिस प्रकार शाक्यों राजा को विनम्र सेवा अर्पित करते हैं..., उसी प्रकार राजा तथागत को विनम्र सेवा अर्पित करते हैं, यह सोचते हुए कि 'यदि तपस्वी गौतम उच्च कुल के हैं, तो मैं निम्न कुल का हूँ; यदि तपस्वी गौतम बलवान हैं, तो मैं दुर्बल हूँ; यदि तपस्वी गौतम देखने में सुंदर हैं, तो मैं अपंग हूँ; यदि तपस्वी गौतम प्रभावशाली हैं, तो मेरा प्रभाव नगण्य है।' अब धम्म का आदर करने, धम्म को महत्व देने, धम्म का सम्मान करने और धम्म के प्रति श्रद्धापूर्वक श्रद्धा अर्पित करने के कारण ही राजा पसेनादि तथागत की विनम्र सेवा करते हैं और उन्हें उचित सम्मान प्रदान करते हैं।

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

वसेत्था, तुम सब, चाहे तुम्हारा जन्म, नाम, कुल और परिवार कोई भी हो, गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में आसीन हुए हो। यदि तुमसे पूछा जाए कि तुम कौन हो, तो उत्तर देना: 'हम तपस्वी हैं, शाक्यों के अनुयायी हैं।' तथागत में जिसकी आस्था दृढ़, स्थिर, अटल और अविचल है, जिसे कोई भी तपस्वी या ब्राह्मण, कोई भी देव या मार या ब्रह्मा या संसार का कोई भी व्यक्ति विचलित नहीं कर सकता, वही सत्यतः कह सकता है: 'मैं भगवान का सच्चा पुत्र हूँ, उनके मुख से जन्मा हूँ, धम्म से जन्मा हूँ, धम्म द्वारा सृजित हूँ, धम्म का वंशज हूँ।' ऐसा क्यों है? क्योंकि, वसेत्था, यही तथागत का सार है: 'धम्म का शरीर', अर्थात् 'ब्रह्म का शरीर', या 'धम्म बनो', अर्थात् 'ब्रह्म बनो'।

"हे वसेत्थ, एक समय ऐसा आता है जब, लंबे समय के बाद, यह संसार सिकुड़ता है। इस संकुचन के समय, अधिकांश प्राणी आभासर ब्रह्म लोक में जन्म लेते हैं। वे वहाँ मन से बने, आनंद में लिप्त, स्वयंप्रकाशित, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी भाव से निवास करते हैं—और वे बहुत लंबे समय तक इसी अवस्था में रहते हैं। परन्तु कुछ समय बाद, लंबे समय के बाद, यह संसार पुनः फैलने लगता है। इस विस्तार के समय, आभासर ब्रह्म लोक से मृत्यु को प्राप्त प्राणी, वहाँ से मृत्यु को प्राप्त करके, अधिकतर इस संसार में पुनर्जन्म लेते हैं। वे यहाँ मन से बने, आनंद में लिप्त, स्वयंप्रकाशित, वायु में विचरण करते हुए, तेजस्वी भाव से निवास करते हैं—और वे बहुत लंबे समय तक इसी अवस्था में रहते हैं।"

"उस समय, वसेत्था, केवल एक ही जल का विशाल भूभाग था, और चारों ओर घना अंधकार छाया हुआ था। न चंद्रमा था, न सूर्य, न तारामंडल, न तारे, न दिन-रात का भेद था, न महीने-पखवाड़े, न वर्ष-ऋतुएँ, न नर-नारी, सभी प्राणी मात्र थे। और कुछ समय बाद, बहुत लंबे समय के बाद, उस जल पर सुगंधित मिट्टी फैल गई जहाँ वे प्राणी थे। वह देखने में बिल्कुल वैसी ही थी जैसे गर्म दूध ठंडा होने पर उस पर एक परत बन जाती है। उसमें रंग, सुगंध और स्वाद था। उसका रंग उत्तम घी या मक्खन जैसा था, और वह शुद्ध जंगली शहद की तरह मीठी थी।"

फिर एक लालची प्राणी ने कहा, 'अरे, यह क्या हो सकता है?' और उसने अपनी उंगली से उस स्वादिष्ट मिट्टी को चखा। ऐसा करने पर वह उसके स्वाद से मोहित हो गया और उसके मन में लालसा उत्पन्न हो गई। फिर अन्य प्राणियों ने भी उससे प्रेरणा लेकर अपनी उंगलियों से उस पदार्थ को चखा। वे भी उसके स्वाद से मोहित हो गए और उनके मन में लालसा उत्पन्न हो गई। इसलिए वे अपने हाथों से उस पदार्थ के टुकड़े तोड़ने लगे ताकि उसे खा सकें। और इसका परिणाम यह हुआ कि उनका स्वयं का प्रकाश लुप्त हो गया। और उनके स्वयं के प्रकाश के लुप्त होने के परिणामस्वरूप, चंद्रमा और सूर्य प्रकट हुए, रात और दिन में अंतर स्पष्ट हुआ, महीने और पखवाड़े अस्तित्व में आए, और वर्ष और उसके ऋतुएँ शुरू हुईं। इस प्रकार संसार का पुनर्विकास हुआ।

और वे प्राणी बहुत लंबे समय तक इस स्वादिष्ट मिट्टी का सेवन करते रहे, इसे खाकर पोषण प्राप्त करते रहे। ऐसा करते-करते उनके शरीर खुरदुरे हो गए और उनके रूप-रंग में अंतर आ गया। कुछ प्राणी सुंदर हो गए, कुछ बदसूरत। सुंदर प्राणी दूसरों को तुच्छ समझने लगे और कहने लगे: 'हम उनसे अधिक सुंदर हैं।' और क्योंकि वे अपने रूप-रंग को लेकर अहंकारी और घमंडी हो गए, इसलिए वह स्वादिष्ट मिट्टी लुप्त हो गई। इस पर वे सब एकत्रित हुए और विलाप करते हुए बोले: 'ओह, वह स्वाद! ओह, वह स्वाद!' और जैसे आजकल लोग कुछ अच्छा पाकर कहते हैं: 'ओह, वह स्वाद!' वैसे ही वे अनजाने में एक प्राचीन कहावत को दोहरा रहे होते हैं।

और फिर, जब स्वादिष्ट मिट्टी गायब हो गई, तो मशरूम की तरह एक कवक उग आया। उसका रंग, सुगंध और स्वाद बहुत अच्छा था। वह उत्तम घी या मक्खन के रंग का था और शुद्ध जंगली शहद की तरह बहुत मीठा था। और उन प्राणियों ने उस कवक को खाना शुरू कर दिया। और यह बहुत लंबे समय तक चलता रहा। और जैसे-जैसे वे कवक खाते रहे, वैसे-वैसे उनके शरीर और भी खुरदुरे होते गए और उनके रूप-रंग में अंतर और भी बढ़ता गया। और सुंदर दिखने वाले दूसरों को तुच्छ समझने लगे... और क्योंकि वे अपने रूप-रंग को लेकर घमंडी और अभिमानी हो गए, इसलिए वह मीठा कवक गायब हो गया। फिर, बांस की तरह उगने वाली लताएँ दिखाई दीं... और वे भी शुद्ध जंगली शहद की तरह बहुत मीठी थीं।

और वे प्राणी उन लताओं को खाने लगे। ऐसा करते-करते उनके शरीर और भी खुरदुरे हो गए, और उनके रूप-रंग में अंतर और भी बढ़ गया... और वे और भी अहंकारी हो गए, और इस तरह वह लता भी गायब हो गई। इस पर वे सब एक साथ जमा हुए और विलाप करते हुए बोले, 'हाय, हमारी लता चली गई! हमने क्या खो दिया!' और इसलिए आज जब लोगों से पूछा जाता है कि वे क्यों दुखी हैं, तो वे कहते हैं: 'अरे, हमने क्या खो दिया!' तो वे अनजाने में एक प्राचीन कहावत को दोहरा रहे होते हैं।

और फिर, लताओं के गायब होने के बाद, खुले स्थानों में चावल दिखाई दिए, जो धूल और भूसी से मुक्त, सुगंधित और साफ थे। और जो चावल उन्होंने शाम के भोजन में खाए थे, वे फिर से उग आए थे और सुबह तक पक गए थे, और जो चावल उन्होंने सुबह नाश्ते में खाए थे, वे शाम तक फिर से पक गए थे, कटाई का कोई संकेत नहीं था। और ये प्राणी इस चावल को खाने में जुट गए, और यह बहुत लंबे समय तक चला। और ऐसा करते-करते, उनके शरीर और भी खुरदुरे हो गए, और उनके रूप-रंग में अंतर और भी बढ़ गया। और स्त्रियों में स्त्री जननांग विकसित हो गए, और पुरुषों में पुरुष जननांग। और स्त्रियाँ पुरुषों के प्रति अत्यधिक आसक्त हो गईं, और पुरुष स्त्रियों के प्रति। एक-दूसरे के प्रति इस अत्यधिक आसक्ति के कारण, कामुकता जागृत हुई, और उनके शरीर कामवासना से जलने लगे। और बाद में, इस जलन के कारण, वे यौन क्रिया में लिप्त हो गए। लेकिन जिन्होंने उन्हें ऐसा करते देखा, उन्होंने उन पर धूल, राख या गोबर फेंका और चिल्लाए: 'मर जा, हे गंदे जानवर! एक प्राणी ऐसा कैसे कर सकता है?' एक और! ठीक वैसे ही जैसे आज कुछ इलाकों में जब बहू को घर से बाहर लाया जाता है, तो कुछ लोग उस पर मिट्टी, कुछ राख और कुछ गोबर फेंकते हैं, यह जाने बिना कि वे एक प्राचीन प्रथा को दोहरा रहे हैं। जो उस समय बुरा माना जाता था, वह आज अच्छा माना जाता है।

"और उन दिनों जो लोग यौन क्रियाओं में लिप्त रहते थे, उन्हें एक या दो महीने तक किसी गाँव या कस्बे में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। इसलिए, जो लोग अत्यधिक लंबे समय तक ऐसी अनैतिक गतिविधियों में लिप्त रहते थे, वे छिपकर ऐसी गतिविधियों में लिप्त रहने के लिए अपने लिए घर बनाने लगे।"

अब आलसी स्वभाव वाले एक प्राणी के मन में यह विचार आया: 'तो फिर शाम के भोजन और सुबह के नाश्ते के लिए चावल इकट्ठा करने की क्या ज़रूरत है? क्यों न मैं एक ही बार में दोनों समय के लिए चावल इकट्ठा कर लूँ?' और उसने ऐसा ही किया। तभी एक दूसरा प्राणी उसके पास आया और बोला: 'चलो, चावल इकट्ठा करने चलते हैं।' 'कोई ज़रूरत नहीं, मेरे मित्र, मैंने दोनों समय के लिए पर्याप्त चावल इकट्ठा कर लिया है।' तब दूसरे ने भी उसका अनुसरण करते हुए एक बार में दो दिन के लिए पर्याप्त चावल इकट्ठा किया और कहा: 'यह लगभग पर्याप्त होगा।' तभी एक और प्राणी आया और उस दूसरे से बोला: 'चलो, चावल इकट्ठा करने चलते हैं।' 'कोई ज़रूरत नहीं, मेरे मित्र, मैंने दो दिन के लिए पर्याप्त चावल इकट्ठा कर लिया है।' लेकिन जब उन प्राणियों ने चावल का भंडार बनाया और उसी पर जीवन यापन किया, तो भूसी और दाने चावल को ढकने लगे, और जहाँ से चावल काटा गया था, वहाँ फिर से नहीं उगा, और कटी हुई जगह दिखाई देने लगी, और चावल अलग-अलग गुच्छों में उगने लगा।

फिर वे प्राणी एकत्रित होकर विलाप करने लगे: 'हमारे बीच दुष्टता का मार्ग व्याप्त हो गया है: आरंभ में हम बुद्धि से निर्मित थे, आनंद में लिप्त थे... और चावल अलग-अलग गुच्छों में उगता है। अतः अब हम चावल को सीमांकित खेतों में विभाजित कर दें।' और उन्होंने ऐसा ही किया।

फिर, लालची स्वभाव के वसेत्था ने अपनी ज़मीन की रखवाली करते हुए, बिना अधिकार के दूसरी ज़मीन ले ली और उसका लाभ उठाया। तब लोगों ने उसे पकड़ लिया और कहा, 'तूने दूसरे की ज़मीन लेकर बहुत बुरा काम किया है! फिर कभी ऐसा मत करना!' उसने कहा, 'मैं नहीं करूँगा', लेकिन उसने वही काम दूसरी और तीसरी बार भी किया। उसे फिर पकड़ा गया और फटकारा गया, और कुछ ने उसे मुक्कों से, कुछ ने पत्थरों से और कुछ ने लाठियों से मारा। इस प्रकार, वसेत्था ने बिना अधिकार के ज़मीन लेकर, निंदा करके, झूठ बोलकर और दंड देकर इन सब का जन्म किया।

तब वे सब मिलकर अपने बीच उत्पन्न हुई इन बुराइयों पर शोक करने लगे: बिना दिए वस्तुएँ लेना, निंदा करना, झूठ बोलना और दंड देना। उन्होंने सोचा, 'मान लो कि हम किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करें जो उचित क्रोध प्रकट करे, जो निंदा के पात्र हों उनकी निंदा करे और जो निर्वासन के पात्र हों उन्हें निर्वासित कर दे! और बदले में हम उसे चावल का एक हिस्सा दें।' अतः वे अपने बीच के सबसे सुंदर, सबसे आकर्षक, सबसे प्रसन्न और योग्य व्यक्ति के पास गए और उससे चावल के एक हिस्से के बदले में उनके लिए यह करने का अनुरोध किया, और वह सहमत हो गया।

"'जनता की पसंद' महा-सम्मत का अर्थ है, जो कि पहला नियमित उपाधि है जिसे प्रचलन में लाया गया। 'खेतों का स्वामी' क्षत्रिय का अर्थ है, जो कि दूसरी उपाधि है। और 'धर्म से दूसरों को प्रसन्न करने वाला' राजा का अर्थ है, जो कि तीसरी उपाधि है जिसे प्रचलन में लाया गया। इस प्रकार, वसेत्थ, प्राचीन उपाधियों के अनुसार, क्षत्य वर्ग की उत्पत्ति हुई। वे इन्हीं प्राणियों में से उत्पन्न हुए, जो हमारे जैसे ही हैं, कोई भिन्न नहीं, और धर्म के अनुसार ही, अन्यथा नहीं।"

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

तब उनमें से कुछ प्राणियों ने सोचा, 'मनुष्यों में बुरी बातें फैल गई हैं, जैसे कि बिना माँगे लेना, निंदा करना, झूठ बोलना, दंड देना और देश निकाला देना। हमें बुरी और अस्वास्थ्यकर बातों को त्याग देना चाहिए।' और उन्होंने ऐसा ही किया। 'उन्होंने बुरी और अस्वास्थ्यकर बातों को त्याग दिया' ब्राह्मण का अर्थ है, जो ऐसे लोगों के लिए शुरू की गई पहली नियमित उपाधि है। उन्होंने वन क्षेत्रों में पत्तों की कुटियाएँ बनाईं और उनमें ध्यान किया। धुआँ छोड़ी हुई आग बुझने पर, मूसल को एक तरफ रखकर, सुबह और शाम के भोजन के लिए भिक्षा एकत्र करके, वे भोजन की तलाश में किसी गाँव, कस्बे या राजनगर में चले गए, और फिर ध्यान करने के लिए अपनी पत्तों की कुटियाओं में लौट आए। लोगों ने यह देखा और ध्यान दिया कि वे कैसे ध्यान करते थे। 'वे ध्यान करते हैं' झयका का अर्थ है, जो शुरू की गई दूसरी नियमित उपाधि है।

"हालाँकि, उनमें से कुछ प्राणी, पत्तों की झोपड़ियों में ध्यान करने में असमर्थ होने के कारण, कस्बों और गाँवों के आसपास बस गए और पुस्तकें संकलित करने लगे। लोगों ने उन्हें ऐसा करते देखा, ध्यान न करते हुए। 'अब ये ध्यान नहीं करते' यही अज्जयाक का अर्थ है, जो तीसरा नियमित उपाधि है जिसे प्रचलन में लाया गया। उस समय इसे निम्न पदनाम माना जाता था, परन्तु अब यह उच्चतर है। इस प्रकार, वसेत्थ, प्राचीन उपाधियों के अनुसार ब्राह्मण वर्ग की उत्पत्ति है। उनकी उत्पत्ति इन्हीं प्राणियों में से हुई, जो उन्हीं के समान थे, उनसे भिन्न नहीं थे, और धम्म के अनुसार ही हुई, अन्यथा नहीं।"

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

"और फिर, वसेत्था, उनमें से कुछ प्राणियों ने मृत्यु के बाद विभिन्न व्यवसाय अपना लिए, और यह 'विभिन्न' शब्द वेस्सा का अर्थ है, जो ऐसे लोगों के लिए प्रचलित उपाधि बन गई। इस प्रकार, प्राचीन उपाधियों के अनुसार, वेस्सा वर्ग की उत्पत्ति हुई। उनकी उत्पत्ति इन्हीं प्राणियों में से हुई थी..."

और फिर, वसेत्था, जो प्राणी बचे रहे, वे शिकार करने चले गए। 'वे नीच हैं जो शिकार करके जीते हैं', और यही सुद्दा का अर्थ है, जो ऐसे लोगों के लिए सामान्य उपाधि बन गई। इस प्रकार, प्राचीन उपाधियों के अनुसार सुद्दा वर्ग की उत्पत्ति हुई। उनकी उत्पत्ति इन्हीं प्राणियों में से हुई थी...

"और फिर, वसेत्था, ऐसा हुआ कि कोई क्षत्रिय अपने धर्म से असंतुष्ट होकर गृहस्थ जीवन छोड़कर तपस्वी जीवन में चला गया, यह सोचकर कि 'मैं तपस्वी बनूँगा।' एक ब्राह्मण ने भी ऐसा ही किया, एक वेस ने भी ऐसा ही किया, और एक शुद्ध ने भी। और इन्हीं चार वर्गों से तपस्वियों का वर्ग अस्तित्व में आया। उनकी उत्पत्ति इन्हीं प्राणियों में से हुई, जो उन्हीं के समान थे, उनसे भिन्न नहीं थे, और धर्म के अनुसार ही हुई, अन्यथा नहीं।"

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

और, वसेत्था, एक क्षत्रिय जिसने शरीर, वाणी और विचार से बुरा जीवन व्यतीत किया है, और जिसके विचार गलत हैं, ऐसे गलत विचारों और कर्मों के फलस्वरूप, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन के समय, वह हानि की अवस्था में, दुर्भाग्य से, पतन की अवस्था में, नरक की अवस्था में पुनर्जन्म लेगा। यही बात ब्राह्मण, वेस या शुद्ध के लिए भी लागू होती है।

इसी प्रकार, एक क्षत्रिय जिसने शरीर, वाणी और विचार से अच्छा जीवन व्यतीत किया हो और जिसका दृष्टिकोण सही हो, वह अपने सही दृष्टिकोण और कर्मों के फलस्वरूप, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन होने पर, स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लेगा। ब्राह्मण, वेस या शुद्ध भी इसी प्रकार पुनर्जन्म लेंगे।

और, वसेत्था, इन चारों जातियों में से जो भी भिक्षु बनकर अरहंत बन जाता है, जिसने विकारों का नाश किया हो, जो करना आवश्यक था वह किया हो, बोझ को त्याग दिया हो, सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया हो, अस्तित्व के बंधन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया हो और सर्वोच्च अंतर्दृष्टि से मुक्त हो गया हो, उसे धम्म के अनुसार उनमें श्रेष्ठ घोषित किया जाता है, अन्यथा नहीं।

"धम्म इस जीवन में और अगले जीवन में भी लोगों के लिए सबसे अच्छी चीज है।"

"वसेत्था, यह श्लोक ब्रह्मा सनंकुमार ने कहा था:

"'वंश को महत्व देने वालों में खत्तिया श्रेष्ठ है; ज्ञान और आचरण में श्रेष्ठ वह है जो देवताओं और मनुष्यों में सबसे अच्छा है।'

"यह श्लोक सही ढंग से गाया गया था, गलत ढंग से नहीं; सही ढंग से बोला गया था, गलत ढंग से नहीं; लाभ से जुड़ा हुआ था, असंबद्ध नहीं। मैं भी यही कहता हूँ, वसेत्था:

"वंश को महत्व देने वालों में खत्तिया श्रेष्ठ है; ज्ञान और आचरण में श्रेष्ठ वह व्यक्ति देवताओं और मनुष्यों में भी श्रेष्ठ है।"

इस प्रकार भगवान ने कहा, और वसेत्था और भारद्वाज उनके शब्दों से प्रसन्न और आनंदित हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.5 संपासदनिया सुत्त (डीएन28)

मैंने ऐसा सुना है:

1. एक समय भगवान नालंदा के पास पावारिका आम के वन में ठहरे हुए थे। 1. पूज्य सारिपुत्त उस स्थान पर आए जहाँ भगवान थे, और उन्हें प्रणाम करके आदरपूर्वक उनके पास बैठ गए और बोले: — हे भगवान! मुझे भगवान पर ऐसी आस्था है कि मुझे लगता है कि न कभी कोई ऐसा था, न कभी होगा, और न ही वर्तमान में कोई ऐसा है जो उच्चतर ज्ञान के मामले में भगवान से बड़ा और बुद्धिमान हो। 2

सारिपुत्त, तेरे मुख के शब्द कितने महान और साहसी हैं! तूने जो कहा है, उसमें तूने सचमुच सिंह की गर्जना की है। निश्चय ही तू अतीत के उन सभी महानुभावों को जानता है जो आरहंत, प्रबुद्ध पुरुष रहे हैं, तू उनके मन को अपने मन से समझता है, और उनके आचरण, उनके सिद्धांतों, उनकी बुद्धि, उनके जीवन शैली और उनके द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता से अवगत है।

ऐसा नहीं है, भगवान।

तो फिर तुमने उन सभी महानुभावों को जान लिया है जो आने वाले युगों में अरहंत, ज्ञानी होंगे, जिनके मन को तुम अपने मन से समझते हो और उनके आचरण, सिद्धांतों, ज्ञान, जीवन शैली और स्वतंत्रता के बारे में जानते हो?

ऐसा नहीं है, भगवान।

लेकिन कम से कम तब, सारिपुत्त, तुम जानते हो कि मैं अब अरहंत हूँ, एक प्रबुद्ध व्यक्ति हूँ, जो अपने मन को तुम्हारे मन के साथ जोड़ता है, और जानता हूँ कि इस प्रकार है भगवान का आचरण, इस प्रकार है उनका ज्ञान, इस प्रकार है उनका जीवन-मार्ग, और इस प्रकार की स्वतंत्रता उन्होंने प्राप्त की है?

ऐसा नहीं है, भगवान।

हे सारिपुत्त, तुम्हें अरहंतों, ज्ञानी पुरुषों, भूतकाल, भविष्यकाल या वर्तमान के विषय में कोई ज्ञान नहीं है। फिर तुम्हारे शब्द इतने भव्य और साहसी क्यों हैं? तुमने इस सर्वव्यापी सिंह की गर्जना क्यों की है?

2. हे भगवान! मुझे अतीत, भविष्य और वर्तमान के अरहंतों, प्रबुद्धों के मन के विषय में कोई ज्ञान नहीं है। हे भगवान, मैं केवल नॉर्म के वंश को जानता हूँ। [101] हे भगवान, जैसे किसी राजा का कोई सीमावर्ती नगर हो, जिसकी नींव, प्राचीर और मीनारें सुदृढ़ हों और जिसमें केवल एक ही द्वार हो। और उस द्वार पर एक विवेकशील, चतुर और बुद्धिमान रक्षक हो, जो सभी अजनबियों को रोककर केवल परिचितों को ही प्रवेश दे। और वह नगर के चारों ओर पहरेदारी करते हुए प्राचीरों की सभी दरारों और जोड़ों को इतनी बारीकी से न देख पाए कि उसे पता चल जाए कि बिल्ली जैसी छोटी सी चीज भी कहाँ से निकल सकती है। वह सोचेगा: चाहे कोई भी भारी-भरकम प्राणी इस नगर में प्रवेश करे या बाहर निकले, वे सभी केवल इसी द्वार से होकर गुजरते हैं। हे भगवान, मैं नॉर्म के वंश को केवल इसी प्रकार जानता हूँ। अतीत के लंबे युगों में जो अरहंत, परम ज्ञानी थे, उन्होंने पाँच बाधाओं को दूर करके, बुद्धि से मन के विकारों को दबाकर, ध्यान स्थापित करने के चार अभ्यासों में दृढ़ निश्चय के साथ, ज्ञान की सात शाखाओं में पूर्णतः अभ्यास करके, पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। जो भविष्य के लंबे युगों में अरहंत, परम ज्ञानी होंगे, वे भी ऐसा ही करेंगे। और हे भगवान, जो अब परम ज्ञानी अरहंत हैं, उन्होंने भी ऐसा ही किया है।

हे भगवान, एक दिन ऐसा हुआ कि मैं परम पूज्य परमेश्वर के पास नियम की व्याख्या सुनने आया था। परम पूज्य परमेश्वर ने मुझे सिद्धांत सिखाया, प्रत्येक बिंदु पिछले बिंदु से अधिक उत्कृष्ट था, प्रकाश और अंधकार की वस्तुओं की तुलना करते हुए। अब जब परम पूज्य परमेश्वर मुझे इस प्रकार नियम सिखा रहे थे, तब मैंने उस नियम को समझते हुए, सिद्धांतों में से एक विशेष सिद्धांत को पूर्ण किया, अर्थात् गुरु में विश्वास। और मैंने अपने हृदय में स्वीकार किया: परम पूज्य परमेश्वर सर्वोच्च रूप से जागृत हैं; उनके द्वारा नियम अच्छी तरह से सिखाया गया है; यह क्रम धन्य है।

3. हे भगवान, यह भी अद्वितीय है: जिस प्रकार से भगवान धार्मिक सिद्धांतों के नियम का उपदेश देते हैं; मेरा तात्पर्य है ध्यान स्थापित करने के चार अभ्यास, चार सर्वोच्च प्रयास, संतत्व के चार मार्ग, पाँच नैतिक शक्तियाँ, पाँच बल, ज्ञान की सात शाखाएँ, आर्य अष्टांगिक मार्ग [जो यह दर्शाता है कि] एक भिक्षु मादक पदार्थों का नाश करके इस जीवन में ही बुद्धि और अंतर्ज्ञान की स्वस्थ और निर्मल मुक्ति को जान और अनुभव कर सकता है, और इस प्रकार उसे प्राप्त करके उसमें स्थिर रह सकता है। हे भगवान, धार्मिक सिद्धांतों के विषय में यह अद्वितीय है। यह सब भगवान को ज्ञात है, और उनके ज्ञान से परे कुछ भी समझना शेष नहीं है। न ही कोई दूसरा, चाहे वह संन्यासी हो या ब्राह्मण, भगवान से अधिक महान और बुद्धिमान है, अर्थात् धार्मिक सिद्धांतों के विषय में।

4. हे भगवान, यह भी अतुलनीय है, जिस प्रकार से परमेश्वर हमारी इंद्रिय-अनुभव के संबंध में नियम सिखाते हैं, — कि कैसे इंद्रियों के छह क्षेत्र व्यक्तिपरक और वस्तुनिष्ठ हैं1: दृष्टि और दृश्य वस्तुएँ, श्रवण और ध्वनियाँ, गंध और सुगंध, स्वाद और स्वादयुक्त वस्तुएँ, स्पर्श और स्पर्शनीय वस्तुएँ, मन और मानसिक विषय। हे भगवान, हमारी इंद्रिय-अनुभव के संबंध में यह अतुलनीय है। परमेश्वर यह

सब समझते हैं, और जो वे समझते हैं उससे परे समझने के लिए कुछ भी नहीं है। और न ही कोई दूसरा है, [103] चाहे वह संन्यासी हो या ब्राह्मण, जो हमारी इंद्रिय-अनुभव के संबंध में परमेश्वर से अधिक महान और बुद्धिमान हो।2

5. हे भगवान, यह भी अतुलनीय है: जिस प्रकार से परम पूज्य भगवान पुनर्जन्म के समय अवतरण के नियम का उपदेश देते हैं: अवतरण के चार तरीके हैं: पहला तरीका है ...

6. हे भगवान, यह भी अतुलनीय है, जिस प्रकार से परम पूज्य भगवान मन की जानकारी प्राप्त करने के चार तरीके बताते हैं: — मन की जानकारी प्राप्त करने का तरीका इस प्रकार है: — एक तरीका प्रत्यक्ष संकेत द्वारा यह कहकर प्रकट करना है कि "तुम ऐसा सोच रहे हो, तुम्हारे मन में ऐसा है, तुम्हारा विचार ऐसा है।" जितना भी प्रकट किया जाए, बात वही रहती है, अन्यथा नहीं। यह मन की जानकारी प्राप्त करने का पहला तरीका है। दूसरा तरीका यह है कि मन की जानकारी प्रत्यक्ष संकेत द्वारा नहीं, बल्कि मनुष्यों या अन्य मनुष्यों (यक्ष, पिशाच) या देवताओं द्वारा उच्चारित ध्वनि को सुनकर प्रकट की जाती है, और कहा जाता है: — "तुम ऐसा सोच रहे हो, तुम्हारे मन में ऐसा है, तुम्हारा विचार ऐसा है।" जितना भी प्रकट किया जाए, बात वही रहती है, अन्यथा नहीं। यह दूसरा तरीका है। फिर, विचारों का प्रकटीकरण न तो किसी दृश्य संकेत से होता है, न ही मनुष्यों, गैर-मनुष्यों या देवताओं द्वारा उत्पन्न ध्वनि से2 [104], बल्कि बुद्धिमानी और जानबूझकर उत्पन्न तर्कसंगत ध्वनि से होता है।3 और कोई कहता है: तुम ऐसा सोच रहे हो, इत्यादि [जैसा पहले]। यह प्रकट करने का तीसरा तरीका है। फिर, विचारों का प्रकटीकरण इनमें से किसी भी तरीके से नहीं होता, बल्कि जब एकाग्रता प्राप्त हो जाती है, बिना इंद्रियों के ध्यान लगाए, तब व्यक्ति सहज रूप से दूसरे के विचारों को जान लेता है। और कोई कहता है: इस भले व्यक्ति की मानसिक गतिविधि के उद्देश्य के अनुसार ही वह आगे ऐसे-ऐसे विचार पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। और जितना प्रकट किया जाता है, उतना ही होता है, अन्यथा नहीं। यह चौथा तरीका है। हे भगवान, दूसरे के मन को प्रकट करने के तरीकों के विषय में यह अतुलनीय है।1

8. हे भगवान, परमेश्वर जिस प्रकार से व्यक्तियों के वर्गीकरण के नियम का उपदेश देते हैं, वह अतुलनीय है: व्यक्तियों के सात वर्ग हैं, अर्थात्: दोनों दिशाओं से मुक्त, अंतर्दृष्टि से मुक्त, शारीरिक अनुभव रखने वाले, दृष्टि प्राप्त करने वाले, विश्वास से मुक्त, ज्ञान के अनुयायी, विश्वास के अनुयायी। हे भगवान, व्यक्तियों के इन वर्गों के लिए ये शब्द अतुलनीय हैं।

9. हे भगवान, जिस प्रकार से परम पूज्य [106] प्रयास के विषय में नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है:— कि ज्ञानोदय के ये सात कारक हैं, अर्थात्, सजगता, सिद्धांत का परीक्षण, ऊर्जा, उत्साह, शांति, एकाग्रता और समभाव। हे भगवान, प्रयास के विषय में यह अतुलनीय है।3

10. हे भगवान, परमेश्वर ने प्रगति की दर के संबंध में जिस प्रकार से शिक्षा दी है, वह अतुलनीय है: प्रगति की चार दरें होती हैं, अर्थात्, जब प्रगति कठिन हो और अंतर्ज्ञान धीमा हो; जब प्रगति कठिन हो लेकिन अंतर्ज्ञान शीघ्रता से प्राप्त हो; जब प्रगति सरल हो लेकिन अंतर्ज्ञान धीमा हो; और जब प्रगति सरल हो और अंतर्ज्ञान शीघ्रता से प्राप्त हो। प्रथम स्थिति में, कठिनाई और धीमेपन दोनों के कारण प्रगति को खराब माना जाता है; दूसरी स्थिति में, कठिनाई के कारण प्रगति को खराब माना जाता है; तीसरी स्थिति में, धीमेपन के कारण प्रगति को खराब माना जाता है; चौथी स्थिति में, सरलता और शीघ्रता दोनों के कारण प्रगति को उत्कृष्ट माना जाता है। हे भगवान, प्रगति की दरों के संबंध में यह अतुलनीय है।

11. हे भगवान, परमेश्वर जिस प्रकार से वाणी में आचरण का नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है: — किसी को न केवल झूठ से संबंधित वाणी का प्रयोग नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने मामले को जीतने के प्रयास में निंदात्मक, अपमानजनक और विवादात्मक वाणी से भी बचना चाहिए, और सदा कोमल, ज्ञानवर्धक और अनमोल वचन उचित समय पर बोलने चाहिए। हे भगवान, वाणी में आचरण के विषय में यह अतुलनीय है।

12. हे भगवान, मनुष्य के नैतिक आचरण के विषय में परमेश्वर जिस प्रकार शिक्षा देते हैं, वह अतुलनीय है: — ऐसा मनुष्य सत्यनिष्ठ और विश्वासयोग्य होना चाहिए, छल-कपट करने वाला नहीं, [पैसे के लिए पवित्र वचनों का पाठ करने वाला] नहीं, भविष्यवक्ता नहीं, भूत-प्रेत भगाने वाला नहीं, [107] लाभ पर लाभ बढ़ाने का भूखा नहीं, अपनी इंद्रियों के द्वारों के प्रति सतर्क, संयमी आहार वाला, शांतिदूत, सतर्कता में समर्पित, अडिग, प्रयास करने में सक्षम, चिंतनशील, सचेत, शालीन वार्तालाप करने वाला, 3 साहसपूर्वक चलने, सहन करने और सोचने वाला, सांसारिक सुखों के लिए लालची नहीं, बल्कि सावधान और बुद्धिमान। हे भगवान, मनुष्य के नैतिक आचरण के विषय में यह अतुलनीय है।

13. इसके अतिरिक्त, हे भगवान, जिस प्रकार से परम पूज्य ईश्वर शिक्षा प्राप्त करने के तरीकों के संबंध में नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है, अर्थात् ऐसे चार तरीके हैं: (i) परम पूज्य ईश्वर अपने व्यवस्थित चिंतन की विधि से जानते हैं कि कोई व्यक्ति, जब उसे

सिखाई गई बातों का पालन करता है, तो तीन बंधनों के पूर्ण नाश से वह सफलता प्राप्त करने वाला बन जाएगा, भविष्य में विपत्तियों से बच जाएगा और निश्चित रूप से ज्ञान प्राप्त करेगा; (2) तीन बंधनों के पूर्ण नाश से, उसके जुनून, घृणा और भ्रम इतने कम हो जाएंगे कि वह एक बार लौटने वाला बन जाएगा और इस दुनिया में एक बार लौटने से ही उसके सारे दुख दूर हो जाएंगे; (3) पांच अन्य बंधनों के पूर्ण नाश से, वह देवलोक में पुनर्जन्म लेगा, वहां पूर्णतः विलीन हो जाएगा और फिर कभी वापस नहीं लौटेगा; (4) मादक पदार्थों के नाश से वह इस जीवन में ही बुद्धि और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को जान और अनुभव कर लेगा तथा उसमें स्थिर रहेगा। हे भगवान, शिक्षा प्राप्त करने के इस तरीके में अतुलनीयता है।

14. हे भगवान, परमेश्वर जिस प्रकार से किसी व्यक्ति को प्राप्त होने वाली मुक्ति की मात्रा के ज्ञान के संबंध में नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है। क्योंकि परमेश्वर स्वयं कारण का ध्यान रखते हुए जानते हैं कि कोई व्यक्ति धारा-प्राप्तकर्ता, एक बार लौटने वाला, न लौटने वाला या अरहंत बनेगा। हे भगवान, किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जाने वाली मुक्ति की मात्रा के ज्ञान के संबंध में यह अतुलनीय है।

15. इसके अतिरिक्त, हे भगवान, जिस प्रकार से परम पूज्य परमेश्वर शाश्वतवाद के सिद्धांतों के संबंध में मानदंड सिखाते हैं, वह अतुलनीय है, अर्थात्, ये तीन सिद्धांत हैं4 :

(i) कोई संन्यासी या ब्राह्मण उत्साह, परिश्रम, लगन, गंभीरता और गहन चिंतन के माध्यम से ऐसी भावविभोर अवस्था में पहुँच जाता है कि हृदयविभोर होकर वह अपने बीते जन्मों के विभिन्न निवास स्थानों (या जन्मों) को याद करता है—चाहे एक जन्म में हो, दो में हो, तीन में हो, चार में हो, पाँच में हो, दस में हो, बीस में हो, तीस में हो, चालीस में हो, पचास में हो, सौ में हो, हज़ार में हो, एक लाख में हो, या कई सौ, कई हज़ार, कई लाख जन्मों में हो—और इस प्रकार कहता है कि 'वहाँ मेरा ऐसा नाम था, मैं ऐसे वंश और वर्ग का था, ऐसा भोजन करता था, ऐसे सुख-दुख का अनुभव करता था [109], मेरी आयु इतनी थी। और जब मैं वहाँ से गिरा तो यहाँ पुनर्जन्म हुआ':— इस प्रकार वह अपने बीते जन्मों के विभिन्न निवास स्थानों को उनके स्वरूप और विवरण सहित याद करता है। और वह मन ही मन कहता है: 'बीते समय को मैं जानता हूँ, कि संसार विकास की प्रक्रिया में था या विघटन की। परन्तु आने वाले समय को मैं नहीं जानता, कि संसार का विकास होगा या विघटन। आत्मा और संसार दोनों शाश्वत हैं, किसी नई चीज को जन्म नहीं देते, पर्वत शिखर की तरह स्थिर हैं, एक दृढ़ स्तंभ की तरह स्थिर हैं; और यद्यपि ये सजीव प्राणी जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, एक अवस्था से गिरकर दूसरी में जन्म लेते हैं, फिर भी केवल वही है जो शाश्वत और सर्वदा बना रहता है।' यह शाश्वतवाद का पहला सिद्धांत है।

(2) हे भगवान, फिर कोई संन्यासी या ब्राह्मण, उसी विधि से, अतीत में अपने निवास स्थानों को और भी अधिक कालखंडों के लिए याद करता है, जैसे कि जगत के निर्माण और विनाश के एक, दो, तीन, चार, पाँच, दस या बीस युग्म। ... और वह भी चिंतन करता है: 'बीते हुए समय को मैं जानता हूँ, जगत के निर्माण और विनाश दोनों को, परन्तु आने वाले समय को नहीं जानता, [110] कि जगत का निर्माण होगा या विनाश। आत्मा और जगत दोनों शाश्वत हैं, किसी नई चीज को जन्म नहीं देते, पर्वत शिखर के समान स्थिर हैं, एक दृढ़ स्तंभ के समान स्थिर हैं; और यद्यपि ये सजीव प्राणी जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, एक अवस्था से गिरकर दूसरी में जन्म लेते हैं, फिर भी केवल वही है जो सदा-सदा के लिए है।' यह दूसरा शाश्वतवादी सिद्धांत है।

(3) हे भगवान, फिर कोई संन्यासी या ब्राह्मण, उसी विधि से, अतीत में अपने निवास स्थानों को और भी अधिक कालखंडों के लिए, यहाँ तक कि चालीस विश्व-प्रणालियों के विकास और विघटन तक, याद करता है। और वह भी वही निष्कर्ष निकालता है। यह तीसरा शाश्वतवादी सिद्धांत है।

हे भगवान, शाश्वतवादी सिद्धांतों के संबंध में यह बात अतुलनीय है।

16. हे भगवान, जिस प्रकार से परमेश्वर पूर्व जन्मों के ज्ञान के विषय में नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है: कैसे कोई संन्यासी या ब्राह्मण, लगन, परिश्रम, परिश्रम, गंभीरता और गहन चिंतन के द्वारा, मन की ऐसी तल्लीनता तक पहुँच जाता है कि चिंतन में लीन होकर वह बीते समय के अपने विभिन्न जन्मों को याद करता है, अर्थात् एक जन्म या अनेक जन्मों में [111] यहाँ तक कि असंख्य जन्मों और जन्मों तक: — 'वहाँ मेरा ऐसा नाम, ऐसा वंश, ऐसा वर्ग था, मेरा ऐसा पालन-पोषण हुआ, मैंने ऐसे और इतने समय तक सुख-दुख का अनुभव किया।' [वह याद करता है कि] वहाँ से मृत्यु होने पर उसका पुनर्जन्म ऐसे दूसरे स्थान पर हुआ, जहाँ वह ऐसा था, ऐसी स्थिति में था; वहाँ से मृत्यु होने पर उसका यहाँ पुनर्जन्म हुआ। इस प्रकार वह बीते समय में अपने विभिन्न निवास स्थानों को उनके तौर-तरीकों और विवरणों के साथ याद करता है।

हे भगवान, कुछ ऐसे देवता हैं जिनका जीवनकाल न तो गिनकर और न ही गणना करके निर्धारित किया जा सकता है। फिर भी, चाहे वे शारीरिक रूप में हों या निराकार रूप में, चाहे वे प्रत्यक्षदर्शी हों, प्रत्यक्षदर्शी न हों या दोनों में से कोई भी न हों, उनके पूर्व निवास स्थान की स्मृति उनके स्वरूप और विवरण दोनों में बनी रहती है। हे भगवान, ऐसी स्मृतियों के ज्ञान के संदर्भ में यह ज्ञान अतुलनीय है।

17. हे भगवान, जिस प्रकार से परमेश्वर प्राणियों के मृत्यु और पुनर्जन्म के ज्ञान के नियम का उपदेश देते हैं, वह अतुलनीय है। इस प्रकार, कोई संन्यासी या ब्राह्मण, उपरोक्त साधनों द्वारा, मन की ऐसी परमानंद अवस्था प्राप्त कर लेता है कि चिंतन में लीन होकर वह मनुष्यों की दृष्टि से परे, शुद्ध देव-दृष्टि से प्राणियों को उनकी मृत्यु और पुनर्जन्म के क्रम में देखता है; वह प्राणियों को नीच या श्रेष्ठ, कुरूप या प्रसन्न, सुखी या दुखी, उनके कर्मों के अनुसार जन्म लेते हुए पहचानता है: अमुक-अमुक योग्य जन, कर्म, वचन और विचार से दुष्ट1, श्रेष्ठों की निंदा करने वाले2, गलत विचार रखने वाले, गलत विचारों से उत्पन्न कर्म भोगने वाले, शरीर के विनाश के बाद, किसी दुखद या कष्टमय अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं। परन्तु अमुक-अमुक योग्य जन, जो कर्म, वचन और विचार से भले हैं, श्रेष्ठों की निंदा नहीं करते, सही विचार रखते हैं, सही विचारों से फलदायी कर्म प्राप्त करते हैं, वे शरीर के नष्ट होने पर मृत्यु के बाद स्वर्ग में किसी सुखमय अवस्था में पुनर्जन्म लेते हैं। [112] इस प्रकार, मनुष्य की दृष्टि से परे, शुद्ध देव-दृष्टि से वे प्राणियों को मरते और पुनर्जन्म लेते हुए देखते हैं। हे भगवान, मृत्यु और पुनर्जन्म के विषय में यह ज्ञान अतुलनीय है।

18. हे भगवान, जिस प्रकार से परम पूज्य भगवान अलौकिक शक्ति के गुणों के संबंध में नियम सिखाते हैं, वह अतुलनीय है। वे दो प्रकार की शक्तियाँ बताते हैं, अर्थात्: (i) वह अलौकिक शक्ति जो मानसिक मादक पदार्थों और सांसारिक उद्देश्यों से संबंधित होती है। इसे नीच शक्ति कहते हैं। (2) वह अलौकिक शक्ति जो इनसे संबंधित नहीं होती। इसे श्रेष्ठ शक्ति कहते हैं। हे भगवान, पहली प्रकार की, नीच अलौकिक शक्ति क्या है? हे भगवान, जब कोई संन्यासी या ब्राह्मण उपर्युक्त साधनों द्वारा मन की ऐसी परमानंद अवस्था प्राप्त कर लेता है कि वह चिंतन में लीन होकर अलौकिक शक्ति के अनेक गुणों का आनंद लेने में सक्षम हो जाता है: — एक रूप से अनेक रूपों में, अनेक रूपों से एक रूप में; दृश्य रूप से अदृश्य रूप में; वह किसी दीवार, प्राचीर या पर्वत के दूसरी ओर हवा में सहजता से पार हो जाता है; वह ठोस भूमि में जल में सहजता से ऊपर-नीचे प्रवेश कर जाता है; वह जल पर बिना उसे विभाजित किए ऐसे चलता है मानो ठोस भूमि पर चल रहा हो; वह आकाश में पालथी मारकर ऐसे विचरण करता है जैसे कोई पक्षी पंख फैलाए उड़ रहा हो; वह चंद्रमा और सूर्य को भी, जो रहस्यमयी शक्ति और सामर्थ्य से परिपूर्ण हैं, अपने हाथों से स्पर्श और अनुभव करता है; वह शरीर धारण करके भी ब्रह्मा के स्वर्ग तक पहुँच जाता है। हे भगवान, यही वह अलौकिक शक्ति है, जो मानसिक मादक पदार्थों और सांसारिक उद्देश्यों से जुड़ी है, जिसे नीच कहा जाता है। और हे भगवान, दूसरा गुण क्या है, जिसे श्रेष्ठ कहा जाता है? यह वह अवस्था है जब एक भिक्षु, यदि चाहे तो, घृणित चीजों के बीच भी घृणा से अचेतन रह सकता है; या जो घृणित और विपरीत दोनों हैं उनके बीच भी घृणा से अचेतन रह सकता है; या घृणित और विपरीत दोनों के बीच भी घृणा से सचेतन रह सकता है; या घृणित और विपरीत दोनों से बचते हुए, उनके प्रति सजग और समझदार रहते हुए उदासीन रह सकता है। हे भगवान, यही वह अलौकिक शक्ति है जो मानसिक मादक पदार्थों या सांसारिक उद्देश्यों के साथ असंगत है, और जिसे श्रेष्ठ कहा जाता है। हे भगवान, अलौकिक शक्ति के इस प्रकार में अतुलनीयता है।

इन सब बातों को परमपिता बुद्ध प्रारंभ से अंत तक भलीभांति जानते हैं। उनके ज्ञान से परे कुछ भी समझना शेष नहीं है; और न ही कोई दूसरा, चाहे वह संन्यासी हो या ब्राह्मण, परमपिता बुद्ध से श्रेष्ठ या बुद्धिमान है, अर्थात् अलौकिक शक्तियों के मामले में।

19. हे भगवान, जो कुछ भी विश्वास रखने वाले, ऊर्जा जुटाने वाले और दृढ़ रहने वाले कुलवासी द्वारा मानवीय दृढ़ता, ऊर्जा, प्रगति और धैर्य से प्राप्त किया जा सकता है, वह सब परमपिता परमेश्वर ने प्राप्त कर लिया है। क्योंकि, हे भगवान, परमपिता परमेश्वर न तो सांसारिक इच्छाओं, विशेषकर कामुकता, को आकर्षित करने वाली चीजों का नियमित अभ्यास करते हैं—जो नीच और मूर्तिपूजक मार्ग है, अयोग्य, निष्फल, सांसारिक बहुमत से संबंधित;—और न ही वे आत्म-यातना का नियमित अभ्यास करते हैं, जो कष्टदायक, अयोग्य और निष्फल है।1 परमपिता परमेश्वर अपनी इच्छा से, सहजता से और पूर्ण रूप से उस उच्च कोटि के सांसारिक सुख को प्राप्त करने में सक्षम हैं^ जो परमानंद की चार अवस्थाएँ प्रदान करती हैं।

हे भगवान, यदि कोई मुझसे पूछे: हे मित्र सारिपुत्त, क्या अतीत में कभी कोई ऐसा संन्यासी या ब्राह्मण हुआ है जो ज्ञान के मामले में भगवान से अधिक महान और बुद्धिमान हो? तो मैं कहूँगा नहीं। हे मित्र सारिपुत्त, क्या भविष्य में कोई ऐसा संन्यासी या ब्राह्मण होगा जो ज्ञान के मामले में भगवान से अधिक महान या बुद्धिमान हो? इस प्रकार पूछे जाने पर, मैं कहूँगा नहीं। [114] हे मित्र सारिपुत्त, क्या अब कोई ऐसा संन्यासी या ब्राह्मण है जो ज्ञान के मामले में भगवान से अधिक महान या बुद्धिमान हो? इस प्रकार पूछे जाने पर, मैं कहूँगा नहीं।

हे भगवान, यदि मुझसे पूछा जाए: हे मित्र सारिपुत्त, बीते समय में क्या हुआ है... क्या भविष्य में भी कोई ऐसा संन्यासी या ब्राह्मण होगा जो ज्ञान के मामले में भगवान बुद्ध के समान हो? तो मैं कहूंगा, हाँ। लेकिन यदि मुझसे पूछा जाए: क्या वर्तमान में कोई ऐसा संन्यासी या

ब्राह्मण है जो ज्ञान के मामले में भगवान बुद्ध के समान हो? तो मैं कहूंगा, नहीं। परम अरहंत बुद्ध, एक दूसरे से पहले और एक दूसरे के बाद: — यह असंभव और अभूतपूर्व है। ऐसा हो ही नहीं सकता।

हे भगवान, क्या मैं अपने प्रश्नकर्ताओं को इस प्रकार उत्तर देकर परम पूज्य ईश्वर के सिद्धांत का ही कथन कर रहा हूँ, न कि असत्य बातों से उनका गलत अर्थ निकाल रहा हूँ? क्या मैं सिद्धांत को प्रचलित परंपरा के अनुरूप ही बता रहा हूँ, और क्या इसमें किसी रूढ़िवादी विवादकर्ता को दोष का पात्र नहीं मिलेगा?

सच ही है, सारिपुत्त, यदि तुमसे ऐसे प्रश्न पूछे गए होते और तुमने इस प्रकार उत्तर दिया होता, तो तुमने मेरे सिद्धांत का ही प्रतिपादन किया होता, और तुमने असत्य बात से मेरा गलत अर्थ नहीं निकाला होता। तुमने सिद्धांत का प्रतिपादन नियम के अनुरूप किया है, और किसी भी रूढ़िवादी वाद-विवादकर्ता को इसमें दोष सिद्ध करने का अवसर नहीं मिलता।

20. जब उन्होंने ऐसा कहा, तब पूज्य उदयिन 2 ने परमेश्वर से कहा: हे भगवान, यह देखना कितना अद्‌भुत है, कितना आश्चर्यजनक है, कि तथागत कितने शांत, सौम्य और त्यागी हैं, जबकि वे इतने शक्तिशाली और बलवान होते हुए भी अपने गुणों का बखान नहीं करते! 3 यदि स्वतंत्र मतों के किसी भी अनुयायी को अपने भीतर ऐसा एक भी गुण दिखाई दे, तो वे इसके कारण ध्वज फहराएंगे। यह देखना कितना अद्‌भुत है, कितना आश्चर्यजनक है, कि तथागत कितने शांत, सौम्य और त्यागी हैं, जबकि वे इतने शक्तिशाली और बलवान होते हुए भी अपने गुणों का बखान नहीं करते!

इसलिए, उदयिन, इस बात को ध्यान में रखो कि यह सत्य है; और यदि स्वतंत्र सिद्धांतों का प्रचार करने वाले घुमंतू अपने भीतर ऐसा एक भी गुण पा लें, तो वे इसके ध्वज के नीचे फल-फूलेंगे। इस बात को ध्यान में रखो।

21. तब भगवान बुद्ध ने पूज्य सारिपुत्त को संबोधित करते हुए कहा: “इसलिए, सारिपुत्त, तुम्हें इस विषय पर भाइयों और बहनों, गृहस्थों और गृहस्थ बहनों, सभी को बार-बार प्रवचन देना चाहिए। तथागत के विषय में जो भी मूर्ख संदेह और संकोच रखते हैं, वे भी ऐसा प्रवचन सुनकर अपने संकोच और संदेह को दूर कर लेंगे।”

इस प्रकार पूज्य सारिपुत्त ने परमेश्वर के समक्ष अपनी आस्था प्रकट की। अतः उनकी इस स्वीकारोक्ति को "संतोषजनक आस्था" कहा जाता है।

यहां पांचवां सूत्र, 'संतोषजनक आस्था', समाप्त होता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.6 पसादिका सुत्त(डीएन 29)

1. मैंने ऐसा सुना है। एक समय भगवान शाक्यों के बीच, धनुर्धर नामक शाक्य परिवार के आम के बाग में स्थित [तकनीकी महाविद्यालय1] में निवास कर रहे थे। उस समय नथपुत्त निगंथ की पावा में मृत्यु हो गई थी। उनकी मृत्यु के बाद निगंथ आपस में फूट पड़े और दो गुटों में बँट गए, आपस में कलह और संघर्ष करते हुए, एक-दूसरे पर शब्दों के वार से प्रहार करते हुए: — तुम इस सिद्धांत और अनुशासन को नहीं समझते; परन्तु मैं समझता हूँ। तुम इसे कैसे समझोगे? तुम गलत हो; मैं सही हूँ! मैं मुद्दे की बात कर रहा हूँ; तुम नहीं! तुम वह बात सबसे आखिर में कहते हो जो सबसे पहले कही जानी चाहिए, और वह बात सबसे पहले जो सबसे आखिर में आनी चाहिए! जिस बात पर तुमने इतने समय तक विचार किया, वह पूरी तरह उलट गई! तुम्हारी चुनौती स्वीकार कर ली गई है; तुम गलत साबित हुए! अपनी राय त्याग दो, या हो सके तो खुद को इससे अलग कर लो! सचमुच, नाथपुत्त के अनुयायी निगंथ, मेरे विचार से, हत्या करने पर तुले हुए थे। यहाँ तक कि नाथपुत्त के अनुयायी श्वेत वस्त्रधारी गृहस्थ शिष्य भी निगंथों से भयभीत, विचलित और क्रोधित थे, क्योंकि उनका सिद्धांत और अनुशासन इतना विकृत था, मार्गदर्शन के लिए इतना अप्रभावी था, शांति के लिए इतना कम सहायक था, क्योंकि इसका प्रसार एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया था जो सर्वोच्च रूप से प्रबुद्ध नहीं था, और अब यह उनके समर्थन और संरक्षक के बिना ही नष्ट हो गया था।

2. अब चुंडा नामक नौसिखिए ने पावरी में वर्षा ऋतु बिताकर समफिगामा में पूज्य आनंद से मिलने आया और उन्हें प्रणाम करके उनके पास बैठ गया। बैठे-बैठे उसने पूज्य आनंद से कहा, “हे नफिथापुत्त, निगंथ का अभी-अभी पफिवा में निधन हो गया है। उनके मरने से निगंथ दो गुटों में बँट गए हैं और आपस में झगड़ते-झगड़ते और एक-दूसरे को चोट पहुँचाते हैं... यहाँ तक कि उनके शिष्य भी स्तब्ध हैं... उनकी शिक्षा और अनुशासन का इतना बुरा तरीके से प्रचार-प्रसार किया गया था... क्योंकि यह शिक्षा एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दी गई थी जो परम प्रबुद्ध नहीं था, और अब वे अपने सहारे से वंचित हो गए हैं और बिना किसी संरक्षक के रह गए हैं।”

तब पूज्य आनंद ने नौसिखिए चुंडा से कहा, "मित्र चुंडा, यह विषय भगवान के समक्ष रखने योग्य है। चलो हम उनके पास चलते हैं और उन्हें इसके बारे में बताते हैं।"

"बहुत बढ़िया, महोदय," नौसिखिए कुंडा ने उत्तर दिया।

3. अतः पूज्य आनंद और नवोदित चुंडा ने परम पूज्य को खोज निकाला और उन्हें प्रणाम करके उनके पास बैठ गए तथा उन्हें निगंथों के बारे में बताया।

4. (बुद्ध:) हे चुंडा, यहाँ हमारे पास एक ऐसा गुरु है जो परम प्रबुद्ध नहीं है, और एक ऐसा सिद्धांत है जो गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है, गलत तरीके से समझाया गया है, मार्गदर्शन के लिए अप्रभावी है, शांति के लिए सहायक नहीं है, और एक ऐसे व्यक्ति द्वारा दिया गया है जो परम प्रबुद्ध नहीं है। इसके अलावा, ऐसे सिद्धांत में, शिष्य न तो मुख्य सिद्धांत से निकलने वाले छोटे उपसिद्धांतों में महारत हासिल कर पाता है, न ही सही आचरण सीख पाता है, न ही उपदेशों के अनुसार चलता है, बल्कि वह निरंतर उस सिद्धांत से बचता रहता है। उससे कोई कह सकता है: हे मित्र, तुम्हें अपना सिद्धांत मिल गया है, और तुम्हें अपना अवसर भी मिल गया है। तुम्हारा गुरु परम प्रबुद्ध नहीं है; उसका सिद्धांत गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है, गलत तरीके से समझाया गया है, मार्गदर्शन के लिए अप्रभावी है, शांति के लिए सहायक नहीं है, और एक परम प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा नहीं दिया गया है। उस सिद्धांत में तुमने न तो मुख्य सिद्धांत से निकलने वाले छोटे उपसिद्धांतों में महारत हासिल की है, न ही सही आचरण सीखा है, न ही तुम उन उपसिद्धांतों के अनुसार चलते हो, बल्कि तुम तुम उस सिद्धांत से लगातार बचते रहते हो। इस प्रकार, कुंडा, वह शिक्षक और वह सिद्धांत दोनों ही निंदनीय सिद्ध होते हैं, परन्तु शिष्य प्रशंसनीय है।

अब जो कोई ऐसे शिष्य से कहे, "हे पूज्यवर, अपने गुरु द्वारा सिखाए और बताए गए सिद्धांतों का पालन कीजिए!" चाहे वह उकसाए, उकसाया जाए, या उकसाया जाए और उसके अनुसार अभ्यास करे, वे सब बहुत दोष उत्पन्न करते हैं। और क्यों? क्योंकि उनका सिद्धांत और अनुशासन गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है, गलत तरीके से सिखाया गया है, मार्गदर्शन के लिए अप्रभावी है, शांति के लिए सहायक नहीं है, और किसी परम प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा नहीं सिखाया गया है।

5. परन्तु चुंडा, विचार करो, जहाँ गुरु सर्वोत्कृष्ट न हो, और शिक्षा का निरूपण और उपदेश न हो, मार्गदर्शन के लिए निष्प्रभावी हो, शांति के लिए अनुकूल न हो, और शिक्षा किसी सर्वोत्कृष्ट न हो, फिर भी शिष्य उस शिक्षा का अनुसरण करता है, मुख्य शिक्षा के उपप्रवचनों का पालन करता है, सही आचरण ग्रहण करता है और उपदेशों के अनुसार चलते हुए सदा उस शिक्षा का पालन करता है। ऐसे में शिष्य से कहा जा सकता है: हे मित्र, तू अपने गुरु और अवसर दोनों में दुर्भाग्यशाली रहा है; तेरा गुरु सर्वोत्कृष्ट न हो; तेरी शिक्षा का निरूपण ठीक से न हो, इत्यादि; और तू सदा उस शिक्षा का पालन करता है। इन शब्दों से, चुंडा, गुरु, शिक्षा और शिष्य सब दोषी हैं। और जो यह कहे कि "निःसंदेह, शिष्य इस प्रणाली में निपुण होकर इसे सफलता की ओर ले जाएगा!" प्रशंसा करने वाला, प्रशंसा पाने वाला और प्रशंसा पाकर अपनी ऊर्जा को दुगुना करने वाला, ये सभी बहुत पुण्य उत्पन्न करते हैं। और क्यों? क्योंकि उनके सिद्धांत और अनुशासन को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है, गलत तरीके से सिखाया गया है... ऐसे व्यक्ति द्वारा जो परम प्रबुद्ध नहीं है।

6. हे चुंडा, विचार करो, जहाँ गुरु परम प्रबुद्ध हैं, और शिक्षा सुव्यवस्थित, अच्छी तरह से दी गई, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी, शांति के लिए सहायक है, और एक परम प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा दी गई है, परन्तु जहाँ शिष्य उस मानक के अनुसार शिक्षा के उपप्रवचनों में निपुण नहीं है, न ही सही आचरण का अभ्यास करना सीखा है, न ही उपदेशों के अनुसार चलता है, बल्कि उस शिक्षा से निरंतर विमुख रहता है। ऐसे में उससे कहा जा सकता है: — हे मित्र, तू सफल नहीं हुआ, तूने अपना अवसर खो दिया। तेरा गुरु परम प्रबुद्ध है, और उसकी शिक्षा सुव्यवस्थित, अच्छी तरह से दी गई, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी, शांति के लिए सहायक है, और एक परम प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा दी गई है, परन्तु तू उसमें निपुण नहीं है, बल्कि निरंतर उससे विमुख रहता है? इन शब्दों से, चुंडा, गुरु और शिक्षा की प्रशंसा होती है, परन्तु शिष्य को दोषी ठहराया जाता है। अब यदि कोई ऐसे शिष्य से कहे: — हे पूज्यवर, अपने गुरु द्वारा सिखाए और बताए गए सिद्धांत के अनुसार अभ्यास कीजिए! — तो जिसने प्रेरित किया, जिसे प्रेरित किया गया, और जिसने प्रेरित होकर उसके अनुसार अभ्यास किया, वे सब बहुत पुण्य अर्जित करेंगे। और क्यों? क्योंकि वह सिद्धांत और अनुशासन उत्तम रूप से प्रस्तुत किए गए थे, उत्तम रूप से प्रदान किए गए थे... एक परम प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा।

7. हे चुंडा, विचार करो, जहाँ गुरु परम ज्ञानी हो, शिक्षा सुव्यवस्थित हो... और शिष्य ने उसमें महारत हासिल कर ली हो... और सदा उसका पालन करता हो। ऐसे शिष्य से कहा जा सकता है: — हे मित्र, तू गुरु और अवसर दोनों में सफल रहा है... और तू सदा अपनी शिक्षा का पालन करता है। इन शब्दों से, चुंडा, गुरु, शिक्षा और शिष्य तीनों प्रशंसनीय माने जाते हैं। और यदि ऐसे शिष्य से कहा जाए:

— निश्चय ही उसके आदरणीय ने शिक्षा प्रणाली में महारत हासिल कर ली है और वह इसे सफलता की ओर ले जाएगा, तो प्रशंसा करने वाला, प्रशंसा पाने वाला और प्रशंसा पाने के बाद अपने परिश्रम को दुगुना करने वाला, सभी पुण्य अर्जित करते हैं। और क्यों? क्योंकि, चुंडा, ऐसा तब होता है जब कोई शिक्षा और अनुशासन सुव्यवस्थित और सुव्यवस्थित हो, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी हो, शांति के लिए सहायक हो, और उसे परम ज्ञानी व्यक्ति द्वारा प्रदान किया गया हो।

8. परन्तु हे चुंडा, विचार करो, जहाँ संसार में एक परम प्रबुद्ध शिक्षक, अरहंत, प्रकट हुए हों; जहाँ एक सिद्धांत को सुस्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया हो, सुस्पष्ट रूप से समझाया गया हो, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी हो, शांति के लिए सहायक हो, और जिसका उपदेश परम प्रबुद्ध व्यक्ति ने दिया हो; परन्तु जहाँ उनके शिष्य अच्छे नियम में निपुण न हुए हों, न ही उच्च जीवन का पूर्ण उद्देश्य उनके लिए स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ हो, उसके सभी चरण समन्वित रूप से स्पष्ट हों, और न ही यह उनके लिए उद्धार का साधन बना हो, और न ही लोगों के बीच इसका अच्छी तरह प्रचार किया गया हो, जब उनके शिक्षक का देहांत हो जाता है।

हे चुंडा, ऐसे गुरु का निधन उनके शिष्यों के लिए अत्यंत दुःख का कारण है। और क्यों? हे अरहंत, हमारे गुरु परम प्रबुद्ध होकर हमारे लिए संसार में अवतरित हुए; और उन्होंने एक सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी और शांति के लिए सहायक मार्ग का वर्णन किया, जो परम प्रबुद्ध गुरु द्वारा प्रदान किया गया था। परन्तु हम उस सुस्पष्ट मार्ग में निपुण नहीं हो पाए, न ही उच्चतर जीवन का पूर्ण सार, उसके सभी चरणों का समन्वित ज्ञान, हमारे लिए प्रकट हुआ, न ही यह हमारे लिए उद्धार का स्रोत बना, न ही इसका मनुष्यों में व्यापक प्रचार हुआ। अब हमारे गुरु का देहांत हो गया है! हे चुंडा, ऐसे गुरु का निधन उनके शिष्यों के लिए अत्यंत दुःख का कारण है।

9. हे चुंडा, विचार करो, जहाँ संसार में एक परम प्रबुद्ध अरहंत गुरु प्रकट हुए; जहाँ एक सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी, शांति के लिए सहायक नियम का उपदेश दिया गया; और जहाँ शिष्य उस उत्तम नियम में निपुण हो गए, और जहाँ उच्च जीवन का संपूर्ण सार उनके सामने प्रकट हो गया, उसके सभी चरण समन्वित रूप से स्पष्ट हो गए, और उद्धार का स्रोत बन गए, और मनुष्यों के बीच अच्छी तरह से प्रचारित हो गए, जब वह गुरु देहांत चले गए। अब, हे चुंडा, ऐसे गुरु का मरना उनके शिष्यों के लिए कोई विपत्ति नहीं है। और क्यों? 'हे अरहंत, हमारे लिए संसार में एक परम प्रबुद्ध गुरु प्रकट हुए; और उनके द्वारा एक सुस्पष्ट, सुव्यवस्थित नियम का उपदेश दिया गया। और हम उत्तम नियम में निपुण हो गए, और उच्च जीवन का संपूर्ण सार हमारे सामने प्रकट हो गया, उसके सभी चरण समन्वित रूप से स्पष्ट हो गए, और उद्धार का स्रोत बन गए, मनुष्यों के बीच अच्छी तरह से प्रचारित हो गए। अब हमारे गुरु का देहांत हो गया है!' हे चुंडा, ऐसे गुरु का निधन उनके शिष्यों के लिए कोई विपत्ति नहीं है।

10. हे कुंडा, यदि इन परिस्थितियों में कोई धार्मिक व्यवस्था स्थापित हो जाए और उसका नेतृत्व करने वाला कोई वरिष्ठ, अनुभवी, पंथ में लंबे समय से कार्यरत, परिपक्व आयु का और विवेकशील भाई न हो, तो वह व्यवस्था इस परिस्थिति के कारण अपूर्ण हो जाती है। परन्तु यदि ऐसा कोई व्यक्ति हो, तो वह व्यवस्था इस परिस्थिति के कारण पूर्ण हो जाती है।

11. फिर, यदि किसी धार्मिक व्यवस्था, चुंडा, को इन परिस्थितियों में रखा जाए, और कोई वरिष्ठ भिक्षु, अनुभवी, संघ में लंबे समय से कार्यरत, परिपक्व आयु का, विवेकशील पाया जाए, परन्तु कोई वरिष्ठ भिक्षु न हो जो शिष्य हो, बुद्धिमान और सुप्रशिक्षित हो, तैयार और विद्वान हो, धर्म के लक्ष्य को प्राप्त कर चुका हो, सत्य का प्रचार करने में सक्षम हो, और अपने सिद्धांतों सहित उत्पन्न विरोधी संप्रदायों का भली-भांति खंडन करके उद्धारकारी अनुग्रह के साथ नियम का शिक्षण करने में सक्षम हो: तो इस परिस्थिति से वह व्यवस्था परिपूर्ण हो जाती है।

12. हे चुंडा, पवित्र जीवन इन परिस्थितियों से सुसज्जित है: अर्थात्, ऐसे प्रमुख भिक्षु और ऐसे वरिष्ठ भिक्षुओं के साथ, लेकिन यदि मध्यम आयु या प्रतिष्ठित शिष्य भिक्षु न हों, तो इस परिस्थिति के कारण पवित्र जीवन अपूर्ण हो जाता है। या यदि इसमें कुछ अन्य पहलुओं की कमी हो, तो यह उस हद तक अपूर्ण है, उदाहरण के लिए, यदि कोई शिष्या न हों, या वरिष्ठ शिष्याएँ न हों, या मध्यम स्तर की शिष्याएँ न हों, या शिष्याएँ न हों, या यदि कोई शिष्या, गृहस्थ, पवित्र जीवन जीने वाला व्यक्ति न हो, या यदि उन गृहस्थों में से कोई धनी न हो, या यदि कोई शिष्या, गृहस्थ, पवित्र जीवन जीने वाली महिलाएँ न हों, या यदि उन गृहस्थ महिलाओं में से कोई धनी न हो, या यदि यह प्रणाली अपने पूर्ण विस्तार में सफल, समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय न हो, लोगों के बीच अच्छी तरह से प्रचारित न हो, या यदि यह प्रणाली इन सभी गुणों के बावजूद सार्वजनिक प्रसिद्धि और समर्थन में अग्रणी स्थान प्राप्त न कर पाई हो: — इनमें से किसी एक परिस्थिति के कारण यह प्रणाली अपूर्ण हो जाती है।

13. और इसके विपरीत, इन सभी परिस्थितियों की उपस्थिति से ही वह प्रणाली परिपूर्ण हो जाती है।

14. परन्तु मैं, चुंडा, अब संसार में एक शिक्षक के रूप में प्रकट हुआ हूँ, जो अरहंत, परम प्रबुद्ध हूँ। और नियम सुस्पष्ट, सुस्पष्ट, मार्गदर्शन के लिए प्रभावी, शांति के लिए सहायक, परम प्रबुद्ध द्वारा प्रदान किया गया है। और मेरे सच्चे श्रोता अच्छे नियम में निपुण हैं, और पवित्र जीवन का संपूर्ण सार उनके लिए प्रकट हो गया है, स्पष्ट हो गया है, इसके सभी चरण समन्वित हैं, और उनके लिए उद्धार का साधन बन गया है, जिसका मनुष्यों के बीच व्यापक प्रचार किया गया है।

लेकिन मैं, कुंडा, शिक्षिका, अब बूढ़ी हो गई हूँ, मैंने कई रातें देखी हैं, मुझे निकले हुए बहुत समय हो गया है, मैं पूर्ण आयु तक पहुँच गई हूँ, मेरी यात्रा का अंत हो गया है।

15. हे चुंडा, मेरे कुछ वरिष्ठ भिक्षु भी हैं जो शिष्य हैं, बुद्धिमान और सुप्रशिक्षित हैं, तैयार और विद्वान हैं, जिन्होंने अरहंत की शांति प्राप्त कर ली है, जो उत्तम नियम का प्रचार करने में सक्षम हैं, जो जब दूसरे लोग सत्य द्वारा आसानी से खंडन किए जा सकने वाले विरोधी सिद्धांत का प्रचार शुरू करते हैं, तो वे उसका खंडन करते हुए नियम और उसके उद्धारकारी गुणों का उपदेश देने में सक्षम होते हैं।

हे चुंडा, अब वहाँ मध्यम आयु और प्रतिष्ठा के भिक्षु हैं; मेरे शिष्य और ज्ञानी। हे चुंडा, अब वहाँ नौसिखिए हैं, मेरे शिष्य। हे चुंडा, अब वहाँ वरिष्ठ बहनें हैं, मेरी शिष्य। हे चुंडा, अब वहाँ मध्यम आयु और प्रतिष्ठा की बहनें हैं, और नौसिखिए भी, मेरी शिष्य। हे चुंडा, अब वहाँ गृहस्थ पुरुष हैं, श्वेत वस्त्रधारी, पवित्र जीवन जीने वाले, मेरे शिष्य; और इनमें धनी पुरुष भी हैं। हे चुंडा, अब वहाँ गृहस्थ महिलाएं हैं, श्वेत वस्त्रधारी, मेरी शिष्य; और इनमें धनी महिलाएं भी हैं। हे चुंडा, मेरा धर्म सफल, समृद्ध, व्यापक और अपने पूर्ण विस्तार में लोकप्रिय है, और मनुष्यों के बीच अच्छी तरह से प्रचारित है।

16. हे चुंडा, संसार में आज जितने भी गुरु उत्पन्न हुए हैं, उनमें से मुझे ऐसा कोई गुरु नहीं दिखता जिसने मेरी तरह प्रसिद्धि और समर्थन प्राप्त किया हो। हे चुंडा, संसार में आज जितने भी संघ और संस्थाएँ उत्पन्न हुई हैं, उनमें से मुझे भिक्षु संघ की तरह प्रसिद्धि और समर्थन प्राप्त करने वाला कोई नहीं दिखता। यदि कोई किसी धर्म को हर तरह से सफल, हर पहलू से पूर्ण, न तो अपूर्ण और न ही अनावश्यक, अपने संपूर्ण विस्तार में सुव्यवस्थित बताते हुए सही कह रहा है, तो वह इसी धर्म का वर्णन कर रहा होगा।

राम के पुत्र उद्दक (चुंड) कहा करते थे: देखकर भी कोई नहीं देखता। और देखते हुए क्या नहीं देखा जा सकता? एक तेज धार वाले तरकश का ब्लेड तो दिखता है, पर धार नहीं। उनका यही अर्थ था। और तरकश के बारे में उनकी यह बात एक नीच, निरर्थक, सांसारिक बहुमत के लिए उपयुक्त बात थी। अब यदि कोई इस मुहावरे, 'देखते हुए भी कोई नहीं देखता', का सही प्रयोग करना चाहे, तो उसे इस प्रकार कहना चाहिए: देखते हुए भी कोई नहीं देखता। लेकिन वह क्या है जो देखकर भी कोई नहीं देखता? एक ऐसा धर्म जो हर तरह से सफल हो, हर पहलू से पूर्ण हो, न तो अपूर्ण हो और न ही अनावश्यक, अपने पूर्ण विस्तार में सुव्यवस्थित हो: यही वह देखता है। यदि वह किसी बिंदु पर किसी विशेषता को अमूर्त रूप से देखे; यह सोचकर कि इससे वह स्पष्ट हो जाएगा, तो वह उसे नहीं देख पाता। यदि वह किसी बिंदु पर किसी विशेषता को भर कर उसे और अधिक पूर्ण बनाने की कोशिश करे, तो भी वह उसे नहीं देख पाता, और इस प्रकार 'देखते हुए भी कोई नहीं देखता'।

इसलिए, कुंडा, यदि कोई व्यक्ति किसी धर्म का वर्णन करना चाहता है जो हर तरह से सफल हो, हर पहलू में पूर्ण हो, न तो दोषपूर्ण हो और न ही अनावश्यक हो, बल्कि अपने पूर्ण विस्तार में अच्छी तरह से प्रस्तुत किया गया हो, तो वह सही ढंग से बोल रहा है, और उसे इसी धर्म के बारे में बात करनी चाहिए।

17. अतः, हे चुंडा, तुम सब, जिन्हें मैंने अपने द्वारा प्राप्त सत्यों का ज्ञान कराया है, एक साथ एकत्रित होकर उन सिद्धांतों का पाठ करो और उन पर आपस में झगड़ा न करो, बल्कि अर्थ की तुलना अर्थ से और वाक्य की तुलना वाक्य से करो, ताकि यह शुद्ध धर्म दीर्घायु हो और निरंतर चलता रहे, ताकि यह संसार के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, देवताओं और मनुष्यों के भले, लाभ और समृद्धि के लिए, असंख्य लोगों के कल्याण और सुख के लिए बना रहे!

तो फिर, हे कुंडा, वे कौन से सत्य हैं जिन्हें मैंने जानकर तुम्हें बताया? जब तुम सब एक साथ आकर एकजुट हो जाओ, तो तुम सब मिलकर उनका पाठ करो, और अर्थ-अर्थ और वाक्य-वाक्य की तुलना करके झगड़ा न करो, ताकि यह पवित्र धर्म दीर्घायु हो और निरंतर चलता रहे, ताकि यह संसार के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, देवताओं और मनुष्यों के भले, लाभ और कल्याण के लिए, असंख्य लोगों के कल्याण और सुख के लिए बना रहे?

ये हैं: — ध्यान के चार आरंभ, चार सर्वोच्च प्रयास, प्रभावशीलता के चार मार्ग, पाँच शक्तियाँ, पाँच बल, ज्ञानोदय के सात कारक, आर्य अष्टांगिक मार्ग। हे चुंडा, ये वे सत्य हैं जिन्हें मैंने अनुभव करने पर तुम्हें बताया था, और जब तुम सब एक साथ आकर जुड़ जाओ, तो तुम सब इनका अभ्यास करो, और अर्थ की तुलना अर्थ से और वाक्य की तुलना वाक्य से न करो, ताकि यह शुद्ध धर्म दीर्घायु हो और निरंतर चलता रहे, ताकि यह जगत के प्रति प्रेम से, देवताओं और मनुष्यों के भला, उनके कल्याण और उनकी उन्नति के लिए निरंतर बना रहे!

18. हे कुंडा, तुम सब एकता और शिष्टाचार के साथ एकत्रित होकर, मान लो कि कोई सहधर्मी सभा के समक्ष कोई मत व्यक्त करता है। यदि तुम यह समझो कि इस आदरणीय सदस्य ने अर्थ को गलत समझा है, या शब्दों का गलत प्रयोग कर रहा है, तो न तो उसका समर्थन करो और न ही उसे दोष दो। अस्वीकार करते हुए, दोष न देते हुए, तुम उससे इस प्रकार कहो: — हे भाई, इस अर्थ के लिए या तो यह वाक्यांश अधिक उपयुक्त है या वह: कौन सा अधिक उपयुक्त है? या: — इन वाक्यांशों के लिए या तो यह अर्थ है, या वह: कौन सा अधिक उपयुक्त है? यदि वह उत्तर दे: हे भाई, इस अर्थ के लिए वही वाक्यांश अधिक उपयुक्त है, या, हे भाई, इन वाक्यांशों के लिए वही अर्थ अधिक उपयुक्त है, तो न तो उसे दरकिनार करो और न ही उसकी निंदा करो। न तो उसे दरकिनार करो और न ही उसकी निंदा करो, बल्कि ध्यानपूर्वक उसे अर्थ और वाक्यांश दोनों समझाओ।

19. हे कुंडा, मान लीजिए कि कोई सहधर्मी सभा के समक्ष कोई राय व्यक्त करता है। यदि आप यह पाते हैं कि इस माननीय सदस्य ने अर्थ को गलत समझा है, परन्तु शब्दों का सही रूप प्रस्तुत कर रहे हैं, तो आपको न तो उनकी प्रशंसा करनी है और न ही उन्हें दोष देना है। निंदा न करते हुए, दोषरहित होकर, आपको उनसे इस प्रकार कहना है: हे भाई, इन विभिन्न वाक्यांशों में से या तो यह अर्थ सही है या वह: कौन सा अर्थ अधिक उपयुक्त है? यदि वे उत्तर दें: हे भाई, इन वाक्यांशों में से यही अर्थ अधिक उपयुक्त है, तो आपको न तो उन्हें दरकिनार करना है और न ही उनकी निंदा करनी है। न तो उन्हें दरकिनार करते हुए और न ही उनकी निंदा करते हुए, आपको उन्हें सावधानीपूर्वक सही अर्थ समझाना है।

20. यदि आपको लगे कि कोई वक्ता सही अर्थ तो समझ गया है, लेकिन शब्दों का गलत प्रयोग कर रहा है, तो आपको भी यही करना चाहिए; आपको उसे सावधानीपूर्वक सही शब्दावली समझानी चाहिए।

21. परन्तु हे कुंडा, यदि ऐसा वक्ता जो कहे और जिसका अर्थ तुम सही समझो, वही कहे, तो "बहुत खूब!" कहकर उसकी प्रशंसा करो और उसे बधाई दो। और ऐसा कहते और करते हुए, तुम उससे इस प्रकार कहो: हे भाई, हम कितने भाग्यशाली हैं कि तुम्हारे आदर में हमें एक ऐसा सहधर्मी मिलता है जो आध्यात्मिक और शाब्दिक दोनों ही दृष्टियों से इतना निपुण है!

22. हे कुंडा, मैं एक नया सिद्धांत सिखाता हूँ, जो इस वर्तमान जीवन में उत्पन्न होने वाले मानसिक व्यसनों को वश में करने के लिए है। मैं केवल भविष्य के जीवन में व्यसनों को नष्ट करने का सिद्धांत नहीं सिखाता, बल्कि ऐसा सिद्धांत सिखाता हूँ जो उन्हें अभी और परलोक में भी नष्ट करने के लिए है।

इसलिए, हे कुंडा, मेरे द्वारा तुम्हारे लिए स्वीकृत वस्त्र, ठंड, गर्मी, मक्खी, मच्छर, हवा, धूप और सांपों के स्पर्श से बचाव के लिए पर्याप्त हैं। मेरे द्वारा तुम्हारे लिए स्वीकृत दान, शरीर को जीवन में बनाए रखने, उसे सक्रिय रखने, चोट से बचाने और पवित्र जीवन जीने में तुम्हारी सहायता करने के लिए पर्याप्त हैं। यह सोचकर कि 'इस प्रकार मैं पिछली संवेदना पर काबू पाऊंगा और नई संवेदना उत्पन्न नहीं होने दूंगा।' मैं निश्चिंत रहूंगा और किसी भी प्रकार का दोष नहीं लूंगा। मेरे द्वारा तुम्हारे लिए स्वीकृत आवास, ठंड, गर्मी, मक्खी, मच्छर, हवा, धूप और सांपों के स्पर्श से बचाव के लिए पर्याप्त हैं, ताकि तुम जलवायु के खतरों से बच सको और एकांत का आनंद ले सको। मैंने आपके लिए बीमारियों से संबंधित दवाओं और अन्य आवश्यक वस्तुओं का जो प्रावधान स्वीकृत किया है, कृपया वही आपके लिए पर्याप्त समझें, ताकि उत्पन्न हुई बीमारी की अनुभूतियों को दूर किया जा सके और आपके स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सके।

23. हे कुंडा, ऐसा हो सकता है कि हमारे विचारों से भिन्न मत रखने वाले संन्यासी कहें: "स्फ़िक्यान पद्धति का अनुसरण करने वाले संन्यासी सुखमय जीवन में लिप्त और समर्पित हैं।" हे कुंडा, ऐसा कहने वाले शिक्षकों को इस प्रकार उत्तर देना चाहिए: "भाई, सुख में लिप्त और समर्पित होना क्या है? क्योंकि ऐसे अनेक और विविध तरीके हैं जिनसे कोई व्यक्ति सुख में लिप्त और समर्पित हो सकता है।"

चार प्रकार के गुण हैं, जिन्हें चुंडा कहते हैं, जो निम्न और मूर्तिपूजक हैं, आम जनता में पाए जाते हैं, अयोग्य हैं, अच्छे से संबंधित नहीं हैं, सांसारिकता, वासनाहीनता, शांति, उच्च ज्ञान, आत्मज्ञान और निर्वाण की ओर नहीं ले जाते। ये चार गुण क्या हैं? पहला, मूर्ख का मामला है जो जीवित प्राणियों को मारकर आनंद और संतुष्टि प्राप्त करता है। दूसरा, वह व्यक्ति है जो बिना दी गई वस्तुएँ लेकर आनंद

और संतुष्टि प्राप्त करता है। तीसरा, वह व्यक्ति है जो झूठे कथनों में आनंद और संतुष्टि प्राप्त करता है। चौथा, वह व्यक्ति है जो पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों से घिरा रहता है और उनका आनंद लेता है। ये, चुंडा, आनंद के प्रति आसक्त और समर्पित बीन के चार गुण हैं जो निम्न और मूर्तिपूजक हैं, औसत बहुमत से संबंधित हैं, अयोग्य हैं, अच्छाई से विमुख हैं, सांसारिकता, वासनाहीनता, शांति, अंतर्दृष्टि, ज्ञानोदय और निर्वाण के लिए अनुकूल नहीं हैं।

24. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि दूसरे शिक्षक पूछें: क्या शाक्य दर्शन का अनुसरण करने वाले संन्यासी इन चारों गुणों के प्रति आसक्त और समर्पित होते हैं? उन्हें उत्तर देना चाहिए: नहीं, ऐसा नहीं है! वे सही नहीं कह रहे होंगे; वे आपको गलत तरीके से पेश कर रहे होंगे, जो तथ्य नहीं है, जो वास्तव में नहीं है।

ये सुख के प्रति आसक्त और समर्पित होने के चार तरीके हैं, चुंडा, जो पूर्णतः सांसारिकता से विमुख होने, वासनाहीनता, विश्राम, शांति, उच्च ज्ञान, आत्मज्ञान और निर्वाण की ओर ले जाते हैं। ये चार क्या हैं? पहला, चुंडा, जब एक भाई, इंद्रिय सुखों से विरक्त होकर, बुरे विचारों से विरक्त होकर, प्रथम झिफिना में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जिसमें एकांत से उत्पन्न पहल और निरंतर विचार होते हैं जो उत्साह और सहजता से परिपूर्ण होते हैं।1

दूसरे, जब कोई व्यक्ति पहल और निरंतर चिंतन को दबाता है, तो वह द्वितीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो स्वयं उत्पन्न होता है, एकाग्रता से पैदा होता है, उत्साह और सहजता से परिपूर्ण होता है। उसमें, आरंभिक और निरंतर चिंतन से मुक्त होकर, मन शांत और स्थिर हो जाता है, उच्चतर अवस्था में लीन हो जाता है। तीसरे, जब कोई व्यक्ति उत्साह से रहित होकर शांत चिंतन में स्थिर रहता है, सचेत और आत्मसंयमित रहते हुए, वह अपने शरीर में उस सहजता का अनुभव करता है जिसके बारे में आर्य कहते हैं: जो शांत चिंतनशील और सचेत रहता है, वह सहजता में रहता है, इस प्रकार वह तृतीय ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है। चौथे, सहजता और बेचैनी को त्यागकर, अपने सुख और दु:ख के देहांत से, वह चतुर्थ ध्यान में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो पूर्ण शुद्धता, सचेतनता और समभाव की परम आनंदमय अवस्था है, जिसमें न तो सहजता का अनुभव होता है और न ही कोई दुर्बलता। हे चुंडा, सुख में लीन और समर्पित रहने के ये चार तरीके पूर्ण सांसारिकता, वासनाहीनता, शांति, अंतर्दृष्टि, ज्ञान और निर्वाण की ओर ले जाते हैं। हे चुंडा, यदि ऐसा हो कि अन्य सिद्धांतों का उपदेश देने वाले साधु यह घोषणा करें कि शाक्य संन्यासी इन चार सुखों में लीन और समर्पित रहते हैं, तो तुम्हें उनसे कहना चाहिए, "हाँ, वे तुम्हारे विषय में सही कह रहे होंगे, और वे तुम्हें असत्य या असत्य बातों से गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं कर रहे होंगे।"

25. हे कुंडा, ऐसा हो सकता है कि हमारे सिद्धांतों से भिन्न अन्य सिद्धांतों का उपदेश देने वाले भिक्षु यह घोषणा करें: हे भाई, इन चार सुखों में लीन और समर्पित रहने वालों को कितना फल और कितना लाभ प्राप्त होगा? उन्हें तुम इस प्रकार उत्तर देना: हे भाई, चार प्रकार के फल और चार लाभ प्राप्त होंगे। वे चार क्या हैं? पहला, वह भाई जो तीनों बंधनों के पूर्ण नाश से जलमार्ग विजेता बन जाता है, परलोक में विपत्तियों से मुक्त हो जाता है और निश्चित रूप से ज्ञान प्राप्त करता है। दूसरा, वह भाई जो तीनों बंधनों के पूर्ण नाश से अपने कामवासना, घृणा और माया को इतना कम कर लेता है कि वह एक बार जन्म लेने वाला बन जाता है और इस संसार में एक बार लौटने से ही उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं। तीसरा, वह भाई जो अंतिम पाँच बंधनों के पूर्ण नाश से परलोक में पुनर्जन्म लेगा और वहाँ से कभी वापस नहीं लौटेगा, वहीं उसका निधन हो जाएगा। चौथे, उस भाई का उदाहरण लीजिए जिसने मानसिक व्यसनों के नाश द्वारा इसी जीवन में बुद्धि और अंतर्दृष्टि की मुक्ति को स्वयं जान लिया है और उसमें स्थिर है। हे भाई, ये चार प्रकार के फल हैं, चार लाभ हैं जो उन लोगों को प्राप्त होते हैं जो इन चार प्रकार के सुखों के प्रति आसक्त और समर्पित हैं।

26. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि हमारे विचारों से भिन्न मत सिखाने वाले साधु यह घोषणा करें कि शाक्य संन्यासी अपने सिद्धांतों में असंगत हैं। ऐसी घोषणा करने पर उन्हें यह उत्तर दिया जा सकता है: - हे भाई, परम ज्ञानी, सर्वज्ञ अरहंत ने अपने शिष्यों को ऐसे सिद्धांत सिखाए और बताए हैं जिनका जीवन भर उल्लंघन नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार पत्थर या लोहे का स्तंभ, जिसका आधार गहरा गड़ा हो, सुदृढ़ हो, अविचल और स्थिर हो, ठीक वैसे ही ये सिद्धांत हैं।

जो भाई अरहंत है, जिसमें मादक पदार्थ नष्ट हो चुके हैं, जिसने जीवन जी लिया है, जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है, जिसने अपना बोझ उतार दिया है, जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है, जिसने पुनर्जन्म के बंधन को पूरी तरह से तोड़ दिया है, जो सच्चे ज्ञान से मुक्त हो गया है, वह नौ कार्यों को करने में असमर्थ है:

1. वह जानबूझकर किसी जीवित प्राणी को जीवन से वंचित करने में असमर्थ है।

2. वह ऐसी कोई चीज लेने में असमर्थ है जो उसे दी ही न गई हो, जिससे चोरी की श्रेणी में आना असंभव हो।

3. वह यौन अशुद्धता के काबिल नहीं है।

4. वह जानबूझकर झूठ बोलने में असमर्थ है।

5. वह सांसारिक सुखों में लिप्त होने के लिए धन संचय करने में असमर्थ है, जैसा कि वह गृहस्थ जीवन में किया करता था।

6. वह पक्षपात के कारण गलत मार्ग अपनाने में असमर्थ है।

7. वह घृणा के कारण गलत मार्ग अपनाने में असमर्थ है।

8. वह मूर्खता के कारण गलत रास्ता अपनाने में असमर्थ है।

9. वह भय के कारण गलत मार्ग अपनाने में असमर्थ है।

ये नौ बातें वह अरहंत करने में असमर्थ है जिसमें मानसिक मादक पदार्थ नष्ट हो चुके हैं, जिसने जीवन जी लिया है, जिसका कार्य पूरा हो चुका है, जिसका बोझ हल्का हो गया है, जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है, जिसने अस्तित्व के बंधन को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है, जो सच्चे ज्ञान से मुक्त हो चुका है।

27. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि जो यात्री हमसे भिन्न विचार रखते हों, वे कहें: अतीत के विषय में गौतम संन्यासी असीम ज्ञान और अंतर्दृष्टि प्रकट करते हैं, परन्तु भविष्य के विषय में, उसके क्या और क्यों के विषय में, वे ऐसा नहीं कर पाते। [यदि वे ऐसा कहें], तो वे यात्री, अनेक मूर्खों की तरह, यह समझ बैठेंगे कि एक प्रकार के विषय का ज्ञान और अंतर्दृष्टि दूसरे प्रकार के विषय के ज्ञान और अंतर्दृष्टि से प्रकट होती है। हे चुंडा, अतीत के विषय में तथागत को अतीत का स्मरण है। वे जितनी दूर तक चाहें, उतना पीछे तक याद रख सकते हैं। और भविष्य के विषय में, उनमें ज्ञानोदय से उत्पन्न यह ज्ञान है: यही अंतिम जन्म है; अब और कोई जन्म नहीं होगा।

28. हे चुंडा, यदि भूतकाल का अर्थ वह है जो सत्य नहीं है, तथ्य नहीं है, और जो तुम्हारे हित में नहीं है, तो तथागत इस विषय में कुछ भी प्रकट नहीं करते। यदि भूतकाल का अर्थ वह है जो सत्य है, तथ्य है, परन्तु जो तुम्हारे हित में नहीं है, तो तथागत इस विषय में कुछ भी प्रकट नहीं करते। यदि भूतकाल का अर्थ वह है जो सत्य है, तथ्य है, और जो तुम्हारे हित में है, तो तथागत उस समय को भली-भांति जानते हैं जब उसे प्रकट करना है। [और यही बात वर्तमान और भविष्य के विषय में भी समझी जानी चाहिए।]

इसलिए, हे चुंडा, अतीत, भविष्य और वर्तमान के विषय में तथागत समय के पैगंबर हैं, सत्य के पैगंबर हैं, अच्छाई के पैगंबर हैं, नियम के पैगंबर हैं, अनुशासन के पैगंबर हैं। इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।

29. हे चुंड, इस संसार में, जिसमें देव, मार और ब्रह्मा हैं, जो कुछ भी यहाँ के लोग, चाहे देवता हों या मनुष्य, संन्यासी हों या ब्राह्मण, देखते, सुनते, महसूस करते, समझते, सिद्ध करते, प्रयास करते या मन में विचार करते हैं, वह सब तथागत को ज्ञात है। इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।

हे चुंडा, उस रात्रि के अंतराल में, जिसमें तथागत सर्वोच्च ज्ञान से परिपूर्ण हुए, और उस रात्रि के अंतराल में, जिसमें वे पुनर्जन्म की किसी भी स्थिति से मुक्त होकर परलोक विदा हुए, उस अंतराल में वे जो कुछ भी प्रवचन, वार्तालाप या व्याख्या करते हैं, वह सब सत्य है, अन्यथा नहीं। इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।

हे चुंड, तथागत जैसा कहते हैं, वैसा ही वे करते हैं; जैसा वे करते हैं, वैसा ही वे कहते हैं। क्योंकि वे अपने वचन के अनुसार ही चलते हैं, और उनका वचन उनके आचरण के अनुरूप है, इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।

हे चुंड, इस संसार में, चाहे मार हों या ब्रह्मा, समस्त जनसमूह, चाहे देवता हों या मनुष्य, संन्यासी हों या ब्राह्मण, तथागत इन सबसे श्रेष्ठ हैं, और स्वयं उनसे श्रेष्ठ नहीं हैं; वे इन सबका प्रत्यक्ष अवलोकन करते हैं, वे ही संसार के स्वामी हैं। इसीलिए उन्हें तथागत कहा जाता है।

30. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि हमारे सिद्धांतों से भिन्न अन्य सिद्धांतों का प्रचार करने वाले भिक्षु कहें: हे भाई, क्या तथागत मृत्यु के बाद अस्तित्व में रहते हैं? क्या यह सत्य है, और क्या कोई अन्य मत निरर्थक है? ऐसे प्रश्न पूछने पर उन्हें इस प्रकार उत्तर देना चाहिए: हे भाई, यह परमेश्वर द्वारा प्रकट नहीं किया गया है। या वे यह भी कह सकते हैं: क्या तथागत मृत्यु के बाद अस्तित्व में नहीं रहते? ... या क्या तथागत मृत्यु के बाद अस्तित्व में भी रहते हैं और अस्तित्व में नहीं भी रहते? क्या यह सत्य है, और क्या कोई अन्य मत निरर्थक है? तब उन्हें एक ही शब्द में उत्तर देना चाहिए।

31. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि वे पूछें: हे भाई, यह गौतम संन्यासी द्वारा प्रकट क्यों नहीं किया गया? उन्हें इस प्रकार उत्तर देना है: क्योंकि हे भाई, यह न तो अच्छे के लिए, न ही सच्चे सिद्धांत के लिए, न ही धर्म के मूल सिद्धांतों के लिए, न ही सांसारिकता के लिए, न ही वासनाहीनता के लिए, न ही शांति के लिए, न ही अंतर्दृष्टि के लिए, न ही ज्ञान के लिए, और न ही निर्वाण के लिए अनुकूल है। इसलिए इसे परमेश्वर द्वारा प्रकट नहीं किया गया है।

32. हे चुंडा, ऐसा हो सकता है कि वे पूछें: परन्तु हे भाई, गौतम संन्यासी ने क्या प्रकट किया है? उन्हें इस प्रकार उत्तर देना है: — यह बुराई है: — हे भाई, यह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है। यह बुराई का कारण है: — हे भाई, यह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है। यह बुराई का निवारण है: — हे भाई, यह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है। यह बुराई के निवारण का मार्ग है: — हे भाई, यह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है।

33. हे कुंडा, ऐसा हो सकता है कि वे यात्री पूछें: हे भाई, केवल वही बात परमेश्वर ने क्यों प्रकट की है? ऐसे प्रश्न करने वालों को इस प्रकार उत्तर देना चाहिए: क्योंकि हे भाई, वह अच्छाई से परिपूर्ण है, वह नियम के अंतर्गत आता है, वह धर्म का मूल है, और वह पूर्ण सांसारिकता, वासनाहीनता, बुराई का निवारण, शांति, अंतर्दृष्टि, ज्ञान और मोक्ष की ओर ले जाता है। इसलिए वह परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है।

34. हे कुंडा, सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में वे टिप्पणियाँ जो मैंने तुम्हें बताई हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें बताया जाना चाहिए था: क्या मैं उन्हें इस प्रकार तुम्हें बताऊँ जैसे उन्हें नहीं बताया जाना चाहिए था? और सृष्टि के अंत या उत्पत्ति के विषय में वे टिप्पणियाँ जो मैंने तुम्हें बताई हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें बताया जाना चाहिए था: क्या मैं उन्हें इस प्रकार तुम्हें बताऊँ जैसे उन्हें नहीं बताया जाना चाहिए था?

हे चुंडा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो निम्नलिखित में से किसी एक मत को मानते और उसका प्रचार करते हैं; उनका कहना है: केवल यही सत्य है, कोई अन्य मत बेतुका है:

आत्मा और संसार शाश्वत हैं।

आत्मा और संसार शाश्वत नहीं हैं।

आत्मा और संसार एक दूसरे के समान नहीं हैं।

आत्मा और संसार दोनों ही हैं...

आत्मा और संसार स्वयं निर्मित हैं. . . .

आत्मा और संसार किसी और ने बनाए हैं. . . .

आत्मा और संसार दोनों स्वयं निर्मित हैं और

किसी और द्वारा बनाया गया. . . .

आत्मा और संसार दोनों ही न तो मनुष्य हैं और न ही संसार, क्योंकि इनका अस्तित्व संयोगवश ही हुआ है।

या फिर वे सुख और दुख के संबंध में इन्हीं में से किसी एक विचार पर विश्वास करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं।"

35. हे चुंडा, अब मैं उन संन्यासियों और ब्राह्मणों के पास जाता हूँ जो इनमें से किसी भी मत को मानते और स्वीकार करते हैं, और उनसे कहता हूँ: क्या यह सच है, मित्र? और यदि वे उत्तर दें: 'हाँ! केवल यही सत्य है, अन्य कोई मत बेतुका है', तो मैं उनके दावे को स्वीकार नहीं करता। ऐसा क्यों? क्योंकि ऐसे प्रश्नों पर लोगों के अलग-अलग मत होते हैं। और न ही मैं इस [या उस] मत को अपने मत के बराबर मानता हूँ, श्रेष्ठ तो दूर की बात है। व्याख्या के मामले में तो मैं ही श्रेष्ठ हूँ।

36. और इस प्रकार मैं उपरोक्त सभी मतों के विषय में कहता हूँ। सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में इन सभी टिप्पणियों के बारे में, मैंने तुम्हें वह प्रकट कर दिया है जो प्रकट किया जाना चाहिए था; तो क्या मैं तुम्हें वह प्रकट करूँ जो प्रकट नहीं किया जाना चाहिए?

37. और हे कुंडा, इस जीवन के बाद की चीजों के बारे में क्या टिप्पणियाँ हैं, जिनमें से कुछ प्रकट होनी चाहिए और कुछ प्रकट नहीं होनी चाहिए?

हे चुंडा, कुछ संन्यासी और ब्राह्मण हैं जो निम्नलिखित में से किसी एक मत को मानते और उसका प्रचार करते हैं तथा उसके विषय में कहते हैं: केवल यही सत्य है, अन्य कोई मत निरर्थक है।

मृत्यु के बाद आत्मा दृश्य स्वरूप धारण कर लेती है और रोगमुक्त हो जाती है।

यह अदृश्य हो जाता है, . . .

यह दृश्य और अदृश्य दोनों हो जाता है।

यह न तो दिखाई देता है और न ही अदृश्य हो जाता है।

यह सचेत हो जाता है. . . .

यह अचेतन हो जाता है. . . .

यह दोनों बन जाता है. . . .

यह न तो बनता है और न ही...

मृत्यु के बाद आत्मा का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, वह नष्ट हो जाती है, उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता।

38. हे चुंडा, अब उन संन्यासियों और ब्राह्मणों से, जो इनमें से किसी भी मत को मानते और स्वीकार करते हैं, मैं पहले की तरह ही कहता हूँ: — क्या यह वही है जो तुम कहते हो, मित्र? और यदि वे उत्तर दें: 'केवल यही सत्य है, बाकी सभी मत बेतुके हैं,' तो मैं इसे स्वीकार नहीं करता। और ऐसा क्यों है?

क्योंकि ऐसे प्रश्नों पर लोगों के अलग-अलग विचार होते हैं। न ही मैं इस या उस विचार को अपने विचार के बराबर मानता हूँ, श्रेष्ठ तो दूर की बात है। व्याख्या के मामले में तो मैं ही श्रेष्ठ हूँ।

39. और इस प्रकार मैं उन सभी पूर्वोक्त मतों के विषय में कहता हूँ। इस जीवन के बाद की बातों के विषय में मैंने तुम्हें वह प्रकट कर दिया है जो प्रकट किया जाना चाहिए था; तो क्या मैं तुम्हें वह प्रकट करूँ जो प्रकट नहीं किया जाना चाहिए?

40. हे कुंडा, चीजों की शुरुआत और परलोक के बारे में इन सभी टिप्पणियों को मिटाने और उनसे आगे निकलने के लिए, मैंने ध्यान के चार आरंभ सिखाए और निर्धारित किए हैं।

— वे चार क्या हैं? इसमें, एक भाई को शरीर के प्रति इस प्रकार ध्यान देना चाहिए कि वह उत्साही, आत्मसंयमित और सचेत रहे, ताकि वह संसार में व्याप्त लालसा और निराशा दोनों पर विजय प्राप्त कर सके। और इसी प्रकार उसे भावनाओं, विचारों और धारणाओं पर

भी ध्यान देना चाहिए। मैंने इन्हें इसलिए सिखाया और निर्धारित किया है ताकि मतों पर की जाने वाली सभी टिप्पणियों को मिटाया जा सके और उनसे आगे बढ़ा जा सके।

41. उस समय पूज्य उपवन भगवान के पीछे खड़े होकर उन्हें पंखा झल रहे थे। तब उन्होंने भगवान से कहा, “हे भगवान, यह नियम का वर्णन कितना अद्भुत और मनमोहक है; इसका आकर्षण कितना महान है। हे भगवान, इस वर्णन का नाम क्या है?”

तो फिर, उपवन, इसे आनंदमय प्रवचन के रूप में याद रखना।

इस प्रकार परम पूज्य ने कहा। उनके शब्दों से आदरणीय उपवन प्रसन्न और आनंदित हुए।

यहां पसादिका सुट्टंता समाप्त होती है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.7 लक्खाना सुत्त (DN30)
मैंने ऐसा सुना है। एक बार भगवान सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के उद्यान में ठहरे हुए थे।

"भिक्षुओं!" उन्होंने कहा, और भिक्षुओं ने उत्तर दिया, "भगवान?"

भगवान ने कहा, “हे भिक्षुओं, महान पुरुष के ये बत्तीस विशेष लक्षण हैं, और जो महान पुरुष इन्हें धारण करता है, उसके लिए केवल दो ही मार्ग खुले हैं। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो वह शासक बनेगा, धर्म का पालन करने वाला धर्मात्मा सम्राट, चारों दिशाओं का विजेता, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की है और सात रत्नों से परिपूर्ण है। ये हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवां रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र होंगे जो वीर होंगे, वीर व्यक्तित्व वाले होंगे, शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने वाले होंगे। वह इस सागर से घिरे देश को बिना लाठी या तलवार के, धर्म के द्वारा जीतकर निवास करता है। परन्तु यदि वह गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन व्यतीत करता है, तो वह अरहंत बनेगा, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, जो संसार से पर्दा हटा देता है।”

और ये बत्तीस लक्षण कौन से हैं जो एक महान व्यक्ति की पहचान कराते हैं?

I. उसके पैर सीधे और समतल हैं। यह एक महान व्यक्ति की पहचान है।

II. उसके पैरों के तलवों पर पहिए लगे हैं, जिनमें हल और हब भी शामिल हैं।

III. उसकी एड़ियाँ उभरी हुई हैं।

IV. उसकी उंगलियां और पैर की उंगलियां लंबी हैं।

V. उसके हाथ और पैर कोमल और मुलायम हैं।

VI. उसके हाथ और पैर जालीदार हैं (जालीदार?)

VII. उसके टखने बहुत ऊंचे हैं

VIII. उसके पैर हिरण जैसे हैं

IX. खड़े होकर और बिना झुके, वह अपने दोनों हाथों से अपने घुटनों को छू और रगड़ सकता है।

X. उसके पुरुष अंग एक आवरण में बंद हैं।

11. उसका रंग सुनहरा है, चमकदार।

XII. उसकी त्वचा इतनी कोमल और चिकनी है कि उस पर धूल भी नहीं चिपकती।

XIII. उसके शरीर के बाल अलग-अलग हैं, प्रत्येक रोमछिद्र पर एक-एक बाल है।

XIV. उसके शरीर के बाल ऊपर की ओर बढ़ते हैं, नीले-काले रंग के, कॉलीरियम की तरह, दाहिनी ओर छल्ले के रूप में बढ़ते हैं।

XV. उनका शरीर ईश्वरीय रूप से सीधा है।

16. उसके पास सात उत्तल सतहें हैं।

सत्रहवीं। उसके शरीर का अगला भाग शेर के समान है।

XVIII. उसके कंधों के बीच कोई खोखलापन नहीं है।

XIX. उसका शरीर बरगद के पेड़ के समान है: उसकी ऊँचाई उसकी भुजाओं की लंबाई के बराबर है।

XX. उसका धड़ समरूप रूप से गोल है।

XXI. उसकी स्वाद की समझ एकदम उत्तम है।

XXII. उसके जबड़े शेर जैसे हैं

XXIII. उसके चालीस दांत हैं।

XXIV. उसके दांत समतुल्य हैं।

XXV. उसके दांतों के बीच कोई जगह नहीं है।

XXVI. उसके नुकीले दांत बहुत चमकीले हैं।

XXVII. उसकी जीभ बहुत लंबी है

XXVIII. उसकी आवाज ब्रह्मा जैसी है, जैसे कराविका पक्षी की आवाज होती है।

XXIX. उसकी आँखें गहरे नीले रंग की हैं।

XXX. उसकी पलकें गाय जैसी हैं।

XXXI. उसकी भौहों के बीच के बाल सफेद और रुई की तरह मुलायम हैं।

XXXII. उसका सिर शाही पगड़ी जैसा है।"

"हे भिक्षुओं, महान पुरुष के लिए विशिष्ट बत्तीस लक्षण यहाँ दिए गए हैं, और इन लक्षणों को प्राप्त करने वाले महान पुरुष के लिए केवल दो ही मार्ग खुले हैं। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो वह शासक बनेगा, धर्म का पालन करने वाला धर्मात्मा सम्राट,

चारों दिशाओं का विजेता, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की है और सात रत्नों से परिपूर्ण है। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवाँ रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र होंगे जो वीर होंगे, वीर व्यक्तित्व वाले होंगे, शत्रु सेना पर विजय प्राप्त करने वाले होंगे। वह इस सागर से घिरे देश को बिना लाठी या तलवार के, धर्म के द्वारा जीतकर निवास करता है। परन्तु यदि वह गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यासी जीवन व्यतीत करता है, तो वह अरहंत बनेगा, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, जो संसार से पर्दा हटा देता है। अन्य संप्रदायों के ऋषि भी इन बत्तीस लक्षणों को जानते हैं, परन्तु वे इन्हें प्राप्त करने के कर्मिक कारणों को नहीं जानते।"

भिक्षुओं, तथागत अपने पिछले जन्म, पूर्वज या निवास स्थान में मनुष्य के रूप में जन्म लेकर, अच्छे उद्देश्य से महान कर्म करते थे। वे शरीर, वाणी और विचार के अच्छे आचरण में अडिग रहे, उदारता, आत्म-अनुशासन, व्रत पालन, माता-पिता, तपस्वियों, ब्राह्मणों और कुल के मुखिया का आदर करते रहे, और अन्य अत्यंत पुण्य कर्मों में भी लिप्त रहे। इन कर्मों का भरपूर और संचय करते हुए, मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन के समय उनका पुनर्जन्म स्वर्गलोक में हुआ, जहाँ वे अन्य देवताओं से दस प्रकार से परिपूर्ण थे: स्वर्गलोक की लंबी आयु, सौंदर्य, सुख, वैभव, प्रभाव, और दृष्टि, ध्वनि, गंध, स्वाद और स्पर्श। वहाँ से विमुख होकर पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने पर, उन्होंने एक महान पुरुष का यह लक्षण प्राप्त किया: समतल पदचिह्न, जिससे वे अपने पैर को जमीन पर समान रूप से रखते हैं, उसे समान रूप से उठाते हैं, और पूरे शरीर से जमीन को समान रूप से स्पर्श करते हैं। अकेला।

इस चिह्न से संपन्न होकर, यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो वह धर्म के पालन में दृढ़ निश्चयी, चक्र-संचालित सम्राट बनेगा, जो चारों दिशाओं का विजेता होगा, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की होगी और सात रत्नों से संपन्न होगा। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवां रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र हैं जो वीर हैं, वीर व्यक्तित्व वाले हैं और शत्रु सेना पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। वह इस सागर-बद्ध भूमि पर बिना लाठी या तलवार के, केवल न्याय के बल पर शासन करता है, और इस पृथ्वी पर समुद्र की सीमाओं तक शासन करता है। यह एक खुली, डाकुओं से मुक्त, वन-विहीन, शक्तिशाली, समृद्ध, सुखी और विपत्तियों से मुक्त भूमि है। शासक के रूप में उसे क्या लाभ होता है? कोई भी शत्रु उसे रोक नहीं सकता। यही उसका शासक के रूप में लाभ है। और यदि वह संन्यासी जीवन व्यतीत करता है तो उसे क्या लाभ होता है? वह पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध बनेगा, जो... वह संसार से पर्दा हटाता है। इस प्रकार, उसे क्या लाभ होता है? उसे भीतर या बाहर से किसी शत्रु या विरोधी, लोभ, घृणा या भ्रम से, न ही किसी तपस्वी या ब्राह्मण, किसी देव, मार या ब्रह्मा, या संसार के किसी भी प्राणी से रोका जा सकता है। यही बुद्ध होने का उसका लाभ है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था,

सत्यवादी, धर्मी, संयमित और स्थिर

पवित्र और सदाचारी, उपवास रखने वाला,

उदार, किसी को हानि न पहुँचाते हुए, शांति से उन्होंने इस महान कार्य को अपने हाथ में लिया और अंत में स्वर्ग में आनंद और सुख का निवास करने चले गए। वहाँ से पृथ्वी पर लौटकर, उनके पैर समतल कदमों से धरती को छू गए, तब एकत्रित भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की: जो समतल भूमि पर चलता है, उसी के लिए।

यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे, या संसार का त्याग कर दे, तो कोई भी बाधा उसके मार्ग में नहीं आ सकती: यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। यदि वह गृहस्थ है, तो कोई भी शत्रु उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता। कोई भी मानवीय शक्ति उसे उसके कर्मों के फल से वंचित नहीं कर सकती। या यदि वह संन्यासी जीवन को अपना विकल्प चुने: तो वह त्याग की ओर उन्मुख और स्पष्ट दृष्टि वाला होगा—वह मनुष्यों में श्रेष्ठ होगा, अद्वितीय, कभी पुनर्जन्म नहीं लेगा: यही उसके लिए नियम होगा।

भिक्षुओं, चाहे उनका पिछला जीवन कैसा भी रहा हो... तथागत मनुष्य के रूप में जन्म लेकर अनेकों के सुख के लिए, भय और आतंक को दूर करने वाले, विधिवत सुरक्षा और आश्रय प्रदान करने वाले और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले के रूप में जीवन व्यतीत करते रहे, उस कर्म का पालन करते हुए... एक सुखी अवस्था में, एक स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया... वहाँ से विमुख होकर और पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने एक महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त किया: उनके पैरों के तलवों पर हजार तीलियों वाले पहिए हैं, जो हल और धुरी सहित पूर्ण हैं।

इस विशेषता से संपन्न होकर, यदि वह गृहस्थ जीवन का पालन करता है, तो वह धर्म का पालन करने वाला, चक्र चलाने वाला, धर्मनिष्ठ सम्राट बनेगा, जो चारों दिशाओं का विजेता होगा, जिसने अपने राज्य की सुरक्षा स्थापित की है और सात रत्नों से संपन्न है। ये रत्न हैं: चक्र रत्न, हाथी रत्न, अश्व रत्न, रत्न रत्न, स्त्री रत्न, गृहस्थ रत्न और सातवां रत्न, परामर्शदाता रत्न। उसके एक हजार से अधिक पुत्र हैं जो वीर हैं, वीर व्यक्तित्व वाले हैं और शत्रु सेना पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। वह इस समुद्र से घिरी भूमि पर बिना लाठी या तलवार के, केवल न्याय के बल पर शासन करता है, और इस पृथ्वी पर समुद्र की सीमाओं तक शासन करता है। यह एक खुली, डाकुओं से मुक्त, वनों से रहित, शक्तिशाली, समृद्ध, सुखी और विपत्तियों से मुक्त भूमि है। एक शासक के रूप में उसे क्या लाभ होता है? उसके पास एक विशाल दल है: वह ब्राह्मण गृहस्थों, नागरिकों और ग्रामीणों, कोषाध्यक्षों, रक्षकों, द्वारपालों, मंत्रियों, करदाताओं, प्रमुख किरायेदारों और सेवकों से घिरा हुआ है। यही उसका धन है। "शासक के रूप में उसे लाभ होगा। और यदि वह संन्यासी जीवन व्यतीत करे, तो वह पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध बन जाएगा... इस प्रकार, उसे क्या लाभ होगा? उसके साथ एक विशाल दल होगा: वह भिक्षुओं, भिक्षुणियों, गृहस्थ पुरुषों और महिलाओं, देवताओं और मनुष्यों, असुरों, नागों और गंधर्वों से घिरा रहेगा। यही बुद्ध के रूप में उसका लाभ है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

बीते समय में, अपने पूर्व जन्मों में, मनुष्य के रूप में, अनेकों का भला करते हुए, भय और दहशत को दूर करते हुए, रक्षा और संरक्षण के लिए तत्पर, उन्होंने यह महान कार्य अपने हाथ में लिया, और अंत में स्वर्ग चले गए, जहाँ वे आनंद और सुख में निवास करेंगे। वहाँ से पृथ्वी पर लौटने पर, उनके पैरों के निशान पहियों के हैं, प्रत्येक पहिया हजार तीलियों वाला, पूर्ण। एकत्रित भविष्यवक्ताओं ने तब पुण्य के इन अनेक चिह्नों को देखकर घोषणा की: "उनका अनुयायी वर्ग विशाल होगा, वे अपने सभी शत्रुओं को परास्त करेंगे। यही बात पहियों के चिह्न स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। यदि वे संसार का त्याग नहीं करते, तो वे पहिया घुमाकर पृथ्वी पर शासन करेंगे। कुलीन लोग उनके अधीन होंगे, सभी उनकी शक्ति की सेवा में तत्पर रहेंगे। लेकिन यदि वे तपस्वी जीवन को चुनते हैं: त्याग की ओर उन्मुख, और स्पष्ट दृष्टि वाले—मनुष्य और देवता,

असुर, सक्क, रक्खास, गंधब्बा, नाग, गरुड़, चार पैर वाले जानवर भी उनकी सेवा करेंगे, बेजोड़, देवों द्वारा और पुरुषों द्वारा समान रूप से उनकी महिमा में पूजनीय।

भिक्षुओं, चाहे उनके पिछले जन्म में जो भी रहा हो... तथागत मनुष्य के रूप में जन्म लेकर, जीवन लेने का त्याग करके और उससे परहेज करके, तथा लाठी और तलवार को त्यागकर, दयालु और करुणामय होकर, सभी प्राणियों के प्रति मित्रता और सहानुभूति रखते हुए निवास करते रहे, उस कर्म का पालन करके... वे एक सुखी अवस्था में पुनर्जन्म हुए... वहाँ से विमुख होकर और पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने महान पुरुष के ये तीन लक्षण प्राप्त किए: उभरी हुई एड़ियाँ, लंबी उंगलियाँ और पैर की उंगलियाँ, और दिव्य रूप से सीधा शरीर।

"इन गुणों से युक्त होकर, यदि कोई शासक गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, तो उसे क्या लाभ होता है? वह दीर्घायु होता है, दीर्घायु होता है, और उस दौरान कोई भी शत्रु उसका वध नहीं कर सकता... बुद्ध के रूप में, उसे क्या लाभ होता है? वह दीर्घायु होता है... कोई भी शत्रु, चाहे वह तपस्वी हो या ब्राह्मण, देव हो, मार हो या ब्रह्मा, या संसार का कोई भी प्राणी, उसका वध नहीं कर सकता। यही बुद्ध के रूप में उसका लाभ है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

मृत्यु के भय को भलीभांति जानते हुए भी, उन्होंने प्राणियों की हत्या करने से परहेज किया। इसी सद्गुण के कारण उन्हें स्वर्ग में जन्म मिला, जहाँ उन्होंने पुण्य के फल का आनंद लिया। पृथ्वी पर लौटकर उन्होंने अपने शरीर पर ये तीन चिह्न धारण किए: उनकी एड़ियाँ भरी हुई और बहुत लंबी हैं, ब्रह्मा के समान उनका रूप सीधा है, वे देखने में सुंदर और सुडौल अंगों वाले हैं, उनकी उंगलियाँ कोमल, मुलायम और लंबी हैं। इन तीन उत्कृष्ट चिह्नों से ही यह ज्ञात होता है कि युवक दीर्घायु होगा। वे गृहस्थ जीवन में दीर्घायु होंगे, और उससे भी अधिक समय तक तपस्वी के रूप में अपने श्रेष्ठ गुणों का अभ्यास करेंगे: यही इन तीन चिह्नों का संकेत है।

भिक्षुओं, चाहे उनके पिछले जन्म में जो भी रहा हो... तथागत उत्तम भोजन, स्वादिष्ट और लजीज, कठोर और नरम, और पेय पदार्थ दाता बन गए, उस कर्म का पालन करके... उनका पुनर्जन्म स्वर्गलोक में हुआ... वहाँ से विमुख होकर और पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेकर, उन्होंने महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त किया: दोनों हाथों, दोनों पैरों, दोनों कंधों और धड़ पर सात उत्तल सतहें।

"इस चिह्न से संपन्न होकर...शासक के रूप में उसे क्या लाभ होता है? उसे उत्तम भोजन और पेय पदार्थ प्राप्त होते हैं, स्वादिष्ट और लजीज, कठोर और नरम...बुद्ध के रूप में भी ऐसा ही होता है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

वह स्वादिष्ट भोजन और उत्तम स्वाद वाले पेय पदार्थों का वितरक था। इस अच्छाई ने उसे सुखद जन्म दिया, और वह नंदन में लंबे समय तक रहा। पृथ्वी पर लौटते समय, वह कोमल, फूले हुए अंगों पर सात राशियों को धारण किए रहा। तब एकत्रित भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की,

वह उत्तम भोजन और पेय का आनंद उठाएगा: न केवल गृहस्थ जीवन में— क्योंकि भले ही वह संसार का त्याग कर दे और सांसारिक जीवन के बंधनों को तोड़ दे, फिर भी उसे स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होगा!

भिक्षुओं, चाहे उनका पिछला जीवन कैसा भी रहा हो...तथागत ने सहानुभूति के चार आधारों के माध्यम से स्वयं को प्रिय बनाया: उदारता, मधुर वाणी, लाभकारी आचरण और निष्पक्षता...इस पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने एक महान व्यक्ति के ये दो लक्षण प्राप्त किए: कोमल और दयालु हाथ और पैर, और जालीदार हाथ और पैर।

"इन दो लक्षणों से युक्त होकर, एक शासक के रूप में उसे क्या लाभ होता है? उसके सभी अनुयायी उसके प्रति सत्कारपूर्ण रहते हैं: ब्राह्मण गृहस्थ, नागरिक और ग्रामीण, खजाने, रक्षक, द्वारपाल... सेवक। बुद्ध के रूप में उसे क्या लाभ होता है? उसके सभी अनुयायी उसके प्रति सत्कारपूर्ण रहते हैं: भिक्षु, भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और महिलाएं, देवता और मनुष्य, असुर, नाग, गंधर्व। यही बुद्ध के रूप में उसका लाभ है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

"दान और सहायता कार्यों के द्वारा, मधुर वाणी और समभाव से, सभी के हित में, मृत्यु के समय वे स्वर्ग गए। जब वे पृथ्वी पर लौटे, तो उनके हाथ-पैर कोमल और कोमल थे, उनकी उंगलियां और पैर की उंगलियां जालीदार फैली हुई थीं। वे देखने में अत्यंत सुंदर थे: इस प्रकार शिशु को ये गुण प्राप्त हुए थे। वे लोगों के शासक होंगे, वफादार अनुयायियों से घिरे रहेंगे। मधुर वाणी वाले, अच्छे कर्मों में लिप्त, सदाचारी और बुद्धिमान आचरण वाले। लेकिन यदि वे इंद्रिय सुखों का त्याग करते हैं, तो एक विजेता के रूप में वे मार्ग का उपदेश देंगे, और उनके वचनों से प्रसन्न होकर, सुनने वाले सभी लोग धर्म के महान और लघु मार्गों में उनका अनुसरण करेंगे!"

भिक्षुओं, चाहे उन्होंने अपने पिछले जन्म में जो भी जीवन जिया हो... तथागत लोगों के कल्याण और धम्म के बारे में लोगों को उपदेश देते हुए, लोगों को इसकी व्याख्या करते हुए, प्राणियों के कल्याण और सुख के वाहक और धम्म के वितरक बने... इस पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: ऊंचे उठे हुए टखने और ऊपर की ओर बढ़ते हुए शरीर के बाल।

"इन लक्षणों से संपन्न होकर...एक शासक के रूप में उसे क्या लाभ होता है? वह संन्यासियों में प्रमुख, अग्रणी और सर्वोच्च बन जाता है...बुद्ध के रूप में, वह सभी प्राणियों में प्रमुख, अग्रणी, सर्वोच्च और सर्वोच्च बन जाता है। यही बुद्ध के रूप में उसका लाभ है।"

भगवान ने यही घोषणा की थी।

इस बारे में कहा गया था

एक बार उन्होंने सभी अच्छाइयों के बारे में बात की, समस्त मानवजाति को ज़ोर-ज़ोर से उपदेश दिया, सभी प्राणियों को आशीर्वाद दिया, और उदारतापूर्वक कानून का पालन करवाया। ऐसे आचरण और ऐसे कर्मों के लिए, स्वर्ग में जन्म उनका पुरस्कार था। यहाँ लौटने पर,

उनके दो चिह्न थे, परम सुख के चिह्न: ऊपर की ओर बढ़ते शरीर के बाल, टखने जो पैर से काफी ऊपर थे। मांस और त्वचा के नीचे निर्मित,

सुगठित और सुंदर। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे, तो उसे अपार धन-संपत्ति प्राप्त होगी; उससे महान कोई पुरुष नहीं मिलेगा; वह जंबुद्वीप के स्वामी के रूप में शासन करेगा। यदि वह अत्यंत बलवान होकर संसार त्याग दे, तो वह सर्वोत्कृष्ट होगा; उससे महान कोई पुरुष नहीं मिलेगा; वह समस्त संसार के स्वामी के रूप में शासन करेगा।

भिक्षुओं, चाहे उनके पिछले जन्म में जो भी रहा हो... तथागत किसी शिल्प, विज्ञान, आचरण या कर्म के कुशल व्याख्याता बन गए, यह सोचते हुए: "मैं बिना अनावश्यक सावधानी के जल्दी से क्या सीख सकता हूँ, क्या प्राप्त कर सकता हूँ और जल्दी से क्या अभ्यास कर सकता हूँ?" ... पृथ्वी पर लौटने पर उन्हें महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त होता है: मृग के समान पैर।

"इस विशेषता से संपन्न होकर...शासक के रूप में वह शीघ्र ही वे सभी चीजें प्राप्त कर लेता है जो एक शासक के लिए उपयुक्त होती हैं, जो उसे प्रसन्न करती हैं और उसके लिए उचित होती हैं। बुद्ध के रूप में भी ऐसा ही है।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

कला और विज्ञान, तौर-तरीके और कर्म: "मुझे आसानी से सीखने दो," वह कहता है। "ऐसे कौशल जो किसी भी जीवित प्राणी को नुकसान न पहुंचाएं।"

उसने कम मेहनत से जल्दी ही सब कुछ सीख लिया। ऐसे कुशल और मधुर कर्मों से उसके अंग सुशोभित और आकर्षक होंगे, जबकि कोमल त्वचा पर बाल घुमावदार रेखाओं में खूबसूरती से खड़े होंगे। ऐसा व्यक्ति हिरण की टांगों वाला होता है: कहते हैं, वह जल्द ही धनवान हो जाएगा। "उसका हर एक बाल उसके लिए सौभाग्य लेकर आएगा, यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे। लेकिन यदि वह संसार त्यागने का निश्चय करे, तो स्पष्ट दृष्टि से वह शीघ्र ही उन सभी चीजों को पा लेगा जो ऐसे उच्च मार्ग के लिए उपयुक्त हैं।"

भिक्षुओं, चाहे उनका पिछला जन्म कैसा भी रहा हो... तथागत ने एक तपस्वी या ब्राह्मण के पास जाकर पूछा, "हे भगवान, क्या अच्छा है और क्या बुरा? क्या निंदनीय है और क्या नहीं? कौन सा मार्ग अपनाना चाहिए और कौन सा नहीं? क्या करने से मुझे चिरस्थायी दुःख और हानि होगी और क्या चिरस्थायी सुख?" ...इस पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने एक महान पुरुष का यह लक्षण प्राप्त किया: उनकी त्वचा इतनी कोमल और चिकनी है कि उन पर धूल भी नहीं चिपकती।

"इस विशेषता से संपन्न होकर...शासक के रूप में वह अत्यंत बुद्धिमान होगा, और संन्यासियों में बुद्धि के मामले में उससे समतुल्य या श्रेष्ठ कोई नहीं होगा...बुद्ध के रूप में वह महान बुद्धि, व्यापक बुद्धि, आनंदमय बुद्धि, तीव्र बुद्धि, मर्मस्पर्शी बुद्धि, विवेकशील बुद्धि से परिपूर्ण होगा, और समस्त प्राणियों में बुद्धि के मामले में उससे समतुल्य या श्रेष्ठ कोई नहीं होगा।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

पुराने समय में, पिछले जन्मों में, वह जानने की उत्सुकता में, एक प्रश्नकर्ता के रूप में तपस्वियों की सेवा करता था: सत्य को जानने के लिए उत्सुक, वह जीवन के लक्ष्य के बारे में उनके वचनों पर ध्यान देता था। इसका फल यह हुआ कि जब उसने मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लिया, तो उसकी त्वचा कोमल और सौम्य थी। एकत्रित भविष्यवक्ताओं ने इस प्रकार घोषणा की: "वह सूक्ष्म अर्थों को समझेगा। यदि वह संसार नहीं छोड़ता है, तो वह एक घूमते हुए चक्र का राजा होगा, सभी सूक्ष्मताओं को जानने में बुद्धिमान, जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता या उससे आगे नहीं निकल सकता। लेकिन यदि वह संसार को त्यागने का चुनाव करता है, तो उसे सर्वोच्च ज्ञान, सर्वोपरि और विशाल ज्ञान प्राप्त होगा।"

भिक्षुओं, चाहे उनका पिछला जीवन कैसा भी रहा हो... तथागत क्रोध रहित, पूर्णतः शांत स्वभाव के थे, और अनेक शब्द बोले जाने के बाद भी वे अपशब्द, उत्तेजित, क्रोधित या आक्रामक नहीं होते थे, न क्रोध, न घृणा, न आक्रोश प्रदर्शित करते थे, बल्कि उत्तम, कोमल

कालीन, लबादे, उत्तम लिनेन, सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्र दान करने की आदत रखते थे... इस पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त किया: स्वर्णमय उज्ज्वल रंग।

इस चिह्न से संपन्न होकर...शासक के रूप में उन्हें ऐसी उत्तम वस्तुएँ प्राप्त होंगी...बुद्ध के समान ही।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

सद्भावना से स्थापित होकर, उन्होंने कोमल और उत्तम वस्त्रों का उपहार दिया। पूर्व जन्मों में उन्होंने इसी प्रकार दान दिया, जैसे वर्षादेव वर्षा बरसाते हैं। इसी अच्छाई ने उन्हें स्वर्ग में जन्म दिलाया, जहाँ उन्होंने पुण्य के फल का आनंद लिया। बीते समय में, उत्तम गढ़े हुए सोने के समान उनका शरीर सभी देवताओं से अधिक सुंदर है, वे महान इंद्र के समान प्रतीत होते हैं। "यदि वे गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हैं, तो वे इस दुष्ट संसार को व्यवस्थित करेंगे, और अपने कर्मों के फल के रूप में उन्हें उत्तम वस्त्र, सर्वोत्तम कालीन और चादरें प्राप्त होंगी। और यदि वे संसार को त्यागने का निर्णय लेते हैं, तो उन्हें ये वस्तुएँ भी प्राप्त होंगी: सद्गुणों के फल कभी व्यर्थ नहीं होते।"

भिक्षुओं, चाहे उनका पिछला जीवन कैसा भी रहा हो... तथागत ने बिछड़े हुए लोगों को उनके रिश्तेदारों, मित्रों और साथियों से मिलाया, जिन्होंने उन्हें बहुत याद किया था, माँ को बच्चे से और बच्चे को माँ से, पिता को बच्चे से और बच्चे को पिता से, भाई को भाई से, भाई को बहन से और बहन को भाई से मिलाया, और उन्हें बड़े हर्षोल्लास के साथ फिर से एक कर दिया... पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त किया: उनके पुरुष अंग एक आवरण में लिपटे हुए हैं।

"इस चिह्न से संपन्न होकर...शासक के रूप में उसके अनेक पुत्र होंगे, एक हजार से अधिक पुत्र, बलवान वीर, शत्रु सेना का नाश करने वाले। बुद्ध के समान ही।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

पूर्वज दिनों में, पूर्व जन्मों में, बिछड़े हुए मित्रों और रिश्तेदारों, यहाँ तक कि साथियों को भी, उन्होंने एक साथ लाया और उन्हें आनंद में एकजुट किया। इस अच्छे कर्म ने उन्हें स्वर्ग का जन्म दिलाया और आनंद और सुख उनका पुरस्कार था। जब वे पृथ्वी पर लौटे, तो उनके अंग आवरण में लिपटे हुए थे। उनके अनेक पुत्र होंगे, एक हजार से अधिक पुत्र उनके हैं, वीर योद्धा, विजेता और आज्ञाकारी भी, जो आम आदमी के लिए आनंद हैं। लेकिन यदि वे संसार छोड़ दें, तो भी उन्हें और अधिक संतानें प्राप्त होंगी: वे जो उनके वचन पर निर्भर हैं। और इसलिए, त्याग किया हो या न किया हो, यह संकेत ऐसे लाभों का संकेत देता है।

प्रथम पाठ खंड का अंत]
भिक्षुओं, चाहे उनके पिछले जन्म में जो भी रहा हो... तथागत ने लोगों के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव को जाना, प्रत्येक को स्वयं में जाना और यह भी जाना कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न है: "यह व्यक्ति इस प्रकार के योग्य है, वह व्यक्ति इस प्रकार के योग्य है," इस प्रकार उन्होंने उनमें भेद किया... पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: उनका शरीर बरगद के वृक्ष के समान सुडौल है और खड़े होकर, बिना झुके, वे अपने दोनों हाथों से अपने घुटनों को छू और रगड़ सकते हैं।

"इन गुणों से युक्त होकर...शासक के रूप में वह धनी, अपार संपत्ति और संसाधनों से संपन्न होगा, उसके पास सोने-चांदी का भरपूर खजाना होगा, हर प्रकार की वस्तुएँ होंगी और उसका अन्न भंडार अनाज से भरा होगा। बुद्ध के रूप में वह धनवान और समृद्ध होगा: और ये उसके खजाने होंगे: आस्था, नैतिकता, नैतिक लज्जा, नैतिक भय, विद्या, त्याग और ज्ञान।"

भगवान ने यही कहा:

इस बारे में कहा गया था:

तराजू में तौलकर, लोगों के हित को ध्यान में रखते हुए, यह देखकर कि "यह योग्य है और वह योग्य है," उसने उनका न्याय किया। अब वह अडिग खड़ा हो सकता है और अपने दोनों हाथों से अपने घुटनों को छू सकता है, और उसका वृक्ष के समान तना और ऊँचाई उसके पुण्य कर्मों का फल है। जो लोग चिह्नों और संकेतों को पढ़ते हैं और इस विद्या के विशेषज्ञ हैं, वे कहते हैं: "गृहस्थ जीवन के लिए

उपयुक्त वस्तुएँ उसे बचपन में बहुतायत में मिलेंगी, इस संसार के स्वामी के समान सांसारिक धन उसे प्राप्त होगा, जो एक गृहस्थ के लिए उचित है। परन्तु यदि वह सांसारिक धन का त्याग कर दे, तो उसे अतुलनीय धन प्राप्त होगा।"

भिक्षुओं, तथागत अपने पिछले जन्म में चाहे जिस भी जीवन में रहे हों...उन्होंने अनेकों के कल्याण, उनके लाभ, सुख-सुविधाओं और बंधनों से मुक्ति की कामना की, और यह सोचा कि वे कैसे आस्था, नैतिकता, ज्ञान, त्याग, धम्म, बुद्धि, धन-संपत्ति, द्विपद और चौपद प्राणियों, पत्नियों, बच्चों, नौकरों, कामगारों और सहायकों, रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों में वृद्धि कर सकते हैं...पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये तीन लक्षण प्राप्त किए: उनके शरीर का अगला भाग सिंह के समान है, उनके कंधों के बीच कोई गड्ढा नहीं है, और उनका धड़ समरूप रूप से गोल है।

"इन लक्षणों से युक्त होकर...शासक के रूप में वह कुछ भी नहीं खो सकता: धन-संपत्ति, दो पैरों वाले और चार पैरों वाले प्राणी, पत्नियाँ और बच्चे—कुछ भी न खोकर वह सब कुछ में सफल होगा। बुद्ध के रूप में वह कुछ भी नहीं खो सकता: आस्था, नैतिकता, विद्या, त्याग या ज्ञान—कुछ भी न खोकर वह सब कुछ में सफल होगा।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

"विश्वास, नैतिकता, ज्ञान, बुद्धि, संयम और न्याय, और भी बहुत सी अच्छी चीजें। धन, संपत्ति, पत्नियां और पुत्र, पशुधन, रिश्तेदार, मित्र, सहकर्मी, बल, सौंदर्य और सुख: ये सब चीजें वह दूसरों के लिए चाहता था कि वे इन्हें बनाए रखें और कभी न खोएं। इसलिए, सिंहमुखी रूप में जन्मा, खोखली पीठ वाला नहीं, बल्कि गोल-मटोल। पिछले अच्छे कर्मों से भरपूर, जन्म से ही ऐसे चिह्नों से युक्त, वह हर प्रकार की हानि से बचा रहा। गृहस्थ जीवन में वह धन-संपत्ति में समृद्ध है, पत्नियों, पुत्रों और चौपायों से संपन्न है। या यदि वह त्यागी हो, तो उसके पास कुछ भी नहीं है, फिर भी उसे परम ज्ञान प्राप्त है, जहां असफलता का कोई स्थान नहीं है।"

भिक्षुओं, तथागत अपने पिछले जन्म में जिस भी रूप में रहे हों...वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हाथ, पत्थर, लाठी या तलवार से किसी भी प्राणी को हानि पहुँचाने से परहेज किया...पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने इस महान पुरुष का यह लक्षण प्राप्त किया: उनकी स्वाद इंद्रिय परिपूर्ण है। वे अपनी जीभ की नोक से जिस भी चीज को स्पर्श करते हैं, उसका स्वाद उनके गले में महसूस होता है और वह स्वाद चारों ओर फैल जाता है।

"इस विशेषता से युक्त होने के कारण...शासक के रूप में उन्हें कम कष्ट या बीमारी होगी, उनका पाचन अच्छा होगा, न तो उन्हें अधिक ठंड लगेगी और न ही अधिक गर्मी। इसी प्रकार, बुद्ध के रूप में वे समभाव वाले और परिश्रम सहने वाले होंगे।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था,

"हाथ, लाठी या पत्थर से किसी को हानि न पहुँचाने वाला, तलवार से किसी की हत्या न करने वाला, निर्दोष, किसी को बंधन में न डालने वाला, सुखी जन्म से उसने अपने अच्छे कर्मों का फल प्राप्त किया, और फिर पुनर्जन्म लेकर, उसकी स्वाद कलिकाएँ खड़ी हो गईं और अच्छी तरह से स्थापित हो गईं। जो लोग इन लक्षणों को जानते हैं वे कहते हैं: 'उसे महान सुख प्राप्त होगा, चाहे वह साधारण व्यक्ति हो या घुमक्कड़: यही इस चिन्ह का अर्थ है।'"

भिक्षुओं, तथागत अपने पिछले जन्म में लोगों को तिरछी नज़रों से, अप्रत्यक्ष रूप से या छिपकर नहीं देखते थे, बल्कि सीधे, खुले और स्पष्ट रूप से, और दयालु दृष्टि से देखते थे...और पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: गहरी नीली आँखें और गाय जैसी पलकें।

"इन गुणों से युक्त होने के कारण...शासक के रूप में वे आम लोगों के बीच प्रेम से देखे जाएँगे; वे ब्राह्मण गृहस्थों, नागरिकों और ग्रामीणों, कोषाध्यक्षों, रक्षकों, द्वारपालों और सेवकों के बीच लोकप्रिय और प्रिय होंगे। बुद्ध के रूप में वे भिक्षुओं, भिक्षुणियों, गृहस्थ पुरुषों और महिलाओं, देवताओं और मनुष्यों, असुरों, नागों और गंधबत्तों के बीच लोकप्रिय और प्रिय होंगे।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था

तिरछी नज़रों से न देखते हुए, न ही दृष्टि फेरते हुए, वह लोगों को सीधे और खुले दिल से देखता है, स्पष्टवादिता और दयालु दृष्टि से। सुखद स्थान पर पुनर्जन्म लेकर, वह वहाँ अपने अच्छे कर्मों का फल भोगता है। यहाँ पुनर्जन्म लेकर, उसकी पलकें गाय जैसी हैं; उसकी आँखें नीली हैं। जो लोग इन बातों को जानते हैं, वे (इन लक्षणों की कुशलता से व्याख्या करते हुए) कहते हैं, "जिस बच्चे की ऐसी सुंदर आँखें होंगी, उसे सब प्रसन्नता से देखेंगे। यदि वह गृहस्थ है, तो वह सबकी दृष्टि को भाएगा। यदि वह तपस्वी बन जाता है, तो लोगों के दुखों का निवारण करने वाले के रूप में प्रिय होगा।"

"भिक्षुओं, तथागत अपने पिछले जन्म में जिस भी रूप में रहे हों... वे कौशल और व्यवहार में सर्वोपरि थे, शरीर, वाणी और विचार की सही क्रिया में अग्रणी थे, उदारता, सदाचार, उपवासों के पालन, माता-पिता, तपस्वियों, ब्राह्मणों और कुल के मुखिया का सम्मान करने में और अन्य विभिन्न उचित गतिविधियों में अग्रणी थे... पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष का यह चिह्न प्राप्त किया: एक शाही पगड़ी जैसा सिर।"

"इस चिह्न से संपन्न होकर...शासक के रूप में उन्हें ब्राह्मण गृहस्थों और नागरिकों की निष्ठा प्राप्त होगी...बुद्ध के रूप में उन्हें भिक्षुओं और भिक्षुणियों की निष्ठा प्राप्त होगी..." भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

उन्होंने आचरण में मार्गदर्शिता दिखाई, धार्मिक जीवन जीने का दृढ़ संकल्प लिया। इस प्रकार लोग उनके प्रति वफादार रहे और उन्हें स्वर्गिक पुरस्कार प्राप्त हुआ। और उस पुरस्कार के बाद, वे पगड़ी पहने हुए पुनः प्रकट हुए। जो लोग संकेतों को जानते हैं, उन्होंने घोषणा की: वे मनुष्यों में प्रथम होंगे। सभी इस जीवन में उनकी सेवा करेंगे, जैसा कि पहले हुआ था। यदि वे धनवान कुलीन व्यक्ति होंगे, तो उन्हें अपने लोगों की सेवा प्राप्त होगी, लेकिन यदि वे संसार छोड़ दें, तो यह उपदेशक एक गुरु होंगे, और सभी लोग उनके द्वारा प्रचारित शिक्षा को सुनने के लिए उमड़ पड़ेंगे।

भिक्षुओं, तथागत ने अपने पिछले जन्म में चाहे जो भी जीवन जिया हो... झूठे वचनों का त्याग करके, झूठ को छोड़कर सत्य के वक्ता बन गए, सत्य से जुड़े रहे, विश्वसनीय, सुसंगत और संसार को धोखा न देने वाले बने... पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने एक महान व्यक्ति के ये दो लक्षण प्राप्त किए: उनके शरीर के बाल अलग-अलग थे, प्रत्येक रोमछिद्र में एक-एक बाल था और उनकी भौहों के बीच के बाल रुई की तरह सफेद और मुलायम थे।

"इन लक्षणों से युक्त होने के कारण...शासक के रूप में ब्राह्मण गृहस्थ उनका पालन करेंगे...बुद्ध के रूप में भिक्षु उनका पालन करेंगे..." भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया:

पिछले जन्मों में किए अपने वादे के प्रति सच्चे, वे वाणी के सच्चे और झूठ से रहित थे। उन्होंने कभी अपना वचन नहीं तोड़ा, वे सत्य और ईमानदारी से प्रसन्न होते थे। उनके माथे के बीच सफेद, चमकदार और रुई के समान कोमल बाल थे, और एक रोमछिद्र से दो बाल नहीं उगते थे, बल्कि प्रत्येक बाल अलग-अलग दिखाई देता था। एकत्रित ज्योतिषियों ने (उन चिह्नों को कुशलता से पढ़कर) यह घोषणा की कि ऐसे चिह्न और ऐसे बालों के कारण सभी उनका पालन करेंगे; यदि वे अभी भी गृहस्थ हैं, तो लोग उनके पिछले कर्मों के कारण उनका सम्मान करेंगे; यदि वे संन्यासी और निर्धन हैं, तो लोग उन्हें बुद्ध के रूप में पूजेंगे।

भिक्षुओं, तथागत ने अपने पिछले जन्म में चाहे जो भी जीवन जिया हो... निंदा का त्याग करते हुए, उससे दूर रहे, यहाँ सुनी हुई बातों को न तो दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए दोहराते रहे, न ही वहाँ सुनी हुई बातों को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए दोहराते रहे... इस प्रकार वे मतभेदियों के बीच सुलह कराने वाले और एकता में रहने वालों को प्रोत्साहित करने वाले थे, शांति में आनंदित होते थे, उससे प्रेम करते थे, उसमें प्रसन्न होते थे, शांति के लिए आवाज उठाते थे। झूठे वचनों का त्याग करते हुए, तपस्वी गौतम झूठे वचनों से दूर रहते हैं, सत्य का वाचक, भरोसेमंद, विश्वसनीय, संसार को धोखा न देने वाला। द्वेषपूर्ण वचनों का त्याग करते हुए, वे यहाँ सुनी हुई बातों को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए न तो वहाँ दोहराते हैं, न ही वहाँ सुनी हुई बातों को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए दोहराते हैं। इस प्रकार वे मतभेदियों के बीच सुलह कराने वाले और एकता में रहने वालों को प्रोत्साहित करने वाले, शांति में आनंदित होते हैं, उससे प्रेम करते हैं, उसमें प्रसन्न होते हैं, शांति के लिए आवाज उठाते हैं। कठोर भाषा का त्याग करके, वे उससे परहेज करते हैं। वे वही बोलते हैं जो निर्दोष,

सुनने में मधुर, मनभावन, हृदय को छूने वाला, शिष्ट और जनमानस को भाने वाला होता है। व्यर्थ की बातों का त्याग करके, वे उचित समय पर, सही और सटीक, धर्म और अनुशासन की बातें बोलते हैं। वे ऐसे वक्ता हैं जिनके शब्द अनमोल, समयबद्ध, तर्कसंगत, सुस्पष्ट और लक्ष्य से जुड़े होते हैं। पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: चालीस दांत, जिनके बीच कोई अंतराल नहीं।

"इन लक्षणों से युक्त होने के कारण...शासक, उसके अनुयायी, ब्राह्मण गृहस्थ, नागरिक...आपस में विभाजित नहीं होंगे। इसी प्रकार, बुद्ध के रूप में, उनके अनुयायी, भिक्षु, भिक्षुणियां...आपस में विभाजित नहीं होंगे।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

वह ऐसे बुरे शब्द नहीं बोलता जो कलह पैदा करें या उसे बढ़ाएं, कलह और कड़वाहट को लंबा खींचें, और अच्छी दोस्ती को खत्म कर दें। उसने जो कुछ भी कहा, वह शांति के लिए था, और टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने के लिए था। उसने अपनी शक्ति का उपयोग सभी कलह को समाप्त करने के लिए किया, सद्भाव ही उसका आनंद था। पुनर्जन्म लेकर, उसने अपने अच्छे कर्मों का फल भोगा। पृथ्वी पर लौटने पर, उसके दांत पास-पास आ गए, चालीस दांत मजबूती से जड़े हुए थे। यदि कोई धनी कुलीन व्यक्ति है, तो उसकी प्रजा कोमल होगी; यदि कोई संन्यासी है - जो कलंक से मुक्त है, तो उसका झुंड अच्छी तरह से व्यवस्थित होगा।

भिक्षुओं, तथागत ने अपने पिछले जन्म में चाहे जो भी किया हो... कठोर वाणी का त्याग करके उससे परहेज किया, और निर्दोष, कानों को भाने वाली, मनभावन, हृदय को छूने वाली, शिष्ट, और जनमानस को प्रसन्न करने वाली बातें बोलीं... पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: उनकी जीभ बहुत लंबी थी, और उनकी आवाज ब्रह्मा के समान, करविका पक्षी के समान थी।

"इन गुणों से युक्त होने के कारण...शासक के रूप में उनकी वाणी प्रभावशाली होगी, सभी प्रजा उनके वचनों को दिल से ग्रहण करेगी, बुद्ध के रूप में भी उनकी वाणी प्रभावशाली होगी: सभी भिक्षु और भिक्षुणियां...उनके वचनों को दिल से ग्रहण करेंगे।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

वह अपशब्द बोलने वाला नहीं है, कठोर और पीड़ादायक बातें करने वाला नहीं है, जो लोगों को दुख पहुंचाती हों। उसकी वाणी कोमल, दयालु और मधुर है, जो लोगों के हृदयों को भाती है और उनके कानों को सुहाती है। सुखमय लोक में पुनर्जन्म लेकर, उसने अपने अच्छे कर्मों का फल भोगा। अपने कर्मों का फल चखने के बाद, ब्रह्ममय वाणी से संपन्न होकर, वह पृथ्वी पर लौट आया, और उसकी वाणी भी मंद है। और उसकी कही बातों में वजन होगा। यदि वह एक साधारण व्यक्ति है, तो वह बहुत समृद्ध होगा। लेकिन यदि यह व्यक्ति इस संसार को छोड़ दे, तो लोग उसके शब्दों को दिल से मानेंगे और उसकी हर बात को महत्व देंगे।

भिक्षुओं, तथागत ने अपने पिछले जन्म में चाहे जो भी किया हो...व्यर्थ की बातों को त्यागकर, सही समय पर, सही और सटीक बात, धम्म और अनुशासन, और लाभ से संबंधित बातें ही बोलीं...पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष का यह लक्षण प्राप्त किया: शेर जैसे जबड़े।

"इस विशेषता से संपन्न होकर...शासक के रूप में उन्हें कोई भी मानव शत्रु या विरोधी पराजित नहीं कर सकता। बुद्ध के रूप में उन्हें भीतर या बाहर से किसी भी शत्रु या शत्रुतापूर्ण वस्तु से, कामवासना, घृणा, भ्रम से, किसी तपस्वी या ब्राह्मण से, देव, मार, ब्रह्मा या संसार में किसी भी वस्तु से पराजित नहीं किया जा सकता।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था:

"व्यर्थ की बातें या मूर्खता नहीं, उनका ध्यान भटकता था। हानिकारक बातों को उन्होंने त्याग दिया और केवल सभी मनुष्यों की भलाई की बात की। इसलिए मृत्यु के समय वे स्वर्ग गए, अपने अच्छे कर्मों का फल चखने के लिए। पृथ्वी पर लौटकर, उनका जबड़ा उस व्यक्ति के समान था जो दो पैरों वाले सभी प्राणियों का स्वामी है। वे एक अजेय राजा होंगे, मनुष्यों के स्वामी, सर्वशक्तिमान, त्रिविध स्वर्ग

के स्वामी के समान, देवताओं में सबसे श्रेष्ठ। गंधर्व, सक्क, असुर उन्हें गिराने के व्यर्थ प्रयास करेंगे। वे संसार के सभी कोनों में एक साधारण मनुष्य के रूप में विराजमान रहेंगे।"

भिक्षुओं, तथागत ने अपने पिछले जन्म में चाहे जो भी जीवन जिया हो... उन्होंने गलत आजीविका को त्यागकर सही आजीविका का मार्ग अपनाया, और छल-कपट, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, कपट और बेईमानी, चोट पहुँचाने, हत्या करने, कैद करने, लूटपाट और बलपूर्वक माल छीनने से परहेज किया। पृथ्वी पर लौटने पर उन्होंने महान पुरुष के ये दो लक्षण प्राप्त किए: समकोण दांत और चमकीले नुकीले दांत।

"इन लक्षणों से युक्त होकर, यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे तो वह चक्र चलाने वाला सम्राट होगा... उसके अनुयायी पवित्र होंगे... बुद्ध के समान, उसके अनुयायी... भिक्षु, भिक्षुणियां... पवित्र होंगे।" भगवान ने यही कहा।

इस बारे में कहा गया था।

उन्होंने कुटिल जीवन का त्याग कर शुद्ध और धर्मपरायण मार्ग अपनाया। उन्होंने हानिकारक चीजों को त्याग दिया और केवल जन कल्याण के लिए कार्य किया। स्वर्ग उन्हें उनके कर्मों का मीठा प्रतिफल देता है, जो बुद्धिमान और कुशल लोगों की प्रशंसा के पात्र हैं। वे त्रिस्वरूप स्वर्ग के स्वामी की तरह सभी सुखों और आनंदों में भागीदार होते हैं। सद्‌गुणों के फल के अवशेष के रूप में मनुष्य रूप में अवतरित होकर वे समरूप दांत, पवित्रता और चमक प्राप्त करते हैं। एकत्रित भविष्यवक्ताओं ने इस प्रकार घोषणा की कि वे मानव जाति में सबसे बुद्धिमान होंगे और उनके अनुयायी शुद्ध होंगे, जिनके समरूप दांत पक्षी के पंखों की तरह चमकेंगे। राजा के रूप में उनके शुद्ध अनुयायी उनके, अपने स्वामी के आदेश का पालन करेंगे। बलपूर्वक उत्पीड़ित न होकर, वे जन कल्याण और आनंद के लिए प्रयास करेंगे। लेकिन यदि वे एक घुमक्कड़ के रूप में निवास करते हैं, बुराई से मुक्त, सभी वासनाओं से मुक्त, पर्दा हटाकर; पीड़ा और थकान दूर हो जाने पर; वे इस संसार और परलोक को देखेंगे, और वहाँ साधारण और त्यागी लोगों को देखेंगे जो उनके द्वारा सिखाए गए अनुसार उन अशुद्ध, बुरी चीजों को त्यागने के लिए एकत्रित होते हैं। इस प्रकार उनके अनुयायी शुद्ध होते हैं। वह उनके हृदयों से बुराई और भ्रष्ट प्रवृत्तियों को दूर करता है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.8 सिगालोवाड़ा सुत्त (डीएन31)

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान बुद्ध राजगृह के पास स्थित बांस के जंगल, गिलहरियों के अभयारण्य में निवास कर रहे थे।

उस समय, गृहस्थ परिवार के पुत्र युवा सिगाला ने सुबह जल्दी उठकर, भीगे हुए वस्त्रों और भीगे बालों के साथ राजगृह से प्रस्थान किया और पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नादिर और ज़ेनिथ - विभिन्न दिशाओं में हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

तब परम पूज्य ने दोपहर के समय वस्त्र धारण करके, भिक्षापात्र और वस्त्र लेकर राजगृह में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। वहाँ उन्होंने युवा सिगाला को इस प्रकार पूजा करते हुए देखा और उससे इस प्रकार कहा:

"हे गृहस्थ, तुम सुबह सवेरे उठकर, भीगे वस्त्रों और भीगे बालों के साथ राजगृह से प्रस्थान करके, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, निम्नतम और उच्चतम दिशाओं की हाथ जोड़कर उपासना क्यों करते हो?"

"हे भगवान, मेरे पिता ने मरते समय मुझसे कहा: हे पुत्र, तुम इन छह दिशाओं की उपासना करना। और हे भगवान, मैं अपने पिता के वचन का आदर, श्रद्धा और सम्मान करते हुए सुबह सवेरे उठकर, भीगे वस्त्रों और भीगे बालों के साथ राजगृह छोड़कर, हाथ जोड़कर इन छह दिशाओं की उपासना करता हूँ।"

"हे गृहस्थ, ऐसा नहीं है कि छह दिशाओं की पूजा कुलीन वर्ग के अनुशासन के अनुसार की जानी चाहिए।"

"हे भगवान, श्रेष्ठ साधक के अनुशासन में छह दिशाओं की पूजा कैसे की जानी चाहिए? हे भगवान, यदि आप मुझे यह सिद्धांत सिखाएँ कि श्रेष्ठ साधक के अनुशासन में छह दिशाओं की पूजा कैसे की जानी चाहिए, तो यह अच्छा होगा।"

"अच्छा, हे युवा गृहस्थ, सुनो और इसे अच्छी तरह याद रखो; मैं बोलूंगा।" — "बहुत अच्छा, भगवान," युवा सिगाला ने उत्तर दिया।

और परमेश्वर ने इस प्रकार कहा:

"क्योंकि, हे गृहस्थ, जैसे कि महान शिष्य:
(1) उसने आचरण में चारों दोषों का निवारण कर लिया है,
(2) क्योंकि वह चारों तरीकों से कोई बुरा कर्म नहीं करता है,
(3) क्योंकि वह धन को नष्ट करने के छह मार्गों का अनुसरण नहीं करता है।
इस प्रकार, वह इन चौदह बुराइयों से बचकर छहों दिशाओं को पार कर लेता है और दोनों लोकों में विजय के मार्ग पर अग्रसर होता है: उसे इस लोक और परलोक दोनों में कृपा प्राप्त होती है। मृत्यु के बाद शरीर के नष्ट होने पर, वह एक सुखमय स्वर्गलोक में जन्म लेता है।

(1) "उसने आचरण में किन चार दोषों का निवारण किया है? गृहस्थ, जीवन का विनाश एक दोष है, और इसी प्रकार चोरी, यौन दुराचार और झूठ बोलना भी दोष हैं। ये चार दोष हैं जिनका उसने निवारण किया है।"

इस प्रकार परमपिता परमेश्वर ने कहा। और जब गुरु ने इस प्रकार कहा, तो उन्होंने फिर कहा:

हत्या, चोरी, झूठ बोलना और व्यभिचार,
इन चार बुराइयों की बुद्धिमान लोग कभी प्रशंसा नहीं करते।
(2) "किन चार तरीकों से मनुष्य कोई बुरा कर्म नहीं करता? इच्छा से प्रेरित होकर मनुष्य बुराई करता है। क्रोध से प्रेरित होकर मनुष्य बुराई करता है। अज्ञान से प्रेरित होकर मनुष्य बुराई करता है। भय से प्रेरित होकर मनुष्य बुराई करता है।"

लेकिन चूंकि श्रेष्ठ शिष्य इच्छा, क्रोध, अज्ञान और भय से प्रेरित नहीं होता, इसलिए वह कोई बुराई नहीं करता।

इस प्रकार परम पूज्य ने कहा। और जब गुरु ने इस प्रकार कहा, तो उन्होंने फिर कहा: साहसी

जो कोई इच्छा, घृणा, भय
या अज्ञान के कारण धर्म का उल्लंघन करता है, उसकी सारी महिमा घटते चंद्रमा की तरह
क्षीण हो जाती है । जो कोई इच्छा, घृणा, भय या अज्ञान के कारण धर्म का उल्लंघन नहीं करता, उसकी सारी महिमा बढ़ते चंद्रमा की तरह निरंतर बढ़ती रहती है ।

(3) "धन को नष्ट करने के वे छह तरीके कौन से हैं जिनका वह अनुसरण नहीं करता है?"
(क) मादक पदार्थों का सेवन जिससे मोह और लापरवाही उत्पन्न होती है;
(ख) अनुचित समय पर सड़कों पर घूमना;
(ग) नाट्य प्रदर्शनों में बार-बार जाना;
(घ) जुए में लिप्त होना जिससे लापरवाही उत्पन्न होती है;
(ङ) बुरे साथियों की संगति;
(च) आलस्य की आदत।
(3क) "हे गृहस्थ, मादक पदार्थों के सेवन से ये छह बुरे परिणाम होते हैं, जो मोह और लापरवाही का कारण बनते हैं:
(i) धन की हानि,
(ii) झगड़ों में वृद्धि,
(iii) रोग के प्रति संवेदनशीलता,
(iv) बदनामी कमाना,
(v) शरीर का बेशर्म प्रदर्शन,

(vi) बुद्धि का कमजोर होना।
(3ख) "हे गृहस्थ, सुबह-सुबह सड़कों पर घूमने के ये छह बुरे परिणाम होते हैं:
(i) वह स्वयं असुरक्षित और निरसंरक्षित है,
(ii) उसकी पत्नी और बच्चे असुरक्षित और निरसंरक्षित हैं,
(iii) उसकी संपत्ति असुरक्षित और निरसंरक्षित है,
(iv) उस पर बुरे कर्मों का संदेह है,
(v) वह झूठी अफवाहों का शिकार है,
(vi) उसे कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
(3c) "हे गृहस्थ, नाट्यकला में बार-बार जाने के ये छह बुरे परिणाम होते हैं। वह हमेशा सोचता रहता है:
(i) नृत्य कहाँ है?
(ii) गायन कहाँ है?
(iii) संगीत कहाँ है?
(iv) पाठ कहाँ है?
(v) झांझ कहाँ बजाई जाती है?
(vi) मिट्टी के बर्तन कहाँ बजाए जाते हैं?
(3) "हे गृहस्थ, जुए में लिप्त होने के ये छह बुरे परिणाम हैं:
(i) विजेता घृणा का पात्र बनता है,
(ii) हारने वाला खोई हुई संपत्ति पर शोक करता है,
(iii) धन की हानि होती है,
(iv) अदालत में उसके वचन पर भरोसा नहीं किया जाता,
(v) उसके मित्र और साथी उसे तुच्छ समझते हैं,
(vi) उससे विवाह का प्रस्ताव नहीं रखा जाता; क्योंकि लोग कहते हैं कि वह जुआरी है और पत्नी की देखभाल करने के योग्य नहीं है।
(3e) "हे गृहस्थ, बुरे साथियों के साथ संगति करने के ये छह बुरे परिणाम होते हैं, अर्थात्: कोई जुआरी, कोई व्यभिचारी, कोई शराबी, कोई ठग, कोई धोखेबाज, कोई उपद्रवी उसका मित्र और साथी होता है।
(3f) "हे गृहस्थ, आलस्य में लिप्त रहने के ये छह बुरे परिणाम होते हैं:
वह कोई काम नहीं करता और कहता है:
(i) कि बहुत ठंड है,
(ii) कि बहुत गर्मी है,
(iii) कि शाम को बहुत देर हो चुकी है,
(iv) कि सुबह बहुत जल्दी है,
(v) कि उसे बहुत भूख लगी है,
(vi) कि उसका पेट बहुत भरा हुआ है।
"इस तरह से जीने से वह कई कर्तव्यों को पूरा नहीं कर पाता, उसे नई दौलत नहीं मिलती और जो दौलत उसने अर्जित की है वह धीरे-धीरे खत्म हो जाती है।"
इस प्रकार परमपिता परमेश्वर ने कहा। और जब गुरु ने इस प्रकार कहा, तो उन्होंने फिर कहा:
"एक व्यक्ति बोतल का दोस्त होता है; एक व्यक्ति 'दोस्त, दोस्त' केवल सामने से ही कहता है; एक व्यक्ति तभी दोस्त और सहयोगी बनता है जब यह फायदेमंद हो।"
"सूर्योदय तक सोना, व्यभिचार, क्रोध, द्वेष, बुरे साथी, लोभ—ये छह कारण मनुष्य को बर्बाद कर देते हैं।"
"जिस व्यक्ति के साथी और मित्र दुष्ट होते हैं, वह दुष्टतापूर्ण मार्गों की ओर प्रवृत्त हो जाता है, वह दोनों लोकों में - इस लोक में और अगले लोक में - विनाश की ओर अग्रसर होता है।"
"जुआ, स्त्रियाँ, शराब, नृत्य, गायन, दिन में सोना, अनुचित समय पर टहलना, बुरे साथी, लालच—ये नौ कारण मनुष्य को बर्बाद कर देते हैं।"
जो व्यक्ति जुए से खेलता है और मादक पदार्थों का सेवन करता है, उन स्त्रियों के पास जाता है जो दूसरों को अपने जीवन के समान प्रिय होती हैं, नीच लोगों की संगति करता है और बड़ों की संगति नहीं करता — वह घटते हुए चंद्रमा की तरह ही पतन की ओर जाता है।
जो व्यक्ति शराबी, गरीब, निर्धन है, शराब पीते हुए भी प्यासा रहता है, शराबखानों में बार-बार जाता है, पानी में पत्थर की तरह कर्ज में डूब जाता है, और शीघ्र ही अपने परिवार को बदनाम करता है।
जो व्यक्ति आदत से दिन में सोता है, देर रात तक जागता है, हमेशा नशे में रहता है और व्यभिचारी होता है, वह गृहस्थ जीवन जीने के योग्य नहीं है।

"जो लोग कहते हैं कि बहुत गर्मी है, बहुत ठंड है, बहुत देर हो चुकी है, और काम अधूरे छोड़ देते हैं, ऐसे लोगों के हाथ से अच्छे काम करने के अवसर निकल जाते हैं।"
लेकिन जो व्यक्ति ठंड या गर्मी को घास के तिनके से अधिक महत्व नहीं देता और अपने कर्तव्यों का पूरी निष्ठा से निर्भीकता से निर्वाह करता है, वह सुख से वंचित नहीं होता।
"हे गृहस्थ, इन चारों को मित्रों के वेश में शत्रु समझा जाना चाहिए।"
(1) जो मित्र की संपत्ति हड़प लेता है,
(2) जो दिखावटी सेवा करता है,
(3) जो चापलूसी करता है,
(4) जो विनाश लाता है।
(1) "हे गृहस्थ, चार तरीकों से, जो व्यक्ति संपत्ति हड़पता है उसे मित्र के वेश में शत्रु समझा जाना चाहिए:
(i) वह अपने मित्र की संपत्ति हड़प लेता है,
(ii) वह थोड़ा देता है और बहुत कुछ मांगता है,
(iii) वह भयवश अपना कर्तव्य निभाता है,
(iv) वह अपने लाभ के लिए संगति करता है।
(2) "हे गृहस्थ, चार तरीकों से, दिखावटी समर्थन करने वाले को मित्र के वेश में शत्रु समझा जाना चाहिए:
(i) वह अतीत के बारे में मैत्रीपूर्ण बातें करता है,
(ii) वह भविष्य के बारे में मैत्रीपूर्ण बातें करता है,
(iii) वह खोखले शब्दों से किसी का पक्ष जीतने की कोशिश करता है,
(iv) जब सेवा का अवसर आता है, तो वह अपनी असमर्थता व्यक्त करता है।
(3) "हे गृहस्थ, चापलूसी करने वाले को चार तरीकों से मित्र के वेश में शत्रु समझा जाना चाहिए:
(i) वह अपने मित्र के बुरे कर्मों का समर्थन करता है,
(ii) वह अपने मित्र के अच्छे कर्मों का विरोध करता है,
(iii) वह उसकी उपस्थिति में उसकी प्रशंसा करता है,
(iv) वह उसकी अनुपस्थिति में उसकी बुराई करता है।
(4) "हे गृहस्थ, विनाश लाने वाले को मित्र के वेश में शत्रु समझा जाना चाहिए:
(i) वह ऐसे मादक पदार्थों के सेवन में साथ देता है जो मोह और लापरवाही का कारण बनते हैं,
(ii) वह अनुचित समय पर सड़कों पर घूमने में साथ देता है,
(iii) वह नाट्य प्रदर्शनों में बार-बार जाने में साथ देता है,
(iv) वह जुए में लिप्त होने में साथ देता है जो लापरवाही का कारण बनता है।"
इस प्रकार परमपिता परमेश्वर ने कहा। और जब गुरु ने इस प्रकार कहा, तो उन्होंने फिर कहा:
जो मित्र स्वार्थपरक होता है,
जो मित्र दिखावटी समर्थन करता है,
जो मित्र चापलूसी करता है,
जो मित्र विनाश लाता है,
इन चारों को बुद्धिमान शत्रु मानते हैं और
इनसे दूर रहकर ही बच निकलते हैं, क्योंकि ये खतरे के रास्ते हैं।
"इन चारों युवा गृहस्थों को स्नेही मित्रों के रूप में समझा जाना चाहिए:
(1) जो सहायक हो,
(2) जो सुख-दुख में एक समान हो,
(3) जो अच्छी सलाह दे,
(4) जो सहानुभूति दिखाए।
(1) "हे गृहस्थ, एक सहायक को चार तरीकों से स्नेही मित्र के रूप में समझा जाना चाहिए:
(i) वह लापरवाहों की रक्षा करता है,
(ii) वह लापरवाहों के धन की रक्षा करता है,
(iii) जब आप खतरे में होते हैं तो वह शरणस्थल बन जाता है,
(iv) जब प्रतिबद्धताएं होती हैं तो वह आपको आवश्यकता से दुगुनी आपूर्ति प्रदान करता है।
(2) "हे गृहस्थ, सुख-दुख में एक समान रहने वाले व्यक्ति को चार प्रकार से स्नेही मित्र समझा जाना चाहिए:
(i) वह अपने रहस्य प्रकट करता है,

(ii) वह अपने रहस्य छुपाता है,
(iii) विपत्ति में वह किसी का साथ नहीं छोड़ता,
(iv) वह किसी के लिए अपना जीवन भी बलिदान कर देता है।
(3) "हे गृहस्थ, अच्छे परामर्श देने वाले व्यक्ति को चार प्रकार से स्नेही मित्र समझा जाना चाहिए:
(i) वह बुराई करने से रोकता है,
(ii) वह अच्छाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है,
(iii) वह स्वयं को अज्ञात बातों की जानकारी देता है,
(iv) वह स्वर्ग का मार्ग दिखाता है।
(4) "हे गृहस्थ, सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति को चार तरीकों से स्नेही मित्र समझा जाना चाहिए:
(i) वह किसी के दुर्भाग्य में प्रसन्न नहीं होता,
(ii) वह किसी की समृद्धि में प्रसन्न होता है,
(iii) वह दूसरों को अपने बारे में बुरा बोलने से रोकता है,
(iv) वह उन लोगों की प्रशंसा करता है जो अपने बारे में अच्छा बोलते हैं।
इस प्रकार परमपिता परमेश्वर ने कहा। और जब गुरु ने इस प्रकार कहा, तो उन्होंने फिर कहा:
वह मित्र जो सहायक होता है,
सुख-दुख में साथ देने वाला मित्र,
अच्छी सलाह देने वाला मित्र,
सहानुभूति रखने वाला मित्र -
इन चारों को बुद्धिमान लोग मित्र के रूप में
उसी प्रकार सम्मानपूर्वक देखते और संजोते हैं
जैसे एक माँ अपने बच्चे को।
बुद्धिमान और गुणी व्यक्ति धधकती आग की तरह चमकते हैं। जो व्यक्ति मधुमक्खी की तरह शहद इकट्ठा करते हुए हानिरहित तरीकों से धन अर्जित करता है , उसके लिए धन चींटियों के टीले की तरह तेजी से बढ़ता है।

इस प्रकार अर्जित धन से,
गृहस्थ जीवन के योग्य एक साधारण व्यक्ति,
अपने धन को चार भागों में विभाजित करके
मित्रता प्राप्त कर सकता है।
एक हिस्सा वह अपनी जरूरतों के लिए इस्तेमाल करता है,
दो हिस्से अपने व्यवसाय पर खर्च करता है,
और चौथा हिस्सा जरूरत के समय के लिए बचाकर रखता है।
"और हे गृहस्थ, एक श्रेष्ठ शिष्य छह दिशाओं को कैसे ढकता है?"
निम्नलिखित को छह दिशाओं के रूप में देखा जाना चाहिए। माता-पिता को पूर्व, शिक्षकों को दक्षिण, पत्नी और बच्चों को पश्चिम, मित्रों और सहयोगियों को उत्तर, नौकरों और कर्मचारियों को निम्नतम, और तपस्वियों और ब्राह्मणों को उच्चतम माना जाना चाहिए।8
"हे गृहस्थ, एक बालक को अपने माता-पिता की सेवा पाँच तरीकों से करनी चाहिए, जैसे पूर्व में होता है:
(i) मेरा भरण-पोषण करने के कारण मैं उनका भरण-पोषण करूँगा,
(ii) मैं उनके कर्तव्यों का पालन करूँगा,
(iii) मैं पारिवारिक परंपरा को कायम रखूँगा,
(iv) मैं अपनी विरासत के योग्य बनूँगा,
(v) इसके अतिरिक्त मैं अपने दिवंगत रिश्तेदारों के सम्मान में दान दूँगा।9
"हे गृहस्थ, पाँच तरीकों से, अपने बच्चों द्वारा पूर्व की ओर से माता-पिता की सेवा किए जाने पर, वे अपनी करुणा दिखाते हैं:
(i) वे उन्हें बुराई से रोकते हैं,
(ii) वे उन्हें अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं,
(iii) वे उन्हें किसी पेशे के लिए प्रशिक्षित करते हैं,
(iv) वे एक उपयुक्त विवाह की व्यवस्था करते हैं,
(v) उचित समय पर वे उन्हें उनकी विरासत सौंप देते हैं।

"इन पाँच तरीकों से बच्चे अपने माता-पिता की सेवा करते हैं, जैसे पूर्व दिशा में और माता-पिता अपने बच्चों के प्रति करुणा दिखाते हैं। इस प्रकार पूर्व दिशा उनके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित रहती है।"

"हे युवा गृहस्थ, एक शिष्य को दक्षिण में शिक्षक की सेवा पाँच तरीकों से करनी चाहिए:

(i) अभिवादन में सीट से उठकर,

(ii) उसकी सेवा करके,

(iii) सीखने की उत्सुकता से,

(iv) व्यक्तिगत सेवा से,

(v) निर्देश प्राप्त करते समय आदरपूर्वक ध्यान देकर।

"हे युवा गृहस्थ, दक्षिण में अपने विद्यार्थियों द्वारा इस प्रकार सेवा प्राप्त करने वाले शिक्षक पाँच तरीकों से अपनी करुणा दिखाते हैं:

(i) वे उन्हें सर्वोत्तम अनुशासन में प्रशिक्षित करते हैं,

(ii) वे देखते हैं कि वे अपने पाठों को अच्छी तरह से समझते हैं,

(iii) वे उन्हें कला और विज्ञान में निर्देश देते हैं,

(iv) वे उन्हें अपने दोस्तों और सहयोगियों से परिचित कराते हैं,

(v) वे हर तरफ से उनकी सुरक्षा का प्रबंध करते हैं।

"इस प्रकार, दक्षिण में अपने विद्यार्थियों द्वारा सेवा प्राप्त करने वाले शिक्षक, इन पांच तरीकों से उनके प्रति अपनी करुणा प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार दक्षिण उनके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित बनाया जाता है।"

"हे गृहस्थ, पश्चिम में पति द्वारा पत्नी की सेवा पाँच तरीकों से की जानी चाहिए:

(i) उसके प्रति विनम्र रहकर,

(ii) उसका तिरस्कार न करके,

(iii) उसके प्रति वफादार रहकर,

(iv) उसे अधिकार सौंपकर,

(v) उसे आभूषण प्रदान करके।

"इस प्रकार, पति द्वारा पश्चिम की तरह सेवा प्राप्त करने वाली पत्नी पांच तरीकों से अपने पति के प्रति अपनी करुणा प्रदर्शित करती है:

(i) वह अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह पालन करती है,

(ii) वह रिश्तेदारों और परिचारकों के प्रति आतिथ्य सत्कारपूर्ण है,

(iii) वह वफादार है,

(iv) वह उसके द्वारा लाई गई चीजों की रक्षा करती है,

(v) वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में कुशल और मेहनती है।

"इन पांच तरीकों से पत्नी अपने पति के प्रति करुणा प्रकट करती है, जो पश्चिम के रूप में उसकी सेवा करता है। इस प्रकार पश्चिम उसके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित रहता है।"

"हे गृहस्थ, पाँच तरीकों से एक कुलवासी को अपने मित्रों और सहयोगियों की सेवा करनी चाहिए, जैसे उत्तर में:

(i) उदारता से,

(ii) शिष्टतापूर्ण वाणी से,

(iii) सहायक बनकर,

(iv) निष्पक्ष रहकर,

(v) ईमानदारी से।

"उत्तर में एक कबीले के सदस्य द्वारा सेवा किए गए मित्र और सहयोगी पांच तरीकों से उसके प्रति करुणा दिखाते हैं:

(i) वे उसकी रक्षा करते हैं जब वह लापरवाह होता है,

(ii) वे उसकी संपत्ति की रक्षा करते हैं जब वह लापरवाह होता है,

(iii) वे उसके खतरे में होने पर शरणस्थली बन जाते हैं,

(iv) वे उसकी मुसीबतों में उसका साथ नहीं छोड़ते,

(v) वे उसके परिवार के प्रति विचार दिखाते हैं।

"एक कबीले के सदस्य द्वारा उत्तर की सेवा किए जाने पर, मित्र और सहयोगी इन पांच तरीकों से उसके प्रति अपनी करुणा प्रकट करते हैं। इस प्रकार उत्तर उसके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित हो जाता है।"

"एक स्वामी को अपने सेवकों और कर्मचारियों के साथ निम्नतम स्तर की तरह पाँच तरीकों से व्यवहार करना चाहिए:

(i) उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें काम सौंपकर,

(ii) उन्हें भोजन और मजदूरी प्रदान करके,

(iii) बीमारी में उनकी देखभाल करके,

(iv) उनके साथ किसी भी स्वादिष्ट भोजन को साझा करके,
(v) उन्हें समय-समय पर छुट्टी देकर।
"इस प्रकार स्वामी द्वारा निम्नतम स्तर पर सेवा किए जाने वाले सेवक और कर्मचारी पाँच तरीकों से उसके प्रति अपनी करुणा प्रकट करते हैं:
(i) वे उसके सामने उठते हैं,
(ii) वे उसके बाद सोते हैं,
(iii) वे केवल वही लेते हैं जो दिया जाता है,
(iv) वे अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह पालन करते हैं,
(v) वे उसके अच्छे नाम और प्रसिद्धि को बनाए रखते हैं।
"इस प्रकार सेवा करने वाले सेवक और कर्मचारी नादिर के प्रति अपनी करुणा इन पाँच तरीकों से प्रकट करते हैं। इस प्रकार नादिर उनके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित हो जाता है।"
"हे गृहस्थ, पाँच प्रकार से गृहस्थ को तपस्वियों और ब्राह्मणों की सेवा करनी चाहिए, जो सर्वोच्च स्थान पर हैं:
(i) प्रेमपूर्ण कार्यों द्वारा,
(ii) प्रेमपूर्ण शब्दों द्वारा,
(iii) प्रेमपूर्ण विचारों द्वारा,
(iv) उनके लिए अपने घर के दरवाजे खुले रखकर,
(v) उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके।
"गृहस्थ द्वारा सर्वोच्च मानकर सेवा किए जाने वाले तपस्वियों और ब्राह्मणों ने छह तरीकों से उसके प्रति अपनी करुणा प्रकट की:
(i) वे उसे बुराई से रोकते हैं,
(ii) वे उसे अच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं,
(iii) वे उससे दयालु हृदय से प्रेम करते हैं,
(iv) वे उसे वह सुनाते हैं जो उसने नहीं सुना है,
(v) वे उसे जो पहले से सुना है उसे स्पष्ट करते हैं,
(vi) वे उसे स्वर्गिक अवस्था का मार्ग दिखाते हैं।
"इन छह तरीकों से तपस्वी और ब्राह्मण गृहस्थ के प्रति करुणा प्रकट करते हैं, जो उन्हें सर्वोच्च मानकर उनकी सेवा करता है। इस प्रकार सर्वोच्च उसके द्वारा सुरक्षित और संरक्षित रहता है।" भगवान ने ऐसा कहा। और जब गुरु ने ऐसा कहा, तो उन्होंने फिर कहा:
माता-पिता पूर्व दिशा में हैं,
शिक्षक दक्षिण दिशा में हैं,
पत्नी और बच्चे पश्चिम दिशा में हैं,
मित्र और सहयोगी उत्तर दिशा में हैं।
सेवक और कर्मचारी निम्नतम स्तर पर हैं,
तपस्वी और ब्राह्मण उच्चतम स्तर पर हैं;
जो गृहस्थ जीवन जीने के योग्य है,
उसे इन छह दिशाओं को प्रणाम करना चाहिए।
जो बुद्धिमान और गुणी हो,
सौम्य और तीक्ष्ण बुद्धि वाला हो,
विनम्र और आज्ञाकारी हो,
ऐसा व्यक्ति सम्मान का पात्र होता है।
जो ऊर्जावान हो और आलसी न हो,
विपत्ति में भी अविचलित रहे,
व्यवहार में निर्दोष और बुद्धिमान हो,
ऐसा व्यक्ति सम्मान का पात्र हो सकता है।
जो आतिथ्य सत्कारपूर्ण और मित्रवत हो,
उदार और निस्वार्थ हो,
मार्गदर्शक, प्रशिक्षक और नेता हो,
ऐसा व्यक्ति सम्मान का पात्र हो सकता है।
उदारता, मधुर वाणी,
दूसरों की मदद करना,

सभी के प्रति निष्पक्षता,
जैसा कि परिस्थिति की मांग हो।
ये चार विजयी तरीके ही दुनिया को चलाते हैं,
जैसे चलती गाड़ी में मुख्य पेंच।
अगर ये दुनिया में न हों, तो न माता-पिता को अपने बच्चों से आदर और सम्मान
मिलेगा ।

क्योंकि बुद्धिमान लोग इन चार विजयी मार्गों का
सर्वथा मूल्यांकन करते हैं,
इसलिए वे उच्च पद प्राप्त करते हैं
और उचित प्रशंसा अर्जित करते हैं।
जब परमेश्वर ने ऐसा कहा, तब गृहस्थ सिगाला नामक युवक ने इस प्रकार कहा:
हे भगवान, यह उत्तम है! हे भगवान, यह ऐसा है मानो कोई मनुष्य उलटी हुई वस्तु को सीधा खड़ा कर दे, या छिपी हुई वस्तु को प्रकट कर दे, या भटके हुए व्यक्ति को राह दिखा दे, या अंधकार में दीपक जला दे ताकि देखने वाले देख सकें। ठीक इसी प्रकार, परमेश्वर ने इस सिद्धांत को अनेक तरीकों से समझाया है।
"हे भगवान, मैं बुद्ध, धम्म और संघ की शरण लेता हूँ। ईश्वर मुझे गृहस्थ अनुयायी के रूप में स्वीकार करें; उस व्यक्ति के रूप में जिसने आज से जीवन के अंत तक मेरी शरण ली है।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.9 अतनतिया सुत्त (DN32)

अंतर्वस्तु

अतनातिया सुत्त

परिचय :

थेरवाद बौद्ध धर्म में तंत्र, जादू-टोना आदि का उल्लेख सामान्यतः नहीं किया जाता है। यद्यपि, दुष्ट आत्माओं से सुरक्षा के लिए बुद्ध ने इस सूत्र को स्मरण करने और समय-समय पर पाठ करने का विधान अवश्य किया है। संक्षेप में, इस सूत्र में चारों दिशाओं (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर) के चार राजा अपने अदृश्य लोकों से बुद्ध के समक्ष प्रकट होते हैं। वे सर्वप्रथम बुद्ध को प्रणाम करते हैं, फिर उनका परिचय और वर्णन एक-एक करके किया जाता है। इसके बाद दुष्ट आत्माओं को चेतावनी दी जाती है कि यदि वे बुद्ध के अनुयायियों के लिए कष्ट उत्पन्न करें, तो बुद्ध को समस्त आध्यात्मिक लोकों में सर्वोच्च माना जाता है। साथ ही, यदि इनमें से कोई भी आत्मा असहमत हो, तो इस सूत्र में प्रमुख सेनापतियों के नाम दिए गए हैं, ताकि उन्हें स्थिति को संभालने के लिए बुलाया जा सके।

इस सूत्र में चार प्रकार के आध्यात्मिक प्राणियों का उल्लेख है, अर्थात् यक्ष, गंधर्व, कुम्भंद और नाग, और उनके शासक राजाओं का। इन्हें सक्का (इंद्र) के स्वर्ग के रक्षक माना जाता है, जिसे बौद्ध ग्रंथों में अक्सर 33 का स्वर्ग कहा जाता है, वास्तव में 33 करोड़ देवता, जो आकाश में बहुत ऊपर विद्यमान हैं, अन्य आयामों के कारण अदृश्य हैं, संभवतः अज्ञात अंधकार पदार्थ में (बौद्ध धर्म में कई प्रकार के स्वर्ग माने जाते हैं)। अपने पिछले जन्म में, बहुत समय पहले, जब बुद्ध इस स्वर्ग के राजा थे, असुरों (राक्षसों) ने इस पर आक्रमण किया और लगभग इस पर कब्जा कर लिया था, लेकिन सक्का (अब बुद्ध) के धर्मपरायणता से उन्हें पराजित किया गया। तब स्वर्ग के राजा सक्का (अब बुद्ध) ने उस समय इन चार राजाओं (और गरुड़ों) से स्वर्ग की पांच दिशाओं से रक्षा करने का अनुरोध किया ताकि भविष्य में असुरों के घुसपैठ पर नजर रखी जा सके। उन्होंने सहमति दी और यह ज्ञात है कि वे इस भौतिक ब्रह्मांड के जीवनकाल के दौरान, अर्थात् वर्तमान कल्प काल तक रक्षक बने रहेंगे। जब सक्का (बुद्ध) का जीवनकाल समाप्त हो गया और किसी अन्य सक्का ने पदभार संभाला, तब बुद्ध ने अनेक रूपों में पुनर्जन्म लिया और अनेक जन्मों के बाद भगवान बुद्ध बने। तब स्वर्ग के ये चार संरक्षक राजा पृथ्वी पर अवतरित हुए और भिक्षुओं की रक्षा के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। उन्होंने बुद्ध को यह अतनातिया सूत्र भिक्षुओं को उनकी सुरक्षा के लिए संप्रेषित करने को कहा। ____________ कुलावक-जातक से: 'विजय का महल', लगभग एक हजार मील (4.23 किमी) ऊँचा, जिसे विजय के समय प्रकट होने के कारण यह नाम दिया गया। तब, असुरों को पुनः आने से रोकने के लिए, सक्का (इंद्र) ने पाँच स्थानों पर पहरेदार नियुक्त किए, जिनके बारे में कहा गया है:-

दोनों शहर अभेद्य हैं!
पांच बार पहरा देते हुए, नागों, गरुलों को देखो,
कुम्भंड, जिन्न और चार महान राजा!

अतनातिया का पाठ कोई भी कर सकता है और बुरी आत्माओं से मुक्ति पाने के लिए इसका लाभ उठा सकता है। यहाँ दो संस्करण दिए गए हैं। पुराना संस्करण पुरानी अंग्रेज़ी में है। नया संस्करण आधुनिक अंग्रेज़ी में है, जिसमें सुधार किए गए हैं और पाली में मूल पाठ से तुलना भी की गई है। पाली संस्करण भी उपलब्ध है। अंत में, परोपकारी उपयोगकर्ता संपुना द्वारा दिया गया पाठ संस्करण अभ्यास और सुरक्षा के लिए अनुशंसित है।

अतानातिया सुत्त: नया संस्करण

275. मैंने ऐसा सुना है:
एक बार भगवान बुद्ध राजगिरि के पास गिज्जकूट पर्वत पर निवास कर रहे थे।
फिर चारों दिशाओं के चार महान राजाओं ने यक्षों की विशाल सेना, गंधर्वों की विशाल सेना, कुम्भंडों की विशाल सेना और नागों की विशाल सेना के साथ चारों दिशाओं पर पहरा बिठाया;
सेना तैनात करके, चारों ओर सैनिकों की घेराबंदी करके, रात ढलने पर भगवान बुद्ध के समक्ष आए, अपनी असाधारण चमक से पूरे गिज्जकूट पर्वत को प्रकाशित करते हुए, उन्होंने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। (सेवकों) यक्षों में से कुछ ने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने मैत्रीपूर्ण और विनम्र तरीके से बातचीत करते हुए भगवान बुद्ध से अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने अपना नाम और वंश बताया और एक तरफ बैठ गए; कुछ मौन बैठे रहे।
276. तब एक ओर बैठे महान राजा वेस्स्वान (संस्कृत: वैश्रवण) ने भगवान बुद्ध से कहा, “हे पूज्य भगवान (भन्ते), कुछ प्रख्यात यक्ष भगवान बुद्ध से अप्रसन्न हैं, और कुछ प्रख्यात यक्ष भगवान बुद्ध से प्रसन्न हैं। कुछ मध्यम श्रेणी के यक्ष भगवान बुद्ध से अप्रसन्न हैं, और कुछ उनसे प्रसन्न हैं। कुछ निम्न श्रेणी के यक्ष भगवान बुद्ध से अप्रसन्न हैं, और कुछ उनसे प्रसन्न हैं। हे भगवान (भन्ते), यक्ष आमतौर पर भगवान बुद्ध से अप्रसन्न रहते हैं। इसका कारण क्या है?”
"भगवान बुद्ध धम्म की शिक्षा देते हैं कि हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और मादक पेय पदार्थों के सेवन से परहेज करना चाहिए, जो नशा और लापरवाही का कारण बनते हैं। उनके लिए ऐसी शिक्षा अप्रिय और अरुचिकर है।"
"हे भंते, भगवान बुद्ध के शिष्य अवश्य ही हैं। वे वनों के एकांत और निर्जन वनक्षेत्रों में जाते हैं, जहाँ कोई ध्वनि नहीं होती, कोई शोर नहीं होता, जहाँ हवाएँ मानव संपर्क से रहित होती हैं, और जो मनुष्य के एकांत और शांत चिंतन के लिए उपयुक्त हैं। इन वनों में प्रख्यात यक्ष भी विचरण करते हैं, जिन्हें भगवान बुद्ध के वचनों में कोई विश्वास नहीं है।"
"भंते, भगवान बुद्ध अतानाता संरक्षण सीखें ताकि अप्रसन्न यक्ष प्रसन्न हो सकें, ताकि भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और महिलाएं निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण रहें।"
भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दी। तब महान राजा वेसवना ने, यह जानकर कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, अतनातीय मंत्र का पाठ किया:
277. 1. "दिव्य दृष्टि (ज्ञान की) और वैभव से परिपूर्ण विपस्सी बुद्ध को प्रणाम। सभी प्राणियों के प्रति करुणामय सिख बुद्ध को प्रणाम।"
2. सभी दोषों से मुक्त और तपस्वी ऊर्जा से परिपूर्ण वेस्सभु बुद्ध को प्रणाम। मार (मृत्यु के देवता) की (पांच गुना) सेना पर विजय प्राप्त करने वाले काकुसन्द बुद्ध को प्रणाम।
3. कोनागमना बुद्ध को प्रणाम, जिन्होंने सभी दोषों का त्याग कर पवित्र ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत किया। कश्यप बुद्ध को प्रणाम, जो सभी दोषों से पूर्णतः मुक्त हैं।
4. "शाक्यों के पुत्र अंगिरासा (गौतम बुद्ध) को नमन, जो प्रकाश से परिपूर्ण हैं और जिन्होंने उस धम्म का प्रचार किया जो समस्त दुखों का निवारण करता है।"
5. संसार में वे लोग जिन्होंने (कामवासना की ज्वालाओं को) बुझा दिया है और अंतर्दृष्टि ध्यान (विपश्यना) के माध्यम से चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में देखा है, वे कभी किसी की निंदा नहीं करते; वे शक्तिशाली पुरुष हैं जो भय से मुक्त हैं।
6. "गौतम बुद्ध, जो देवताओं और मनुष्यों के प्रिय हैं, ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण हैं, शक्तिशाली और निर्भीक हैं, सभी उन्हें प्रणाम करते हैं (उन्हें प्रणाम हो)।"
278. 7-8. "जब अदिति की संतान, तेजस्वी सूर्य, अपने पूर्ण आकार में उदय होता है, तब रात का अंत होता है और दिन का आरंभ होता है। सूर्य जिस दिशा से उदय होता है (वह पूर्व दिशा है)। वहाँ गहरा और विशाल सागर विद्यमान है।"
9. "यह - पानी की फैली हुई चादर - वे इसे महासागर कहते हैं। जहाँ पूर्व दिशा है (मेरु पर्वत/कैलाश के पूर्व में) वे कहते हैं कि वह दिशा पूर्व है।"
10. "इस दिशा का संरक्षक धतरत्थ नामक एक महान राजा है, जिसके पास सेवकों का एक दल है, और वह गंधब्बाओं का संभगवान स्वामी है।"
11. "गंधाब्बाओं से घिरे हुए वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। मैंने सुना है कि उनके (दथारत्ता के) कई पुत्र हैं, सभी का एक ही नाम है।"
12-13. "वे अस्सी, दस और एक हैं, उनका नाम इंदा है, और वे शक्तिशाली हैं। वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से ही उन्हें प्रणाम करते हैं: "आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको गौरव, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं।"
14-15. "आपकी सर्वज्ञता के कारण, आपने (मानव जाति को ज्ञान भरी दृष्टि से) देखा है, यहाँ तक कि गैर-मानव भी आपको आदर देते हैं। यह हमने अक्सर सुना है। इसलिए हम उनसे (गैर-मानवों से) अनुरोध करते हैं कि वे गौतम, विजेता (बुद्ध) को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं: 'हम गौतम, विजेता को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण हैं।'"

279. 16-18. "जिस दिशा में प्रेत, चुगलखोर, हत्यारे, क्रूर डाकू और कपटी चोर जाते हैं, वह दिशा (मेरु पर्वत/कैलाश के दक्षिण की ओर) है, और इसे दक्षिण दिशा कहा जाता है। इस दिशा का संरक्षक वीरुल नामक एक महान राजा है, जिसके साथ सेवकों का एक दल है, और वह कुम्भंडों का संभगवान स्वामी है। कुम्भंडों की सेवा में वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेता है।"
19. "मैंने सुना है कि उसके (विरुल्हा के) बहुत से पुत्र हैं, सब एक ही नाम के हैं। वे अस्सी, दस और एक हैं, उनके नाम इन्दा हैं, और वे बहुत शक्तिशाली हैं।"
20. "वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से ही उन्हें प्रणाम करते हैं: 'आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको महिमा हो, जो मनुष्यों में सर्वोच्च हैं।'
21-22. "आपकी सर्वज्ञता के कारण, आपने (मानव जाति को ज्ञान भरी दृष्टि से) देखा है, यहाँ तक कि गैर-मानव भी आपको आदर देते हैं। यह हमने अक्सर सुना है। इसलिए हम उनसे (गैर-मानवों से) अनुरोध करते हैं कि वे गौतम, विजेता (बुद्ध) को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं: 'हम गौतम, विजेता को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्‌गुण से परिपूर्ण हैं।'"
280. 23-24. "जब अदिति की संतान, तेजस्वी सूर्य, अपने पूर्ण आकार में अस्त होता है, तब दिन समाप्त होता है और रात होती है। सूर्य जिस दिशा में अस्त होता है (वह पश्चिम दिशा है)। वहाँ गहरा और विशाल सागर विद्यमान है।"
25. "यह - पानी की फैली हुई चादर - वे इसे महासागर कहते हैं। जहाँ पश्चिम है (मेरु पर्वत/कैलाश के पश्चिम में) वे कहते हैं कि वह दिशा पश्चिम है।"
26. "इस दिशा के संरक्षक विरुपाक्खा नामक एक महान राजा हैं, जिनके पास सेवकों का एक दल है, और वे नागों के संभगवान स्वामी हैं।"
27. "नागों से घिरे हुए वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। मैंने सुना है कि उनके (विरुपक्खा के) कई पुत्र हैं, सभी का एक ही नाम है।"
28-29. "वे अस्सी, दस और एक हैं, उनका नाम इंदा है, और वे शक्तिशाली हैं। वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से उन्हें प्रणाम करते हैं: 'आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको गौरव, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं।'"
30-31. "आपकी सर्वज्ञता के कारण, आपने (मानव जाति को ज्ञान भरी दृष्टि से) देखा है, यहाँ तक कि गैर-मानव भी आपको आदर देते हैं। यह हमने अक्सर सुना है। इसलिए हम उनसे (गैर-मानवों से) अनुरोध करते हैं कि वे गौतम, विजेता (बुद्ध) को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं: 'हम गौतम, विजेता को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्‌गुण से परिपूर्ण हैं।'"

281. 32. "जहाँ रमणीय उत्तरकुरु (उत्तरी महाद्वीप) स्थित है, जहाँ सुंदर मेरु पर्वत (कैलाश) विराजमान है, वहाँ निस्वार्थ और अनासक्त पुरुष जन्म लेते हैं।"
33. "वे न तो बीज बोते हैं और न ही हल का प्रयोग करते हैं। उनके आनंद के लिए स्वाभाविक रूप से उगा हुआ मक्का मौजूद है।"
34. "लाल पाउडर और छिलके से शुद्ध किया हुआ, साफ और सुगंधित चावल सोने के बर्तनों में उबाला जाता है; यही वे खाते हैं।"
35. "वे (यक्ष/गैर-मानव) गायों को एक सवारी के रूप में इस्तेमाल करते हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। वे अन्य जानवरों को भी एक सवारी के रूप में इस्तेमाल करते हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं।"
36. "वे महिलाओं को वाहन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उनमें बैठकर एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं। वे पुरुषों को वाहन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उनमें बैठकर एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं।
37. "वे लड़कियों को वाहन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उनमें बैठकर एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। वे लड़कों को वाहन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और उनमें बैठकर एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं।
38. "इन वाहनों पर सवार होकर वे (राजा वेसवना के यक्ष) हर दिशा में यात्रा करते हैं।"
39. "यह राजा, जिसके पास सेवकों का एक दल है, हाथियों और घोड़ों का स्वामी है जिन पर वह सवारी करता है। उसके पास दिव्य रथ, महल और पालकी भी हैं। उसने स्वर्गीय लोकों में सुशोभित नगर बनवाए हैं।"
उनके नाम अतानाता, कुसिनता, परकुसिनता, नटसुरिया, परकुसिटानाता हैं। उत्तर में कपिवन्त नगर, दक्षिण में जनोघा, और नवनावती, अंबरा-अंबरावती तथा अलकमंडा नामक राजधानी नगर स्थित हैं। हे प्रसन्न (बुद्ध को संबोधित करते हुए), इस कुबेर (वेसवना का दूसरा नाम) का एक राज्य है जिसका नाम विष्ण है, इसलिए महान राजा कुबेर को वेसवना कहा जाता है। इस राजा के यक्ष हैं जो जांच करते हैं और उन्हें प्रकट करते हैं। वे ततोला, तत्तला, ततोताला, ओजसी, तेजसी, ततोजसी, सुरो, राजा (सुरा-राज), अरित्थो, नेमी (अरित्थ-नेमी) हैं। वहाँ (विष्ण राज्य में) धरणी झील है जहाँ वर्षा के बादल बरसते हैं। और वहाँ भगलावती नामक एक हॉल भी है जहाँ यक्ष एकत्रित होते हैं।
40. "वहाँ (हॉल के चारों ओर) सदाबहार फल देने वाले वृक्ष हैं। (इन वृक्षों पर) असंख्य पक्षी हैं। वहाँ मोर और बगुले की आवाज़ (कोंच/क्रोंच) और कोकीला (भारतीय कोयल) का मधुर गीत भी सुनाई देता है।"
41. "वहाँ (झील के पास) पक्षियों की पुकार सुनाई देती है, जो 'जीवित रहो! जीवित रहो!' (जीवमजीवका) कहते हैं। ओत्थावचित्तक ('हे अपने हृदय को ऊपर उठाओ!') पक्षी, कुक्कुट (जंगली मुर्गे), केकड़े और पोक्खरसातक पक्षी जंगलों में विचरण करते हैं।"

42. "वहाँ तोते, मैना और दंडमानवक पक्षियों की आवाज सुनाई देती है। और कुबेर का कमल-सर्दी हर मौसम में अपनी सुंदरता बिखेरता रहता है।"
43-44. "उस दिशा (मेरु पर्वत के उत्तर की ओर) को लोग उत्तर दिशा कहते हैं। इस दिशा का संरक्षक कुबेर नामक एक महान राजा है, जिसके साथ सेवकों का एक दल है, और वह यक्षों का संभगवान स्वामी है। यक्षों की सेवा में वह उनके गीतों और नृत्य का आनंद लेता है।"
45. "उसके (कुवेरा के) बहुत से पुत्र हैं, सब एक ही नाम के हैं, ऐसा मैंने सुना है। वे अस्सी और दस और एक हैं, उनके नाम इंदा हैं, और वे शक्तिशाली हैं।"
46. "वे भी, सूर्य के सगे संबंधियों, शक्तिशाली और निर्भीक बुद्ध को देखकर, दूर से ही उन्हें प्रणाम करते हैं: 'हे मानवजाति में अद्वितीय, आपको प्रणाम! हे मनुष्यों में श्रेष्ठ, आपकी जय हो!'"
47-48. "आपने अपनी सर्वज्ञता से (मानवजाति) पर दृष्टि डाली है; यहाँ तक कि निर्जीव भी आपको आदर देते हैं, ऐसा हमने सुना है। इसलिए हम यक्षों से अनुरोध करते हैं कि वे गौतम, विजेता (बुद्ध) को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं, 'हम गौतम, विजेता को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्गुण से परिपूर्ण हैं।'"
"हे सौभाग्यशाली, यह अतानाता संरक्षण है जिसके द्वारा भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं सभी निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"
282. "यदि कोई भिक्षु या भिक्षुणी, गृहस्थ पुरुष या गृहस्थ स्त्री अतानाता की इस रक्षा को कंठस्थ कर ले और शब्द-वार दोहराने में निपुण हो जाए, और यदि कोई अमानवीय यक्ष पुरुष या यक्षिणी, यक्ष युवक या कन्या यक्ष, यक्ष मंत्री या कोई यक्ष या यक्ष परिचारक; गंधर्व पुरुष या कन्या गंधर्व, गंधर्व मंत्री या कोई गंधर्व या परिचारक; कुंभण्ड पुरुष या कन्या कुंभण्ड, कुंभण्ड मंत्री या कोई कुंभण्ड या परिचारक; नाग पुरुष या कन्या नाग, नाग मंत्री या कोई नाग या परिचारक; उसके साथ द्वेषपूर्ण इरादे से चले, खड़े हों, बैठें या लेटें, तो ऐसा अमानवीय, सुखी (भगवान बुद्ध), किसी भी नगर या कस्बे से आतिथ्य प्राप्त नहीं करेगा, उसे रहने के लिए स्थान नहीं मिलेगा, और वह अलकमण्ड राज्य में नहीं रह सकेगा। वह यक्षों की सभाओं में भाग लेने पर उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा और न ही उसका विवाह कराया जाएगा; उसे अपमानित किया जाएगा (उसके विकृत दांतों, आंखों या शरीर के किसी भी अंग पर टिप्पणी करके), और अमानव उसके सिर पर एक खाली कटोरा रखकर उसके सिर को सात टुकड़ों में फाड़ देंगे।
हे भगवान बुद्ध, कुछ ऐसे अमानव हैं जो क्रूर, हिंसक और प्रतिशोध लेने वाले हैं; वे न तो चारों महान राजाओं की आज्ञा मानते हैं, न उनके मंत्रियों की और न ही उनके सेवकों की। उन्हें चारों महान राजाओं के विद्रोही कहा जाता है। जैसे मगध राज्य में चोर न तो मगध के राजा की आज्ञा मानते हैं, न मंत्रियों की और न ही उनके सेवकों की, और इसलिए उन्हें मगध के राजा के विद्रोही कहा जाता है, वैसे ही कुछ ऐसे अमानव हैं जो क्रूर, हिंसक और प्रतिशोध लेने वाले हैं; वे न तो चारों महान राजाओं की आज्ञा मानते हैं, न उनके मंत्रियों की और न ही उनके सेवकों की। उन्हें चारों महान राजाओं के विद्रोही कहा जाता है।
हे भगवान बुद्ध, यदि कोई अमानवीय यक्ष पुरुष या यक्षिणी यक्ष युवक या कन्या यक्ष, यक्ष मंत्री या कोई यक्ष या यक्ष सेवक; गंधर्व पुरुष या कन्या गंधर्व, गंधर्व मंत्री या कोई गंधर्व या गंधर्व सेवक; कुंभण्ड पुरुष या कन्या कुंभण्ड, कुंभण्ड मंत्री या कोई कुंभण्ड या कुंभण्ड सेवक; नाग पुरुष या कन्या नाग, नाग मंत्री या कोई नाग या नाग सेवक; उसके साथ द्वेषपूर्ण इरादे से चलें, खड़े हों, बैठें या लेटें, तो उस व्यक्ति को उन यक्षों, शक्तिशाली यक्षों, उनके सेनापतियों और प्रमुख सेनापतियों को सूचित करना चाहिए, जोर से चिल्लाना चाहिए और कहना चाहिए: 'यह यक्ष मुझे पकड़ रहा है, मुझ पर कब्जा कर रहा है, मुझे सता रहा है, मुझ पर हमला कर रहा है, मुझे हानि पहुंचा रहा है, मुझे अत्यधिक हानि पहुंचा रहा है और मुझे जाने नहीं दे रहा है!'
283. "यक्ष कौन हैं, पराक्रमी यक्ष और सेनापति, और प्रमुख सेनापति (जिनसे ऐसी अपील की जानी चाहिए)?"
49. इंदा, सोम, और वरुण, भारद्वाज, पजापति, चंदना, कामसेट्ठ भी, किन्नुघंडु, निगहंडु,
50. पनाडा, ओपमन्ना भी, देवसुता और मातलि, चित्तसेना और गंधब्बा, नल, राजा, जनसभा,
51. सतगिरा, हेमावता, पुन्नका, करतिया, गुला, सिवाका, मुकलिंडा भी, वेसामिट्टा, युगंधरा,
52. गोपाल, सुपेग्धा भी, हिरी, नेट्टी, और मांडिया, पंचलकंडा, अलावाका, पज्जुन्ना, सुमना, सुमुखा, दादामुक्खा, इन सेरिसक्का के साथ।
"ये यक्ष हैं, शक्तिशाली यक्ष हैं, सेनापति हैं, प्रमुख सेनापति हैं, जिनसे (पीड़ित व्यक्ति को) सूचना देनी चाहिए, जोर से पुकार कर चिल्लाना चाहिए और कहना चाहिए: 'यह यक्ष मुझे पकड़ रहा है, मुझ पर कब्जा कर रहा है, मुझे सता रहा है, मुझ पर हमला कर रहा है, मुझे नुकसान पहुंचा रहा है, और मुझे बहुत नुकसान पहुंचा रहा है, और यह यक्ष मुझे जाने नहीं दे रहा है!'"
"हे प्रिय, यह अतानाता संरक्षण है जिसके द्वारा भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"
"हे सौभाग्यशाली, अब हम आपसे विदा लेते हैं; क्योंकि हमें कई कर्तव्यों का पालन करना है (चारों महान राजाओं ने ऐसा कहा)।"
"महान राजाओं, अब आपके प्रस्थान का समय आ गया है" (बुद्ध ने स्वीकार किया)।
चारों महान राजा अपने-अपने आसनों से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके उनके दाहिनी ओर परिक्रमा की और वहीं पर अंतर्धान हो गए। (सेवकों) यक्षों में से कुछ अपने-अपने आसनों से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके उनके दाहिनी ओर परिक्रमा की और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ ने भगवान बुद्ध से मैत्रीपूर्ण और विनम्र ढंग से बातचीत करते हुए अभिवादन किया और वहीं पर अंतर्धान

हो गए; कुछ ने हाथ जोड़कर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ ने अपना नाम और वंश बताया और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ मौन ही अंतर्धान हो गए।

रात्रि बीत जाने पर भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: (बुद्ध ने भिक्षुओं को वही शब्द-शब्द सुनाया जो महान राजा वेसवना ने कहे थे) "हे भिक्षुओं, अतानाता सुरक्षा मंत्र को अच्छी तरह याद कर लो, इसका निरंतर उपयोग करो, इसे अपने मन में रखो। हे भिक्षुओं, अतानाता सुरक्षा तुम्हारे कल्याण के लिए है, और इसके बल पर भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और स्त्रियां निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"

भगवान बुद्ध ने ये कहा। स्वयं पर गर्व करने वाले उन भिक्षुओं ने भगवान बुद्ध के वचन सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की।

अतानातिया सुत्त: पुराना संस्करण

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान राजगृह (राजगीर) के पास गिद्ध शिखर पर निवास कर रहे थे।

फिर चार महान राजाओं ने चारों दिशाओं में पहरा बिठाकर, यक्षों, गंधर्वों, कुम्भंडों और नागों की विशाल सेना के साथ, सैनिकों को तैनात करके, चारों ओर सैनिकों की घेराबंदी करके, रात ढलने के बाद भगवान बुद्ध के समक्ष आए। अपनी असाधारण चमक से गिद्ध शिखर को पूरी तरह से प्रकाशित करते हुए, उन्होंने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। (परिचारकों) यक्षों में से कुछ ने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने उनसे मैत्रीपूर्ण और विनम्र बातचीत करते हुए अभिवादन किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए; कुछ ने अपना नाम और वंश बताया और एक तरफ बैठ गए; कुछ मौन बैठे रहे।

तब एक तरफ बैठे महान राजा वैश्रवण ने भगवान बुद्ध से कहा:

"आदरणीय भंते, कुछ प्रख्यात यक्ष भगवान से प्रसन्न नहीं होते, और कुछ प्रख्यात यक्ष भगवान से प्रसन्न होते हैं। कुछ मध्यम श्रेणी के यक्ष भगवान से प्रसन्न नहीं होते, और कुछ उनसे प्रसन्न होते हैं। कुछ निम्न श्रेणी के यक्ष भगवान से प्रसन्न नहीं होते, और कुछ उनसे प्रसन्न होते हैं। भंते, यक्ष आमतौर पर भगवान से प्रसन्न नहीं होते। इसका कारण क्या है?"

"भगवान बुद्ध हत्या, चोरी, यौन दुराचार, झूठी वाणी और मादक पेय पदार्थों से परहेज करने का उपदेश देते हैं, जो नशा और लापरवाही का कारण बनते हैं। उन्हें ऐसा उपदेश अप्रिय और अरुचिकर लगता है।"

"निश्चित रूप से, भगवान बुद्ध के शिष्य हैं। वे घने जंगलों और वनभूमि के एकांत स्थानों में जाते हैं, जहाँ कोई शोर नहीं होता, कोई हलचल नहीं होती, जहाँ हवाएँ मानव संपर्क से रहित होती हैं, और जो मनुष्य के एकांत और शांत चिंतन के लिए उपयुक्त हैं। इन जंगलों में कुछ प्रख्यात यक्ष भी विचरण करते हैं, जिन्हें भगवान बुद्ध के वचनों में कोई विश्वास नहीं है।"

"भंते, भगवान अतनाता की रक्षा सीखें ताकि अप्रसन्न यक्ष प्रसन्न हो जाएं, ताकि भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण रहें।"

भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दी। तब महान राजा वेसवना ने यह जानकर कि भगवान बुद्ध ने सहमति दे दी है, अतनातिया मंत्र का पाठ किया:

1. "ज्ञान और वैभव से परिपूर्ण विपस्सी (बुद्ध) को प्रणाम। सभी प्राणियों के प्रति दयालु सिखि (बुद्ध) को प्रणाम।"
2. सभी दोषों से मुक्त और तपस्वी ऊर्जा से परिपूर्ण वेस्सभु (बुद्ध) को प्रणाम। मारा की (पांच प्रकार की) सेना पर विजय प्राप्त करने वाले काकुसन्द (बुद्ध) को प्रणाम।
3. "कोनागमना (बुद्ध) को प्रणाम, जिन्होंने सभी दोषों का निवारण किया और पवित्र जीवन व्यतीत किया। कश्यप (बुद्ध) को प्रणाम, जो सभी दोषों से पूर्णतः मुक्त हैं।"
4. "शाक्यों के पुत्र अंगिरासा (बुद्ध गौतम) को प्रणाम, जो प्रकाश से परिपूर्ण हैं और जिन्होंने उस धम्म का प्रचार किया जो समस्त दुखों का निवारण करता है।"
5. संसार में वे लोग जिन्होंने (वासना की ज्वालाओं को) बुझा दिया है और अंतर्दृष्टि (ध्यान) के माध्यम से चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में देख लिया है, वे कभी किसी की निंदा नहीं करते; वे शक्तिशाली पुरुष हैं जो भय से मुक्त हैं।
6. "गौतम (बुद्ध) देवताओं और मनुष्यों के प्रिय, ज्ञान और सद्गुणों से परिपूर्ण, शक्तिशाली और निर्भीक, सभी उन्हें प्रणाम करते हैं (उन्हें प्रणाम हो)।"

7-8. "जब अदिति की संतान, तेजस्वी सूर्य, अपने पूर्ण आकार में उदय होता है, तब रात का अंत होता है और दिन कहलाता है। सूर्य जिस दिशा से उदय होता है (वह पूर्व दिशा है)। वहाँ गहरा और विशाल सागर विद्यमान है।"

9. "यह - पानी की फैली हुई चादर - वे इसे महासागर कहते हैं। जहाँ पूर्व दिशा है (मेरु पर्वत के पूर्व में) वे कहते हैं कि वह दिशा पूर्व है।"
10. "इस क्षेत्र का संरक्षक धतरत्थ नामक एक महान राजा है, जिसके पास सेवकों का एक दल है, और वह गंधब्बाओं का संभगवान स्वामी है।"

11. "गंधाब्बाओं से घिरे हुए वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। मैंने सुना है कि उनके (दथारत्ता के) कई पुत्र हैं, सभी का एक ही नाम है।"
12-13. "वे अस्सी, दस और एक हैं, उनका नाम इंदा है, और वे शक्तिशाली हैं। वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से उन्हें प्रणाम करते हैं: "आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको गौरव, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं।"
14-15. "जिस प्रकार आपने अपने सर्वज्ञ ज्ञान से मनुष्य जाति को देखा है, उसी प्रकार अन्य प्राणी भी आपको आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं। यह हमने अनेक बार सुना है। अतः हम यक्षों से निवेदन करते हैं कि वे गौतम बुद्ध को प्रणाम करें। वे भी यही कहते हैं: 'हम गौतम बुद्ध को प्रणाम करते हैं, हम ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण गौतम को प्रणाम करते हैं।'"
16-18. "जिस दिशा से पेटा (लाशें), चुगलखोर, हत्यारे, क्रूर डाकू और कपटी लोगों को हटाया जाता है, वह दिशा (मेरु पर्वत के दाहिनी ओर) है और उसे दक्षिण दिशा कहा जाता है। इस दिशा का संरक्षक वीरुल नाम का एक महान राजा है, जिसके साथ सेवकों का एक दल है और वह कुम्भंडों का संभगवान स्वामी है। कुम्भंडों की सेवा में वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेता है।"
19. "मैंने सुना है कि उसके (विरुल्हा के) बहुत से पुत्र हैं, सब एक ही नाम के हैं। वे अस्सी, दस और एक हैं, उनके नाम इन्दा हैं, और वे बहुत शक्तिशाली हैं।"
20. "वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से ही उन्हें प्रणाम करते हैं: 'आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको महिमा हो, जो मनुष्यों में सर्वोच्च हैं।'"
21-22. "जिस प्रकार आपने अपने सर्वज्ञ ज्ञान से (मानव जाति को) देखा है, उसी प्रकार अन्य जीव भी आपको आदर देते हैं। यह हमने अनेक बार सुना है। अतः हम यक्षों से विनती करते हैं कि वे गौतम बुद्ध को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं: 'हम गौतम को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण हैं।'"
23-24. "जब अदिति की संतान, तेजस्वी सूर्य, अपने पूर्ण आकार में अस्त होता है, तब दिन समाप्त होता है और रात हो जाती है। सूर्य जिस दिशा में अस्त होता है, वह पश्चिम दिशा है। वहाँ गहरा और विशाल सागर स्थित है।"
25. "यह - पानी की फैली हुई चादर - वे इसे महासागर कहते हैं। जहाँ पश्चिम है (मेरु पर्वत के पश्चिम में) वे कहते हैं कि वह दिशा पश्चिम है।"
26. "इस क्षेत्र का संरक्षक विरुपाक्खा नामक एक महान राजा है, जिसके पास सेवकों का एक दल है, और वह नागों का संभगवान स्वामी है।"
27. "नागों से घिरे हुए वह उनके गीत और नृत्य का आनंद लेते हैं। मैंने सुना है कि उनके (विरुपक्खा के) कई पुत्र हैं, सभी का एक ही नाम है।"
28-29. "वे अस्सी, दस और एक हैं, उनका नाम इंदा है, और वे शक्तिशाली हैं। वे भी बुद्ध को देखकर—सूर्य के सगे, शक्तिशाली और निर्भीक—दूर से उन्हें प्रणाम करते हैं: 'आपको प्रणाम, जो मानवजाति में अद्वितीय हैं; आपको गौरव, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं।'"
30-31. "जिस प्रकार आपने अपनी सर्वज्ञता से (मानव जाति को ज्ञान भरी दृष्टि से) देखा है, उसी प्रकार अन्य जीव भी आपको आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं। यह हमने अनेक बार सुना है। अतः हम यक्षों से निवेदन करते हैं कि वे गौतम, विजेता (बुद्ध) को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं: 'हम गौतम, विजेता को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्‌गुणों से परिपूर्ण हैं।'"
32. "जहां रमणीय उत्तरकुरु (उत्तरी महाद्वीप) स्थित है, जहां सुंदर मेरु पर्वत विराजमान है, वहां निस्वार्थ और अनासक्त पुरुष जन्म लेते हैं।"
33. "वे न तो बीज बोते हैं और न ही हल का प्रयोग करते हैं। उनके आनंद के लिए स्वाभाविक रूप से उगा हुआ मक्का मौजूद है।"
34. "लाल पाउडर और छिलके से शुद्ध किया हुआ, साफ और सुगंधित चावल सोने के बर्तनों में उबाला जाता है; यही वे खाते हैं।"
35. "वे गायों से एक-सीट वाला वाहन बनाते हैं (जैसे घोड़े पर सवार होना)9 और जगह-जगह घूमते हैं।
36-37. "वे महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों को वाहनों के रूप में इस्तेमाल करते हैं, और उनमें एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं।"
38. "वाहनों (हाथियों और घोड़ों) पर सवार होकर वे (राजा वेसवना के यक्ष) हर दिशा में यात्रा करते हैं।"
39. "यह राजा, जिसके पास सेवकों का एक दल है, हाथियों और घोड़ों का स्वामी है जिन पर वह सवारी करता है। उसके पास दिव्य रथ, महल और पालकी भी हैं। उसने स्वर्गीय लोकों में सुशोभित नगर बनवाए हैं।"
उनके नाम अतानाता, कुसिनता, परकुसिनता, नटपुरिया, परकुसिटानाता हैं। उत्तर में कपिलावत नगर, दक्षिण में जनोघा, नवनावती, अंबरा-अंबरावती और अलकमंडा राज्य स्थित हैं। हे भगवान (बुद्ध को संबोधित करते हुए), इस कुबेर (वेसवना का दूसरा नाम) का एक राज्य है जिसका नाम विष्णु है, इसलिए महान राजा कुबेर को वेसवना कहा जाता है। इस राजा के यक्ष हैं जो जांच करते हैं और उन्हें प्रकट करते हैं। वे हैं ततोला, तत्तला, ततोताला, ओजसी, तेजसी, ततोजसी, सुरो, राजा (सुरा-राज), अरित्थो, नेमी (अरित्था-नेमी)। वहाँ (विसना राज्य में) धरणी झील है जहाँ से वर्षा के बादल (जल धारण करके) वर्षा करते हैं। और वहाँ भगलावती नामक एक हॉल भी है जहाँ यक्ष एकत्रित होते हैं।
40. "वहाँ (हॉल के चारों ओर) सदाबहार फल देने वाले वृक्ष हैं। (इन वृक्षों पर) असंख्य पक्षी हैं। वहाँ मोर और बगुले की आवाज और कोकीला (भारतीय कोयल) का मधुर गीत भी सुनाई देता है।"

41. "वहाँ (झील के पास) पक्षियों की पुकार सुनाई देती है, जो 'जीवित रहो! जीवित रहो!' (जीवमजीवका) पुकारते हैं। ओत्थावचित्तक ('हे अपने हृदय को ऊपर उठाओ!') पक्षी, जंगली मुर्गे, केकड़े और पोक्खरसटका पक्षी जंगलों में विचरण करते हैं।"
42. "वहाँ तोते, मैना और दंडमानवक पक्षियों की आवाज सुनाई देती है। और कुबेर का कमल-सर्दी हर मौसम में अपनी सुंदरता बिखेरता रहता है।"
43-44. "उस दिशा (मेरु पर्वत के उत्तर की ओर) को लोग उत्तर दिशा कहते हैं। इस दिशा का संरक्षक कुबेर नामक एक महान राजा है, जिसके साथ सेवकों का एक दल है, और वह यक्षों का संभगवान स्वामी है। यक्षों की सेवा में वह उनके गीतों और नृत्य का आनंद लेता है।"
45. "उसके (कुवेरा के) बहुत से पुत्र हैं, सब एक ही नाम के हैं, ऐसा मैंने सुना है। वे अस्सी और दस और एक हैं, उनके नाम इंदा हैं, और वे शक्तिशाली हैं।"
46. "वे भी, सूर्य के सगे संबंधियों, शक्तिशाली और निर्भीक बुद्ध को देखकर, दूर से ही उन्हें प्रणाम करते हैं: 'हे मानवजाति में अद्वितीय, आपको प्रणाम! हे मनुष्यों में श्रेष्ठ, आपकी जय हो!'"
47-48. "हे भगवान, अपने सर्वज्ञ ज्ञान से तुमने (मानवजाति को) देखा है; यहाँ तक कि निर्जीव भी तुम्हें आदर देते हैं, ऐसा हमने सुना है। अतः हम यक्षों से विनती करते हैं कि वे गौतम बुद्ध को प्रणाम करें। वे भी कहते हैं, 'हम गौतम को आदर देते हैं, हम गौतम को आदर देते हैं जो ज्ञान और सद्गुणों से परिपूर्ण हैं।'"
"हे सौभाग्यशाली, यह अतानाता संरक्षण है जिसके द्वारा भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं सभी निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"
यदि कोई भिक्षु या भिक्षुणी, गृहस्थ पुरुष या गृहस्थ स्त्री अतानाता की इस रक्षा को कंठस्थ कर ले और शब्दशः इसका पाठ कर ले, और यदि कोई अमानवीय यक्ष, युवक या कन्या यक्ष, यक्ष मंत्री या कोई अन्य यक्ष या यक्ष सेवक; गंधर्व पुरुष या स्त्री... (जैसा कि पहले बताया गया है); कुम्भंद पुरुष या स्त्री... नाग पुरुष या स्त्री... उसके साथ द्वेषपूर्ण इरादे से चले, खड़े हों, बैठें या लेटें, तो ऐसे अमानवीय, सुखी प्राणी को किसी नगर या कस्बे में आतिथ्य सत्कार नहीं मिलेगा, रहने के लिए स्थान नहीं मिलेगा, और वह अलकमंद राज्य में नहीं रह सकेगा। वह यक्षों की सभाओं में भी शामिल नहीं हो सकेगा। इसके अलावा, उसका विवाह न तो स्वीकार किया जाएगा और न ही विवाह के लिए दिया जाएगा, उसे (उसके विकृत दांतों, आंखों या शरीर के किसी भी अंग पर टिप्पणी करके) अपमानित किया जाएगा, और अमानवीय प्राणी उसके सिर पर एक खाली कटोरा रखकर उसे (सिर को) सात टुकड़ों में फाड़ देंगे।
हे सौभाग्यशाली! कुछ अमानव क्रूर, हिंसक और प्रतिशोध लेने वाले होते हैं; वे न तो चारों महान राजाओं की आज्ञा मानते हैं, न उनके मंत्रियों की और न ही उनके सेवकों की। उन्हें चारों महान राजाओं के विद्रोही कहा जाता है। जैसे मगध राज्य में चोर न तो मगध के राजा की आज्ञा मानते हैं, न मंत्रियों की और न ही उनके सेवकों की, और इसलिए उन्हें मगध के राजा के विद्रोही कहा जाता है, वैसे ही कुछ अमानव क्रूर होते हैं... (जैसा कि पहले बताया गया है)। उन्हें चारों महान राजाओं के विद्रोही कहा जाता है।
हे सौभाग्यशाली, यदि कोई अमानवीय प्राणी—नर या मादा यक्ष, युवक या कन्या यक्ष, यक्ष मंत्री या कोई भी यक्ष, या यक्ष सेवक; नर या मादा गंधर्व... (जैसा कि पहले बताया गया है); नर या मादा कुंभंद... नर या मादा नाग... किसी भिक्षु या भिक्षुणी, या गृहस्थ पुरुष या गृहस्थ स्त्री के साथ चले, या उसके साथ दुर्भावनापूर्ण इरादे से खड़ा हो, बैठे या लेटे, तो (पीड़ित व्यक्ति) को उन यक्षों, शक्तिशाली यक्षों, उनके सेनापतियों और प्रमुख सेनापतियों को सूचित करना चाहिए, जोर से रोना चाहिए और चिल्लाना चाहिए कि: 'यह यक्ष मुझे पकड़ रहा है, मुझ पर कब्जा कर रहा है, मुझे सता रहा है, मुझ पर हमला कर रहा है, मुझे हानि पहुंचा रहा है, मुझे गंभीर रूप से हानि पहुंचा रहा है और मुझे जाने नहीं दे रहा है!'
"वे यक्ष कौन हैं, पराक्रमी यक्ष और सेनापति कौन हैं, और प्रमुख सेनापति कौन हैं (जिनसे ऐसी अपील की जानी चाहिए)?"
49. इंदा, सोम, और वरुण, भारद्वाज, पजापति, चंदना, कामसेट्ठ भी, किन्नुघंडु, निगहंडु,
50. पनाडा, ओपमन्ना भी, देवसता और मातलि, चित्तसेना और गंधब्बा, नल, राजा, जनसभा,
51. सतगिरा, हेमावता, पुन्नका, करतिया, गुला, सिवाका, मुकलिंडा भी, वेसामिट्टा, युगंधरा,
52. गोपाल, सुप्पेगधा, हिरी, नेट्टी, मंडिया, पंचलचंदा, अलावक, पज्जुन्ना, सुमना, सुमुखा, ददमुखा, इनके साथ सेरिसाक्का भी हैं। "ये यक्ष हैं, शक्तिशाली यक्ष, सेनापति, प्रमुख सेनापति, जिनसे (पीड़ित व्यक्ति) को सूचना देनी चाहिए, जोर से पुकार कर कहना चाहिए: 'यह यक्ष मुझे पकड़ रहा है, मुझ पर कब्जा कर रहा है, मुझे सता रहा है, मुझ पर हमला कर रहा है, मुझे हानि पहुंचा रहा है, और मुझे बहुत अधिक हानि पहुंचा रहा है, और यह यक्ष मुझे जाने नहीं दे रहा है!'"
"हे प्रिय, यह अतानाता संरक्षण है जिसके द्वारा भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और गृहस्थ महिलाएं निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"
"हे सौभाग्यशाली, अब हम आपसे विदा लेते हैं; क्योंकि हमें कई कर्तव्यों का पालन करना है (चारों महान राजाओं ने ऐसा कहा)।"
"महान राजाओं, अब आपके प्रस्थान का समय आ गया है" (बुद्ध ने उत्तर दिया)।
चारों महान राजा अपने-अपने आसनों से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके उनके दाहिनी ओर परिक्रमा की और वहीं पर अंतर्धान हो गए। (सेवक) यक्षों में से कुछ अपने-अपने आसनों से उठे और भगवान बुद्ध को प्रणाम करके उनके दाहिनी ओर परिक्रमा की और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ ने भगवान बुद्ध से मैत्रीपूर्ण और विनम्र ढंग से बातचीत करते हुए अभिवादन किया और वहीं पर अंतर्धान

हो गए; कुछ ने हाथ जोड़कर भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ ने अपना नाम और वंश बताया और वहीं पर अंतर्धान हो गए; कुछ मौन ही वहीं पर अंतर्धान हो गए।
रात्रि बीत जाने पर भगवान बुद्ध ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: (बुद्ध ने भिक्षुओं को वही शब्द-शब्द सुनाया जो महान राजा वेसवना ने कहे थे) "हे भिक्षुओं, अतानाता सुरक्षा मंत्र को अच्छी तरह याद कर लो, इसका निरंतर उपयोग करो, इसे अपने मन में रखो। हे भिक्षुओं, अतानाता सुरक्षा तुम्हारे कल्याण के लिए है, और इसके बल पर भिक्षु और भिक्षुणियां, गृहस्थ पुरुष और स्त्रियां निश्चिंत, सुरक्षित और अक्षुण्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।"
भगवान बुद्ध ने ऐसा कहा। ये सुनकर भिक्षु प्रसन्न हो गए और भगवान बुद्ध के वचन सुनकर आनंदित हुए।

अतानातिया सुत्त: मूल पाली भाषा में,tipitaka.org से
275. एवं मे सुतं - एकं समयं भगव राजगहे विहारति गिज्जकुते पब्बते। अथा खो कटारो महाराजा [महाराजनो (का.)] महतिया च यक्खसेनाय महतिया च गन्धबसेनाय महतिया च कुम्भनदसेनाय महतिया च नागसेनाय कैटुडिसं रक्खं थपेत्वा कैटुडिसं गुंबं थपेत्वा कैटुडिसं ओवरानं थपेत्वा अभिकांतया रत्तिया अभिकांतवना केवलकप्पां गिज्जाकुटं पब्बतम् ओभसेत्व [गिज्जाकुट्टं ओभासेत्वा (सि. स्या. पि.)] येन भगव तेनुपसांकमिंसु; उपसंकमित्वा भगवन्तं अभिवदेत्वा एकमन्तं निसिदिन्सु। तेपि खो यक्खा अप्पेकैसे भगवन्तं अभिवदेत्वा एकमन्तं निसिदिंसु, अप्पेकैसे भगवत् सद्धिं सम्मोदिंसु, सम्मोदानियं कथं सरण्यं वितिसरेत्व एकमंतं निसिदिंसु, अप्पेकैसे येन भगव तेनंजलिं पणमेत्वा एकमंतं निसिडिंसु, अप्पेकैसे नामगोट्टं सवेत्वा एकमंतं निसिडिंसु, अप्पेकैसे तुन्हिभुता एकमन्तम् nisīdiṃsu.
276. एकमंतम निसिन्नो खो वेस्सावणो महाराज भगवन्तं एतदावोचा - "शांति ही, भंते, उदार यक्खा भगवतो अप्पसन्ना। शांति हि, भंते, उदार यक्खा भगवतो पस्न्ना। शांति हि, भन्ते, मज्झिमा यक्खा भगवतो अप्पसन्ना। शांति हि, भन्ते, मज्झिमा यक्खा भगवतो पस्न्ना। शांति हि, भंते, निका यक्खा भगवतो अप्पसन्ना। शांति हि, भंते, निका यक्खा भगवतो पस्न्ना। येभुयेन खो पना, भंते, यक्खा अप्पसन्नयेव भगवतो। इसलिए किस्सा हेतु? भगव हाय, भंते, पनातिपात वेरामनिया धम्मं देसेटि, अदिन्नादाना वेरामनिया धम्मं देसेटी, कामेसुमिचाचारा वेरामनिया धम्मं देसेटी, मुसावादा वेरामनिया धम्मं देसेटि, सुरामेरायमज्जप्पमदथना वेरामनिया धम्मं देसेटि। येभुयेना खो पाना, भंते, यक्खा अप्पतिविरतायेव पणनातिपता, अप्पतिविरता अदिनादाना, अप्पतिविरता कामेसुमिचचारा, अप्पतिविरता मुसावदा, अप्पतिविरता सुरमेरेयमजप्पमदथना। तेसं तं होति अप्पियं अमानपं। शांति हि, भंते, भगवतो सावका अरन्नवनपत्थानि पंतानि सेनासननि पतिसेवंति अप्पसद्दनि अप्पनिघ्घोसानि विजनावतानि मनुस्सराहास्सेयकानि [मनुस्सरहासेयकानि (सि. स्या.) पी.)]पतिसल्लानासरूपपाणि. तत्थ सन्ति उदार यक्खा निवासिनो, ये इमास्मि भगवतो पावकेन अप्पसन्ना। तेसं पसदाय उग्गनहातु, भंते, भगव अतानातियं रक्खं भिक्खुनं भिक्खुनिनं उपासकन उपासिकाणं गुटिया रक्खाय अविहिंसया फासुविहारयति। अधिवासीसि भगव तुन्हिभावेन।
अथ खो वेस्सावणो महाराज भगवतो अधिवासन विदित्वा तयं वेलायं इमं अतानातियं रक्खं अभासि -
277. "विपसिस्सा च [इमे काकारा पोराणपोत्थकेसु नत्थि] नमत्थु, चक्खुमंतस्सा सिरिमतो।
सिखिसापि सीए [इमे काकारा पोराणपोत्थकेसु नत्थि] नमत्थु, सब्बाभूतानुकमपिनो।
"वेसाभुस्सा सीए [इमे काकारा पोराणपोत्थकेसु नत्थि] नमत्थु, नहतकस्सा तपासिनो;
नामत्तु ककुसंधास्सा, मरसेनापमद्दिनो।
"कोनागमनस्स नमत्थु, ब्राह्मणस्स वुसीमतो;
कस्सापासा च [इमे चकारा पोराणपोत्थकेसु नत्थि] नमत्थु, विप्पमुत्तस्स सब्बाधि।
"अंगिरसस्सा नामत्तु, शाक्यपुत्तस्स सिरिमतो;
यो इमं धम्मं देसेसि [धम्ममदेसि (सि. स्या. पि.), धम्मं देसेटि (?)], सब्बदुक्खापनुदानं।
"ये कपि निब्बुता लोके, यथाभूतं विपस्सीसुं;
ते जना एपिसुनाथा [एपिसुना (सि. स्या. पि.)], महंता वितसारदा।
"हितं देवमनुस्सनं, यं नमस्सांति गोतमम्;
विज्जाचरणसंपन्नं, महन्तं वितसारदम्।
278. "यतो उग्गच्छति सूर्यो [सूरियो (सि. स्या. पि.)], आदिको मंडली महा।
यस्सा कुग्गच्छमानस्स, संवरीपि निरुज्जति;
यस्सा कुगगेट सुरिये, 'दिवसोति पवुक्कति।'
"रहदोपि तत्थ गंभीरो, समुद्दो सरितोदको;
एवं तं तत्थ जानन्ति, 'समुद्दो सरितोदको'।
"इतो 'सा पुरिमा दिसा', इति नं अचिक्खति जानो;
यं दिसं अभिपालेति, महाराज यस्स्सी सो।
"गंधब्बाणं अधिपति [अधिपति (सि. स्या. पि.) एवमुपरिपि], 'धतरथोऽति नमसो;
रामति नच्चगितेहि, गंधब्बेहि पुरक्खतो।

"पुत्तपि तस्स बहावो, एकानामति मे सुतम्;
असिति दास एको च, इंदानामा महब्बला।
ते कपि बुद्धं दिस्वाना, बुद्धं आदिच्चबंधुणं;
दुरतोवा नमस्सान्ति, महन्तं वितसारदम्।
"नमो ते पुरिसाजनना, नमो ते पुरिसुत्तमा;
कुसलेना समेक्खसि, अमानुस्सापि तं वंदन्ति;
सुतं नेतं अभिन्हासो, तस्मा एवं वदेमसे।
"जिनं वंदथ गोतमम्, जिनं वंदथ गोतमम्;
विज्जाचरणसंपन्नं, बुद्धं वंदम गोतमम्।'
279. "येन पेटा पावुक्कन्ति, पिसुना पिठिमांसिका।"
पानातिपतिनो लुद्दा [लुद्दा (पी. का.)], कोरा नेकाटिका जाना।
"इतो 'सा दक्खिना दिसा', इति नं अचिक्खति जानो;
यं दिसं अभिपालेति, महाराज यस्स्सी सो।
"कुम्भानां अधिपति, 'विरुधो' इति नमसो;
रामति नच्चगितेहि, कुम्भन्देहि पुरक्खतो।
"पुत्तपि तस्स बहावो, एकानामति मे सुतम्;
असिति दास एको च, इंदानामा महब्बला।
ते कपि बुद्धं दिस्वाना, बुद्धं आदिच्चबंधुणं;
दुरतोवा नमस्सान्ति, महन्तं वितसारदम्।
"नमो ते पुरिसाजनना, नमो ते पुरिसुत्तमा;
कुसलेना समेक्खसि, अमानुस्सापि तं वंदन्ति;
सुतं नेतं अभिन्हासो, तस्मा एवं वदेमसे।
"जिनं वंदथ गोतमम्, जिनं वंदथ गोतमम्;
विज्जाचरणसंपन्नं, बुद्धं वंदम गोतमम्।'
280. "Yattha coggacchati sūriyo, ādicco maṇḍalī mahā.
यस्सा कोग्गच्छमानस्स, दिवासोपि निरुज्जति;
यस्सा कॉगगेट सुरिये, 'संवरी'ति पवुक्कति।'
"रहदोपि तत्थ गंभीरो, समुद्दो सरितोदको;
एवं तं तत्थ जानन्ति, 'समुद्दो सरितोदको'।
"इतो 'सा पछिमा दिसा', इति नं अचिक्खति जानो;
यं दिसं अभिपालेति, महाराज यस्स्सी सो।
"नागानञ्च अधिपति, 'विरुपक्खोति नमसो;'
रामति नक्कागितेहि, नगेहेव पुरक्खतो।
"पुत्तपि तस्स बहावो, एकानामति मे सुतम्;
असिति दास एको च, इंदानामा महब्बला।
ते कपि बुद्धं दिस्वाना, बुद्धं आदिच्चबंधुणं;
दुरतोवा नमस्सान्ति, महन्तं वितसारदम्।
"नमो ते पुरिसाजनना, नमो ते पुरिसुत्तमा;
कुसलेना समेक्खसि, अमानुस्सापि तं वंदन्ति;
सुतं नेतं अभिन्हासो, तस्मा एवं वदेमसे।
"जिनं वंदथ गोतमम्, जिनं वंदथ गोतमम्;
विज्जाचरणसंपन्नं, बुद्धं वंदम गोतमम्।'
281. "येन उत्तरकुरुवो [उत्तरकुरु रम्मा (सि. स्या. पि.)], महानेरु सुदस्सानो।
मनुषसा तथा जयंती, अमामा अपरिग्गहा।
"न ते बीजं पावापंती, नापि नियंती नंगला;
अकथपाकिमं सालिं, परिभुञ्जन्ति मानुषा।
"अकानं अथुसं शुद्धं, सुगंधं तंदुलपफलं;
तुण्डिकिरे पचित्वाना, ततो भुञ्जन्ति भोजनं।

"गाविं एकखुरं कत्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं;
पसुं एकखुरं कत्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं।
"इत्थिं वा वाहनं [इत्थि-वाहनं (सि. पि.), इत्थिं वाहनं (स्या.)] कट्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं;
पुरिसं वाहनं कत्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं।
"कुमारीं वाहनं कत्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं;
कुमारं वाहनं कत्वा, अनुयन्ति डिसोडिसं।
"Te yāne abhiruhitvā,
सब्बा दिसा अनुपरियंती [अनुपरियंती (स्या.)];
Pacārā tassa rājino.
"हत्थियानं अस्सयानं, दिब्बं यानं उपथितः;
पसाद शिविका सेवा, महाराजस्स यसस्सिनो।
"Tassa ca nagarā ahu,
Antalikkhe sumāpitā;
अतानाता कुसीनता परकुसिनाता,
नटसूर्या [नातपुरिया (सी.पी.), नटापरिया (स्या.)] परकुसीताना.
"उत्तरेण कासिवन्तो [कपिवंतो (सि. स्या. पि)],
Janoghamaparena ca;
नवनावुतिओ अंबरअम्बरावतियो,
अचकमंदा नाम राजधनी।
"कुवेरस्सा खो पाना, मारिसा, महाराजससा विसाणा नाम राजधानि;
तस्मा कुवेरो महाराज, 'वेसावनो'ति पवुक्कति।'
"पक्सेसंतो पकासेन्ति, ततोला तत्तला ततोताला;
ओजसि तेजसि ततोजसि, सुरो राजा अरिथो नेमि।
"रहदोपि तत्थ धरणि नाम, यतो मेघा पवसन्ति;
वस्सा यतो पटैयन्ति, सभापि तथा सलावती [भागलवती (सि. स्या. पि.)] नामा।
"Yattha yakkhā payirupāsanti, tattha niccaphalā rukkhā;
नाना दिजगाना युता, मयूरकोन्चाभिरुदा;
Kokilādīhi vagguhi.
"जीवाञ्जिवकसद्देत्थ, अथो ओत्थवचित्तका;
कुक्कुट्टका [कुकुत्थाका (सी.पी.)] कुधिरका, वेन पोक्खरासटाका।
"सुकसासिकासद्देत्था, दण्डमानवकानि च;
शोभति सब्बकालं सा, कुवेरननि सदा।
"इतो 'सा उत्तरा दिसा', इति नं अचिक्खति जानो;
यं दिसं अभिपालेति, महाराज यस्स्सी सो।
" यक्खानांच अधिपति, 'कुवेरो' इति नमसो;
रामति नक्कागितेहि, यक्खेहेव पुरक्खतो।
"पुत्तपि तस्स बहावो, एकानामति मे सुतम्;
असिति दास एको च, इंदानामा महब्बला।
"ते कपि बुद्धं दिस्वाना, बुद्धं आदिच्चबंधुणं;
दुरतोवा नमस्सान्ति, महन्तं वितसारदम्।
"नमो ते पुरिसाजनना, नमो ते पुरिसुत्तमा;
कुसलेना समेक्खसि, अमानुस्सापि तं वंदन्ति;
सुतं नेतं अभिन्हासो, तस्मा एवं वदेमसे।
"जिनं वंदथ गोतमम्, जिनं वंदथ गोतमम्;
विज्जाचरणसंपन्नं, बुद्धं वंदामा गोतम"न्ति।
"अयं खो सा, मारिसा, अतानातिया रक्खा भिक्खुनं भिक्खुनिनं उपासकनं उपासिकाणं गुटिया रक्खाय अविहिंसया फासुविहारय.
202. [परियपुता (का.)]. टैम सीई अमानुसो यक्खो वा यक्खिनी वा यक्खापोटाको वा यक्खापोटिका वा यक्खामहामात्तो वा यक्खापरिसाज्जो वा यक्खापचारो वा, गंधब्बो वा गंधब्बी वा गंधब्बापोटाको वा गंधब्बापोटिका वा गन्धबमहामत्तो वा गन्धब्बापरिसज्जो वा

गन्धबपचारो वा, कुम्भण्डो वा कुम्भण्डी वा कुम्भण्डपोतको वा कुम्भण्डपोतिका वा कुम्भण्डमहामत्तो वा कुम्भाण्डपरिसज्जो वा कुंभण्डपचारो वा, नागो वा नागी वा नागापोटाको वा नागापोटिका वा नागमहामत्तो वा नागापरिसज्जो वा नागापाचारो वा, पदुथचित्तो भिक्खुम् वा भिक्खुनिं वा उपासकं वा उपासिकम् वा गच्छन्तं वा अनुगच्छेय्य, स्थितं वा उपतिथेय्य, निसिन्नं वा उपनिषेद्यय, निपन्नं वा उपनिपज्जेय्य। ना मी सो, मारिसा, अमानुसो लभेया गमेसु वा निगमेसु वा सक्करां वा गरुकारां वा। ना मे सो, मारिसा, अमानुसो लभेया अहाकामंडाय नाम राजधानिया वत्थुं वा वासं वा। न मे सो, मारिसा, अमानुसो लभेया यक्खानां समितिं गंतुम्। एपिस्सु नं, मारिसा, अमानुस्सा अनवयहमपि नं कार्य्युं अविवयहं। एपिस्सु नं, मारिसा, अमानुस्सा अत्ताहिपि परिपुणनाहि परिभासाहि परिभासेयुम्। एपिस्सु नाम, मारिसा, अमानुस्सा ऋत्तंपिस्सा पत्तं सिसे निक्कुज्जेय्युं। एपिस्सु नं, मारिसा, अमानुस्सा सत्तधापिस्सा मुद्धं फलेयुं।
"शांति ही, मारिसा, अमानुस्सा चंदा रुद्धा [रुद्दा (सी. पी.)] रभासा, ते नेव महाराजनं अदियंति, न महाराजनं पुरिसाकानां अदियंति, न महाराजनं पुरिसकानं पुरिसकानं अदियंति। ते खो ते, मारिसा, अमानुस्सा महाराजनं अवरुद्ध नाम वुक्कन्ति। सेय्यथापि, मारिसा, रणनो मागधस्सा विजिते महाकोरा। ते नेव राणो मागधस्सा पुरिसाकानां अदियान्ति, न राणो मागधसा पुरिसाकानां अदियान्ति, न राणो मागधसा पुरिसाकानां अदियान्ति। ते खो ते, मारिसा, महाकोरा राणो मागधस्सा अवरुद्ध नामा वुक्कन्ति। एवमेव खो, मारिसा, शांति अमानुषा चंद रुद्ध रभासा, ते नेव महाराजनं अदियंति, न महाराजां पुरिसाकानां अदियंति, न महाराजनं पुरिसकानं पुरिसकानं अदियंति। ते खो ते, मारिसा, अमानुस्सा महाराजनं अवरुद्ध नाम वुक्कन्ति। यो ही कोसी, मारिसा, अमानुसो यक्खो वा यक्खिनी वा...पे... गंधब्बो वा गंधब्बी वा... कुंभंदो वा कुंभंडी वा... नागो वा नागी वा नागापोटाको वा नागापोटिका वा नागमहामत्तो वा नागापरिसज्जो वा नागपचारो वा पदुथचित्तो भिक्खुम् वा भिक्खुनिम् वा उपासकम वा उपासिकम् वा गच्छन्तं वा अनुगच्छेय, थितम् वा उपतिथेय्य, निसिन्नं वा उपनिसिडेय्य, निपन्नं वा उपनिपज्जेय्य। इमेसं यक्खानं महायक्खानं सेनापतिनं महासेनापतिनं उज्झापेटब्बां विक्कंदितबं विरावितब्बां - 'अयं यक्खो गन्हाति, अयं यक्खो अविसति, अयं यक्खो हेथेति, अयं यक्खो विहेथेति, अयं यक्खो हिंसति, अयं यक्खो विहिंसति, अयं यक्खो न मुनचति'।
283. "कटमेसं यक्खानां महयक्खानां सेनापतिनं महासेनापतिनं?"
"इन्दो सोमो वरुणो च, भारद्वाजो प्रजापति;
कैंडानो कामसेठो च, किन्नुघंदु निघंदु च।
"पनादो ओपमान्नो च, देवसुतो च मतलि;
चित्तसेनो च गंधब्बो, नाओ राजा जनेसभो [जनोसभो (स्या.)]।
"सतागिरो हेमवतो, पुननको करतियो गुओ;
शिवको मुकालिंदो सीए, वेस्सामितो युगंधरो।
"गोपालो सुप्परोधो सीए [सुपगेधो सीए (सि. स्या. पि.)], हिरि नेति [हिरि नेति (सि. पि.)] सीए मंडियो;
पञ्चलकाण्डो आडवको, पज्जुन्नो सुमानो सुमुखो;
दधिमुखो मणि मणिवरो [मणि मणिकारो (स्या. पि.)] दीघो, अथो सेरीसाको सहा।
"इमेसं यक्खानं महायक्खानं सेनापतिनं महासेनापतिनं उज्झापेटब्बां विक्कंदितबं विरावितब्बां - 'अयं यक्खो गन्हाति, अयं यक्खो अविसति, अयं' यक्खो हेथेति, अयं यक्खो विहेथेति, अयं यक्खो हिंसति, अयं यक्खो विहिंसति, अयं यक्खो न मुनचति'।
"अयं खो सा, मारिसा, अतानातिया रक्खा भिक्खुनं भिक्खुनिनं उपासकनं उपासिकाणं गुटिया रक्खाय अविहिंसया फासुविहारय. हांदा च दानि मयं, मारिसा, गच्छामा बहुच्चा मयं बहुकरणीयति। "यस्सादानि तुम्हें महाराजनो कलां मन्नत'ति।'
284. अथ खो चत्तरो महाराज उत्थयासन भगवन्तं अभिवदेत्वा पदक्खिनं कत्वा तत्थेवंतराधायिन्सु। तेपि खो यक्खा उत्थायसना अप्पेकैसे भगवन्तं अभिवदेत्व पदक्खिनं कत्वा तत्थेवंतराधायिन्सु। अप्पेक्कस भगवत् सद्धिं सम्मोदिंसु, सम्मोदानियं कथं शरणियं वीतिसारेत्व तत्थेवंतराधायिन्सु। अप्पेक्कसे येन भगव तेनंजलिं पणमेत्वा तत्थेवंतराधायिन्सु। अप्पेक्कसे नामगोत्तं सवेत्वा तत्थेवंतराध्यायिन्सु। अप्पेक्कसे तुन्हिभूत तत्थेवंतराध्यायिन्सुति।

अतानातिया सुत्त: परित्ता पाली के बर्मी संस्करण से जप संस्करण
(यह एक परोपकारी उपयोगकर्ता संपुना द्वारा प्रदान किया गया था)

अप्पासन्नेहि नाथस्सा,
ससाने साधुसम्मते;
अमानुस्सेहि कन्देही,
सदा किब्बिसाकारीभि।
राक्षस (मनुष्यों में) और अन्य लोग जिन्हें बुद्ध की सुप्रसिद्ध व्यवस्था में कोई विश्वास नहीं है, वे हमेशा बुराई करते हैं।

Parisanam catassannam,

ahimsaya ca guttiya;
yam desesi mahaviro,
parittam tam bhanama he.
महान साहसी ने इस सूत्र का उपदेश इसलिए दिया ताकि यह उन्हें खतरों से बचाए और चारों सामाजिक वर्गों को कोई हानि न पहुंचे। हे श्रेष्ठजनों! आइए हम इस सूत्र का पाठ करें।

विपस्सीसा सीए नमत्तु,
चक्खुमंतस्सा सिरिमतो;
सिक्खिस्सपि च नमत्थु,
सब्बाभूता-नुकमपिनो।
ज्ञान और महिमा की आंख से युक्त विपश्यी बुद्ध को श्रद्धांजलि; सभी प्राणियों के प्रति महान दयालु सिखी बुद्ध को श्रद्धांजलि।

वेस्साभुस्सा च नमत्तु,
नहतकास्सा तपासिनो;
नमत्तु ककुसंधास्सा,
मरासेना-पमाद्दिनो।
वेसाभु बुद्ध को श्रद्धांजलि, जिन्होंने सभी अशुद्धियों को धो डाला और जिनके पास अच्छी तपश्चर्या है। काकुसंध बुद्ध को श्रद्धांजलि जिन्होंने मारा (दुष्ट) की सेना को हराया।

कोनगामनस्सा नामत्तु,
ब्राह्मणस्सा वुसिमतो;
कस्सापास्सा च नमत्थु,
विप्पमुत्तस्सा सबब्धि।
कोनागमन बुद्ध को श्रद्धांजलि जिन्होंने सभी बुराइयों को मिटा दिया और महान जीवन जीया। कस्पा बुद्ध को श्रद्धांजलि जो सभी अशुद्धियों से मुक्त हो गए।

अंगिरसस्सा नामत्तु,
शाक्यपुत्तस्सा सिरिमतो;
यो इमाम धम्मम देसेसि,
सबदुक्खा-पनुदानम।
गौतम बुद्ध ने इस धम्म का उपदेश दिया जिसने सभी कष्टों को दूर कर दिया। शाक्यों के इस पुत्र (गौतम बुद्ध) को श्रद्धांजलि, जिनके शरीर से प्रकाश की किरणें निकलती थीं और जो गौरवशाली थे।

Ye capi nibbuta loke,
yathabhutam vipassisum;
te jana apisunatha,
mahanta vitasarada.
इस संसार में, जिन्होंने सभी वासनाओं की ज्वालाओं को बुझा दिया है और चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में भली-भांति देख लिया है - ये अरहंत होने के कारण कभी निंदा नहीं करते। वे महान और भयमुक्त होते हैं।

हितम देवा मनुस्सनम्,
यं नमस्सन्ती गौतमम्;
विजयचरणसंपन्नम्,
महन्तम् वितसारदम्।
वे गौतम बुद्ध को प्रणाम करते हैं, जो देवताओं और मनुष्यों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं, जो ज्ञान और अच्छे आचरण से संपन्न हैं, जो महान और भयमुक्त हैं।

Ete canne ca sambuddha,

Aneka satakotiyo;
sabbe buddha samasama,
sabbe buddha mahiddhika.
वे सात बुद्ध और अन्य करोड़ों बुद्ध—ये सभी बुद्ध पूर्वोक्त बुद्धों के समान हैं, इन सभी बुद्धों में महान शक्ति है।

सब्बे दास बलुपेत,
वेसरज्जेह-उपगत;
सब्बे ते पतिजनन्ति,
असभम थाना मुत्तमम्।
ये सभी बुद्ध दस प्रकार की शक्तियों और निर्भयता के ज्ञान से संपन्न हैं। ये सभी बुद्ध सर्वज्ञता की अवस्था का दावा करते हैं।

ये बुद्ध, आठ प्रकार के श्रोताओं में निर्भीक होकर , सिंह के समान गर्जना करते
हैं

और बिना पीछे मुड़े संसार में धर्मचक्र को गतिमान करते हैं ।

उपेता बुद्ध धम्मेहि,
अत्थरसहि नायका;
बत्तिम्सा लक्खानुपेता,
सीता नुब्यंजन धरा।
ये विश्व के नेता बुद्धों के अठारह विशेष गुणों से संपन्न हैं। उनमें 'महान पुरुष' के बत्तीस प्रमुख लक्षण और अस्सी लघु लक्षण हैं।

ब्यामा पप्पाभाया सुप्पभा,
सब्बे ते मुनि कुंजारा;
बुद्ध सब्बन्नुनो एते,
सब्बे खिनसव जिना।
ये सभी परम संत आसपास के प्रभामंडल से चमकते हैं; ये सभी बुद्ध सर्वज्ञ हैं। इन सभी बुद्धों ने अशुद्धियों को समाप्त कर दिया है और वे विजेता हैं।

महापभा महातेजा,
महापन्ना महाबबला;
महाकरुणिका धीरा,
सब्बेसनम सुखवः।
ये बुद्ध तेजस्वी प्रकाश, महान शक्ति, महान ज्ञान, महान सामर्थ्य, महान करुणा और स्थिर एकाग्रता से परिपूर्ण हैं। वे सभी प्राणियों के सुख को पूर्ण करते हैं।

Dipa natha patittha ca,
tana lena ca paninam;
gati bandhu mahessasa,
sarana ca hitesino.
वे प्राणियों के द्वीप हैं, स्वामी हैं, आधार हैं, रक्षक हैं, आश्रय हैं, आश्रयस्थल हैं, मित्र हैं, गौरवशाली उद्धारकर्ता हैं, शरणस्थल हैं, और वे सभी प्राणियों के कल्याण की कामना करते हैं।

सदेवकस्सा लोकस्सा,
सब्बे एते पारायण;
तेसाऽहं सिरसा पदे,
वंदामि पुरीसुत्तमे।

ये सभी बुद्ध देवताओं और मनुष्यों की दुनिया के लिए दयालु आश्रय हैं। मैं इन परमपुरुषों के चरणों में आदरपूर्वक अपना सिर झुकाता हूं।

Vacasa manasa ceva,
vandam-ete tathagate;
sayane asane thane,
gamane capi sabbada.
मैं इन सिद्ध पुरुषों को शब्दों और विचारों से प्रणाम करता हूँ, चाहे मैं लेटा हुआ हूँ, बैठा हूँ, खड़ा हूँ या चल रहा हूँ।

सदा सुक्खेन रक्खंतु,
बुद्ध संतिकारा तुवम्;
तेहि त्वं रक्खितो सन्तो,
मुत्तो सब्बभयेहि च।
शांतिदूत बुद्ध हमेशा आपकी रक्षा करें ताकि आप खुश रहें। उनके द्वारा सुरक्षित रहकर तुम सभी खतरों से मुक्त हो जाओ।

सब्बरोगा विनीमुत्तो,
सब्बसंताप वज्जितो;
सब्बवेरम्-अतिक्कन्तो,
निब्बुतो च तुवम् भव।
आप सभी रोगों से मुक्त हों, चिंता और व्याकुलता से मुक्त हों। आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें और शांतिवान रहें।

Tesam saccena silena,
khanti metta balena ca;
tepi amhe-nurakkhantu,
arogena sukhena ca.
उनके सत्यवाद, सद्गुण, धैर्य और प्रेम की शक्ति से, वे बुद्ध हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

पुरत्थिमास्मिं दिसाभगे,
सन्ति भूत महिद्धिका;
तेपि अमहे-नुरक्खंतु,
अरोगेन सुखेना च।
पूर्व दिशा में गंधर्व नामक दिव्य सत्ताएं विराजमान हैं, जो महान शक्ति से परिपूर्ण हैं। वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

दक्षिण दिशा में कुम्भंड नामक दिव्य प्राणी विराजमान हैं, जिनके पास अपार शक्ति है
।

वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

पश्चिम दिशा में महान शक्ति वाले नाग (दिव्य ड्रैगन)
विराजमान

हैं। वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें ।

उत्तरास्मिं दिसाभगे,
सन्ति यक्खा महिद्धिका;

तेपि अमहे-नुरक्खंतु,
अरोगेन सुख्खेना च।
उत्तर दिशा में महान शक्ति वाले यक्ख नामक दिव्य प्राणी विराजमान हैं। वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

पुरत्थिमेना धतरत्थो,
दक्खिनेन विरुलहको;
पच्चिमेना विरुपक्खो,
कुवेरो उत्तरम दिसम।
पूर्व में धतरत्थ, दक्षिण में विरुल्हक, पश्चिम में विरुपक्खा और उत्तर में कुवेरा है।

Cattaro te maharaja,
lokapala yasassino;
tepi amhe-nurakkhantu,
arogena sukhena ca.
ये चारों दिव्य राजा विशाल दल-बल के साथ संसार के रक्षक हैं। ईश्वर करे कि वे हमारी भी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

आकाश और पृथ्वी पर विराजमान शक्तिशाली देवता और नाग हैं। वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें ।

इद्धिमान्तो च ये देवा,
वसंत इधा ससाने;
तेपि अमहे-नुरक्खंतु,
आरोगेन सुखेना च।
बुद्ध के उपदेशों के दायरे में महान शक्ति वाले देवता निवास करते हैं। वे हमारी रक्षा करें ताकि हम सभी रोगों से मुक्त होकर सुखी रहें।

सब्बितियो विवज्जन्तु,
सोको रोगो विनस्सतु;
मा ते भवन्त्व-अंतराय,
सुखी दिघयुको भव।
सभी विपत्तियाँ आपसे दूर रहें। दु:ख और रोग नाश हों। आपको कभी कोई संकट न आए। आपको सुख और दीर्घायु प्राप्त हो।

अभिवदना सिलिसा,
निक्कम वुद्धपकायिनो;
कत्तरो धम्म वद्दन्ति,
आयु वन्नो सुखं बलम्।
जो लोग पवित्र संस्कृति से संपन्न हैं और हमेशा बड़ों का सम्मान करते हैं, उनके लिए ये चार उपहार वाली चीजें बढ़ती हैं: दीर्घायु, सौंदर्य, खुशी और ताकत।

अतनतिय सुत्तं निश्चितम्।

यहां अतानाटा के दिव्य शहर में संरक्षण पर प्रवचन समाप्त होता है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.10 संगीति सुत्त (DN33)

मैंने ऐसा सुना है:

एक बार भगवान लगभग पाँच सौ भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ मल्ला देश की यात्रा कर रहे थे। मल्लाओं की राजधानी पावा पहुँचकर वे चुंडा लोहार के आम के बाग में ठहरे।

उस समय पावा के मल्लों का एक नया सभा-महल, जिसे उभतक कहा जाता था, हाल ही में निर्मित हुआ था और उसमें अभी तक कोई तपस्वी, ब्राह्मण या वास्तव में कोई मनुष्य नहीं ठहरा था। यह सुनकर कि भगवान चुंडा के आम के बाग में ठहरे हुए हैं, पावा के मल्ल उनसे मिलने गए। उन्हें प्रणाम करने के बाद, वे एक तरफ बैठ गए और बोले:

हे भगवान, पावा के मल्लों ने हाल ही में उब्भटक नामक एक नया सभा-महल बनवाया है, और अभी तक इसमें किसी तपस्वी, ब्राह्मण या किसी भी मनुष्य ने प्रवेश नहीं किया है। ईश्वर ही इसे उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति हों! यदि वे ऐसा करते हैं, तो यह पावा के मल्लों के लिए चिरस्थायी कल्याण और सुख का कारण बनेगा।

और भगवान ने मौन रहकर सहमति दी।

उनकी सहमति देखकर मल्ला उठे, उन्हें प्रणाम किया, उनके दाहिनी ओर से निकलकर सभा भवन में चले गए। उन्होंने चारों ओर चटाइयाँ बिछाईं, कुटियाएँ लगाईं, पानी का पात्र और तेल का दीपक जलाया और फिर भगवान के पास लौटकर उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गए और अपने किए हुए कार्य की सूचना देते हुए कहा,

जब भी भगवान परमेश्वर तैयार होंगे।

फिर भगवान ने वस्त्र धारण किए, अपना वस्त्र और कुंड लिया और अपने भिक्षुओं के साथ सभा भवन में गए। वहाँ उन्होंने अपने पैर धोए, भवन में प्रवेश किया और पूर्व दिशा की ओर मुख करके केंद्रीय स्तंभ के पास बैठ गए। भिक्षुओं ने भी अपने पैर धोए और भवन में प्रवेश करके भगवान के सामने पूर्व दिशा की ओर मुख करके पश्चिमी दीवार के पास बैठ गए। पावा मल्लों ने भी अपने पैर धोए, भवन में प्रवेश किया और भगवान के सामने पश्चिम दिशा की ओर मुख करके पूर्वी दीवार के पास बैठ गए। फिर भगवान ने रात के समय मल्लों को धम्म के विषय में उपदेश दिया, उन्हें उपदेश दिया, प्रेरित किया, उनमें जोश भर दिया और उन्हें आनंदित किया। फिर उन्होंने उन्हें यह कहते हुए विदा किया,

"वासत्थास, रात बीत चुकी है। अब आप जो चाहें करें।"

"बहुत अच्छा, भगवान।" मल्लाओं ने उत्तर दिया, और वे उठकर भगवान को प्रणाम किया और उनके दाहिनी ओर से गुजरते हुए बाहर चले गए।

मल्लों के जाते ही, भगवान ने चारों ओर चुपचाप बैठे भिक्षुओं को देखकर पूज्य सारिपुत्त से कहा,

"सारिपुत्त, भिक्षु आलस्य और सुस्ती से मुक्त हैं; आप उनके लिए धर्म पर प्रवचन देने के बारे में सोचें। मेरी पीठ में दर्द हो रहा है, मैं उसे फैलाना चाहता हूँ।"

"बहुत अच्छा, भगवान," सारिपुत्त ने उत्तर दिया।

तब भगवान ने अपने वस्त्र को चार भागों में मोड़कर, एक पैर दूसरे पर रखकर, सिंह मुद्रा में अपने दाहिनी ओर लेट गए, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहते हुए और उठने के समय को ध्यान में रखते हुए।

उस समय निगंथा नटपुत्त का पावा में निधन हो गया था और उनकी मृत्यु के बाद निगंथा दो गुटों में बंट गए थे, आपस में झगड़ते और विवाद करते हुए। ऐसा लग रहा था मानो वे एक-दूसरे को जान से मार डालने पर तुले हों। यहां तक कि श्वेत वस्त्रधारी अनुयायी भी यह देखकर निराश हो गए कि उनके सिद्धांत और अनुशासन का प्रचार-प्रसार गलत तरीके से किया जा रहा है... क्योंकि इसका प्रचार एक ऐसे व्यक्ति ने किया था जो पूर्णतः प्रबुद्ध नहीं था, और अब बिना गुरु के ही इसका समर्थन करने वाले लोग भी भटक गए थे।

और पूज्य सारिपुत्त ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए इस स्थिति का उल्लेख करते हुए कहा, "उनका उपदेश और अनुशासन इतना कुप्रचारित, इतना अप्रशंसनीय और भावनाओं को शांत करने में इतना अप्रभावी था, क्योंकि इसका उपदेश एक ऐसे व्यक्ति ने दिया था जो पूर्णतः प्रबुद्ध नहीं था। परन्तु मित्रों, इस धर्म का उपदेश भगवान ने, जो पूर्णतः प्रबुद्ध हैं, भली-भांति दिया है, इसलिए हम सभी को बिना किसी मतभेद के इसका एक साथ पाठ करना चाहिए, ताकि यह पवित्र जीवन दीर्घस्थायी और स्थिर रहे, इस प्रकार समस्त जन कल्याण और सुख के लिए, संसार के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए हो। और यह कौन सा धर्म है जिसका उपदेश भगवान ने भली-भांति दिया है?"

"एक बात है जिसका पूर्णतः ज्ञान प्राप्त बुद्ध को जानने और देखने वाले भगवान ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। इसलिए हम सभी को देवताओं और मनुष्यों के कल्याण, सुख और लाभ के लिए मिलकर उसका पाठ करना चाहिए। वह एक बात क्या है? सभी प्राणी पोषण से पोषित होते हैं, सभी प्राणी अनुकूल परिस्थितियों से पोषित होते हैं।"

"दो ऐसी बातें हैं जिनका भगवान ने पूर्णतया प्रचार किया है...वे कौन सी हैं?"

I. मन और शरीर

II. अज्ञान और अस्तित्व की लालसा

III. निरंतर अस्तित्व में विश्वास और अस्तित्वहीनता में विश्वास

IV. नैतिक शर्म का अभाव और नैतिक भय का अभाव

V. नैतिक शर्म और नैतिक भय

VI. क्रूरता और बुराई से मित्रता

VII. अच्छे लोगों के साथ नम्रता और मित्रता

VIII. अपराधों को जानने और उनसे पुनर्वास की प्रक्रिया में कौशल

IX. ज्ञान में प्रवेश करने और वहां से लौटने में कौशल

X. अठारह तत्वों को जानने और उन पर ध्यान देने का कौशल (सजगता)

Ø छह इंद्रियां, उनका मन छठी इंद्रिय के रूप में, उनके विषय और संबंधित चेतनाएं (आंख, दृष्टि-विषय और आंख की चेतना आदि)

XI. बारह इंद्रियों और आश्रित उत्पत्ति को जानने की कुशलता

XII. कारणों और अनपेक्षित कारणों को जानने की कुशलता

XIII. स्पष्टवादिता और विनम्रता

14. धैर्य और कोमलता

XV. सौम्य वाणी और शिष्टाचार

सोलहवाँ. अहिंसा और पवित्रता

सत्रह. सचेतनता और स्पष्ट जागरूकता का अभाव

XVIII. सजगता और स्पष्ट जागरूकता

XIX. इंद्रियों पर अनियंत्रित नियंत्रण और खाने में संयम की कमी

XX. सचेत इंद्रिय द्वार और भोजन में संयम

XXI. चिंतन की क्षमता और मानसिक विकास

XXII. ध्यान और एकाग्रता की शक्तियाँ

XXIII. शांति और अंतर्दृष्टि

XXIV. शांति का संकेत और उस संकेत को समझना

XXV. प्रयास और ध्यान भटकाव से मुक्ति

XXVI. नैतिकता और सही दृष्टिकोण की प्राप्ति

XXVII. नैतिकता और सही दृष्टिकोण की विफलता

XXVIII. नैतिकता की शुद्धता और सही दृष्टिकोण

XXIX. सही दृष्टिकोण की शुद्धता और उसे प्राप्त करने का प्रयास

XXX. किसी ऐसी चीज़ से प्रेरित होकर तात्कालिकता की भावना उत्पन्न होना जो हमें प्रेरित करे, और उस प्रेरित व्यक्ति का व्यवस्थित प्रयास

XXXI. अच्छे कार्यों से संतुष्ट न होना और प्रयास करने से पीछे न हटना

XXXII. ज्ञान और मुक्ति

XXXIII. अशुद्धियों के विनाश और उनके पुनरावर्तन न होने का ज्ञान।

"ये दो बातें हैं जिनका भगवान ने पूर्णतः प्रचार किया है, इसलिए हमें इन्हें एक साथ पढ़ना चाहिए।"

"तीन चीजों के दो समूह हैं। वे कौन से समूह हैं?"

I. तीन अस्वास्थ्यकर जड़ें

मान गया

ख. घृणा

ग. भ्रम

II. तीन पौष्टिक मूल

ए. लोभ रहित

ख. घृणा रहित

सी. भ्रम रहित

III. शरीर, वाणी और विचार में तीन प्रकार के गलत आचरण होते हैं।

IV. शरीर, वाणी और विचार में तीन प्रकार के सही आचरण होते हैं।

V. तीन प्रकार के अस्वास्थ्यकर विचार

ए. कामुकता

बी. शत्रुता

ग. क्रूरता

VI. तीन प्रकार के सार्थक विचार

ए. त्याग

ख. शत्रुता न रखना

ग. अहिंसा

VII. तीन प्रकार की अस्वास्थ्यकर प्रेरणा

ए. कामुकता के माध्यम से

बी. शत्रुता के माध्यम से

ग. क्रूरता के माध्यम से

VIII. तीन प्रकार की स्वस्थ प्रेरणा

ए. त्याग के माध्यम से

ख. शत्रुता न रखने के माध्यम से

ग. अहिंसा के माध्यम से

IX. तीन प्रकार की अस्वास्थ्यकर धारणाएँ

ए. कामुकता का

ख. शत्रुता का

ग. क्रूरता का

X. तीन प्रकार की स्वस्थ धारणाएँ

क. त्याग का

ख. शत्रुता न रखने का

ग. निर्दयता का अभाव

XI. तीन अस्वास्थ्यकर तत्व

ए. कामुकता

बी. शत्रुता

ग. क्रूरता

XII. तीन स्वास्थ्यवर्धक तत्व

ए. त्याग

ख. शत्रुता न रखना

ग. अहिंसा

XIII. तीन और तत्व

ए. इंद्रिय-इच्छा का तत्व

b. रूप का तत्व

ग. निराकार तत्व

XIV. तीन और तत्व

ए. रूप का तत्व

b. निराकार तत्व

ग. समाप्ति का तत्व

XV. तीन और तत्व

ए. निम्न तत्व

b. मध्य तत्व

ग. उदात्त तत्व

16. लालसा के तीन प्रकार

ए. कामुक लालसा

b. बनने की लालसा

ग. विलुप्त होने की लालसा

सत्रहवीं. लालसा के तीन और प्रकार

क. इंद्रिय सुखों की दुनिया के लिए तड़प

b. आकार की दुनिया के लिए लालसा

ग. निराकार जगत की लालसा

XVIII. लालसा के तीन और प्रकार

ए. रूप की दुनिया के लिए

ख. निराकार जगत के लिए

सी. समाप्ति के लिए

XIX. तीन बेड़ियाँ

ए. व्यक्तित्व विश्वास का

ख. संदेह का

ग. रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के प्रति आसक्ति

XX. तीन भ्रष्टाचार

ए. इंद्रिय इच्छा का

ख. बनने का

ग. अज्ञानता का

XXI. तीन प्रकार के विकास

ए. इंद्रिय-इच्छा की दुनिया में

बी. प्रपत्र का

ग. निराकार जगत में

XXII. तीन खोज

ए. इंद्रिय संबंधी इच्छाओं के लिए

b. बनने के लिए

ग. पवित्र जीवन के लिए

XXIII. अभिमान के तीन रूप

ए. मैं इससे बेहतर हूँ...

b. मैं इसके बराबर हूँ...

सी. मैं इससे भी बदतर हूँ...

XXIV. तीन बार

बीता हुआ

बी. भविष्य

सी. वर्तमान

XXV. तीन "छोर"

ए. व्यक्तित्व

बी. यह उभर रहा है

सी. यह समाप्ति है

XXVI. तीन भावनाएँ

खुशगवार

बी. दर्दनाक

सी. तटस्थ

XXVII. तीन प्रकार के दुख

ए. दर्द के रूप में

b. संरचनाओं में अंतर्निहित के रूप में

सी. परिवर्तन के कारण

XXVIII. तीन संचय

ए. निश्चित परिणाम वाली बुराई

b. निश्चित परिणाम के साथ अच्छा

सी. अनिश्चित

XXIX. तीन अवरोध

ए. एक व्यक्ति हिचकिचाता है

b. व्यक्ति दुविधा में रहता है, अनिर्णय की स्थिति में रहता है

ग. अतीत, भविष्य और वर्तमान को लेकर अनिश्चित है

XXX. तीन ऐसी चीजें जिनसे तथागत को सावधान रहने की कोई आवश्यकता नहीं है

ए. तथागत शारीरिक आचरण में पूर्णतः शुद्ध होते हैं।

ख. ...भाषण में

ग. ...विचार में

घ. शरीर, वाणी या विचार से किया गया कोई भी कुकर्म ऐसा नहीं है जिसे उसे छिपाना पड़े, कहीं ऐसा न हो कि किसी को इसके बारे में पता चल जाए।

XXXI. तीन बाधाएँ

ए. वासना

ख. घृणा

ग. भ्रम

XXXII. तीन आग

ए. वासना

ख. घृणा

ग. भ्रम

XXXIII. तीन और आग

क. पूजनीय व्यक्तियों की अग्नि

ख. गृहस्थ का

ग. भेंट के योग्य लोगों में से

XXXIV. पदार्थ का त्रिविध वर्गीकरण

ए. दृश्यमान और प्रतिरोधी

बी. अदृश्य और प्रतिरोध करने वाला

ग. अदृश्य और प्रतिरोधहीन

XXXV. कर्म निर्माण के तीन प्रकार

ए. मेधावी

बी. अवगुणात्मक

सी. अविचलित

XXXVI. तीन प्रकार के व्यक्ति

ए. शिक्षार्थी

b. गैर-शिक्षार्थी

ग. वह जो न तो है और न ही वह

XXVII. तीन प्रकार के बुजुर्ग

ए. जन्म से बड़ा

ख. ...धम्म में

ग. ...परंपरा के अनुसार

XXXVIII. योग्यता पर आधारित तीन आधार

ए. देने का

ख. नैतिकता का

ग. ध्यान का

XXXIX. निंदा के तीन आधार

ए. जो देखा गया है उसके आधार पर

बी. ...सुना

ग. ...संदिग्ध

एक्सटी. इंद्रिय-इच्छा के क्षेत्र में पुनर्जन्म के तीन प्रकार

क. कुछ ऐसे प्राणी हैं जो अपने सामने प्रकट होने वाली चीजों की इच्छा रखते हैं और उस इच्छा के वश में रहते हैं, जैसे मनुष्य, कुछ देवता और कुछ दुखी अवस्था में रहने वाले प्राणी।

ख. कुछ ऐसे प्राणी भी होते हैं जो अपनी ही रचना की कामना करते हैं, जैसे कि देव जो अपनी ही रचना में आनंदित होते हैं।

ग. कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जो दूसरों की रचनाओं में आनंदित होते हैं, जैसे कि देव जो दूसरों की रचनाओं पर अधिकार रखते हैं।

XLI. तीन सुखद पुनर्जन्म

क. कुछ ऐसे प्राणी हैं जो निरंतर सुख उत्पन्न करते हुए अब स्वयं सुख में निवास करते हैं, जैसे ब्रह्म समूह के देव।

ख. कुछ ऐसे प्राणी हैं जो आनंद से परिपूर्ण हैं, उसमें सराबोर हैं, उसमें मग्न हैं, यहाँ तक कि वे कभी-कभी "ओह, कितना आनंद है!" जैसे तेजस्वी देवों का उद्गार प्रकट करते हैं।

ग. ऐसे प्राणी भी हैं जो परम आनंद में लीन हैं, केवल पूर्ण सुख का अनुभव करते हैं, जैसे तेजस्वी देव।

XLII. तीन प्रकार की बुद्धि

क. शिक्षार्थी का

b. गैर-शिक्षार्थी का

ग. उस एक के बारे में जो न तो है और न ही वह है

XLIII. तीन और प्रकार की बुद्धिमत्ता

ए. विचार पर आधारित

ख. अधिगम (श्रवण) पर आधारित

ग. मानसिक विकास पर आधारित (ध्यान)

44. तीन शस्त्र

क. जो कुछ सीखा है

बी. टुकड़ी

ग. ज्ञान

XLV. तीन संकाय

क. यह जानना कि व्यक्ति अज्ञात को जान लेगा

ख. उच्चतम ज्ञान का

ग. उस एक के बारे में जो जानता है

XLVI. तीन आँखें

ए. मांसल आँख

बी. दिव्य दृष्टि

ग. ज्ञान की आँख

XLVII. तीन प्रकार के प्रशिक्षण

ए. उच्च नैतिकता में

बी. उच्चतर चिंतन में

ग. उच्चतर ज्ञान में

XLVIII. विकास के तीन प्रकार

ए. भावनाओं का

ख. मन का

ग. ज्ञान का

19. तीन "अतुलनीय"

ए. दृष्टि का

ख. अभ्यास का

ग. मुक्ति का

एल. सांद्रता के तीन प्रकार

क. सोच-विचार करते हुए

b. बिना सोचे-समझे विचार करना

c. इनमें से किसी के साथ नहीं

एलआई. सांद्रता के तीन और प्रकार

ए. शून्यता पर

b. "चिह्नहीन" पर

ग. इच्छा रहित

LII. तीन शुद्धताएँ

ए. शरीर का

ख. भाषण का

ग. मन का

LIII. ऋषि के तीन गुण

ए. शरीर के संबंध में

ख. भाषण के संबंध में

ग. मन के संबंध में

LIV. तीन कौशल

आगे बढ़ते हुए

बी. नीचे जाने में

ग. प्रगति के साधनों में

एल.वी. तीन नशा

ए. स्वास्थ्य के साथ

ख. युवाओं के साथ

ग. जीवन के साथ

LVI. तीन प्रमुख प्रभाव

ए. स्वयं

बी. दुनिया

ग. धम्म

LVII. चर्चा के तीन विषय

क. बातचीत अतीत की हो सकती है, "पहले ऐसा ही होता था"

बी. यह भविष्य की बात हो सकती है, "ऐसा ही होगा"

ग. बातचीत वर्तमान के बारे में हो सकती है, "अभी स्थिति ऐसी ही है"

LVIII. तीन प्रकार के ज्ञान

क. अपने पिछले जन्मों के बारे में

ख. प्राणियों की मृत्यु और पुनर्जन्म के बारे में

ग. भ्रष्टाचारों के विनाश के बारे में

LIX. तीन निवास

ए. देव-स्थायी

ख. ब्रह्म-स्थायी

ग. आर्यों में निवास करने वाला

LX. तीन चमत्कार

ए. मानसिक शक्ति का

ख. टेलीपैथी के बारे में

सी. निर्देश का

"ये तीन चीजों के समूह हैं, इसलिए हमें देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए इनका एक साथ पाठ करना चाहिए।"

"चार बातों के ऐसे समूह हैं जिनकी भगवान द्वारा पूर्णतः घोषणा की गई है।"

I. "सजगता के चार आधार: यहाँ एक भिक्षु शरीर को शरीर के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, चिंतन करता है; वह भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखते हुए चिंतन करता है... वह मन को मन के रूप में देखते हुए चिंतन करता है... वह मन की वस्तुओं को मन की वस्तुओं के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर चिंतन करता है।"

II. "चार महान प्रयास: यहाँ एक भिक्षु अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करता है, प्रयास करता है, ऊर्जा को उत्तेजित करता है, अपने मन को लगाता है और उत्पन्न हो चुकी अकारण बुरी मानसिक अवस्थाओं को रोकने का प्रयास करता है। वह अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करता है और उत्पन्न हो चुकी बुरी मानसिक अवस्थाओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करता है। वह अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करता है और उत्पन्न न हो चुकी अच्छी मानसिक अवस्थाओं को उत्पन्न करने का प्रयास करता है। वह अपनी इच्छाशक्ति को जागृत करता है और उत्पन्न हो चुकी अच्छी मानसिक अवस्थाओं को बनाए रखने का प्रयास करता है, उन्हें लुप्त न होने देने का, उन्हें और अधिक विकास की ओर ले जाने का, विकास की पूर्णता की ओर ले जाने का प्रयास करता है।"

III. "सत्ता के चार मार्ग: यहाँ एक भिक्षु इच्छाशक्ति के प्रयास के साथ इरादे की एकाग्रता, ऊर्जा की एकाग्रता...चेतना की एकाग्रता, और इच्छाशक्ति के प्रयास के साथ जांच की एकाग्रता विकसित करता है।

चतुर्थ. "चार ध्यान अवस्थाएँ: यहाँ एक भिक्षु, सभी इंद्रिय इच्छाओं से विरक्त, अस्वस्थ मानसिक अवस्थाओं से मुक्त होकर, प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो चिंतन और मनन से युक्त, वैराग्य से उत्पन्न, आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण है। चिंतन और मनन के शांत होने पर, आंतरिक शांति और मन की एकता प्राप्त करके, वह द्वितीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो चिंतन और मनन रहित, एकाग्रता से उत्पन्न, आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण है। आनंद के लुप्त होने पर, अविचलित, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहते हुए, वह अपने भीतर उस आनंद का अनुभव करता है जिसके विषय में ऋषि कहते हैं: "धन्य है वह जो समभाव और सजगता में रहता है," वह तृतीय ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है। और सुख और दुख का त्याग करके, और पूर्व के सुख और दुख के लुप्त होने पर, वह चतुर्थ ध्यान अवस्था में प्रवेश करता है और उसमें स्थिर रहता है, जो सुख और दुख से परे है, और समभाव और सजगता से शुद्ध है।"

V. "चार एकाग्रतापूर्ण ध्यान। इस ध्यान को विकसित और विस्तारित करने पर यह निम्नलिखित की ओर ले जाता है..."

ए. वर्तमान क्षण में सुख

b. ज्ञान और दृष्टि प्राप्त करना

ग. सचेतनता और स्पष्ट जागरूकता और

घ. भ्रष्टाचारों का नाश।

i. यह अभ्यास वर्तमान क्षण में सुख की ओर कैसे ले जाता है? यहाँ, एक भिक्षु चार ध्यान साधनाओं का अभ्यास कर रहा है।

ii. इससे ज्ञान और दृष्टि की प्राप्ति कैसे होती है? यहाँ, एक भिक्षु प्रकाश के अवलोकन पर ध्यान देता है, वह दिन और रात के बीच के संबंध को दिन और दिन और रात के बीच के संबंध पर केंद्रित करता है। इस प्रकार, एक स्पष्ट और निर्मल मन से, वह एक ऐसी अवस्था विकसित करता है जो प्रकाश से परिपूर्ण होती है।

iii. यह किस प्रकार सजगता और स्पष्ट जागरूकता की ओर ले जाता है? यहाँ, एक भिक्षु जानता है कि भावनाएँ जैसे उत्पन्न होती हैं, बनी रहती हैं और लुप्त हो जाती हैं।

iv. यह अभ्यास विकारों के नाश में कैसे सहायक है? यहाँ, एक भिक्षु पाँच प्रकार के आसक्ति के उदय और पतन के चिंतन में लीन रहता है: "यह भौतिक रूप है, यह इसका उद्‌भव है, यह इसका अंत है; ये भावनाएँ हैं, यह इनका उद्‌भव है, यह इसका अंत है; यह बोध है, यह इसका उद्‌भव है, यह इसका अंत है; ये मानसिक रचनाएँ हैं, यह इसका उद्‌भव है, यह इसका अंत है; यह चेतना है, यह इसका उद्‌भव है, यह इसका अंत है।"

VI. "चार असीम अवस्थाएँ। यहाँ एक भिक्षु, प्रेम और करुणा से भरे हृदय के साथ, पहले एक भाग, फिर दूसरे, फिर तीसरे और चौथे भाग में व्याप्त होता है। इस प्रकार वह प्रेम और करुणा के विचार को ऊपर, नीचे और चारों ओर प्रचुर, विस्तृत, असीम रूप से, घृणा या दुर्भावना के बिना फैलाता रहता है। और इसी प्रकार करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव के साथ।"

VII. "चार निराकार ध्यान। यहाँ, एक भिक्षु शारीरिक संवेदनाओं से पूर्णतः परे होकर, सभी प्रतिरोध की भावना के लुप्त होने और विविधता की अनुभूति के प्रति अनासक्ति से, यह देखकर कि अंतरिक्ष अनंत है, अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है। और अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र से पूर्णतः परे होकर, यह देखकर कि चेतना अनंत है, वह अनंत चेतना के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है। और अनंत चेतना के क्षेत्र से पूर्णतः परे होकर, यह देखकर कि कुछ भी नहीं है [बेहतर स्पष्टता के लिए "कुछ भी नहीं" का प्रयोग किया जा सकता है - वेबमास्टर], वह शून्यता के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है। और शून्यता के क्षेत्र से पूर्णतः परे होकर, वह न तो अनुभूति और न ही अअनुभूति के क्षेत्र में पहुँचता है और वहीं स्थिर रहता है।"

VIII. "चार आधार: यहाँ एक भिक्षु यह निर्णय लेता है कि एक चीज का पीछा किया जाना है, एक चीज सहन की जानी है, एक चीज से बचा जाना है, एक चीज को दबा दिया जाना है।

9. "चार आर्य वंश। यहाँ, एक भिक्षु

क. वह किसी भी पुराने वस्त्र से संतुष्ट रहता है, ऐसी संतुष्टि की प्रशंसा करता है, और अनुचित या अनुपयुक्त तरीके से वस्त्र प्राप्त करने का प्रयास नहीं करता। यदि उसे वस्त्र न मिले तो वह चिंतित नहीं होता, और यदि मिल भी जाए तो वह लालच और अंध इच्छा से ग्रस्त नहीं होता, बल्कि ऐसे खतरों से अवगत रहते हुए और उसके वास्तविक उद्देश्य को बुद्धिमानी से समझते हुए उसका उपयोग करता है। न ही वह किसी भी पुराने वस्त्र से संतुष्ट रहने पर अहंकारी होता है, और न ही वह दूसरों की निंदा करता है। और जो इस प्रकार कुशल, सजग, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होता है, वह प्राचीन, मूल आर्य वंश के प्रति सच्चा भिक्षु कहलाता है। फिर,

ख. एक भिक्षु भिक्षा में मिलने वाले किसी भी भोजन से संतुष्ट रहता है...फिर से,

ग. एक भिक्षु किसी भी पुराने आवास में संतुष्ट रहता है...और फिर,

घ. जो भिक्षु त्याग के प्रति प्रेम रखता है, वह त्याग में आनंदित होता है, और जो विकास के प्रति प्रेम रखता है, वह विकास में आनंदित होता है; अतः वह अभिमानी नहीं होता... और जो इस प्रकार कुशल, सजग, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होता है, वही प्राचीन, मूल आर्य वंश के प्रति सच्चा भिक्षु कहलाता है।

X. "चार प्रयास: का प्रयास

ए. संयम

बी. त्यागना

सी. विकास

डी. संरक्षण

i. संयम का प्रयास क्या है? यहाँ, एक भिक्षु किसी वस्तु को आँखों से देखकर उसके संपूर्ण स्वरूप या उसके विवरणों को समझने का प्रयास नहीं करता, बल्कि उन भावनाओं को रोकने का प्रयास करता है जो उसके भीतर बुराई, अस्वस्थता, लालसा या दुःख जैसी भावनाओं को उत्पन्न कर सकती हैं। इस प्रकार वह अपनी दृष्टि को नियंत्रित करता है और उसकी रक्षा करता है। यहाँ, एक भिक्षु किसी वस्तु को नाक से सूंघकर उसके संपूर्ण स्वरूप या उसके विवरणों को समझने का प्रयास नहीं करता... इस प्रकार वह अपनी गंध को नियंत्रित करता है और उसकी रक्षा करता है। यहाँ, एक भिक्षु किसी वस्तु को सुनकर, चखकर या अपने कानों, जीभ या शरीर से स्पर्श करके उसके संपूर्ण स्वरूप या उसके विवरणों को समझने का प्रयास नहीं करता... इस प्रकार वह अपनी इंद्रियों को नियंत्रित करता है और उनकी रक्षा करता है।

ii. त्याग का प्रयास क्या है? यहाँ, एक भिक्षु कामवासना, घृणा, क्रूरता के विचार को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उसका त्याग करता है, उसे दूर करता है, उसे नष्ट करता है, उसे लुप्त कर देता है।

iii. विकास का प्रयास क्या है? यहाँ, एक भिक्षु एकांत, वैराग्य, और निर्गमन पर आधारित अवस्थाओं, ऊर्जा, आनंद, शांति, एकाग्रता, समभाव की खोज के माध्यम से ज्ञानोदय के कारक को विकसित करता है, जो समर्पण की परिपक्वता की ओर ले जाता है।

iv. संरक्षण का प्रयास क्या है? यहाँ, एक भिक्षु अपने मन में एकाग्रता के लिए किसी अनुकूल वस्तु को दृढ़ता से धारण करता है, जैसे कि कंकाल या कीड़ों से भरा हुआ, नीला-काला, छेदों से भरा और फूला हुआ शव। [मृत्यु ध्यान: "मठ में एक भूत" देखें]

XI. "चार प्रकार का ज्ञान: धम्म का ज्ञान, उससे संगत बातों का ज्ञान, दूसरों के मन का ज्ञान, और पारंपरिक ज्ञान।"

XII. "चार और ज्ञान: दुख का ज्ञान, उसका मूल, उसका निवारण और उसका मार्ग।"

XIII. "धारा प्राप्ति के चार कारक: अच्छे लोगों के साथ संगति, सच्चे धम्म को सुनना, पूर्ण ध्यान, संपूर्ण रूप से धम्म का अभ्यास।"

XIV. "धारा विजेता के चार लक्षण: यहाँ, आर्य शिष्य बुद्ध में अटूट विश्वास रखता है, इस प्रकार:

क. "यह भगवान अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हैं, जो ज्ञान और आचरण से परिपूर्ण हैं, कल्याणकारी हैं, संसार के ज्ञाता हैं, मनुष्यों को वश में करने वाले अतुलनीय प्रशिक्षक हैं, देवताओं और मनुष्यों के गुरु हैं, प्रबुद्ध और धन्य हैं।"

ख. उन्हें धम्म पर अटूट विश्वास है, जैसा कि वे कहते हैं: "भगवान द्वारा अच्छी तरह से घोषित धम्म, जो यहाँ और अभी दृश्यमान है, कालातीत है, निरीक्षण के लिए आमंत्रित करता है, आगे की ओर ले जाता है, और जिसे बुद्धिमानों को स्वयं समझना चाहिए।"

ग. संघ में उनका अटूट विश्वास है, इस प्रकार: "भगवान के शिष्यों का संघ सुगठित है, सत्य आचरण वाला है, सही मार्ग पर है, पूर्ण मार्ग पर है; अर्थात् चार युग्मों के व्यक्ति, आठ प्रकार के मनुष्य। भगवान के शिष्यों का संघ आदर के योग्य है, संसार में अद्वितीय पुण्य का क्षेत्र है।"

घ. वह ऐसे नैतिक मूल्यों से युक्त है जो श्रेष्ठजनों को प्रिय हैं, अटूट, दोषरहित, बेदाग, असंगतिरहित, मुक्तिदायक, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, निष्कलंक और एकाग्रता बढ़ाने वाले।

XV. "तपस्वी जीवन के चार फल: धारा में प्रवेश का फल, एक बार लौटने वाले का फल, न लौटने वाले का फल, और अरहंतत्व का फल।"

16. "चार तत्व: पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु।"

सत्रहवाँ। "चार पोषक तत्व: भौतिक, भोजन, स्थूल या सूक्ष्म; संपर्क दूसरा; मानसिक इच्छाशक्ति तीसरा, चेतना चौथा।"

XVIII. "चेतना के चार चरण: चेतना या तो आधार प्राप्त करती है

क. भौतिकता के संबंध में, भौतिकता को वस्तु और आधार के रूप में, आनंद के स्थान के रूप में, या इसी प्रकार के संदर्भ में

ख. भावनाएँ

ग. धारणाएँ

घ. मानसिक संरचनाएँ बनती हैं, और वहीं यह बढ़ती, विकसित होती और फलती-फूलती है।

XIX. "गलती करने के चार तरीके: व्यक्ति इच्छा, घृणा, भ्रम और भय के माध्यम से गलत रास्ते पर जाता है।"

XX. "इच्छा की चार उत्तेजनाएँ: भिक्षु में वस्त्र, भिक्षा, आवास, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के कारण इच्छा उत्पन्न होती है।"

XXI. "प्रगति के चार प्रकार:

क. धीमी समझ के साथ कष्टदायक प्रगति

बी. शीघ्र समझ के साथ कष्टदायक प्रगति

ग. धीमी समझ के साथ सुखद प्रगति

d. शीघ्र समझ के साथ सुखद प्रगति

XXII. "प्रगति के चार और प्रकार:

ए. अधीरता से प्रगति करना

b. रोगी की प्रगति

सी. नियंत्रित प्रगति

d. शांत प्रगति

XXIII. "धम्म के चार मार्ग।"

क. लालसा के बिना

ख. बिना शत्रुता के

ग. सही जागरूकता के साथ

डी. सही एकाग्रता के साथ

XXIV. "धम्म का अनुसरण करने के चार तरीके: एक तरीका यह है कि

ए. वर्तमान में कष्टदायी है और भविष्य में भी कष्टदायी परिणाम लाता है।

बी. वर्तमान में कष्टदायी, लेकिन भविष्य में सुखद परिणाम लाता है।

ग. वर्तमान में सुखद प्रतीत होता है, लेकिन भविष्य में कष्टदायक परिणाम लाता है।

d. वर्तमान में सुखद है और भविष्य में भी सुखद परिणाम लाता है।

XXV. "धम्म के चार विभाजन:

ए. नैतिकता

बी. सांद्रता

ग. ज्ञान

डी. मुक्ति

XXVI. "चार शक्तियाँ:

ए. ऊर्जा

ख. सचेतनता

सी. सांद्रता

डी. ज्ञान

XXVII. "चार प्रकार के संकल्प:

ए. ज्ञान

ख. सत्य

ग. त्याग

डी. शांति।

XXVIII. "प्रश्नों के उत्तर देने के चार तरीके: प्रश्न

ए. सीधे उत्तर दिया जाना है

b. स्पष्टीकरण की आवश्यकता

ग. प्रतिप्रश्न की आवश्यकता

घ. अलग रखा जाना

XXIX. "चार प्रकार के कर्म—यहाँ हैं:

ए. काले परिणाम के साथ काला कम्मा

b. उज्ज्वल परिणाम के साथ उज्ज्वल कम्मा

c. काले और चमकीले रंग का कम्मा, काले और चमकीले परिणाम के साथ

d. वह कर्म जो न तो काला है और न ही चमकीला।

XXX. "देखने से प्राप्त होने वाली चार बातें:

ए. पूर्व जीवन, जिन्हें स्मृतियों द्वारा साकार किया जाना है

ख. मृत्यु और पुनर्जन्म, जिसे दिव्य दृष्टि द्वारा अनुभव किया जा सके।

ग. आठ मुक्ति, जिन्हें मानसिक शरीर के साथ प्राप्त किया जाना है।

घ. ज्ञान के द्वारा भ्रष्टाचारों का नाश होना।

XXXI. "चार बाढ़ें:

ए. कामुकता,

बी. बनना,

ग. गलत विचार

घ. अज्ञानता।

XXXII. "चार जुए

XXXIII. "चार बंधन तोड़ना, से

ए. कामुकता

b. बनना

सी. विचार

घ. अज्ञानता

XXXIV. "चार संबंध:

क. लालसा का शारीरिक बंधन

b. दुर्भावना

ग. रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के प्रति आसक्ति

डी. हठधर्मी कट्टरता

XXXV. "चार आसक्ति

ए. कामुकता के लिए

b. विचारों के लिए

ग. नियमों और रीति-रिवाजों के लिए

घ. अहंकार-विश्वास के लिए।

XXXVI. "चार प्रकार की उत्पत्ति:

ए. अंडे से

b. गर्भ से

सी. नमी से (लार्वा से विकसित जीव)

घ. स्वतः पुनर्जन्म (देवलोक में पुनर्जन्म लेना)

XXVII. "आर्यों के बोलने के चार तरीके: यह कहना कि किसी ने वह नहीं देखा, सुना, महसूस किया या जाना है जो उसने नहीं देखा, सुना, महसूस किया या जाना है।"

XXVIII. गर्भ में उतरने के तरीके:

क. व्यक्ति अनजाने में मां के गर्भ में प्रवेश करता है, अनजाने में वहां रहता है और अनजाने में ही उससे विदा लेता है।

ख. व्यक्ति गर्भ में ज्ञान के साथ प्रवेश करता है, अज्ञान के साथ रहता है और अज्ञान के साथ ही गर्भ से विदा होता है।

ग. व्यक्ति गर्भ में जानते हुए प्रवेश करता है, जानते हुए ही वहां रहता है और अनजान रहते हुए ही उससे विदा लेता है।

घ. व्यक्ति गर्भ में यह जानते हुए प्रवेश करता है, वहां यह जानते हुए रहता है और गर्भ से यह जानते हुए ही निकलता है।

XXXIX. "नया व्यक्तित्व प्राप्त करने के चार तरीके। व्यक्तित्व का अधिग्रहण होता है जो निम्न द्वारा संभव होता है:

ए. अपनी स्वयं की इच्छा से, न कि दूसरे की इच्छा से

b. दूसरे की इच्छा, स्वयं की नहीं।

सी. दोनों

डी. न ही

XL. "अर्पण के चार शुद्धिकरण। एक शुद्ध किया हुआ अर्पण है

ए. देने वाले द्वारा, लेकिन प्राप्तकर्ता द्वारा नहीं

b. प्राप्तकर्ता द्वारा, लेकिन दाता द्वारा नहीं

सी. न ही

डी. दोनों द्वारा।

XLI. "सहानुभूति के चार आधार"

ए. उदारता

ख. मनभावन भाषण

ग. लाभकारी आचरण

डी. निष्पक्षता

XLII. "चार गैर-आर्यन वाणी विधाएँ:

क. झूठ बोलने से परहेज करना

ख. ...अपमान से

ग. ...दुर्व्यवहार से

डी. ...व्यर्थ की गपशप से।

XLIII. "चार और गैर-आर्यन वाणी के तरीके: जो आपने देखा, सुना, महसूस या जाना नहीं है, उसे देखने, सुनने, महसूस करने या जानने का दावा करना।"

44. "आर्यों के बोलने के चार तरीके: यह कहना कि किसी ने वह नहीं देखा, सुना, महसूस किया या जाना है जो उसने नहीं देखा, सुना, महसूस किया या जाना है।"

XLV. "भाषण के चार और गैर-आर्यन तरीके: जो कुछ देखा, सुना, महसूस किया या जाना है, उसे न देखने, सुनने, महसूस करने या जानने का दावा करना।"

XLVI. "आर्यों के भाषण के चार तरीके: यह बताना कि किसी ने क्या देखा, सुना, महसूस किया, जाना है।

472. "चार व्यक्ति: यहाँ एक निश्चित व्यक्ति

ए. स्वयं को पीड़ा देता है, स्वयं को पीड़ा देने का आदी है

b. दूसरों को सताता है, दूसरों को सताने का आदी है

ग. स्वयं को और दूसरों को पीड़ा पहुँचाता है, स्वयं को और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का आदी है।

वह न तो स्वयं को और न ही दूसरों को पीड़ा देता है, न ही स्वयं को और न ही दूसरों को पीड़ा पहुँचाता है। इस प्रकार वह इस जीवन में भोग-विलास से मुक्त, शांत और आनंदमय होकर रहता है, और ब्रह्म के समान हो जाता है।

XLVIII. "चार और व्यक्ति। यहाँ एक व्यक्ति के जीवन को खतरा है।

ए. स्वयं को, लेकिन दूसरों को नहीं

b. दूसरों को, लेकिन खुद को नहीं।

सी. न ही

डी. दोनों

19. "चार और व्यक्ति:

ए. अंधेरे में रहना और वहीं रहने के लिए बाध्य

b. अंधकार में जीना और प्रकाश की ओर अग्रसर होना

ग. प्रकाश में जीना और अंधकार की ओर अग्रसर होना

घ. प्रकाश में रहना और वहीं बने रहना

एल. "चार और व्यक्ति:

ए. अविचल तपस्वी

ख. नीले कमल वाला तपस्वी

ग. श्वेत कमल तपस्वी

घ. सूक्ष्मता से परिपूर्ण तपस्वी

"ये चार बातें भगवान द्वारा पूर्णतः घोषित की गई हैं...इसलिए हम सभी को इनका एक साथ पाठ करना चाहिए...देवताओं और मनुष्यों के कल्याण, भलाई और सुख के लिए।"

[प्रथम पाठ खंड का अंत]

"पांच चीजों के ऐसे समूह हैं जिनकी पूरी तरह से घोषणा की गई है..."
I. "पांच समुच्चय:

ए. शरीर

ख. भावनाएँ

ग. धारणाएँ

डी. मानसिक संरचनाएँ

ई. चेतना

II. ग्रहण करने के लिए पाँच समूह:

एफ. शरीर

जी. भावनाएँ

एच. धारणाएँ

i. मानसिक संरचनाएँ

जे. चेतना

III. "इंद्रिय इच्छा के पाँच सूत्र:

a. आँखों से देखा गया दृश्य

b. कान द्वारा सुनी जाने वाली ध्वनि

ग. नाक से सूंघी जाने वाली गंध

d. जीभ द्वारा चखा जाने वाला स्वाद।

ई. एक ऐसी मूर्त वस्तु जिसे शरीर वांछनीय, आकर्षक, सुंदर, मनमोहक, कामुकता से जुड़ी और जुनून जगाने वाली महसूस करता है।

IV. "मृत्यु के बाद की पाँच नियतियाँ:

नरक

बी. पशु पुनर्जन्म

ग. भूखे भूतों का साम्राज्य

डी. मानव जाति

ई. देवलोक

V. "पांच प्रकार की बेरुखी; जैसे कि

ए. रहने के स्थान

बी. परिवार

सी. लाभ

डी. सौंदर्य

ई. धम्म

VI. "पांच बाधाएँ:

ए. कामुकता

b. दुर्भावना

ग. आलस्य और सुस्ती

घ. चिंता और घबराहट

ई. संशयपूर्ण संदेह

VII. "पांच निचले बंधन:

ए. व्यक्तित्व विश्वास

ख. संदेह

ग. रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के प्रति आसक्ति

डी. कामुकता

ई. दुर्भावना

VIII. "पांच उच्चतर बेड़ियाँ

ए. रूप की दुनिया के लिए लालसा

ख. निराकार जगत की लालसा

सी. अभिमान

डी. बेचैनी

ई. अज्ञानता।

IX. "प्रशिक्षण के पाँच नियम: परहेज करना"

ए. जीवन लेना

b. जो नहीं दिया गया है उसे लेना

सी. यौन दुर्व्यवहार

घ. झूठ बोलना

ई. मादक पेय और आलस्य पैदा करने वाली दवाएँ

X. "पांच असंभव बातें: एक अरहंत के लिए ये असंभव हैं"

क. जानबूझकर किसी जीवित प्राणी की जान लेना

ख. बिना दी गई वस्तु को इस प्रकार लेना जिससे चोरी की श्रेणी में आए

सी. यौन संबंध

घ. जानबूझकर झूठ बोलना

ई. गृहस्थ जीवन में पहले की तरह ही इंद्रिय सुख की वस्तुओं का संचय करना।

XI. "पांच प्रकार की हानियाँ:

ए. रिश्तेदारों की हानि

बी. धन

सी. स्वास्थ्य

घ. नैतिकता

ई. सही दृष्टिकोण। कोई भी प्राणी अपने सगे संबंधियों, स्वास्थ्य या धन की हानि के कारण मृत्यु के बाद किसी बुरी अवस्था या नरक अवस्था में नहीं गिरता; परन्तु प्राणी नैतिकता और सही दृष्टिकोण की हानि के कारण ऐसी अवस्थाओं में गिर जाते हैं।

XII. "पांच प्रकार के लाभ:

ए. रिश्तेदारों का लाभ

बी. धन

सी. स्वास्थ्य

घ. नैतिकता

ई. सही दृष्टिकोण। कोई भी प्राणी मृत्यु के बाद सगे-संबंधियों, धन या स्वास्थ्य की प्राप्ति के कारण सुखी, स्वर्गीय अवस्था में जन्म नहीं लेता, बल्कि प्राणी नैतिकता और सही दृष्टिकोण में लाभ के कारण ऐसी अवस्थाओं में पुनर्जन्म लेते हैं।

XIII. "नैतिकता से विमुख होने के कारण अनैतिक व्यक्ति को पाँच खतरे; अनैतिक व्यक्ति, गृहस्थ, सद्गुणों से विमुख होकर पाँच खतरों का सामना करता है: लापरवाही के कारण धन की भारी हानि; बदनामी; हर समाज में डरपोक और व्याकुल व्यवहार, चाहे वह कुलीनों का हो, ब्राह्मणों का हो, गृहस्थों का हो या तपस्वियों का हो; विक्षिप्तता में मृत्यु; और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर, दुख के लोक में, दुखी अवस्था में, पाताल लोक में, नरक में पुनर्जन्म।"

चौदहवाँ। "धर्मी व्यक्ति को उसके सद्गुणों के अभ्यास से पाँच आशीर्वाद प्राप्त होते हैं: परिश्रम से धन में भारी वृद्धि; अच्छी प्रतिष्ठा; हर समाज में, चाहे वह कुलीनों का हो, ब्राह्मणों का हो, गृहस्थों का हो या तपस्वियों का हो, आत्मविश्वास से भरा आचरण; शांतिपूर्ण मृत्यु; और मृत्यु के बाद शरीर के विखंडन पर स्वर्गलोक में एक सुखी अवस्था में पुनर्जन्म।"

XV. "किसी भिक्षु को दूसरे भिक्षु को फटकार लगाने की इच्छा रखते समय ध्यान में रखने योग्य पाँच बिंदु:

क. मैं उचित समय पर बोलूंगा, अनुचित समय पर नहीं।

ख. मैं सत्य बोलूंगा, असत्य नहीं।

ग. मैं विनम्रता से बोलूंगा, कठोर तरीके से नहीं।

घ. मैं उसकी भलाई के लिए बोलूंगा, उसकी हानि के लिए नहीं।

e. मैं अपने हृदय में प्रेम से बोलूंगा, शत्रुता से नहीं।

16. "प्रयास के पाँच कारक: यहाँ, एक भिक्षु

क. तथागत के ज्ञान में आस्था रखते हुए, वे कहते हैं: 'यह भगवान अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हैं, ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण हैं, कल्याणकारी हैं, संसार के ज्ञाता हैं, मनुष्यों को वश में करने में अद्वितीय प्रशिक्षक हैं, देवताओं और मनुष्यों के गुरु हैं, बुद्ध हैं, भगवान हैं।' वे अपने ज्ञान से इस संसार को, इसके देवताओं, मारों, ब्रह्माओं, तपस्वियों और ब्राह्मणों के संसार को, इसके राजकुमारों और प्रजाजनों सहित, घोषित करते हैं। वे एक ऐसे धम्म का उपदेश देते हैं जो भाव और अक्षर दोनों में पूर्ण है, और वे पूर्णतः सिद्ध, शुद्धतम पवित्र जीवन का प्रदर्शन करते हैं। और वास्तव में ऐसे अरहंतों को देखना सुखद है।

ख. वह अच्छे स्वास्थ्य में है, उसे कम कष्ट या बीमारी होती है, उसका पाचन तंत्र अच्छा है जो न तो बहुत ठंडा है और न ही बहुत गर्म, बल्कि परिश्रम के लिए उपयुक्त मध्यम तापमान का है।

ग. वह कपटी या छलपूर्ण नहीं है, और अपने शिक्षक या पवित्र जीवन में अपने साथियों में से बुद्धिमान लोगों के सामने स्वयं को वैसे ही प्रकट करता है जैसा वह वास्तव में है।

घ. वह अस्वस्थ अवस्थाओं को त्यागने और स्वस्थ अवस्थाओं को जागृत करने के लिए अपनी ऊर्जा को निरंतर उत्तेजित रखता है।

ई. क्या वह एक ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति है जिसे आर्यों के आक्रमण से उबरने और उसके निवारण के संबंध में ज्ञान प्राप्त है, जिससे दुख का पूर्ण विनाश होता है?

सत्रह. "पांच पवित्र निवास:

ए. अविहा

बी. बेफिक्र

ग. स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है

डी. स्पष्ट दृष्टि

ई. अद्वितीय

XVIII. "वापसी न करने वालों के पाँच प्रकार:

ए. आधे से कम समय

b. आधे से अधिक टाइमर

ग. बिना परिश्रम के लाभ प्राप्त करने वाला

d. परिश्रम से लाभ प्राप्त करने वाला

ई. जो शिखर तक, चोटी तक, नदी के विपरीत दिशा में जाता है

XIX. "पांच मानसिक अवरोध: यहाँ एक भिक्षु को संदेह और झिझक है"

क. शिक्षक के बारे में वह असंतुष्ट है और उसका मन शांत नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, लगन और प्रयास की ओर नहीं झुक रहा है।

ख. धम्म के विषय में वह असंतुष्ट है और उसका मन स्थिर नहीं हो पाता। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं होता।

ग. संघ के विषय में वह असंतुष्ट है और उसका मन स्थिर नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं है।

घ. प्रशिक्षण के संबंध में वह असंतुष्ट है और उसका मन शांत नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, समर्पण, दृढ़ता और प्रयास की ओर नहीं झुक रहा है।

ई. वह अपने साथी धर्मपरायणों से नाराज़ है, वह उनके प्रति उदास और नकारात्मक भाव रखता है। इस प्रकार उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर नहीं झुकता।

XX. "पांच मानसिक बंधन: यहाँ एक भिक्षु ने कामवासना, इच्छा, प्रेम, प्यास, बुखार, लालसा आदि से मुक्ति नहीं पाई है।"

क. इंद्रिय सुखों के कारण: उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं होता।

ख. शरीर के लिए: इस प्रकार उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं होता।

ग. भौतिक वस्तुओं के लिए: इस प्रकार उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं होता है, या

घ. पेट भरकर खाने के बाद वह लेटने, स्पर्श करने और आलस्य के सुख में लीन हो जाता है; या

वह किसी देवमंडल (चाहे छोटा हो या बड़ा) का सदस्य बनने के लिए पवित्र जीवन का अभ्यास करता है। इसलिए उसका मन उत्साह, भक्ति, लगन और प्रयास की ओर नहीं झुकता।

XXI. पाँच संकाय: वे संकाय जो

ए. आंखें

बी. कान

सी. नाक

डी. जीभ

ई. शरीर.

XXII. पाँच और संकाय:

ए. सुखद शारीरिक अनुभूति

बी. दर्द

ग. प्रसन्नता

डी. उदासी

ई. उदासीन भावना

XXIII. पाँच और संकाय:

ए. विश्वास

बी. ऊर्जा

ग. सचेतनता

डी. सांद्रता

ई. ज्ञान

XXIV. मुक्ति के लिए पाँच तत्व।

यहां, जब कोई भिक्षु इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं पर विचार करता है, तो उसका मन उनमें तल्लीन होकर संतुष्टि नहीं पाता, उन पर स्थिर नहीं होता या उनसे मुक्त नहीं हो जाता, परन्तु जब वह त्याग पर विचार करता है तो उसका मन तल्लीन होकर संतुष्टि पाता है, उस पर स्थिर होता है और उससे मुक्त हो जाता है। और वह इस विचार को अच्छी तरह से स्थापित, अच्छी तरह से विकसित, अच्छी तरह से उन्नत और इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से उत्पन्न होने वाले विकारों, कष्टों और ज्वर से अच्छी तरह मुक्त कर लेता है, और उसे वह इंद्रिय-संबंधी भावना महसूस नहीं होती। इसे ही इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से मुक्ति कहते हैं। और यही बात अन्य बातों पर भी लागू होती है।

बी. दुर्भावना

ग. क्रूरता

डी. प्रपत्र

ई. व्यक्तित्व

XXV. "मुक्ति के पाँच आधार; यहाँ

क. शिक्षक या कोई सम्मानित सह-शिष्य किसी भिक्षु को धम्म की शिक्षा देता है। शिक्षा ग्रहण करते समय, वह शिक्षा के भाव और शाब्दिक अर्थ दोनों को समझ लेता है। इससे उसमें आनंद उत्पन्न होता है, और इस आनंद से प्रसन्नता उत्पन्न होती है; इस प्रसन्नता से उसकी इंद्रियाँ शांत हो जाती हैं, परिणामस्वरूप उसे सुख का अनुभव होता है, और इस सुख से उसका मन स्थिर हो जाता है;

ख. उसने इसे इस प्रकार नहीं सुना है, बल्कि दूसरों को धम्म की शिक्षा देते समय उसने इसे जैसा सुना है वैसा ही कंठस्थ कर लिया है, या

ग. जैसे ही वह धम्म का पाठ कर रहा है... या

घ. ...जब वह धम्म पर अपना ध्यान लगाता है, उस पर विचार करता है, मनन करता है और अपना ध्यान उस पर केंद्रित करता है; या

जब वह एकाग्रता के किसी संकेत को ठीक से समझ लेता है, उस पर अच्छी तरह विचार करता है, अपना मन लगाता है और बुद्धि से उसका गहन अध्ययन कर लेता है, तब उसके मन में आनंद उत्पन्न होता है; और इस आनंद से उसे प्रसन्नता मिलती है, और इस प्रसन्नता से उसकी इंद्रियाँ शांत हो जाती हैं, परिणामस्वरूप उसे सुख का अनुभव होता है, और इस सुख से उसका मन स्थिर हो जाता है।

XXVI. "मुक्ति की परिपक्वता के लिए पाँच धारणाएँ: अनित्यता की धारणा, अनित्यता में पीड़ा की धारणा, पीड़ा में निराकारता की धारणा, त्याग की धारणा, वैराग्य की धारणा।"

"ये पाँच बातें हैं जिनका भगवान ने पूर्णतः प्रचार किया है..."

"छह ऐसी बातें हैं जिनका भगवान ने पूर्णतया प्रचार किया है..."

I. "छह आंतरिक इंद्रिय क्षेत्र:

ए. नेत्र क्षेत्र

b. कान का गोला

सी. नाक का गोला

डी. जीभ का गोला

ई. शरीर का गोला

एफ. मन इंद्रिय क्षेत्र

II. छह बाह्य इंद्रिय क्षेत्र:

ए. दृष्टि वस्तु

b. ध्वनि वस्तु

ग. वस्तु को सूंघें

d. स्वाद वस्तु

ई. मूर्त वस्तु

एफ. मन वस्तु

III. चेतना के छह समूह

ए. दृष्टि चेतना, ध्वनि चेतना आदि

IV. संपर्क के छह समूह

ए. आंखों का संपर्क, कानों का संपर्क, आदि

V. भावनाओं के छह समूह

ए. आंखों के संपर्क के आधार पर, कानों के संपर्क के आधार पर, आदि।

VI. धारणा के छह समूह:

ए. दृश्य, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श और मानसिक वस्तुओं की अनुभूति।

VII. संकल्पों के छह समूह

ए. दृश्य, ध्वनि आदि पर आधारित इच्छाशक्ति

VIII. लालसा के छह समूह

ए. दृश्यों, ध्वनियों आदि की लालसा

IX. छह प्रकार के अनादर: यहाँ, एक भिक्षु शिक्षक, धम्म, संघ, प्रशिक्षण, गंभीरता और आतिथ्य सत्कार के प्रति अनादरपूर्ण और असभ्य व्यवहार करता है।

X. छह प्रकार के आदर: यहाँ, एक भिक्षु शिक्षक, धम्म, संघ, प्रशिक्षण के प्रति सम्मानपूर्वक और विनम्रतापूर्वक व्यवहार करता है, गंभीरता और आतिथ्य सत्कार के सम्मान में।

XI. छह आनंददायक अन्वेषण: जब कोई व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखता है, या किसी मानसिक वस्तु को सुनता, सूंघता, चखता, छूता या जानता है [प्रत्येक अपने संबंधित इंद्रिय क्षेत्र के साथ], तो वह आनंद उत्पन्न करने वाली किसी संबंधित वस्तु का अन्वेषण करता है।

XII. छह अप्रिय अन्वेषण: जब कोई व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आँख से देखता है, या किसी मानसिक वस्तु को सुनता, सूंघता, चखता, छूता या जानता है [प्रत्येक अपने संबंधित इंद्रिय क्षेत्र के साथ], तो वह किसी ऐसी वस्तु का अन्वेषण करता है जो अप्रियता उत्पन्न करती है।

XIII. छह उदासीन जांच: जब कोई व्यक्ति किसी दृश्य वस्तु को आंख से देखता है, या किसी मानसिक वस्तु को सुनता, सूंघता, चखता, छूता या जानता है [प्रत्येक अपने संबंधित इंद्रिय क्षेत्र के साथ], तो वह उदासीनता उत्पन्न करने वाली किसी संगत वस्तु की जांच करता है।

चौदहवाँ। सांप्रदायिक जीवन के लिए छह सहायक बातें: जब तक भिक्षु सार्वजनिक और निजी दोनों ही रूप में अपने साथियों के प्रति शारीरिक, वाणी और विचार से सजीव दया प्रदर्शित करते हैं... अपने सद्गुणी साथियों के साथ वह सब कुछ साझा करते हैं जो उन्हें उचित उपहार के रूप में प्राप्त होता है, जिसमें उनके भिक्षापात्र की सामग्री भी शामिल है, जिसे वे अपने लिए नहीं रखते... आचरण के उन नियमों का निरंतर, अटूट और अपरिवर्तित पालन करते हैं जो निर्मल हैं, मुक्ति की ओर ले जाते हैं, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित हैं, बेदाग हैं और एकाग्रता के लिए सहायक हैं, और सार्वजनिक और निजी दोनों ही रूप में अपने नेक साथियों के साथ उनमें दृढ़ रहते हैं... उस महान दृष्टिकोण में बने रहते हैं जो मुक्ति की ओर ले जाता है, दुख के पूर्ण विनाश की ओर ले जाता है, सार्वजनिक और निजी दोनों ही रूप में अपने साथियों के साथ ऐसी जागरूकता में बने रहते हैं, जब तक कि वे उचित भेंट के रूप में प्राप्त होने वाली चीजों के संबंध में, यहां तक कि उनके भिक्षापात्र की सामग्री के संबंध में भी, उन्हें समुदाय के सद्गुणी सदस्यों के साथ साझा किए बिना उनका उपयोग नहीं करते हैं; जब तक वे अपने भाइयों के साथ, खुलेआम और एकांत में, आचरण के उन नियमों का अभ्यास करते हैं, जो पूर्ण और परिपूर्ण, निष्कलंक और पवित्र, मुक्तिदायक, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, सांसारिक चिंताओं से अप्रभावित और मन की एकाग्रता के लिए अनुकूल हैं; और अपने भाइयों के साथ, खुलेआम और एकांत में, उस महान और मुक्तिदायक अंतर्दृष्टि को संरक्षित करते हैं, जो उस पर अमल करने वाले को दुखों के पूर्ण नाश की ओर ले जाती है।

पंद्रहवाँ। विवाद के छह मूल कारण: यहाँ, एक भिक्षु क्रोधित और द्वेषपूर्ण है, वह गुरु और धम्म के प्रति अनादरपूर्ण और असभ्य है, और अपना प्रशिक्षण पूरा नहीं करता। वह संघ में विवाद उत्पन्न करता है, जिससे अनेकों को दुःख और शोक होता है, और देवताओं और मनुष्यों दोनों के लिए इसके बुरे परिणाम, दुर्भाग्य और दुःख होते हैं। हे मित्रों, यदि आप अपने बीच या दूसरों के बीच ऐसा कोई विवाद का कारण पाते हैं, तो आपको केवल उसी विवाद के कारण को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यदि आपको ऐसा कोई विवाद का कारण नहीं मिलता...तो आपको भविष्य में इसे अपने ऊपर हावी होने से रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए। या यदि कोई भिक्षु कपटी और द्वेषपूर्ण है...या यदि कोई भिक्षु ईर्ष्यालु और नीच है...या यदि कोई भिक्षु धूर्त और कपटी है...या यदि कोई भिक्षु बुरी इच्छाओं और गलत विचारों से भरा है...या यदि कोई भिक्षु हठी, जिद्दी और हठी है। हे मित्रों, यदि आप अपने बीच या दूसरों के बीच ऐसा कोई विवाद का कारण पाते हैं, तो आपको केवल उसी विवाद के कारण को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। यदि आपको विवाद का ऐसा कोई मूल कारण नहीं मिलता...तो आपको भविष्य में इसे अपने ऊपर हावी होने से रोकने के लिए काम करना चाहिए।

16. छह तत्व: पृथ्वी तत्व, अग्नि तत्व, जल तत्व, वायु तत्व, आकाश तत्व और चेतना तत्व।

सत्रह. मुक्ति के छह तत्व:

क. यहाँ एक भिक्षु कह सकता है, "मैंने प्रेम और करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति का विकास किया है, उसे विस्तृत किया है, उसे आधार और साधन बनाया है, उसे स्थापित किया है, उस पर अच्छी तरह से काम किया है, उसे सुचारू रूप से चलाया है। फिर भी द्वेष मेरे हृदय को जकड़े हुए है।" उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहते! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम प्रेम और करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति का विकास करते हो, तो द्वेष को तुम्हारे हृदय को घेरने का कोई अवसर नहीं मिलता। प्रेम और करुणा के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही द्वेष का उपचार है।"

ख. या वह कह सकता है, "मैंने करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी क्रूरता मेरे हृदय को जकड़े हुए है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो क्रूरता को तुम्हारे हृदय को जकड़ने का कोई अवसर नहीं मिलता। करुणा के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही क्रूरता का इलाज है।"

ग. या वह कह सकता है, "मैंने समभाव के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी कामवासना मेरे हृदय को जकड़े हुए है।" उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का अपमान मत करो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसी बात कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम समभाव के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो कामवासना को तुम्हारे हृदय पर हावी होने का कोई अवसर नहीं मिलता। समभाव के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही कामवासना का इलाज है।"

घ. या वह कह सकता है, "मैंने सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी घृणा मेरे हृदय को जकड़े हुए है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसी बात कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो घृणा को तुम्हारे हृदय को घेरने का कोई अवसर नहीं मिलता। सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही घृणा का उपचार है।"

या फिर वह कह सकता है, "मैंने हृदय की चिन्हहीन मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी मेरा हृदय चिन्हों की लालसा करता है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम चिन्हहीन मुक्ति के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो चिन्हों की लालसा तुम्हारे हृदय को घेर नहीं पाएगी। चिन्हहीन मुक्ति के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति चिन्हों की लालसा का उपचार है।"

च. या वह कह सकता है, "'मैं हूँ' का विचार मुझे अप्रिय लगता है, मैं 'मैं यह हूँ' के विचार पर ध्यान नहीं देता। फिर भी संदेह, अनिश्चितताएँ और समस्याएँ मेरे हृदय को जकड़े रहती हैं..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहते! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम शून्यता के माध्यम से हृदय की मुक्ति प्राप्त करोगे, तो 'मैं यह हूँ' का विचार तुम्हारे हृदय को घेर नहीं पाएगा। शून्यता के माध्यम से प्राप्त यह मुक्ति ही 'मैं यह हूँ' के विचार का उपचार है।"

XVIII. छह अतुलनीय चीजें: कुछ दृश्य, सुनी हुई बातें, लाभ, प्रशिक्षण, सेवा के रूप, स्मरण की वस्तुएँ।

XIX. स्मरण के छह विषय: बुद्ध, धम्म, संघ, नैतिकता, त्याग, देव।

XX. छह स्थिर अवस्थाएँ: आँख से किसी वस्तु को देखने पर, कान से किसी ध्वनि को सुनने पर, नाक से किसी गंध को सूंघने पर, जीभ से किसी स्वाद को चखने पर, शरीर से किसी मूर्त वस्तु को छूने पर, या मन से किसी मानसिक वस्तु को जानने पर, व्यक्ति न तो प्रसन्न होता है और न ही अप्रसन्न होता है, बल्कि न्यायसंगत, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहता है।

XXI. छह प्रजातियाँ

ए. यहाँ अंधकारमय परिस्थितियों में जन्मा व्यक्ति अंधकारमय जीवन जीता है।

b. अंधकारमय परिस्थितियों में जन्मा व्यक्ति उज्ज्वल जीवन जीता है।

ग. अंधकारमय परिस्थितियों में जन्म लेने वाला व्यक्ति निर्वाण प्राप्त करता है, जो न तो अंधकारमय है और न ही प्रकाशमय।

घ. उज्ज्वल परिस्थितियों में जन्मा व्यक्ति अंधकारमय जीवन जीता है।

ई. अच्छे परिवेश में जन्मा व्यक्ति उज्ज्वल जीवन जीता है।

च. प्रकाशमय वातावरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति निर्वाण प्राप्त करता है, जो न तो अंधकारमय है और न ही प्रकाशमय।

XXII. भेदन के लिए सहायक छह धारणाएँ: अनित्यता की धारणा, अनित्यता में पीड़ा की धारणा, निराकारता और पीड़ा की धारणा, त्याग की धारणा, अपव्यय की धारणा और समाप्ति की धारणा।

ये छह चीजों के वे समूह हैं, जिनका भगवान ने पूर्णतः प्रचार किया है।

भगवान द्वारा पूर्णतः घोषित की गई सात बातों के समूह हैं।

I. सात आर्य खजाने

ए. विश्वास

ख. नैतिकता

ग. नैतिक शर्म

डी. नैतिक भय

ई. सीखना

एफ. त्याग

जी. ज्ञान

II. ज्ञानोदय के सात कारक

ए. सचेतनता

ख. घटनाओं की जांच

सी. ऊर्जा

डी. आनंद

ई. शांति

एफ. सांद्रता

जी. समभाव

III. एकाग्रता की सात आवश्यकताएँ:

ए. दायां दृश्य

ख. सही विचार

ग. सही भाषण

घ. सही कार्रवाई

ई. सही आजीविका

एफ. सही प्रयास

जी. सही सचेतनता

IV. सात गलत प्रथाएँ: यहाँ एक भिक्षु

ए. आस्था का अभाव

b. नैतिक शर्म का अभाव

ग. नैतिक भय का अभाव

d. सीखने की क्षमता कम है

ई. क्या शिथिलता है

एफ. असावधान है

जी. ज्ञान का अभाव

V. सात सही अभ्यास: यहाँ एक भिक्षु के पास विश्वास, नैतिक शर्म और नैतिक भय होता है, वह बहुत ज्ञानी होता है, उसने शक्ति को जागृत किया होता है, उसने जागरूकता स्थापित की होती है, और वह ज्ञान से परिपूर्ण होता है।

VI. सच्चे व्यक्ति के सात गुण: यहाँ एक भिक्षु धम्म का ज्ञाता, अर्थों का ज्ञाता, स्वयं का ज्ञाता, संयम का ज्ञाता, उचित समय का ज्ञाता, व्यक्तियों के समूहों का ज्ञाता होता है।

VII. प्रशंसा के सात आधार: यहाँ एक भिक्षु अत्यंत चिंतित है।

क. प्रशिक्षण लेने के लिए इच्छुक है और इसे जारी रखना चाहता है।

ख. धम्म का गहन अध्ययन करना

ग. इच्छाओं से छुटकारा पाने के लिए

घ. एकांत की तलाश करना

ई. ऊर्जा को जगाना

च. सचेतनता और विवेक विकसित करना

g. गहन अंतर्दृष्टि विकसित करना

VIII. सात धारणाएँ: अनित्यता की धारणा, अनात्म की धारणा, अशुद्धता की धारणा, खतरे की धारणा, परित्याग की धारणा, अपव्यय की धारणा, समाप्ति की धारणा।

IX. सात शक्तियाँ: आस्था, ऊर्जा, नैतिक लज्जा, नैतिक भय, सजगता, एकाग्रता और ज्ञान।

X. चेतना के सात स्तर: प्राणी

ए. शारीरिक बनावट में भिन्नता, धारणा में भिन्नता

b. शरीर में भिन्न, धारणा में समान

ग. शारीरिक बनावट में एकरूप, धारणा में भिन्न

घ. शरीर में एकरूप, धारणा में भी एकरूप

ई. जिन्होंने अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

एफ. ...अनंत चेतना का

जी. ...शून्यता का

XI. सात व्यक्ति जो भेंट के योग्य हैं: मार्ग मुक्त, ज्ञान मुक्त, शरीर साक्षी, दृष्टि प्राप्त करने वाला, आस्था मुक्त, धम्म भक्त और आस्था भक्त।

XII. सात गुप्त प्रवृत्तियाँ: कामुक लोभ, द्वेष, द्वेष, संदेह, अहंकार, बनने की लालसा और अज्ञान।

XIII. सात बंधन: आत्मसंतुष्टि, आक्रोश, पूर्वाग्रह, संदेह, अहंकार, बनने की लालसा और अज्ञान।

XIV. उठाए गए विवादित मुद्दों के समाधान के लिए सात नियम:

ए. आमने-सामने की कार्यवाही

बी. स्मरण

सी. मानसिक विकार

डी. स्वीकारोक्ति

ई. बहुमत का फैसला

एफ. आदतन बुरे चरित्र

जी. घास से ढक देना

ये सात चीजों के वे समूह हैं जिनका भगवान ने पूर्ण रूप से वर्णन किया है, इसलिए हम सभी को देवताओं और मनुष्यों के कल्याण के लिए इनका पाठ करना चाहिए।

दूसरे पाठ खंड का अंत

भगवान द्वारा पूर्णतः घोषित की गई आठ बातों के समूह हैं।
I. आठ गलत कारक: गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत कर्म, गलत वाणी, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता, गलत एकाग्रता।

II. आठ सही कारक: ऊपर देखें।

III. भेंट के योग्य आठ व्यक्ति: धारा विजेता और धारा में प्रवेश का फल प्राप्त करने के लिए साधना करने वाला। एक बार लौटने वाला और एक बार लौटने का फल प्राप्त करने के लिए साधना करने वाला। न लौटने वाला...अरहंत...

IV. आलस्य के आठ अवसर: यहाँ एक भिक्षु

क. उसे एक काम करना है। वह सोचता है, "मुझे यह काम करना है, लेकिन इससे मैं थक जाऊँगा। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता।

ख. उसने कुछ काम किया है। वह सोचता है, "मैंने यह काम कर लिया है, अब मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटाता। या

ग. उसे यात्रा पर जाना है, और वह सोचता है, "मुझे इस यात्रा पर जाना है, इससे मैं थक जाता हूँ। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अनकहे को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता। या

घ. वह एक यात्रा से लौटकर आया है और सोचता है, "मैंने यह काम कर लिया है, अब मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटाता। या

उदाहरण के लिए, वह किसी गाँव या कस्बे में भिक्षा मांगने जाता है। उसे पर्याप्त भोजन नहीं मिलता। वह सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर थक गया है और बेकार हो गया है। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

एफ. वह भिक्षा मांगने जाता है और पेट भरकर भोजन करता है, और सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर भारी और बेकार हो गया है जैसे मैं गर्भवती हूँ। अब थोड़ा आराम कर लेता हूँ।" इसलिए वह लेट जाता है...

जी. उसे थोड़ी अस्वस्थता महसूस हो रही है, और वह सोचता है, "मुझे थोड़ा आराम कर लेना चाहिए" इसलिए वह लेट जाता है...

एच. वह हाल ही में बीमारी से उबरकर आराम कर रहा है, और वह सोचता है, "मेरा शरीर कमजोर और बेकार है, मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

V. प्रयास करने के आठ अवसर। यहाँ एक भिक्षु है।

क. उसे एक काम करना है, वह सोचता है, "मुझे यह काम करना है, लेकिन इसे करते समय मेरे लिए बुद्धों की शिक्षाओं पर ध्यान देना आसान नहीं होगा। इसलिए मैं अपूर्ण को पूरा करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा जुटाऊंगा। जो पूरा नहीं हुआ है उसे पूरा करने के लिए, जो अभी तक साकार नहीं हुआ है उसे साकार करने के लिए।"

बी. उसने कुछ काम किया है, वह सोचता है, "ठीक है, मैंने काम तो कर लिया, लेकिन इसके कारण मैं बुद्धों की शिक्षाओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाया, इसलिए मैं पर्याप्त ऊर्जा जुटाऊंगा..."

ग. उसे यात्रा पर जाना होगा...

d. वह एक यात्रा पर रहा है... "मैं इस यात्रा पर रहा हूँ, लेकिन इसके कारण मैं पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाया..."

ई. वह भिक्षा मांगने जाता है लेकिन उसकी भूख मिट नहीं पाती, इसलिए वह सोचता है, "मेरा शरीर हल्का और स्वस्थ है, मैं ऊर्जा जुटा लूंगा..."

एफ. वह भिक्षा मांगने जाता है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है, इसलिए वह सोचता है, "मेरा शरीर मजबूत और स्वस्थ है, मैं ऊर्जा जुटा लूंगा..."

जी. उसे थोड़ी अस्वस्थता है, इसलिए वह सोचता है, "यह और बिगड़ सकता है, इसलिए मैं ऊर्जा जुटाने की कोशिश करूंगा..."

एच. वह अभी हाल ही में ठीक हुआ है और अब स्वास्थ्य लाभ कर रहा है, और वह सोचता है, "हो सकता है कि बीमारी फिर से हो जाए, इसलिए मैं ऊर्जा जुटाऊंगा..."

VI. दान देने के आठ आधार: एक आधार दान देता है

ए. अवसर के अनुसार

b. डर से

ग. यह सोचना कि "उसने मुझे कुछ दिया है"

घ. यह सोचना कि "वह मुझे कुछ देगा"

ई. यह सोचना कि "दान करना अच्छा है"

एफ. यह सोचना कि "मैं कुछ पका रहा हूँ, वे नहीं पका रहे हैं। जो लोग खाना नहीं पका रहे हैं, उन्हें कुछ न देना सही नहीं होगा।"

उदाहरण के लिए, यह सोचना कि "अगर मैं यह दान करता हूँ, तो मुझे अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।"

h. अपने हृदय को सुशोभित और तैयार करने के लिए।

VII. उदारता के कारण आठ प्रकार के पुनर्जन्म

क. यहाँ कोई व्यक्ति किसी तपस्वी या ब्राह्मण को भोजन, पेय, वस्त्र, परिवहन, मालाएँ, इत्र और मलहम, सोने की जगह, घर या प्रकाश देता है और अपने उपहारों के बदले प्रतिफल की आशा रखता है। वह किसी धनी क्षत्रिय या ब्राह्मण या गृहस्थ को पाँचों इंद्रियों के सुखों का पूर्ण आनंद लेते हुए देखता है और सोचता है, "काश, मरने के बाद मेरा पुनर्जन्म इन्हीं धनी लोगों में से एक के रूप में हो।" वह इस विचार को अपने हृदय में ठान लेता है, उसे दृढ़ करता है और विकसित करता है। और इस विचार का इतने निम्न स्तर पर आरंभ होना

और उच्च स्तर तक विकसित न होना, वहीं पुनर्जन्म का कारण बनता है। परन्तु मैं यह बात नैतिक व्यक्ति के विषय में कह रहा हूँ, अनैतिक व्यक्ति के विषय में नहीं। नैतिक व्यक्ति की मानसिक आकांक्षा उसकी पवित्रता के कारण प्रभावी होती है।

ख. वह ऐसे उपहार देता है और यह सुनकर कि चार महान राजाओं के राज्य में देवता दीर्घायु, सुंदर और सुखी जीवन व्यतीत करते हैं, वह सोचता है, "काश मैं भी वहीं पुनर्जन्म ले पाता!" या वह इसी प्रकार स्वर्ग में पुनर्जन्म की कामना करता है।

ग. तैंतीस देवता

घ. यम देव

ई. तुषिता देव

एफ. निम्मनारती देव

उदाहरण के लिए, परमनिमित्त वासवत्ती देव। और यह विचार वहीं पुनर्जन्म की ओर ले जाता है... एक नैतिक व्यक्ति की मानसिक आकांक्षा उसकी पवित्रता के माध्यम से प्रभावी होती है। या

वह भी इसी प्रकार ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म की कामना करता है... परन्तु मैं यह बात नैतिक व्यक्ति के बारे में कह रहा हूँ, न कि अनैतिक व्यक्ति के बारे में। ऐसे व्यक्ति के बारे में जो वासना से मुक्त हो, न कि ऐसे व्यक्ति के बारे में जो अभी भी वासना से ग्रस्त हो। ऐसे नैतिक व्यक्ति की मानसिक आकांक्षा वासना से मुक्ति के माध्यम से ही प्रभावी होती है।

VIII. आठ सभाएँ: क्षत्रियों, ब्राह्मणों, गृहस्थों, तपस्वियों, देवताओं, चार महान राजाओं के राज्य के देवताओं, तैंतीस देवताओं, मारों और ब्रह्माओं की सभा।

IX. आठ सांसारिक स्थितियाँ: लाभ और हानि, प्रसिद्धि और बदनामी, निंदा और प्रशंसा, सुख और दुख।

X. निपुणता प्राप्त करने के आठ चरण:

ए. आंतरिक रूप से रूपों को समझने पर, व्यक्ति को बाहरी रूप सीमित और सुंदर या बदसूरत दिखाई देते हैं;

ख. आंतरिक रूप से रूपों को अनुभव करने पर, व्यक्ति बाहरी रूपों को असीमित और सुंदर या बदसूरत देखता है;

ग. आंतरिक रूप से आकृतियों को न देख पाने के कारण, व्यक्ति को बाहरी आकृतियाँ सीमित रूप से ही दिखाई देती हैं...

घ. आंतरिक रूप से रूपों को न समझने पर, व्यक्ति असीमित बाह्य रूपों को देखता है...; आंतरिक रूप से रूपों को न समझने पर, व्यक्ति ऐसे रूपों को देखता है जो

ई. नीला

एफ. पीला

जी. लाल

एच. व्हाइट...

XI. आठ मुक्ति

a. रूप धारण करने वाला व्यक्ति रूपों को देखता है;

ख. अपने भीतर भौतिक रूपों को न देख पाने के कारण, व्यक्ति उन्हें बाहर देखता है;

ग. यह सोचते हुए कि "यह सुंदर है" व्यक्ति इस पर ध्यान केंद्रित करने लगता है;

घ. व्यक्ति अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रवेश करता है;

ई. अनंत चेतना का क्षेत्र

एफ. शून्यता का क्षेत्र

जी. वह क्षेत्र जो न तो बोधगम्य है और न ही अबोधगम्य।

h. अनुभूति और संवेदना का रुक जाना।

ये आठ चीजों के सेट हैं...

ये नौ चीजों के सेट हैं...

I. द्वेष के नौ कारण: द्वेष निम्नलिखित विचारों से उत्पन्न होता है,

ए. उसने मुझे चोट पहुँचाई है

b. वह मुझे चोट पहुँचा रहा है।

ग. वह मुझे चोट पहुँचाएगा

d. उसने किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुँचाई है जो मुझे बहुत प्रिय और प्यारा है।

ई. वह किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुंचा रहा है जो मुझे प्रिय और प्यारा है।

एफ. वह किसी ऐसे व्यक्ति को हानि पहुंचाएगा जो मुझे प्रिय और प्रिय है।

जी. उसने किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान किया है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे पसंद नहीं है।

एच. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान कर रहा है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है।

i. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान करेगा जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद करता है।

II. द्वेष पर विजय पाने के नौ तरीके: द्वेष पर इस विचार से विजय पाई जा सकती है:

ए. उसने मुझे चोट पहुंचाई है — ऐसे में उसके प्रति द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

बी. वह मुझे नुकसान पहुंचा रहा है — द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

ग. वह मुझे नुकसान पहुंचाएगा — द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

घ. उसने मेरे किसी प्रिय और प्रिय व्यक्ति को चोट पहुंचाई है — ऐसे में द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

ई. वह किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुंचा रहा है जो मुझे प्रिय और प्यारा है - ऐसे में द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

एफ. वह किसी ऐसे व्यक्ति को हानि पहुंचाएगा जो मुझे प्रिय और प्यारा है - द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

जी. उसने एक ऐसे व्यक्ति पर एहसान किया है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - ऐसे में द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

एच. वह ऐसे व्यक्ति पर एहसान कर रहा है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

i. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान करेगा जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

III. प्राणियों के नौ निवास स्थान:

a. शारीरिक बनावट और धारणा में भिन्न प्राणी

b. शरीर से भिन्न लेकिन धारणा में समान प्राणी

ग. शरीर से समान तथा धारणा में भिन्न प्राणी

घ. शरीर और धारणा में समान प्राणी

ई. अचेतन प्राणियों का क्षेत्र

एफ. वह क्षेत्र जहां न तो बोध होता है और न ही अबोध।

g. वे प्राणी जिन्होंने अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

h. वे प्राणी जिन्होंने अनंत चेतना के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

i. वे प्राणी जिन्होंने शून्यता की अवस्था प्राप्त कर ली है

IV. पवित्र जीवन जीने के लिए नौ दुर्भाग्यपूर्ण, अनुपयुक्त समय

a. एक तथागत, अरहंत, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध, संसार में जन्म लेते हैं और उन्हें धम्म का उपदेश दिया जाता है जो शांत और पूर्ण निर्वाण की ओर ले जाता है, जो भला चाहने वाले द्वारा सिखाए गए ज्ञान की ओर ले जाता है, और यह व्यक्ति नरक अवस्था में जन्म लेता है।

ख. जानवरों के बीच

सी. पेटाओं के बीच

घ. असुरों में

ई. देवों के एक दीर्घायु समूह में

एफ. उसका जन्म सीमावर्ती क्षेत्रों में मूर्ख बर्बर लोगों के बीच हुआ है जहाँ भिक्षुओं और भिक्षुणियों, या पुरुष और महिला गृहस्थ अनुयायियों के लिए कोई पहुँच नहीं है।

उदाहरण के लिए, वह मध्य देश में जन्मा है, लेकिन उसके विचार गलत और दृष्टि विकृत है, वह सोचता है, "न तो कुछ देना है, न कुछ भेंट करना है, न ही कुछ बलिदान करना है, अच्छे या बुरे कर्मों का कोई फल या परिणाम नहीं है। न तो यह लोक है और न ही परलोक, न तो माता-पिता हैं और न ही स्वतः पुनर्जन्म होता है। संसार में ऐसे कोई तपस्वी और ब्राह्मण नहीं हैं, जिन्होंने सर्वोच्च को प्राप्त कर स्वयं इस लोक और परलोक के बारे में सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया हो और उसका प्रचार किया हो।"

एच. वह मध्य देश में पैदा हुआ है, लेकिन बुद्धिहीन और मूर्ख है। या वह बहरा और गूंगा है, और यह नहीं बता सकता कि कोई बात अच्छी कही गई है या बुरी। या फिर

i. तथागत का कोई जन्म नहीं हुआ है और यह व्यक्ति मध्य देश में जन्मा है और बुद्धिमान है, मूर्ख नहीं, न ही बहरा या गूंगा है, और यह भली-भांति जानता है कि कोई बात अच्छी कही गई है या बुरी।

V. नौ क्रमिक अवस्थाएँ: अनंत अंतरिक्ष के ध्यान और क्षेत्र, अनंत चेतना, शून्यता, न तो बोध और न ही अबोध, और बोध और भावना का अंत।

VI. नौ क्रमिक समाप्ति: प्रथम ध्यान की प्राप्ति से इंद्रिय संवेदनाएँ समाप्त हो जाती हैं, द्वितीय ध्यान की प्राप्ति से चिंतन और मनन समाप्त हो जाते हैं, तृतीय ध्यान की प्राप्ति से आनंद समाप्त हो जाता है, चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति से श्वास-श्वास समाप्त हो जाता है, अनंत आकाश के क्षेत्र की प्राप्ति से भौतिकता की अनुभूति समाप्त हो जाती है, अनंत चेतना के क्षेत्र की प्राप्ति से अनंत आकाश के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। शून्यता के क्षेत्र की प्राप्ति से अनंत चेतना के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। न तो अनुभूति और न ही अनुभूति के क्षेत्र की प्राप्ति से शून्यता के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। अनुभूति और अनुभूति की समाप्ति की प्राप्ति से अनुभूति और अनुभूति दोनों समाप्त हो जाती हैं।

ये नौ चीजों के सेट हैं।

भगवान द्वारा पूर्णतः घोषित की गई दस बातों के समूह हैं।

1. दस चीजें जो सुरक्षा प्रदान करती हैं। यहाँ एक भिक्षु है।

क. वह नैतिक है, शिष्य के संयम के अनुसार संयमित जीवन जीता है, सही आचरण में दृढ़ रहता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। वह प्रशिक्षण के नियमों का पालन करता है।

ख. उसने बहुत कुछ सीखा है और जो कुछ सीखा है उसे वह याद रखता है और संजो कर रखता है। आरंभ, मध्य और अंत में सुंदर इन शिक्षाओं में, जो भावना और शब्दों में पूर्णतः परिपूर्ण और पवित्र जीवन की घोषणा करती हैं, वह गहन रूप से पारंगत है; वह उन्हें याद रखता है, उनका पाठ करता है, उन पर मनन करता है और उन्हें अंतर्दृष्टि से आत्मसात करता है।

ग. वह अच्छे लोगों का मित्र, सहयोगी और घनिष्ठ मित्र है।

घ. वह मिलनसार, सौम्य और धैर्यवान है। निर्देशों को शीघ्रता से ग्रहण करता है।

ई. अपने साथी भिक्षुओं के लिए जो भी विभिन्न कार्य करने होते हैं, वह उनमें कुशल होता है, लापरवाह नहीं, उन्हें पूरा करने में दूरदर्शिता का प्रयोग करता है, और कार्य करने और योजना बनाने में अच्छा होता है।

एफ. वह धम्म से प्रेम करता है और उसे सुनने में आनंदित होता है। वह विशेष रूप से उन्नत सिद्धांतों और अनुशासनों का शौकीन है।

जी. वह किसी भी प्रकार की आवश्यकताओं, वस्त्रों, भिक्षा, भोजन, आवास, बीमारी की स्थिति में दवाओं से संतुष्ट रहता है।

वह सदा ऊर्जा जगाने, अस्वस्थ अवस्थाओं से छुटकारा पाने और स्वस्थ अवस्थाओं को स्थापित करने का प्रयास करता है, ऐसी अच्छी अवस्थाओं को बनाए रखने के लिए अथक और ऊर्जावान रूप से प्रयास करता है, और कभी भी इस भार को नहीं उतारता।

i. वह सचेत है, और उसमें बहुत पहले की गई और कही गई बातों को स्पष्ट रूप से याद रखने की अद्भुत क्षमता है।

जे. वह उत्पत्ति और क्षय की बुद्धिमत्तापूर्ण समझ रखने वाला बुद्धिमान व्यक्ति है, वह आर्यन समझ जो दुख के पूर्ण विनाश की ओर ले जाती है।

II. समाधि की प्राप्ति के लिए दस वस्तुएँ। वह पृथ्वी-कसीना, जल-कसीना, अग्नि-कसीना, वायु-कसीना, नीला-कसीना, पीला-कसीना, लाल-कसीना, सफेद-कसीना, आकाश-कसीना, चेतना-कसीना को ऊपर, नीचे, चारों ओर, अविभाजित, असीम रूप से देखता है।

III. दस अवांछनीय कर्म। जीवन लेना, बिना माँगे कुछ लेना, यौन दुराचार, झूठ बोलना, निंदा करना, अभद्र भाषा, व्यर्थ की बातें, लोभ, द्वेष, गलत दृष्टिकोण।

IV. दस उत्तम कर्म। जीवन लेना मना है, बिना माँगी वस्तु लेना मना है, यौन दुराचार से बचना, झूठ बोलना मना है, निंदा करना मना है, अभद्र भाषा बोलना मना है, व्यर्थ की बातों से बचना है, लोभ से बचना है, द्वेष से बचना है और गलत विचारों से बचना है।

V. दस आर्य स्वभाव: यहाँ एक भिक्षु है

ए. इसने पाँच कारकों से छुटकारा पा लिया है,

b. इसमें छह कारक मौजूद हैं

सी. एक गार्ड तैनात किया है

d. चारों आधारों का अवलोकन करता है,

ई. इसने सांप्रदायिक विचारों से छुटकारा पा लिया है

एफ. उसने खोज को लगभग त्याग दिया है

जी. उसका उद्देश्य शुद्ध है

एच. उसने अपनी भावनाओं को शांत कर लिया है, वह पूरी तरह से मुक्त है

i. हृदय में

जे. ज्ञान द्वारा।

क. उसने पाँच कारकों से कैसे छुटकारा पाया है? यहाँ उसने कामुकता, द्वेष, आलस्य और सुस्ती, चिंता और घबराहट तथा संदेह से छुटकारा पाया है।

ख. उसमें कौन से छह गुण मौजूद हैं? किसी वस्तु को आँख से देखने, कान से ध्वनि सुनने, नाक से गंध सूंघने, जीभ से स्वाद चखने, किसी मूर्त वस्तु को छूने या मन से किसी मानसिक वस्तु को जानने पर वह न तो प्रसन्न होता है और न ही अप्रसन्न, बल्कि न्यायसंगत, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहता है।

ग. उसने एकमात्र सुरक्षा कवच कैसे स्थापित किया है? अपने मन को सचेतनता से सुरक्षित रखकर।

घ. वे चार आधार क्या हैं? उनका मानना है कि एक चीज का पीछा किया जाना चाहिए, एक चीज को सहन किया जाना चाहिए, एक चीज से बचा जाना चाहिए और एक चीज को दबा दिया जाना चाहिए।

ई. उन्होंने सांप्रदायिक विचारों से कैसे छुटकारा पाया है? अधिकांश संन्यासियों और ब्राह्मणों द्वारा रखे गए व्यक्तिगत विचारों को उन्होंने खारिज कर दिया है, त्याग दिया है, अस्वीकार कर दिया है, जाने दिया है।

च. वह व्यक्ति कौन है जिसने सभी खोजों का त्याग कर दिया है? उसने इंद्रिय सुखों की खोज, पुनर्जन्म की खोज, और पवित्र जीवन की खोज का त्याग कर दिया है।

जी. उसके इरादे कैसे शुद्ध हैं? उसने कामुकता, द्वेष और क्रूरता के विचारों का त्याग कर दिया है।

h. वह व्यक्ति कौन है जिसने अपनी भावनाओं को शांत कर लिया है? क्योंकि सुख और दुख का त्याग करके, पूर्व की प्रसन्नता और उदासी के लुप्त होने के साथ, वह सुख और दुख से परे एक ऐसी अवस्था में प्रवेश करता है, जो समभाव से शुद्ध होती है, और यही चौथा ध्यान है।

i. वह हृदय से किस प्रकार पूर्णतः मुक्त है? वह लोभ, घृणा और भ्रम के विचारों से मुक्त है।

जे. वह ज्ञान से किस प्रकार पूर्णतया मुक्त हो जाता है? वह समझता है, "मेरे लिए लोभ, घृणा और भ्रम का त्याग हो चुका है, वे ताड़ के पेड़ के ठूंठ की तरह जड़ से उखड़ गए हैं। नष्ट हो चुके हैं और फिर से उगने में असमर्थ हैं।"

VI. गैर-शिक्षार्थी के दस गुण: गैर-शिक्षार्थी का सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता, सही ज्ञान, सही मुक्ति।

ये दस बातें हैं, जिन्हें सर्वज्ञानी और प्रत्यक्षदर्शी भगवान, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध ने पूर्णतया निर्धारित किया है। इसलिए हम सभी को बिना किसी मतभेद के इनका एक साथ पाठ करना चाहिए, ताकि यह पवित्र जीवन दीर्घकालीन और स्थायी बना रहे। इस प्रकार, यह समस्त जन कल्याण और सुख के लिए, संसार के प्रति करुणा से, देवताओं और मनुष्यों के लाभ, कल्याण और सुख के लिए हो। फिर भगवान खड़े हुए और उन्होंने आदरणीय सारिपुत्त से कहा, "शाबाश, शाबाश सारिपुत्त, तुमने भिक्षुओं के लिए सामूहिक जप का मार्ग बहुत ही उत्तम ढंग से बताया है।"

ये बातें पूज्य सारिपुत्त ने कही थीं और गुरु ने उनकी पुष्टि की थी, भिक्षु पूज्य सारिपुत्त के शब्दों से प्रसन्न और आनंदित हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> दीघा निकाय >> 3.11 दसुत्तर सुत्त(डीएन34)

मैंने ऐसा सुना है: एक बार भगवान चंपा में गग्गरा कमल तालाब के किनारे लगभग पाँच सौ भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ ठहरे हुए थे। तब पूज्य शारिपुत्र ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा: 'मित्रों, भिक्षुओं!'

'मित्र!' भिक्षुओं ने उत्तर दिया, और पूज्य शारिपुत्र ने कहा:

मैं एक से दस लोगों के बढ़ते समूहों में पढ़ाऊंगा

निब्बान की प्राप्ति के लिए धम्म,

ताकि आप दुखों का अंत कर सकें।

और उन सभी बंधनों से मुक्त हो जाओ जो तुम्हें बांधते हैं।

जी हाँ, दोस्तों।

1. एक चीज़ जो बहुत मदद करती है

2. एक चीज जिसे विकसित किया जाना है

3. एक बात जिसे पूरी तरह से जानना आवश्यक है

4. एक चीज जिसे त्यागना होगा

5. एक चीज जो कमी की ओर ले जाती है

6. एक चीज जो विशिष्टता को बढ़ावा देती है

7. एक ऐसी चीज़ जिसमें प्रवेश करना कठिन है

8. एक चीज को उत्पन्न किया जाना है

9. एक बात जिसे अच्छी तरह से सीख लेना चाहिए

10. और एक बात समझनी है।

अब कौन सी एक चीज सबसे ज्यादा मददगार साबित होती है?

1. स्वस्थ अवस्थाओं में अथक परिश्रम।

किस एक चीज का विकास किया जाना है?

2. शरीर के प्रति सजगता, जिसमें आनंद भी शामिल हो।

वह कौन सी एक बात है जिसे पूरी तरह से जानना आवश्यक है?

3. संपर्क, भ्रष्टाचार और लोभ की एक शर्त के रूप में।

किस एक चीज को त्यागना होगा?

4. अहंकार-अभिमान।

कौन सी एक चीज कमी लाने में सहायक होती है?

5. अनुचित ध्यान

कौन सी एक चीज विशिष्टता को बढ़ावा देती है?

6. समझदारी से ध्यान देना

वह कौन सी चीज है जिसमें प्रवेश करना कठिन है?

7. निर्बाध मानसिक एकाग्रता

वह कौन सी चीज है जिसे उत्पन्न किया जाना है?

8. अडिग ज्ञान

वह कौन सी एक चीज है जिसे पूरी तरह से सीखना आवश्यक है?

9. सभी प्राणियों का पालन-पोषण पोषण द्वारा होता है।

किस एक बात को साकार करना है?

10. मन की अविचल मुक्ति।

दो चीजें बहुत मददगार होती हैं; दो चीजों का विकास किया जाना चाहिए... (जैसा कि ऊपर बताया गया है)

कौन सी दो चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. सजगता और स्पष्ट जागरूकता

किन दो चीजों का विकास किया जाना है?

2. शांति और अंतर्दृष्टि

वे कौन सी दो बातें हैं जिन्हें पूरी तरह से जानना आवश्यक है?

3. मन और शरीर

किन दो चीजों को छोड़ना है?

4. अज्ञान और अस्तित्व की लालसा

वे कौन सी दो चीजें हैं जो कमी लाने में सहायक होती हैं?

5. क्रूरता और बुराई से मित्रता

कौन सी दो चीजें विशिष्टता को बढ़ावा देती हैं?

6. अच्छे लोगों के प्रति कोमलता और मित्रता

किन दो चीजों में प्रवेश करना कठिन है?

7. जो प्राणियों के अपवित्र होने का मूल कारण है, और जो प्राणियों के शुद्ध होने का मूल कारण है।

वे कौन सी दो चीजें हैं जिन्हें उत्पन्न करना है?

8. अशुद्धियों के नाश और उनके पुनरावर्तन न होने का ज्ञान

...सीखा?

9. दो तत्व, सशर्त और गैर-सशर्त

...समझना?

10. ज्ञान और मुक्ति।

इस प्रकार बीस ऐसी बातें हैं जो वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं, तथागत द्वारा अचूक और पूर्ण रूप से साकार की गई हैं।

तीन चीजें बहुत सहायक होती हैं; तीन चीजों का विकास किया जाना चाहिए... (जैसा कि ऊपर बताया गया है।)

कौन सी तीन चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. अच्छे लोगों की संगति, सच्चे धर्म का श्रवण, और संपूर्ण रूप से धर्म का अभ्यास।

किन तीन चीजों का विकास किया जाना है?

2. एकाग्रता के तीन प्रकार।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. तीन भावनाएँ

...छोड़ा हुआ?

4. लालसा के तीन प्रकार

...कमी की ओर ले जाता है?

5. तीन अस्वास्थ्यकर जड़ें

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. तीन पौष्टिक जड़ें

...भेदना मुश्किल है?

7. मुक्ति प्राप्त करने के लिए तीन तत्व:

ए. कामुकता से मुक्ति

ख) भौतिक रूपों से मुक्ति

ग. अर्थात्, जो कुछ भी अमूर्त है, जो कुछ भी हुआ है, वह मिश्रित है, सशर्त रूप से उत्पन्न हुआ है - उससे मुक्ति का अर्थ है उसका रुक जाना।

...उत्पन्न करने के लिए?

8. भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल का तीन प्रकार का ज्ञान।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. तीन तत्व: इंद्रिय-इच्छा का तत्व, रूप का तत्व, निराकार तत्व।

...समझना?

10. तीन प्रकार का ज्ञान; अपने पूर्व जन्मों का ज्ञान, प्राणियों की मृत्यु और पुनर्जन्म का ज्ञान, और विकारों के नाश का ज्ञान।

चार चीजें बेहद मददगार होती हैं, चार चीजों का विकास किया जाना चाहिए...

कौन सी चार चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. चार "पहिये"

ए. रहने के लिए अनुकूल स्थान

ख. अच्छे लोगों के साथ संगति

ग. व्यक्तित्व का परिपूर्ण विकास

घ. अतीत के सराहनीय कार्य

किन चार चीजों का विकास किया जाना है?

2. चार आधार: ध्यान के चार आधार: यहाँ एक भिक्षु शरीर को शरीर के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, चिंतन करता है; वह भावनाओं को भावनाओं के रूप में देखते हुए... वह मन को मन के रूप में देखते हुए... वह मन के विषयों को मन के विषयों के रूप में देखते हुए, उत्साही, स्पष्ट रूप से जागरूक और सचेत होकर, संसार के लिए लालसा और चिंता को त्यागकर, चिंतन करता है।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. चार पोषक तत्व: भौतिक, भोजन, स्थूल या सूक्ष्म; संपर्क दूसरे स्थान पर; मानसिक इच्छाशक्ति तीसरे स्थान पर, चेतना चौथे स्थान पर।

...क्या इसे छोड़ दिया जाएगा?

4. चार बाढ़ें:

ए. कामुकता,

बी. बनना,

ग. गलत विचार

घ. अज्ञानता।

...कमी के लिए अनुकूल?

5. चार जुए

ए. कामुकता,

बी. बनना,

ग. गलत विचार

घ. अज्ञानता

...विभेद को बढ़ावा देने वाला?

6. चार बार बंधन तोड़ना

ए. कामुकता

बी. बनना

सी. विचार

घ. अज्ञानता

...भेदना मुश्किल है?

7. चार सांद्रताएँ:

ए. गिरावट की ओर अग्रसर

b. ठहराव की ओर ले जाना

ग. भेद की ओर अग्रसर

d. प्रवेश के लिए अनुकूल

...उत्पन्न करने के लिए?

8. चार प्रकार के ज्ञान: धम्म का ज्ञान, धम्म के अनुरूप ज्ञान, दूसरों के मन का ज्ञान, और पारंपरिक ज्ञान।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. चार आर्य सत्य: दुख का ज्ञान, उसका कारण, उसका निवारण और उसका मार्ग।

...क्या यह साकार हो पाएगा?

10. तपस्वी जीवन के चार फल: धारा में प्रवेश का फल, एक बार लौटने वाले का फल, न लौटने वाले का फल और अरहंतत्व का फल।

इस प्रकार चालीस ऐसी बातें हैं जो वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं, तथागत द्वारा अचूक और पूर्ण रूप से साकार की गई हैं।

पांच चीजें बेहद मददगार होती हैं, पांच चीजों को विकसित किया जाना चाहिए।

कौन सी पाँच चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. प्रयास के पाँच कारक: यहाँ, एक भिक्षु

क. तथागत के ज्ञान में आस्था रखते हुए, वे कहते हैं: 'यह भगवान अरहंत हैं, पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध हैं, ज्ञान और आचरण में परिपूर्ण हैं, कल्याणकारी हैं, संसार के ज्ञाता हैं, मनुष्यों को वश में करने में अद्वितीय प्रशिक्षक हैं, देवताओं और मनुष्यों के गुरु हैं, बुद्ध हैं, भगवान हैं।' वे अपने ज्ञान से इस संसार को, इसके देवताओं, मारों, ब्रह्माओं, तपस्वियों और ब्राह्मणों के संसार को, इसके राजकुमारों और प्रजाजनों सहित, घोषित करते हैं। वे एक ऐसे धम्म का उपदेश देते हैं जो भाव और अक्षर दोनों में पूर्ण है, और वे पूर्णतः सिद्ध, शुद्धतम पवित्र जीवन का प्रदर्शन करते हैं। और वास्तव में ऐसे अरहंतों को देखना सुखद है।

ख. वह अच्छे स्वास्थ्य में है, उसे कम कष्ट या बीमारी होती है, उसका पाचन तंत्र अच्छा है जो न तो बहुत ठंडा है और न ही बहुत गर्म, बल्कि परिश्रम के लिए उपयुक्त मध्यम तापमान का है।

ग. वह कपटी या छलपूर्ण नहीं है, और अपने शिक्षक या पवित्र जीवन में अपने साथियों में से बुद्धिमान लोगों के सामने स्वयं को वैसे ही प्रकट करता है जैसा वह वास्तव में है।

घ. वह अस्वस्थ अवस्थाओं को त्यागने और स्वस्थ अवस्थाओं को जागृत करने के लिए अपनी ऊर्जा को निरंतर उत्तेजित रखता है।

ई. क्या वह एक ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति है जिसे आर्यों के आक्रमण से उबरने और उसके निवारण के संबंध में ज्ञान प्राप्त है, जिससे दुख का पूर्ण विनाश होता है?

किन पाँच चीजों का विकास किया जाना है?

2. पंचगुणित पूर्ण एकाग्रता:

क. आनंद से सराबोर

ख. खुशी से सराबोर

ग. इच्छाशक्ति से भरा हुआ

d. प्रकाश से विसरण

ई. समीक्षा चिह्न।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. ग्रहणशीलता के पाँच समूह:

ए. शरीर

ख. भावनाएँ

ग. धारणाएँ

डी. मानसिक संरचनाएँ

ई. चेतना

...क्या इसे छोड़ दिया जाएगा?

4. पाँच बाधाएँ:

ए. कामुकता

b. दुर्भावना

ग. आलस्य और सुस्ती

घ. चिंता और घबराहट

ई. संशयपूर्ण संदेह

...कमी की ओर ले जाता है?

5. पांच मानसिक अवरोध: यहाँ एक भिक्षु को संदेह और झिझक होती है।

क. शिक्षक के बारे में वह असंतुष्ट है और उसका मन शांत नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, लगन और प्रयास की ओर नहीं झुक रहा है।

ख. धम्म के विषय में वह असंतुष्ट है और उसका मन स्थिर नहीं हो पाता। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं होता।

ग. संघ के विषय में वह असंतुष्ट है और उसका मन स्थिर नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर प्रवृत्त नहीं है।

घ. प्रशिक्षण के संबंध में वह असंतुष्ट है और उसका मन शांत नहीं हो पा रहा है। अतः उसका मन उत्साह, समर्पण, दृढ़ता और प्रयास की ओर नहीं झुक रहा है।

ई. वह अपने साथी धर्मपरायणों से नाराज़ है, वह उनके प्रति उदास और नकारात्मक भाव रखता है। इस प्रकार उसका मन उत्साह, भक्ति, दृढ़ता और प्रयास की ओर नहीं झुकता।

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. पाँच संकाय:

ए. विश्वास

बी. ऊर्जा

ग. सचेतनता

डी. सांद्रता

ई. ज्ञान

...भेदना मुश्किल है?

7. मुक्ति दिलाने वाले पाँच तत्व:

यहां, जब कोई भिक्षु इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं पर विचार करता है, तो उसका मन उनमें तल्लीन होकर संतुष्टि नहीं पाता, उन पर स्थिर नहीं होता या उनसे मुक्त नहीं हो जाता, परन्तु जब वह त्याग पर विचार करता है तो उसका मन तल्लीन होकर संतुष्टि पाता है, उस पर स्थिर होता है और उससे मुक्त हो जाता है। और वह इस विचार को अच्छी तरह से स्थापित, अच्छी तरह से विकसित, अच्छी तरह से उन्नत और इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से उत्पन्न होने वाले विकारों, कष्टों और ज्वर से अच्छी तरह मुक्त कर लेता है, और उसे वह इंद्रिय-संबंधी भावना महसूस नहीं होती। इसे ही इंद्रिय-संबंधी इच्छाओं से मुक्ति कहते हैं। और यही बात अन्य विषयों पर भी लागू होती है।

बी. दुर्भावना

ग. क्रूरता

डी. प्रपत्र

ई. व्यक्तित्व

...उत्पन्न करने के लिए?

8. सही एकाग्रता का पंच प्रकार का ज्ञान: वह ज्ञान जो व्यक्ति के भीतर उत्पन्न होता है:

ए. यह एकाग्रता वर्तमान सुख और भविष्य में मिलने वाले परिणामी सुख दोनों का स्रोत है।

ख. यह एकाग्रता आर्यन है और सांसारिकता से मुक्त है।

ग. अयोग्य लोग इस एकाग्रता का अभ्यास नहीं करते।

घ. यह एकाग्रता शांत और परिपूर्ण है, इसने शांति प्राप्त कर ली है, इसने एकीकरण प्राप्त कर लिया है, और यह उकसाई नहीं गई है, इसे नकारा या रोका नहीं जा सकता है।

मैं स्वयं सचेतनता से इस एकाग्रता को प्राप्त करता हूँ और सचेतनता से ही इससे बाहर निकलता हूँ।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. मुक्ति के पाँच आधार: यहाँ

क. शिक्षक या कोई सम्मानित सह-शिष्य किसी भिक्षु को धम्म की शिक्षा देता है। शिक्षा ग्रहण करते समय, वह शिक्षा के भाव और शाब्दिक अर्थ दोनों को समझ लेता है। इससे उसमें आनंद उत्पन्न होता है, और इस आनंद से प्रसन्नता उत्पन्न होती है; इस प्रसन्नता से उसकी इंद्रियाँ शांत हो जाती हैं, परिणामस्वरूप उसे सुख का अनुभव होता है, और इस सुख से उसका मन स्थिर हो जाता है;

ख. उसने इसे इस प्रकार नहीं सुना है, बल्कि दूसरों को धम्म की शिक्षा देते समय उसने इसे जैसा सुना है वैसा ही कंठस्थ कर लिया है, या

ग. जैसे ही वह धम्म का पाठ कर रहा है... या

घ. ...जब वह धम्म पर अपना मन लगाता है, उस पर विचार करता है, मनन करता है और अपना ध्यान उस पर केंद्रित करता है; या

जब वह एकाग्रता के किसी संकेत को ठीक से समझ लेता है, उस पर अच्छी तरह विचार करता है, अपना मन लगाता है और बुद्धि से उसका गहन अध्ययन कर लेता है, तब उसके मन में आनंद उत्पन्न होता है; और इस आनंद से उसे प्रसन्नता मिलती है, और इस प्रसन्नता से उसकी इंद्रियाँ शांत हो जाती हैं, परिणामस्वरूप उसे सुख का अनुभव होता है, और इस सुख से उसका मन स्थिर हो जाता है।

...क्या यह साकार हो पाएगा?

10. धम्म की पाँच शाखाएँ, जैसा कि ऊपर बताया गया है, साथ ही मुक्ति का ज्ञान और दृष्टि।

इस प्रकार पचास ऐसी बातें हैं जो वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं, जिन्हें तथागत ने त्रुटिहीन और पूर्ण रूप से साकार किया है।

छह चीजें बेहद मददगार होती हैं, छह चीजों को विकसित करना आवश्यक है...

कौन सी छह चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. स्मरणीय छह बातें: जब तक भिक्षु सार्वजनिक और निजी रूप से अपने साथियों के प्रति शारीरिक, वाणी और विचार से सजीव दया प्रदर्शित करते हैं... अपने सद्‌गुणी साथियों के साथ वह सब कुछ साझा करते हैं जो उन्हें उचित उपहार के रूप में प्राप्त होता है, जिसमें उनके भिक्षापात्र की सामग्री भी शामिल है, जिसे वे अपने लिए नहीं रखते... आचरण के उन नियमों का निरंतर, अटूट और अपरिवर्तित पालन करते हैं जो निर्मल हैं, मुक्ति की ओर ले जाते हैं, ज्ञानियों द्वारा प्रशंसित हैं, बेदाग हैं और एकाग्रता के लिए सहायक हैं, और सार्वजनिक और निजी दोनों में अपने नेक साथियों के साथ उनका पालन करते हैं... मुक्ति की ओर ले जाने वाले, दुख के पूर्ण नाश की ओर ले जाने वाले उस महान दृष्टिकोण में बने रहते हैं, सार्वजनिक और निजी दोनों में अपने साथियों के साथ ऐसी जागरूकता में रहते हैं, जब तक कि वे उचित भेंट के रूप में प्राप्त होने वाली चीजों के संबंध में, यहां तक कि अपने भिक्षापात्र की सामग्री के संबंध में भी, उन्हें समुदाय के सद्‌गुणी सदस्यों के साथ साझा किए बिना उनका उपयोग नहीं करते हैं; जब तक वे अपने भाइयों के साथ, खुलेआम और एकांत में, आचरण के उन नियमों का अभ्यास करते हैं, जो पूर्ण और परिपूर्ण, निष्कलंक और पवित्र, मुक्तिदायक, बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित, सांसारिक चिंताओं से अप्रभावित और मन की एकाग्रता के लिए अनुकूल हैं; और अपने भाइयों के साथ, खुलेआम और एकांत में, उस महान और मुक्तिदायक अंतर्दृष्टि को संरक्षित करते हैं, जो उस पर अमल करने वाले को दुखों के पूर्ण नाश की ओर ले जाती है।

किन छह चीजों का विकास किया जाना है?

2. स्मरण के छह विषय: बुद्ध, धम्म, संघ, नैतिकता, त्याग, देव।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. छह आंतरिक इंद्रिय क्षेत्र:

ए. नेत्र क्षेत्र

b. कान का गोला

सी. नाक का गोला

डी. जीभ का गोला

ई. शरीर का गोला

एफ. मन इंद्रिय क्षेत्र

...क्या इसे छोड़ दिया जाएगा?

4. छह प्रकार की लालसाएँ, प्रत्येक इंद्रिय क्षेत्र के लिए एक।

...कमी के लिए अनुकूल?

5. छह प्रकार के अनादर: यहाँ, एक भिक्षु शिक्षक, धम्म, संघ, प्रशिक्षण, गंभीरता और आतिथ्य सत्कार के प्रति अनादरपूर्ण और असभ्य व्यवहार करता है।

...विभेद को बढ़ावा देने वाला?

6. छह प्रकार के आदर: यहाँ, एक भिक्षु शिक्षक, धम्म, संघ, प्रशिक्षण के प्रति सम्मानपूर्वक और विनम्रतापूर्वक व्यवहार करता है, गंभीरता और आतिथ्य सत्कार के सम्मान में।

...भेदना मुश्किल है?

7. मुक्ति दिलाने वाले छह तत्व:

क. यहाँ एक भिक्षु कह सकता है, "मैंने प्रेम और करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति का विकास किया है, उसे विस्तृत किया है, उसे आधार और साधन बनाया है, उसे स्थापित किया है, उस पर अच्छी तरह से काम किया है, उसे सुचारू रूप से चलाया है। फिर भी द्वेष मेरे हृदय को जकड़े हुए है।" उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहते! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम प्रेम और करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति का विकास करते हो, तो द्वेष को तुम्हारे हृदय को घेरने का कोई अवसर नहीं मिलता। प्रेम और करुणा के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही द्वेष का उपचार है।"

ख. या वह कह सकता है, "मैंने करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी क्रूरता मेरे हृदय को जकड़े हुए है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम करुणा के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो क्रूरता को तुम्हारे हृदय को जकड़ने का कोई अवसर नहीं मिलता। करुणा के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही क्रूरता का इलाज है।"

ग. या वह कह सकता है, "मैंने समभाव के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी कामवासना मेरे हृदय को जकड़े हुए है।" उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का अपमान मत करो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसी बात कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम समभाव के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो कामवासना को तुम्हारे हृदय पर हावी होने का कोई अवसर नहीं मिलता। समभाव के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही कामवासना का इलाज है।"

घ. या वह कह सकता है, "मैंने सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी घृणा मेरे हृदय को जकड़े हुए है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसी बात कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो घृणा को तुम्हारे हृदय को घेरने का कोई अवसर नहीं मिलता। सहानुभूतिपूर्ण आनंद के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति ही घृणा का उपचार है।"

या फिर वह कह सकता है, "मैंने हृदय की चिन्हहीन मुक्ति प्राप्त कर ली है, फिर भी मेरा हृदय चिन्हों की लालसा करता है..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहेंगे! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम चिन्हहीन मुक्ति के द्वारा हृदय की मुक्ति प्राप्त कर लेते हो, तो चिन्हों की लालसा तुम्हारे हृदय को घेर नहीं पाएगी। चिन्हहीन मुक्ति के द्वारा प्राप्त यह मुक्ति चिन्हों की लालसा का उपचार है।"

च. या वह कह सकता है, ""मैं हूँ" का विचार मुझे अप्रिय लगता है, मैं 'मैं यह हूँ' के विचार पर ध्यान नहीं देता। फिर भी संदेह, अनिश्चितताएँ और समस्याएँ मेरे हृदय को जकड़े रहती हैं..." उसे कहा जाना चाहिए, "नहीं! ऐसा मत कहो! भगवान परमेश्वर का गलत अर्थ मत निकालो, उन पर इस प्रकार कलंक लगाना उचित नहीं है, क्योंकि वे ऐसा कभी नहीं कहते! तुम्हारे शब्द निराधार और असंभव हैं। यदि तुम शून्यता के माध्यम से हृदय की मुक्ति प्राप्त करोगे, तो 'मैं यह हूँ' का विचार तुम्हारे हृदय को घेर नहीं पाएगा। शून्यता के माध्यम से प्राप्त यह मुक्ति ही 'मैं यह हूँ' के विचार का उपचार है।"

वे कौन सी छह चीजें हैं जिन्हें उत्पन्न करना है?

8. छह स्थिर अवस्थाएँ: आँख से किसी वस्तु को देखने पर, कान से किसी ध्वनि को सुनने पर, नाक से किसी गंध को सूंघने पर, जीभ से किसी स्वाद को चखने पर, शरीर से किसी मूर्त वस्तु को छूने पर, या मन से किसी मानसिक वस्तु को जानने पर, व्यक्ति न तो प्रसन्न होता है और न ही अप्रसन्न होता है, बल्कि न्यायसंगत, सचेत और स्पष्ट रूप से जागरूक रहता है।

...पूरी तरह से ज्ञात?

9. छह अतुलनीय चीजें: कुछ दृश्य, सुनी हुई बातें, लाभ, प्रशिक्षण, सेवा के रूप, स्मरण की वस्तुएँ।

...क्या यह साकार हो पाएगा?

10. यहाँ, एक भिक्षु अपने मन को विभिन्न अलौकिक शक्तियों पर केंद्रित करता है और उनका आनंद लेता है:

ए. एक होते हुए भी वह अनेक हो जाता है।

ख. दिव्य श्रवण शक्ति से वह दिव्य और मानवीय दोनों प्रकार की ध्वनियाँ सुनता है।

ग. वह अन्य प्राणियों के मन को जानता और पहचानता है।

d. उसे अपने पिछले जन्मों की याद है

ई. दिव्य दृष्टि से...वह प्राणियों के निधन और पुनरुत्थान को देखता है।

च. वह इस जीवन में अपने ही अतिज्ञान और अनुभूति के द्वारा हृदय की दोषरहित मुक्ति और ज्ञान के माध्यम से मुक्ति की प्राप्ति में निवास करता है।

इस प्रकार साठ ऐसी बातें हैं जो वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं, तथागत द्वारा अचूक और पूर्ण रूप से साकार की गई हैं।

सात चीजें बेहद मददगार होती हैं, सात चीजों का विकास करना आवश्यक है...

कौन सी सात चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. सात खजाने:

ए. विश्वास

ख. नैतिकता

ग. नैतिक शर्म

डी. नैतिक भय

ई. सीखना

एफ. त्याग

जी. ज्ञान

...विकसित किया जाना है?

2. ज्ञानोदय के सात कारक:

ए. सचेतनता

ख. घटनाओं की जांच

सी. ऊर्जा

डी. आनंद

ई. शांति

एफ. सांद्रता

जी. समभाव

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. चेतना के सात स्तर: प्राणी

ए. शारीरिक बनावट में भिन्नता, धारणा में भिन्नता

b. शरीर में भिन्न, धारणा में समान

ग. शारीरिक बनावट में एकरूप, धारणा में भिन्न

घ. शरीर में एकरूप, धारणा में भी एकरूप

ई. जिन्होंने अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

एफ. ...अनंत चेतना का

जी. ...शून्यता का

...छोड़ा हुआ?

4. सात गुप्त प्रवृत्तियाँ: कामुक लोभ, द्वेष, पूर्वाग्रह, संदेह, अहंकार, बनने की लालसा और अज्ञान।

...कमी की ओर ले जाता है?

5. सात गलत प्रथाएँ: यहाँ एक भिक्षु

ए. आस्था का अभाव

b. नैतिक शर्म का अभाव

ग. नैतिक भय का अभाव

d. सीखने की क्षमता कम है

ई. क्या शिथिलता है

एफ. असावधान है

जी. ज्ञान का अभाव

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. सात सही अभ्यास: यहाँ एक भिक्षु के पास विश्वास, नैतिक शर्म और नैतिक भय है, वह बहुत ज्ञानी है, उसने शक्ति को जागृत किया है, उसने जागरूकता स्थापित की है, और वह ज्ञान से परिपूर्ण है।

...भेदना मुश्किल है?

7. सच्चे व्यक्ति के सात गुण: यहाँ एक भिक्षु धम्म का ज्ञाता, अर्थों का ज्ञाता, स्वयं का ज्ञाता, संयम का ज्ञाता, उचित समय का ज्ञाता और व्यक्तियों के समूहों का ज्ञाता होता है।

...उत्पन्न करने के लिए?

8. सात धारणाएँ: अनित्यता की धारणा, अनात्म की धारणा, अशुद्धता की धारणा, खतरे की धारणा, परित्याग की धारणा, अपव्यय की धारणा, समाप्ति की धारणा।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. प्रशंसा के सात आधार: यहाँ एक भिक्षु अत्यंत चिंतित है।

क. प्रशिक्षण लेने के लिए तैयार है और इसे जारी रखना चाहता है

ख. धम्म का गहन अध्ययन करना

ग. इच्छाओं से छुटकारा पाने के लिए

घ. एकांत की तलाश करना

ई. ऊर्जा को जगाना

च. सचेतनता और विवेक विकसित करना

g. गहन अंतर्दृष्टि विकसित करना

...सीखना है?

10. अरहंत की सात शक्तियाँ। यहाँ, उस भिक्षु के लिए जिसने भ्रष्टाचारों को नष्ट कर दिया है,

क. सभी मिश्रित वस्तुओं की अनित्यता पूर्ण अंतर्दृष्टि से स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जैसा कि वास्तव में है। यह एक तरीका है जिससे वह यह पहचानता है कि उसके लिए विकृतियाँ नष्ट हो जाती हैं।

ख. ...इंद्रिय-इच्छाओं को धधकते अंगारों के गड्ढे के समान समझा जा सकता है...

ग. ...उसका हृदय वैराग्य की ओर उन्मुख है और वैराग्य ही उसका लक्ष्य है; त्याग में आनंदित होकर, उसका हृदय सभी प्रकार की विकृतियों के प्रति पूर्णतः अनुत्तरदायी है...

डी. ...सजगता के चारों आधारों को अच्छी तरह से विकसित किया जा चुका है...

ई. ...पांचों संकायों का अच्छा विकास हो चुका है...

एफ. ...ज्ञानोदय के सात कारकों को भली-भांति विकसित किया जा चुका है...

जी. आर्य अष्टांगिक मार्ग का पूर्णतः विकास हो चुका है... यह उन शक्तियों में से एक है जिसके द्वारा वह यह पहचानता है कि उसके लिए भ्रष्टाचार नष्ट हो गए हैं।

इस प्रकार सत्तर ऐसी बातें हैं जो वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं, तथागत द्वारा अचूक और पूर्ण रूप से साकार की गई हैं।

आठ चीजें बहुत मददगार साबित होती हैं...

कौन सी आठ चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. पवित्र जीवन के मूलभूत सिद्धांतों में ज्ञान प्राप्त करने, जो प्राप्त नहीं हुआ है उसे प्राप्त करने और जो प्राप्त हुआ है उसे बढ़ाने, विस्तारित करने और विकसित करने के लिए आठ कारण और आठ परिस्थितियाँ सहायक होती हैं।

क. जो व्यक्ति गुरु या गुरु के पदस्थ साथी भिक्षु के निकट रहता है, वह नैतिक लज्जा और नैतिक भय, प्रेम और श्रद्धा में दृढ़ता से स्थापित हो जाता है... जो व्यक्ति इस प्रकार स्थित होता है

ख. वह समय-समय पर अपने गुरु के पास जाता है, उनसे पूछता है और प्रश्न करता है: "हे भगवान, यह कैसे है? इसका क्या अर्थ है?" इस प्रकार उसके आदरणीय गुरु छिपे हुए रहस्यों को प्रकट कर सकते हैं और अस्पष्टताओं को स्पष्ट कर सकते हैं, इस प्रकार उसकी समस्याओं को हल करने में उसकी सहायता कर सकते हैं।

ग. फिर, उनसे धम्म सुनकर, वह शरीर और मन की एकांतता प्राप्त कर लेता है।

घ. इसके अलावा, एक भिक्षु नैतिक होता है, वह अनुशासन के संयम के अनुसार संयमित जीवन जीता है, सही आचरण में दृढ़ रहता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है और प्रशिक्षण के नियमों का पालन करता है।

ई. एक भिक्षु, जिसने बहुत कुछ सीखा है, वह अपने सीखे हुए ज्ञान को याद रखता है और उसे मन में संजोए रखता है, और उन चीजों को भी याद रखता है जो आरंभ में, मध्य में और अंत में सुंदर हैं, जो भावना और अक्षर में पूर्णतः परिपूर्ण और शुद्ध पवित्र जीवन की घोषणा करती हैं, वह उन्हें याद रखता है, उन पर चिंतन करता है और उन्हें दृष्टि से आत्मसात करता है। फिर,

च. एक भिक्षु, ऊर्जा को उत्तेजित करके, अस्वस्थ अवस्थाओं को दूर करने का प्रयास जारी रखता है, दृढ़तापूर्वक और लगन से प्रयास करता है, और स्वस्थ अवस्थाओं के बंधन को नहीं छोड़ता। फिर,

उदाहरण के लिए, एक भिक्षु अत्यंत सजग रहता है, उच्चतम सजगता और विवेक से, अतीत में किए गए और कहे गए कार्यों को याद रखता है और ध्यान में रखता है। साथ ही,

एच. एक भिक्षु निरंतर पांच प्रकार के आरोहण और ग्रहण के बारे में चिंतन करता है: "यह भौतिक रूप है, इसका उद्भव और क्षय; यह भावनाएँ हैं, यह धारणाएँ हैं, यह मानसिक संरचनाएँ हैं, यह चेतना है, इसका उद्भव और क्षय।"

...विकसित किया जाना है?

2. आर्य अष्टांगिक मार्ग।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. आठ सांसारिक स्थितियाँ: लाभ और हानि, प्रसिद्धि और बदनामी, निंदा और प्रशंसा, सुख और दुख।

...छोड़ा हुआ?

4. आठ गलत कारक: गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत कर्म, गलत वाणी, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता, गलत एकाग्रता।

...कमी की ओर ले जाता है?

5. आलस्य के आठ अवसर: यहाँ एक भिक्षु

क. उसे एक काम करना है। वह सोचता है, "मुझे यह काम करना है, लेकिन इससे मैं थक जाऊँगा। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता।

ख. उसने कुछ काम किया है। वह सोचता है, "मैंने यह काम कर लिया है, अब मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटाता। या

ग. उसे यात्रा पर जाना है, और वह सोचता है, "मुझे इस यात्रा पर जाना है, इससे मैं थक जाता हूँ। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अनकहे को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता। या

घ. वह एक यात्रा से लौटकर आया है और सोचता है, "मैंने यह काम कर लिया है, अब मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटाता। या

उदाहरण के लिए, वह किसी गाँव या कस्बे में भिक्षा मांगने जाता है। उसे पर्याप्त भोजन नहीं मिलता। वह सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर थक गया है और बेकार हो गया है। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

एफ. वह भिक्षा मांगने जाता है और पेट भरकर भोजन करता है, और सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर भारी और बेकार हो गया है जैसे मैं गर्भवती हूँ। अब थोड़ा आराम कर लेता हूँ।" इसलिए वह लेट जाता है...

जी. उसे थोड़ी अस्वस्थता महसूस हो रही है, और वह सोचता है, "मुझे थोड़ा आराम कर लेना चाहिए" इसलिए वह लेट जाता है...

एच. वह हाल ही में बीमारी से उबरकर आराम कर रहा है, और वह सोचता है, "मेरा शरीर कमजोर और बेकार है, मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. प्रयास करने के आठ अवसर। यहाँ एक भिक्षु है।

क. उसे एक काम करना है, वह सोचता है, "मुझे यह काम करना है, लेकिन इसे करते समय मेरे लिए बुद्धों की शिक्षाओं पर ध्यान देना आसान नहीं होगा। इसलिए मैं अपूर्ण को पूरा करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा जुटाऊंगा। जो पूरा नहीं हुआ है उसे पूरा करने के लिए, जो अभी तक साकार नहीं हुआ है उसे साकार करने के लिए।"

बी. उसने कुछ काम किया है, वह सोचता है, "ठीक है, मैंने काम तो कर लिया, लेकिन इसके कारण मैं बुद्धों की शिक्षाओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाया, इसलिए मैं पर्याप्त ऊर्जा जुटाऊंगा..."

ग. उसे यात्रा पर जाना होगा...

d. वह एक यात्रा पर रहा है... "मैं इस यात्रा पर रहा हूँ, लेकिन इसके कारण मैं पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाया..."

ई. वह भिक्षा मांगने जाता है लेकिन उसकी भूख मिट नहीं पाती, इसलिए वह सोचता है, "मेरा शरीर हल्का और स्वस्थ है, मैं ऊर्जा जुटा लूंगा..."

एफ. वह भिक्षा मांगने जाता है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है, इसलिए वह सोचता है, "मेरा शरीर मजबूत और स्वस्थ है, मैं ऊर्जा जुटा लूंगा..."

जी. उसे थोड़ी अस्वस्थता है, इसलिए वह सोचता है, "यह और बिगड़ सकता है, इसलिए मैं ऊर्जा जुटाने की कोशिश करूंगा..."

एच. वह अभी हाल ही में ठीक हुआ है और अब स्वास्थ्य लाभ कर रहा है, और वह सोचता है, "हो सकता है कि बीमारी फिर से हो जाए, इसलिए मैं ऊर्जा जुटाऊंगा..."

...भेदना मुश्किल है?

7. भिक्षु के रूप में पवित्र जीवन जीने के लिए आठ दुर्भाग्यपूर्ण, अनुपयुक्त समय।

क. उसे एक काम करना है। वह सोचता है, "मुझे यह काम करना है, लेकिन इससे मैं थक जाऊँगा। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता।

ख. उसने कुछ काम किया है। वह सोचता है, "मैंने यह काम कर लिया है, अब मैं थक गया हूँ। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अवास्तविक को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटाता। या

ग. उसे यात्रा पर जाना है, और वह सोचता है, "मुझे इस यात्रा पर जाना है, इससे मैं थक जाता हूँ। मैं आराम करूँगा।" इसलिए वह लेट जाता है और अधूरे काम को पूरा करने, अधूरे को साकार करने, अनकहे को साकार करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं जुटा पाता। या

घ. वह किसी गाँव या कस्बे में भिक्षा मांगने जाता है। उसे तृप्ति नहीं मिलती। वह सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर थक गया है और बेकार हो गया है। मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

वह भिक्षा मांगने जाता है और पेट भरकर खाता है, फिर सोचता है, "मैं भिक्षा मांगने गया था, मेरा शरीर भारी और बेकार हो गया है जैसे मैं गर्भवती हूँ। अब थोड़ा आराम कर लेता हूँ।" इसलिए वह लेट जाता है...

एफ. उसे थोड़ी अस्वस्थता महसूस हो रही है, और वह सोचता है, "मुझे थोड़ा आराम कर लेना चाहिए" इसलिए वह लेट जाता है...

उदाहरण के लिए, वह हाल ही में बीमारी से उबरकर आराम कर रहा है और सोचता है, "मेरा शरीर कमजोर और बेकार है, मुझे आराम करना चाहिए।" इसलिए वह लेट जाता है...

...उत्पन्न करने के लिए?

8. एक महान व्यक्ति के आठ विचार: "यह धम्म है

ए. कुछ ही इच्छाओं में से एक के लिए, अनेक इच्छाओं में से एक के लिए नहीं।

ख. संतुष्ट लोगों के लिए, असंतुष्ट लोगों के लिए नहीं।

ग. यह अंतर्मुखी लोगों के लिए है, न कि उन लोगों के लिए जो संगति में आनंद लेते हैं।

d. यह ऊर्जावान लोगों के लिए है, आलसी लोगों के लिए नहीं।

ई. यह उन लोगों के लिए है जिनकी सचेतनता स्थापित है, न कि उन लोगों के लिए जिनकी सचेतनता शिथिल है।

एफ. यह एकाग्रचित्त व्यक्ति के लिए है, न कि अनिच्छुक व्यक्ति के लिए।

जी. यह ज्ञानवान व्यक्ति के लिए है, न कि बुद्धिहीन व्यक्ति के लिए।

एच. यह उन लोगों के लिए है जो प्रजनन न करने में आनंद लेते हैं, न कि उन लोगों के लिए जो प्रजनन में आनंद लेते हैं।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. निपुणता प्राप्त करने के आठ चरण:

ए. आंतरिक रूप से रूपों को समझने पर, व्यक्ति को बाहरी रूप सीमित और सुंदर या बदसूरत दिखाई देते हैं;

b. आंतरिक रूप से रूपों को अनुभव करने पर, व्यक्ति को बाह्य रूप असीमित और सुंदर या बदसूरत दिखाई देते हैं।

ग. आंतरिक रूप से आकृतियों को न देख पाने के कारण, व्यक्ति को बाहरी आकृतियाँ सीमित रूप से ही दिखाई देती हैं...

घ. आंतरिक रूप से रूपों को न समझने पर, व्यक्ति असीमित बाह्य रूपों को देखता है...; आंतरिक रूप से रूपों को न समझने पर, व्यक्ति ऐसे रूपों को देखता है जो

आई. नीला

ii. पीला

iii. लाल

iv. सफेद...

...समझना?

10. आठ मुक्ति:

a. रूप धारण करने वाला व्यक्ति रूपों को देखता है;

ख. अपने भीतर भौतिक रूपों को न देख पाने के कारण, व्यक्ति उन्हें बाहर देखता है;

ग. यह सोचते हुए कि "यह सुंदर है" व्यक्ति इस पर ध्यान केंद्रित करने लगता है;

घ. व्यक्ति अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र में प्रवेश करता है;

ई. अनंत चेतना का क्षेत्र

एफ. शून्यता का क्षेत्र

जी. वह क्षेत्र जो न तो बोधगम्य है और न ही अबोधगम्य।

h. अनुभूति और संवेदना का रुक जाना।

नौ चीजें बहुत मददगार साबित होती हैं...

वे कौन सी नौ चीजें हैं जो बहुत मददगार होती हैं?

1. विवेकपूर्ण विचार पर आधारित नौ स्थितियाँ। जब कोई भिक्षु विवेकपूर्ण विचार का अभ्यास करता है,

ए. उसमें आनंद उत्पन्न होता है और

ख. उसके प्रसन्न होने से आनंद उत्पन्न होता है, और

ग. आनंद की अनुभूति से उसकी इंद्रियां शांत हो जाती हैं;

घ. इस शांति के परिणामस्वरूप उसे खुशी का अनुभव होता है और;

ई. प्रसन्नता की अनुभूति होने से उसका मन एकाग्र हो जाता है;

च. इस प्रकार एकाग्रचित्त होकर वह चीजों को वैसे ही जानता और देखता है जैसे वे वास्तव में हैं;

जी. इस प्रकार चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में जानने और देखने से वह मोहभंग हो जाता है।

एच. मोहभंग होने पर वह उदासीन हो जाता है, और

i. वैराग्य से ही वह मुक्त होता है।

...विकसित किया जाना है?

2. पूर्ण शुद्धता के लिए प्रयास के नौ कारक:

क. नैतिकता की शुद्धता के लिए किए जाने वाले प्रयास का कारक

ख. ...मन की पवित्रता के लिए

ग. ...दृष्टि की शुद्धता के लिए

घ. ...संदेह पर विजय प्राप्त करके शुद्धिकरण करना

ई. ...मार्ग और अपमार्ग के ज्ञान और दृष्टि द्वारा शुद्धि का

एफ. ...प्रगति के ज्ञान और दृष्टि द्वारा शुद्धिकरण...

जी. ...ज्ञान और दृष्टि द्वारा शुद्धिकरण

एच. ...ज्ञान की पवित्रता का।

i. ...मुक्ति की पवित्रता का।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. प्राणियों के नौ निवास स्थान:

a. शारीरिक बनावट और धारणा में भिन्न प्राणी

b. शरीर से भिन्न लेकिन धारणा में समान प्राणी

ग. शरीर से समान तथा धारणा में भिन्न प्राणी

घ. शरीर और धारणा में समान प्राणी

ई. अचेतन प्राणियों का क्षेत्र

एफ. वह क्षेत्र जहां न तो बोध होता है और न ही अबोध।

g. वे प्राणी जिन्होंने अनंत अंतरिक्ष के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

h. वे प्राणी जिन्होंने अनंत चेतना के क्षेत्र को प्राप्त कर लिया है

i. वे प्राणी जिन्होंने शून्यता की अवस्था प्राप्त कर ली है

...क्या इसे छोड़ दिया जाएगा?

4. नौ बातें जो लालसा में निहित हैं: लालसा खोज... अधिग्रहण... निर्णय लेने... कामुक इच्छा... आसक्ति... विनियोग... लोभ... संपत्ति की रक्षा को जन्म देती है, और संपत्ति की रक्षा के कारण लाठी और तलवार उठाना, झगड़े... झूठ बोलना और अन्य बुरी अकुशल अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं।

...कमी की ओर ले जाता है?

5. द्वेष के नौ कारण: द्वेष निम्नलिखित विचारों से उत्पन्न होता है,

ए. उसने मुझे चोट पहुँचाई है

b. वह मुझे चोट पहुँचा रहा है।

ग. वह मुझे चोट पहुँचाएगा

d. उसने किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुँचाई है जो मुझे बहुत प्रिय और प्यारा है।

ई. वह किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुंचा रहा है जो मुझे प्रिय और प्यारा है।

एफ. वह किसी ऐसे व्यक्ति को हानि पहुंचाएगा जो मुझे प्रिय और प्रिय है।

जी. उसने किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान किया है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे पसंद नहीं है।

एच. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान कर रहा है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है।

i. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान करेगा जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद करता है।

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. द्वेष पर विजय पाने के नौ तरीके: द्वेष पर इस विचार से विजय पाई जा सकती है:

ए. उसने मुझे चोट पहुंचाई है — ऐसे में उसके प्रति द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

बी. वह मुझे नुकसान पहुंचा रहा है — द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

ग. वह मुझे नुकसान पहुंचाएगा — द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

घ. उसने मेरे किसी प्रिय और प्रिय व्यक्ति को चोट पहुंचाई है — ऐसे में द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

ई. वह किसी ऐसे व्यक्ति को चोट पहुंचा रहा है जो मुझे प्रिय और प्यारा है - ऐसे में द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

एफ. वह किसी ऐसे व्यक्ति को हानि पहुंचाएगा जो मुझे प्रिय और प्यारा है - द्वेष रखने से क्या लाभ होगा?

जी. उसने एक ऐसे व्यक्ति पर एहसान किया है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - ऐसे में द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

एच. वह ऐसे व्यक्ति पर एहसान कर रहा है जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

i. वह किसी ऐसे व्यक्ति पर एहसान करेगा जो मुझसे घृणा करता है और मुझे नापसंद है - द्वेष रखने से क्या फायदा होगा?

...भेदना मुश्किल है?

7. नौ अंतर: तत्व के अंतर के कारण संपर्क में अंतर होता है, संपर्क के अंतर के कारण भावना में अंतर होता है, भावना के अंतर के कारण धारणा में अंतर होता है; धारणा के अंतर के कारण विचार में अंतर होता है, विचार के अंतर के कारण इरादे में अंतर होता है, इरादे के अंतर के कारण आसक्ति में अंतर होता है, आसक्ति के अंतर के कारण खोज में अंतर होता है, खोज के अंतर के कारण प्राप्त होने वाली वस्तु में अंतर होता है।

...उत्पन्न करने के लिए?

8. अपवित्रता, मृत्यु, भोजन की घृणा, संपूर्ण संसार के प्रति अरुचि, अनित्यता, अनित्यता में पीड़ा, पीड़ा में निर्वैयक्तिकता, त्याग और वैराग्य की नौ धारणाएँ।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. नौ क्रमिक अवस्थाएँ: अनंत अंतरिक्ष के ध्यान और क्षेत्र, अनंत चेतना, शून्यता, न तो बोध और न ही अबोध, और बोध और भावना का अंत।

...समझना?

10. नौ क्रमिक समाप्ति: प्रथम ध्यान की प्राप्ति से इंद्रिय संवेदनाएँ समाप्त हो जाती हैं, द्वितीय ध्यान की प्राप्ति से चिंतन और मनन समाप्त हो जाते हैं, तृतीय ध्यान की प्राप्ति से आनंद समाप्त हो जाता है, चतुर्थ ध्यान की प्राप्ति से श्वास-श्वास समाप्त हो जाता है, अनंत आकाश के क्षेत्र की प्राप्ति से भौतिकता की अनुभूति समाप्त हो जाती है, अनंत चेतना के क्षेत्र की प्राप्ति से अनंत आकाश के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। शून्यता के क्षेत्र की प्राप्ति से अनंत चेतना के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। न तो अनुभूति और न ही अनुभूति के क्षेत्र की प्राप्ति से शून्यता के क्षेत्र की अनुभूति समाप्त हो जाती है। अनुभूति और अनुभूति की समाप्ति की प्राप्ति से अनुभूति और अनुभूति दोनों समाप्त हो जाती हैं।

इस प्रकार तथागत द्वारा नब्बे ऐसी बातें सिद्ध की गईं जो वास्तविक और सत्य हैं, अन्यथा नहीं।

दस चीजें बहुत मददगार साबित होती हैं...

कौन सी दस चीजें बहुत मददगार होती हैं?

1. दस चीजें जो सुरक्षा प्रदान करती हैं: यहाँ एक भिक्षु है

क. वह नैतिक है, शिष्य के संयम के अनुसार संयमित जीवन जीता है, सही आचरण में दृढ़ रहता है, छोटी से छोटी गलती में भी खतरा देखता है। वह प्रशिक्षण के नियमों का पालन करता है।

ख. उसने बहुत कुछ सीखा है और जो कुछ सीखा है उसे वह याद रखता है और संजो कर रखता है। आरंभ, मध्य और अंत में सुंदर इन शिक्षाओं में, जो भावना और शब्दों में पूर्णतः परिपूर्ण और पवित्र जीवन की घोषणा करती हैं, वह गहन रूप से पारंगत है; वह उन्हें याद रखता है, उनका पाठ करता है, उन पर मनन करता है और उन्हें अंतर्दृष्टि से आत्मसात करता है।

ग. वह अच्छे लोगों का मित्र, सहयोगी और घनिष्ठ मित्र है।

घ. वह मिलनसार, सौम्य और धैर्यवान है। निर्देशों को शीघ्रता से ग्रहण करता है।

ई. अपने साथी भिक्षुओं के लिए जो भी विभिन्न कार्य करने होते हैं, वह उनमें कुशल होता है, लापरवाह नहीं, उन्हें पूरा करने में दूरदर्शिता का प्रयोग करता है, और कार्य करने और योजना बनाने में अच्छा होता है।

एफ. वह धम्म से प्रेम करता है और उसे सुनने में आनंदित होता है। वह विशेष रूप से उन्नत सिद्धांतों और अनुशासनों का शौकीन है।

जी. वह किसी भी प्रकार की आवश्यकताओं, वस्त्रों, भिक्षा, भोजन, आवास, बीमारी की स्थिति में दवाओं से संतुष्ट रहता है।

वह सदा ऊर्जा जगाने, अस्वस्थ अवस्थाओं से छुटकारा पाने और स्वस्थ अवस्थाओं को स्थापित करने का प्रयास करता है, ऐसी अच्छी अवस्थाओं को बनाए रखने के लिए अथक और ऊर्जावान रूप से प्रयास करता है, और कभी भी इस भार को नहीं उतारता।

i. वह सचेत है, और उसमें बहुत पहले की गई और कही गई बातों को स्पष्ट रूप से याद रखने की अद्‌भुत क्षमता है।

जे. वह उत्पत्ति और क्षय की बुद्धिमत्तापूर्ण समझ रखने वाला बुद्धिमान व्यक्ति है, वह आर्यन समझ जो दुख के पूर्ण विनाश की ओर ले जाती है।

...विकसित किया जाए?

2. समाधि की प्राप्ति के लिए दस वस्तुएँ। वह पृथ्वी-कसीना, जल-कसीना, अग्नि-कसीना, वायु-कसीना, नीला-कसीना, पीला-कसीना, लाल-कसीना, सफेद-कसीना, आकाश-कसीना, चेतना-कसीना को ऊपर, नीचे, चारों ओर, अविभाजित, असीम रूप से देखता है।

...पूरी तरह से ज्ञात?

3. दस इंद्रिय क्षेत्र: आँख और दृष्टि-वस्तु, कान और ध्वनि, नाक और गंध, जीभ और स्वाद, शरीर और स्पर्श-वस्तु।

...छोड़ा हुआ?

4. आठ गलत कारक: गलत दृष्टिकोण, गलत विचार, गलत कर्म, गलत वाणी, गलत आजीविका, गलत प्रयास, गलत जागरूकता, गलत एकाग्रता, गलत ज्ञान और गलत मुक्ति।

...कमी की ओर ले जाता है?

5. दस अवांछनीय कर्म। जीवन लेना, बिना माँगे कुछ लेना, यौन दुराचार, झूठ बोलना, निंदा करना, अभद्र भाषा बोलना, व्यर्थ की बातें करना, लोभ, द्वेष, गलत दृष्टिकोण।

...भेदभाव को बढ़ावा देता है?

6. दस उत्तम कर्म। जीवन लेने से बचना, बिना दी हुई वस्तु न लेना, यौन दुराचार से बचना, झूठ बोलने से बचना, निंदा करने से बचना, अभद्र भाषा से बचना, व्यर्थ की बातों से बचना, लोभ से बचना, द्वेष से बचना और गलत विचारों से बचना।

...भेदना मुश्किल है?

7. दस आर्य स्वभाव: यहाँ एक भिक्षु है

ए. इसने पाँच कारकों से छुटकारा पा लिया है,

b. इसमें छह कारक मौजूद हैं

सी. एक गार्ड तैनात किया है

d. चारों आधारों का अवलोकन करता है,

ई. इसने सांप्रदायिक विचारों से छुटकारा पा लिया है

एफ. उसने खोज को लगभग त्याग दिया है

जी. उसका उद्देश्य शुद्ध है

एच. उसने अपनी भावनाओं को शांत कर लिया है, वह पूरी तरह से मुक्त है

i. हृदय में

जे. ज्ञान द्वारा।

...उत्पन्न करने के लिए?

8. अपवित्रता, मृत्यु, भोजन की घृणा, संपूर्ण संसार के प्रति अरुचि, अनित्यता, अनित्यता में पीड़ा, पीड़ा में निर्वैयक्तिकता, त्याग, वैराग्य और समाप्ति की अनुभूति की नौ धारणाएँ।

...पूरी तरह से सीख लिया?

9. क्षय के दस कारण: सही दृष्टि से गलत दृष्टि का क्षय होता है, और गलत दृष्टि के आधार पर उत्पन्न होने वाली सभी बुरी और अस्वस्थ अवस्थाएँ भी क्षय हो जाती हैं। सही दृष्टि से अनेक स्वस्थ अवस्थाएँ विकसित और परिपूर्ण होती हैं। सही विचार से गलत विचार का क्षय होता है... सही वाणी से गलत वाणी का क्षय होता है... सही कर्म से... सही आजीविका से... सही प्रयास से... सही जागरूकता से... सही एकाग्रता से... सही ज्ञान से... सही मुक्ति से... और सही मुक्ति से अनेक स्वस्थ अवस्थाएँ विकसित और परिपूर्ण होती हैं।

... क्या यह साकार हो पाएगा?

10. अशिक्षार्थी के दस गुण: अशिक्षार्थी का सही दृष्टिकोण, सही विचार, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता, सही एकाग्रता, सही ज्ञान, सही मुक्ति।

इस प्रकार, तथागत द्वारा अचूक और पूर्ण रूप से साकार की गई सौ बातें वास्तविक और सत्य हैं, और अन्यथा नहीं।

ऐसा पूज्य शारिपुत्र ने कहा। उनके शब्दों से भिक्षु प्रसन्न और आनंदित हुए।